Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईने अकबरी

अबुल फ़ज़ल

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

954.02

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईने अकबरी

अबुल फज्ल

मूल फारसी से अनूदित

हरिवंश राय शर्मा एम. ए., साहित्यरत्न
फिदा हुसेन खाँ एम. ए. (फारसी), एम. ए. (अरबी), कामिल

ग्रंथ १-२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकाशक
महामना प्रकाशन मन्दिर
७०५ महामना मालवीय नगर
इलाहाबाद

सम्पादक
लक्ष्मीकान्त मालवीय
बी. ए. एल-एल. बी.

सजिल्द, मूल्य रु. १५.००

954.02
अ अ

(C) स्वत्वाधिकार प्रकाशकाधीन
१९६६

मुद्रक
राज प्रिंटिंग प्रेस
२८६ मुट्ठीगंज,
इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्राक्कथन

अकबर केवल भारत के ही नहीं वरन् विश्व के महान् शासकों में गिना जाता है। जब उसकी राजगद्दी हुई तब वह अल्पवयस्क था और उसकी परिस्थिति बड़ी संकटाकीर्ण थी, परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता, शूरता, कार्य-कुशलता तथा उदारता से उसने एक सुव्यवस्थित शासन स्थापित किया जिसकी सभी इतिहासकार तथा समालोचक भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। अबुल फज्ल अकबर का मंत्री, घनिष्ठ मित्र तथा कृपाभाजन था अकबर की धार्मिक एवं सामाजिक नीति पर उसकी गहरी छाप थी। अबुल फज्ल प्रतिभाशाली विद्वान्, गम्भीर विचारक तथा कुशल साहित्यकार था। उसने सम्राट् के व्यक्तिगत जीवन तथा शासन-प्रणाली का निकट से अवलोकन किया था और आईने अकबरी में उसने उनका विशद् चित्रण किया है।

वास्तव में आईने अकबरी अकबरनामा का तृतीय भाग है। अकबरनामा के प्रथम भाग में अबुल फज्ल ने तैमूर वंश के इतिहास और बाबर, सूर सुल्तानों और हुमायूँ के शासन काल का वर्णन किया है, दूसरे भाग में अकबर के शासन के लगभग ४६ वर्षों का विवरण है और तृतीय भाग अर्थात् आईने अकबरी में अकबर के राज्य काल के विषय में विभिन्न प्रकार की सूचनायें समाविष्ट हैं यद्यपि सीमित दृष्टिकोण से हम आईने अकबरी को इतिहास नहीं कह सकते तथापि उसमें ऐसी अनेक वस्तुयें हैं जो तत्कालीन परिस्थिति को समझने के लिए आवश्यक हैं।

आईने अकबरी को लेखक ने पाँच भागों में बाँटा है। पहले भाग में अकबर के परिवार, दरबार और स्वयं उसका वर्णन है। दूसरे भाग में राजकर्मचारियों, सैनिक तथा असैनिक अधिकारियों एवं दरबार के सेवकों का वर्णन है। तीसरे भाग में न्याय विभाग, नए सन् की स्थापना, भूमि की नाप तथा राजस्व आदि का निरूपण है। चौथे भाग में हिन्दुओं के साहित्य, ज्योतिष तथा दर्शन आदि का संक्षिप्त उल्लेख है। इनके साथ ही कुछ अध्यायों में भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों, विख्यात यात्रियों तथा मुसल्मान फकीरों और सन्तों का भी वर्णन है। पाँचवें भाग में अबुल फज्ल ने सम्राट् के नैतिक वाक्यों, उक्तियों और बुद्धिमत्तापूर्ण नियमों का संकलन किया है।

इस प्रकार आईने अकबरी में हमें सम्राट् की शासन-व्यवस्था के विभिन्न विभागों का मनोरम चित्रण उपलब्ध होता है और प्रजा के विभिन्न वर्ग और धर्मावलम्बी बारम्बार हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं तथा उस समय की महत्वपूर्ण समस्याओं, नियमों, विचारों और आदर्शों के सच्चे चित्रण से हमारा साक्षात्कार होता है।

अनेक यूरोपीय लेखकों ने अबुल फज्ल पर चाटुकारिता तथा मिथ्या यशोगान का आरोप किया है। परन्तु यदि हम प्राची के अन्य लेखकों तथा कवियों से उसकी तुलना करें तो हमें स्पष्ट ज्ञात हो जायगा कि यह आरोप निराधार है। तत्कालीन भारत में राजा की आज्ञा का पालन करना सर्वोपरि नैतिक कर्तव्य माना जाता था। 'दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा'। तत्कालीन इङ्गलैण्ड में भी राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि या अंश माना जाता था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूल ग्रन्थ फारसी में है। अतएव भारत के बहुत कम विद्यार्थी इसका अध्ययन कर सकते हैं। ब्लाकमैन ने प्रथम और द्वितीय भाग का और जेरेट ने तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम भाग का अंग्रेजी में अनुवाद किया है और उनके अनुवादों के क्रमशः फिलाट तथा जदुनाथ सरकार द्वारा संशोधित संस्करण भी प्रकाशित हो गए हैं। आईने अकबरी का दूसरा अनुवाद उस्मानियाँ विश्वविद्यालय के तत्वावधान में मोलवी मुहम्मद फिदा अली साहब ने किया है। तीसरा अनुवाद हिन्दी में है। इसके भाषान्तरकार श्री रामलाल पाण्डेय हैं और प्रकाशक हैं विद्यामंदिर, कानपुर। परन्तु हमें इसका केवल खंड १, अंक १-४ ही उपलब्ध हुआ है जो १९३५ में प्रकाशित हुआ था और कदाचित् शेषांश प्रकाशित भी नहीं हो पाया है। प्रकाशित पुस्तक में केवल २४ आईनों का अनुवाद है।

वर्तमान अनुवाद में हमने फारसी के मूलग्रन्थ का अनुसरण करने का प्रयास किया है। जहाँ कहीं हमें सन्देह हुआ अथवा वाक्य-गठन में कठिनाई हुई हमने अंग्रेजी, उर्दू तथा हिन्दी अनुवादों का अध्ययन किया और उनसे बहुमूल्य सहायता प्राप्त की जिसके लिए हम विद्वान् अनुवादकों तथा प्रकाशकों के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझते हैं। हमने मूल लेखक के अर्थ को समझने और व्यक्त करने का बहुत प्रयास किया है तथापि हम सविश्वास नहीं कह सकते कि हमारा अनुवाद यथेष्ट हो पाया है। हम विनम्रतापूर्वक अपना यह बाल-प्रयास विद्वज्जगत् के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं और आशा करते हैं कि वे अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अनुगृहीत करेंगे।

हरिवंश राय शर्मा
फिदा हुसेन खाँ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

विषय-सूची

प्राक्कथन ३
विषय-सूची ५
शेख अबुल फज्ल अल्लामी का जीवनवृत्त १३
अबुल फज्ल की भूमिका १७

प्रथम ग्रन्थ

राजकीयशाला समृद्धि

आईन
१. राजकीयशाला २५
२. राजकोष २६
३. रत्नागार २८
४. टकसाल २९
५. टकसाल के सहायक ३०
६. बनवारी ३१
७. खोटा सोना खरा करने की विधि ३२
चाँदी को शुद्ध करने की विधि ३४
कुकरा की क्रिया ३५
बुगरावटी की क्रिया ३६
८. चाँदी को सोने से अलग करने की क्रिया ३६
९. राख से चाँदी निकालने की विधि ३७
१०. राज्य की मुद्राएँ
स्वर्ण मुद्राएँ ३८
चाँदी के सिक्के ४१
ताँबे के सिक्के ४१

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन

११.	दिरहम और दीनार	४४
१२.	सोने और चाँदी के व्यापारियों का लाभ	४५
१३.	धातुओं की उत्पत्ति	४७
१४.	धातुओं की गुरुता तथा लघुता	४९
१५.	राजकीय अन्तःपुर	५१
१६.	यात्रा के सामान और मंजिलों पर पड़ाव	५३
१७.	सेना का एकत्र होना	५४
१८.	चिराग जलाना	५५
१९.	राज्य वैभव	५६
२०.	शाही मुहरें	५८
२१.	फर्राशखाना	५९
२२.	आबदार खाना	६१
२३.	पाकशाला	६२
२४.	मसाले	६४
२५.	रोटी	६६
२६.	सूफियाना (संयम के दिन)	६७
२७.	जिन्सों के भाव	६७
	रबी	६८
	खरीफ	६८
	शाक	६८
	पशु-पक्षी और माँस	६९
	घी, चीनी आदि	६९
	मसाले	६९
	खटाइयाँ और अचार आदि	६९
२८.	मेवाखाना (फलागार)	७०
	तूरान आदि देश के फल	७१
	हिन्दुस्तान के मीठे फल	७१
	सूखे फल	७२
	फल जो पका कर खाते हैं	७२

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन

हिन्दुस्तान के खट्टे फल ७२

खटमिट्ठे फल ७२

२९. स्वाद ७७

३०. सुगन्धशाला ७८

सुगन्धि ७९

सुगन्धित फूल ८०

सुन्दर रङ्गों वाले फूल ८०

सुगन्धियाँ तैयार करने की क्रिया ८१

३१. वस्त्रशाला ९०

३२. शाल ९२

जरीं (सोने के काम किए हुए कपड़े) ९३

रेशमी कपड़े ९४

सूती कपड़े ९५

ऊनी कपड़े ९६

३३. रङ्गों की उत्पत्ति ९६

३४. चित्रशाला ९७

नस्तालीक १०१

चित्रकला १०५

३५. शस्त्रशाला १०६

हथियारों के नाम १०७

३६. तोपखाना १०९

३७. बन्दूक १०९

३८. बन्दूकों को साफ करना १११

३९. बन्दूकों की श्रेणियाँ १११

४०. बन्दूक ले जाने वालों का मासिक वेतन ११२

४१. गजशाला ११२

४२. हाथियों की श्रेणियाँ ११७

४३. हाथियों का भोजन ११७

४४. गजशाला के सेवक ११८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन		११९
	फौजदार	११९
४५.	हाथी के समान	१२२
४६.	सम्राट् की सवारी के हाथी	१२३
४७.	खासा हाथियों की सवारी की विधि	१२३
४८.	दण्ड	१२४
४९.	अश्वशाला	१२५
५०.	घोड़ों की श्रेणियाँ	१२६
५१.	घोड़ों का भोजन	१२७
५२.	घोड़ों के सामान	१२८
५३.	अश्वशाला के सेवक-वृन्द	१३०
५४.	बारगीर	१३०
५५.	घोड़ों को दागना	१३०
५६.	अश्वशाला में घोड़ों की कमी की पूर्ति करना	१३१
५७.	अर्थ दण्ड	१३१
५८.	घोड़ों को सवारी के लिए तैयार रखना	१३२
५९.	उपहार	१३३
६०.	जिलोआना	१३३
६१.	उष्ट्रशाला	१३४
६२.	ऊँटों का भोजन	१३५
६३.	ऊँटों के सामान	१३६
६४.	ऊँटों को तेल मलना और नाक में तेल डालना	१३६
६५.	ऊँटों और उनके सेवकों के पद	१३७
	रैबारी	१३८
६६.	गोशाला	१३९
६७.	गायों और बैलों का भोजन	१४०
६८.	गोशाला के सेवक	१४१
६९.	खच्चरों के अस्तबल	१४२
७०.	खच्चरों का भोजन	१४२
७१.	खच्चरों के सामान	

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन

७२.	सम्राट् की दिनचर्या	१४३
७३.	दरबार में प्रवेश	१४५
७४.	कोर्निश और तसलीम	१४६
७५.	शिष्टाचार	१४७
७६.	सम्राट् के सम्मुख लोगों का प्रस्तुत किया जाना	१४८
७७.	आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन	१४९
	दीन-इलाही के नियम	१५३
७८.	हाथियों का निरीक्षण	१५४
७९.	घोड़ों का निरीक्षण	१५५
८०.	ऊँटों का निरीक्षण	१५६
८१.	गाय-बैलों का निरीक्षण	१५६
८२.	खच्चरों का निरीक्षण	१५६
८३.	पाव गोश्त	१५७
८४.	पशुओं की लड़ाई और बाजी लगाना	१५८
	हिरण की लड़ाई	१५८
८५.	भवन-निर्माण	१६१
८६.	मकानी मालों के मूल्य	१६२
८७.	मजदूरी	१६४
८८.	मकानी मालों का अनुमान	१६५
८९.	काटने में लकड़ी नष्ट होने का अनुमान	१६६
९०.	विभिन्न प्रकार की लकड़ियों की तौल	१६६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्वितीय ग्रन्थ

सेना

आईन

१.	सेना के भाग	१६९
२.	सेना के पशु	१७०
३.	मनसबदार	१७४
४.	अहदी	१८३
५.	अन्य प्रकार के सवार	१८४
६.	पैदल सेना	१८४
	बन्दूक्ची	१८५
	दरबान	१८५
	खिदमतिया	१८५
	म्यौड़ा	१८५
	शमशेरबाज (तलवार चलाने वाले)	१८६
	पहलवान	१८६
	चेला (दास)	१८६
	कहार	१८७
	दाखिले प्यादे	१८७
७.	पशुओं पर दाग लगाने के नियम	१८८
८.	चिह्नों की पुनरावृत्ति	१८९
९.	किशक (चौकी) अर्थात् पहरा	१९०
१०.	वाकया नवीसी	१९१
११.	सनद (प्रमाण-पत्र)	१९२
	फरमाने सन्ती	१९३
१२.	मुहरों के क्रम	१९५
१३.	फरमाने बैयाजी	१९६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन

१४.	वेतन देने की प्रणाली	१९६
१५.	मुसाअदत (अधिकारियों को ऋण)	१९७
१६.	उपहार	१९७
१७.	दान	१९८
१८.	तुलादान	१९८
१९.	सुयूरगाल	१९९
२०.	सम्राट् द्वारा आविष्कृत गाड़ियाँ आदि	२०१
२१.	दहसेरी	२०१
२२.	भोज तथा उत्सव	२०२
२३.	खुशरोज (मीना बाजार)	२०३
२४.	विवाह	२०३
२५.	शिक्षा	२०४
२६.	जलसेनाध्यक्ष (मीर बहरी)	२०५
२७.	आखेट	२०८
	सिंह का आखेट	२०८
	हाथी का आखेट	२१०
	चीतों का शिकार	२११
२८.	चीतों का भोजन और उनके सेवकों का वेतन	२१२
	शिकारी चीते की चतुराई	२१३
	सियाहगोश	२१४
	कुत्ते	२१५
	हिरण का हिरण से शिकार	२१५
	भैंसे का शिकार	२१७
	पक्षियों का शिकार	२१७
	कश्मीरी	२१८
	हिन्दुस्तानी	२१८
	पक्षियों का भोजन	२१८
	पक्षियों का मूल्य	२१८
	जल पक्षी (मुर्गाबी)	२१९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन

२६.	मनोरंजन (निशातबाजी)	२२०
	चौगान का खेल	२२१
	इश्कबाजी (कबूतर उड़ाना)	२२२
	चौपडबाजी (चौसरबाजी)	२२६
	चन्दल मन्दल का खेल	२२७
	कार्ड (गुंजफा)	२२९
३०. (प्रथम भाग)	साम्राज्य के विशिष्ट व्यक्ति	२३१
	मनसबदारों के नाम तथा पद	२३१
	राज्य के वकील (प्रधानमन्त्री)	२४५
	राज्य के वजीर (अर्थमंत्री)	२४५
	बख्शी	२४५
	सद्र	२४५
,, (द्वितीय भाग)	राज्य के विद्वान्	२४६
	वाह्य तथा आन्तर जगतों के रहस्यज्ञ	२४६
	हृदय के रहस्यज्ञ	२४६
	दर्शन के विद्वान्	२४६
	हकीम	२४७
	धर्मग्रन्थ के विद्वान्	२४७
,, (तृतीय भाग)	कवि	२४७
,, (शेषांश)	सम्राट् के दरबार के संगीतज्ञ	२७६
	अनुक्रमणिका	२७९
	ईरानी और तदनुरूप हिन्दू महीने	२८८

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेख अबुल फज्ल अल्लामी का जीवन-वृत्त

सम्राट् अकबर के मंत्री तथा मित्र अबुल फज्ल का जन्म इसलाम शाह के शासनकाल में १४ जनवरी सन् १५५१ को आगरा के सम्मुख यमुना के बायें तट पर चारबाग नामक स्थान में हुआ था जिसको बाद में हश्त बिहिश्त अथवा नूरफ्शाँ बाग कहते थे और आजकल राम बाग कहते हैं। उसके पिता शेख मुबारक बहुत विद्वान् महदवी अर्थात् महदी के अनुगामी थे। अतएव उनके ऊपर कट्टर उलमाओं ने अनेक अत्याचार किए थे। उनके दो विख्यात तथा मेधावी पुत्र थे—शेख अबुल फैज जिस साधारणतया फैजी कहते हैं और शेख अबुल फज्ल। इन दोनों पर शेख मुबारक की विद्वत्ता तथा धार्मिक उदारता की गहरी छाप पड़ी थी।

सन् १५७४ के आरम्भ में अबुल फज्ल अकबर के सम्मुख प्रथम बार प्रस्तुत किया गया और सम्राट् के ऊपर उसका अनुकूल प्रभाव पड़ा। इसके पश्चात् अकबर बिहार पर विजय प्राप्त करने चला गया। जब वह वहाँ से लौटा तब बृहस्पतिवार के स्मरणीय सायंकाल-शास्त्रार्थ आरम्भ हुए। कट्टर सुन्नी दल के नेता मखदूमुल्मुल्क तथा शेख अब्दुन्नबी थे। ये लोग उदार दल के नेता अबुल फज्ल, फैजी और शेख मुबारक से बड़ी घृणा करते थे। एक बार मखदूमुल्मुल्क ने साम्राज्य के सद्र शेख अब्दुन्नबी के विरुद्ध एक द्वेषपूर्ण पुस्तिका लिखी थी। नबी ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया और मखदूम को मूर्ख कहकर अनेक प्रकार से उसकी भर्त्सना की। अबुल फज्ल ने इस मनोमालिन्य से लाभ उठाया और चतुरतापूर्वक दोनों के झगड़े को बढ़ाता रहा। अन्त में उसने सम्राट् को यह घोषित करने के लिए तैयार कर लिया कि प्रजा को चाहिये कि वह अपने सम्राट् को केवल इहलौकिक शासक ही न समझे वरन् उसे अपना एकमात्र पारलौकिक तथा आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक भी माने। इस सिद्धान्त की घोषणा से अबुल फज्ल की विजय पूर्णतया स्थापित हो गई और अकबर तथा अबुल फज्ल दोनों का इस सिद्धान्त में विश्वास जीवन भर अडिग बना रहा। उलमाओं का दल ध्वस्त हो गया और शेख अब्दुन्नबी तथा मखदूमुल्मुल्क मक्का भेज दिए गए।

सन् १५७९ ई० में बृहस्पतिवार के सायंकालीन-शास्त्रार्थ समाप्त कर दिए गए। फैजी और अबुल फज्ल सम्राट् के स्थायी मित्र हुए। फैजी राजकुमार मुराद का शिक्षक नियुक्त किया गया। दोनों भाइयों ने सैनिक सेवा में प्रवेश किया और उन्हें मनसब प्राप्त हुए। सन् १५८१ में फैजी आगरा, काल्पी और कालिन्जर का सद्र नियुक्त किया गया। १५८५ में अबुल फज्ल एक हजारी बनाया गया और १५८६ में दिल्ली प्रान्त के दीवान पद पर नियुक्त किया गया। फैजी का पद इससे निम्नकोटि का था। वह केवल ४०० अश्वारोहियों का अध्यक्ष था परन्तु उसे उच्चतर मनसब प्राप्त करने की बहुत आकांक्षा नहीं थी। सन् १५८८ में वह राजकवि नियुक्त किया गया। सन् १५८९ में अबुल फज्ल की माता का देहान्त हो गया और सम्राट् ने उसके घर जाकर उसे सांत्वना दी।

इस बीच में दीन इलाही की स्थापना हो चुकी थी। शेख मुबारक के अनुसार उसकी विशेषता यह थी कि उसके अवलम्बी मानते थे कि ईश्वर एक है और अकबर पृथ्वी पर उसका खलीफा है। राजप्रासाद में ईश आराधना की मुसलिम प्रणाली बन्द कर दी गई और तारीख इलाही का श्रीगणेश हुआ। दरबार के मुसलमान अमीर अबुल फज्ल के घोर विरोधी थे और वे सम्राट् को प्रायः परामर्श देते थे कि अबुल फज्ल को दक्षिण भेज दिया जाय क्योंकि उन्हें आशा थी कि दक्षिण में जाकर अबुल फज्ल प्रशासन अथवा सैनिक व्यवस्था में अवश्य कुछ न कुछ गलती करेगा और इस प्रकार दरबार में उसका प्रभाव कम हो जायगा। राजकुमार सलीम भी इन असन्तुष्ट लोगों में से था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सन् १५९२ ई० में अबुल फज्ल दो हजारी नियुक्त किया गया। अब वह दरबार के बड़े अमीरों में सम्मिलित हो गया और पहले की भाँति सदैव दरबार में सम्राट् की सेवा में प्रस्तुत रहता था। ४ सितम्बर १५९३ को शेख मुबारक का लाहौर में देहान्त हो गया। फिर छः महीने की बीमारी के बाद ५ अक्टूबर १५९५ को फैजी का देहावसान हुआ। इसी समय के लगभग अबुल फज्ल ढाई हजारी बनाया गया। सन् १५९६-९७ में उसने आईने-अकबरी को समाप्त किया।

सन् १५९८ में अबुल फज्ल प्रथम बार सक्रिय सैनिक सेवा में भेजा गया। राजकुमार मुराद दक्षिण में युद्ध की व्यवस्था ठीक नहीं कर पा रहा था। इसलिए सम्राट् ने अबुल फज्ल को दक्षिण में भेजा और उसे आदेश दिया कि यदि राजकीय शिविर के प्रमुख अधिकारी विजित भूखंड की रक्षा का दायित्व लें तो तुम मुराद के साथ लौट आना अन्यथा शाहरुख मिर्जा के सहयोग से युद्ध का संचालन करना। इस बीच में राजकुमार मुराद अहमद नगर से इलिचपुर लौट आया था और अपने शिशुपुत्र मिर्जा रुस्तम की मृत्यु के कारण अत्यन्त दुःखी था। जब मुराद को ज्ञात हुआ कि अबुल फज्ल किस उद्देश्य से आया है तब उसने तुरन्त अहमदनगर की ओर प्रस्थान कर दिया जिससे उसे सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत न होना पड़े। वह दौलताबाद से २० कोस की दूरी पर गोदावरी की सहायक पूर्णा नदी के तट पर पहुँच गया था जब उसकी मृत्यु हो गई। उसी दिन अबुल फज्ल राजकीय शिविर में पहुँचा और सब कुछ अस्त-व्यस्त देखा। प्रत्येक सेनाधिकारी ने उसे वापस लौटने का परामर्श दिया किन्तु अबुल फज्ल ने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और आगे बढ़ा। उसने विजित जनपदों की रक्षा की और बैटाला, तलतुम तथा सन्तोंडा के दुर्गों पर विजय प्राप्त की।

उधर खानदेश में बहादुर खाँ ने विद्रोह किया। इसलिए उससे युद्ध छिड़ गया। सम्राट् ने उसके प्रसिद्ध किले असीरगढ़ पर आक्रमण किया और राजकुमार दानियाल को अहमदनगर अभियान का सेनाध्यक्ष बनाया। मिर्जा शाहरुख, मीर मुर्तजा और ख्वाजा अब्दुल हसन को सेना-संचालन का कार्यभार सौंप कर अबुल फज्ल सम्राट् से भेंट करने के लिए बीजापुर के निकट खरगो गया। अकबर उस पर बहुत प्रसन्न था उसे चार हजारी बना दिया। अबुल फज्ल दक्षिण में वीरतापूर्वक युद्ध करता रहा।

शासन के ४७ वें वर्ष में सलीम ने दूसरी बार विद्रोह किया। अकबर के अनेक उच्च पदाधिकारी सलीम के पक्ष में थे। इसलिए सम्राट् ने अपने अत्यन्त विश्वस्त मंत्री अबुल फज्ल को राजधानी में बुलाया। अपने पुत्र अब्दुर्रहमान को अपना कार्यभार सौंप कर अबुल फज्ल ने थोड़े से सैनिकों के साथ आगरे के लिए प्रस्थान किया। सलीम ने उसकी अरक्षित यात्रा से लाभ उठाया। अबुल फज्ल को ओरछा से होकर यात्रा करनी थी। इसलिए सलीम ने ओरछा-नरेश वीरसिंह बुन्देला का अबुल फज्ल की हत्या करने के लिए तैयार किया। वीरसिंह ने अनेक घुड़सवारों तथा पैदल सैनिकों को अबुल फज्ल पर आक्रमण करने के लिए नरवर के निकट रखा। जब अबुल फज्ल उज्जैन पहुँचा तब उसके साथियों को सलीम के कुचक्र का पता चला और उन्होंने अबुल फज्ल को सलाह दी कि अपना मार्ग बदल दे और घाटी चाँदा होकर आगरा जाय। किन्तु अबुल फज्ल ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। शुक्रवार १२ अगस्त सन् १६०२ को जब वह नरवर से ६ कोस पर था तब वीरसिंह के सैनिकों ने उस पर आक्रमण किया। अबुल फज्ल ने शूरतापूर्वक उनका सामना किया किन्तु एक सैनिक के भाले से घायल होकर वह धराशायी हो गया और उसका प्राणान्त हुआ। वीरसिंह ने उसका सिर काट कर इलाहाबाद में सलीम के पास भेज दिया। सलीम ने उसे एक गन्दी जगह में फेंकवा दिया जहाँ वह बहुत दिनों तक पड़ा रहा। उसकी हत्या का समाचार पा कर सम्राट् बहुत शोकाकुल हुआ और उसने वीरसिंह से बदला लेने का बहुत प्रयास किया परन्तु असफल रहा। उसके देहावसान

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के उपरान्त वीरसिंह जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। जहाँगीर ने उसे ओरछा का राज्य और तीन हजारी का मनसब प्रदान किया।

अबुल फज्ल अद्वितीय लेखक था। उसकी शैली अनुपम थी। भाषा पर उसका ऐसा अधिकार था, शब्दों की उसके पास ऐसी प्रचुरता थी और वाक्य-गठन में वह ऐसा दक्ष था कि कोई अन्य लेखक उसका अनुकरण नहीं कर सकता था। उसके मनोभाव ऐसे सुसंस्कृत थे और विचार ऐसे उदार थे कि कहीं भी उसने स्त्रियों के विषय में कोई अश्लील अथवा ओछी बात नहीं लिखी है और न कहीं नैतिकता की उपेक्षा की है। उसके हृदय में सच्चाई के लिए प्रगाढ़ प्रेम था और उसकी लेखनी में ऐसा बल था कि वह निर्भीकतापूर्वक उसकी अभिव्यक्ति करता था। उसका सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ अकबरनामा है जिसका तीसरा भाग आईने अकबरी है। यह ग्रन्थ उसने अकबर के शासन के ४२ वें वर्ष में लगभग समाप्त कर दिया था। ४३ वर्ष में बरार की विजय के कारण (१५९६-९७) उसमें थोड़ी-सी और वृद्धि कर दी गई। उसका दूसरा ग्रन्थ मकतूबाते अल्लामी है जिसे इन्शाये अबुल फज्ल भी कहते हैं। यह उसके पत्रों का संग्रह है जिसका संकलन अब्दुस्समद ने उसकी मृत्यु के उपरान्त किया था। उसका तीसरा ग्रन्थ अयार दानिश है। कालिय दमन का अरबी में अनुवाद कलीला दमना कहलाता है। अबुल फज्ल ने अरबी से फारसी में अनुवाद करके उसका नाम अयार दानिश रखा है। उसने महाभारत के अनुवाद में तथा तारीखे अल्फी के लिखने में योगदान दिया था। कहते हैं कि इन ग्रन्थों के अतिरिक्त उसने तीन और पुस्तकें भी लिखी थीं। उनमें से एक पुस्तक का नाम रिसालये मुनाजात है जो ईशोपासना पर है। जामेयुल्लुगात एक कोष है और कोशकुल एक कहानी संग्रह है।

अबुल फज्ल ने अपने समय के धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनीतिक विषयों को एक नया मोड़ दिया और तत्कालीन समस्याओं को सुलझाने में उसका काफी हाथ था। अकबर-कालीन भारत पर उसका गम्भीर तथा विस्तृत प्रभाव था। अकबर के साथ उसका नाम अविच्छिन्नरूप से सम्बन्धित है। उसकी कृतियाँ अकबर के व्यक्तित्व और उसकी शासन व्यवस्था एवं तत्कालीन समस्याओं और विचारों को समझने में जिज्ञासु विद्यार्थी की सहायता करती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अबुल फ़ज़्ल की भूमिका

अल्लाहो अकबर

[ईश्वर महान् है]

ए हमा दर पर्दा निहाँ राज़ तो वेख़बर अंजाम ज़े आग़ाज़े तो
दर तो हम आग़ाज़ व हम अंजाम गुम हर दो बशहरे किदमत नाम गुम
पाये सखुन लंग व ज़बान संगे लाख़ बाले क़दम तंग व वियाबाने फराख़
हैरते अन्देशा सिपासे तो बस वेखुदेम रूये शेनासे तो बस

(हे प्रभो ! आपका रहस्य गुप्त है। आपकी पूर्णता आरम्भ से अज्ञात है। आदि और अन्त आप में लुप्त हैं। आपके शाश्वत राज्य में इन दोनों का नाम ही नहीं है। मेरे शब्द पंगु हैं और मेरी जिह्वा पथरीली भूमि है। मेरे पैरों के डैने छोटे हैं और जङ्गल विस्तृत है। मेरे विचार चकित हैं और यही आपकी सर्वश्रेष्ठ प्रशंसा है। आनन्दातिरेक में ही मैं आपका साक्षात्कार करता हूँ।)

सच्चे ज्ञानी के लिए यह उचित है कि ईश्वर के गुणगान को केवल शब्दों तक ही सीमित न रखे बल्कि अपने कर्मों से भी उसका गुणानुवाद करे। विश्वस्रष्टा ईश्वर की अद्भुत कृतियों का वर्णन करके अमर आनन्द की राशि एकत्र करे और जो बात हृदय में हो उसी को लेखनीबद्ध करे। सम्भव है कि उस पर राजत्व का प्रकाश पड़े और वह इस प्रकाश में समुद्र से कुछ बूँदें और जङ्गल से कुछ कण प्राप्त कर ले। इस प्रकार वह अमर आनन्द प्राप्त कर ले और उसके शब्दों तथा कर्मों की बंजर भूमि आबाद हो जाय।

अबुल फ़ज़्ल आत्मज मुबारक सम्राट् के यशोगान द्वारा ईश्वर का गुणानुवाद करता है और बहुमूल्य मोतियों को वर्णन के धागे में पिरोता है। यशोगान का यह उद्देश्य नहीं है कि बादशाह के महत्त्वपूर्ण कार्यों और उत्तम गुणों से मानव जाति को परिचित कराया जाय जिसने संसार को विभिन्न आविष्कारों से सुशोभित किया है और अपने नूतनता-प्रिय मन से संसार के व्यवस्था-सूत्र में मूल्यवान् मोती पिरोया है।[1] यह बुद्धिमानी नहीं है कि वह प्रत्यक्ष वस्तु का वर्णन करने का विचार करे और अपने को विद्वानों के उपहास-बाण का लक्ष्य बनाए। वह अपने व्यक्तिगतज्ञान रूपी मोती को संसार के बाजार में प्रस्तुत करता है और अपने हृदय के अहंकार को इस दौड़-धूप के कार्य में व्यस्त रखता है। स्पष्ट है कि ऐसे महान् कार्य के सम्पादन का दायित्व अपने ऊपर लेना जिसका बोझ

---

[1] ब्लाकमैन ने मूल पाठ में "अब्दाय चेहरा आराय गौहरीन इख्तराय बरफराजे पैदाई बुरद" का अर्थ "is an ornament to God's noble creation" (ईश्वर की श्रेष्ठ सृष्टि का भूषण) किया है जो भ्रामक प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दिव्य प्राणी भी नहीं उठा सकते आत्मप्रशंसा करना नहीं है बल्कि अपनी अयोग्यता तथा अदूरदर्शिता को प्रगट करना है। लेखक का उद्देश्य यह है कि वह इस शुभकाल के अन्वेषकों को बादशाह की बुद्धिमत्ता, उदारता तथा सुव्यवस्थता हृदयंगम कराए जो भौतिक तथा आध्यात्मिक रहस्यों से परिचित है और ज्ञानक्षेत्र का सजग विचरणकर्त्ता है तथा आगामी पीढ़ियों के लिये उत्तम उपहार प्रस्तुत करे। साथ ही जीवन कृतज्ञता-प्रकाश से विभूषित हो जाय और अन्तिम यात्रा का संबल प्राप्त हो जाय। इस स्वार्थप्रिय संसार में जहाँ स्वभाव विभिन्न हैं और इच्छायें असंख्य हैं न्याय का अनस्तित्व है, और पथ-प्रदर्शकों का अभाव है। सम्भव है कुछ लोग ऐसे हों जो इस बुद्धिमत्तापूर्ण ग्रन्थ के द्वारा अपना कार्य-सम्पादन कर सकें तथा ज्ञान और कार्य के अनन्त वन में चिन्ता मुक्त हो जाय। इसी उद्देश्य से लेखक ने बादशाह के कुछ आईनों को लिपि-बद्ध किया है और दूर तथा निकट रहने वालों के लिए बुद्धिमत्ता का एक विधान छोड़ा है। चूँकि उद्देश्य यह है कि शाही कानूनों को लिखा जाय, इसलिए आवश्यक है कि बादशाह के उच्चपद का कुछ वर्णन तथा इस उच्चपद के सहायकों का भी चित्रण किया जाय।

अद्वितीय न्यायप्रिय (ईश्वर) की दृष्टि में राजत्व से उत्कृष्ट और कोई पद नहीं है, और वे सभी जो कार्य-कुशल हैं उसके ऐश्वर्यस्रोत से तृप्त होते हैं। जनसमूह की राजद्रोह भावना का उपचार होना और जनता को शासन में रखना ही राजत्व की आवश्यकता के सम्बन्ध में तर्क चाहने वालों को शान्त करने का साधन है। **'पादशाह'** शब्द का अर्थ भी इस कथन की पुष्टि करता है। क्योंकि **'पाद'** का अर्थ है **'स्थायित्व'** तथा **'अधिकार'** और **'शाह'** का अर्थ है **'मूल'** तथा **'स्वामी'**। इसलिए सम्राट् स्थायित्व तथा अधिकार का मूल स्वामी है। यदि शासन का आतंक न होता तो कलह तथा द्रोह का उपद्रव कैसे दबता और स्वार्थप्रियता का लोप कैसे होता, लोग क्रोध और लोभ के बोझ से दब कर विनाशगर्त में गिर जाते, समस्त संसार से शोभा जाती रहती और थोड़े ही समय में समृद्ध जगत् उजाड़ हो जाता। बादशाह के न्याय के प्रकाश से अनेक लोग आज्ञापालन का मार्ग प्रफुल्लवदन तथा सहर्ष ग्रहण कर लेते हैं, और बहुत से लोग दण्ड के डर से अत्याचार से अपने हाथ खींच लेते हैं और विवश होकर **सन्मार्ग** पर चलते हैं। 'शाह' उसको भी कहते हैं जो अपने समकक्षों में श्रेष्ठ हो, जैसे 'शाह सवार' और 'शाह राह'। लोग दामाद (दूल्हे) को भी 'शाह' कहते हैं। दुनिया रूपी दुलहिन बादशाह से वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ लेती है और वह मनमोहिनी उसकी दासी बन जाती है।

मूर्ख तथा अदूरदर्शी मनुष्य सच्चे सम्राट् और स्वार्थी शासक में अन्तर नहीं कर सकते, और अन्तर कर भी कैसे सकते हैं, क्योंकि परिपूर्ण कोष, वृहद सेना, सभ्य सेवक, आज्ञाकारी प्रजा, बुद्धिमानों की प्रचुरता, गुणवानों की बहुलता, तथा वैभव की सामग्री की अधिकता दोनों के पास होती हैं। किन्तु सत्यदर्शी तथा गम्भीर दृष्टि वालों को यह भेद प्रकट होता है। उपरोक्त वस्तुएँ प्रथम प्रकार के शासक के पास स्थायी और द्वितीय के पास अल्पकालीन होती हैं। सच्चा राजा अपने हृदय को इन वस्तुओं से नहीं बंधने देता। उसका ध्येय होता है अत्याचारों का नाश करना तथा मनुष्यों की योग्यताओं का उपयोग करना। शान्ति, कल्याण, पवित्रता, न्याय, सुशीलता, स्वामिभक्ति, सत्यता एवं निश्छलता की प्रचुरता आदि इसके फल हैं। स्वार्थी शासक दिखावटी काम करने, मनुष्यों को दास बना रखने तथा स्वार्थ और भोग-विलास में व्यस्त रहता है जिससे भय, अशांति, संघर्ष, अत्याचार, विश्वासघात और चोरी का बाजार गर्म होता है।

राजत्व अनुपम न्यायी ईश्वर का आलोक, संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य का प्रकाश[1], पूर्णता की पुस्तक का तर्क[2], तथा सद्गुणों का आगार है। आधुनिक भाषा में इसे फ़र्रे-एज़दी (दिव्य प्रकाश) कहते हैं और

---

[1] अकबर ईश्वर के दृश्यमान रूप में सूर्य की उपासना करता था जैसा बाद में प्रकट हो जायगा।

[2] 'जरायदे कमाल' जिसका अर्थ होता है 'पूर्णता की पत्रिका।'

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्राचीन काल में इसको 'कियान ख़ोरा' (उत्कृष्ट दीप्ति-मंडल) कहते थे। विना किसी मध्यस्थ की सहायता के ईश्वर इसे बादशाह को प्रदान करता है और इसे देखकर सब लोग वन्दना के रूप में उसके सम्मुख अपना सिर झुका देते हैं और उससे अनेक सद्गुण प्रकट होते हैं। **१. प्रजा के लिए पैतृक प्रेम**—भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग उसकी कृपा से सुख प्राप्त करते हैं और साम्प्रदायिक विभिन्नता होने पर भी उनमें भेद-भाव की धूल नहीं उठती। बुद्धिमान बादशाह समय की गति पहचानता है और उसके अनुकूल कार्य करता है। **२. हृदय की उदारता**—कठोर दृश्यों को देखकर वह क्षुब्ध तथा उद्विग्न नहीं होता और अशिष्टता के उपद्रव से उसके हृदय को ठेस नहीं पहुँचती। उसमें वीरता आ जाती है। ईश्वर-प्रदत्त शूरता से, अपराधी को दंड देने की उसकी शक्ति दूनी हो जाती है और अपराधी का उच्चपद दण्ड देने से उसको नहीं रोकता। हर छोटा बड़ा प्रार्थी उससे अपना मनोरथ सिद्ध करता है और किसी को प्रतीक्षा का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। **३. ईश्वर में दिन प्रतिदिन वृद्धिमान विश्वास**—वह प्रत्येक कार्य का वास्तविक कर्त्ता ईश्वर को मानता है (अपने आपको उसका केवल साधन मानता है)। इससे उद्देश्यों की विरुद्धता से वह व्यग्र नहीं होता। **४. ईश्वर की उपासना**—सफलता उसके मन में असावधानी नहीं उत्पन्न करती और असफलता उसे (ईश्वर की शरण छोड़कर) द्वार-द्वार भीख मांगने के लिये व्यग्र नहीं करती। वह इच्छा की बागडोर को बुद्धि के हाथ में रखता है और वासना के विस्तृत क्षेत्र में तृप्ति के लिए व्याकुल नहीं होता और अनुचित पदार्थों की खोज में अपना बहुमूल्य समय नहीं नष्ट करता। वह क्रोध रूपी अत्याचारी को बुद्धि के अधीन रखता है और उसके हृदय में अंध क्रोध नहीं उठता, और विवेक-हीनता मर्यादा का उल्लंघन नहीं करती। वह मेल[1] के शिखर पर विराजमान होता है, जिससे वह पथ-भ्रष्ट लोगों को सुमार्ग पर वापस लाने का साधन बनता है और उनके निर्लज्जता का पर्दा नहीं फटता। न्याय करने में (विनम्रता के कारण) वह अपने को ऐसा प्रकट करता है मानों वह स्वयं प्रार्थी है और प्रार्थी न्यायाधीश है। प्रार्थी प्रतीक्षा के मार्ग में नहीं बैठते। वह ईश्वर की आज्ञाकारिता में सृष्टि का कल्याण चाहता है और लोगों को प्रसन्न करने के लिए बुद्धि के विरुद्ध आचरण नहीं करता। वह सदा सत्यवादियों की खोज में रहता है और उनके उन शब्दों से क्रुद्ध नहीं होता जो ऊपर से तो कटु होते हैं परन्तु जिनका परिणाम मधुर होता है। वह सूक्ति कोटियों[2] तथा वक्ता के पद का विचार रखता है। वह केवल इस बात से सन्तुष्ट नहीं कि वह स्वयं अत्याचार नहीं है करता बल्कि चाहता है कि उसके पूरे राज्य में अन्याय न रहे।

वह सदा समाज रूपी व्यक्ति के स्वास्थ्य का ध्यान रखता है और उसकी भिन्न-भिन्न बीमारियों का उपचार करता है। जिस प्रकार तत्त्वों के उचित सम्मिश्रण से प्राणियों के स्वभाव में सामञ्जस्य[3] रहता है उसी प्रकार पदों के उचित विभाजन से राजनीतिक व्यवस्था सन्तुलित रहती है और इस प्रकार एकता के प्रकाश से अनेक लोग ऐसा आचरण करने लगते हैं मानों उनका एक ही शरीर हो।

संसार के लोग चार से अधिक वर्गों के नहीं होते[4]। **१. योद्धा**—संसार रूपी शरीर में आग के समान हैं। इस समूह की भयंकर बुद्धि-ज्वाला से उपद्रवी लोगों के षड्यंत्र का घास-फूस भस्म हो जाता है और उपाधिपूर्ण संसार में सुख का दीपक प्रकाशित हो जाता है। **२. शिल्पकार तथा व्यापारी**—वायु के स्थान पर हैं। इस समुदाय के कार्य-कौशल

---

[1] फारसी में 'मुदारा' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने propriety 'औचित्य' किया है।

[2] मरातिबे सखुन। [3] एतदाल। [4] यह अनुच्छेद फिरदौसी के 'शाहनामा' के 'दर दास्ताने जमशेद' नामक अध्याय से मिलता है। यह इख़लाके मुहसिनी के अध्याय १५ में भी पाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तथा देशाटन से ईश्वर के उपहार (बख़्शिश) सब को प्राप्त हो जाते हैं और हृदयोल्लासकारिणी वायु जीवन के गुलाब रूपी वृक्ष को बढ़ाती है। ३. विद्वान्—दार्शनिक, वैद्य, अंकगणितज्ञ, रेखागणितज्ञ, और ज्योतिषी आदि जल के समान हैं। इस ज्ञानी समूह की लेखनी तथा बुद्धि रूपी सरिता से संसार के सूखे (दुर्भिक्ष) में जल निकल पड़ता है और उसकी सिचाई से संसार रूपी उद्यान को विशेष शीतलता प्राप्त होती है। ४. श्रमजीवी तथा कृषक—पृथ्वी की भाँति हैं। इनके परिश्रम से जीवन की सामग्री पूरी होती है और इनके कार्य से शक्ति तथा आनन्द प्राप्त होते हैं। अतएव शासक के लिए यह अनिवार्य है कि वह प्रत्येक वर्ग को समुचित स्थान पर रख कर संसार को समृद्ध बनावे और कार्य-कौशल के अनुसार प्रत्येक का सम्मान करे जिससे संसार के उपद्रव नष्ट हो जाँय, समाज में सन्तुलन तथा सामंजस्य स्थापित हो जाय।[1]

जिस प्रकार संसार मनुष्यों के उपरोक्त चार वर्गों से सन्तुलित रहता है उसी प्रकार राजा भी प्रजा को चार वर्गों में विभक्त कर राज्य में सुव्यवस्था स्थापित रखता है।

१. राज्य के अमीर लोग——जो अपने ऊपर विश्वास कर प्रत्येक कार्य को उत्तम ढङ्ग से पूरा करते हैं। और युद्ध-क्षेत्र को मित्रता के सम्मान की दीप्ति से प्रकाशित कर प्राण देने में भी मुँह नहीं मोड़ते। वैभवशाली दरबार के ये भाग्यवान पुरुष अग्नि के समान हैं जो हृदय-प्रकाशक भी हैं और शत्रु-दाहक भी। इस वर्ग का अध्यक्ष 'वकील' है जो अपनी बुद्धिमत्ता से सद्भक्ति (इख़लास) के चार पदों[2] पर पहुँच कर बादशह का राजनीतिक तथा आर्थिक सहायक होता है। पवित्र मंत्रणा-सभायें उसके ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होती हैं और अपनी गम्भीर दृष्टि से वह राज्य के बड़े-बड़े कार्यों का प्रबन्ध करता है। पदोन्नति, पदावनति, नियुक्ति तथा पृथक्करण उसकी सम्मति से होते हैं। उसको ज्ञानी, चिन्ताशील, उच्च साहसी, सत्स्वभाव, दानशील, उदार, शान्तिप्रिय, प्रफुल्लवदन, अपने और पराये के साथ समान व्यवहार करने वाला, मित्र तथा शत्रु के प्रति समान आचरण करने वाला, तौल कर वार्तालाप करने वाला, कार्यपटु, सत्यवादी, सुरक्षित, सम्मानित, सम्मति लेने योग्य, विश्वसनीय, धीर, दूरदर्शी, राज दरबार के शिष्टाचार से परिचित, राजनीतिज्ञ, आज का काम कल पर न टालने वाला तथा कार्याधिक्य से व्याकुल न होने वाला होना चाहिए। वह दूसरों की इच्छाओं को पूरा करना अपना कर्तव्य समझे और लोगों के पदों का समुचित ध्यान रख कर काम करे और सर्वप्रियता प्राप्त करने के लिए छोटों का भी सम्मान करे, अनुचित वार्तालाप तथा निन्दनीय आचरण से अपने को दूर रखे। यद्यपि वह दफ्तर का स्वामी नहीं है तथापि अर्थ विभागीय अध्यक्ष उसके पास आर्थिक विवरण[3] भेजते हैं और वह दूरदर्शिता से उनका संक्षिप्त विवरण[4] अपने पास रखता है। मीर माल[5], मुहरदार[6], मीर बख़्शी[7], बारबेगी[8] कूरबेगी[9], मीरतोज़क[10], मीर वह[11], मीर बर्र[12],

---

[1] हिन्दू शास्त्रों के चार वर्णों से तुलना कीजिए।

[2] अकबर का कथन था कि पूर्ण सद्भक्ति चार वस्तुओं के त्याग से प्राप्त होती है—प्राण, धन, धर्म तथा वैयक्तिक सम्मान। जो लोग अकबर को अपना धर्मगुरु मानते थे। उन्हें इस प्रकार की सद्भक्ति दिखानी पड़ती थी और तब वे दीन इलाही में सम्मिलित किए जाते थे।

[3] बाजगश्त। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ returns अंकपत्र लिखा है।

[4] फिहिरिसा मकासिद। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ abstract of their returns अंकपत्रों की संक्षिप्ति लिखा है।

[5] शायद बादशाह के जेब खर्च का हिसाब रखने वाला अधिकारी (ब्लाकमैन)। [6] शाही मुहर रखने वाला। [7] वेतनाध्यक्ष। [8] पेशकार जैसा अधिकारी जो लोगों को तथा उनके प्रार्थनापत्रों को बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत करता था। उसे मीर अर्ज भी कहते हैं। [9] राज्य के अस्त्र-शस्त्रों का प्रधान अधिकारी। [10] रीति-रिवाजों का अध्यक्ष। [11] जलसेना का अध्यक्ष। [12] स्थलसेना का अध्यक्ष। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ लिखा है 'शाही वनों का अधीक्षक'।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मीर मंजिल[1], ख्वान सालार[2], मुन्शी[3], कुशबेगी,[4] आख्ताबेगी[5] इस वर्ग में सम्मिलित हैं। इनमें से प्रत्येक को दूसरों के कर्तव्यों से अभिज्ञता रखना आवश्यक है।

२. **विजय के सहायक**—कर एकत्र करने वाले तथा आय-व्यय के अधीक्षक शासन-शरीर में वायु के समान हैं, कभी मनोल्लासवर्द्धक वायु तथा कभी प्राणघातक लू के समान। इस वर्ग का प्रधान 'वजीर' होता है जिसको 'दीवान' भी कहते हैं। वह अर्थविभाग में बादशाह का नायब होता है। राजकोषों की रक्षा और हिसाब-किताब की जाँच-पड़ताल उसके सुपुर्द है। लोग उसे राजकर के धन का सर्राफ और उजड़े हुए जगत् का आबाद करने वाला समझते हैं। वह भगवद्भक्त,[6] चतुर अंकगणितज्ञ, निर्लोभ, सावधान, स्नेही,[7] संयमी, कार्य-पटु, सुलेखक, स्पष्ट लेखक, सत्यवादी, ईमानदार, प्रसन्नवदन तथा अध्यवसायी होता है। लेखा-विभाग का प्रधान अधिकारी है। वह अपनी दूरदर्शिता से मुस्तौफी[9] की कठिनाइयों को दूर करता है। जो कठिनाइयाँ वह हल नहीं कर सकता उनको वकील हल करता है। मुस्तौफ़ी, साहबे तौजीह,[10] अवार्जा नवीस[11], मीर सामान,[12] नाजिरे ब्यूतात,[13] दीवाने ब्यूतात,[14] मुशरिफे गंजूर,[15] वाकया नवीस,[16] आमिल खालसा[17] उसके अधीन हैं। यह लोग वजीर के निर्देश के अनुसार कार्य करते हैं। कुछ बादशाह वजारत[18] को वकालत[19] का एक अंग समझते हैं और ऐसे व्यक्ति की खोज में रहते हैं जो राजरूपी भवन के इन दोनों स्तम्भों के कार्यों को पूरा कर सके। परन्तु कभी-कभी वकील के दुष्प्राप्य होने पर एक व्यक्ति को (जिसमें वकील के कुछ गुण होते हैं) मुशरिफे दीवान बनाते हैं। वह पद के विचार से दीवान से बड़ा और वकील से छोटा होता है।

३. **बादशाह के संगी साथी**—जो अपनी बुद्धि के प्रकाश, तीव्र दृष्टि की आभा, समय के ज्ञान की शक्ति, मानव प्रकृति का घनिष्ठ परिचय, प्रसन्न वदन[20] और मधुर भाषण से राजसभा को विभूषित करते हैं। अपने धार्मिक विश्वास के सौन्दर्य तथा शुभ कामना से वे राज्य के बाजार में सद्गुणों के हजारों भंडार खोल देते हैं। संसार के युद्ध-क्षेत्र में अपनी प्रकाशपूर्ण सम्मति तथा शुद्ध विचार से वे लोभ के पैर बाँध कर क्रोध की चिनगारियों को अपनी बुद्धिमत्ता की वर्षा से बुझा देते हैं। शासन रूपी शरीर में यह सौभाग्यवान समूह जल का स्थान रखता है। जब इनका स्वभाव शुद्ध होता है तो वे वैर की धूल को मनुष्यों के हृदय से दूर कर देते हैं। इससे सभा रूपी वाटिका में ताजगी और हरियाली छा जाती है। परन्तु यदि ये लोभ संयम का अतिक्रमण करते हैं तो संसार को विपत्तियों के तूफान में डुबो देते हैं और लोग दुर्भाग्यों की बाढ़ से विनाश की धारा में गिर पड़ते हैं। इस वर्ग का प्रधान 'हकीम'[21] है। यह अपनी बुद्धि तथा चरित्र की सहायता से शिष्टाचार और सभ्यता प्रदर्शित करके संसार के सुधार के लिए कमर

---

[1] दरबार अथवा शयनागार का प्रधान प्रबन्धक। अकबर का दरबार प्रायः यात्रा किया करता था। [2] पाकालयाध्यक्ष। [3] वैयक्तिक सचिव। [4] पक्षियों का अधीक्षक। [5] अस्तबलों का अधीक्षक। [6] इलाहीबन्दा जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने दीन इलाही का सदस्य किया है। [7] गर्म खून जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने warm hearted स्नेहशील किया है। [8] नेक मंजर जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने Condescending कृपाशील किया है जो भ्रामक है। [9] नायब दीवान। [10] सैनिक लेखाध्यक्ष। [11] दरबार के दैनिक व्यय का लेखा रखने वाला। [12] दरबार के सामान तथा भंडार आदि का अधिकारी। [13] शाही कारखानों का रक्षक। [14] शाही कारखानों का हिसाब-किताब रखने वाला। [15] राजकोष का [16] वटनाओं का प्रमुख लेखक। [17] खालसा भूमि का प्रमुख अधिकारी। [18] वजीर का पद। [19] वकील का पद। लिपिक। [20] कुशादा रुई जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने frankness निष्कपटता और मु० फिदाअली ने 'कुशादा पेशानी' किया है। [21] तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कसता है। सद्र,[१] मीर अद्ल,[२] काज़ी[३], तबीब,[४] मुनज्जिम,[५] शायर,[६] रम्माल[७] और इसी प्रकार के लोग इस समूह में हैं।

४. सेवक—जो दरबार में बादशाह की सेवा करते हैं। राज्य-व्यवस्था में यह समूह पृथ्वी के स्थान पर है। यह लोग परिचर्या के राजमार्ग में पड़े रहते हैं और बादशाह की निकटता की मंजिल के रजःकण हैं। यदि ये लोग गन्दगी और ज़ंग (मुर्चा) से साफ़ होते हैं तो उनका अस्तित्व अक्सीर के समान होता है अन्यथा वे मनोकामना के चेहरे की धूल हैं। ख़वास,[८] कुर्ची,[९] शरबतदार,[१०] आबदार,[११] तोशकची,[१२] करकराक[१३] आदि इस समूह में सम्मिलित हैं। यदि सौभाग्य से इनमें एकता होती है तो वे वैभव-वाटिका के गुलदस्ता बन जाते हैं। भाग्यशाली सम्राट् जिस प्रकार प्रथम चार समूहों से संसार में उत्तम प्रबन्ध करता है उसी प्रकार शासन रूपी शरीर को भी द्वितीय चार समूहों के सुधार से सुव्यवस्थित करता है।

प्राचीन काल के बुद्धिमानों ने शासन के चार स्तम्भों का इस प्रकार उल्लेख किया है। पहला, 'ईमानदार आमिल'[१४] जो किसानों का रक्षक, प्रजा का निरीक्षक, देश का विकास करने वाला, कोष की पूँजी बढ़ाने वाला हो। दूसरा, 'तीमार दारे सिपाह'[१५] जो अपने अधीनस्थों को कृतज्ञ बनाने का इच्छुक न हो। तीसरा, 'मीर दाद'[१६] जो लोभ तथा स्वार्थ से मुक्त होकर सूक्ष्मदर्शिता तथा दूरदर्शिता के शिखर पर विराजमान हो और केवल साक्षियों और शपथों पर निर्भर न रहकर विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछ कर अपने लक्ष्य पर पहुँच जाय। चौथा, जासूस[१७] जो वर्तमान समय की घटनाओं का समाचार बिना घटाये-बढ़ाये पहुँचाये और सत्य तथा दूरदर्शिता के धागे को हाथ से न जाने दे।

न्यायप्रिय शासक के लिए अनिवार्य है कि परीक्षा के सिंहासन पर बैठे और पाँच प्रकार के मनुष्यों को जिनमें संसार के सब मनुष्य आ जाते हैं पहचान लेवे और बुद्धि के अनुसार आचरण करे। १—सर्वोत्तम वह बुद्धिमान मनुष्य है जो अपने ज्ञान से समयानुसार उपयोगी और आवश्यक काम करे और जिसके सद्गुणों का स्रोत केवल उसी की गली में सीमित न रहकर दूसरों की खेती को हरी-भरी करे। केवल वही व्यक्ति शासक को परामर्श देने का भागी हो सकता है। २—इसके बाद (पुरुष)[१८] आता है जिसके सत्कर्मों की सरिता उसकी गली से आगे न जाय और दूसरों के लिए जलस्रोत न बने। यद्यपि ऐसा पुरुष कृपा तथा सम्मान के योग्य है तथापि विश्वसनीयता के उच्च पद के योग्य नहीं है। उससे निकृष्ट सरल पुरुष है जिसके कार्यों की आस्तीन पर परोपकार के लक्षण नहीं होते किन्तु बुराई तथा दुष्कर्मों से भी जिसका अंचल गन्दा नहीं है। यद्यपि वह सम्मान का पात्र नहीं है तथापि सुख की छाया में बैठने का अधिकारी है। ३—इससे निकृष्ट (पुरुष)[१९] है जिसके घर में विनाश की सामग्री के अतिरिक्त कुछ नहीं होता परन्तु जिससे जनता को कोई कष्ट नहीं होता। शासक इसको असफलता (निराशा) के गर्म स्थान में रखकर श्रेष्ठ उपदेशों और कठोर धिक्कारों तथा दण्डों द्वारा सन्मार्ग पर लाता है। ४—सबसे निकृष्ट दुष्ट प्रकृति है जिसके कुकर्म

---

[१] इसे 'सद्रे जहाँ' भी कहते हैं। यह राज्य का प्रधान न्यायाधिपति तथा प्रधान शासक था। [२-३] काज़ी मुकदमा सुनता था और मीर अदल दण्ड की आज्ञा देता था। [४] वैद्य। [५] गणित-ज्योतिष का विद्वान्। [६] कवि। [७] रमल फेंकने वाला। [८] भोजन कराने वाला। [९] कवच ले जाने वाला। [१०-११] शरबत और पानी के प्रधान सेवक। [१२] बिछौनों का प्रधान सेवक। [१३] वस्त्रालय का प्रधान सेवक। [१४] कलेक्टर; संग्राही। [१५] सेनापति। [१६] प्रधान न्यायाधिपति। [१७] गुप्तचर। [१८] 'सादत पजोहे' जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने "the man of good intentions" सत्संकल्पी किया है। [१९] 'गनूदा बख्ते' जिसका अर्थ ब्लाकमैन ने "inconsiderate man" अर्थात् 'अविवेकी मनुष्य' किया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरे लोगों के पापों को बढ़ाते हैं और जिसके दुष्कर्म से संसार को कष्ट होता है। यदि सुषुप्त-भाग्य का उपचार इसके लिए उपयोगी न हो तो राजा उसे कोढ़ी समझकर नागरिकों से अलग रखे। यदि ऐसे हृदय-विदारक दण्ड से भी उसकी अज्ञान-निद्रा भग न हो तो उसको शोक के शिकंजे में कसकर राजा उसे न तो कोई काम दे और न घर में रहने दे। यदि उसके दुष्ट स्वभाव के लिए यह उपचार भी उपयोगी न हो तो राजा उसको अपने राज्य से निकाल दे और उसको निराशा के वन में भटकने दे। यदि यह दण्ड भी उसकी दुष्ट प्रकृति को लाभप्रद न हो तो उसकी आँखें फोड़ दी जाँय और हाथ-पाँव काट लिए जाँय। परन्तु उसको प्राण दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि बुद्धिमान लोगों ने मानव शरीर को ईश्वर की कारीगरी का नमूना समझ कर नाश करने की आज्ञा नहीं दी है।

अतएव न्यायप्रिय बादशाहों के लिए अनिवार्य है कि अपनी बुद्धिमानी तथा गम्भीर दृष्टि से लोगों के पद को पहचान कर कार्य करें। यही कारण है कि प्राचीन काल के ज्ञानियों ने लिखा है कि बुद्धिमान बादशाह हर छोटे व्यक्ति को सेवा में नियुक्त नहीं करते और जो नियुक्त हो चुके हैं उनमें से प्रत्येक को प्रतिदिन सामने आने का अधिकारी नहीं समझते; जिनको प्रति दिन सामने आने की अनुमति होती है उनमें से प्रत्येक को निकटता के बिछौने पर बैठने का पात्र नहीं समझते। जिनको यह पद प्राप्त हो जाता है उनमें से प्रत्येक घनिष्ठ वार्तालाप[1] की सभा में प्रवेश नहीं पाता, जिनको यह अधिकार प्राप्त है उनमें से प्रत्येक महती सभा के अधिवेशन में स्थान नहीं पाता। जो लोग सौभाग्य का यह प्रकाश प्राप्त करते हैं उनमें से प्रत्येक गुप्त-समिति में नहीं जा सकता। जिन पुरुषों को यह सौभाग्य प्राप्त है उनमें से प्रत्येक मंत्रि-परिषद् की बैठकों में नहीं जा सकता।

ईश्वर को धन्यवाद है कि हमारे समय के बादशाह इन सब उत्तम गुणों से ऐसे अलंकृत हैं कि यदि उनको सरे-दफ्तर[2] कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। बुद्धि के प्रकाश से लोगों की योग्यता को पहचान कर वे उनके अध्यवसाय का दीपक प्रकाशित करते हैं और बिना किसी कठिनाई के प्रसन्नवदन अपनी बुद्धि को कर्म-सौन्दर्य से सुशोभित करते हैं। अध्यात्म जगत का उनका नेतृत्व और पवित्र विस्तृत मार्ग की उनकी कार्य पटुता[3] का अनुमान वाक्शक्ति की गुनिया[4] से कौन लगा सकता है? और यदि उसका कुछ वर्णन किया जाय और कुछ रहस्य बतलाया जाँय तो श्रवण शक्ति कहाँ से आवे और समझने की शक्ति किससे माँगे? अतएव, उचित है कि लेखक इस प्रयास से अपने को दूर रखे और बाह्य जगत की कुछ विलक्षणताओं का वर्णन करे। शाला विभाग के अधिनियमों, सेना विभाग के अधिनियमों और साम्राज्य सम्बन्धी अधिनियमों का वर्णन किया जाता है, क्योंकि शासन के विभाग इन तीन से अधिक नहीं हैं। इस प्रकार लेखक कर्मकुशल अन्वेषकों के लिए एक उपहार तैयार करता है जो देखने में कठिन पर वास्तव में सरल है अथवा देखने में सरल पर वास्तव में कठिन है।

शासन व्यवस्था को समझने वाले अनुभवी और अतीत के इतिहासज्ञ इस सदेह में हैं कि पहले के शासकों ने बिना इन विधानों की जानकारी के किस प्रकार शासन-प्रबंध किया और राज्य का उपवन बुद्धिमानी के इस सोते की सिंचाई के बिना कैसे हरा-भरा रहा। इस कारण यह उत्तम ग्रंथ तीन प्रकार के आईनों से सुसज्जित हुआ, और जो उपकार मेरे साथ किए गए हैं उनके लिए इस ग्रंथ द्वारा कुछ आभार प्रकट किया गया है।

---

[1] बुस्तां सराय शुगुफ्तगी। [2] ब्लाकमैन ने इसका अनुवाद exordium किया है जिसका अर्थ है 'भूमिका' अथवा 'प्राक्कथन'। [3] अकबर ने दीन इलाही के अनुयायियों को जो चमत्कार दिखाए थे उनमें से कुछ का उल्लेख आईन ७७ में मिलता है। [4] बढ़ई का एक औजार जिससे वे लकड़ी नापते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेखक का निर्देश[1]

लोगों की जानकारी के लिए कुछ हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया गया है। अक्षरों की मात्रायें और उनके उच्चारण की विधियाँ निर्धारित कर दी गई हैं जिससे खोज करने वालों को कठिनाई न हो, और ग्रंथ की प्रतिलिपि लिखने में कुछ परिवर्तन न हो जाय। अलिफ़, लाम तथा इस प्रकार के अन्य वर्ण का नाम लिखकर सन्देह को दूर कर दिया है। कुछ को नुक्तों (विन्दुओं) से स्पष्ट कर दिया है और समाकृति वर्णों को बिना नुक्तों के प्रकट किया गया है। जो अक्षर केवल शुद्ध फारसी के हैं उनको भी प्रकट कर दिया गया है जैसे 'पदीद' की 'बे', 'चमन' की 'जीम', 'निगार' की 'काफ़', और 'मुज़दा' की 'ज़े'। कभी कभी तीन नुक्ते बढ़ाकर वर्णों को साफ़ कर दिया हैं। जो वर्ण फारसी भाषा में नहीं हैं उनको हिन्दी कह कर सन्देह को दूर कर दिया है। 'रूये' में 'इये', 'दस्त' में 'ते' को तहतानी और फ़ौक़ानी लिखकर अलग कर दिया है। 'अदब' की 'बे' बिलकुल स्पष्ट है। 'नून,' 'वाव', 'याय तहतानी', और 'हे' में से प्रत्येक वर्ण को, जिनकी पूरी और सही ध्वनि निकलती है उनको, बिना किसी बन्धन के इसी तरह लिखा है। परन्तु 'नून' जो नाक से बोली जाती है जैसे 'जां' की 'नून', इसको 'नूने खफ़ी' या 'नूने पिनहा' लिखकर स्पष्ट कर दिया है। कुछ वर्ण ऐसे हैं जो लिखे तो जाते हैं पर पढ़े नहीं जाते जैसे 'फरख़न्दा' की 'हे', उनको 'मक्तूब' लिख दिया है। पेश और ज़ेर जहाँ कहीं अस्पष्ट हैं वहां मजहूल लिखकर उच्चारण स्पष्ट कर दिया है। चूँकि 'अलिफ़' के पहले 'ज़बर' का होना अनिवार्य है और 'मखफ़ी' भी साकिन होता है, इसलिए उसे किसी चीज से आबद्ध नहीं किया है।

---

[1] यह निर्देश केवल मूल फारसी के पाठकों के लिए उपयोगी है क्योंकि इसमें उच्चारण आदि के नियमों का उल्लेख है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रथम भाग

(राजकीयशाला समृद्धि)

आईन १

राजकीयशाला

उच्च प्रकृति तथा महत्त्वाकांक्षी वह पुरुष है जो दूसरों की सहायता के बिना संसार के प्रति कण में दिव्य शक्ति की विचित्रता दर्शन करे और अपने आन्तरिक तथा बाह्य चरित्र को उसी के साँचे में ढाले, और इसके पश्चात् उससे परिचय प्राप्त करके अपना तथा दूसरों का सम्मान करे। जो व्यक्ति इस पद पर न पहुँचे तो उसे चाहिये कि सांसारिक लड़ाई-झगड़ों से परहेज करे और शान्ति-मार्ग का अनुसरण करे। यदि वह विरक्त एकान्तवासी है तो वह अपने को उत्तम गुणों से सुसज्जित करे और यदि वह अन्य मनुष्यों के साथ गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है तो आसक्तों की भाँति अपने कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न करे तथा चिन्तायुक्त होकर जीवनयापन करे।

लौकिक और आध्यात्मिक महानता किसी व्यक्ति को छोटे से छोटे कार्य करने से नहीं रोकती बल्कि वह प्रत्येक कार्य का करना ईश्वर की उत्तम उपासना समझता है।[1] यदि वह स्वयं सब कार्यों को न कर सके तो उसे चाहिये कि अपनी गम्भीर अन्तर्दृष्टि तथा व्यावहारिक कुशलता से एक या दो ऐसे व्यक्तियों को मनोनीत करे जो चतुर, बुद्धिमान, निष्पक्ष, अध्यवसायी तथा हृदयपारखी हों और राज्य के कार्य उनकी देखरेख में छोड़ दे।

जो शासक महान् कार्यों के अतिरिक्त कुछ नहीं करता बुद्धिमान् लोग उसकी गणना राजाओं में नहीं करते, यद्यपि कुछ निष्पक्ष निर्णायक सांसारिक माया में लिप्त ऐसे सम्राटों को क्षम्य समझते हैं क्योंकि अधिकांश अर्थलोलुप चाटुकार (जो छल-कपट से अपने को सज्जनों में सम्मिलित करते हैं) प्रायः ऐसे शासकों से मनुष्यों के पदों के अन्तर के विषय में वार्तालाप करते हैं[2] और उन सम्राटों को जो केवल बाह्य आडम्बर के प्रेमी होते हैं सदैव के लिए प्रमाद-निद्रा में सुला देते हैं। उनका यह उद्देश्य होता है कि लेन-देन की अपनी दूकान को सजावें और अपना घर आबाद करें। किन्तु भाग्यशाली शासक छोटे और बड़े कामों में कोई अन्तर नहीं समझते बल्कि ईश्वर की सहायता से इहलोक तथा परलोक दोनों का भार अपने साहस के कंधों पर रखते हैं और निश्चिन्तता और सुख तथा शान्ति के साथ जीवन बिताते हैं जैसा कि हमारे समय के सम्राट् का हाल है। हमारे सम्राट् ने अपनी बुद्धिमत्ता से हर विभाग की

---

[1] यह वाक्य अकबर प्रायः कहा करता था।

[2] अर्थात् अमुक काम छोटा है बादशाह के करने योग्य नहीं है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

समृद्धि की (जो सुशासन की पहली सीढ़ी है और जिस पर पुराने शासकों ने आत्मप्रतिष्ठा के कारण कम ध्यान दिया था) जानकारी प्राप्त कर ली है और हर विभाग के लिए उचित अधिनियम बनाए हैं और इस कर्तव्यपालन को ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का साधन समझते हैं।

इस अद्भुत कार्य की सफलता दो बातों पर निर्भर है। प्रथम, परिणामदर्शिता तथा बुद्धिमानी से लोकोपकारी कानून बनाना; द्वितीय, इन कानूनों को ईमानदार और परिश्रमी लोगों के सुपुर्द करना और यह देखना कि वे कानून कार्यान्वित होते हैं। यद्यपि शाला विभाग के अनेक कर्मचारियों का वेतन सैनिक कोष से दिया जाता है तथापि इलाही सन्[1] के उन्तालीसवें वर्ष में शाला विभाग के व्यय में ३०६१८६७६५ दाम[2] खर्च हुए थे। इस राज्य का व्यय आय के साथ नित्य प्रति बढ़ता जाता है। सौ से अधिक विभाग (कारखाने) हैं उनमें से प्रत्येक एक नगर बल्कि एक देश के समान है परन्तु बादशाह के निरन्तर ध्यान देने से हर विभाग में अच्छे सामान रहते हैं[3] और ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता है त्यों-त्यों वे सम्पन्न होते जाते हैं। शासन सुचारु रूप से होता है। सौभाग्य से जिस प्रकार हर विभाग की उन्नति होती जाती है उसी प्रकार बादशाह का निरीक्षण और ध्यान भी अधिक होता जाता है।

कुछ आईन भावी सत्यान्वेषियों के लिए उपहार के रूप में लिखे जाते हैं और इस प्रकार बुद्धिमानी तथा कार्यकौशल का दीपक प्रकाशित किया जाता है। जो अधिनियम सामान्यतया ग्रंथ के तीनों भागों में से प्रत्येक से सम्बन्धित हैं वे शाला सम्बन्धी आईन में लिखे गए हैं।

आईन २

राजकोष

प्रत्येक दूरदर्शी और बुद्धिमान् मनुष्य जानता है कि ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ यशोगान तथा उपासना यह है कि अपने समय के कष्टों का निवारण किया जाय और जनता की चिन्ता दूर की जाय। और यह कृषि की उन्नति, शालाओं की समृद्धि, राज्य के अधिकारियों की तत्परता तथा सेना के शुभ कर्मों[4] पर निर्भर है। उपरोक्त चार बातें सम्राट् के स्वयं उचित ध्यान देने और अपनी प्रजा के पालन-पोषण करने तथा बुद्धिमानी से धन संचय करने पर अवलम्बित हैं। इससे नागरिकों तथा ग्रामीणों की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और इससे दोनों समुदायों में सम्पन्नता आती है। न्यायी शासकों के लिए दोनों प्रकार की प्रजा का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। कुछ लोग धन एकत्र करना और आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का खोजना जिस प्रकार विरक्त त्यागियों के लिए घृणास्पद समझते हैं उसी प्रकार उनके विरुद्ध वे गृहस्थों के लिए उसका एकत्र करना आवश्यक समझते हैं। किन्तु यह कथन केवल बाह्य द्रष्टा अदूरदर्शियों का है। परन्तु तथ्य यह है कि दोनों प्रकार के मनुष्य अपनी इच्छा के अनुकूल अपनी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। दीन, सन्तोषी लोग इतना भोजन तथा वस्त्र चाहते हैं जो उनको ज्ञान-चिन्तन की शक्ति दे और सर्दी-गर्मी से सुरक्षित रखे। इसके प्रतिकूल दूसरे वर्ग के लोगों को इतना अधिक धन चाहिए कि वे अपने कोष को भर सकें, सेना को इकट्ठी कर सकें और अपनी शक्ति-वृद्धि के अन्य साधन प्रस्तुत कर सकें।

---

[1] इलाही सन् या तारी। रवे इलाही अकबर का चलाया सौर सम्वत् है जो १९ फरवरी १५५६ से आरम्भ होता है। [2] अकबर का एक रुपया = ४० दाम। इसलिए ७७२९६६९ रु० १४ आने व्यय हुए थे। [3] ब्लाकमैन ने इसका अर्थ They are all conducted wrth regulaity (उनका सञ्चालन नियमित रूप से होता है) लिखा है। [4] 'नेककिरदारी' का अर्थ ब्लाकमैन ने अनुशासन लिखा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसी दृष्टिकोण से जब सम्राट् ने पर्दा उठाकर[1] शासन के महत्त्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान दिया तो एतमाद खाँ ख्वाजा सरा[2] को उसके अनुकूल उपाधि देकर अपना सारा भेद उसके सामने रख दिया। ख्वाजा के अनुभव से बादशाह के कुछ विचार कार्यरूप में परिणत हुए और इसके बाद शनैः शनैः उनके विचार विस्तृत हुए और अन्त में सुन्दर अधिनियमों के रूप में प्रकट हुए। राज्य के विभिन्न प्रकार के भूमिकर की जाँच-पड़ताल आरम्भ हुई और सच्चे एवं अनुभवी मनुष्यों की बुद्धिमानी से सफलतापूर्वक समाप्त हुई।

इस:दूरदर्शिता से कि अपने और पराये में अन्तर कर सके खालसा और जागीर की जमीन अलग-अलग की गई। ईमानदार और परिश्रमी अधिकारी नियुक्त किए गए और एक-एक करोड़ दाम की आय के भाग हर एक के सुपुर्द किए गए। सन्तोषी बितक्ची[3] उनके साथ काम करने के लिए नियुक्त किए गए और हर एक के लिए एक ईमानदार खजांची रखा गया। बादशाह ने अपनी कृपा से किसानों की देखभाल तथा पालन-पोषण को दृष्टि में रखकर आज्ञा दी कि शाही कर्मचारी मालगुजारी जमा करने में किसानों पर इस बात का जोर न दें कि वह सरकारी रकम को शुद्ध और पूरे वजन वाले सिक्कों में जमा करें बल्कि जो कुछ भी उनसे लें उसके लिए मुहर लगाकर रसीद दें। इस प्रशंसनीय नियम से लगान वसूल करने वाले कर्मचारियों के दिमाग से सन्देह का मोर्चा दूर हो गया और प्रजा को अनेक प्रकार के अत्याचारों से मुक्ति मिली और आय में वृद्धि हुई और राज्य सम्पन्न हो गया। जब अर्थ (माल) का जल-स्रोत स्वच्छ हुआ तो एक निर्लोभ, परिश्रमी तथा मितव्ययी व्यक्ति केन्द्रीय प्रधान कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया और उसकी सहायता के लिए एक दारोगा और एक मुन्शी नियुक्त किए गए। सतर्कता और सावधानी का आधिपत्य हुआ और कार्यसंचालन के लिए उत्तम अधिनियम बनाए गए। जब प्रान्तीय कोषाध्यक्ष के पास दो लाख दाम इकट्ठे हो जाँय तो उसे चाहिए कि यह धन दरबार में लाकर केन्द्रीय कोषाध्यक्ष के सुपुर्द करे और धन के ब्यौरे की सूची भी साथ लावे। पेशकश[4] के धन के जमा करने के लिए एक अलग खजाँची नियुक्त किया गया। लावारिस माल के लिए एक तहवीलदार[5] और नजर[6] की रकम के लिए एक अनुभवी खजांची अलग नियुक्त किया गया। तुलादान और दान-पुण्य के धन के लिए एक अलग सच्चा और ईमानदार खजांची नियुक्त किया गया है। हर प्रकार के व्यय के लिए समुचित अधिनियम बनाए गए और ईमानदार अधीक्षक, योग्य दारोगा, और ठीक लिखने वाले बितक्ची नियुक्त किए गए। वार्षिक व्यय के लिए जितने धन की आवश्यकता होती है उतना धन खर्च करने वाले (हर एक) खजांची को केन्द्रीय कोष से दिया जाता है और इन रकमों के देने की सही रसीदें ले ली जाती हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के हिसाब लिखने का ढङ्ग सरल हो गया और राज्य के उद्यान में हरियाली छा गई। थोड़े ही समय में कोष भर गया, सेनाएँ बढ़ गईं और कुटिल राजद्रोही आज्ञाकारी बन गए।

ईरान और तूरान में एकही कोषाध्यक्ष होता है इसलिये लेखा-जोखा में बहुत कठिनाई होती है। परन्तु यहाँ मालगुजारी की रकम तथा काम की अधिकता के कारण कोषरक्षा के बारह कोषाध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं जिनमें से नौ विभिन्न प्रकार के नकद-धन के जमा करने के लिए और तीन हीरे, जवाहर, सोना, और जड़ाऊ सामान के लिए नियुक्त हैं। कोष इतना विशाल है कि दूसरे विषयों के साथ उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। अपनी गुणग्राहकता-

---

[1] अन्तःपुरीय संरक्षण से मुक्त होकर। [2] एतमाद का अर्थ है विश्वास। 'ख्वाजासरा' मुख्य हिजड़े की उपाधि है। उसका वास्तविक नाम फूल मलिक था। १५४५ से १५५३ तक उसने सलीम शाह की सेवा के उपरान्त अकबर की सेवा करना आरम्भ किया। अकबर ने उसको एक हजारी पद पर नियुक्त किया और महकमा माल के सुधारने का काम सौंपा। उसने अपने काम से अकबर को सन्तुष्ट किया। १५७८ ई० में मकसूद अली ने उसका बध कर दिया। [3] बितक्ची का अर्थ कातिब या मुन्शी है। [4] कर जो अधीन राजा सम्राट् को देते थे। [5] लेखापाल। [6] उपहार।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वश तथा कार्यों के उपलक्ष में सम्राट् कर्मचारियों पर दया दिखाते या उनकी भर्त्सना करते हैं। यही कारण है कि हर प्रकार के कारबार में उन्नति तथा सम्पन्नता के लक्षण दृष्टिगोचर हैं।

हर कारखाने के लिए एक अलग खजान्ची नियुक्त है और इनकी संख्या लगभग सौ तक है। अनुभवी, सावधान लोग त्रैमासिक तथा वार्षिक आय-व्यय का लेखा रखते हैं। इससे संसार का बाजार गर्म रहता है।

इसके अतिरिक्त सम्राट् की आज्ञा से एक सच्चा और ईमानदार व्यक्ति रुपए और अशर्फियों को दरबार में सदैव तैयार रखता है जिससे बिना प्रतीक्षा का कष्ट उठाए ही धनाभिलाषी सफल मनोरथ होते हैं। एक करोड़ दाम राजप्रासाद में सदा प्रस्तुत रहता है। एक-एक हजार दाम प्लास[1] की थैलियों में रखते हैं। इनको हिन्दी में सहसा[2] कहते हैं और उनके ढेर को गंज कहते हैं। बादशाह कुछ दरबारियों को बहुत बड़ा धन सौंपते हैं जो समय-कुसमय पर काम आता है। कुछ लोग बहलों में रखकर हाथ में लिए रहते हैं। इसी कारण प्रचलित भाषा में उसको खर्जे बहला कहते हैं। ये सब बादशाह की कृपा तथा उसके द्वारा प्रजा का पालन-पोषण किये जाने के फल हैं। भगवान् उनको सहस्रायु बनावें।

आईन ३

रत्नागार

यदि रत्नों के प्रकार और संख्या का उल्लेख करना हो तो बहुत समय लगेगा इसलिये जानकारी के लिए लेखक उनका थोड़ा-सा वर्णन लिखता है और हर खलियान से एक बाली उठाता है। बादशाह ने इस विभाग के लिए एक बुद्धिमान, निर्लोभी, तथा कार्यपटु कोषाध्यक्ष नियुक्त किया है और उसकी सहायता के लिए एक अनुभवी और सच्चा वितक्ची, परिश्रमी और सद्प्रवृत्तियुक्त दारोगा तथा कई चतुर जौहरी नियुक्त किया है। इस महत्त्वपूर्ण विभाग की आधारशिला इन चार स्तम्भों पर रखी है। इन्होंने रत्नों को श्रेणियों में विभक्त कर के सन्देह का मुर्चा दूर कर दिया है।

लाल—जिस लाल का मूल्य १००० मोहर से कम नहीं होता उसको प्रथम श्रेणी में रखते हैं; ९९९ से ५०० मोहर मूल्य वाले लाल द्वितीय श्रेणी में; ४९९ से ३०० मोहर तक के तृतीय श्रेणी में; २९९ से २०० चतुर्थ में; १९९ से १०० तक पंचं में; ९९ से ६० तक षष्ठं में; ५९ से ४० तक सप्तं में; ३९ से १० तक नवं में; पौने दस से ५ तक दशं में; पौने पाँच से १ तक एकादश में; और पौन मोहर से $\frac{१}{४}$ रुपये तक द्वादश में रखे गए हैं। इससे अधिक श्रेणियाँ निर्धारित नहीं की गई हैं।

अलमास (हीरा), जमरुद (पन्ना), और लाल तथा नीले याकूत भी इसी प्रकार श्रेणियों में विभक्त हैं। प्रथमश्रेणी—तीस मोहर और उससे अधिक; द्वितीयश्रेणी २९$\frac{३}{४}$ से १५ मोहर तक; तृतीयश्रेणी १४$\frac{३}{४}$ से १२ तक; चतुर्थ ११$\frac{३}{४}$ से १० तक; पंचम् ९$\frac{३}{४}$ से लेकर ७ तक; षष्टं ६$\frac{३}{४}$ से ५ तक; सप्तं ४$\frac{३}{४}$ से ३ तक; अष्ठं २$\frac{३}{४}$ से २ तक; नवं १$\frac{३}{४}$ से १ तक; दशं ८$\frac{३}{४}$ रुपये से ५ रुपए तक; एकादश ४$\frac{३}{४}$ रुपए से २ रुपए तक; द्वादश १$\frac{३}{४}$ रुपए से $\frac{१}{४}$ रुपए तक।

मोती—बहुमूल्य मोती १६ श्रेणियों में विभक्त हैं और परख की लड़ियों में पिरोये हैं। तीस मोहर और उससे अधिक मूल्य वाले बीस-बीस मोतियों को तागे में पिरो कर पहली लड़ी बनाई गई हैं। २९$\frac{३}{४}$ मोहर से १५ मोहर

---

[1] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। [2] सहस्र।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तक दूसरी लड़ी में; १४$\frac{3}{4}$ से १२ तक तीसरी में; ११$\frac{3}{4}$ से १० तक चौथी में; ९$\frac{3}{4}$ से ७ तक पाँचवीं में; ६$\frac{6}{4}$ से ५ तक छठीं में; ४$\frac{3}{4}$ से ३ तक सातवीं में; २$\frac{3}{4}$ से २ तक आठवीं में; १$\frac{3}{4}$ से १ तक नवीं में; एक मोहर से कुछ कम से ५ रुपये तक दसवीं में; ५ रुपए में कुछ कम से दो रुपए तक ग्यारहवीं में; २ रुपए में कुछ कम से लेकर १$\frac{1}{4}$ रुपए तक बारहवीं में; १$\frac{1}{4}$ रुपए से कुछ कम से लेकर ३० दाम तक तेरहवीं में; ३० दाम से कुछ कम से लेकर २० दाम तक चौदहवीं में; २० दाम से कुछ कम से लेकर १० दाम तक पन्द्रहवीं में; १० दाम में कुछ कम से लेकर ५ दाम तक सोलहवीं में ये मोती अपनी श्रेणियों के अनुसार उसी संख्या की लड़ियों में पिरोए जाते हैं। उदाहरणार्थ, सोलहवीं श्रेणी के मोती सोलह लड़ियों में पिरोये गए हैं। हर लड़ी के सिरों पर खास शाही मुहर लगाई जाती है जिससे मोतियों की लड़ियाँ परिवर्तन की हानि से सुरक्षित रहें (बदली न जा सकें)। हर मोती के साथ उसका विवरण लगा रहता है जिससे कोई सन्देह न रहे।

दैनिक और मासिक पारिश्रमिक के अतिरिक्त मोतियों के बेधने का पारिश्रमिक इस क्रम से दिया जाता है। जो पहली श्रेणी के मोती को बेध कर लड़ी के योग्य बनाता है १ चरन ($\frac{1}{4}$ रुपया) पाता है; दूसरी श्रेणी के लिए अष्ट ($\frac{1}{8}$ रु०); तीसरी श्रेणी के लिए दसा ($\frac{1}{10}$ रु०); चौथी के लिए ३ दाम; पाँचवीं श्रेणी के लिए १ सूकी;[1] छठीं के लिए १ दाम; सातवीं के लिए $\frac{3}{4}$ दाम; आठवीं के लिए $\frac{1}{2}$ दाम; नवीं के लिये $\frac{1}{4}$ दाम; दसवीं के लिए $\frac{1}{5}$ दाम; ग्यारहवीं के लिए $\frac{1}{6}$ दाम; बारहवीं के लिए $\frac{1}{7}$ दाम; तेरहवीं के लिए $\frac{1}{8}$; चौदहवीं के लिए $\frac{1}{9}$; पन्द्रहवीं के लिए $\frac{1}{10}$; सोलहवीं के लिए $\frac{1}{11}$ दाम या और कम। इन बहुमूल्य रत्नों का मूल्य इतना प्रसिद्ध है कि उसके विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है किन्तु जो रत्न इस समय बादशाह के खजाने में वर्तमान हैं उनका ब्यौरा इस प्रकार है :

लाल—जिनका वजन ११ टाँक[2] २० सुर्ख;[3] **अल्मास** (हीरा) जिसका वजन ५$\frac{1}{2}$ टाँक ४ सुर्ख, उनमें से प्रत्येक का मूल्य १ लाख रुपया है। **जमरुद** (पन्ना) १७$\frac{3}{4}$ टाँक और ३ सुर्ख, मूल्य ५२००० रुपया, याकूत ४ टाँक ७$\frac{3}{4}$ सुर्ख; और **मोती** ५ टाँक प्रत्येक का मूल्य ५०, ००० रुपए।

आईन ४

टकसाल

प्रकट है कि टकसाल की समृद्धि से कोष भरता है और इससे प्रत्येक कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न होता है। इसलिए इसका कुछ वर्णन लिखा जाता है। और वाग्वाटिका सींची जाती है।[4] नगर तथा गाँव दोनों के निवासियों का कार्य द्रव्य से पूरा होता है। मनुष्य अपनी इच्छा के अनुसार उसका उपयोग करता है। जिसका हृदय सांसारिक चिंताओं से मुक्त है वह उससे अपना जीवनयापन करता है और सांसारिक व्यक्ति उसको अपनी मनोकामना का अन्तिम लक्ष्य समझता है। हर व्यक्ति की आवश्यकताएँ इसी से पूरी होती हैं। बुद्धिमान आदमी उसको लौकिक और धार्मिक कामनाओं की पूर्ति का प्रधान स्रोत समझता है। यह मानव जाति के अस्तित्व की दृढ़ता के लिए अत्यावश्यक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति उससे अपना भोजन तथा वस्त्र प्राप्त करता है। और यह कुछ परिश्रम से प्राप्त होता है जैसे बोना, जोतना, काटना, साफ करना, गूँथना, पकाना, कातना, तनना, और बुनना आदि। ये काम बिना दूसरों की सहायता के पूरे नहीं हो सकते। एक मनुष्य की शक्ति पर्याप्त नहीं होती और नित्यप्रति ऐसा करना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है। मनुष्य को एक ऐसा स्थान चाहिए जहाँ वह कुछ दिनों के लिए सामान रख सके, इसी स्थान को घर कहते हैं चाहे वह खेमा हो या गुफा। मनुष्य की उत्पत्ति तथा स्थिरता पाँच बातों पर निर्भर है; पिता, माता, सन्तान,

---

[1] चवन्नी। [2] चार माशा। [3] घुँघची। [4] अन्तिम उपवाक्य अनावश्यक है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मृत्यु तथा भोजन। इनमें से अन्तिम सब का कार्य-साधक है। हमारे सामान नष्ट हो जाते हैं; वे टिकाउ नहीं होते। प्रत्येक दशा में हमें द्रव्य की आवश्यकता होती है। रुपया अपनी धातु की दृढ़ता तथा कठोरता के कारण अधिक टिकाऊ होता है और थोड़े से रुपयों से बहुत सा काम पूरा हो जाता है। इसी से मनुष्य यात्रा करता है। महीनों और वर्षों का तो जिक्र ही क्या, कुछ दिनों के लिए भी सामान अपने साथ ले जाना बहुत ही कठिन होता है।

भगवान् की कृपा सहायक हुई और यह बहुमूल्य मोती (सोना) उत्पत्ति तट पर आया और बिना परिश्रम के मनुष्य के जीवन की पूँजी तैयार हो गई। इस कारण साहस के ललाट पर निराशा की गर्द नहीं बैठती और ईश्वर की उपासना अच्छी तरह से की जाती है। इसकी प्रशंसा वर्णनातीत है। यह कोमल, सुस्वाद और सुगंधित होता है। जिन तत्त्वों का वह बना होता है वे तौल में बराबर[1] होते हैं, उनमें समता होती है, विषमता नहीं। इसके रूप में चार तत्त्वों के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। उसका रङ्ग आग का, शुद्धता वायु का, कोमलता जल का, और गुरुत्व पृथ्वी का पता देता है। चूँकि सोने में जीवन-वर्द्धक प्रकाश अधिक होता है, इसलिए चारों तत्त्वों में से कोई तत्त्व भी इसे हानि नहीं पहुँचा सकता। वह आग से नहीं जलता, वायु उस पर प्रभाव नहीं करती, पानी युगों तक उसका रूप नहीं बदलता और मिट्टी उसे खराब नहीं कर सकती। दूसरी धातुओं का हाल इसके बिलकुल प्रतिकूल है। यही कारण है कि पुराने ग्रन्थों में दर्शन बुद्धि को जिसके द्वारा प्रत्येक काम पूरा होता है नामूसे अकबर[2] कहते हैं और सोने को जिससे मनुष्य को जीविका मिलती है नामूसे असगर[3] कहते हैं। "न्याय का संरक्षक", "समस्त विश्व के अस्तित्व को बनाए रखने वाला" उसकी महत्त्वपूर्ण उपाधियाँ हैं। सब वस्तुओं की सुव्यवस्था इसी पर निर्भर है और न्याय की नींव इसी पर आधारित है। अद्वितीय (ईश्वर) ने इसकी सेवा के लिए चाँदी और ताँबे को पैदा किया और मनुष्य के कल्याण के लिए साधन प्रस्तुत किया। इसीसे न्यायप्रिय तथा परिणामदर्शी शासकों और भाग्यशाली बादशाहों ने इन नगदों के प्रचार में साहस किया है और इस कार्य की उन्नति के लिए टकसालें स्थापित की हैं। इस विभाग की सम्पन्नता इस बात पर है कि बुद्धिमान, परिश्रमी और सच्चे कर्मचारियों की नियुक्ति की जाय और इनके काम की निगरानी और देखभाल से सारे संसार की व्यवस्था ठीक होती है।

आईन ५

टकसाल के सहायक

१. **दारोगा**—इसको बुद्धिमान मानव-पारखी तथा उच्चाकांक्षी होना चाहिए जो अपने साथियों के कठोर काम का बोझ शीघ्र संचालन के कधे पर रखे और हर एक को अपने काम में लगाए रखे और प्रयास और सचाई से काम को पूरा करे।

२. **सैरफ़ी**[4]—इस महत्त्वपूर्ण विभाग की सफलता बहुत कुछ इसके अनुभव पर निर्भर है। सिक्कों की शुद्धता की मात्रा की जाँच उसके सत्याचारी हाथों में होती है। समय की सम्पन्नता के कारण अनेक चतुर सर्राफ शाही ड्योढ़ी पर एकत्र हो गए हैं और बादशाह जहाँपनाह के ध्यान देने से सोना और चाँदी शुद्धता की चरम सीमा पर पहुँच गए हैं। इसको फारस में **दहदही** कहते हैं परन्तु वहाँ के लोग १० अंश से ऊँची शुद्धता नहीं जानते और हिंदी भाषा में इसको **बारहवानी** कहते हैं क्योंकि यहाँ शुद्धता के बारह अंश मानते हैं। पहले पुराने हुन के सोने को जो दक्षिण

---

[1] मध्ययुगीन रासायनिकों के अनुसार सोने में पारा और गंधक बराबर मात्रा में मिले रहते हैं। गंधक में रङ्ग उत्पन्न करने का गुण होता है। दे० आईन १३। [2] महान नियम। [3] लघु नियम। [4] सर्राफ़ या ऋण देने वाला।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में प्रचालित है, बहुत उत्तम समझते थे और उसको दस अंश शुद्ध मानते थे, परन्तु अब बादशाह की जाँच में उसको ८½ अंश निर्धारित किया गया है और छोटा, गोला अलाई[1] दीनार जो १२ अंश शुद्ध माना जाता था अब १०½ अंश शुद्ध सिद्ध हुआ है। इस कला के कुशल और अनुभवी मनुष्य आज कल के सोने की शुद्धता के विषय में विभिन्न कहानियाँ कहते हैं और इसको कीमिया का सोना समझते हैं। लोग कहते हैं कि किसी खान का सोना इतना शुद्ध नहीं होता। सम्राट् के ध्यान देने से वह उस दर्जे तक पहुँचा और इस काला के विशेषज्ञ चकित हो गए। सोने की खराई का दर्जा न इससे घटता है और न बढ़ता है। सच्चे इतिहासकार तथा तथ्यवादी यात्री ऐसे शुद्ध सोने का कहीं चिह्न नहीं बताते। परन्तु जब सोने को गलाते हैं तो कुछ छोटे कण इससे पृथक् होकर राख में मिल जाते हैं। अज्ञान मनुष्य उनको धातु का मैल समझते हैं परन्तु पहचानने वाले इनको राख से चुन लेते हैं। यद्यपि खान का नरम सोना भस्म करके राख में परिणत किया जा सकता है तथापि एक विशेष प्रक्रिया के द्वारा वह फिर अपनी मूल अवस्था में लाया जा सकता है। ऐसी दशा में सोने की मात्रा में कुछ कमी आ जाती है। सम्राट् की बुद्धिमानी से इस कमी की वास्तविकता का अनुमान हो गया और कारीगरों के धोखेबाजी की परीक्षा हो गई।

आईन ६

बनवारी[2]

'बनवारी' शब्द 'बानवारी' का संक्षिप्त रूप है। यद्यपि इस देश में चतुर सर्राफ अपने अनुभव से इस धातु की खरेपन का दर्जा सोने के रङ्ग और चमक से भली भाँति पहचान सकते हैं, तथापि अन्य लोगों के प्रबोध के लिए यह प्रशंसनीय अधिनियम जारी किया गया है। ताँबे या इसी प्रकार की अन्य धातुओं के कुछ कलम बनाए गए हैं और हरएक के सिरे पर थोड़ा सोना लगाया गया है और हर सोने के खरेपन का दर्जा कलमों पर लिख दिया गया है। जब नए आए हुए सोने की जाँच करनी होती है तो वे उससे तथा और कलमों से कुछ रेखाएँ कसौटी के पत्थर पर खींच देते हैं। सोने की रेखाएँ जिस कलम की रेखाओं से मिलती-जुलती हैं नया सोना उसी दर्जे का सोना समझा जाता है। परन्तु कलम और नये सोने की रेखाएँ एक ही ढङ्ग और शक्ति से कसौटी पर खींची जाती हैं जिससे पहचानने में धोखा न हो।

इस नियम के व्यवहार में लाने का उद्देश्य यह है कि तरह तरह के दर्जों का सोना पैदा हो। एक माशा शुद्ध चाँदी और उतनी ही मात्रा में बढ़िया ताँबा मिलाते हैं और उनको गला कर जमा देते हैं। इस मिश्रण में ६ माशा खालिस सोना जो खरेपन में १०½ अंश हो गलाते हैं। खोटे सोने का टुकड़ा बन जाता है। इससे एक माशा लेकर उसके सोलह भाग करते हैं जिनमें से प्रत्येक भाग आधा सुर्ख होता है। जब ७½ सुर्ख खालिस सोना इस मिश्रण के एक भाग में मिलाते हैं तो १०¾ बान[3] का सोना बन जाता है। यदि ७ सुर्ख खालिस सोना इस मिश्रण के दो भाग में मिलाएँ तो १० बान का सोना बनता है। यदि ६½ सुर्ख खालिस सोना मिश्रण के तीन भाग में मिलाएँ तो ९¾ बान का सोना तैयार होता है। यदि ६ सुर्ख शुद्ध सोना मिश्रण के ४ भाग के साथ मिलाएँ तो ९½ बान का सोना बनता है। यदि ५½ सुर्ख खालिस सोना ५ भाग में मिलाएँ तो ९¼ बान का सोना बनता है। यदि पाँच सुर्ख खालिस सोना ६ भाग के साथ मिलाएँ तो ९ बान का सोना बनता है। यदि ४½ सुर्ख खालिस सोना ७ भाग में मिलाएँ तो ८¾ बान का सोना पैदा होता है। यदि चार सुर्ख खालिस सोना ८ भागों के साथ

---

[1] अलाउद्दीन का सिक्का। [2] सोने की जाँच या परीक्षा। [3] अंश, दर्जा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मिलाएँ तो ८$\frac{१}{२}$ बान का सोना बनता है। ३$\frac{१}{२}$ सुर्ख शुद्ध सोने में ९ भाग में मिलाएँ तो ८$\frac{१}{४}$ बान सोना बनता है। यदि ३ सुर्ख शुद्ध सोना १० भाग में मिलाएँ तो ८ बान का सोना पैदा होता है। यदि २$\frac{१}{२}$ सुर्ख शुद्ध सोना ११ भाग में मिलाएँ तो ७$\frac{३}{४}$ बान का सोना पैदा होता है। यदि २ सुर्ख शुद्ध सोने को १२ भाग में मिलाएँ तो ७$\frac{१}{२}$ बान का सोना प्राप्त होता है। डेढ़ सुर्ख शुद्ध सोना १३ भाग के साथ मिलाने से ७$\frac{१}{४}$ बान का सोना पैदा होता है। १ सुर्ख शुद्ध सोना १४ भाग के साथ मिलाने से ७ बान का सोना बन जाता है। आधा सुर्ख शुद्ध सोना १५ भाग में मिलाने से ६$\frac{३}{४}$ बान का सोना बन जाता है। इस प्रक्रिया का संक्षेप यह है कि हर आधा सुर्ख मिला हुआ सोना १ सोने के खरेपन को $\frac{१}{४}$ बान कम कर देता है और इस मिले हुए सोने की शुद्धता जो दूसरे प्रकार से बनता है ६$\frac{१}{२}$ बान होता है। यदि चाहें कि सोने की शुद्धता को ६$\frac{१}{२}$ बान से भी कम करें तो $\frac{१}{२}$ सुर्ख पहले मिश्रण का जो चाँदी और ताँबा मिला कर तैयार किया गया था दूसरे मिश्रण के ७$\frac{१}{२}$ सुर्ख में जिसमें सोना, चाँदी और ताँबा तीनों धातु मिश्रित हैं मिलाया जाय तो ६$\frac{१}{४}$ बान का सोना बनता है। जब पहले मिश्रण का १ सुर्ख दूसरे मिश्रण के ७ सुर्ख के साथ गलाया जाय तो ६ बान का सोना तैयार होता है। यदि यह चाहें कि सोने को ६ बान का से भी कम करें तो मिश्रणों में आधा-आधा सुर्ख बढ़ाते जाँय। बानवारी में ६ बानी सोने तक को शामिल करते हैं। इससे कम श्रेणी के सोने को बानवारी में शामिल नहीं करते।

यह सब काम साहबे अयार (प्रधान पारखी) की देखरेख में होता है।

३. अमीन—इस व्यक्ति को निःस्वार्थ और निर्लोभ होना चाहिए जिससे मित्र तथा शत्रु सब उसपर विश्वास कर सकें। यदि वार्तालाप में कोई झगड़ा होता है तो वह दारोगा और अन्य कर्मचारियों की सहायता करता है। वह न्याय करता है और झगड़े को शान्त कर देता है।

४. मुशारिफ—हिसाब लिखने, मामले समझने, और ईमानदारी से आय-व्यय को लिख कर इस विभाग को दृढ़ बनाता है और नियमित रूप से विश्वसनीय रोजनामचा तैयार करता है।

५. सौदागर—सोना, चाँदी और ताँबा लाकर लेनदेन करता है और इससे उसे लाभ होता है। इस प्रकार कारखाने की शोभा बढ़ाता है। कर (टैक्स) चुका कर कोष की वृद्धि करता है। व्यापारियों के कारबार का विकास तभी होता है जब देश में न्याय प्रचलित हो और शासक लोभी न हो।

६. खजान्ची—लाभ की देखरेख करता है और लेनदेन में सच्चाई और ईमानदारी से काम लेता है।

पहले चार और छठें कर्मचारियों के वेतन एक दूसरे से भिन्न हैं। इसमें जो सबसे निम्न कोटि का कर्मचारी है वह अहदियों[1] में सम्मिलित होकर कारबार में सफल होता है।

७. तराजूकश (तौलने वाला)—सिक्कों को तौलता है। यदि वह १०० जलाली मुहरों को तौलता है तो १$\frac{३}{४}$ दाम मजदूरी लेता है। यदि चाँदी के १००० रुपया तौलता है तो ६ $\frac{१९}{२८}$ दाम लेता है और ताँबे के १००० दाम तौलने के लिए $\frac{११}{२८}$ दाम लेता है। इसी अनुपात से तौल की मात्रा के हिसाब से पारिश्रमिक में **न्यूनता या** अधिकता होती है।

८. गुदाज़गर खाम (कच्ची धातु को पिघलाने वाला)—वह मिट्टी के तावे पर छोटी और बड़ी नालियाँ बनाता है और उन्हें तेल से चिकनी करता है सोना-चाँदी गला कर उन नालियों में डालता है जिससे डली बन जाती है। ताँबे के लिए तेल लगाने के स्थान में राख छिड़कना काफी होता है। सोने की उपरोक्त मात्रा गलाने का पारिश्रमिक

---

[1] अहदी आधुनिक वारन्ट अफसरों से मिलते जुलते हैं। शाही कार्यालयों के अधिकांश लिपिक इसी श्रेणी के होते थे। [2] पच्चीस जीतल का एक दाम होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२$\frac{1}{16}$ दाम है। चाँदी की उपरोक्त मात्रा गलाने का पारिश्रमिक ५ दाम १३$\frac{1}{4}$ जीतल[1] है। ताँबे की उपरोक्त मात्रा गलाने का पारिश्रमिक ४ दाम २१$\frac{1}{2}$ जीतल है।

९. वरक कश (सोने-चाँदी का वरक बनाने वाला)—मिश्रित सोने से ६ या ७ माशे के वरक बनाता है। इसकी लम्बाई और चौड़ाई ६ अंगुल होती है। वह इन वरकों को पारखी के पास लाता है जो इनको ताँबे के साँचे में डालकर जाँच करता है। जो वरक जाँच में ठीक निकलते हैं उन पर वह शुद्धता की मुहर लगा देता है जिससे परिवर्तन न हो सके और यह मालूम हो जाय कि इनकी जाँच हो चुकी है। सोने की पूर्वोक्त मात्रा का वरक बनाने के लिए उसको ४२$\frac{1}{3}$ दाम पारिश्रमिक दिया जाता है।

आईन ७

खोटा सोना खरा करने की विधि

जब सोने के वरकों पर जाँच की मोहर लग जाती है तो सोने का मालिक उनका खोटापन पारखी की कार्य-पटुता से इस ढङ्ग से दूर करता है। १०० जलाली अशर्फियों के बराबर वजन के लिए ४ सेर शोरा नमक और चार सेर कच्ची ईंट की पिसी हुई मिट्टी लाते हैं। पहले वह वरकों को साफ पानी में धोते हैं। इसके बाद उनको मशालों (शोरा नमक और ईंट की मिट्टी) में डालते है। तत्पश्चात् एक को दूसरे पर रख कर बिनवा कड़ों से ढांक देते हैं। जिसको हिन्दी भाषा में उपला कहते हैं और जो जंगली गाय का सूखा गोबर है। इसके बाद उसमें आग लगा देते हैं। धीरे-धीरे जल कर उपले राख हो जाते हैं। जब राख ठंडी हो जाती है तब उसको चारों तरफ से हटाकर अपने पास रख लेते हैं। इसको **फारसी में खाके खलास** और हिन्दी में **सलोनी** कहते हैं। इस राख से चाँदी निकाल लेते हैं जिसकी क्रिया का वर्णन अलग किया जायगा। वरकों को नीचे की राख के साथ उसी तरह छोड़ देते हैं। दो बार फिर आग जलाते हैं और पहली क्रिया को काम में लाते हैं। जब तीन आँचें पूरी हो जाती हैं तो उसको **सिताई** कहते हैं। दूसरी बार साफ पानी से धोते हैं और वही मसाला मिला कर तीन बार आग देते हैं और राख को अलग कर लेते हैं। इसी प्रकार छः बार मसाले में मिलाते हैं और १८ आँच देते हैं। इसके बाद धोते हैं। पारखी एक को तोड़ता है। यदि आवाज नर्म होती है तो सोना पक्का समझा जाता है और यदि आवाज सख्त होती है तो सोने को एक बार दवा में रख कर तीन बार और आग देते हैं। इसके बाद हर वरक से एक एक माशा सोना काट कर एक वरक बनाते हैं और कसौटी पर कसते हैं। यदि सोना शुद्ध नहीं हुआ तो एक दो आँच और देते हैं। परन्तु बहुधा ऐसा होता है कि तीन-चार आँच से उद्देश्य सिद्ध हो जाता है।

इस ढङ्ग से भी सोने को परखते और खरा करते हैं। दो तोला शुद्ध सोना और दो तोला तपाया हुआ सोना लेते हैं और दोनों प्रकार के सोने की बीस बीस एक ही वजन की पत्तर बनाते हैं और इन पर उपरोक्त मसाला मल कर आँच देते हैं। इसके बाद धोकर तौलते हैं। यदि दोनों वजन में बराबर होते हैं तो यह समझा जाता है कि खोटा सोना खरा हो गया।

१०. गुदाजगर पोख्ता (शुद्ध की हुई धातु का पिघलाने वाला)—वह पक्के सोने के पत्तरों को गलाता है और पूर्वोक्त ढङ्ग से उनकी डलियाँ बनाता है। १०० जलाली अशर्फियों के लिए उसका पारिश्रमिक ३ दाम है।

११. जर्राब—यह अपनी चतुरता से सोने, चाँदी और ताँबे की डलियों को सिक्कों के बराबर काटता है। पूर्वोक्त सोने की मात्रा की टिकिया बनाने के लिए मजदूरी २१ दाम १$\frac{1}{4}$ जीतल है। यदि चाँदी सेरुपया बनाया जाता है तो उतनी चाँदी के लिए ५३ दाम ८$\frac{3}{4}$ जीतल मजदूरी है। यदि उतनी ही चाँदी की चवन्नियाँ बनाता है तो उसकी

[1] पच्चीस जीतल का एक दाम होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

म दूरी में २८ दाम बढ़ जाते हैं। १००० ताँबे का दाम बनाने के लिए वह २० दाम लेता है। यदि उतने ही ताँबे के $\frac{1}{2}$ दाम द्वारा $\frac{1}{4}$ दाम वाले सिक्के बनाता है तो २५ दाम लेता है। यदि वह $\frac{1}{8}$ दाम वाले सिक्के जिनको दमड़ी कहते हैं, बनाता है तो ६९ दाम लेता है।

ईरान और तूरान में बिना उचित निहाई पर काटे हुए इन सिक्कों को नहीं बना सकते। परन्तु भारतीय कारीगर इसके बिना ऐसे ठीक वजन की टिकिया काटते हैं कि बाल बराबर भी अन्तर नहीं पड़ता और यह बहुत आश्चर्य-जनक है।

१२. मोहरकन (मोहर खोदनेवाला)—यह लोहे या वैसी ही दूसरी धातु पर सिक्कों के नक्श खोदता है। इन्हीं छापों से सिक्कों पर नक्श बनाया जाता है। आजकल मौलाना अहमद अली देहलवी इस गुण में ऐसे निपुण हैं कि किसी देश में भी उसकी समता करने वाला कोई नहीं है। वह विभिन्न प्रकार के अक्षर लोहे पर इस प्रकार लिखते हैं कि उनके लिखे हुए अक्षर प्रसिद्ध लेखकों के सुलेखों की समता करते हैं। वह यूजबाशियों[1] में दाखिल हैं। उनके दो प्यादे टकसाल में काम करते हैं। हरेक को ६०० दाम प्रतिमाह मिलते हैं।

१३. सिक्कची—टिकियों को दो ठप्पों के बीच में रखता है और पुटक्ची (हथौड़ा चलाने वाले) की सहायता से टुकड़े की दोनों तरफ नक्श बन जाता है। १०० अशर्फियों के लिए उसकी उजरत १.$\frac{1}{10}$ दाम, चाँदी के १००० रुपये के लिए ५ दाम ९$\frac{1}{2}$ जीतल, और १ ०० रुपये की रेजकारियाँ बनाने की मजदूरी १$\frac{1}{3}$ दाम अधिक हो जाती है। १००० दाम बनाने की मजदूरी ३ दाम और २००० निस्फदाम (आधे दाम) और ४००० चौथाई दाम वाले सिक्के बनाने की मजदूरी ३ दाम १८$\frac{3}{4}$ जीतल है। ८००० दमड़ी बनाने की मजदूरी १०$\frac{1}{2}$ दाम है। सिक्कची अपनी मजदूरी से $\frac{1}{6}$ भाग पुटक्ची को देता है क्योंकि उसके लिए कोई अलग मजदूरी निर्धारित नहीं है।

१४. सब्बाक—शुद्ध चाँदी की गोल टिकियाँ काटता है। १००० रुपये भर की टिकियाँ काटने की मजदूरी ५४ दाम लेता है।

चाँदी की सफाई—चाँदी में सीसा, जस्ता और ताँबे का मेल होता है। ईरान और तूरान में चाँदी की चरम शुद्धता को **दहदही** कहते हैं परन्तु हिन्दुस्तानी सर्राफ़ इसे बीसा बिस्वा (बीस बिस्वा) कहते हैं। जितना मैल बढ़ता जाता है चाँदी की शुद्धता का अंश उतना ही घटता जाता है। लेकिन चाँदी पाँच अंश से नीचे नहीं घटती और दस अंश से कम की चाँदी पर कोई ध्यान नहीं देता। अनुभवी व्यक्ति चाँदी के रङ्ग को देखकर पहचान लेते हैं कि इसमें किस धातु का मिश्रण है और रेती से रगड़ कर या सूराख करके चाँदी की भीतरी शुद्धता को पहचान लेते हैं। और आग में तपाकर फिर पानी में बुझाकर खरी या खोटी होने का पता लगा लेते हैं। कालेपन से सीसे की अधिकता, सुर्खी से ताँबे की, मटमैली सफेदी से जस्ते की, और सफेदी से चाँदी की अधिकता का पता लगा लेते हैं।

चाँदी को शुद्ध करने की विधि

एक गड्ढा खोदा जाता है और इसमें बिनवा कंडे की थोड़ी सी राख डालते हैं। फिर उसे बबूल की लकड़ी की राख से भर देते हैं। और उसमें नमी देकर उसे रकाबी की आकृति का बना लेते हैं। इसमें खोटी चाँदी रखते हैं और चाँदी की मात्रा के विचार से उसमें सीसा मिला देते हैं। पहले सीसे का $\frac{1}{4}$ भाग चांदी के ऊपर रख देते हैं और उसको कोयले से ढँक देते हैं। तब धौंकनी से उसे धौंक कर गलाते हैं। बहुधा यह काम चार बार किया जाता है।

---

[1] **यूजबाशी तुर्की शब्द है। इसका अर्थ है सौ सिपाहियों का अफसर। इसका वेतन ५०० से ७०० रुपया मासि कहोता था।**

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाँदी के साफ हो जाने की पहचान यह है कि पिघली हुई धातु बिलकुल सफेद हो जाती है और हर तरफ से जमने लगती है। जब चाँदी बीच में कठोर हो जाती है तो उस पर पानी के छींटें देते हैं। मेढ़े के सींग की तरह उससे लपटें निकलती हैं। अब इसकी टिकिया बन जाती है और धातु बिल्कुल खरी हो जाती है। यदि यह टिकिया दोबारा गलाई जाती है तो प्रति तोला में से ½ सुर्ख चाँदी जल जाती है। और १०० तोले में ६ माशा २ सुर्ख चाँदी घट जाती है। वह राख जिसमें चाँदी और सीसा मिले हुये हैं मुर्दाशंख की तरह हो जाती है जिसको हिन्दी में खरल और फारसी में कोहना[1] कहते हैं। इसकी क्रिया का वर्णन बाद में किया जायगा। इसके पहले कि जर्राब टिकिया बनाए हर सौ तोलों में से ५ माशा ५ सुर्ख खालसी[2] के लिए ले लिए जाते हैं। इसके बाद पारखी साफ टिकियों पर अदल की मोहर लगा देता है जिससे वह बदलने न पावे। पुराने समय में चाँदी को **'बानवारी'** विधि से परखते थे। परन्तु अब निम्नलिखित ढङ्ग से परखते हैं। यदि १०० तोले शाही चाँदी जो ईराक और खुरासान में प्रचलित हैं, और **लारी** और **मिस्काली** चाँदी जो तूरान में प्रचलित है, में से ३ तोला १ सुर्ख निकल जाय, और उतनी ही यूरोपीय तथा तुर्की **नार्जील**, गुजरात और मालवा की महमूदी और मुजफ्फरी चाँदी में से १३ तोले ६½ माशा कम हो जाय तो वे खरेपन में शाहन्शाही चाँदी के बराबर हो जाती हैं।

१५. कुर्सकूब (टिकिया कूटने वाला)—शुद्ध की हुई चाँदी की टिकियों को तपाकर हथौड़े से इतना कूटता है कि उसमें सीसा शेष नहीं रहता। १००० रुपए भर चाँदी कूटने की मजदूरी ४½ दाम है।

१६. चाशनीगीर (चशनी पकड़ने वाला)—शुद्ध किए हुए सोने और चाँदी की जाँच करता है और उनकी शुद्धता के दर्जे निर्धारित करता है। वह २ तोला सोना लेता है और आठ पत्तर बनाता है। इसके बाद पूर्वोक्त विधि से मसाले लगा कर आग में तपाता है और हवा से बचाए रखता है। इसके बाद पत्तरों को धोकर गलाता है। यदि सोने के वजन में कुछ कमी नहीं होती तो सोना खरा समझा जाता है। प्रधान पारखी कसौटी पर कस कर अपने को और दूसरों को सन्तुष्ट कर लेता है। उपर्युक्त तौल का सोना (१०० अशर्फियों के बराबर परखने के लिए १ १/१० दाम[3] मजदूरी लेता है। एक तोला चाँदी और उतना ही सीसा एक हड्डी की नली में रख कर पिघलाता है और इतना तपाता है कि सीसा बिलकुल जल जाता है। चाँदी पर पानी छिड़क कर इतना कूटता है कि उसमें सीसे का चिह्न भी शेष नहीं रहता। फिर नई नली में रख कर तौलता है। यदि चाँदी वजन में ६ चावल कम हो जाती है तो समझा जाता है कि खरी हो गई अन्यथा वह चाँदी को फिर पिघलाता है यहाँ तक कि वह उसी दर्जे को पहुँच जाती है। १००० रुपए भर चाँदी की जाँच करने की उजरत ३ दाम ४½ जीतल है।

१७. **न्यारिया**—यह खाके खलास को जमाकर के दो दो सेर धोता है। सोना भारीपन के कारण तह में बैठ जाता है। धोई हुई राख को हिन्दी भाषा में कुकरा कहते हैं। इसमें भी सोना मिला रहता है। दूसरी क्रिया द्वारा जिसका आगे वर्णन किया जायगा सोना निकाला जाता है। तह में बैठी हुई राख में पारा मिलाकर मलते हैं। हर सेर राख में ६ माशा पारा काम में लाया जाता है। पारा आकर्षण से सोने को अपने में खींच लेता है। इसको शीशे में डालकर और आग से तपा कर सोने को अलग कर लेते हैं। इतनी परिमाण की राख से सोना निकालने के लिए वह २० दाम २ जीतल लेता है।

कुकरा की क्रिया—कुकरे के बराबर पुनहर मिलाते हैं और रसी को गाय के गोबर में मिलाते हैं। इसके बाद पहले मिश्रण को पीसकर दूसरे मिश्रण में मिला देते हैं और उससे दो दो सेर के गोले बनाकर कपड़ों पर सुखाते हैं।

---

[1] कुछ पांडुलिपियों में इसके स्थान पर 'कताह' लिखा मिलता है। [2] सरकारी खजाना। [3] ब्लाकमैन ने १२/५ दाम लिखा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पुनहर की क्रिया—एक गड्ढे को बबूल की राख से इस तरह भरते हैं कि एक मन सीसे में राख की ऊँचाई छः अंगुल हो जाय। उसके नीचे बराबर करके सीसा रख देते हैं। उसको कोयले से ढक कर गलाते हैं। इसके बाद कोयले को हटा कर उस पर मिट्टी की दो तख्तियाँ रखते हैं जो काँटों से जुड़ी होती हैं। धौंकिनी की तरफ वाला मुंह बंद करके दूसरी तरफ का खुला रखते हैं। वे उसको एक ईंट से ढक देते हैं। जब तक कि राख सीसे को सोख नहीं लेती ईंट को थोड़ी थोड़ी देर के बाद उठाकर वह सीसे की अवस्था को देखते जाते हैं। सीसे की उपरोक्त परिमाण में ४ माशा चाँदी राख में मिलाते हैं और राख को पानी से ठंडा करते हैं और उसको पुनहर कहते हैं। एक मन सीसे में से दो सेर जल जाता है और राख के कारण वजन चार सेर बढ़ जाता है जिससे उसका वजन १ मन २ सेर हो जाता है।

रसी—एक प्रकार का तेजाब है जो सज्जी और शोरे से बनता है।

पुनहर और रसी के हाल बयान हो चुके, लेखक फिर अपने असली उद्देश्य पर वापस आता है और कुकरे की क्रिया पूर्ण करता है। तन्दूर की तरह एक बर्तन बनाते हैं जिसके दोनों मुंह छोटे, पेट बड़ा, और उँचाई डेढ़ गज होती है। उसके पेंदी में एक सूराख करके एक दूसरा गड्ढा खोदते हैं। उस बर्तन को कोयले से इतना भरते हैं कि चार अंगुल खाली रह जाता है। दो धौंकनियों से उसमें आग दहकाते हैं। जब आग खूब जलने लगती है तो उपरोक्त गोलों को एक एक करके तोड़ कर इस आग में डालते और गलाते हैं। सोना, चाँदी, ताँबा और सीसा गल कर बर्तन के पेंदे के छेद से गड्ढे में आ जाते हैं। जो कुछ बर्तन में बाकी रह जाता है उसे बाहर निकाल लेते हैं और नर्म कर के धोते हैं। सीसे को अलग कर लेते हैं। फिर राख को एकत्र करते है और इससे भी दूसरी क्रिया द्वारा लाभ उठाते है। जो धातु गड्ढे में आ जाती है उसे निकाल कर पुनहर की विधि से गलाते है। सीसा राख में मिल जाता है। तीस सेर निकल आता है और १० सेर जल जाता है। सोना, चाँदी, ताँबा और थोड़ा सीसा अपनी हालत में रह जाते हैं और उसको बुगरावटी कहते हैं और कुछ लोग गुगरावटी कहते हैं।

बुगरावटी की क्रिया—एक गड्ढा खोदते हैं और १०० तोले बुगरावटी के लिए ½ सेर बबूल की राख डालते हैं। उस राख को रकाबीदार बना कर उसमें बुगरावटी भरते हैं और उसमें एक तोला ताँबा और २५ तोला सीसा बढ़ाते हैं। अब उस रकाबी को कोयले से भर कर एक ईंट से ढक देते हैं। जब मिश्रण गल जाता है तो कोयले और ईंट को हटा कर बबूल की लकड़ियाँ जलाते हैं जब तक कि सीसा और ताँबा राख में न मिल जाँय और सोना और चाँदी अलग न हो जाँय। इस राख को भी खरल कहते हैं और उससे सीसा और ताँबा निकाला जाता है। उस क्रिया का वर्णन आगे किया जायगा।

आईन ८

चाँदी को सोने से अलग करने की क्रिया

मिश्रण को छः बार गलाते हैं, तीन बार ताँबे के साथ और तीन बार छाछिया गंधक के साथ। इस मिश्रण के हर तोले के लिये एक माशा ताँबा और २ माशा २ सुर्ख गंधक लेते हैं। पहले, ताँबे के साथ और फिर गंधक के साथ। यदि मिश्रण १०० तोले होता है तो १०० माशा ताँबा प्रयोग में लाते हैं। पहले ५० माशा ताँबा मिश्रण के साथ गलाते हैं और शेष आधे को दो बार (२५-२५ माशा मिलाकर) गलाते हैं। गंधक को भी इसी अनुपात से आग में रखते हैं। उस मिश्रण के छोटे छोटे टुकड़े करके घरिया में भरते हैं और ५० माशा ताँबा मिलाकर गलाते हैं। उसके पास ठंढे पानी से भरा हुआ एक बर्तन रखते हैं और उसके ऊपर खस की झाड़ू बिछा देते हैं। पिघली हुई धातु को उस पर उड़ेलते हैं और लकड़ी से हिला कर जमने नहीं देते। इसके बाद उन टुकड़ों को फिर से शेष आधे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मशाले में मिलाते हैं और एक घरिया में डाल कर आग में रखते हैं। जब पिघल जाता है तो उसे उठाकर छाया में रखते हैं जिससे ठंडा हो जाय। इस मिश्रण के हर तोले में दो माशा दो सुर्ख गंधक प्रयोग में लाते हैं, अर्थात् हर १०० तोला मिश्रण के लिए १¾ सेर गंधक काम में आती है। तीन बार इस प्रकार क्रिया करते हैं और उसके ऊपर एक सफेदी सी जमी हुई दिखाई देती है। यह चाँदी है जो इस तरह निकली है। उसको निकाल कर अलग रखते हैं जिसकी क्रिया का वर्णन बाद में किया जायगा। जब तीन तीन बार ताँबे और गंधक के साथ गलाया जा चुकता है तो वह जमी हुई टिकिया सोना होती है। पंजाबी भाषा में इसे **कैल** और दिल्ली में **पिंजर** कहते हैं। यदि मिश्रण में सोना अधिक होता है तो ऐसी दशा में ६½ बान का निकलता है परन्तु अधिकतर सोना पाच बान या चार ही बान का होता है।

सोना को खरा करने के लिये क्रियाओं में से एक का करना आवश्यक है। ४०० तोले खरे सोने में इस सोने के ५० तोले मिलाते हैं और सलोनी क्रिया से उसको शुद्ध कर लेते हैं, या वे अलोनी क्रिया से काम लेते हैं। और इस क्रिया में दो भाग बिनवा कंडे और एक भाग शोरा नमक होता है और पिंजर की सलाइयाँ बनाकर उनके पत्तर पत्तर बनाते हैं। हर पत्तर का वजन १½ तोले से कम नहीं होता परन्तु सलोनी पत्तरों से यह पत्तर जरा चौड़े होते हैं। उन पर सफेद और काले दोनों तिलों का तेल मल कर मसाले का लेप चढ़ाते हैं। हर लेप के बाद दो हल्की आँचें देते हैं। इस प्रकार तीन-बार मिलाते और तपाते हैं। यदि इससे अधिक खरा सोना चाहते हैं तो इस क्रिया को बार बार करते हैं यहाँ तक कि सोना ९ बान का हो जाता है। उसकी राख रख लेते हैं और यह खरल के समान होती है।

आईन ९

राख से चाँदी निकालने की विधि

अलोनी क्रिया के पहले और बाद में जो राख जमा कर ली जाती है उसका दुगुना खालिस सीसा मिलाकर घरिया में डालते हैं और एक पहर कोयले की आँच देते हैं। जब ठंडी हो जाती है तब सब्बाकी विधि[1] से साफ करते हैं। इसकी राख भी **खरल** होती है। सलोनी के दूसरे ढङ्ग भी हैं जो गुणवानों से गुप्त नहीं हैं।

१८. पनीवार—खरल को गलाकर चाँदी को ताँबे से अलग करता है। उसकी मजदूरी १ तोला चाँदी के लिए १½ दाम है। जो लाभ उसे होता है उसके बदले में वह प्रति मास ३०० दाम दीवान को देता है। खरल के वह टुकड़े-टुकड़े करता है और १ मन खरल में १½ सेर सोहागा और तीन सेर सज्जी कूटकर सानता है। उक्त बर्तन में एक-एक बार सेर सेर डालता गलाता है। तब चाँदी मिला हुआ सीसा उस गड्ढे में इकट्ठा होता है। बाद में यह 'सब्बाकी' क्रिया से साफ होता है। सीसा जो चाँदी से अलग होकर राख में मिल जाता है फिर **पुनहर** बन जाता है।

१९. पैकार—सलोनी और खरल शहर के सोनारों से खरीदता है और टकसाल घर में गलाता है और सोने तथा चाँदी से लाभ उठाता है। एक मन सलोनी के लिये १७ दाम और १ मन खरल के लिए १४ दाम खालसा में जमा करता है।

२०. निचोईवाला—चाँदी मिले हुये पुराने ताँबे के पुराने सिक्के गलाता है। और १०० तोला चाँदी के लिए ३½ रुपये दीवान को देता है। जब वह चाँदी के सिक्के बनवाता है तो उसकी निर्धारित मजदूरी अलग से देता है।

---

[1] **इसका उल्लेख आईन ७ में हो चुका है।**

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२१. **खाकशोई**—जब माल के मालिक विभिन्न प्रकार से, जैसा वर्णन हो चुका है, चाँदी सोना ले जा चुकते हैं तब यह व्यक्ति टकसाल में झाड़ू देता है और राख को अपने घर ले जाता है और उसको धोकर लाभ उठाता है। बहुत से लोग इस उद्यम से समृद्ध हो जाते हैं। प्रत्येक खाकशोई प्रति मास १२½ रुपया शुकराने के तौर पर खजाने में जमा करता है।

टकसाल घर के सब पेशेवर हर सौ दामों की आय पर प्रति मास ३ दाम सरकारी खजाने में जमा करते हैं।

आईन १०

राज्य की मुद्राएँ

बादशाह के ध्यान देने से जैसे सोना और चांदी बहुत अधिक शुद्धकर दिए गए उसी प्रकार विभिन्न मुद्राएँ शुद्ध और सुन्दर बनाई गईं जिससे कोषागार की शोभा बढ़ी जिससे लोगों को सुख प्राप्त हुआ। उनमें से कुछ मुद्राओं और उनकी विशेषताओं का वर्णन लिखा जाता है।

स्वर्ण मुद्राएँ

१. **सहँसा**—गोल सिक्का है, तौल में १०१ तोले ६ मासे ७ सुर्ख; मूल्य १०० लाल जलाली। एक तरफ बीच में सम्राट् का नाम खुदा है और किनारे की पांचों मेहराबों में "अस्सुलानुलआजमुल खाकामुलमुअज्जमो खल्लद अल्लाहो मुल्कहू वा सुल्तान हू ज़र्ब दारुलखिलाफ़त आगरा"[१] लिखा हुआ है। दूसरी तरफ बीच में कलमें तैयबा[२] और यह आयत "अल्लाहो यर्जोको मँइ यशाओ बेगैरे हिसाब" [ईश्वर जिसको चाहता है बिना हिसाब रोजी देता है] और चारों तरफ पहले चार खलीफों,[३] अल्लाह उनसे राजी रहे, के नाम खुदे हुए हैं। पहले मौलाना मक़सूद मोहर खोदने वाले, नक्काशी करते थे। उसके बाद मुल्ला अली अहमद ने कला की उन्नति की और सिक्के के एक तरफ "अफ़जलू दीनारिन युनफेकोह उर्रजलो दीनारन युनफेकोह आला असहाबही फ़ी सबीलिल्लाहे"[४] बढ़ाया और दूसरी तरफ "अस्सुल्तानुल आली अल्खलीफ तुल मुतआली खल्लद अल्लाहो तआला मुल्कहू व सुल्तान हू व अब्बदअ अदलहू व एहसानहू"[५] लिखा। इसके बाद यह सब इबारत मिटा दी गई और कवि-सम्राट् तथा दार्शनिक शेख फैजी की निम्न दो रुबाइयाँ एक तरफ लिखी गईं।

खुरशीद[६] कि हफ़्त वह अजू गौहर याफ़्त
संगे सियाह अज़ परतवे आँ जौहर याफ़्त।
कान अज़ नज़ेर तरबियते ऊ ज़र याफ़्त
व आँ जर शरफ अज़ा सिक्कये शाह अकबर याफ़्त।

---

[१] महान सुल्तान प्रतिष्ठित सम्राट्, ईश्वर उनके देश और राज्य को अमर बनावें, राजधानी आगरा में खुदा हुआ। [२] ला इलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मदु रसूलल्लाह [ईश्वर एक है और मुहम्मद उसके रसूल हैं]। [३] बकर, उसमान, उमर और अली। [४] सबसे अच्छा दीनार जो मनुष्य खर्च करता है वह दीनार है जिसे अ ने धर्मानुयायियों के ऊपर अल्लाह के रास्ते में खर्च करता है। [५] महान सुल्तान, उच्चकोटि के खलीफा, सर्वशक्तिमान् ईश्वर उनके देश और राज्य को अमर बनावें और उनके न्याय और एहसान को सदा बनाये रखें। [६] मध्य युगीन प्राकृतिक दार्शनिकों के अनुसार सूर्य के प्रभाव से धातु, मोती और रत्नों का जन्म होता है, दे० आईन १३।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

[सूर्य से सात समुद्रों ने मोती प्राप्त किया काला पत्थर ने उसकी चमक से कांति प्राप्त की। खान ने उसकी पोषक दृष्टि से सोना पाया और उनके सोने ने अकबर की मुद्रा से प्रतिष्ठा प्राप्त की।]

और बीच में "अल्लाहो अकबर जल्ल जलालहू" [ईश्वर महान है, उसका ऐश्वर्य महान है] लिखा। और दूसरी तरफ रुबाई :

इँ सिक्का कि पीराये उम्मीद बूअद
बा नक्शे दवाम व जावेद बूअद
सीमाये सादतश हमीन बस कि व दह
यक ज़र्रा नज़र कर्दए खुरशीद बूअद।

[यह सिक्का जो आशा का आभूषण है। इस पर शाश्वत मोहर और अमर नाम है। उसकी कल्याणप्रदता का लक्षण यही पर्याप्त है। कि सब युगों के लिए सूर्य ने एक बार उस पर दृष्टिपात किया है]
और बीच में ईलाही वर्ष और मास अंकित किए गए।

२. इसी नाम और आकार का सोने का दूसरा सिक्का है जो वजन में ९१ तोले ८ माशे है और मूल्य १०० गोल अशर्फियाँ हैं जिनमें से हरएक का वजन ११ माशे है। इस पर भी उपर्युक्त अंक है।

३. रहस—उपर्युक्त दोनों सिक्कों में से हरएक का आधा; कभी कभी वर्गाकार होता है। एक तरफ सहँसा का नक्श है और दूसरी तरफ कवि-सम्राट् (फैजी) की रुबाई :

ईँ नक़्दे रवाने गंजे शाहन शाही
बा कौकबे इकबाल कुनद हमराही
खुरशीद बपरवरअश अज़ आँ रू कि बदह
याबद शरफ अज़ सिक्के अकबर शाही।

[शाही खजाने का यह प्रचलित सिक्का, सौभाग्य के तारे का साथ देता है। हे सूर्य, इसका पोषण करो, क्योंकि सब युगों के लिए अकबर की मोहर से यह श्रेष्ठ बनाया गया है।]

४. आत्मा—सहँसा का $\frac{1}{8}$ भाग, गोल और वर्गाकार; कुछ सिक्कों पर सहँसा का नक्श है और कुछ के एक तरफ कवि-सम्राट् (फैजी) की यह रुबाई :

ईँ सिक्का कि दस्ते बख्त रा जेवर बाद
पैराय ये नोह सिपहरो हफ्त अख्तर बाद।
ज़र्रीँ नक्दीस्त कार अज़ो चूँ ज़र बाद
दर दहर रवाँ बनामे शाह अकबर बाद।

[यह सिक्का—भाग्यशाली लोगों के हाथ की शोभा बढ़ावे, और यह नौ आकाशों और सात सितारों के लिए आभूषण बने—

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोने का सिक्का है—इसका काम सुनहला होवे ! सब युगों में अकबर शाह के नाम से प्रचलित होवे।]

और दूसरी तरफ पहली रुबाई खुदी है।

५. **बिन्सत**—गोल और वर्गाकार दोनों तरह का होता है। यह सिक्का पहले का $\frac{१}{८}$ है। इसी तरह सोने के दूसरे सिक्के में सहँसा के $\frac{१}{८}$, $\frac{१}{१०}$, $\frac{१}{२०}$ और $\frac{१}{२५}$ के बराबर हैं।

६. **चुगुल या जुगुल**—वर्गाकार सिक्का; सहँसा का $\frac{१}{५०}$; मूल्य दो मोहर।

७. **लाल जलाली गिर्द [गोल]**—वजन और मूल्य दो गोल मोहरें एक तरफ "अल्ला हो अकबर" और दूसरी तरफ "या मुईन" [हे सहायक !] अंकित है।

८. **आफताबी**—गोल, वजन १ तोला २ माशा ४$\frac{३}{४}$ सुर्ख, मूल्य १२ रुपए। एक तरफ "अल्ला हो अकबर जल्ल जलालहू" और दूसरी तरफ इलाही सन का महीना और वर्ष और टकसाल का नाम अंकित है।

९. **इलाही**—गोल, वजन में १२ माशे १$\frac{३}{४}$ सुर्ख। इस पर आफताबी सिक्के का नक्श खुदा है, मूल्य १० रुपये।

१०. **लाल जलाली चहारगोशा [चौकोर]**—वजन और मूल्य इलाही सिक्के के बराबर। एक तरफ 'अल्ला हो अकबर' और दूसरी तरफ 'जल्ल जलालहू'।

११. **अदल गुटका**—गोल, वजन ११ माशा और मूल्य ९ रुपया। एक तरफ "अल्ला हो अकबर" और दूसरी तरफ "या मुईन"।

१२. **मोहरे गिर्द [गोल अशर्फी]**—वजन और मूल्य में अदल गुटका के बराबर लेकिन उसका नक्श दूसरा[१] है।

१३. **मेहराबी**[२]—तौल, मूल्य और नक्श में गोल अशर्फी के समान।

१४. **मुईनी**—गोल और चौकोर; तौल और मूल्य में लाल जलाली और गोल अशर्फी के बराबर; उस पर 'या मुईन' का नक्श है।

१५. **चहार गोशा**—नक्श और तौल में आफताबी की तरह।

१६. **गिर्द**—इलाही का आधा होता है और नक्श वही।

१७. **धन**—लाल जलाली का आधा।

१८. **सलीमी**—अदल गुटका का आधा।

१९. **रबी**—आफताबी का चौथाई।

२०. **मन**—इलाही और जलाली का $\frac{१}{४}$।

२१. **निस्फ सलीमी**—अदल गुटका का $\frac{१}{४}$।

२२. **पंज**—इलाही का $\frac{१}{५}$।

२३. **पांडौ**—लाल जलाली का पाँचवाँ भाग; एक तरफ लाला और दूसरी तरफ नसरीं का नक्श खुदा है।

२४. **समनी—अष्ट सिद्ध** भी कहते हैं। इलाही मोहर का $\frac{१}{८}$ है। एक तरफ "अल्लाहो अकबर" और दूसरी तरफ "जल्ल जलालहू"।

२५. **कला**—इलाही का $\frac{१}{१६}$ दोनों तरफ नसरीं का फूल।

२६. **जर्रा**—इलाही का $\frac{१}{३२}$ और इस पर कला की तरह नक्श।

---

[१] सैयद अहमद द्वारा सम्पादित आईन के अनुसार उस पर कलमा लिखा है। [२] मेहराबी की शकल यह है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नियम यह है कि शाही टकसाल में सोने से एक-एक महीना लाल जलाली, धन, और मन, के सिक्के ढाले जाते है। दूसरे सिक्के बिना नई आज्ञा के नहीं तैयार किये जाते।

(ख) चाँदी के सिक्के

१. **रुपया**—चाँदी का सिक्का; गोल, और वजन ११½ माशा शेर खाँ के शासन में आविष्कार हुआ और अकबर के शासन में पूर्णता को पँहुचा और उसपर नया नक्श लिखा गया। एक तरफ "अल्लाहो अकबर जल्ल जलाल हू" और दूसरी तरफ तारीख अंकित है। यह ४० दामों के बराबर है। यद्यपि इसका भाव घटता-बढ़ता रहता है तथापि वेतन-वितरण में इसका मूल्य सदैव ४० दाम समझा जाता है।

२. **जलाला**—चौकोर; इसी राजकाल में प्रचलित हुआ। तौल और नक्श में पहले सिक्के की तरह।

३. **दर्ब**—जलाला का आधा।

४. **चर्न**—जलाला का चौथाई।

५. **पाँडौ**—जलाला का पाँचवाँ भाग।

६. **अष्ट**—जलाला का आठवाँ भाग।

७. **दसा**—जलाला का दसवाँ भाग।

८. **कला**—जलाला का सोलहवाँ भाग।

९. **सूकी**—जलाला का बीसवाँ भाग।

यही रेजकारियाँ रुपए से भी बनाते हैं परन्तु उनके आकार भिन्न होते हैं।

(ग) ताँबे के सिक्के

१. **दाम**—ताँबे का सिक्का है; तौल ५ टाँक अर्थात् १ तोला ८ माशा ७ सुर्ख है; रुपए का $\frac{1}{40}$ भाग। पहले इसको पैसा और बहलोली भी कहते थे। आजकल 'दाम' के नाम से मशहूर है। एक तरफ टकसाल का नाम और दूसरी तरफ सन् और महीना अंकित है। हिसाब करने वाले दाम को २५ भागों में विभक्त करके हर भाग को, जीतल कहते हैं। यह काल्पनिक विभाजन केवल हिसाब लिखने में प्रयोग में आता है।

२. **अधेला**—दाम का आधा।

३. **पावला**—दाम का चौथाई।

४. **दमड़ी**—दाम का आठवाँ भाग।

इस शासन काल के आरम्भ में सोने के सिक्के अनेक स्थानों में ढाले जाते थे परन्तु अब केवल चार स्थानों में बनाए जाते हैं, राजधानी, बंगाला, अहमदाबाद और काबुल में। चाँदी और ताँबे के सिक्के इन चार स्थानों में और दस अन्य नगरों में ढाले जाते हैं। इलाहाबास (इलाहाबाद), आगरा, उज्जैन, सूरत, दिल्ली, पटना, कश्मीर, लाहौर, मुलतान, टाँडा। २८ नगरों में केवल ताँबे के सिक्के ढाले जाते हैं : अजमेर, अवध, अटक, अलवर, बदायूँ, बनारस, भक्कर, बहेरा, पटन, जौनपुर, जालंधर, हरद्वार, हिसार, फिरोजा, काल्पी, ग्वालियर, गोरखपुर, कलानूर, लखनऊ, मन्दू, नागौर, सरहिन्द, स्यालकोट, सरोंज, सहारनपुर, सारंगपुर, सम्बल, कन्नौज, रणथम्भोर। इस समृद्धिशाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देश में अधिकतर क्रय-विक्रय गोल अशर्फी, रुपया, और दाम के द्वारा होता है। लालची और धोखेबाज लोग सिक्कों को घिसकर तथा वैसे ही दूसरे उपायों से लोगों को तरह तरह की हानि पहुँचाते हैं। बादशाह सदैव अनुभवी लोगों के परामर्श से और समय की गति पहचान कर नये कानून बनाते रहते हैं और इन धोखेबाजी का उपचार करते रहते हैं।

प्रचलित सिक्कों में अनेक परिवन हुए।[१] पहलीबार जब शासन की बागडोर राजा टोडरमल[२] के हाथ में थी तो सम्राट् ने चार प्रकार की मोहरें प्रचलित की थीं :

(क) लाल जलाली—जिस पर बादशाह का नाम खुदा था और जिसका वजन १ तोला १¾ सुर्ख था। बिल्कुल खरा, मूल्य ४०० दाम। फिर एक मोहर जो शासनकाल के आरम्भ में शाही सिक्के के रूप में प्रचलित थी। इसका वजन ११ माशा था। यह तीन प्रकार की थी। (ख) यह मोहर जब बिल्कुल खरी और वजन में पूरी होती थी तो उसका मूल्य ३६० दाम था। यदि प्रचलन के कारण इसका वजन ३ चावल घट जाता था तो उसको उसी कोटि में रखते थे और उसके मूल्य में कोई अन्तर नहीं पड़ता था। (ग) यदि उस मुहर का वजन चार चावल से छः चावल तक घट जाता था तो वह दूसरी कोटि की समझी जाती थी और उसका मूल्य ३५५ दाम होता था। (घ) यदि ६९ से चावल तक वजन घिस जाता था तो वह तीसरी कोटि की समझी जाती थी और उसका मूल्य ३५० दाम था। यदि वजन में इससे भी अधिक कमी हो जाती है तो उसको बिना ढाला हुआ सोना समझते थे।

तीन प्रकार के रुपये प्रचलित थे। **(१) चहारगोशा (चौकोर)**—शुद्ध चाँदी का; वजन ११½ माशा, **नाम जलाला**—मूल्य ४० दाम। **(२) गोल, पुराना अकबर शाही रुपया**—वजन पूरा या एक सुर्ख कम होने पर मूल्य ३९ दाम। **(३)** इसका वजन जब दो सुर्ख तक कम होता था तो उसका मूल्य ३८ दाम था। जिन रुपयों का वजन २ सुर्ख से अधिक घट जाता था वे चाँदी माने जाते थे।

दूसरी बार जब इलाही सन् के २९ वें वर्ष के १८ मेहर को जब अजदुद्दौला अमीर फतेह उल्लाह शीराजी[३] विभाग के प्रधान अधिकारी नियुक्त हुए तो शाही फरमान[४] जारी हुआ कि यदि घिसावट के कारण मोहर में तीन

---

[१] यह वाक्य मूल ग्रंथ में नहीं है। प्रकरण को स्पष्ट करने के लिए ब्लाकमैन के अनुवाद से ले लिया गया है।

[२] राजा टोडरमल जाति के खत्री थे और लाहौर में पैदा हुए थे। अकबर के शासन के २७ वें वर्ष में साम्राज्य के दीवान नियुक्त हुए और उन्होंने माल के विभाग में अनेक सुधार किए। वे चहार हजारी थे। शासन के ३४ वें वर्ष में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। १० नवम्बर १५८९ को गंगातट पर उनका देहान्त हो गया।

[३] अमीर फतेह उल्लाह शीराज़ का निवासी और ख्वाजा जमाल उद्दीन महमूद कमाल उद्दीन शीरवानी तथा मीर गयासुद्दीन मन्सूर शीराज़ी का शिष्य था। यह तत्वज्ञान, पदार्थविज्ञान तथा यंत्रविज्ञान का धुरन्धर विद्वान् था। उसकी स्मृति विलक्षण थी। अबुलफज्ल उसकी प्रशंसा में कहता था कि यदि प्राचीन ग्रंथ नष्ट हो जाँय तो अमीर उन्हें फिर से लिख सकता है। बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह के निमंत्रण से वह शीराज़ छोड़कर दक्षिण भारत में गया। आदिलशाह की मृत्यु के पश्चात् ९९१ हिजरी में अकबर ने उसे आमंत्रित करके 'सद्र' नियुक्त किया और तीन वर्ष उपरांत उसे 'अमीनुलमुल्क' की उपाधि से विभूषित किया। वह टोडरमल का सहायक नियुक्त हुआ और उसकी बहुत सहायता की। उसी वर्ष अमीनुलमुल्क की उपाधि 'अजदुद्दौला' में परिवर्तित कर दी गई। ९९७ हिजरी में वह अकबर के पास कश्मीर में गया और वहीं पर ज्वर के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

[४] सम्राट् का आज्ञापत्र।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चावल, और रुपये में छः चावल तक की कमी आ जाय तो उस पर ध्यान न दिया जाय और उसको पूरे वजन का समझा जाय। यदि इससे अधिक कमी हो तो उसी के अनुसार मूल्य भी घटा दिया जाय। परन्तु यह आज्ञा नहीं थी की नौ चावल तक की कमी को समान समझा जाय। इसी कारण एक सुर्ख कम मोहर का मूल्य ३५५ दाम और कुछ भिन्न (बटा) के रूप में निर्धारित हुआ और सिक्का बनाये हुये १ सुर्ख सोने का मूल्य चार दाम और कुछ भिन्न (बटा) के रूप में निश्चित हुआ। पहले टोडरमल के कानून के अनुसार, हर सुर्ख की कमी के लिए मूल्य ५ दाम कम कर दिया जाता था। यदि मोहर के वजन में तीन चावल से आधा सुर्ख भी अधिक कमी हो जाती थी तो मूल्य में से ५ दाम काट लेते थे। यदि मोहर वजन में १½ सुर्ख कम हो जाती थी तो उसकी कीमत १० दाम घट जाती थी। यदि वजन की कमी डेढ़ सुर्ख से कम भी होती थी तो भी मूल्य में अन्तर नहीं पड़ता था (अर्थात् १० दाम काट लिया जाता था । (अजदुद्दौला के) नए अधिनियम के अनुसार मोहर की कीमत में छः दाम और कुछ की कमी कर दी गई और उसकी कीमत ३५३ दाम और कुछ भिन्न (बटा) निर्धारित हुई।[1] (पहले) गोल रुपये का मूल्य जो वजन में ठीक, और जिसकी चाँदी खरी थी चौकोर रुपये से एक दाम कम था। (फतेह उल्ला शीराजी ने) इस नियम को रद्द कर दिया और गोल रुपया जो वजन में पूरा या एक सुर्ख कम था उसका मूल्य ४० दाम नियत किया। पहले जो रुपया वजन में २ सुर्ख कम होता था उसकी कीमत दो दाम कम समझी जाती थी परन्तु अब केवल एक दाम से कुछ ही अधिक की कमी की जाती है। तीसरे, जब अजदुद्दौला खानदेश गया तो राजा (टोडरमल) ने मोहर की कीमत जलाला रुपयों के स्थान में गोल रुपयों में निर्धारित की और अपने स्वाभाविक पक्षपात और हठधर्मी के कारण मोहर और रुपये की कमी को पहली रीति के अनुसार निर्धारित किया।

चौथे जब सम्राट् की आज्ञाओं की रक्षा का दायित्व कुलीज खाँ[2] पर आया तो उसने भी राजा (टोडर मल) के नियमों का समर्थन किया किन्तु मोहर के वजन में जितनी कमी के लिए राजा ने ५ दाम कीमत घटाई थी उतने के लिए कुलीज खाँ ने दस दाम घटा दिया। जो मोहर राजा के समय में १० दाम कम पर चलता था उसे कुलीज खाँ ने २० दाम कम पर चलाया। जो मोहर वजन में १½ सुर्ख कम होती थी कुलीज खाँ ने उसे बिना ढला हुआ सोना निर्धारित किया। (इसी तरह) जिस रुपये के वजन में एक सुर्ख से अधिक की कमी थी वह बिना ढली हुई चाँदी समझा गया।

सम्राट् अपने उच्च अधिकारियों पर भरोसा करके अपने कार्याधिक्य के कारण सिक्कों के प्रचलन और उनके मूल्य की कमी या अधिकता पर कम ध्यान देते थे। जब इस विभाग की दुर्व्यवस्था का समाचार सम्राट् के कानों तक पहुँचा तो उसने सुन्दर कानून प्रचलित किया। दूर तथा निकट हर व्यक्ति को हर्ष हुआ और देश के लोगों को हानि

---

[1] अजदुद्दौला ने १ सुर्ख मुद्रित सोने का मूल्य ४ दाम और कुछ भिन्न निर्धारित किया था। अतएव पूरी तौल (११×८ सुर्ख) की मोहर का मूल्य ११×८×(४+कुछ भिन्न) दाम अर्थात् अबुल फज्ल के अनुसार ३५३ दाम और कुछ भिन्न निर्धारित किया गया। पहले इसका मूल्य ३६० दाम था।

[2] कुलीज खाँ अकबर के शासन के १७ वें वर्ष में सूरत के किले का शासक बनाकर भेजा गया था जिसको बादशाह ने ४७ दिन के घेरे के बाद जीता था। तेईसवें वर्ष वह गुजरात भेजा गया और शाह मंसूर की मृत्यु के उपरान्त पिछले दो-दो वर्षों के लिए दीवान नियत हुआ। अट्ठाइसवें वर्ष उसने गुजरात की विजय में फिर भाग लिया। चौंतीसवें वर्ष उसे सम्भल की जागीर मिली। टोडरमल की मृत्यु के बाद वह दीवान बनाया गया। इसी समय उसने सिक्कों के मूल्य में हेर फेर किया। सन् १००२ हिजरी में वह काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ। परन्तु वहाँ वह असफल रहा। १००७ हिजरी में वह आगरे का गवर्नर था। दो वर्ष बाद वह पंजाब और काबुल का गवर्नर नियुक्त हुआ। १०३५ हिजरी में उसकी मृत्यु हो गई। वह चार हजारी, पक्का सुन्नी, तथा कवि था। उसका उपनाम 'उलफती' था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के कष्ट से मुक्ति मिली। २६ बहमन[1] सन् ३६ इलाही[2] को दूसरा अधिनियम (अजदुद्दौला का) स्वीकार किया गया। केवल इतना परिवर्तन कर दिया कि यदि मोहर के वजन में तीन चावल और रुपए के वजन में छः चावल की कमी हो तो उसको बिना ढली हुई धातु समझ कर सिक्कों के में स्वीकार न किया जाय। इस आईन ने कमीने लोगों की धोखे बाजी और मक्कारी का जड़ से नाश कर दिया। यदि टकसाल के अधिकारी उतने ही कम वजन का सिक्का तैयार करें या खजाने के अधिकारी पूरे वजन वाले सिक्कों को इतने कम वजन का बतावें तो इसका कोई उपचार न था। लेकिन इस नए कानून से सचाई का बाजार सजगया और जनता को हर्ष हुआ। इसके अतिरिक्त, निर्लज्ज चोट्टे हल्के चावल चुन कर उनसे सिक्कों को तौलते थे और तीन चावल कम वाली मोहर को छः चावल कम ठहराते थे। और जो मोहर छः चावल कम होती थी उसे ९ चावल कम कहते थे। इसी तरह सिक्कों के वजन की कमी बढ़ती जाती थी, और बहुत सा सोना बीच में हड़प लिया जाता था और ये हानियाँ अनन्त मालूम होती थीं। बादशाह की आज्ञा से बाबाशोरी चावल बनाए गए और तौलने में इन्हीं का प्रयोग होने लगा। उसी बर्ष और उसी महीने में बहुत चेष्टा की गयी कि खजाञ्ची और महसूल वसूल करने वाले कर्मचारी प्रजा से किसी विशेष प्रकार के सिक्के न माँगें और सिक्कों के वजन और शुद्धता में जो कमी हो उसका सही अनुमान करके वर्तमान दर के अनुसार बिना घटाए-बढ़ाए रकम वसूल करलें। बादशाह की पवित्र आज्ञा ने धोखेबाजों को जड़ से उखाड़ दिया। लालची लोगों को संयम की शिक्षा दी और सारी प्रजा को अत्याचारियों से मुक्त किया।

आईन ११

दिरहम और दीनार

चूँकि राजकीय सिक्कों की विलक्षणता का उल्लेख किया जा चुका, लेखक उनमे से दो सिक्कों का वर्णन करता है और पुराने सिक्कों के पद को प्रकाश में लाता है।

दिरहम (दिरहाम भी कहते हैं।)—चाँदी का सिक्का था जिसकी शक्ल खजूर की गुठली से मिलती थी। फारूक की खिलाफत[3] में यह गोल बनाया गया। जुबैर के समय में 'अल्लाह' और 'बरकत' शब्द खोदे गए। हज्जाज ने इस सिक्के पर सूरे इख़लास[4] खुदवाया; कुछ लोग कहते हैं कि हज्जाज ने उस पर अपना नाम खुदवाया। एक समूह का कहना है कि सबसे पहले जिसने दिरहम पर नक्श खुदवाया वह फारूक थे। कुछ लोग कहते हैं कि अब्दुल मलिक बिन मरवान के समय में रूमी दीनार और किसरवी तथा हिमैरी दिरहम प्रचलित थे। उसकी आज्ञा से हज्जाज बिन यूसुफ ने दिरहम पर नक्श खुदवाया। एक समूह ऐसा कहता है कि हज्जाज ने खोटे दिरहमों को खरा कराया और उन पर अल्लाहो अहद (ईश्वर एक है) और 'अल्लाहुस्समद' (ईश्वर आवश्यकता से परे है)[5] खुदवाया और इन दिरहमों का नाम मकरूहा (घृणास्पद) पड़ा क्योंकि इनसे ईश्वर के पवित्र नाम का सम्मान नहीं होता था, अथवा लोग परिवर्तन के कारण उनको इस नाम से पुकारते थे। हज्जाज के बाद उमर बिन हुबैरा ने यजीद बिन अब्दुल मलिक के शासन काल में ईराक राज्य में दिरहमों को हज्जाज से बढ़कर बनवाया और इसके बाद ईराक के शासक खालिद बिन अब्दुल्लाह कसरी ने उनको और अधिक शुद्ध बनवाया। इसके बाद यूसुफ बिन उमर ने दिरहमों की शुद्धता को पराकाष्ठा तक पहुँचाया। कहते हैं कि सबसे पहला व्यक्ति जिसने दिरहम तैयार कराए वह मुसअब

---

[1] फागुन। [2] १५९२ ई०। [3] खलीफा का शासनकाल। [4] कुरानशरीफ का एक अध्याय जिसमें केवल दो पंक्तियाँ हैं जो 'कुल हो वा अल्लाह' से आरम्भ होती है। [5] ब्लाकमैन ने 'समद' का अर्थ eteral 'नित्य' लिखा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बिन जुबैर थे और उनके भिन्न-भिन्न वजन बताए जाते हैं जैसे दस, नौ, छः या पाँच मिस्काल। दूसरे लोगों का कहना है कि इन सिक्कों का वजन बीस, बारह, और दस कीरात[1] था। फारूक ने हर प्रकार का एक एक दिरहम लिया और १४ कीरात का १ दिरहम बनाया जो उनके वजनों के योगफल का $\frac{1}{3}$ होता है। एक समूह का यह कहना है कि उमर के समय में कई प्रकार के दिरहम प्रचलित थे। **हश्त दाँगी** जिसका वजन आठ दाँग था जिसको बग़ली कहते थे। रास बगल ने, जो सिक्कों का विशेषज्ञ था, उमर की आज्ञा से इस दिरहम को प्रचलित किया और वह सिक्का इसी व्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध होकर बगली कहलाया। कुछ लोग कहते हैं कि यह सिक्का बगल[2] नामक गाँव से सम्बन्धित होकर बगली कहलाया। **चहारदाँगी** (जिनका वजन चारदाँग था) को तबरी कहते थे। **सेहदाँगी** (जिसका वजन तीन दाँग था) को मगरिबी कहते थे। एक दाँगी (जिसका वजन एक दाँग होता था) को **यमनी** कहते थे। उमर ने चारों के वजनों के योग का आधा करके एक वजन का सिक्का बनवाया। फाजिल खुजन्दी का कहना है कि पुराने समय में दो प्रकार के दिरहम प्रचलित थे; एक, हश्त दाँगी और दूसरा, शशदाँगी (आठ दाँगों वाला और छः दाँगों वाला) [उसका १ दाँग = २ कीरात; १ कीरात = २ तस्सूज; १ तस्सूज = २ हब्बा)। नाकिस ४ दाँगों और कुछ भिन्न भर था। और भी बहुत से रायें हैं।

दीनार—सोने का सिक्का है जिसका वजन १ मिस्काल है। दीनार दिरहम का $1\frac{3}{5}$ गुना है। कहते हैं १ मिस्काल = ६ दाँग; १ दाँग = ४ तस्सूज; १ तस्सूज = २ हब्बा, १ हब्बा = २ जौ, १ जौ = ६ खरदल (सरसों), १ खरदल = १२ फल्स, १ फल्स = ६ फतील, १ फतील = ६ नकीर, १ नकीर = ६ कतमीर, १ कतमीर = १२ जर्रा। इस हिसाब से १ मिस्काल ९६ जौ के बराबर है। मिस्काल एक पत्थर है जिससे सोना तौलते हैं और सिक्के[3] का भी नाम है। कुछ पुराने लेखों से ज्ञात होता है कि यूनानी मिस्काल प्रचलित नहीं है और (इस मिस्काल से) दो कीरात कम है। यूनानी दिरहम दूसरे दिरहमों से भिन्न हैं और वजन में $\frac{1}{2}$ या $\frac{1}{4}$ मिस्काल कम होता है।

आईन १२

सोने और चाँदी के व्यापारियों का लाभ

एक तोला दस बानी सोने का मुल्य एक गोल मोहर है जिसका वजन ११ माशा है। यदि सोना चौथाई बान कम अर्थात् $९\frac{3}{4}$ बानी है तो १ मोहर से १ तोला २ सुर्ख सोना मिलता है। यदि सोना आधा बान कम है अर्थात् $९\frac{1}{2}$ बानी है तो १ तोला ४ सुर्ख; यदि तीन चौथाई बान कम अर्थात् $९\frac{1}{4}$ बानी है तो १ तोला ६ सुर्ख; यदि सोना ९ बानी है तो १ तोला १ माशा मिलता है। इसी प्रकार हर बान की कमी बदले में १ माशा सोना बढ़ता जाता है।

व्यापारी १०० लाल जलाली मोहरों से १३० तोला २ माशा $\frac{1}{2}$ सुर्ख $८\frac{1}{4}$ बानी सोना जिसे हुन कहते हैं खरीदता है। इसमें से २२ तोला ९ माशे $७\frac{1}{2}$ सुर्ख गलाने में जल जाता है और खाके खलास में मिल जाता है। १०७ तोला ४ माशा $१\frac{1}{2}$ सुर्ख शुद्ध सोना शेष रह जाता है जिससे १०५ मोहरें बनाई जाती हैं और लगभग $\frac{1}{2}$ तोला सोना बच जाता है जिसका दाम ४ रुपया है। खाके खलास से २ तोला ११ माशा ४ सुर्ख सोना और ११ तोला $११\frac{1}{2}$ माशा

---

[1] कैरट का रूपान्तर है। [2] कुछ पांडुलिपियों के अनुसार एक प्रकार के सोने का नाम। [3] सोने का सिक्का।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

$\frac{1}{2}$ सुर्ख चाँदी निकलती है। इन दोनों की कीमत ३५ रुपये १२ $\frac{1}{2}$ तंगो[1] है। इस तरह हुन सोने की उपरोक्त मात्रा की कीमत १०५ मोहर ३९ रुपये और २५ दाम है। इस धन में से उपरोक्त दर के अनुसार २ रुपया १८$\frac{1}{2}$ दाम कारीगर अपनी मजदूरी ले लेते हैं। ५ रुपया ८ दाम ८ जीतल मसाले में खर्च होते हैं जैसे सोने के साफ करने में १ रुपया ४ दाम १$\frac{1}{2}$ जीतल लगता है [२६ दाम १६$\frac{1}{2}$ जीतल के कंडे, ४ दाम २० जीतल की सलोनी, १ दाम १० जीतल का पानी, ११ दाम · जीतल का पारा], खाके खलास के धोने में ४ रुपया ४ दाम ६$\frac{1}{2}$ जीतल [२१ दाम ७$\frac{1}{4}$ जीतल कोयले ,में ३ रुपया २२ दाम २४ जीतल सीसा में], ६ रु० ३७$\frac{1}{2}$ दाम सोने का मालिक व्यापारी से इस कारण लेता है कि उसने सोने को लाभप्राप्ति के लिए लगाया था। यदि सोना खालसा का होता है तो यह मुआवेजा दीवान को दिया जाता है, और १०० लाल जलाली मोहरें व्यापारी लाए हुए सोने के बदले में लेता है। १२ रुपया ३७ दाम ३$\frac{1}{2}$ जीतल व्यापारी अपने लाभ में लेता है। ५ मोहर १२ रुपया ३$\frac{1}{2}$ दाम खालसा में जमा हो जाता है।[2] इसी हिसाब से व्यापारी लाभ उठाते हैं।

यद्यपि सोना (दूसरे देशों से) भारत में लाते हैं तथापि हिन्द के उत्तरी पहाड़ों में सोना काफी मात्रा में पाया जाता है और तिब्बत में भी पैदा होता है। गङ्गा और सिन्ध नदियों के बालू से सलोनी क्रिया से सोना निकालते हैं। भारत की बहुत सी नदियों की रेत में सोना मिला हुआ है। परन्तु अधिक परिश्रम और अधिक व्यय के कारण प्रत्येक नदी के किनारे यह काम नहीं किया जा सकता।

शुद्ध चाँदी १ रुपए में १तोला २ सुर्ख खरीदी जाती है। इस प्रकार ९५० रुपए की ९६९ तोला ९$\frac{1}{2}$ माशा चाँदी मिलती है। इसमें ५ तोला ४$\frac{3}{4}$ सुर्ख चाँदी डलियाँ बनाने में जल जाती है। शेष चाँदी से १००६ रुपए बनते हैं, और २७$\frac{1}{2}$ दाम की चाँदी फाजिल पड़ जाती है। २ रुपए २२ दाम १२ जीतल कारीगरों की मजदूरी होती है [तराजू कश ५ दाम ७$\frac{3}{4}$ जीतल; चाशनीगीर ३ दाम ४$\frac{1}{4}$ जीतल; गुदाजगर ६$\frac{1}{2}$ दाम; जर्राब २ रुपया १ दाम; सिक्कची ६$\frac{1}{2}$ दाम]; १० दाम १५ जीतल मसाले में खर्च होता है (१० दाम कोयले में और १५ जीतल पानी में); ५० रुपया १३ दाम दीवान को दिया जाता है; शेष ९०५ रु० व्यापारी अपनी चाँदी के बदले में लेता है। ३ रुपया २१ दाम १०$\frac{1}{2}$ जीतल व्यापारी को लाभ होता है। यदि व्यापारी अपने घर पर ही खोटी चाँदी को शुद्ध करता है तो इससे अधिक लाभ होता है। परन्तु यदि सिक्के ढलवाने के लिए लाता है तो लाभ इतना अधिक नहीं होता।

लारी और शाही चाँदी और दूसरे प्रकार की खोटी चाँदी १ रुपए की १ तोला ४ सुर्ख खरीदी जाती है। इसलिए ९५० रु० में ९८९ तोला ७ माशा चाँदी खरीदते हैं। १४ तोला १० माशा १ सुर्ख सब्बाकी क्रिया में जल जाती है और १०० तोले में १$\frac{1}{2}$ तोला घटजाती है। ४ तोला ११ माशा ३ सुर्ख चाँदी डली बनाने में गुदाजगर की क्रिया में आग में जल जाती है। शेष चाँदी से १०१२ रुपया बनते हैं और खाके खरल से ३$\frac{1}{2}$ रुपए और प्राप्त होते हैं। ४ रुपया २७ दाम २४$\frac{3}{4}$ जीतल मजदूरी होती है (तराजूकश ५ दाम ७$\frac{3}{4}$ जीतल; सब्बाक २ रुपया १९ जीतल; कुर्स कूब ४ दाम १९ जीतल; चाशनीगीर ३ दाम ४ जीतल; गुदाजगर ६$\frac{1}{2}$ दाम; जर्राब २ रुपया १ दाम; सिक्कची ६$\frac{1}{2}$ दाम); ५ रुपया २४ दाम १५ जीतल आवश्यक कार्यों में खर्च होते हैं (५ रुपया १४ दाम सीसे में; १० दाम कोयले में और १५ जीतल पानी में) ५० रुपया २४ दाम राजकोष में जमा किया जाता है। ९५० रुपया व्यापारी चाँदी के बदले में लेता है और ४ रुपया २९ दाम लाभ लेता है।[3] कभी कभी व्यापारी चाँदी सस्ते दामों में खरीदता है और अधिक लाभ उठता है।

---

[1] १ तंगा = २ दाम; आजकल, १ तंगा = २ पाई। [2] इन व्यौरों का योग १०५ मोहर ३९ रुपया २४ दाम २३$\frac{3}{4}$ जीतल होता है न कि १०५ मोहर ३९ रुपया २५ दाम। इस प्रकार इसमें १$\frac{1}{4}$ जीतल की अशुद्धि है।

[3] इन मदों का योग १०१५ रुपए २५ दाम १४$\frac{3}{4}$ जीतल होता है। इस प्रकार अबुल फजल की गणना में कुछ गलती मालूम होती है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

एक मन ताँबा १०४४ दाम में मिलता है और एक सेर २६ दाम २½ जीतल में। इसमें से १ सेर आग में जल जाता है। एक सेर में ३० दाम तैयार होते हैं। इस तरह ११७० दाम ढाले जाते हैं। इसमें से व्यापारी अपनी पूँजी (१०४४ दाम) ले लेता है और १८ दाम १६½ जीतल उसको लाभ में मिलता है। ३३ दाम १० जीतल मजदूरी में जाते हैं। १५ दाम ८ जीतल आवश्यक कार्यों में खर्च होता है (१३ दाम ८ जीतल का कोयला; १ दाम का पानी; १ दाम की मिट्टी)। ५८½ दाम राजकोष में जमा होते हैं।

आईन १३

धातुओं की उत्पत्ति

विश्व के स्रष्टा ने चार तत्वों को उत्पन्न किया और अद्भुत आकृतियाँ बनाईं। अग्नि नितान्त उष्ण, शुष्क तथा हल्की; वायु अपेक्षाकृत गर्म, आर्द्र तथा हल्की; जल अपेक्षाकृत शीतल, आर्द्र तथा भारी; पृथ्वी नितांत शीतल, शुष्क और भारी है। गर्मी हल्कापन लाती है और सर्दी भारीपन। आर्द्रता सरलता से अणुओं को एक दूसरे से अलग करती है। शुष्कता उनको अलग अलग होने से रोकती है। इनके आश्चर्यजनक मेल से चार प्रकार के पदार्थ पैदा हुए:—**आसारे उलवी**[1] खनिज, **वनस्पति**, और **प्राणी**। सूर्य की गर्मी से जल के कण हल्के होकर हवा में मिल जाते हैं और ऊपर चढ़ते हैं। उस मिश्रण को बुखार (गैस) कहते हैं। उसी कारण पार्थिवकण वायु में मिल कर ऊपर उठते हैं। इसको **दुखाँ** (भाप) कहते हैं। कभी-कभी वायु के कण भी पृथ्वी के कण से मिल जाते हैं। कुछ दार्शनिक उपरोक्त दोनों मिश्रणों को बुखार कहते हैं लेकिन जो मिश्रण जल कणों के मिलने से पैदा होता है उसको बुखारेतर और बुखारे **आवी** कहते हैं। जो मिश्रण पार्थिव अणुओं के मिलने से बनता है उसको **बुखारे खुश्क** और **बुखारे दुखानी** कहते हैं। इन दोनों से पृथ्वी के ऊपर बादल, हवा, वर्षा, और बर्फ आदि बनते हैं और उसके अन्दर भूचाल, सोते, और खानें। बुखार को शरीर के स्थान पर और दुखाँ को आत्मा के स्थान पर समझते हैं। उनके गुण और परिमाण की विभिन्नता के कारण नाना प्रकार के पदार्थ उत्पन्न होते हैं जैसा कि दार्शनिक पुस्तकों से पता चलता है। खनिज पदार्थ पाँच प्रकार से अधिक नहीं होते; एक वह जो शुष्कता के कारण नहीं पिघलते जैसे याकूत; दूसरे वह जो अपनी द्रवता के कारण नहीं पिघलते जैसे पारा; तीसरे वह जो पिघलते तो हैं पर हथौड़े की चोट से बढ़ाये नहीं जा सकते और न आग पर जलते हैं जैसे फिटकरी; चौथे वह जो आग में जल जाय परन्तु आघात वर्धनीय हो जैसे गन्धक; और पाँचवें वह जो आग में पिघल जाय और आघात वर्धनीय हैं परन्तु आग से न जले जैसे सोना। पिंड के पिघलने का अर्थ होता है कि उसके अवयव शुष्कता और आर्द्रता के संयोग से एक दूसरे से अलग होकर बह चलें। किसी पिंड के आघात वर्धनीयता का अर्थ यह है कि हम उसको जितना चाहें लम्बा-चौड़ा करें परन्तु न तो उससे कुछ अलग हो और न उसमें युक्त हो।

जब बुखार और दुखाँ इस प्रकार मिलें कि पहला (बुखार) मात्रा में अधिक हो और मिलने तथा पकने के बाद सूर्य की गर्मी उसे जमा दे तब पारा बनता है। चूँकि उसका कोई अंश दुखाँ से खाली नहीं होता इसलिए उसमें शुष्कता का अनुभव होता है और छूने पर हाथ में नहीं लगता बल्कि भागता है और चूँकि गर्मी से इसका संकुचन हुआ है इसलिए गर्मी उसको नहीं पिघलाती।

जब यह दोनों (बुखार और दुखाँ) बराबर अनुपात में एक दूसरे से मिलते हैं तो चिकनी, चिपचिपी आर्द्रता पैदा होती है और खमीर होने के समय वायु के कण उसमें प्रवेश करते हैं और सर्दी उसको जमा देती है।

---

[1] आकाशीय चीजें जैसे फरिश्ते, नक्षत्र आदि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह पिण्ड दहनशील होता है। यदि दुखाँ और चिकनाई कुछ अधिक होती है तो गंधक पैदा होती है और वह लाल, पीली, नीली या सफेद होती है। यदि दुखाँ अधिक और चिकनाई कम हो तो हरताल पैदा होती है और वह लाल और पीली होती है। यदि बुखार अधिक होता है तो मिश्रण के ठोस जम जाने से सफेद और काला नफ्त होता है। चूँकि इसके पिण्ड बँधने का कारण शीतलता है इसलिए वह गर्मी से पिघल जाता है और स्निग्धता तथा आर्द्रता की अधिकता से कारण वह दहनशील है और आर्द्रता की अधिकता के कारण आघात वर्द्धनीय नहीं होता।

यद्यपि सात पिण्डों के अस्तित्व का कारण पारा और गन्धक है तथापि उनकी शुद्धता के अन्तर, उनके मिश्रण की परिस्थिति तथा उनकी एक दूसरे के ऊपर की गई क्रिया की विभिन्नता के कारण भिन्न भिन्न पदार्थ पैदा होते हैं। जब इन दोनों में से कोई भी पृथ्वी के कणों से नहीं मिलता, जब वे शुद्ध हों और पक कर एक दूसरे से पूर्णतया मिल जाँय, और गन्धक सफेद हो और पारे के परमाणु अधिक हों तो चाँदी पैदा होती है। जब दोनों बराबर हों और गन्धक लाल हो और उसमें रँगने की क्षमता हो तो सोना पैदा होता है। वैसी ही परिस्थिति में यदि मिश्रण के बाद परन्तु पूर्ण रूप से पकने के पहले ही सर्दी उसे जमा दे तो **खारचीनी** पैदा होती है। उसको **आहनचीनी** भी कहते हैं। वास्तव में वह कच्चा सोना होता है। कुछ लोग इसको एक प्रकार का ताँबा समझते हैं। यदि केवल गन्धक साफ न हो और पारे की अधिकता हो तथा उसमें जलने की शक्ति हो तो **ताँबा** पैदा होता है। यदि दोनों का मिश्रण पूर्ण रूप से नहीं होता और पारा अधिक होता है तो **राँगा** पैदा होता है। कुछ लोग कहते हैं कि यदि दोनों शुद्ध न हों तो यह कार्य पूरा नहीं होता। यदि दोनों घटिया तरह के हों और उनका मिश्रण कठोर हो और यदि पारे के पार्थिव कणों में पार्थक्यभाव हो और गन्धक में जलने की शक्ति हो तो **लोहा** पैदा होता है। यदि ऐसी दशा में पूर्ण मिश्रण न हो और पारा अधिक हो तो **सीसा** पैदा होता है। इन सातों धातुओं को सप्त पिण्ड कहते हैं और पारे को पिण्डों की माता और गन्धक को पिण्डों का पिता कहते हैं। पारे को आत्मा और हरताल और गन्धक को श्वास के समान समझते हैं।

कुछ लोगों की राय में जस्ता तूतिया की रूह है और सीसे से मिलता जुलता है। दार्शनिक पुस्तकों में इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। हिन्दुस्तान में जालोर की सीमाओं में, जो अजमेर प्रान्त में है इसकी खान है। कुछ रासायनिक कहते है कि रिसास (जस्ता) एक तरह की चाँदी है जिसे कोढ़ हो गया है और पारा ऐसी चाँदी है जिसे लकवा मारे हैं; सीसा ऐसा सोना है जिसे कोढ़ हो गया है और जल गया है; और ताँबा कच्चा सोना है। वैद्य की भांति इलाज करके रासायनिक इन धातुओं को उनके समान अथवा उनके जोड़ का बना देते हैं।

बुद्धिमान व्यावहारिक लोग इन सात पिण्डों से कई मिश्रण तैयार करते हैं और इनसे आभूषण तथा बर्तन आदि बनाते हैं। उनमें से नीचे कुछ का वर्णन किया जाता है :

सफेदरू—इसको हिन्दुस्तान के लोग काँसी कहते हैं चार सेर ताँबा और एक सेर राँगा मिलाने से बनता है।

रुई—इसमें ४ सेर ताँबा और १½ सेर सीसा होता है। हिन्दुस्तानी इसे **भंगार** कहते हैं।

बरन्ज—हिन्दुस्तानी इसको **पीतल** कहते हैं। इसको तीन प्रकार से बनाते हैं। **पहली** जो ठंढी आघात वर्द्धनीय हो। इसमें २½ सेर ताँबा और १ सेर रूह तूतिया मिलाया जाता है। **दूसरी** जो तपाने पर आघात वर्द्धनीय हो। यह २ सेर ताँबे और १½ सेर रूह तूतिया से तैयार होती है; **तीसरी** जो हथोड़े से पीटकर नहीं बढ़ाया जाता बल्कि ढाला जाता है। यह २ सेर ताँबा और १ सेर रूह तूतिया से बनती है।

सीमे सुख्ता—सीसा, चाँदी और ताँबे से बनता है। इसका रंग काला और चमकीला होता है और यह नक्काशी में काम आता है।

हफ्त जोश—खारचीनी की तरह यह भी कहीं नहीं पाया जाता। यह छः धातुओं से बनता है। कुछ लोग इसको **तालीकून** कहते हैं और कुछ लोग तालीकून को मामूली ताँबा समझते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अष्टधात—आठ धातुओं का मिश्रण है उपरोक्त ६ धातुएँ, रूह तूतिया और काँसी। यह सात धातुओं से भी बनता है।

कौलपत्र—२ सेर सफेद रू और १ सेर ताँबे से बहुत रंगीन और सुन्दर तैयार होता है। यह बादशाह के पवित्र आविष्कारों में से है।

आईन १४

धातुओं की गुरुता तथा लघुता

यह लिखा जा चुका है कि सब मिश्रण बुख़ार (भाप) और दुख़ाँ धुएँ के संयोग से बनते हैं और यह दोनों हल्के और भारी तत्वों से बने हैं। इसके अतिरिक्त बुखार आर्द्र अथवा शुष्क है और कभी ऐसा होता है कि मिश्रण के पहले या बाद में कठोरता या ठोसपन आता है। और कभी कभी इन दोनों दशाओं में से किसी एक ही दशा में। इसलिए हर धातु जिसके आग्नेय तथा वायव्य परमाणु, जल और पृथ्वी के कणों से अधिक होते हैं वह उस खनिज से हल्का होता है जिसमें जल और पृथ्वी के परमाणु अधिक होते हैं। इस तरह हर खनिज पदार्थ जिसमें बुखार दुख़ाँ अधिक होता है उस खनिज से हल्का होता है जिसमें दुख़ाँ बुखार से अधिक हो। इसी प्रकार जिस खनिज पदार्थ में बुखार और दुख़ाँ की परिपक्वता होती है वह उस खनिज से भारी होता है जिसमें ऐसा घटित नहीं होता क्योंकि किसी पिण्ड के परमाणुओं के बीच की रिक्तता और वायु-प्रवेश ही उसको बड़ा और हल्का बनाता है। इस साधन द्वारा हम प्रत्येक पिंड की गुरुता और लघुता मालूम कर सकते हैं। अतीत कालीन एक व्यक्ति[1] ने धातुओं की गुरुता के अन्तर को पद्य में लिखा है :

ज़ रूये जुस्साये हफ़्तादो यक दिरम सीमाब,
चिलो शश अस्तो ज़ अरज़ीज़ सी ओ हश्त शुमार,
ज़हब सद अस्त सरब पंज हो नुह, आहन चिल,
बरंजो मिस चिहिलो पंज नुकरा पिंजहो चार।

[पारा ७१; रूई ४६; राँगा ३८; सोना १००; सीसा ५६; लोहा ४०; पीतल और ताँबा ४३; चाँदी ५४ है]।[2]

कुछ लोगों ने अक्षरों के हिसाब से वजनों को पद्य में लिखा है :

नुह फ़िलिउज़े मुस्तक़तावीउल हज्म रा चूँ बर कशी,
इख़्तलाफ़े वज़न दारद हर यके बे इश्तिबाह।
ज़र लकन ज़ीबक अलम, असरब दहन, अरज़ीज़ हल
फ़िज़्ज़ा नद, आहन यके मिस्सो शबह मह रूये माह।

[यदि तुम समान घनत्व के धातुओं के नौ टुकड़ों का वजन करो तो निःसन्देह वजनों में अन्तर मिलेगा।

---

[1] अबू नासिर फराही, फराह के निवासी जो सिजिस्तान में एक नगर था। उसका असली नाम मुहम्मद बदरुद्दीन था। [2] आजकल खनिज पदार्थों का विशिष्ट गुरुत्व इस प्रकार होता है : सोना १९'२६; पारा १३'६; सीसा ११'३२५; चाँदी १०'४७; ताँबा ९; टिन ७'३२; लोहा ७'७ जब पानी का गुरुत्व इकाई होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सोना लकन[1] (१००); पारा अलम[2] (७१); सीसा दहन (५९); टिन हल (३८); चाँदी नद (५४); लोहा यके (४०); ताँबा और पीतल मह (४५); और रूई माह (४६)।]

यदि इन धातुओं के कुछ टुकड़े जो लम्बाई चौड़ाई और मोटाई में बराबर हों लिये जाँय तो यह तौल में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। कुछ विद्वान् उपरोक्त अन्तर का कारण उनकी गुण-सम्बन्धी भिन्नता (सूरे नवैया) बतलाते हैं और उनका हल्कापन, भारीपन, पानी पर तैरना, पानी में डूबना, और उनके भार के अन्तर को हवाई और आबी तराजू पर तौल कर मालूम करते हैं।

बहुत से तीव्र दृष्टि विद्वान् इन सबका अन्दाजा पानी के द्वारा करते हैं। वे एक विशेष प्रकार का बर्तन बनाते हैं और उसको पानी से भरते हैं। उसमें हर धातु के सौ सौ मिस्काल बारी बारी से डालते हैं। जितना पानी बर्तन से बाहर गिर जाता है उससे उनके आयतन और गुरुता का अन्तर मालूम हो जाता है। पानी का परिमाण जितना अधिक होगा धातु का आयतन उतना ही अधिक और गुरुता उतनी ही कम होगी। पानी जितना ही कम निकलेगा उसके विपरीत होगा (अर्थात् आयतन कम होगा और गुरुता अधिक होगी)। जैसे, १०० मिस्काल चाँदी ९$\frac{3}{5}$ मिस्काल पानी को गिरा देती है और उतना ही सोना ५$\frac{1}{4}$ मिस्काल पानी गिराता है। यदि गिरे हुए पानी का परिमाण उसके हवाई वजन (वायु सम्बन्धी भार) से घटा दिया जाय तो शेष आबी वजन (जल-सम्बन्धी भार) होगा। हवाई तराजू वह है जिसके दोनों पलड़े हवा में होते हैं और आबी तराजू के दोनों पलड़े पानी के तल पर। चूँकि भारी पदार्थ में डूबने की शक्ति अधिक होती है इसलिए वह प्रत्येक दशा में केन्द्र की ओर अधिक दौड़ता है। यदि इन दोनों पलड़ों में से एक पानी के तल पर हो और दूसरा हवा में, तो हर दशा में यद्यपि हवाई पलड़ा हल्का है तथापि पानी के पलड़े से अधिक नीचे चला जायगा क्योंकि वायु जल की अपेक्षा अधिक हल्की होती है इसलिए इसमें रुकावट कम पैदा होती। यदि गिर हुआ पानी उसमें डाली हुई वस्तु के आयतन से कम होगा तो वह उसमें डूब जायगी। परन्तु यदि पानी का आयतन अधिक होगा तो पिण्ड पानी के तल पर तैरता रहेगा। यदि दोनों बराबर होंगे तो वह पिण्ड पानी में इतना डूबेगा कि उसका ऊपरी भाग पानी के तल के बराबर रहेगा। अबू रेहान बेरूनी ने एक तालिका तैयार की है जो लोगों की ज्ञान वृद्धि के लिए यहाँ लिखी जाती है :

खनिज पदार्थों तथा रत्नों के नाम।	पानी की वह मात्रा जो १०० मिस्काल खनिज पदार्थों अथवा रत्नों के डालने से गिर जाती है।			खनिज पदार्थों और रत्नों के वजन जब कि हवा में वे १०० मिस्काल हों।			खनिज पदार्थों और रत्नों का वजन जिस समय आयतन १०० मिस्काल सोने के बराबर हो या रत्नों का आयतन १०० मिस्काल नीली याकूत के बराबर हो।		
	मिस्काल	दाँग	तस्सूज	मिस्काल	दाँग	तस्सूज	मिस्काल	दाँग	तस्सूज
सोना	५ छोटी हे	१ अलिफ	२ बे	९१ स्वाद छोटी हे	४ दाल	२ बे	१०० बड़ा काफ	×	×
पारा	७ जे	२ बे	१ अलिफ	९२ स्वाद बे	३ जीम	३ जीम	७१ ऐन अलिफ	१ अलिफ	१ अलिफ
सीसा	८ बड़ी हे	५ छोटी हे	३ जीम	९१ स्वाद अलिफ	१ अलिफ	३ जीम	५९ नून तो	२ बे	२ बे

[1] अरबी व्यंजन ल+क+न = ३०+२०+५०; [2] अ+ल+म = १+३०+४० इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चाँदी	९ तो	४ दाल	१ अलिफ	९० स्वाद	१ अलिफ	३ जीम	५४ नून दाल	३ जीम	३ जीम
रूई	११ छोटी इ ए अलिफ	२ बे	३ जीम	८८ फे बड़ी हे	४ दाल	३ जीम	४६ मीम वाव	२ बे	३ जीम
ताँबा	११ छोटी इ ए अलिफ	३ जीम	३ जीम	८८ फे बड़ी हे	३ जीम	३ जीम	४५ मीम छोटी	३ जीम	३ जीम
पीतल	११ छोटी इ ए अलिफ	४ दाल	३ जीम	८८ फे बड़ी हे	२ बे	३ जीम	४५ मीम छोटी हे	३ जीम	५ (?) छोटी हे
लोहा	१२ छोटी इ ए बे	५ छोटी हे	२ बे	८७ खे जे	३ जीम	२ बे	४० मीम		
राँगा	१३ छोटी इ ए जीम	४ दाल	३ जीम	८६ फे वाव	२ बे	३ जीम	३८ लाम बड़ी हे	२ बे	२ बे
याकूत आसमानी	२५ छोटा काफ छोटी हे	१ अलिफ	२ बे	७४ ऐन दाल	४ दाल	२ बे	९४ स्वाद दाल	३ जीम	३ जीम
याकूत सुर्ख	२६ छोटा काफ वाव	८ बड़ी हे	३ जीम	७४ ऐन दाल	३ जीम	३ जीम	९४ स्वाद दाल	३ जीम	३ जीम
लाल	२७ छोटा काफ जे	५ छोटी हे	२ बे	७२ ऐन बे	३ जीम	२ बे	९० स्वाद	२ बे	३ जीम
जमुर्रद	३६ लाम वाव	२ बे	३ जीम	६३ सीन जीम	४ दाल	३ जीम	६९ सीन तो	३ जीम	३ जीम
मोती	३७ लाम जे	१ अलिफ	३ जीम	६२ सीन बे	५ छोटी हे	३ जीम	६७ सीन जे	५ छोटी हे	२ बे
लाजवर्द	३८ लाम बड़ी हे	३ जीम	३ जीम	६१ सीन अलिफ	३ जीम	३ जीम	६५ सीन छोटी हे	३ जीम	२ बे
अकीक	३९ लाम तो	३ जीम	३ जीम	६१ सीन अलिफ	३ जीम	३ जीम	६४ सीन दाल	४ दाल	२ बे
कहरुबा	३९ लाम तो	३ जीम	३ जीम	६० सीन	३ जीम	३ जीम	६४ सीन दाल	३ जीम	१ अलिफ
बिल्लौर	४० जीम	३ मीम	३ जीम	६० सीन	३ जीम	३ जीम	६३ सीन जीम	३ जीम	३ जीम

आईन १५

राजकीय अन्तःपुर

बादशाह को आबादी की चिन्ता से सुव्यवस्था स्थापित करने की इच्छा रहती है। इससे कार्य सुचारु रूप से होते हैं; संसार सत्यता की हरित भूमि बन जाता है और बाह्यता आध्यात्मिकता का रूप धारण कर लेती है। इसी कारण स्त्रियों की अधिकता ने (जो बुद्धिमानों को सांसारिक कार्यों में व्यस्त रखती है) सम्राट् के ज्ञान-प्रकाश में वृद्धि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की और सांसारिक बन्धन के गड्ढे से विराग के शिखर पर ले गई। इस उत्तम विधि से अन्तःपुर आबाद हो गया और परिवार में सुव्यवस्था हो गई। बादशाह ने हिन्दुस्तान और दूसरे देशों के बड़े लोगों से विवाह सम्बन्ध स्थापित किया और इस एकता के संबंध से संसार के सारे झगड़े मिट गए और शान्ति स्थापित हो गई। जिस प्रकार बादशाह ने अपनी बुद्धिमत्ता के प्रकाश से राज्य के बाहरी योग्य सेवकों को गुमनामी (अख्याति) की धूल से उठा कर उच्चपद पर नियुक्त किया उसी तरह उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से अन्तःपुर के दास-दासियों की उनकी योग्यता के अनुसार पद वृद्धि की। अदूरदर्शी यह समझता है कि बादशाह ने अयोग्य व्यक्तियों को उच्चपदों पर नियुक्त कर दिया है परन्तु गम्भीर दृष्टिवाला जानता है कि यह अक्सीरसाजी और कीमियागरी है अर्थात् सम्राट् के सम्पर्क से अयोग्य भी योग्य बन जाता है। जब विकास से हर वस्तु की वास्तविकता बदल जाती है और ताँबा और लोहा सोना; तथा राँगा और सीसा चाँदी बन जाते हैं तो यदि श्रेष्ठ मनुष्य अयोग्य व्यक्तियों को मनुष्य बना दे तो इसमें क्या आश्चर्य है? बुद्धिमानों ने कितनी अच्छी कहावत कही है कि 'श्रेष्ठ मनुष्यों की आँख (छोटे) मनुष्यों के लिए अक्सीर का असर रखती है।' बादशाह की व्यवस्था-प्रियता, बुद्धिमत्ता, गम्भीर दृष्टि, योग्यता पहचानने की शक्ति, गुण ग्राहकता, क्रियाशीलता तथा सहन शीलता, यही प्रभाव पैदा करती है। क्रोध की दशा में भी वह सन्मार्ग पर चलते हैं; हर वस्तु को दया की दृष्टि से देखते हैं; सुनी हुई बातों को दूरदर्शिता के तराजू पर तौलते हैं और पक्षपात से अलग रहते हैं। बादशाह मनुष्यों की शुभकामनाओं को बड़ी नियामत समझते हैं और सांसारिक मदिरा से अपनी बुद्धि रूपी रत्न को क्षति नहीं पहुँचाते।

बादशाह ने एक बहुत बड़ा दुर्ग बनवाया है और उसके भीतर चित्ताकर्षक भवनों में विश्राम करते हैं। यद्यपि पाँच हजार से अधिक महिलायें हैं तथापि बादशाह ने प्रत्येक के लिए एक एक पृथक भवन का निर्माण कराया है। उनकी टोलियाँ बना कर सेवा में व्यस्त रखते हैं। अनेक चरित्रवती स्त्रियाँ प्रत्येक वर्ग की देखभाल के लिए दारोगा के पद पर नियुक्त की गई हैं और उनमें से एक पतिव्रता और सत्वृत्तिवाली स्त्री को लेखिका नियुक्त किया है। बाहरी कारखानों की भांति यहाँ भी सुव्यवस्था है और प्रत्येक का वेतन पर्याप्त है। यद्यपि बादशाह की बख्शिश का अनुमान लेखनी से नहीं किया जा सकता तथापि सर्वोच्च पद की हर स्त्री का मासिक वेतन १६१० रुपए से १०२७ रुपए तक है। कुछ सेविकाओं को ५१ रुपए से २० रुपए तक और कुछ को ४०) से १०) तक मिलते हैं। दरबारखास में एक योग्य और चतुर लेखक नियुक्त किया गया है जो अन्तःपुर के आय-व्यय की देखभाल करता है और नकद और जिंस का हिसाब रखता है। इस समुदाय की स्त्रियों को जिस वस्तु की इच्छा होती है तो उसको वे अपने मासिक वेतन के अनुसार अन्तःपुर के तहवीलदार (खजाञ्ची) से माँगती हैं। वह उसका स्मृतिपत्र (याददाश्त) के मुशरिफ के पास भेजता है। वह उसकी जाँच करके बाहरी खजाञ्ची के पास भेज देता है और यह व्यक्ति नकद रकम दे देता है। इस प्रकार के धन के लिए बरात (चेक) नहीं दिए जाते। मुशरिफ वार्षिक व्यय का अनुमान तैयार करता है और संक्षेप रूप से एक रसीद लिखता है और उस पर राज्य के मन्त्रियों की मुहर लगाई जाती है। तत्पश्चात् सम्राट् की वह विशेष मोहर लगाई जाती है जो इस कार्य के लिए अलग बनाई गई है। इस सनद (प्रमाण पत्र) से सदर खजाञ्ची रुपए को सदर तहवीलदार के सुपुर्द करता है। वह वितवची के लिखने के अनुसार धन को सहायक तहवीलदारों को देकर अन्तःपुर की सेविकाओं में बटवा देता है। वर्तमान समय के रुपए की दर[1] से वेतन का हिसाब होता है।

अन्तःपुर के चारों ओर आन्तरिक भाग में शुद्धाचारिणी तथा सतर्क स्त्रियाँ पहरा देती हैं। विशेष कर सम्राट् के निवास स्थान पर शुद्धचरित्रा तथा मृदु भाषिणी स्त्रियाँ प्रस्तुत रहती हैं। बाहर षंढक (नपुंसक, हिजड़ा) लोगों का पहरा है। इनसे उचित दूरी पर स्वामिभक्त राजपूत पहरा देते हैं। इनके बाद दुर्ग के दरवाजों पर परिश्रमी

---

४० दाम = १ रुपया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और सच्चे पहरेदार[1] चौकसी करते हैं। दुर्ग के बाहर चारों तरफ अमीर, अहदी, और अन्य सैनिक अपने अपने पद के अनुसार देखभाल करते हैं।

जब कभी बेगमें, अमीरों की पत्नियाँ और दूसरी सच्चरित्र स्त्रियाँ चाहती हैं कि उन्हें कोर्निश करने का सौभाग्य प्राप्त हो तो वे पहले अन्तःपुर के बाहरी कर्मचारियों को सूचित करती हैं और उचित उत्तर पाने पर वे अपने प्रार्थना पत्र को दरबार के पेशकारों के पास भेजती हैं। अधिकारिणी स्त्रियाँ अन्तःपुर में प्रवेश करने की अनुमति पाती हैं। और कुछ विशेष स्त्रियाँ एक मास तक निवास करने की आज्ञा पाती हैं।

सच्चे पहरेदारों के होते हुए भी बादशाह इस विभाग की देखभाल से उपेक्षा नहीं करते जिससे काम सुन्दर और सन्तोषजनक होता है।

आईन १६

यात्रा के सामान और मंजिलों पर पड़ाव[2]

उन सामानों का सविस्तर और पूर्ण वर्णन तो कठिन है परन्तु थोड़ी सी वस्तुएँ जो शिकार और निकट की यत्राओं में काम आती हैं उनका वर्णन दिया जाता है और नमूना प्रस्तुत किया जाता है। पहला **गुलाल बार**—एक अद्भुत घेरा है जिसका आविष्कार बादशाह ने किया है। उसके दरवाजे बहुत मजबूत हैं और ताले चाभी से खुलते और बन्द होते हैं। यह कभी १०० गज वर्ग से कम नहीं होते[3]। इसके पूर्वी सिरे पर एक शामियाना (खजानादार) खड़ा करते हैं जिसमें दो दरवाजे और ५४ खाने हैं। यह २४ गज लम्बा और १४ गज चौड़ा है और उसके बीच में एक बड़ी चुबीन रावटी[3] खड़ी करते हैं और उसके चारों तरफ दूसरे सरा पर्दे लगाते हैं। रावटी से मिला हुआ दो मंजिला काष्ठभवन (चुबीं काख) खड़ा किया जाता है जो बादशाह का उपासना-भवन है। प्रातःकाल इसके ऊपर बैठकर कोरनिश (सलाम) लेते हैं। अन्तःपुर के सेवक बिना आज्ञा के इसमें प्रवेश नहीं करते। उसके बाहर २४ काठ की रावटियाँ खड़ी की जाती हैं जिनकी लम्बाई १० गज और चौड़ाई ६ गज है। हर एक कनातों से अलग कर दी जाती हैं। इनमें विशेष बेगमें निवास करती हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से खेमें खड़े किए जाते हैं। जिनमें विशेष लोग रहते हैं जो जरदोजी (जिन पर सोने की सिलाई का काम किया गया हो); जरबफ्ती (जिसमें सोने के तारों की बुनाई हुई हो); और मखमली सायबानों से सुशोभित होते हैं। इनसे संलग्न कालीन का एक सरा-पर्दा है जो ६० गज वर्ग है और उसमें कुछ खेमें लगाये जाते हैं जो उर्दू बेगी[4] और दूसरी सच्चरित्र स्त्रियों का विश्राम-स्थान है।

इसके बाहर खास दौलतखाने तक १५० गज लंबा और १०० गज चौड़ा एक चित्ताकर्षक आँगन सुसज्जित करते हैं जिसको महताबी कहते हैं। उसके दोनों तरफ उपर्युक्त वर्णन के अनुसार कनातें खड़ी करते हैं। हर दो गज पर छः गजी चोब गाड़ी जाती हैं जो एक गज जमीन के अन्दर गड़ी रहती है और उसके ऊपरी सिरे पर पीतल का कलश होता है। उनको दो रस्सियों से भीतर और बाहर बाँधकर मजबूत करते हैं। जैसा पहले वर्णन किया गया है पहरेदार यहाँ पहरा देते हैं। इस आनन्दप्रद सहन के बीच में एक चबूतरा[5] बनाते हैं और उस पर चहारचोबी नमगीरा सायबान का काम करता है। संध्या समय बादशाह यहाँ बैठते हैं और विशेष लोगों के अतिरिक्त यहाँ किसी को आने नहीं देते। गुलालबार से मिला हुआ एक गोल घेरा बनाते हैं जिनमें बारह भाग होते हैं और हर भाग ३० गज लंबा होता है और इसका दरवाजा सहन की तरफ खुलता है। इसके बीच में दस गज लंबी एक चुबीन रावटी और एक खेमा है जिसमें

---

[1] ब्लाकमैन ने 'परदादारान' का अर्थ porters (द्वारपाल) लिखा है। [2] फारसी में यूरिशहा का अर्थ होता है सैनिक अभियान या military expedition. [3] इनका वर्णन आईन २१ में किया गया है। [4] सशस्त्र स्त्रियाँ। [5] जैसा अब भी फतेहपुर सिकरी के खंडहरों में देखा जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

४० खाने हैं। बारह गजी बारह शामियाने उसपर छाया डालते हैं। हर शामियाना कनात से अलग कर दिया जाता है। इस एकांत स्थान को इबच्कीखाना कहते हैं। हर निवास स्थान में उत्तम ढङ्ग से एक स्वास्थ्य भवन[1] तैयार करते हैं। बादशाह तहारतखाने (स्नानागार) को इसी नाम से याद करते हैं। इससे लगा हुआ १५० गज लंबा और चौड़ा एक गलीमी सरा पर्दा लगाया जाता है जिसमें १६ भाग हैं और हर भाग ३६ गज वर्ग है और पहले की भाँति यह चोब और कलश से सुशोभित होता है। इसके बीच में हजारफर्राश एक बड़ी बारगाह खड़ी करते हैं। इसमें ७२ कमरे हैं। इसका प्रवेश-द्वार १५ गज चौड़ा है। उस पर खेमा की तरह एक कलन्दरी तानते हैं जो मोमजामा या ऐसे ही किसी हल्के कपड़े से बनती है यह वर्षा और गर्मी में उपयोगी है। उसके चारों तरफ १२ गजी ५० शामियाने खड़े किये जाते हैं। इस दौलतखाना खास में दरवाजे और ताले होते हैं। उमरा और सेना के अफसर बख्शियों की आज्ञा से बादशाह के दरबार में प्रवेश करते हैं और हर मास के आरम्भ में नई आज्ञा प्राप्त करते हैं। यह स्थान, भीतर और बाहर, रङ्ग-बिरंगे पर्दों से सुशोभित किया जाता है और एक चित्ताकर्षक बाग मालूम होता है। इसके बाहर, ३५० गज के फासले तक रस्सियाँ खींची जाती है और हर तीन गज की दूरी पर एक चोब से मजबूत की जाती है उसके चारों तरफ लोग पहरे के लिए खड़े होते हैं। यह दीवाने आम होता है। इसके चारों तरफ जैसा ऊपर बयान किया गया है, पहरेदार चौकसी करते हैं। इस आनन्द भवन (निशातगाह) के अन्तिम सिरे पर साठ गजी बारह तनावों[2] (रस्सियों) की दूरी पर नक्कारखाना स्थित है और इस क्षेत्र के बीच में आकाश-दीया जलाया जाता है।

कुछ खेमें, जैसा अभी बयान किया गया है, साथ ले जाते हैं और होशियार फर्राश एक को ऐसे उचित स्थान पर खड़ा करते हैं जिसको मीराने मंजिल ने बादशाह के निवास के लिए चुना है और दूसरा खेमा आगे लेजाकर लगाते हैं और बादशाह के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। हर एक खेमें को ले जाने के लिए १०० हाथी, ५०० ऊँट, ४०० बैलगाड़ियाँ, और १०० कहार होते हैं। ५०० सवार, मनसबदार और अहदी आदि १००० ईरानी, तूरानी और हिन्दुस्तानी फर्राश; ५०० बेलदार, १०० भिस्ती ५० बढ़ई, खेमें सीने वाले, मशालची, ३० मोची और १५० झाड़ू लगाने वाले सदा सेवा के लिए उपस्थित रहते हैं।

प्यादों का मासिक वेतन २४० दाम से १३० दाम तक है।

आईन १७

सेना का एकत्र होना

यद्यपि बादशाह सेना को एकत्र होने की आज्ञा बहुत कम देते हैं। तथापि जिस दिशा में शाही सवारी जाती है सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या साथ रहती है। सैनिकों का एक बहुत बड़ा समूह हर प्रांत में विभिन्न कार्यों में नियुक्त है और बादशाह के साथ नहीं चलता। मनुष्यों की भीड़ और सैनिकों की अधिकता से सैनिकों को एक दूसरे का खेमा तलाश करने में कई दिन लग जाते हैं; तब अपरिचितों का क्या जिक्र[2] (उनको तो और भी कठिनाई होगी)। बादशाह ने अपनी दूरदर्शिता से सैनिक शिविरों का प्रशंसनीय ढङ्ग निकाला है जिससे लोगों को बहुत सुख मिलता है। एक आकर्षक स्थान पर जिसकी लम्बाई १५३० गज है, जैसा लिखा जा चुका है, सम्राट् का अन्तःपुर, दौलत खाना और नक्कारखाना स्थापित किया जाता है। इसके दाहिने, बायें और पीछे ३०० गज खुला हुआ स्थान रहता है। पहरेदारों के सिवाय और कोई वहाँ नहीं जा सकता। इसके अन्दर १०० गज की दूरी पर केन्द्र स्थल में मरियम

---

[1] इबच्कीखाना। [2] तीसरी पुस्तक का १०वाँ आईन देखिए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मकानी[1] और गुलबदन बेगम[2] और अन्य पवित्र महिलाओं और शाहजादा दानियाल के खेमें लगाये जाते हैं; और दाहिनी तरफ शाहजादा सुल्तान सलीम और बाईं तरफ शाहजादा शाहमुराद के खेमें गाड़े जाते हैं। इसके बाद, थोड़ी दूर पर, कार्यालय और कारखाने रखे जाते हैं। इसके बाद ३० गज के फासले पर खेमें के चारों कोनों पर बाजार लगाए जाते हैं और बाजार के बाहर चारों तरफ दरबार के उमरा अपने पद के अनुसार स्थित होते हैं। शनिवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार के चौकीदार केन्द्र में, रविवार और सोमवार के दाहिनी ओर तथा मङ्गल और बुध के बाईं ओर बारी बारी से बादशाह की सेवा का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

आईन १८

चिराग जलाना

ज्ञानी सम्राट् प्रकाश-प्रिय हैं और उसकी (प्रकाश की) पूजा को ईश्वर की पूजा तथा प्रशंसा समझते हैं। अज्ञान हृदय वाले मूर्ख इसको भगवद्-विस्मरण और अग्निपूजा समझते हैं। परन्तु तत्व ज्ञानी इस रहस्य से भलीभाँति परिचित हैं कि जब शिष्टों[3] की पूजा एक प्रशंसनीय कार्य है और उसका न करना निन्दनीय है तो एक ऐसे उत्कृष्ट और श्रेष्ठ तत्व (अग्नि) जो मानव-जीवन के अस्तित्व तथा स्थायित्व का साधन है क्योंकर आराधनीय न होगा ? और ऐसे अशुभ विचारों को मन में क्यों लाया जाय ? शेख शर्फउद्दीन मुनौरी ने[4] क्या खूब कहा है कि 'जिस व्यक्ति के लिए सूर्य अस्त हो जाय वह दीपक का पुजारी न हो तो क्या करे ?' प्रत्येक लौ उस दिव्य प्रकाश (सूर्य) की झलक है और उस पवित्र मणिका एक चिह्न है। यदि सूर्य और अग्नि न होते तो हमको भोजन और औषधियाँ कहाँ से प्राप्त होतीं और हमारे नेत्रों का प्रकाश किस काम आता ? सूर्य का प्रकाश ईश्वर की प्रभुता का दीपक (शमा)[5] है।

दोपहर को जब सूर्य मेषराशि में प्रवेश करता है और सारा संसार उसके प्रकाश से प्रकाशित होता है तो एक सफेद और प्रकाशपूर्ण पत्थर का टुकड़ा सूर्य के सामने रखते हैं जिसे हिन्दी में सूरजक्रान्त (सूर्यक्रान्ति) कहते हैं। थोड़ी सी रूई उसके निकट रखते हैं और उसकी गर्मी से उसमें आग लग जाती है। यह दिव्य अग्नि कार्य कुशल व्यक्तियों के सुपुर्द करते हैं। चिरागची, मशालची और बावर्ची इस आग से अपना अपना काम पूरा करते हैं। जब वर्ष आनन्द पूर्वक व्यतीत हो जाता है तो उसी विधि से नई आग बनाते हैं। जिस बर्तन में यह आग जिलाई जाती है उसको अगिनगिर (अँगीठी या गोरसी) कहते हैं।

एक और प्रकाश पूर्ण सफेद पत्थर है जिसको चन्द्रक्रान्त कहते हैं। उसको चन्द्रमा के सामने रखते हैं तो उससे पानी टपकने लगता है।

जब एक बड़ी दिन बाकी रहता है तो बादशाह यदि सवार रहते हैं तो नीचे उतर आते हैं और यदि सोते रहते हैं तो जगा दिए जाते हैं। वह अपने राजसी ठाट को अलग करके बाह्य आकृति को आन्तिरिक रूप के अनु-

---

[1] अकबर की माता की उपाधि जिसका असली नाम हमीदा बानू बेगम था। [2] यह अकबर की प्रिय बेगम की उपाधि है। इसका अर्थ है वह बेगम जिसका शरीर गुलाब जैसा हो। [3] मूल ग्रन्थ में 'बरगजीदान' शब्द आया है जिसका अर्थ कोष के अनुसार 'मुन्तखिब' 'चुना हुआ' 'हरदिल अजीज' होता है। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ the select लिखा है और फुटनोट में इसका स्पष्टीकरण members of the Divine Faith लिख कर किया है। देखिए, पृ० ५०। मौलवी मुहम्मद फिदा अली साहब ने इसका अर्थ 'कुदसी सिफात अशिया' (दिव्य गुणवाली वस्तुएँ) लिखा है (दे० पृ० ८१)। [4] एक प्रसिद्ध फकीर जिनकी मृत्यु पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में हुई थी। यह मुनैर के रहने वाले थे जो बिहार में एक कस्बा है। [5] मोमबत्ती।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कूल बनाते हैं। जब विश्व को प्रकाशित करने वाला सूर्य अस्त हो जाता है तो सौभाग्यवान् सेवक सोने और चाँदी के बारह दीपदानों में कपूर की बत्तियाँ जलाकर बादशाह के सामने लाते हैं और एक कोमल कंठ वाला सेवक बत्ती हाथ में लेकर ईश्वर को धन्यवाद देता है और भिन्न भिन्न प्रकार से गाता है। इसके बाद वह बादशाह के धन की सदैव वृद्धि होने के लिए प्रार्थना करता है। और अपने कथन को इस वाक्य पर समाप्त करता है कि सम्राट् की प्रार्थना और विनय का पद ऊँचा होवे और उन्हें नवीन प्रकाश प्राप्त हो।

शमादानों और फानूसी के प्रकारों और गुणियों की कृतियों का वर्णन लेखनी की शक्ति के बाहर है। कुछ १० मन और उससे अधिक के तैयार किए गए हैं और अनेक आकृतियों से सजाए गए हैं। कुछ में एक शाखा, कुछ में दो शाखायें या उससे अधिक होती हैं। वे आन्तरिक नेत्र वालों को प्रकाश देते हैं। बादशाह ने स्वयं एक फानूस बनाया है जो १ गज इलाही ऊँचा है। उसके सिरे पर ५ अन्य फानूस हैं और हर एक के सिरे पर एक जानवर की आकृति बनी है। तीन गज और उससे लम्बी काफूरी शमायें उसके लिए तैयार की जाती हैं और सीढ़ी लगाकर उनका गुल काटा जाता है। भीतर और बाहर प्रकाश बढ़ाने के लिए मशालें भी जलाते हैं। प्रत्येक चन्द्र मास की पहली, दूसरी और तीसरी रात को जब प्रकाश कम होता है तब आठ फतीले जलाते हैं। चौथी रात से दसवीं रात तक एक-एक कम करते जाते हैं। जब दसवीं रात को प्रकाश अधिक होता है तब एक ही काफी होता है और पन्द्रहवीं तक दसवीं की तरह एक ही फतीला जलाते हैं। सोलहवीं रात से उन्नीसवीं रात तक एक-एक बत्ती बढ़ाते जाते हैं। बीसवीं रात को उन्नीसवीं रात की तरह बत्तियाँ होती हैं। इक्कीसवीं और बाईसवीं को फिर एक-एक बढ़ाते हैं। तेईसवीं रात बाईसवीं की तरह होती हैं और चौबीसवीं रात से महीने के अन्त तक आठ बत्तियाँ जलती हैं। हर फतील में एक सेर तेल और आधा सेर रूई काम में लाते हैं। कुछ स्थानों में तेल के बदले चर्बी जलाते हैं। फतीले की बड़ाई और छोटाई के अनुसार चर्बी की कमी या अधिकता होती है। शाही दरबार तलाश करने वालों के पथ-प्रदर्शन के लिए सम्राट् ने एक दीपक जलवाया है। दरबार के सामने चालीस गज या उससे भी अधिक लम्बा एक खम्भा खड़ा करते है और १६ तनाबों (रस्सियों) से मजबूत करते हैं। इसकी चोटी पर एक बड़ा फानूस जलाते हैं जिसको आकास-दीया (आकाश-दीप) कहते हैं। इसका प्रकाश दूर तक फैलता है और ढूंढने वाले उसके द्वारा दरबार में पहुँच जाते हैं और अपने परिचित स्थान पर आ जाते हैं। पहले लोगों को यात्राओं में बहुत कठिनाइयाँ उठानी पड़ती थीं, और दरबार का रास्ता नहीं पाते थे।

इस विभाग में बहुत से मनसबदार, अहदी और अन्य सैनिक सेवा करते हैं। प्यादा का वेतन २४०० दाम से अधिक और ८० से कम नहीं है।

आईन १९

राज्य वैभव

महलों पर बने हुए सूर्य के चित्र (शम्सा)[1] वह दिव्य प्रकाश है जो बादशाहों को सीधे बिना किसी की सहायता के ईश्वर से प्राप्त होता है। बुद्धिमान शासक बाह्य वैभव पर ध्यान देते हैं और उसको ईश्वरीय प्रकाश का प्रकट रूप समझते हैं। लेखक उनमें से कुछ का वर्णन लिखता है और अपने समय के व्यवस्था का उल्लेख करता है।

---

[1] राजप्रासादों के फाटकों या दीवारों पर सूर्य के चित्र बने रहते हैं। रात को इन चित्रों को प्रकाशित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१. **औरङ्ग** (सिंहासन)—कई आकार का बनाते हैं। कुछ जड़ाऊ और कुछ सोने-चाँदी आदि के होते हैं।

२. **चत्र** (छत्र)—बहुमूल्य रत्नों से अलंकृत किया जाता है और ये सात से कम नहीं होते।

३. **सायाबान**—अंडाकार और एक गज ऊँचा होता है। इसके दस्ते पर, छत्र की भांति, सोने का काम होता है और मोती जड़े होते हैं। सूर्यकी गर्मी के समय शाही सेवक उसे अपने हाथ में लेकर साथ रहते हैं। इस को आफताब-गीर भी कहते हैं।

४. **कौकबा**—कुछ महफिल के सामने लटकाए जाते हैं।

[1] ये चार पदार्थ वर्तमान सम्राट् के अतिरिक्त और किसी के वैभव में वृद्धि नहीं करते।

५. **अलम (झंडा)**—सवारी के समय कम से कम पाँच झंडे कूर[1] के साथ रहते हैं। यह सदा रेशमी गिलाफों में रहते हैं। खुशी के जलसों में और लड़ाई के मैदानों में इन्हें खोलते हैं।

६. **चत्रतोक**—एक प्रकार का अलम है लेकिन उससे छोटा होता है और तिब्बती याक की दुम का बनाया जाता है।

७. **तुमनतोक**—चत्रतोक की तरह होता है परन्तु उससे लम्बा। अलमों में इन दोनों का स्थान सर्वोच्च है और अन्तिम बड़े बड़े उमरा के लिए नियत है।

८. **झंडा**—हिन्दुस्तानी पताका है।

कूर में हर प्रकार का एक झण्डा अवश्य होता है परन्तु महत्वपूर्ण अवसरों पर उनकी संख्या अधिक होती है।

१. **कुवर्गा**—नक्कारखाने में जो बाजा काम में लाते हैं उसे कुवर्ग कहते हैं। अरबी भाषा में उसको दमामा कहते हैं। कम या अधिक अठारह जोड़े हैं और उनकी आवाज बहुत ऊँची होती है।

२. **नक्कारा**—कम या अधिक २० जोड़े होते हैं जो बजाए जाते हैं।

३. **दुहुल**—उनमें से चार बजाए जाते हैं।

४. **कर्ना**—सोने, चाँदी, और पीतल आदि से बनाए जाते हैं और चार से कम नहीं बजाते।

५. **सर्ना**—ईरानी और हिन्दुस्तानी दो प्रकार का होता है। नौ सर्ना तक एक साथ बजाते हैं।

६. **नफ़ीर**—ईरानी, यूरोपीय और हिन्दुस्तानी होते हैं। उनमें से हर प्रकार के कुछ को बजाते हैं।

७. **सिङ्ग**—ताँबे का और गाय की सींग की शक्ल का बनाते हैं। एक साथ दो को बजाते हैं।

८. **संज (झाँझ या मजीरा)**—इसके तीन जोड़े बनाए जाते हैं।

पहले जब चार घड़ी रात बाकी रहती थी और चार घड़ी दिन बाकी रहता था तो नौबत बजती थी। अब आधी रात को जब सूर्य ऊपर को चढ़ता है और दूसरी बार सूर्योदय के निकट नौबत बजती है। सूर्योदय से एक घड़ी पहले जादू जैसा प्रभाव रखने वाले व्यक्ति सर्ना बजा कर लोगों को सचेत करते हैं और सोने वालों को जगाते हैं और सूर्योदय के एक घड़ी के बाद प्रारम्भिक वादन करते हैं और कुवर्गा कुछ ऊँची आवाज से बजाते हैं। फिर नक्कारा के अतिरिक्त कर्ना, नफीर और दूसरों बाजों को बजाते हैं। इसके थोड़ी देर बाद फिर सर्ना बजाते हैं और हर्षप्रद नफीरों

---

[1] झंडों, हथियारों और सम्राट् के वैभव की अन्य सामग्री का समूह जो बादशाह की सवारी का चिह्न है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के द्वारा सङ्गीत के नियमों का पूरा पालन किया जाता है। एक घड़ी बीतने के बाद नक्कारा बजाना आरम्भ होता है और सब गुणी कर्मचारी उच्च स्वर से राज्य का जयघोष करते हैं[1] और सात वस्तुएँ आनन्द वृद्धि करती हैं :

१. **मुर्सिल**—जो मुरसली से आरम्भ करता है जो एक ध्वनि है। इसके बाद बरदाश्त की बारी आती है। इसकी भी कुछ ध्वानियाँ हैं। इस समय सब संगीतज्ञ बाजा बजाते हैं। इसके बाद जेर (निम्न स्वर) का कमाल दिखाते हैं और आवाज को उच्च स्वर से निम्न स्वर की ओर ले आते हैं। २. इखलाती, इब्तेदाई, शीराजी, कलन्दरीनिगर कतरा या नखुद कतरा नामक चार राग एक घड़ी तक बजाते हैं। ३. पुराने और ख्वारिज़्मी रागों का आनन्द प्राप्त होता है। बादशाह ने इस राग में दो सौ से अधिक सुर ईजाद किये हैं जिससे हर छोटे-बड़े आनन्द प्राप्त करते हैं। इनमें जलाले शाही, महामीर, करकत और नौरोज़ी विशेष हैं। ४. शादियाने[2] का उत्साह के साथ बजाना। ५. बमियाने दौर का बजाना। ६. उसूल अजफर की ताल जिसमें सुर पहले ऊँचा होता है फिर नीचा। ७. मुर्सिल ख्वारिज़्मी राग बजाने के बाद मुसर्ली बजाता है। इसके बाद रुक कर सम्राट् सम्पत्ति की चिरन्तनता के लिये प्रार्थना करता है जब सब बाजे वाले धीमी ध्वनि से बजाते हैं। रोचक गद्य और आनन्दप्रद पद्य पढ़े जाते हैं और काम समाप्त हो जाता है। यह क्रिया भी एक घड़ी तक लोगों को खुशी देती है। इसके बाद सर्ना बजाने वाले अपना २ जादू जैसा कमाल दिखाते हैं। एक घड़ी तक और यह उत्सव जारी रहता है और मनोरंजक ढंग से समाप्त हो जाता है।

सम्राट् संगीत विद्या में वह स्थान रखते हैं जो बड़े बड़े संगीतज्ञ नहीं रखते। इसी तरह वह बाजा बजाने में भी दक्ष हैं विशेष कर नक्कारा।

इस विभाग में मनसबदार, अहदी और अन्य सैनिक सेवा में नियुक्त हैं। प्यादों का मासिक वेतन ३४० दाम से अधिक और ७४ से कम नहीं है।

आईन २०

शाही मुहरें

राज्य की तीनों शाखाओं में शाही मोहरें इस्तेमाल होती हैं। सत्य यह है कि संसार में हर व्यक्ति को लेन-देन में इसकी आवश्यकता होती है। बादशाह के शासन काल के प्रारम्भ में मौलाना मकसूद मुहरकन ने फौलाद के टुकड़े के चारों तरफ सम्राट् और अमीर तैमूर तक उनके प्रतिष्ठित पूर्वजों के नाम रीक़ा लिपि में लिखे। इसके बाद केवल बादशाह का नाम नस्तालीक लिपि में लिखा गया। न्याय सम्बन्धी कार्यों के लिए मेहराबी मुहर लगाई जाती थी जिस पर बादशाह के नाम के चारों तरफ यह पद्य खुदा हुआ था 'रास्ती मुजीबे रुजाये रतुदास्त, कस न दीदम कि गुम शुद अज़ रहे रास्त' [सच्चाई ईश्वर की प्रसन्नता का कारण है। मैंने किसी को नहीं देखा जो सत्य मार्ग पर चल कर भटका हों]।

तमकीन ने दूसरी मुहर को नए प्रकार से बनाया। इसके बाद मौलाना अली अहमद देहलवी ने इन दोनों मुहरों के खोदने में जादूगरी दिखलाई। गोल छोटी मोहर उजुक[3] के नाम से प्रसिद्ध है और फरमाने सब्ती[4] में काम में लाई जाती है। बड़ी मोहर जिस पर बादशाह के पूर्वजों के नाम खुदे हैं, पहले उन पत्रों पर लगाई जाती थी जो बादशाह

---

[1] ब्लाकमैन ने इसका अर्थ लिखा है all musicians raise the 'auspicious strain' (सब वादक मंगलात्मक गीत गाते हैं) और पाद-टिप्पणी में स्पष्टीकरण के रूप में लिखा है 'probably blessings on His Majesty' (सम्भवतः सम्राट् की शुभकामना)। [2] जो राग शादी या खुशी के समय बजाये जाते हैं। [3] चगताई भाषा का शब्द है। [4] इसका वर्णन इस ग्रन्थ के द्वितीय भाग के ग्यारहवें आईन में दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की तरफ से दूसरे देशों के बादशाहों के नाम भेजे जाते थे लेकिन अब दोनों कामों में प्रयोग में आती है। राज्य की अन्य आज्ञाओं के लिए एक चौकोर मोहर होती है जिस पर 'अल्लाहो अकबर जल्ले जलालहू' खुदा हुआ है। सम्राट् के अन्तःपुर के सब कार्यों के लिए विशेष मोहर प्रयोग में आती है। शाही फरमानों के लिए एक अलग मोहर काम में आती है जो विभिन्न आकारों की होती है, कुछ नक्काशों का वर्णन निम्न लिखित है।

१. **मौलाना मकसूद हेरवी** (हेरात के निवासी)—स्वर्गीय हुमायूँ के सेवकों में थे। यह रीका और नस्तालीक लिपि बहुत सुन्दर लिखते थे। उस्तुर्लाब,[1] कुरा,[2] **और मिस्तरे**[3] ऐसे बनाए कि उन्हें देखकर गुणी तथा अनुभवी लोग चकित हो गए। सम्राट् के अनुग्रह से उन्होंने अपनी कला में कमाल हासिल किया और अपने काल में अद्वितीय हुए।

२ **तमकीन काबुली** (काबुल के तमकीन)—अपने मातृदेश में शिक्षा प्राप्त की और इस शिल्प में इतना कमाल हासिल किया कि उपरोक्त नक्काश के ईर्षास्पद होकर नस्तालीक में उनसे भी आगे बढ़ गए।

३. **मीर दोस्त काबुली** (**काबुल के मीर दोस्त**)—रीका और नस्तालीक लिपि से अकीक को अलंकृत करते हैं (अकीक पर खोदाई करते हैं)। यद्यपि यह उपरोक्त (नक्काशों) के स्तर पर नहीं पहुँचते तथापि इनकी रीका लिखावट नस्तालीक लिखावट से श्रेष्ठ है। वे धातुओं के परखने का पूरा ज्ञान रखते हैं।

४. **मौलाना इब्राहीम**—अकीक[4] पर लिखने में यह अपने भाई शर्फे यज्दी के शिष्य हैं परन्तु अपने काम में पुराने उस्तादों से आगे बढ़ गए हैं और उनके रीका और नस्तालीक सुलेखकों के लेखों से अलग नहीं किए जा सकते। यही सज्जन हैं जिन्हों ने सम्राट् के बहुमूल्य लालों पर 'लाल जलाली' का शब्द खोदा है।

५. **मौलाना अली अहमद देहलवी**—लेखन-कला के किसी ने उनके बराबर फौलाद को नहीं अलंकृत किया। पारखी इसको इस गुण में अद्वितीय समझते हैं और उनको उस्ताद मान कर उनके नक्शों पर मश्क करते हैं। तालीक के अतिरिक्त दूसरी लिपियों को उन्हों ने ऊँचे दर्जे पर पहुँचा दिया है परन्तु नस्तालीक लिखावट अत्यन्त चित्ताकर्षक है इस उद्यम को उन्होंने अपने पिता शैख हुसैन से सीखा और मौलाना मकसूद की कला का अध्ययन करके कमाल हासिल किया और सबसे आगे बढ़ गए।

आईन २१

फर्राश खाना

बादशाह इस विभाग को अच्छा निवास-स्थान और गर्मी, सर्दी और वर्षा से सुरक्षित रखने का साधन और राज्य का अलंकार समझते हैं। बादशाह इसकी सजावट को शासन का वैभव समझ कर इसको ईश्वर की उपासना

---

[1] एक यन्त्र जिससे पुराने ज्योतिषी सूर्य तथा तारों की ऊँचाई मालूम करते थे। इसका आविष्कार अस्तूर ने किया था। इस यन्त्र को अंग्रेजी में (एस्ट्रोलेब) (astrolabe) कहते हैं। बाद में इसके स्थान पर Hardley's Quadrant and Sextant (हर्डले के पाद और षष्टक यन्त्र) का प्रयोग होने लगा। [2] गोला। [3] कापी नवीस जितने बड़े कागज पर लिखना चाहते थे उतनी ही बड़ी दफ्ती लेते थे। पहले लम्बान में दोनों ओर एक-एक इञ्च हासिया छोड़ कर दफ्ती पर लम्बी और सीधी रेखायें खींचते थे। इस रेखा पर बराबर दूरियों पर छेद करते थे, फिर बायें वाले छेद में डोरी डालते थे और इस प्रकार सब छेदों में डोरी डालते हुए दाहने वाले छेद तक पहुँच जाते थे। इस बात का ध्यान रखते थे कि आड़ी डोरियाँ समानान्तर रहें। इस यन्त्र को मिस्तर कहते हैं जो 'सतर' शब्द से बना है और 'सतर' का अर्थ है 'रेखा'। कापी नवीस सादे कागजों को मिस्तर पर रख कर दबाते थे। इससे डोरियों के चिह्न कागज पर पड़ जाते थे। इन चिह्नों के बनने से लेखों की पंक्तियाँ टेढ़ी नहीं हो पाती थीं। [4] लाल धारीदार पत्थर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मानते हैं। बादशाह के अनुभव से इस कारखाने के प्रकार और संख्या दोनों में वृद्धि हुई है और नए नए आविष्कार हुए हैं। पढ़ने वालों की जानकारी के लिए लेखक कुछ को लिखता है और खोज करने वालों के लिए नमूना छोड़ता है।

१. **बारगाह**—जब वह बड़ी होती है तो उसमें १० हजार आदमियों से अधिक बैठ सकते हैं। इसको १००० होशियार फर्राश एक सप्ताह में मशीनों की सहायता से खड़ा करते हैं। बहुधा इसमें दो दरवाजे होते है और हर एक पर लोहे की चादर जड़ी होती है। सादी बारगाह में जिसमें जर बफ्त, मखमल और सोना इस्तेमाल नहीं करते, १० हजार रुपए और उससे अधिक खर्च होता है। सुनहली बारगाहों के मूल्य का वर्णन करना कठिन है। इसी अनुमान से दूसरे प्रकारों का मूल्य आँका जा सकता है।

२. **चुबीन रावटी**—दस खम्भों पर खड़ी की जाती है। हर एक खम्भा कुछ न कुछ जमीन में गड़ा रहता है। सब खम्भे ऊँचाई में बराबर होते हैं सिवाय दो के जो कुछ-ऊँचे होते हैं और जिन पर कड़ी (शहतीर) रखी जाती है। खम्भों के ऊपर और नीचे दासा लगाकर मजबूत करते हैं और बड़ेरी तथा दासों पर कुछ तड़कें रखते है। और सबको लोहे के जामा (अर्थात् कोनिया, बोल्ट और ढेबरी आदि) के द्वारा मजबूत करते हैं। दीवारों और छतें सरकंड़े की चटाइयों की बनाते हैं उसमें एक या दो दरवाजे होते हैं। नीचे को दासा की ऊँचाई पर चबूतरा बनाते हैं। भीतरी भाग जरबफ्त और मखमल से और बाहरी भाग बानात से सजाते हैं और रेशमी नेवारों से कमरबन्ध लगाते हैं।

३. **दो आशियाना मंजिल (दो मंजिला मकान)**—१८ खम्भों पर खड़ा करते हैं। हर खम्भा ६ गज ऊँचा होता है और उनके ऊपर तख्ते जमा देते हैं। उनके ऊपर चार हाथ लम्बे खम्भे बोल्ट और ढेबरी से कस देते हैं जिससे बालाखाना (कोठा) तैयार हो जाता हे। इसका भीतरी और बाहरी भाग चुम्बी रावटी की तरह सजाते हैं। यात्राओं में यह सम्राट का शयनागार होता है। यह पवित्र भवन उस बुद्धिमान् मनुष्य के समान है जो अपने इहलौकिक तथा पारलौकिक दोनों कर्तव्यों का साथ पालन करता है तथा जिसकी एक आँख पवित्र पूजा-गृह की ओर लगी हुई है और दूसरी आँख संसार की विचित्र सृष्टि की ओर। ईश्वर की उपासना इसी पवित्र मन्दिर में होती है और श्रेष्ठ सूर्य की आराधना यहीं से आरम्भ होती है। इसके बाद बेगमें बादशाह का दर्शन प्राप्त करती हैं; तत्पश्चात् कोरनिश करते हैं। यात्राओं में बादशाह इसी स्थान में बैठकर निरीक्षण का काम करते हैं। और इसको झरोखा कहते हैं।

४. **जमीन दोज**—अनेक प्रकार से बनाते हैं। इसमें कभी एक और कभी दो दरवाजे होते हैं। उसके अन्दर पर्दे लटका कर खेमे को कई भागों में बाँट देते हैं।

५. **अजायबी**—नौ शामियानों को चार खम्भों पर तानते हैं—पाँच (चौकोर) और चार मखसूनी (गाजर की शक्ल के) होते हैं। कभी-कभी इसमें एक ही खाना होता है और एक ही खम्भे पर खड़ा होता है।

६. **मंडल**—पाँच शामियानों को मिलाकर चार खम्भों पर खड़ा करते हैं। कभी-कभी चार शामियानों को थोड़ा नीचे झुकाकर एकान्त स्थान (खिलवत कद्र) बनाते हैं। कभी कभी चारों को ऊँचा तानते हैं और कभी-कभी एक ही तरफ खोलते हैं और खुशी प्राप्त करते हैं।

७. **आठ खम्भा**—सत्तरह शामियानें कभी अलग अलग और कभी एक में मिलाकर आठ खम्भों पर लगाये जाते हैं।

८. **खरगाह**—यह लपेटा जाने वाला खेमा है। इसमें कभी एक दरवाजा और कभी दो दरवाजे होते हैं।

९. **शामियाना**—तरह तरह का होता है और बारह गज से बड़ा नहीं होता।

१०. **कलन्दरी**—इसका वर्णन ऊपर हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

११. **सरा पर्दा**—पहले समय में मोटी किरमिच से बनाते थे। बादशाह ने गलीचे के सरापर्दे तैयार कराये जो वैभव बढ़ाता है और लाभदायक है।

१२. **गुलालबार**—लकड़ी का सरा पर्दा है जो खरगाह की दीवार की तरह चमड़े के तसमों से बाँधा जाता है। शिविर समाप्त होने पर उसको लपेट कर ले जाते हैं। वह लाल कपड़े से ढका रहता है और नेवाड़ से बँधा रहता है।

१२. **गलीम**—बादशाह ने तरह २ के कालीनों के आविष्कार किये हैं और उनमें विचित्र तथा चित्ताकर्षक गाँठें दी गई हैं। सम्राट् ने अनुभवी उस्ताद कारीगर नियुक्त किये हैं जिन्होंने ऐसे सुन्दर नमूने तैयार किये कि ईरानी और तूरानी कालीनों को लोग भूल गये हैं, यद्यपि साल भर व्यापारी गोश्तान, खुजिस्तान, किरमान, और सब्जवार आदि से कालीन लाते हैं। हर प्रकार के कालीन बुनने वाले ने हिन्दुस्तान में अपना घर बना लिया है और खूब लाभ उठाते हैं। अच्छे कालीन हर नगर में तैयार होते हैं विशेषकर आगरा, फतेहपुर और लाहौर में। शाही कारखानों में अनुपम कालीन २० गज ७ तस्सूज लम्बा और ६ गज साढ़े ग्यारह तस्सूज चौड़ा बुनते हैं और १८१० रुपया खर्च होता है। जिसका मूल्य अनुभवी व्यापारी २७१५ रुपये आँकते हैं।

तकिया नमद—विदेश से लाते हैं और इस देश में भी अधिक तैयार करते हैं।

जाजम शतरञ्जी बलूची और सुन्दर चटाइयों का वर्णन जो रेशम से तैयार की हुई मालूम होती है—क्या लिखा जाय क्योंकि इनकी कथा बहुत लम्बी है।

आईन २२

आबदार खाना

सम्राट् इस जीवन स्रोत को आबेहयात (अमृत) कहते हैं और उसकी देखभाल सन्तुष्ट हृदय वाले योग्य कर्मचारियों के सुपुर्द किया है। बादशाह अधिक पानी नहीं पीते परन्तु इस पर बहुत ध्यान रखते हैं। घर पर और सफर में वह गङ्गाजल पीते हैं। कुछ भाग्यशाली तथा सच्चे कर्मचारी गंगा के तट पर रहते हैं। वे सावधानी से पानी भरते हैं और घड़ों पर मुहर लगा कर भेजते हैं। जब दरबार आगरा और फतेहपुर में होता था तब जल सोरों कस्बे से लाते थे। परन्तु आजकल[1] जब पंजाब बादशाह के चरणों का विश्रामस्थल बना है हरद्वार से पानी लाते हैं। भोजन पकाने में यमुना, चनाब या वर्षा का पानी खर्च होता है। इसमें थोड़ा गङ्गाजल भी मिलाते हैं। बादशाह ने यात्रा और आखेट में अपनी कृपा से सूक्ष्मदर्शी तथा अनुभवी कर्मचारियों को नियुक्त किया है जो अपनी दूरदर्शिता से पानी की जाँच करते हैं।

बादशाह ने अपनी दूरदर्शिता से शोरे को, जो बन्दूक में आग का काम देता है, पानी ठन्डा करने का साधन बनाया है जिससे हर छोटे-बड़े को हर्ष प्राप्त हुआ।

शोरा एक नमकीन मिट्टी है। इसको एक सूराखदार बर्तन में भर देते हैं और उस पर थोड़ा पानी छिड़क देते हैं। टपके हुए पानी को उबालते हैं। उसको मिट्टी से अलग कर के साफ कर लेते हैं।

एक सेर पानी जस्ता, चाँदी या किसी ऐसे ही धातु के बर्तन में भरते हैं और उसका मुँह मजबूत बाँध देते हैं। एक दूसरे बड़े बर्तन में २½ सेर शोरा और ५ सेर पानी मिलाते हैं। मुँह बँधे हुए घड़े को आधी घड़ी तक इस मिश्रण में रख कर हिलाते हैं। इससे पानी अधिक ठन्डा हो जाता है। एक रुपए का ¾ मन से लेकर ४ मन तक शोरा मिलता है।

---

[1] १५९६ ई०।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब ३० इलाही[1] सन् में बादशाह पंजाब में ठहरे तब से बर्फ का रिवाज हुआ। लाहौर से पैंतालीस कोस की दूरी पर एक कस्बा पनहाँ है, उसके उत्तरी पहाड़ से, जल और स्थल दोनों मार्गों से, डाक चौकी द्वारा और बहलों तथा कहारों के द्वारा बर्फ लाते हैं। व्यापारी बहुत अधिक लाभ उठाते हैं और हर छोटे-बड़े को सुख प्राप्त होता है, एक रुपए की दो या तीन सेर बर्फ बिकती है। सबसे अधिक लाभप्रद ढंग यह है कि बर्फ नावों से लाई जाय। इसके बाद बहल और सबसे कम लाभ कहारों द्वारा लाने में होता है। पहाड़ी लोग बर्फ उपत्यका में लाकर ढेर की ढेर बेचते हैं और हर ढेर का वजन ३० सेर से अधिक और २५ सेर से कम नहीं होता उसका मूल्य ५ दाम लेते हैं। जब अधिक दूर ले जाते हैं तो २४ दाम १७ जीतल लेते हैं। जब दूरी औसत होती है तो १५ दाम देने पड़ते हैं। १० नावों में से एक नाव रोज बर्फ लेकर राजधानी में पहुँचती है। हर नाव पर ४ मल्लाह होते हैं। हर बस्ते में १२ सेर से ६ सेर तक बर्फ निकलती है। गर्मी और सर्दी के कारण यह अन्तर होता है। हर बहल दो थैले लाती है। १४ चौकियाँ हैं जहाँ घोड़े बदले जाते हैं। एक हाथी भी काम में लाया जाता है। प्रतिदिन १२ सिलें पहुँचती हैं और हर एक १० से लेकर ४ सेर तक होती है। जाड़े में एक सेर बर्फ का मूल्य ३ दाम २१ जीतल, वर्षाकाल में १४ दाम २० जीतल, और बीच में ६ दाम २१½ जीतल होता है और सामान्य भाव ५ दाम १५½ जीतल प्रति सेर है। यदि बर्फ कहारों के द्वारा लाते हैं तो १४ चौकियों पर २८ मजदूरों की जरूरत पड़ती है। रोज हर थैला आता है जिसमें ४ टुकड़े होते हैं। आरम्भ में एक सेर बर्फ का मूल्य ५ दाम १६½ जीतल; अन्तर्काल में १६ दाम २½ जीतल और अन्त में १६ दाम १५½ जीतल होता है। आम तौर पर इस बर्फ की दर ८½ दाम प्रति सेर होती है। साधारण लोग गर्मी में बर्फ का इस्तेमाल करते हैं पर बड़े लोग साल भर उससे सुख प्राप्त करते हैं।

आईन २३

पाकशाला

बादशाह ने इस विभाग में भी दूरदर्शिता से काम लिया और इसके लिए उचित कानून बनाए। यह सम्भव न था कि ऐसे विचारशील शासक का ध्यान पाकशाला जैसे महत्वपूर्ण विभाग की तरफ न जाय। मानव-प्रकृति का सामञ्जस्य शारीरिक शक्ति, बाह्य तथा आन्तरिक प्रसादों की उपलब्धि की क्षमता, धार्मिक तथा सांसारिक सौभाग्य की प्राप्ति मनुष्य के उपयुक्त आहार तथा समुचित विचार पर निर्भर है। आहार के विषय में मनुष्य पशु के समान है परन्तु इन बातों का ज्ञान उसे पशुओं से पृथक् कर देता है और वह सभ्यता से विभूषित हो जाता है। यदि बादशाह में उच्चाकांक्षा उत्कृष्ट बुद्धि तथा विश्वव्यापी दया न होती तो वह विरक्त होकर एकान्त स्थान में जा बैठते और उनको निद्रा और भोजन की याद न रहती। अब भी, जब कि उनको गृहस्थों तथा विरक्तों दोनों समुदायों का नेतृत्व प्राप्त है, वह अपनी पवित्र जिह्वा से यह कभी नहीं कहते कि "आज क्या २ भोजन तैयार किया गया है?" रात दिन में वह केवल एक बार भोजन करते हैं और तृप्त होने से पहले ही हाथ खींच लेते हैं। भोजन का कोई समय निश्चित नहीं है। सेवक सामान इस प्रकार तैयार रखते हैं कि आज्ञा के एक घंटे बाद सौ रकाबियाँ परस दी जाती है। अन्तःपुर के लिए जो भोजन नियत है उसका वितरण प्रातःकाल से आरम्भ होता है बहुधा रात तक बटता रहता है।

सम्राट् ईमानदार और अनुभवी व्यक्तियों को इस काम पर नियुक्त करते हैं और दरबार के सब योग्य सेवकों को यह ध्यान रहता है कि अपने कर्तव्यों का भली भाँति पालन करें। इस समुदाय के अध्यक्ष का सहायक प्रधान मन्त्री है। बादशाह ने राज्य के कार्य को इस बुद्धिमान् व्यक्ति (प्रधान मन्त्री) के सुपुर्द किया है विशेष कर यह महत्वपूर्ण विभाग। यह सब होते हुए भी बादशाह स्वयं देखभाल करने से नहीं चूकते। इन्होंने एक परिश्रमी तथा सच्चे व्यक्ति

[1] १५८६ ई०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

को मीर बकावल नियुक्त किया है। इस व्यक्ति की देखभाल पर इस विभाग की सफलता निर्भर है और बहुत से ईमानदार व्यक्ति उसके सहायक नियुक्त किए गए हैं। इनमें कुछ को छोटे बकावल बनाए हैं। कुछ सच्चे व्यक्ति नकद और जिन्स के खजाञ्ची किए गए हैं। अनेक शुभचिन्तक व्यञ्जन-पारखी नियत हैं। एक ठीक हिसाब रखने वाला वितिक्ची इसकी देखभाल करता है।

सदैव हर देश के बावर्ची तरह तरह के व्यञ्जन बनाते हैं और हर तरह के अन्न, तरकारी, गोश्त, तेल, मिठाई और मसालेदार भोजन बनाते हैं।

प्रति दिन ऐसे व्यञ्जन बनाये जाते हैं कि बड़े बड़े लोगों के उत्सवों में भी बहुत कम प्राप्त होते हैं। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि बादशाह के लिए कैसा स्वादिष्ट भोजन बनाया जाता है। नौरोज[1] के आरम्भ में सहायक खजाञ्ची एक वर्ष के व्यय का अनुमान तैयार और पेश करता है जिसकी रकम उसको दे दी जाती है। रुपयों के थैलों और भन्डार घर के दरवाजों पर मीर बकावल और मुशरिफ की मुहरें लगाते हैं। दैनिक खर्च का सही अनुमान लगाकर प्रति मास का हिसाब तैयार किया जाता है जिनकी रसीदों पर उन्हीं दोनों व्यक्तियों की मुहर लगी होती है। इसके बाद वह खर्च के खाते में दर्ज की जाती है। हर फसल के आरम्भ में दीवाने ब्यूतात[2] और मीर बकावल अपनी दूरदर्शिता से आवश्यक वस्तुयें एकत्र कर लेते हैं। बहराइच से सुखदास चावल, ग्वालियर से देवजीरा चावल, राजोरी और नीमला से जिनजिन चावल, हिसार फीरोजा से घी, और कश्मीर से बतखें, मुर्गाबियाँ और कुछ सब्जियाँ लाते हैं। नमूने अलग-अलग हर समय वर्तमान रहते हैं। भेड़, बकरी, बर्बरी,[3] मुर्गे और बतखें आदि बावर्ची पालते हैं। मुर्गियाँ एक महीने से कम नहीं पालते। जानवरों को जबह करने के स्थान शहर और लशकर के बाहर नदी और तालाबों के किनारे स्थित हैं। गोश्त धोया जाता है और थैलों में भरकर बावर्चियों की मोहर लगने के बाद बावर्चीखाने में जाता है। दूसरी बार फिर धोया जाता है और देग में डाला जाता है। भिश्ती अपनी मश्कों से घड़ों में पानी भरते है। उनका मुँह कपड़ों से बाँधते हैं और अनुभवी लोगों की उन पर मुहर लगाई जाती है। जब रेत तह में बैठ जाती है तब उसको काम में लाते हैं। बावर्चीखाने से मिला हुआ एक बाग है जिससे हर समय ताजी तरकारियाँ प्रयोग में आती हैं। मीर बकावल और मुशरिफ हर खाद्य पदार्थ का मूल्य अनुमान लगाते हैं और वह नियम बन जाता है। वे रोजनामचा, आय-व्यय का अनुमान-पत्र कब्जुल्वसूल[4] और कर्मचारियों के मासिक वेतन के चिट्ठे पर अपनी मोहर लगाते हैं और विभाग की देखभाल करते हैं। कुकर्मियों, इधर उधर की बेहूदा बात करने वालों, और अपरिचित लोगों को इस विभाग में स्थान नहीं देते। कोई व्यक्ति बिना जमानत के बावर्चीखाने में नियुक्त नहीं होता; व्यक्तिगत परिचय पर्याप्त नहीं समझा जाता।

बादशाह का भोजन सोने, चाँदी, पत्थर और मिट्टी के देकचों में तैयार होता है। उनमें से कुछ देकचे एक सहकारी बकावल के सुपुर्द करते हैं और उसी की ही देखरेख में भोजन तैयार होता है। खाना पकाने और परसने के समय सायबान ऊपर फैला देते हैं और इस बात की निगरानी की जाती है कि लोग देखने न पावें। रसोइए अपनी आस्तीनें और चढ़ा लेते हैं तथा मुँह और नाक बाँध लेते हैं। पहले बावर्ची और बकावल खाना चखते हैं। इसके बाद मीर बकावल चखता है और फिर थालियों में निकाला जाता है। सोने और चाँदी की थालियों को लाल कपड़ों में बाँधते हैं और चीनी और ताँबे के बर्तनों को सफेद कपड़ों में। मीर बकावल उन पर अपनी मुहर लगाता है और उन पर व्यञ्जनों के नाम लिख देता है। बावर्चीखाने का मुशरिफ सब बर्तनों की एक सूची तैयार करके मीर बकावल की मुहर लगवा कर, अन्दर भेजता हैं जिससे वे बदलने नहीं पाते। पात्रों को बकावल, बावर्ची और अन्य कर्मचारी ले

---

[1] वर्ष का प्रथम या नया दिन। [2] भंडार तथा कारखानों का अधीक्षक। [3] एक जाति की बकरी। [4] रसीद का रजिस्टर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाते हैं। चोबदार लोगों को आगे और पीछे से जाने नहीं देते। जब खाद्य पदार्थ अन्दर भेजते हैं तब रकाबदार[1] भिन्न-भिन्न प्रकार की रोटियाँ, जमा हुआ दही और ख्वाँचे जिनमें प्याले, अचार, अदरक, नीबू, विभिन्न प्रकार की तरकारियाँ भरी रहती हैं—थैलों में भर कर बकावल की मोहर लगवा कर भेज देते हैं। अन्दर के कर्मचारी खाने को फिर से चख कर दस्तरखान पर चुनते हैं और थोड़ी देर के बाद जब बादशाह खाना खाने लगते हैं, तब परसने वाले कर्मचारी बादशाह की सेवा के लिए उपस्थित रहते हैं। पहले फकीरों का भाग अलग किया जाता है। बादशाह दूध या दही से खाना आरम्भ करते हैं। भोजन के पश्चात् वह माथा टेक कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

मीर बकावल सदैव प्रस्तुत रहता है। पूर्वोक्त सूची के अनुसार बर्तन वापस लिए जाते हैं। कुछ खाना अधपका तैयार रहता है कि शायद उसकी जरूरत पड़ जाय।

ताँबे के बर्तनों पर महीने में दो बार कलई होती है और शाहजादों तथा अमीरों के बर्तनों पर एक बार। टूटे हुए बर्तन ठठेरों को दे दिए जाते हैं और उनके बदले नए बर्तन तैयार कर लिए जाते हैं।

आईन २४

मसाले

(व्यञ्जनों की सामग्री)

भोजन की वस्तुएँ इतनी अधिक हैं कि उनका उल्लेख करना कठिन है। उदाहरण के लिए कुछ लिखी जाती हैं। सब व्यञ्जन, जो पकाये जाते हैं, तीन से अधिक प्रकार के नहीं होते—(१) बेगोश्त (**निरामिष**) जिसे प्रचलित भाषा में **सूफियाना** कहते हैं; (२) गोश्तबाबिरंज (जिसमें गोश्त और चावल आदि मिला हो); ३. गोश्त व अबाजेर (मसालेदार गोश्त)। प्रत्येक के दस भेद लिखे जाते हैं।

पहला—१. जर्द बिरञ्ज—१० सेर चावल; ५ सेर मिस्री; ३½ सेर घी; ½ सेर किशमिश; ½ सेर बादाम; ½ सेर पिश्ता; १ पाव नमक; आध पाव अदरक; १½ दाम केसर; २½ मिस्काल दारचीनी। चार रकाबियाँ भर जाती हैं। कुछ लोग इसको थोड़े मसालों से या बिना मसाले के भी पकाते हैं। गोश्त और नमक से भी बनाते हैं।

२. **खुश्का**—१० सेर चावल में ½ सेर नमक डालते हैं और तरह तरह से पकाते हैं। चार रकाबियाँ भर जाती हैं। एक मन देवजीरा धान से २५ सेर चावल निकलता है। १७ सेर से देग भर जाती है, जिंजिन चावल के २२ सेर से।

३. **खिचड़ी**—५ सेर चावल; ५ सेर मूँग की दाल; ५ सेर घी और ⅓ सेर नमक। सात रकाबियाँ भर जाती हैं।

४. **शीर बिरञ्ज (खीर)**—१० सेर दूध; १ सेर चावल; १ सेर मिस्री; १ दाम नमक। पाँच रकाबियाँ भर जाती हैं।

५. **थूली**—१० सेर अधकुटे गेहूँ, जिसका एक तिहाई अलग हो जाता है; ५ सेर घी; १० मिस्काल काली मिर्च; ४ मिस्काल दारचीनी; ३½ मिस्काल लौंग तथा बड़ी इलायची और ⅓ सेर नमक। कुछ लोग दूध और शक्कर भी डालते हैं। चार रकाबियाँ भर जाती हैं।

६. **चिखी**—१० सेर गेहूँ के आटे को खमीर बना कर खूब धोते हैं। जब २ सेर खमीर रह जाता है तो उसमें

---

[1] रकाबियों में खाना चुनने वाला; खानसामा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मसाला मिलाकर तरह-तरह से उस पर गोश्त लपटाते हैं। इसमें १ सेर घी; १ सेर प्याज; ½ दाम केसर; ½ दाम लौंग और बड़ी इलायची; एक-एक दाम दारचीनी, काली मिर्च, धनिया; तीन-तीन दाम अदरक और नमक डालते हैं। दो रकाबियाँ भर जाती हैं। कुछ लोग नींबू भी डालते हैं।

७. **बादिञाँ**—१० सेर चावल; १½ सेर घी; ३¾ सेर प्याज; ¼ सेर अदरक और नींबू का रस; पाँच-पाँच मिस्काल काली मिर्च और धनियाँ; आधी-आधी मिस्काल लौंग, इलायची और हींग। छः रकाबियाँ भर जाती हैं।

८. **पहित**—१० सेर मूंग, उर्द, चना और मसूर आदि की बेछिल्के दाल में २½ सेर घी; आधा-आधा सेर नमक और अदरक; २ मिस्काल जीरा; १½ मिस्काल हींग डालते है। १५ रकाबियाँ भरती हैं। अधिकतर खुश्का के साथ खाते हैं।

९. **साग**—यह पालक और दूसरी सब्जियों से तैयार करते हैं और यह बहुत स्वादिष्ठ भोजन है। १० सेर सोआ तथा पालक आदि; १½ सेर घी; १ सेर प्याज; ½ सेर अदरक; ५½ मिस्काल काली मिर्च और आधी-आधी मिस्काल इलायची और लौंग। छः रकाबियाँ तैयार करते हैं।

१०. **हलवा**—दस-दस सेर मैदा, मिस्री, और घी। पन्द्रह रकाबियाँ तैयार होती हैं। यह कई तरह से खाया जाता है।

इसी भाँति विभिन्न प्रकार के मुरब्बे और शरबत तैयार किए जाते हैं जिनका यहाँ पर वर्णन नहीं किया जा सकता।

दूसरा—१. कबूली—१० सेर चावल; ७ सेर गोश्त; ३½ सेर घी; १ सेर चने की दाल; २ सेर प्याज; आध सेर नमक; पाव भर अदरक; एक-एक दाम दारचीनी, काली मिर्च और जीरा; आधा आधा दाम इलायची और लौंग। कुछ लोग बादाम और किशमिश भी मिलाते हैं। इससे ५ रकाबियाँ तैयार होती हैं।

२. **दुज़्द बिरियाँ**—१० सेर चावल; ३½ घी, १० सेर गोश्त; ½ सेर नमक। ५ रकाबियाँ तैयार होती हैं।

३. **कीमा पोलाव**—१० सेर चावल; १० सेर गोश्त; ४ सेर घी; १ सेर चने की दाल, २ सेर प्याज, ½ सेर नमक, पाव-पाव भर अदरक और काली मिर्च, एक-एक दाम जीरा, इलायची और लौंग। पाँच रकाबियाँ भर जाती हैं।

४. **शुल्ला**—१० सेर मांस, ३½ सेर चावल, २ सेर घी, १ सेर चना, २ सेर प्याज, ½ सेर नमक, १ पाव अदरक, दो-दो दाम लहसुन और गोल मिर्च, एक-एक दाम दारचीनी, इलायची और लौंग। ६ रकाबियाँ भरती हैं।

५. **बुग़रा**—१० सेर मांस, ३ सेर मैदा, १½ घी, १ सेर चना, १½ सेर सिरका, १ सेर मिस्री, एक-एक पाव प्याज, गाजर, चुकन्दर, शल्जम, पालक, सोआ, अदरक, एक-एक दाम केसर लौंग, इलायची और जीरा, २ दाम दारचीनी, ८ मिस्काल गोल मिर्च। १२ रकाबियाँ भरती हैं।

६. **कीमा शोरबा**—१० सेर मांस; एक-एक सेर चावल और घी, ½ सेर चना, और दूसरी वस्तुएँ शुल्लो की तरह। १० रकाबियाँ भर जाती हैं।

७. **हरीसा**—१० सेर मांस, ५ सेर कुटा हुआ गेहूँ, २ सेर घी, ½ सेर नमक, २ दाम दारचीनी। ५ रकाबियाँ भर जाती हैं।

८. **कश्क**—१० सेर मांस, ५ सेर कुटा गेहूँ, ३ सेर घी, १ सेर चना, ¼ सेर नमक, १½ सेर प्याज, ½ सेर अदरक १ दाम दारचीनी, दो-दो मिस्काल केसर, लौंग, इलायची और जीरा। ५ रकाबियाँ बनती हैं।

९. **हलीम**—गोश्त, गेहूँ, चना, मसाले और केसर कश्क की तरह; १ सेर घी, पाव-पाव भार शल्जम, गाजर पालक और सोआ। १० रकाबियाँ तैयार होती हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१०. **कुताब**—जिसको हिन्दुस्तानी सम्बोसा कहते हैं। इसे तरह तरह के बनाते हैं। १० सेर मांस, ४ सेर मैदा, २ सेर घी, १ सेर प्याज, ¾ सेर अदरक, ½ सेर नमक, दो-दो दाम काली मिर्च और धनियाँ, एक-एक दाम इलायची, जीरा और लौंग, ¼ सेर सुम्माक। यह बीस प्रकार के होते हैं और इनसे ४ रकाबियाँ भरती हैं।

तीसरा – १. बिरियाँ—पूरी दाशमंदी भेड़ के लिए २ सेर नमक, १ सेर घी, दो-दो मिस्काल केसर, लौंग, गोलमिर्च और जीरा प्रयोग में लाते और तरह तरह से तैयार करते हैं।

२. **यख़नी**—१० सेर मांस, १ सेर प्याज, ½ नमक।

३. **बुन्मा**—भेड़ को पानी में इतना उबालते हैं कि उसके तमाम बाल साफ हो जाते हैं और यखनी की तरह या दूसरे ढङ्ग से तैयार कर लेते हैं। मेंम्ना या बकरी का बच्चा कम उम्र का हो तो खाना अधिक स्वादिष्ठ होता है।

४. **कबाब**—इसके अनेक प्रकार हैं। १० सेर मांस, ½ सेर घी, पाव-पाव भर नमक, अदरक, और प्याज, डेढ़ डेढ़ दाम जीरा, धनियाँ, काली मिर्च, इलायची और लौंग।

५. **मुसम्मन**—मुर्ग की गर्दन से उसके शरीर की सारी हड्डियाँ निकाल लेते हैं और मुर्ग समूचा बना रहता है। ½ सेर कुटा हुआ मांस, ½ सेर घी, ५ अंडे, ¼ सेर प्याज, १० मिस्काल धनियाँ, १० मिस्काल अदरक, ५ मिस्काल नमक, ३ मिस्काल गोलमिर्च, ½ मिस्काल केसर। कबाब की तरह पकाते हैं।

६. **दोप्याजा**—१० सेर दरमियानी मोटा मांस, दो-दो सेर घी और प्याज, ¾ सेर नमक, ¼ सेर अदरक, एक-एक दाम जीरा, धनियाँ, इलायची, लौंग, २ दाम काली मिर्च। ५ रकाबियाँ तैयार होती हैं।

७. **भेड़ का मुतंजना**—१० सेर दरमियानी मोटा गोश्त, २ सेर घी, ½ सेर चना; ¾ अदरक; १ दाम जीरा, दो-दो दाम गोलमिर्च, लौंग, इलायची और धनियाँ। इससे ७ रकाबियाँ भर जाती हैं। यह मुर्ग और मछली से भी बनाते हैं।

८. **दम्पुख़्त**—(दम देकर पकाया हुआ)—१० सेर मांस, २ सेर घी; १ सेर प्याज, ११ मिस्काल अदरक, १० मिस्काल कालीमिर्च, दो-दो दाम लौंग और इलायची।

९. **कलिया**—१० सेर मांस, २ सेर घी, १ सेर प्याज, २ दाम काली मिर्च, एक एक दाम लौंग और इलायची, आध पाव नमक। ८ रकाबियाँ भरती हैं। इसके तैयार करने में मुतन्जना के प्रतिकूल गोश्त के अधिक छोटे छोटे टुकड़े कर देते हैं और शोरबा अधिक गाढ़ा होता है। हिन्दुस्तान में इसको तरह-तरह से बनाते हैं।

१०. **मलगूबा**—१० सेर मांस, १० सेर दही, एक एक सेर दही और प्याज, ¾ सेर अदरक, ५ दाम लौंग। १० रकाबियाँ तैयार होती हैं।

आईन २५

रोटी

रोटी भी एक प्रकार की खूराक है। परन्तु उसके महत्व के विचार से उसका वर्णन अलग किया जाता है। रकाबखाने (भंडारे) में तैयार होती है। बुजुर्गे तनूरी (बड़ी तन्दूरी रोटी) १० सेर मैदा ५ सेर गाय का दूध, १½ घी और ¾ सेर नमक मिलाकर बनाते हैं। कभी कभी इससे छोटी भी बनाते हैं। तुन्के ताबगी (हल्की, तबे पर सेकी जाती है) १ सेर मैदे से १५ और इससे भी अधिक तैयार होती है। इसको तरह तरह से बनाते हैं। उसकी एक किस्म को चपाती कहते हैं। कुछ लोग इसको खुश्के से बनाते हैं। गर्म गर्म दस्तर ख्वन पर लाते हैं। बहुत स्वादिष्ठ होती है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दरबार में प्रयोग में आने वाली रोटी के लिए १ मन गेहूँ से २० सेर मैदा निकालते हैं, २ सेर दलिया और शेष भूसी। यदि इतना महीन आटा नहीं चाहते तो अनुपात बदल जाता है।

आईन २६

सूफियाना[1] (संयम के दिन)

बादशाह अपने तात्विक ज्ञान के कारण गोश्त से कम रुचि रखते हैं। वह बहुधा कहा करते हैं कि यद्यपि मनुष्य के लिए भाँति भाँति के व्यञ्जन विद्यमान हैं तथापि अपने अज्ञान और निर्दयता के कारण वह जानवरों को कष्ट देता है और उनकी हत्या करने और खाने से बाज नहीं आता। कोई व्यक्ति पशुओं के न सताने की खूबियों को नहीं देखता और अपने को जानवरों की कब्र बनाता है। यदि बादशाह ने संसार के बोझ को अपने कन्धों पर न रखा होता तो वह गोश्त खाने से एकदम हाथ खींच लेते। तथापि उनका विचार यह है कि कुछ दिनों तक समय की गति के अनुसार चल कर धीरे धीरे इस आदत को छोड़ दें। कुछ समय तक बादशाह शुक्रवार को गोश्त नहीं खाते थे, फिर रविवार को। आजकल प्रत्येक सौर मास के प्रथम दिन, रविवार को, सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के दिन, दो रोज़ों[2] के बीच वाले दिनों को, रजब[3] महीने के सोमवार को, हर सौर मास के उत्सव के दिन, फरवरदीन[4] के पूरे महीने भर और आबान[5] महीने भर जो उनके जन्म का महीना है बादशाह गोश्त नहीं खाते। जब बादशाह ने इरादा किया कि जितने वर्ष बादशाह की अवस्था हो गई है उतने दिनों तक आबान के महीने में गोश्त से परहेज करें और यदि उपरोक्त महीने के दिनों की संख्या उनकी आयु के वर्षों की संख्या से कम हो तो आजर महीने के कुछ दिन भी संयम से बितावें। वर्तमान समय में संयम पूरे महीने तक चलता है। सत्य प्राप्ति की इच्छा (हक-पजोही)[6] के कारण हर वर्ष संयम के कम से कम ५ दिन बढ़ जाते हैं। जब कई सूफियाना दिन एक साथ पड़ जाते हैं तब इस कमी की पूर्ति दूसरे महीनों में हो जाती है। जब सूफियाना का दीर्घ समय समाप्त हो जाता है तब सबसे पहले खाने के लिए गोश्त मरियम मकानी के महल से आता है, फिर दूसरी बेगमों, राजकुमारों और मुख्य अमीरों के यहाँ से।

इस विभाग में अमीर, अहदी और दूसरे सवार नियुक्त हैं। प्यादे का वेतन १०० दाम से ४०० दाम तक है।

आईन २७

जिन्सों के भाव

यद्यपि आक्रमण और वर्षा काल आदि में जिन्सों के भाव में बड़ा अन्तर हो जाता है तथापि जिज्ञासुओं की सूचना के लिए सामान्य भाव इस तालिका में दिया जा रहा है।

---

[1] सूफियों के ढङ्ग पर रहना। [2] व्रत। [3] अकबर का जन्म हिजरी सन् ९४९ में रजब मास की पाँचवीं तिथि तदनुसार तारीख १५ अक्तूबर १५४२ रविवार को हुआ था। चूँकि रविवार पहले ही व्रतों की सूची में सम्मिलित हो चुका था इसलिए बादशाह सोमवार को व्रत रखते थे। दीन इलाही मत के अनुयायी अपने-अपने जन्म-मासों में व्रत रखते थे। [4] फरवरी-मार्च अथवा मार्च-अप्रैल। [5] अक्तूबर-नवम्बर। [6] ब्लाकमैन ने 'हकपजोही' का अर्थ "pious motives" लगाया है और श्री रामलाल पाण्डेय ने 'ईश-चिन्तन'।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रबी

नाम	मूल्य	नाम	मूल्य	नाम	मूल्य
गेहूँ	प्रतिमन १२ दाम	जौ	प्रतिमन ८ दाम	मेथी	प्रतिमन १० दाम
काबुली चना	,, १६ ,,	बाजरा	,, ६ ,,	मटर	,, ६ ,,
काला चना	,, ८ ,,	अलसी	,, १० ,,	सरसों	,, १२ ,,
मसूर	,, १२ ,,	मोसफर (कुरुड़)	,, ८ ,,	केऊ (काहू)	,, ७ ,,

खरीफ़

नाम	मूल्य	नाम	मूल्य	नाम	मूल्य
मुश्की धान	प्रतिमन ११० दाम	देका चावल	प्रतिमन ५० दाम	लोबिया	प्रतिमन १२ दाम
सादा धान	,, १०० ,,	जिरही ,,	,, ४० ,,	जुवारी	,, १० ,,
सुखदास चावल	,, १०० ,,	साठी ,,	,, २० ,,	लहडरा	,, ८ ,,
दूना प्रसाद ,,	,, ९० ,,	मूँग	,, १२ ,,	कोदरम	,, ७ ,,
साम जीरा ,,	,, ९० ,,	माश (उर्द)	,, १६ ,,	कूरी	,, ७ ,,
शकरचीनी ,,	,, ९० ,,	मोठ	,, १२ ,,	साँवाँ	,, ६ ,,
देवजीरा ,,	,, ९० ,,	सफेद तिल	,, २० ,,	कंगनी	,, ८ ,,
जिंजिन ,,	,, ८० ,,	काला तिल	,, १९ ,,	चेना	,, ८ ,,

दाल

दाल मूँग	प्रतिमन १८ दाम
दाल चना	प्रतिमन १६½ दाम
दाल मसूर	प्रतिमन १६ दाम
दाल मोट	प्रतिमन १२ दाम

आटा

मैदा	प्रतिमन २२ दाम
खुश्का	प्रतिमन १५ दाम
चना	प्रतिमन २२ दाम
जौ	प्रतिमन ११ दाम

शाक

नाम	मूल्य	नाम	मूल्य	नाम	मूल्य
सोआ	प्रतिमन १० दाम	कंकच (एक प्रकार का साग जो कश्मीर के जंगल में पैदा होता है)	प्रतिसेर ४ दाम	जीतू	प्रतिसेर ३ दाम
पालक	,, १६ ,,			अदरक	,, २½ ,,
पोदीना	,, ४० ,,			पोई	,, १ ,,
प्याज	,, ६ ,,			कचनार की कली	,, ½ ,,
लहसुन	,, ४० ,,	दुन्वरेत (गुले जौज)	,, २ ,,	चूका	,, ½ ,,
मूली	,, २०½ ,,	गाजर (शकाकुल)	,, ३ ,,	बथुआ	,, ¼ ,,
करमकल्ला	प्रतिसेर १ ,,	लहसुन का फूल	,, १ ,,	रतसका	,, १ ,,
		उपलहाक (कश्मीर में पैदा होता है)	,, १ ,,	चौलाई	,, ¼ ,,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पशु-पक्षी और माँस

नाम	मूल्य
दाशमंदी भेड़ प्रति भेड़	६½ रुपया
अफगानी भेड़	
,, पहली श्रेणी ,,	२ ,,
,, दूसरी श्रेणी ,,	१½ ,,
,, तीसरी श्रेणी ,,	१¼ ,,
कश्मीरी भेड़ ,,	१½ ,,
हिन्दुस्तानी भेड़ ,,	१½ ,,

नाम	मूल्य
बरबरी बकरा	
,, पहली श्रेणी प्रति बकरा	१ रुपया
,, दूसरी ,, ,,	¾ ,,
भेड़ का गोश्त प्रतिमन	६५ दाम
बकरे का ,, ,,	५४ ,,
काज एक नग	२० ,,
बतख ,, ,,	१ ,,
तुगदरी,, ,,	२० ,,
कुलंग ,, ,,	२० ,,

नाम	मूल्य
चर्ज एक नग	१८ दाम
दुर्राज ,,	३ ,,
कब्ग (चकोर) ,,	२० ,,
बूदना ,,	१ ,,
लवा ,,	१ ,,
करवानक ,,	२० ,,
फाख्ता ,,	४ ,,

घी, चीनी आदि

घी	प्रतिमन	१०५ दाम
तेल	,,	८० ,,
दूध	,,	२५ ,,

दही	प्रतिमन	१८ दाम
मिस्री	प्रति सेर	६ ,,
सफेद कंद	,,	५½ ,,

सफेद शक्कर	प्रतिमन	१२८ दाम
लाल शक्कर	,,	५६ ,,

मसाले

केसर	प्रति सेर	४०० दाम
लौंग	,,	६० ,,
इलायची	,,	५२ ,,
गोल मिर्च	,,	१७ ,,
मिर्चा	,,	१६ ,,

सोंठ	प्रति सेर	४ दाम
अदरक	,,	२½ ,,
जीरा	,,	२ ,,
अजवाइन	,,	२ ,,
हल्दी	,,	१० ,,

धनियाँ	प्रति सेर	३ दाम
सियाहदाना (कलौंजी)	,,	१½ ,,
हींग	,,	२ ,,
सौंफ	,,	१ ,,
दारचीनी	,,	४० ,,
नमक	प्रतिमन	१६ ,,

खटाइयाँ और अचार आदि

खट्टा नीबू	प्रति सेर	६ दाम
नीबू का रस	,,	५ ,,
अगूर का सिरका	,,	५ ,,
शक्कर का सिरका	,,	१ ,,
अश्तरगार का अचार	,,	८ ,,
आमका अचार तेलमें	,,	२ ,,
आम सिरका में	,,	२ ,,
नीबू तेल व सिरका में	,,	२ ,,
नीबू नमक के पानी में	,,	१½ ,,
नीबू नीबू के रस में	,,	३ ,,

अदरक का अचार प्रतिसेर		२½ दाम
अदर शाख	,,	२½ ,,
शलजम सिरके में	,,	१ ,,
गाजर का अचार	,,	½ ,,
बाँस का अचार	,,	४ ,,
सेव	,, ,,	८ ,,
बिही	,, ,,	६ ,,
लहसुन	,, ,,	१ ,,
प्याज	,, ,,	½ ,,
बादिन्जान	,, ,,	१ ,,
किशमिश और मुनक्का	,, ,,	८ ,,

कचनार का अचार प्रतिसेर		२ दाम
शफतालू	,, ,,	१ ,,
सहजन	,, ,,	१ ,,
करील के फूल	,, ,,	½ ,,
करील के फलों	,, ,,	½ ,,
सूरन	,, ,,	१ ,,
सरसों	,, ,,	¼ ,,
मुरई	,, ,,	½ ,,
ककड़ी	,, ,,	½ ,,
खीरा	,, ,,	½ ,,
कचालू (बंडे)	,, ,,	½ ,,
मूली	,, ,,	½ ,,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन २८

मेवाखाना (फलागार)

सम्राट् फलों को ईश्वर की बड़ी देन समझते हैं और उनपर बहुत ध्यान देते हैं। इस कारण ईरान और तूरान के चतुर कारीगर यहाँ आकर बस गए हैं और फलों की खेती-बारी में बहुत उन्नति हुई, खरबूजे और अंगूर बहुत अधिक तथा अच्छे पैदा होने लगे। इसी तरह तरबूज, शफतालू (आड़ू), बादाम, पिस्ता और अनार आदि पैदा होने लगे। जिस समय से काबुल, कंदहार, और कश्मीर साम्राज्य में सम्मिलित हो गए तब से बोझ के बोझ मेवे आने लगे। साल भर मेवा फरोशों के घर भरे रहते हैं और बाजार में ढेर के ढेर (मेवे) दिखाई पड़ते हैं। इलाही महीने फरवरदीन[1] में हिन्दुस्तान में खरबूजे की फसल का आरम्भ होता है और उर्दी बिहिश्त[2] में बहुत अधिक होते हैं। वे मीठे, कोमल, भुरभुरे, और सुगंधित होते हैं विशेषकर नाशपाती, बाबाशेखी, आलीशेरी, अल्चा, बर्गे नै, दूदे चिराग इत्यादि। उनकी फसल दो महीने और चलती है। शहरयूर[3] के प्रारम्भ में वे कश्मीर से आते हैं। इनकी फसल नहीं खतम होने पाती कि काबुली खरबूजे का आना प्रारम्भ हो जाता है। आजर[4] के महीने में वे बदख्शाँ से कारवानों द्वारा आते हैं और दे[5] महिने तक सिलसिला नहीं टूटता जिस ऋतु में यह फल जाबुलिस्तान में मिलता है उसी समय पंजाब में भी अच्छे खरबूजे मिलते हैं। भक्कर और उसके इर्द गिर्द चिल्ले के जाड़ों के सिवाय अन्य ऋतुओं में खरबूजा खूब पैदा होता है। खुरदाद[6] से अमुरदाद[7] तक तरह तरह के अंगूर आनन्द देते हैं। शहरयूर[8] में कश्मीरी अंगूर दिखाई पड़ता है और बाजार भर जाता है। कश्मीर में अंगूर १ दाम का ८ सेर मिलता है और प्रतिमन दो रुपए किराया होता है। कश्मीरी लोग इसको मखरूती (गाजर की शकल वाली) टोकरियों में अपनी पीठ पर लादकर चलते हैं जो बहुत सुन्दर मालूम होता है। मेहर[9] से उर्दीबिहिश्त तक काबुल से अंगूर आते हैं और कीलास, जिसको बादशाह शाहालू के नाम से पुकारते हैं, और अनार बेदाना, सेब, नाशपाती, बिही, अमरूद, शफतालू, जर्द आलू, खूबानी, गिर्दालू और आलूचा आदि अधिकता से आते हैं। बहुत से फल हिन्दुस्तान में भी पैदा होते हैं। समरकन्द से भी खरबूजा, नाशपाती और सेब लाते हैं।

जब कभी बादशाह शराब पीते हैं या अफीम या कोकनार (जिसको बादशाह 'सबरस' कहते हैं) की इच्छा करते हैं तो मेवेवाले सेवक उनको खवांचों में भर कर उनके सामने लाते हैं। बादशाह थोड़ा सा खाते हैं और अधिकांश भाग बाँट देते हैं। सेवक हर एक फल पर निशान लगा देते हैं और उससे उसकी उत्तमता और निकृष्टता पहचान जाते हैं। प्रथम श्रेणी के खरबूजे पर सिर की ओर से एक रेखा खींच कर उसको दो भागों में बाँट देते हैं। इस प्रकार अन्य खरबूजों पर उनकी श्रेणियों के अनुसार एक एक रेखा बढ़ाते जाते हैं।

इस विभाग में मनसबदार, अहदी और अन्य सैनिक सेवा में नियुक्त हैं। प्यादों का मासिक वेतन १४० दाम से १०० दाम तक है।

विभिन्न मेवों के नाम, मौसम, स्वाद, और मूल्य का विवरण तालिका में लिखा जाता है और अपने समय की जानकारी कराई जाती है।

---

[1] फरवरी-मार्च। [2] मार्च-अप्रैल। [3] अगस्त (ब्ला०); अगस्त-सितम्बर (फि०)। [4] नवम्बर-दिसम्बर। [5] दिसम्बर-जनवरी। [6] मई-जून। [7] जुलाई-अगस्त। [8] अगस्त-सितम्बर। [9] सितम्बर-अक्टूबर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूरान आदि देश के फल

नाम	मूल्य
अरहंग का खरबूजा	
प्रथमश्रेणी	२½ रुपया
द्वितीय और	
तृतीय श्रेणी	१ रु० से २½ रु०
कावुली प्रथम श्रेणी	१ रु०से १½ रु०
” द्वितीय ”	¾ रु० से १ रु०
” तृतीय ”	½ रु० से ¾ रु०
समरकन्दी सेव ७ से १५ तक	१ रु०
बिही १० से ३० तक	१रु०
अमरूद १० से १०० तक	१ रु०
अनार प्रतिमन ६½ रु० से १५ रु०	
कावुली और फिरंजी सेव	
५ से १० तक	१ रु०

नाम	मूल्य
कश्मीर अंगूर प्रति मन	१०८ दाम
छोहारा प्रति सेर	१० ”
किशमिश ”	९ ”
बड़े किशमिश ”	९ ”
आलूबुखारा ”	८ ”
खूबानी ”	८ ”
कन्दहारी मुनक्का ”	७ ”
अंजीर ”	७ ”
मुनक्का ”	६¾ ”
उन्नाब ”	३½ ”

नाम	मूल्य
बादाम की गरी प्रतिसेर	२८ दाम
बादाम ”	११ ”
पिस्ता ”	९ ”
चिलगोजा ”	८ ”
सिंजिद ”	६½ ”
पिस्ता की गरी ”	६ ”
अखरोट गरी ”	४½ ”
फुन्दुक ”	३ ”
अखरोट ”	२½ ”

हिन्दुस्तान के मीठे फल

नाम	मौसम	मूल्य
आम	वर्षा	१०० का ४० दाम
अनन्नास	जाड़ा	१ का ४ ”
कमला	”	२ का १ ”
ऊख	”	२ का १ ”
कटहल	गर्मी	२ का १ ”
केला	वर्षा	२ का १ ”
बेर	जाड़ा	प्रतिसेर २ ”
अनार	वर्षा	प्रतिमन ८० से १००”
तरकुल	गर्मी	२ का १ दाम
पनियाला	वर्षा	प्रतिसेर २ ”
लहसोड़ा	गर्मी	” १ ”
गुम्भी	जाड़ा	” ४ ”

नाम	मौसम	मूल्य
अमरूद	वर्षा	२ का १ दाम
अंजीर	गर्मी	प्रतिसेर १ ”
तूत	बसन्त	” २ ”
सदाफल	सदैव	१ का १ ”
खरबूजा	गर्मी	प्रतिमन ४० ”
तरबूज	वर्षा	का अन्न १ का २ दाम से १० दाम
खिरनी	वर्षा	प्रतिसेर ४ ”
महुआ	गर्मी	” १ ”
करहरी	गर्मी	प्रतिसेर ४ दाम
तरी	×	+
बंगा	वर्षा	२ का १ ”
गूलर	बसन्त	प्रतिसेर २ ”

नाम	मौसम	मूल्य
डीफल	जाड़ा	प्रतिसेर ४ दाम
तेंदू	गर्मी	२ ”
उसीरा	जाड़ा	×
खजूर	वर्षा	प्रतिसेर ४ ”
अंगूहल		×
डेला	वर्षा	प्रतिसेर १ ”
गूला	वर्षा	×
भोलसरी	जाड़ा	प्रतिसेर ४ ”
पीलू	गर्मी	प्रतिसेर २ दाम
बरौता	गर्मी	×
पियार	वर्षा	प्रतिसेर ४ ”

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सूखे फल

नाम	मौसम	मूल्य
नारियल जाड़ा		१ का ४ दाम
पिंड खजूर गर्मी		प्रतिसेर ६ दाम
अखरोट गर्मी		प्रतिसेर ८ दाम
चिरौंजी गर्मी		” ४ ”
मखाना जाड़ा		प्रतिसेर ४ दाम
सुप्यारी जाड़ा		” ८ ”
कौलगटा गर्मी		” २ ”

फल जो पका कर खाते हैं

नाम	मौसम	मूल्य
परवल	वर्षा	प्रतिसेर २ दाम
कद्दू	वर्षा	” २ ”
बैगन	सदैव	” १½ ”
तुरई	वर्षा	” १½ ”
कन्दूरी	वर्षा	” १½ ”
सेंब (सेम)	वर्षा	” १½ ”
पेठा	वर्षा	१ का ८ दाम
करैला	”	प्रतिसेर १½ ”
ककूरा	”	” १⅓ ”
कचालू (बंडा)	”	” २ ”
चचिन्डा	”	” २ ”
सूरन	गर्मी	” १ ”
गाजर	जाड़ा	प्रतिसेर १ दाम
सिंघाड़ा	वर्षा	” ३ ”
सालक	जाड़ा	” २ ”
पिन्डालू	”	” २ ”
सियाली	गर्मी	×
कसेरू	जाड़ा	” ३ ”

हिन्दुस्तान के खट्टे फल

नाम	मौसम	मूल्य
नींबू	गर्मी	४ तक १ दाम
अमलबेत	वर्षा	४ तक १ दाम
गलगल	वर्षा	२ तक १ दाम
घेप	वर्षा	×
बिजौरा	वर्षा	१ का ८ दाम
आँवला	गर्मी	प्रतिसेर २ दाम

खटमिट्ठे फल

नाम	मौसम	मूल्य
इमली	गर्मी	प्रतिसेर २ दाम
बड़हल	”	१ का १ ”
कमरक	जाड़ा	४ तक १ ”
नारंगी	”	२ तक १ ”
पहाड़ी अंगूर	गर्मी	×
जामुन	वर्षा	प्रतिसेर १ दाम
फालसा	गर्मी	” १⅓ ”
करौंदा	वर्षा	” १ ”
कैस	”	४ तक १ ”
काकू	×	×
पाकड़	वर्षा	२ सेर का १ दाम
कनी	”	१ का १ ”
लभीरा	गर्मी	×
जम्भीरी	वर्षा	पाँच तक १ ”
गर्ना	×	×

हिन्दुस्तान के मेवे मीठे खटमिट्ठे और खट्टे होते हैं और प्रत्येक अनेक-प्रकार का होता है। उनमें से कुछ सूखे स्वादिष्ठ होते हैं और कुछ आग पर पकाकर खाए जाते हैं। परन्तु उनमें से कुछ के विवरण दिए जाते हैं।

आम—इस को फारसी में नग़जक कहते हैं जैसा कि मीर खुसरो अपने एक पद्य में कहता है—'नग़ज़ खुश नग़ज कुने बोस्तां। नगतरीं नियामते हिन्दोस्तां॥' (केरानुस्सादैन)। यह फल रङ्ग, सुगंध, और स्वाद में अनुपम होता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है। कुछ तूरानी और ईरानी बुद्धिमान इसको खरबूजा और अंगूर से अच्छा समझते हैं। आकार में यह जर्दालू, बिही, नाशपाती और खरबूजे जैसा होता है और वजन में कभी १ सेर या इससे भी ज्यादा होता है। यह फल हरा, पीला, लाल विभिन्न रङ्गों का तथा स्वाद में मीठा और खटमिट्ठा होता है। इसका पेड़ सुन्दर होता है विशेष कर जवान पौधा। यह अखरोट से बड़ा होता है और उसके पत्ते बेद के पत्तों की तरह परन्तु उनसे चौड़े होते हैं। पतझड़ में गिर जाने के बाद हरे, पीले, नारंगी, शफतालू और आग के रङ्ग के नए नए पत्ते निकल आते हैं। इसमें बसन्त के आरम्भ में बौर लगता है जो अंगूर के फूल की तरह होता है। यह अच्छी सुगन्ध देता है और देखने में बहुत सुन्दर मालूम होता है। जब फल आ जाता है तो उसमें एक महीने बाद खट्टापन पैदा हो जाता है। तब उससे मुरब्बे और अचार बनाते हैं। जब तक उसकी गुठली में कड़ाई नहीं आती तब तक वह कलिया में स्वाद बढ़ाता है। यदि पेड़ पर लगा हुआ फल घायल हो जाता है तो उसकी सुगन्ध बढ़ जाती है। ऐसे आमों को **कोयलास** कहते हैं। अधिकतर इस फल को कच्चा ही तोड़ लेते हैं और विशेष ढङ्ग से उसकी रक्षा करते हैं। इस प्रकार पकाए हुए आम बहुत मीठे होते हैं। अधिकतर आम गर्मी में पकने लगते हैं और वर्षा काल में खाने के योग्य हो जाते हैं। कुछ वर्षा काल के प्रारम्भ में पकने लगते हैं और जाड़े के आरम्भ तक परिपक्व हो जाते हैं। इनको भदैया[1] कहते हैं। बहुत कम पेड़ साल भर फूलते-फलते हैं। कुछ आम कच्चेपन में ही पक्के का काम करते हैं। इनको जल्द तोड़ लेते हैं अन्यथा देर हो जाने पर मिठास की अधिकता के कारण उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। आम हिन्दुस्तान में हर जगह होता है। विशेषकर बङ्गाल गुजरात, मालवा, खानदेश और दक्षिण में बहुत होता है। पंजाब में कम होता है। जबसे बादशाह ने लाहौर को अपनी, राजधानी बनाया है तबसे वहाँ भी इसकी अधिकता होने लगी है। आम का पौधा चार वर्ष में फल देता है। कुछ लोग इस पौधे को दूध और शीरे से भी सींचते हैं। इससे मिठास बढ़ जाती है। कुछ पेड़ एक वर्ष अधिक फलते हैं और दूसरे वर्ष कम और कुछ पेड़ एक वर्ष बिल्कुल नहीं फलते। जब आम अधिक खाते है तो दूध में आम की गुठली का गूदा मिला कर पीते हैं जिससे वह जल्द हजम हो जाता है। आम की पुरानी गुठली का खस्ता गूदा स्वादिष्ठ और खटमिट्ठा होता है दो या तीन साल पुरानी हो जाने पर गुठली जहरमोहरे का काम देती है। यदि अधपके आम को उसकी दो अंगुल डाली के साथ तोड़ लिया जाय और डाल के सिरे पर गर्म मोम लगाकर गाय के घी या शहद में डाल दें तो आम के स्वाद में दो तीन महीने और उसके रंग में एक साल तक कोई परिवर्तन नहीं होता।

अनन्नास[2]—इसको **सफ़री कटहल** भी कहते हैं। आश्चर्य यह है कि कुछ लोग उसके पेड़ को गमलों में लगाकर यात्रा में अपने साथ रखते हैं और उनमें फल लगते हैं। रंग और आकार में वह नीबू की तरह और स्वाद तथा सुगंध में आम की तरह होता है। उसका पौधा एक गज लम्बा होता है और उसके पत्ते हाथ के आकार के आरेदार होते हैं। फल पौधे के ऊपर लगता है और उस पर कुछ पत्तियाँ आती हैं। जब फल तोड़ते हैं तब उस पत्तों को काट कर अलग कर देते हैं और एक-एक पत्तों को जमीन में बो देते हैं। वे बढ़कर फूलने फलने लगते हैं। यह पौधा केवल एक बार और एक ही फल देता है।

कमला—इसका रग केसरिया और आकार बिही की तरह होता है। यह हिन्दुस्तान के श्रेष्ठ फलों में से है। इसका पेड़ नींबू के पेड़ की तरह होता है और इसके फूल हल्की सुगंध देते हैं।

ऊख—इसको फारसी में नैशकर कहते हैं। इसके बहुत प्रकार होते हैं। इसकी एक किस्म इतनी रसीली और कोमल होती है कि गवरैया के चोंच मारने से इसमें से रस टपकने लगता है। यदि यह हाथ से छूट कर जमीन पर गिर पड़ती है तो अपने आप टूट जाती है। ऊख नर्म और कड़ी दो प्रकार की होती है। बादवाली से गुड़, शकर,

---

[1] भादों में पकने वाले। [2] जहाँगीर तुज़ुके जहाँगीरी में कहता है कि उसके समय में अनन्नास उन बन्दरगाहों के नगरों से आते थे जो पुर्तगालियों के अधिकार में थे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कन्द सफेद और मिश्री बनाते हैं और इनसे तरह तरह की मिठाईयाँ बनाते हैं। इसकी खेती का ढंग यह है कि अच्छी ऊखों को किसी ठंढी जगह रखते हैं और उन पर प्रति दिन पानी छिड़कते हैं। जब सूर्य कुम्भ राशि में होता है तो उनके एक-एक बीता या उससे कुछ बड़े टुकड़े काटकर नर्म भूमि में बोते हैं और मिट्टी से ढाँक देते हैं और जो ऊख जितनी कड़ी होती है उसको उतनी ही अधिक जमीन में गाड़ते हैं और लगातार सींचते रहते हैं। सात आठ महीने के बाद वह तैयार हो जाती है। यद्यपि लोग ऊख के शीरे से भी शराब तैयार करते हैं तथापि स्याहकंद से उम्दा किस्म की शराब बनती है।

इसके बनाने के कई तरीके हैं। उनमें से एक यह है कि १ मन रस में १० सेर बबूल की छाल कूट कर डालते हैं और उसका तीन गुना पानी डालते हैं। इस मिश्रण को मटकों में भरकर जमीन में गाड़ देते हैं। और उनके चारों तरफ घोड़े की सूखी लीद छोड़ देते हैं। सात दिन से दस दिन तक इसमें जोश आता है। इसके पक जाने का चिह्न यह है कि मिठास में कसैलापन पैदा हो जाता हैं। यदि इसको और अधिक तेज करना चाहते हैं तो इसमें थोड़ा सा गुड़ और डालते हैं और कुछ दवायें और अम्बर और कपूर जैसे सुगन्धित पदार्थ भी मिलाते हैं। इसमें गोश्त भी डालते हैं। कुछ मिश्रण से मैल छान कर पीते हैं। और अधिकतर लोग अर्क खींचते हैं और उसके अनेक ढंग हैं।

पहला—वे मिश्रित को ताँबे की देग में डालते हैं और उसके बीच में एक प्याला इस तरह रखते हैं कि वह न हिले और न मिश्रण उसमें आसके। इसके बाद देग को औंधे ढक्कन से ढँक देते हैं और आटा सानकर उसको मजबूत कर देते हैं। ठंढा पानी ढक्कन पर उडेलते है और आग जलाते हैं। जब पानी गर्म हो जाता है तो उसके स्थान पर दूसरा ठंढा पानी डालते हैं। जब अन्दर की भाप ठंढे ढक्कन तक पहुँचती है तो सर्दी से अर्क बन जाती है और प्याले में गिरती जाती है।

दूसरा—वे देग को मिट्टी के प्याले से ढक देते हैं और उसी तरीके से मजबूत करते हैं और उसमें दो नलियाँ लगा देते हैं। इन नलियों के दूसरे सिरों को एक एक घड़े में लटका देते हैं। यह घड़े ठंढे पानी पर रहते हैं। भाप दोनों नलियों के द्वारा वहां पहुँचती है और सर्दी से अर्क बन जाती है।

तीसरा—मिश्रित को मिट्टी के बर्तन में भर देते हैं और उसमें बड़ा चम्मच लगा देते हैं जिसके दस्ते के सिरे को एक नली से सम्बद्ध कर देते हैं और उसको एक घड़े में लगा देते हैं और ढक्कन में ताजा पानी भरते रहते हैं अर्क पनालेदार चम्मच से घड़े में आता है। कुछ लोग अर्क फिर से खींचते हैं और उसको दोआतशा कहते हैं। यह बहुत तेज होता है। यदि उससे भीगे हुए हाथ को आग के पास रखें तो आग उसको पकड़ लेगी और रंग रंग की लपटें उससे निकलेंगी परन्तु हानि न पहुँचेगी। आश्चर्य यह है कि जब अर्क के बर्तन के अन्दर आग लग जाती है तो वह किसी चीज से नहीं बुझती परन्तु यदि उसका मुँह ढँक देते हैं तो आग बुझ जाती है।

कटहल—यह फल कीपा† की शकल का होता है, कुछ हरा दिखाई पड़ता है। एक गज लम्बा और आधा गज चौड़ा होता है। छोटा कटहल तरबूज की तरह होता है। उसका छिल्का काँटेदार होता है। वह डाल, तना और जड़ से पैदा होता है। जो जमीन के नीचे पैदा होते हैं वे सबसे मीठे होते हैं। फल के दो टुकड़े करने पर उसमें कोयों का समूह दिखाई पड़ता है। उनमें एक प्रकार की लसी होती है। उनको खाते समय उँगलियाँ चिपक जाती हैं। पेड़ अखरोट के पेड़ की तरह किन्तु उससे अधिक ऊँचा और पत्तियाँ उससे बड़ी होती हैं। फल की तरह उसके फूल सुगन्धित होते हैं। फल को कच्चा भी तोड़ते हैं। और उसमें चूना लगा देते हैं जिससे वह पक जाता है।

केला—इसका पेड़ बर्छे की तरह होता है। पत्तियाँ मोटे और नर्म तने से निकलती हैं और बिना सिली हुई

---

† यह एक प्रकार का खाना है जो भेड़ की आँतों को साफ करके और पचौनी में मसाला, चने की दाल और मांस आदि भर कर पकाया जाता है।—रामलाल पांडेय, टिप्पणी पृ० १४८।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

परन्तु उत्तू* की हुई आस्तीन की तरह होती हैं परन्तु उससे लम्बी और चौड़ी होती हैं। पत्तियों के बीच सनोबरी शकल और सौसनी रंग की कली निकलती है। हर गुच्छे में सत्तर अस्सी केले होते हैं। आकार में वे छोटे खीरे के समान होते हैं और उनका छिल्का सरलता से उतर जाता है। गरिष्ठ होने के कारण इसको अधिक नहीं खा सकते। यह कई प्रकार का होता है। हर साल ठठ छोड़ कर तना काट दिया जाता है। यदि ऐसा न किया जाय तो वह फल न दे। साधारण लोगों का विश्वास है कि इससे कपूर पैदा होता है। लेकिन ठीक यह है कि वह इसी नाम का दूसरा पेड़ है जिसका हाल आगे वर्णन किया जायगा। लोग यह भी कहते हैं कि केला से मोती पैदा होता है परन्तु इसमें सत्य बिल्कुल नहीं है।

महुआ—इसका पेड़ आम के पेड़ की तरह होता है। इसकी लकड़ी इमारतों में काम आती है। उसके फूल से शराब खींचते हैं। फूल को गिलौंदा भी कहते हैं।

भोलसिरी (मोलश्री)—इसका पेड़ बड़ा और सुन्दर† होता है और फल नारंगी रंग का होता है और उन्नाब से मिलता जुलता है।

तरकुल (ताड़)—इसका पेड़ और फल नारियल के पेड़ और फल से मिलता है। जब इसका डंठल डाल से बिना पत्ती के निकलता है तब उसका सिरा काटकर एक बर्तन बाँध देते हैं उसमें रस टपकता है और वह दिन में दो-तीन बार रस से भर जाता हैं। इस रस को ताड़ी कहते हैं। जब वह ताजी होती है तो मीठी होती है। यदि थोड़ी देर रहने देते हैं तो खटमिट्ठी होकर नशा पैदा करती है।

पनियाला—यह फल जर्दालू की तरह होता है और इसका पेड़ नीबू के पेड़ की तरह और पत्तियाँ बेद की तरह होती हैं। कच्चा फल हरा होता है और पकने पर लाल।

गुम्भी—इसका पौधा बेलदार‡ होता है। उसके पत्ते और फल कुनार की तरह वृक्ष की जड़ के नीचे से निकलते है।

तर्री—यह जड़ में लगती है और अधिकतर पहाड़ों में होती है। एक वर्ष में यह कम या अधिक एक मन हो जाती है। यह चक्की की तरह बढ़ती है और दो साल में दो मन हो जाती है और इसी ढंग से बढ़ती जाती है। इसकी पत्ती तरबूजे की पत्ती से मिलती जुलती है।

पियार—छोटे अंगूर की तरह होता है। जिगरी रंग का अर्थात् खाने में मीठा होता है इसका गूदा खस्ता और चिकना होता है और खाया जाता है। इसको चिरौंजी कहते हैं उसका पेड़ एक गज ऊँचा होता है।

नारियल—इसको फारसी में जौजे हिन्दी कहते हैं। इसका पेड़ खजूर की तरह परन्तु उससे ऊँचा होता है। इसकी लकड़ी अधिक सुन्दर और पत्तियाँ अधिक बड़ी होती हैं। यह साल भर फलता है। इसका फल तीन महीने में पकता है। कच्चे फल को जो हरा होता है तोड़ लेते हैं और कुछ समय तक उसको सुरक्षित रखते हैं। उससे एक प्याला रस निकालते हैं जो दूध की तरह सफेद होता है। यह बहुत स्वादिष्ठ होता है और गर्मियों में शक्कर मिलाकर पीते हैं। जब फल पक जाता है तब चने के रंग का हो जाता है और उसमें दूध जम जाता है। जब उस पर तेज़ लगाते हैं तो काला हो जाता है। यह मीठा और चिकना होता है। इसको पान के साथ खाते हैं। जबान मुलायम और ताजा हो जाती है। उसके छिल्के से चमचे, प्याले और सितार की तूनियाऽ बनाते हैं। यह फल चार आँखों का, तीन आँखों का,

---

* कशीदा काढ़ी हुई। † फारसी में इस स्थल कुछ शब्द हैं जिनका अर्थ समझ में नहीं आता। ‡ मूल ग्रन्थ में 'बेआजादार' आया है और फुटनोट में उसका शुद्ध रूप 'प्याजादार' तथा 'प्याजवार' दिया है। मो० मुहम्मद फिदाअली ने इसका अर्थ 'प्याज का सा' लिखा है। दे० पृ० १३५ पंक्ति अन्तिम। ऽ मूल ग्रन्थ में 'कासये ग़िचक' आया है। रामलाल पांडेय ने इसका अर्थ 'चिकारों के तूँबे' लिखा है। दे० पृ० १५१। जामे उल्लुगात उर्दू में 'ग़िचक' का अर्थ 'सारङ्गी' लिखा है, ब्लाकमैन ने ka ind of violin लिखा है। दे० पृ० ७६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो आँखों का, और एक आँख का होता है। हर एक किस्म की विशेषतायें भिन्न भिन्न होती हैं। अन्तिम प्रकार सर्वोत्तम समझा जाता है। एक प्रकार का नारियल विषनाशक औषधि होता है। इसका फल तौल में १२ सेर या उससे अधिक होता है। पेड़ की छाल से रस्सियाँ बटते हैं और बड़े जहाजों के लिए रस्से भी बनाते हैं।

पिण्ड खजूर—छोहारा को कहते हैं। इसका पेड़ छोटा और जमीन से लगा हुआ होता है और इसमें चार-पाँच सौ फल लगते हैं।

सुप्यारी (सुपारी)—इसको फारसी में **फ़ूफ़ल** कहते हैं। इसका पेड़ सुन्दर और सरों की तरह ऊँचा होता है तेज हवा से उसकी चोटी जमीन पर आ जाती हैं परन्तु फिर उठ जाती है। यह कई प्रकार की होती है। उसके कच्चे फल का स्वाद बादाम की तरह होता है। पकने पर वह कड़ी हो जाती है। इसको पान के साथ खाते हैं।

सिंघाड़ा—यह तिकोना होता है। इसकी बेल तालाबों में होती है और फल पानी के ऊपर होता है। यह कच्चा और भूनकर दोनों तरह खाया जाता है।

सालक—तालाबों में जमीन के नीचे पैदा होता है और पानी की तह से बाहर निकाला जाता है।

पिण्डालू—इसकी बेल को लकड़ी पर चढ़ाते हैं और यह दो गज तक लम्बी होती है। इसकी पत्तियाँ पान से मिलती हैं। इसको जड़ से खोदकर निकाल लेते हैं।

कसेरू—तालाबों में पैदा होता है। जब पानी कम हो जाता है तो इसको खोदकर निकालते हैं और कच्चा या उबाल कर खाते हैं।

सियाली—यह लम्बा और गाजर की शकल का होता है। इसका पेड़ एक तरह की बेल है और फल बेल की जड़ में पैदा होता है।

नीबू—यह अंडाकार होता है। इसका एक प्रकार कागजी कहलाता है। उसके छिलके और गूदे के बीच एक पतला सफेद पर्दा होता है। फल रसीला और स्वादिष्ठ होता है। इसकी एक किस्म साल भर फल देती है।

अमलबेत—नीबू की तरह और बहुत खट्टी होती है। यदि लोहे की सुई इसमें चुभो दी जाय तो वह थोड़ी देर में गल जाती है। शंख उसके रस में गल जाते हैं।

कर्ना—सेब की तरह होता है। तीन साल में उसके गुच्छे निकल आते हैं। आरम्भ में फल हरा, खट्टा और कुछ कड़ुआ होता है और इसके बाद पीला और कड़ुआ हो जाता है और पकने पर लाल और मीठा होता है। देर तक रखने से फिर हरा हो जाता है। इसका पेड़ नीबू के पेड़ की तरह होता है परन्तु इसकी पत्तियाँ थोड़ी अधिक चौड़ी होती हैं और इसकी कली पैकाने खाकी* की तरह नोकीली होती हैं। इसके फूल सफेद होते हैं। और उनमें चार पंखड़ियाँ होती हैं। इसका पीला पुष्प केसर बहुत सुगन्ध पूर्ण होता है और इससे 'अबीर माया'† बनाते हैं परन्तु इसकी कहानी का वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है। इसी कारण इसका वर्णन संक्षेप में दिया जाता है।

पान का पत्ता—यह एक प्रकार की सब्जी है परन्तु विशेषज्ञ इसको एक उत्तम फल कहते हैं। मीर खुसरो अपने एक पद्य में कहते हैं: नाजिरा बर्गे चू गुले बोस्ताँ, खूब तरीन मेवये हिन्दुस्ताँ [बाग के फूल की तरह यह अनोखा पत्ता है और हिन्दुस्तान का बहुत अच्छा मेवा है]। इसके खाने से मुँह सुगंधित हो जाता है और सभा सुरभित हो जाती है। इससे दाँत की जड़ें मजबूत हो जाती हैं। इसके खाने से भूखे सन्तुष्ट, और सन्तुष्ट भूखे हो जाते हैं। यह कई प्रकार का होता है जिनमें से कुछ का बयान किया जाता है। १. **बिलहरी**—सफेद और चमकदार होता है।

---

* पतले तीर या बाण या शायद और कुछ; अर्थ स्पष्ट नहीं है। † मूलग्रन्थ में 'अबीरमाया' आया है। इसका अर्थ ब्लाकमैन ने ambergris, मुहम्मद फिदा अली ने 'अबीर' और रामलाल पांडेय ने 'सुगन्धियाँ' लिखा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जीभ को कड़ी और खुरखुरी नहीं करता। स्वाद में सबसे अच्छा होता है। इसको बेल से तोड़कर एक महीने में सफेद कर लेते हैं और यदि प्रयत्न किया जाय तो बीस दिन में। २. **काकेट**—सफेद चित्तीदार और भरा होता है। उसकी नसें कड़ी होती हैं। अधिक खाने से जीभ कड़ी हो जाती है। ३. **जैसवार**—सफेद नहीं होता और लाभ के लिए इसको दूसरे पानों में मिलाकर बेचते हैं। ४. **कपूरी**—पीला रंग, कड़ा और नसदार होता है लेकिन स्वादिष्ठ और सुगंधपूर्ण ५. **कपूरकान्त**—हरे रंग का पीलापन लिए होता है। काली मिर्च की तरह कड़ुआ और कपूर की तरह सुगंधित होता है। दस पत्ते से अधिक नहीं खा सकते। बनारस के अतिरिक्त कम पैदा होता है। वहाँ की भी हर जमीन में नहीं पैदा होता। ६. **बंगला**—चौड़ा, भरा हुआ, कड़ा, रेशेदार, गर्म और तेज होता है।

उसकी खेती करने की विधि यह है। चैत के महीने में नववर्ष के दिन करहंज के पत्ते को चार-पाँच अंगुल बेल के साथ अलग करते हैं और तैयार की हुई जमीन में इस तरह लगा देते हैं कि पत्ता और सिरे की गाँठ ऊपर दिखाई पड़े। पन्द्रह से बीस दिन बाद उस गाँठ के सिरे से दूसरी बेल उगना शुरू हो जाती है। जब दूसरी गाँठ निकल आती है तब उसमें पत्तियाँ निकलती हैं। सात महीने तक बेल और पत्तियाँ उगती रहती हैं। इसके बाद पौधे का बढ़ना बन्द हो जाता है। किसी बेल में तीस से अधिक पत्ते नहीं होते। ज्यों ज्यों बेल बढ़ती है उसको नरकुलों पर चढ़ाते जाते हैं और उसके चारों तरफ और ऊपरी भाग को लकड़ी और घास फूस से छा देते हैं और पत्ते को छाया में पालते हैं। वर्षा को छोड़ कर, सदा सिंचाई करते रहते हैं। कभी कभी उसमें दूध, तिल्ली का तेल और उसकी खली डालते हैं। पत्ते सात तरह के होते हैं और उनके नौ नाम हैं। वे धीरे धीरे पकते हैं और जुदा करके परवरिश करते और काम में लाते हैं। **करहंज**—बीज के लिए जुदा करते हैं और **पेड़ी** कहते हैं। १. नए पत्ते को **गड़ौता** कहते हैं। २. **नौती**। ३. **बहुती**। ४. **छीव**। ५. **अधिनीड़ा**। ६. **अगहनिया** या **लीवार**। ७ **करहंज**। गड़ौता के सिवाय, हर पत्ते को एक महीने के बाद बेल से अलग करके उसकी रक्षा करते हैं। अन्तिम प्रकार के पत्ते को कुछ लोग खाने के लिए जुदा कर लेते हैं। एक समुदाय उसको बेल सहित सुरक्षित रखता है जिससे वह बीज के काम आए। इसको बहुत अच्छा समझते हैं। परन्तु कुछ विशेषज्ञ पेड़ी को उत्तम समझते हैं और उसकी कीमत महँगी रखते हैं। ११००० पत्तों के बण्डल को पहले **लहासा** कहते थे। यह नाम आजकल १४००० पत्तों के गड्डे को दिया जाता है। २०० पानों के बण्डल को **ढोली** कहते हैं। ढोलियों से लहासा तैयार करते हैं। जाड़े में हर चार-पाँच दिन के बाद पत्तों को ऊपर नीचे करते हैं और हाथ से गर्द साफ करते हैं और गर्मी में प्रति दिन यह काम किया जाता है। ५ से लेकर २५ या उससे भी ज्यादा पानों को एक दूसरे के ऊपर रखते हैं और तरह तरह से सजाते हैं। कुछ लोग एक पत्ते पर सुपारी और कत्था रखते हैं और दूसरे पर चूना रख कर लपेट देते हैं। कुछ लोग उसमें कपूर और कस्तूरी भी डालते हैं और दोनों पत्तों को रेशम आदि के डोरे से बाँध देते हैं; इसको बीड़ा कहते हैं। कभी कभी खुले पत्तों को तश्तरियों में फैला कर चुनते हैं और काम में लाते हैं। और उसे पका कर भी खाते हैं।

आईन २९

स्वाद

चूँकि भोजन के विभिन्न प्रकारों का वर्णन हो चुका इसलिए स्वादों के विषय में भी कुछ लिखा जाता है। गर्मी से स्वादिष्ठ पदार्थों में तेजी, और स्निग्ध (कसीफ) चीजों में कड़ुआहट पैदा होती है। मध्यवर्ती स्वादवाले पदार्थों को गर्मी खट्टी कर देती है। सर्दी से पहले प्रकार का पदार्थ खट्टा, दूसरे का मुंह जकड़ाऊ (कसैला), और तीसरे का कड़ुवा हो जाता है। कसैलेपन का प्रभाव जब केवल जीभ पर होता है तो उसको अरबी में कब्ज कहते हैं और जब पूरे शरीर पर होता है तब यफूसत कहते हैं। शीतोष्णता (सर्दी और गर्मी के बीच की दशा) से पहले प्रकार के पदार्थ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चिकने, दूसरे प्रकार के मीठे, और अन्तिम प्रकार के स्वादहीन हो जाते हैं। मुख्य स्वाद इनसे अधिक नहीं हैं। कुछ लोग कहते हैं कि स्वाद चार से अधिक नहीं होते—मीठा, कड़ुआ, खट्टा और नमकीन। इनके मिश्रण से असंख्य स्वाद बनते हैं। कुछ के नाम लिखे जाते हैं जैसे कड़ुआहट और कषैलेपन के मिश्रण को बशाअत और नमकीनी और कड़ुआहट के मिश्रण को जउका कहते हैं।

आईन ३०

सुगंधशाला

बादशाह सुगंध को बहुत पसंद करते हैं और उसको ईश्वर की पूजा का एक साधन समझते हैं। अंबर, ऊद, और सुगंधों के पुराने मिश्रणों तथा बादशाह के आविष्कार किए हुए मिश्रणों से उनका दरबार सदैव सुगंधित रहता है। और सोने और चाँदी के भिन्न भिन्न प्रकार के धूपदानों में सुलगाते है। सुगधित फूल ढेर के ढेर लाए जाते हैं। और फूलों से तेल तैयार करते हैं जो शरीर और बालों में लगाते हैं। अगणित चित्ताकर्षक मिश्रण तैयार किए गए हैं जिनमें से कुछ के रंग और सुगंध का वर्णन किया जाता है। **१. सन्तुक**—१½ तोला जवाद*; १ तोला चोआ, २ माशा चमेली का तेल और दो बोतल गुलाब जल काम में लाते है। इससे शरीर को ताजगी मिलती है। **२. अरगजा**—¾ सेर चन्दन, दो तोला इकसीर और मीद, ३ तोला चोआ, एक-एक तोला बनफशा की जड़ और गेहला (एक पौधे का बीज), ½ माशा कपूर, ११ बोतल गुलाब जल काम में लाते हैं। इसको गर्मी में शरीर पर लगाते हैं। **३. गुलकामा**—१ तोला उत्तम अंबर ½ तोला लादन, २ तोला अच्छी कस्तूरी, ४ तोला ऊद, ८ तोला इकसीरे अबीर को पीसकर चीनी की रकाबियों में रखते हैं। एक सेर गुलाब के फूलों का रस निकाल कर इन में मिलाते हैं और धूप में सुखाते हैं। शाम को गुलाब जल और बहार के अर्क से तर करके समाक† पत्थर पर पीसते हैं। जब दस दिन इस तरह से बीत जाते हैं तो नारंगी के फूलों का रस मिला कर सुखाते हैं। बीस दिनों में स्याह रैहाँ का रस—जिसको नाजबूये स्याह‡ भी कहते हैं—मिलाते हैं। इस मिश्रण का कुछ अंश अरगजा में मिलाते हैं। **४. रूह अफ़्ज़ा**—५ सेर ऊद, १¼ सेर चन्दन और इतना ही लादन, साढ़े तीन तीन तोला इकसीर, लुबान, धूप (एक जड़ जो कश्मीर से लाई जाती है), २० तोला बनफशा की जड़, १० तोला उश्ना जिसको हिन्दी में छरीला कहते हैं। इन सब औषधियों को कवाम बनाकर मिलाते हैं। चार बोतल गुलाब जल मिलाते हैं और टिकिया बनाते और धूप दानियों में जलाते हैं। बढ़िया सुगंध फैलती है। **५. उबटन**—इससे हाथ धोते हैं, यह सुगंध को बढ़ाता है। २¾ सेर लादन, १½ सेर ५ दाम ऊद, उतना ही बहारे नारंज, १½ सेर नारंज का छिलका, १ सेर १० दाम चन्दन, १ सेर ५ दाम सुम्बुल्त तीब जिसको हिन्दी में छड़ऽ कहते हैं। उतना ही छरीला, ३८½ तोला कस्तूरी, ½ सेर ४ तोला पाच या माच⊙ की पत्तियाँ। ३६ तोला सेब, ११ तोला सूअद जिसे हिन्दी में मोथा (नागरमोथा) कहते हैं, ५ दाम बनफशा, १ तोला २ माशा धूप, १½ तोला इकंकी (एक प्रकार की घास), इतना ही जुसमबाद जिसे हिन्दी में कचूर कहते हैं। १ तोला २ माशा लोबान, १०६ बोतल

---

* इन सुगन्धों का वर्णन आगे इसी आईन में है। † सब से कड़ा संगमरमर। ‡ श्यामा तुलसी। ऽ बाल छड़। ⊙ श्री रामलाल पांडेय की सम्मति में मूलग्रन्थ में जो 'पाचा' या 'माचा शब्द आया है वह अशुद्ध है। वास्तव में यह शब्द 'पाची' है, जिसे पची, मर्कतपत्री और हरितपत्रिका भी कहते हैं। यह एक लता है जो वैद्यक के अनुसार कटु, तिक्त, कषाय, और उष्ण है तथा वातविकार, चर्म रोग और फोड़े फुन्सियों के लिए उपकारक है—(शब्द सागर) —रामलाल पांडेय, पृ० १६१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गुलाब जल और ५ बोतल अर्क बहार काम में लाते हैं। सबको कूट छान कर गुलाब जल में धीमी आँच पर पकाते हैं। जब तरी कम हो जाती है तो उतार कर सुखा लेते हैं। ६. **अबीर माया**—४ दाम ऊद, २ दाम चन्दन, १ दाम बनफशे की जड़, ३½ दाम बालछड़, ३ दाम दुवालक, ४ तोला खताई मुश्क, २½ दाम लादन, ७½ दाम बहार नारंज। इनको कूट छानकर १० बोतल गुलाबजल में धीमी आँच पर पकाते हैं और छाया में सुखाते हैं। ७. **किश्ता**—२४ तोला ऊद, छः छः तोला* लादन, लोबान और चन्दन, चार चार तोला† इकसीर और धूप, दो दो तोला बनफशा की जड़ और कस्तूरी, १ तोला **छरीला**, ५० तोला मिश्री और २ बोतल गुलाब जल मिलाकर धीमी आँच पर पकाते और टिकिया बनाते हैं। जलाने से सुगंध देता है और चित्त को प्रसन्न करता है। ६. **बुरबूर**—एक एक सेर ऊद और चन्दन, ¼ सेर लादन, २ तोला कस्तूरी, ५ तोला इकसीर, २ सेर मिश्री और १ बोतल गुलाब जल मिलाकर धीमी आंच पर पकाते हैं। ९. **फतीला**—५ सेर ऊद, ७२ तोला चन्दन, पच्चीस पच्चीस तोला इकसीर और लादन‡ और २५ तोला बनफशा, ऽ १० तोला लोबान, ३ तोला मिश्री को कूट छान कर २ बोतल गुलाब जल में मिलाकर बत्तियाँ बनाते हैं। १०. **बारजात**—१ सेर ऊद, ५ तोला लादन, दो-दो तोला कस्तूरी और चन्दन, १ तोला लोबान, ½ तोला कपूर। चोआ की तरह अर्क निकालते हैं। ११. **अबीर इकसीर**—¾ सेर चन्दन, २६ तोला इकसीर, २ तोला ८ माशा कस्तूरी। पीस कर छाया में सुखाते और काम में लाते हैं। १२. **गसूल**—३५ तोला चन्दन, १७ तोला कँमल (कमल), एक-एक तोला कस्तूरी और चोआ; दो-दो माशा कपूर और मीद; दो बोतल गुलाब जल में मिलाकर तैयार करते हैं।

सुगन्धि

नाम	मूल्य	
अंबर अशहब	प्रति तोला	१ मोहर से ३ मोहर तक
जबाद	,,	½ रुपया से १ मोहर तक
कस्तूरी	,,	१ रुपया से ४½ रुपया तक
अगर	प्रति सेर	२ रुपया से ५ रुपया तक
चोआ	प्रति तोला	⅛ रुपया १ रुपया तक
गौरा	,,	३ रु० से ५ रुपया तक
भीमसेनी कपूर	,,	३ रु० से २ मोहर तक
मीद	,,	१ रु० से ३ रुपया तक
केशर	प्रति सेर	१२ रु० २२ रुपया तक
कमन्दी केशर	,,	१ मोहर से ३ मोहर तक
कश्मीरी केशर	,,	८ रु० १२ रु० तक
चन्दन	प्रतिमन	३२ रु० से ५५ रु० तक
कस्तूरी नाभि	प्रतिसेर	३ मोहर से १२ मोहर तक
कलम्बक	प्रतिमन	१० रु० से ४० रु० तक
सिलारस	प्रति सेर	३ रु० से ५ रु० तक

नाम	मूल्य	
अंबर लादन	प्रति सेर	१½ रु० से ४ रु० तक
चीना कपूर	,,	१ रु० से २ रु० तक
अर्क फित्ना	प्रति बोतल	१ रु० से ३ रु० तक
अर्क वेद मुश्क	प्रति बोतल	१ रु० से ४ रु० तक
गुलाबजल	,,	½ रु० से १ रु० तक
अर्क बहार	,,	१ रु० से ५ रु० तक
अर्क चमेली	,,	⅛ रु० से ¼ रु० तक
बनफशा की जड़	प्रति सेर	½ रु० से १ रु० तक
अज्फासत्तीब	,,	१½ रु० से २ रु० तक
बर्गमाज (जो गुजरात से लाई जाती है)	,,	½ रु० से १ रु० तक
सुगन्ध गुगला	,,	१० रु० से १३ रु० तक
लोबान (सरगर्द[1] से)	प्रति तोला	⅓ रु० से ३ रु० तक
अन्य लोबान	प्रति सेर	१ रु० से २ रु० तक

* ब्लाकमैन ने ३½ तोला लिखा है परन्तु मूलग्रन्थ में "शश शश" पाठ है। † ब्लाकमैन ने २ तोला लिखा है परन्तु मूलग्रन्थ में "चहार चहार" पाठ है। ‡ ब्लाकमैन ने गलती से २० तोला लिखा है। ऽ ब्लाकमैन ने गलती से ५ तोला लिखा है। [1] पता नहीं चलता कि यह स्थान कहाँ है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम		मूल्य
अलक (जिसे हिन्दी में छड़ कहते हैं)	,,	¼ रु० से ½ रु० तक
दुक्कालक (जिसे हिन्दी में छरीला कहते हैं)	,,	३ रु० से ४ रु० तक

नाम	मूल्य	
गेहला	×	×
सुअद (नागरमोथा)	×	×
इकंकी	×	×
जुरुम्बाद (कचूर)	×	×

सुगन्धित फूल

नाम	रंग	मौसम
सेवती	सफेदी लिए	साल भर पैदा होती है, अधिकतर वर्षा के अन्त में
चमेली	सफेद, पीली और नीली	वर्षा में और कुछ जाड़े में भी
रायबेल	सफेद और पंडुक के रंग का	गर्मी के अन्त और वर्षा के आरम्भ में
मोंगरा	पीला	गर्मी
चम्पा	पीली	साल भर विशेषकर जब सूर्य मीन और मेष राशि में होता है।
मोलश्री	सफेदी लिए हुए	वर्षा
कूजा	सफेद	गर्मी
पाडल	आसमानी रंग	वसन्त
जूही	सफेद, पीली, चमेली की तरह	वर्षा

नाम	रंग	मौसम
निवारी	कुछ सफेदी लिए हुए	वसन्त
केतकी	ऊपरी पत्ते हरे और अन्दर के पत्ते पीलापन लिए सफेद	गर्मी
केवड़ा	सफेदी लिए हुए पीला	सिंह से तुला राशि के अन्त तक
चलता	×	×
गुलाल	×	वसन्त
गुलाल	सफेद	जाड़ा
सिंगारहार	पंखड़ियाँ छोटी , सफेद	गर्मी
नरगिस	सफेद	वसन्त
गुलबनफशा	बनफशई	गर्मी
गुलेकर्ना	सफेद	वसन्त
कपूर बेल	पंडुक के रंग का सफेद	×
गुलेजाफरान	बनफशई	खरीफ

सुन्दर रंगों वाले फूल

नाम	रंग	मौसम
सूरजमुखी	पीला	वर्षा
कमल	सफेद और नीला	वर्षा
जाफरी	सुनहला, पीला, नारंगी और काही	बसन्त
गुड़हल	लाल, पीला, नारंगी, सफेद, विभिन्न रंग	वर्षा
रतनमंजनी	आग के समान लाल; चमेली से छोटी	सदैव
सेंबल	गहरा लाल	बसन्त,

नाम	रंग	मौसम
रतनमाला	पीला	बसन्त
सोनजर्द	पीला	बसन्त
मालती फूल	×	×
कर्णफूल	सुनहला पीला	×
केसू (टेसू)	आग के समान लाल	गर्मी
कनेर	लाल और सफेद	बसन्त
कदम	बाहर हरा, बीच में पीला और अन्दर के रेशे सफेद	बसन्त
नागकेसर	×	बसन्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम	रंग	मौसम
सुरपन	सफेद; बीच में लाल और पीली धारियाँ	वर्षा
श्रीखंडी	भीतर पीलापन लिए सफेद और बाहर लाल	बसन्त
मेंहदी का फूल	×	×
दुपहरिया	आग की तरह लाल और सफेद	सदैव
भुवन चम्पा	आड़ू के रंग का	जाड़ा
सुदर्शन	पीला; नीलूफर फूल की भाँति परन्तु उससे छोटा	वर्षा
करील	×	बसन्त
जैत	भीतर पीला और बाहर सुर्खी लिए हुए काला	वर्षा
चम्पला	नीबू के फूल की तरह सफेद	बसन्त
लाही	×	मीन राशि में खिलता है
करौंदा का फूल	सफेद; चमेली से छोटा	वर्षा
धनन्तर	नीलूफर फूल की तरह	वर्षा
कँगलाई	दो प्रकार—लाल और पीला	×
सिरस	पीलापन लिए हुए हरा; रेशेदार	बसन्त
सन	पीला	वर्षा

१. **अम्बर**—कुछ लोग कहते हैं कि अम्बर समुद्र की तह में पैदा होता है और जल-जन्तु इसको खाते हैं और तृप्त होकर उगल देते हैं। अनेक लोग कहते हैं कि मछली इसको खाती है और मर जाती है और इसको उसके पेट से निकालते हैं। कुछ लोगों का ख्याल है कि यह दरियाई गाय का गोबर है जिसको **सारा** कहते हैं। कुछ लोग इसको समुद्र की फेन समझते हैं। कुछ लोग कहते है कि यह द्वीपों के पर्वतों से टपकता है। एक समुदाय का विचार है कि यह दरियाई पेड़ का गोंद है। दूसरे लोग इसको एक तरह की मोम समझते हैं। लेखक भी इसी विचार से सहमत है। लोग कहते हैं कि कुछ पहाड़ों में इतनी अधिकता से शहद पाया जाता है कि वह बह निकलता है, और समुद्र में मिल जाता है। मोम पानी की तह पर आ जाती है और गर्मी से सूख जाती है। चूँकि मधु मक्खियों का आहार सुगन्धित वस्तुयें हैं, इसलिए अम्बर सुगन्धित होता है। कुछ शहद की मक्खियाँ उसमें पाई जाती हैं। अबू अली सेना का विचार है कि समुद्र की तह में एक सोता है जिससे अम्बर टपकता है और लहरें उसको तट तक पहुँचा देती हैं। ताजा अम्बर गीला होता है और सूर्य की गर्मी से सूख जाता है और भांति भांति के रङ्ग धारण करता है। वह कम धूप से सफेद, अधिक धूप से काला और मध्यम से पिस्तई और पीले रङ्ग का हो जाता है।* मध्यवर्ती पिस्ते के रङ्ग का और पीला होता है। सर्वश्रेष्ठ प्रकार को **अशहब** कहते हैं। वह चिकना और पर्तदार होता है। जब तोड़ते हैं तब भीतर से पीलापन लिए हुए सफेद निकलता है। वह जितना ही सफेद, हल्का और नर्म होता है उतना ही अच्छा होता है। इसके बाद पिस्तई रङ्ग का और उससे खराब पीले रङ्ग का होता है जिसको **खशखाशी** कहते हैं। काले रङ्ग का अम्बर सबसे निकृष्ट होता है जो दहनशीलता के कारण जल जाता है। लोभी व्यापारी इस काले अम्बर को मोम, मन्दल और लादन आदि में मिला देते हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति ऐसा नहीं करता।

२. **मन्दल**—यह एक प्रकार का अम्बर है जो मुर्दा मछली के पेट से निकाला जाता है। इसमें सुगन्ध कम होती है।

---

* मूल ग्रन्थ में पाठ है, "व अज कमतर सफेद ओ अज बेश्तर सियाह ओ अज मियाना फिस्तकी ओ जर्द" पृ० ९२। इसका अनुवाद ब्लाकमैन ने इस प्रकार किया है, 'The white is the be t, the black is the worst; the middling sort is pistachio-coloured and yellow.' (सफेद सर्वोत्तम होता है, काला सब से निकृष्ट होता है; मध्यवर्ती किस्म का पिस्तई रङ्ग का और पीला होता है।), दे० पृ० ८३, परन्तु पाठ तथा सन्दर्भ से स्पष्ट पता चलता है कि यह अर्थ अशुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

३. **लादन**—इसको भी अंबर कहते हैं। यह एक पेड़ से उत्पन्न होता है जो किबरस* और किसूस या किस्तूस† में उगता है। उसके पत्तों पर एक प्रकार की नमी जम जाती है। बकरियाँ जब चरागाह को जाती हैं तो उनके रान के बाल और उनके खुर इस नमी से चिपक जाते हैं और नमी सूख जाती है। बकरियों के बालों से मिला हुआ लादन श्रेष्ठ समझा जाता है। यह हरा होता है और इसकी सुगन्ध अच्छी होती है। परन्तु जो लादन खुरों में भरा रहता है वह निकृष्ट समझा जाता है। कभी कभी पेड़ पर रस्सियाँ बाँध देते हैं और नमी उसमें लिपट जाती है। रस्सी को पानी उबाल कर साफ कर लेते हैं और पानी को सुखाकर टिकिया बना लेते हैं।

४. **कपूर**—एक बड़ा पेड़ है। यह हिन्दुस्तान और चीन की घाटियों में पाया जाता है। इसके नीचे सौ से अधिक सवार बैठ सकते हैं। तना और शाखाओं में कपूर पैदा होता है। कुछ लोग कहते हैं कि गर्मी की ऋतु में ठंडक के लिए बहुत से साँप इससे लिपट जाते हैं। इस प्रकार पेड़ को पहचान कर लोग इसके तने पर तीर से निशान बना लेते हैं और जाड़े में कपूर प्राप्त करते हैं। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि उसके चारों तरफ चीते रहते हैं और उसको इतना चाहते हैं कि उससे अलग नहीं होते। लकड़ी के भीतर कपूर नमक की डलियां की तरह दिखाई पड़ता है और बाहर गोंद की तरह। वह कभी कभी पेड़ से बह कर जमीन पर गिरता है और कुछ समय में जम जाता है। जिस वर्ष भूचाल अधिक आते हैं या आसमान में तूफान आदि आते हैं उस वर्ष कपूर अधिक पैदा होता है। इसके कई प्रकार होते हैं। सबसे अच्छे को **रिबाही** या **कैसूरी**‡ कहते हैं। वास्तव में यह एक ही प्रकार है जिसके दो भिन्न भिन्न नाम हैं। कहते हैं कि सबसे पहले रिबाह नाम के बादशाह ने कैसूर नामक कस्बे में कपूर को पाया था जो सरान्दीप (लङ्का) के निकट स्थित है। कुछ पुस्तकों में लिखा है कि कपूर बर्फ की तरह सफेद होता है और लेखक (अबुलफज्ल) ने स्वयं अपने हाथों से इसको लकड़ी से निकाला है जो वैसा ही था। परन्तु इब्ने बैतार कहता है कि यह लाल तथा चमकदार होता है और साफ करने से सफेद हो जाता है। तथ्य जो कुछ भी हो, यह निश्चित है कि एक प्रकार का कपूर सफेद होता है। यही सबसे अच्छा, सफेद, हल्का, साफ और बड़ा होता है। इससे निम्न प्रकार को **कुरकुई** कहते हैं जो काला और मैला होता है। उससे भी घटिया **'कौकब'** होता है जो गेहुआँ रङ्ग का होता है। सबसे निकृष्ट कपूर वह है जो लकड़ी के टुकड़ों में मिला होता है और जिसे **बालूस** कहते हैं। हर प्रकार का कपूर रासायनिक क्रिया द्वारा साफ और सफेद हो जाता है। कुछ पुस्तकों में ऐसा लिखा है कि जो कपूर पेड़ से प्राप्त करते हैं उसे जूदाना या भीमसेनी कहते हैं और जौ या कालीमिर्च या सुर्खदाना उसमें मिलाकर रखते हैं जिससे कपूर न उड़ने पावे। यूनानी उसको सर्द और हिन्दुस्तानी उसको गर्म समझते हैं। जो कपूर **जुरुम्बाद**ऽ के साथ दूसरी चीजें मिलाकर बनाया जाता है उसे **चीनी** या **मैय्यित** कपूर कहते हैं। सफेद जुरुम्बाद को महीन पीसकर गाय या भैंस के खट्टे मट्ठे में मिलाते हैं और चौथे दिन उसमें फिर ताजा मट्ठा मिलाते हैं और हाथ से इतना थपथपाते हैं कि फेन ऊपर आ जाती है। इसको अलग कर लेते हैं और उसमें कुछ कपूर मिलाते हैं। उसको एक डिब्बे में बन्द करके अनाज के ढेर में कुछ समय तक रखते हैं। कभी कभी सफेद पत्थर को महीन पीसते हैं और दस दिरहम⊙ चूर्ण के लिए दो दिरहम मोम और आधा दिरहम बनफसा या सुर्खगुल का तेल प्रयोग करते हैं। पहले मोम को तेल में उबालते हैं और चूर्ण को उसमें सानते हैं। तब उसको

---

* किबरस साइप्रस (Cyprus) का पुराना नाम है। यह भूमध्य सागर में स्थित एक द्वीप है। † कीसूस (Chios) या किस्तूस एक द्वीप है जो ईजियन सागर में स्थित है। यह एशिया माइनर के पश्चिमी तट से आठ मील पर है। ‡ मार्कोपोलो के अनुसार इसे फन्सूरी होना चाहिए। 'फन्सूर' सुमात्रा में एक राज्य है। ऽ हिन्दी में इसको शायद नरकचूर कहते हैं। ⊙ दिरहम = ३½ माशा (गयासुल्लुगात)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो पत्थरों के बीच में रखकर पतला और चपटा बनाते हैं। जब वह ठंढा हो जाता है तब कपूर की तरह दिखाई पडता है। लोग इसके चूरे को कपूर में मिला देते हैं और दूसरों को हानि पहुँचा कर स्वयं लाभ उठाते हैं।

५. जबाद—इसको **शाख*** भी कहते हैं। यह एक पशु का मद है जो उसकी मस्ती की दशा में टपकता है। यह पशु बिल्ली की तरह होता है परन्तु उससे उसका चेहरा और थूथन कुछ बड़ा होता है। जो जबाद आचीन राज्य† के सामतर्रा (सुमात्रा) बन्दरगाह से लाते हैं उसको सामतराई जबाद कहते हैं और वह सबसे अच्छा होता है। वह टपका हुआ जबाद पीलापन लिए हुए सफेद होता है। पशु की दुम के नीचे एक थैली (नाफा) रहती है जो आकार में छोटे अखरोट के बराबर होती है और जिसमें पाँच-छः सूराख होते हैं। सात दिन से पन्द्रह दिन के अन्दर नाफे को खाली करते हैं और इसमें से आधा तोला या ८ माशा (जबाद) निकलता है। कुछ जानवर इतने पालतू हो जाते हैं कि मनुष्य सरलता से उनके नाफे से जबाद निकाल लेते हैं परन्तु अधिकांश की दुम को पिंजड़ों के बाहर खींच लेते हैं और सीपी के द्वारा या नाफे को धीरे धीरे दबाकर जबाद निकाल लेते हैं। इस जानवर का मूल्य ३०० रु० से ५०० रु० तक होता है। नर का जबाद मादा के जबाद से अच्छा होता है क्योंकि मादा की योनि का अगला भाग नाफा के ऊपर होता है। जबाद निकाल कर होशियार लोग उसको धोते हैं और काम में लाते हैं। इसके बाद वह बढ़िया सुगन्ध देता है। उसकी सुगन्ध टिकाऊ होती है और देर तक कपड़ों और शरीर से नहीं जाती। उसके धोने के बहुत से ढङ्ग हैं। सबसे अच्छी विधि यह है कि यदि जबाद कम हो तो प्याले में अन्यथा किसी बड़े बर्तन में रखकर तीस बार ठन्ढे पानी से और तीन बार गर्म पानी से धोते हैं। गर्म पानी उसको पतला और साफ कर देता है। तब उसको तीन बार ठढे पानी से फिर धोते हैं जिससे वह जम जाता है। इसके बाद तीन बार नीबू के रस से धोते हैं जिसके कारण उसकी दुर्गन्ध निकल जाती है। इसके बाद फिर तीन बार ठंढे पानी से धोते हैं और कपड़े से छानकर चीनी के प्याले में डालते हैं और तीन बार गुलाब जल से धोते हैं। तब जबाद को प्याले के भीतरी भाग पर लपटते हैं और रातको चमेली, रायबेल या गुलाब या कर्ना के फूल में प्याले को औंधा रख देते हैं और दिन में सफेद कपड़ा प्याले पर बाँध कर धूप में रखते हैं जिससे तरी कम हो जाती है। उसमें से कुछ लेते हैं और गुलाब जल मिलाकर काम में लाते हैं।

६. गौरा—कालापन लिए हुए सफेद होता है परन्तु इसमें जबाद की सी सुगंध नहीं होती। यह भी एक जानवर के शरीर से मस्ती की हालत में टपकता है। यह जानवर जबादी जानवर से बड़ा होता है। यह भी आचीन की तरफ से लाया जाता है। इसका मूल्य १०० रु० से २०० रुपए तक होता है।

७. मीद—उपरोक्त की भाँति परन्तु उससे न्यून कोटि का होता है। इसको कुछ अन्य वस्तुओं में मिलाकर प्रयोग में लाते हैं। जिस पशु से मीद प्राप्त होता है वह अनेक देशों में पाया जाता है और उसका मूल्य ५ दाम से ६ दाम तक होता है। कुछ लोगों की राय है कि उपरोक्त पशु के सूखे नाफों को कूटकर पानी में उबालते हैं। इससे एक प्रकार का तेल पानी के ऊपर आ जाता हैं इसी को मीद कहते हैं।

८. ऊद—इसको हिन्दी में अगर कहते हैं। यह एक पेड़ की जड़ है जिसको उखाड़ कर जमीन में गाड़ते हैं। खराब भाग सड़ जाता है और शुद्ध अगर शेष रह जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि पूरा पेड़ गाड़ा जाता है। कुछ पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि लोग अगर को हिन्दुस्तान के मध्य भाग से लाते हैं परन्तु यह उल्लेख मिथ्या तथा काल्पनिक है। अगर कई प्रकार का होता है। सबसे अच्छा **मन्दली** है; इसके बाद **जबली** जिसको हिन्दी या हिन्दुस्तानी भी कहते हैं। इसकी सुगन्ध से जूयें नहीं पैदा होतीं। इसीलिए इसको प्रथमोक्त अगर से अच्छा समझते हैं परन्तु कुछ लोग इस विषय में दोनों को बराबर समझते हैं। अच्छे प्रकार के दूसरे ऊदों में **समदूरी** है; इससे घटिया **कुमारी,**

*** शायद हिन्दी में इसको जवादि कहते हैं। † पूर्वी द्वीप समूह में स्थित एक राज्य तथा कस्बा है। यह सुमात्रा के उत्तर में है।**

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और इसके बाद **काकुली, बर्री; कितई; चीनी** है जिसको **किसमूरी** भी कहते हैं और जो तर और मधुर होता है। इनसे न्यून कोटि के अगर को **जलाली, मायताकी, लवाकी, रीताली**❀ कहते हैं। परन्तु मन्दली अन्य प्रकारों से श्रेष्ठ होता है। जो समदूरी अगर नीला, मोटा, उभरा, कठोर, रसीला होता है और जिसमें सफेदी का निशान नहीं होता तथा जो आग में देर तक रहता है अच्छा होता है। कुछ लोग काले अगर को अधिक अच्छा समझते हैं। कुमारी जाति में जो अगर नीला, श्वेततारहित, मोटा, रसीला और आग में देर तक ठहरता है अच्छा होता है। सबसे अच्छा अगर काला, कठोर और भारी होता है। वह पानी के नीचे बैठ जाता है, रेशेदार नहीं होता और आसानी से कूटा जा सकता है। जो अगर पानी पर तैरता है वह निकृष्ट माना जाता है। पूर्ववर्ती शासक अगर को गुजरात में लाए थे और आजकल चांपानेर† में पैदा होता है। लोग साधारणतया अगर को आचीन और धनाश्री‡ से लाते है। आजकल उन नगरों का पता नहीं है जिनमें पुरानी पुस्तकों के अनुसार अगर पैदा होता था। इसे सुगंधित मिश्रणों में मिलाते हैं और उनके खाने से आनन्द होता है। अधिकतर लोग इसकी धूनी से आनन्द प्राप्त करते हैं। कुछ लोग अच्छे अगर को पीसकर शरीर और वस्त्रों पर मलते हैं।

९. **चोवा**—यह अगर की लकड़ी से टपकाया जाता है। छोटे बड़े सभी इसका प्रयोग करते हैं। इसके बनाने की विधि इस प्रकार है। बढ़िया मिट्टी को रुई या धान की भूसी में मिलाकर कूटते हैं। जब वह अच्छी तरह मिलजाती है तब एक छोटी बोतल पर उँगली के पोरों से उसे लेसते हैं और सुखा देते हैं। फिर ऊद के चूरे को जो एक सप्ताह पहले से भीगता रहता है उसमें भरते हैं परन्तु कुछ जगह खाली छोड़ देते हैं। एक और बर्तन, जिसके बीच में छेद होता है, तिपाई पर रखते हैं। और बोतल को औंधी करके उसकी गर्दन उस बर्तन में लगा देते हैं। बर्तन की पेंदी में पानी से भरा हुआ प्याला इस प्रकार रखते हैं कि बोतल का मुँह पानी के तल तक पहुँच जाता है। बर्तन के ऊपर बिनवा कंडे की धीमी आग जलाते हैं। यदि लपट उठती है तो पानी से उसे ठंढा कर देते हैं। अगर के चूरे से भाप उठती है और टपककर पानी की सतह पर स्थिर हो जाती है। उसको एकत्र करके कई बार जल और गुलाब जल से धोते हैं जिससे धुएँ का अंश साफ हो जाता है। इसको जितना अधिक धोते हैं और यह जितना ही पुराना होता है उतना ही अधिक सुगंधित होता है। यह काला होता है। कुछ अनुभवी लोग इसे सफेद बना लेते हैं। एक सेर अगर से दो से पन्द्रह तोला तक चोवा निकलता है। कुछ लोभी मनुष्य इसमें चन्दन और बादाम मिला देते हैं और दूसरो को हानि पहुँचाते हैं।

१०. **सन्दल**—इसको हिन्दी में **चन्दन** कहते हैं। इसका पेड़ चीन में पैदा होता है। वर्तमान सम्राट् के शासन काल में यह चीन से लाकर हिन्दुस्तान में लगाया गया।ऽ और उसकी खूब वृद्धि हुई। यह तीन प्रकार का होता है—सफेद, पीला और लाल। एक समुदाय लाल को सफेद से अधिक शीतल मानता है और दूसरे सफेद को अधिक शीतल मानते हैं। वास्तव में सफेद चन्दन लाल चन्दन से शीतल और लाल पीले चन्दन से शीतल होता है। सबसे अच्छा चन्दन पीला और स्निग्ध (चिकना) होता है और उसको मकासरी कहते हैं। चन्दन को पीसकर शरीर पर मलते और आनन्द प्राप्त करते हैं। यह दूसरे ढंगों से भी काम में लाया जाता है।

११. **सिलारस**—अरबी में इसको **मीऊह** कहते हैं। यह एक रूमी पेड़ का गोंद है। गोंद को उबालकर साफ

❀ पिछले तीनों नाम संदिग्ध हैं—ब्लाकमैन जिल्द १ पृष्ठ ८६। † चांपानेर या चंपानेर दिल्ली से बम्बई जाने वाली बाम्बे-बड़ोदा-सेन्ट्रल-इण्डिया-रेलवे लाइन पर एक उजाड़ बस्ती है जो गोधरा से २२ मील पर है। इसमें अब केवल दो ही चार घर शेष हैं। स्टेशन का नाम चंपानेर रोड हैं। यह बम्बई प्रान्त के पंचमहल जिले के अन्तर्गत है। ‡ धनाश्री या टनासरम लोअर बर्मा में थाइलैण्ड की सीमा पर है। ऽ स्पष्ट है कि यह वर्णन अशुद्ध है क्योंकि अकबर के बहुत पहले से भारत में चन्दन पैदा होता है और मलयागिरि का चन्दन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

करते हैं और साफ किए हुए गोंद को **मीआये साइला** (द्रव) कहते हैं और दूसरे को **मीआये याबीसा** (शुष्क)। सबसे अच्छा वह है जो अपने आप तने से बहता है और पीला होता है।

१२. कलबक*—एक पेड़ की लकड़ी जो भारी और रेशेदार होती है और जीरबाद† से लाई जाती है कुछ लोग इसे कच्चा अगर समझते हैं। कूटने पर वह सफेदी लिए हुए काली हो जाती है। इसको सुगंधों में मिलाते हैं और उससे माला भी बनाते हैं।

१३. मलागीर‡—कलंबक की भाँति यह भी एक पेड़ है। अन्तर यह है कि इसकी लकड़ी हलकी और बिना रेशे की होती है। पीसने पर वह सुर्खी लिए हुए सफेद होती है।

१४. लोबान (या लुबान)—एक सुगन्धित गोंद है जो जावा बन्दरगाह से लाया जाता है। कुछ लोग इसे मीआये याबिसा समझते हैं। आग की गर्मी में यह कपूर की तरह उड़ जाता है। वह लुबान जिसे फारसी में **कुन्दुरे दरियाई** कहते हैं एक गोंद है जो यमन में पैदा होता है। इसमें सुगन्ध नहीं होती।

१५. अजफारुत्तीबऽ—हिन्दी में इसको **नख** और फारसी में **नाखुनेबोया** कहते हैं। यह सीपी से मिलता जुलता है और एक जानवर का छोटा घर है जिसमें दो भाग होते हैं। जानवर सुम्बुल ⊙ खाता है इससे इसमें सुगन्ध होती है। यह हिन्दुस्तान की बड़ी नदियों में पाया जाता है और बसरा और बहरैन की नदियों में भी होता है और उसको लोग अच्छा समझते हैं। यह लाल सागर में भी पैदा होता है और कुछ लोग उसको सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। उसको घी में मिला कर गर्म करते हैं। कुछ लोग बिना घी मिलाए हुए उसको आग पर गर्म करते हैं और पीस कर दूसरी सुगन्धियों में मिलाते हैं।

१६. सुगन्ध गुगला△—यह एक पौधा है जो हिन्दुस्तान में अधिकता से पाया जाता है और सुगन्धों में काम में लाया जाता है।

चूँकि लेखक ने सुगन्धियों का कुछ विवरण दिया है इसलिए फूलों की विभिन्नता का वर्णन करता है।

१. सेवती∠—आकार में गुलाब के फूल की तरह परन्तु उससे छोटा होता है। इसके बीच में सुनहले रेशे होते हैं। उसकी पँखड़ियाँ चार से छः तक होती हैं। यह गुजरात और दक्षिण में अधिकता से पाया जाता है।

२. चमेली—दो प्रकार की होती है। पहली राय चमेली में पाँच-छः पंखड़ियाँ होती हैं और बाहर की तरफ लाली लिए होती है। दूसरी चमेली छोटी होती है और उसके ऊपर लाल धारियाँ होती हैं। उसका पौधा डेढ़ या

---

* कलबंक—मलयागिर या पीला चन्दन (लुगाते कबीर)। धारा-कदम्ब, हल्दू (विश्वकोष)। कलंब, कदम, हरदू, करम (शब्द-सागर)। हल्दू का रूप बहुत बड़ा होता है और यमुना के पूर्व हिमालय पर ३००० फुट की ऊचाई तक पाया जाता है।—रामलाल पांडेय। † बङ्गाल की सीमा पर एक नगर है—गयासुल्लुगात। आईने अकबरी की एक प्रति में जजीरएबाज पाठ है जिसका अर्थ बाजद्वीप है परन्तु इस नाम के किसी द्वीप का कहीं पता नहीं चलता। ब्लाकमैन का कहना है कि यह मलायी भाषा के 'बावह अंगीन' शब्द का फारसी अनुवाद 'जेरबाद' (वायु के नीचे) है। मलायी लोग सुमात्रा के पूर्व में जो देश तथा द्वीप स्थित हैं उनको इसी नाम से पुकारते हैं। ‡ मलयागिर। ऽ इसका आकार बहुधा चन्द्राकार और कभी कभी घोड़े के खुर और हाथी के कान के सदृश तथा गोलाकार भी होता है। यह सफेद, नीला तथा कई रङ्ग का होता है। वैद्यक ग्रन्थों में छोटे-बड़े के भेद से इसको 'क्षुद्रनखी' तथा 'बृहन्नखी' कहते हैं। रामलाल पांडेय। ⊙ बालछड़। △ (गूगुल या गुग्गुल)। इसका पेड़ काँटेदार होता है जो राजपूताना, काठियावाड़, खानदेश, सिन्ध, अरब और अफ्रीका में पाया जाता है। जाड़े के दिनों में इसके छिलके को स्थान-स्थान पर छील देते हैं जिनसे गुग्गुल निकलता है। ∠ सेवती सफेद गुलाब को कहते हैं। शायद यह शब्द 'श्वेत' का विकृत रूप है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दो गज का होता है। यह जमीन पर फैला होता है। इसमें बहुत सी लम्बी और चौड़ी शाखायें होती हैं। यह पेड़ पहले वर्ष से ही फूलता है।

३. रायबेल—चमेली से मिलता-जुलता है और विभिन्न प्रकार का होता है। इसमें एक या उससे अधिक पर्तें होती हैं। पाँच पर्तों का फूल बहुत अधिक होता है। हर पर्त को एक अलग फूल समझा जा सकता है। इसका पौधा एक गज ऊँचा होता है। उसकी पत्तियाँ नीबू की तरह, लेकिन उससे छोटी और नर्म होती हैं।

४. मोगरा—राय बेल के समान परन्तु उससे बड़ा होता है। उसमें १०० से अधिक पंखड़ियाँ होती हैं। यह सुगन्ध में राय बेल की समता नहीं कर सकता। उसका पेड़ बड़ा होता है।

५. चम्पा—यह गाजर की शकल का (अथवा शुण्डाकार) होता है जो एक अंगुल लम्बा होता है। इसमें दस या उससे अधिक पंखड़ियाँ होती हैं। इसमें तह पर तह पाई जाती है और इसमें पराग केसर होता है। पेड़ सुन्दर होता है और अखरोट से उसके पत्ते और तना मिलते जुलते हैं। यह सात साल में फूलता है।

६. केतकी—शकल सनोबर की सी होती है। यह चौथाई गज लम्बा होता है और इसमें बारह या उससे अधिक पंखड़ियाँ होती हैं। उसकी सुगन्ध भीनी और मधुर होती है। इसका पेड़ छः या सात साल में फूल देता है।

७. केवड़ा—केतकी के समान है परन्तु उसके दुगुने से भी बड़ा होता है। उसकी पंखड़ियाँ काँटेदार होती चूँकि वे विभिन्न स्थानों पर पैदा होते हैं इसलिए सब केवड़े बराबर नहीं होते। इसके बीच में एक छोटी टहनी होती है जिसमें शहद के रङ्ग के रेशे होते हैं। वे सुगन्धहीन नहीं होते। सूख जाने के बाद भी इसमें सुगन्ध रहती है। इसको कपड़ों में रखते हैं और इसकी सुगन्ध टिकाऊ होती है। इस पेड़ का तना चार गज या उससे कुछ अधिक ऊँचा होता है। उसके पत्ते ज्वार की तरह लेकिन उससे लम्बे होते हैं। वह तिकोने होते हैं और हर कोने में तीन काँटे होते हैं। यह चार साल में फूलता है। हर साल उसकी जड़ में नई मिट्टी डालते हैं। इसका पेड़ दक्षिण, गुजरात, मालवा और बिहार में बहुत पाया जाता है।

८. चलता*—बड़े गुले लाला (पोस्ते का फूल) की तरह होता है। इसमें अठारह पंखड़ियाँ होती हैं, ऊपर की छः हरी, दूसरी छः कुछ लाल, कुछ भूरी-पीली, और शेष छः सफेद। बीच में, सदाबहार फूल की तरह, दो सौ छोटी पीली पत्तियाँ होती हैं और केन्द्र में एक लाल घुन्डी होती है। तोड़ने के बाद पाँच-छः दिन तक यह ताजा रहता है। सुगन्ध में यह बनफशा से मिलता-जुलता है। जब यह सूख जाता है तब इसे पका कर खाते हैं। इसका पेड़ अनार के पेड़ की तरह होता है और उसकी पत्तियाँ नीबू की पत्ती की तरह होती हैं। यह सात वर्ष में फूलता है।

९. तसबीहे गुलाल—यह अच्छी सुगन्ध देता है। इसकी पंखड़ियों की शक्ल कटार जैसी होती है। इसका पौधा दो गज ऊँचा होता है और चार साल के बाद फूलता है। इससे माला बनाते हैं जो एक सप्ताह तक ताजा बना रहता है।

१०. मोलसरी†—चमेली से छोटा होता है और इसकी पंखड़ियाँ कटी होती हैं। सूखने पर अधिक सुगन्ध देता है। इसका पेड़ अखरोट के पेड़ से मिलता-जुलता है और दस साल में फूलता है।

११. सिंगारहार‡—लौंग की शक्ल का और डन्डी नारंगी रङ्ग की होती है। पराग पोस्ता के दाने की तरह होते हैं। उसका पेड़ अनार के पेड़, और पत्ते शफ्तालू के पत्ते की तरह होते हैं। यह पाँच वर्ष में फूलता है।

---

* चलता फूल बङ्गाल, मद्रास और मध्यभारत में होता है। इसका पेड़ बड़ा, लकड़ी मजबूत और भीतर लाल होती है। इसके पुराने पत्तों से हाथी-दाँत साफ किया जाता है। इसमें बेल जैसा फल लगता है। वह कच्चा भी खाया जाता है और उसका शाक भी बनाया जाता है, किन्तु रेशों की अधिकता के कारण लोग उसको चूस-चूस कर खाते हैं। – रामलाल पांडेय। † मोलश्री। ‡ श्रृङ्गारहार।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१२. **कूजा**— शक्ल में यह गुलाब के फूल से मिलता-जुलता है; पौधा उससे बड़ा होता है और पत्ते गुलाब के से होते हैं। इसमें पाँच या सौ पंखड़ियाँ होती हैं और बीच में सुनहला पुष्प-केसर होता है। इससे अबीरमाया बनाते हैं और गुलाबजल खींचते हैं।

१३. **पाडल**—इसमें पाँच-छः लम्बी पंखड़ियाँ होती हैं। यह पानी को स्वादिष्ठ और सुगन्धित बनाता है। बहुत से लोग इसको मिट्टी में मिलाकर सुरक्षित रखते हैं। और जब फूल नहीं मिलता तब उसको पानी में डालते हैं। उसका पेड़ और पत्ते अखरोट की भाँति होते हैं। यह बारह साल में फूल देता है।

१४. **जूही**—इसकी पत्तियाँ छोटी छोटी होती हैं। इसकी बेल पेड़ में लिपट जाती है और तीन वर्ष में फूलती है।

१५. **निवारी**—यह रायबेल की तरह एक तह वाला होता है परन्तु उसका पौधा और पत्ते उससे बड़े होते हैं। यह इतना फूलता है कि पत्तियाँ और डालें छिप जाती हैं। वह एक वर्ष में फूलता है।

१६. **कपूर बेल**—इसमें पाँच पंखड़ियाँ होती हैं और केशर के फूल से मिलता है। यह वर्तमान शासन में यूरोप से लाया गया।

१७. **गुले जाफरान** (केशर का फूल)—उर्दीबिहिश्त नामक महीने के आरम्भ में तैयार और नर्म की हुई जमीन में इसके बीज बोते हैं। इसके बाद वर्षा के जल से यह सींचा जाता है। इसका बीज लहसुन के गट्ठे की तरह होता है। आबान के मध्य में इसमें फूल निकलता है। इसका पौधा चौथाई गज ऊँचा होता है। जमीन की दशा भिन्न भिन्न होती है। इसलिए कभी कभी पौधे का दो तिहाई भाग जमीन के ऊपर होता है और कभी कभी इसके विरुद्ध। उसके सिरे पर फूल खिलता है। उसमें छः पंखड़ियाँ और छः रेशे होते हैं। पहली तीन पंखड़ियाँ बनफशे के रङ्ग की और बहुत हरी भरी होती हैं और शेष तीन पंखड़ियों के चारों तरफ होती हैं। उनके बीच में तीन पीले रेशे प्रकट होते हैं जिनकी गोद में तीन दूसरे रेशे होते हैं जो लाल होते हैं। इन्हीं अन्तिम रेशों को केशर कहते हैं। प्रायः पीले रेशे भी धोखेबाजी से लाल रेशों में मिला देते हैं। पहले समय में मजदूरों से जबरदस्ती पंखड़ियों और रेशों से केशर अलग कराया जाता था और मजदूरी में उनको नमक दिया जाता था। जो दो पल केशर साफ करता था उसको दो पल नमक दिया जाता था। गाजी खाँ चक* के समय में यह नियम बनाया गया था कि ग्यारह तर्क फूल साफ करने वालों के सुपुर्द किए जाते थे। एक तर्क उनकी मजदूरी में देकर शेष दस तर्क उनसे वापस लिए जाते थे। इन शेष दस तर्कों में दो सेर अकबरशाही शुद्ध शुष्क केशर प्राप्त होता था। सारांश यह है कि अकबर शाही दो मन† फूलों से २ सेर शुद्ध केशर प्राप्त होता था। बादशाह जब तीसरी बार कश्मीर गए तो उन्होंने इस नियम को रद्द कर दिया और इससे लोगों को बहुत आराम हो गया गट्ठे को एक बार भूमि में बोते हैं और वह छः साल तक फूल देता है परन्तु भूमि को हर वर्ष नर्म करना होता है। पहले दो वर्ष थोड़े थोड़े फूल आते हैं परन्तु तीसरे वर्ष वह खूब फूलने लगता है। छः वर्ष बीतने के पश्चात् यदि गट्ठे को भूमि से नहीं निकालते तो वह सड़ जाता है। अतएव विवश होकर उसे एक स्थान से निकाल कर दूसरे स्थान में बोते हैं और दूसरे पाँच वर्षों तक उस भूमि को पड़ती छोड़ देते हैं। केशर सबसे अधिक पनपूर नामक स्थान में होता है जो मरु राज‡ जिले में है। लगभग १२ कोस तक केशर की खेती दिखाई पड़ती

---

* यह शेर खाँ का समसामयिक था दे० तृतीय ग्रन्थ में कश्मीर के शासकों की सूची जो अबुल फज्ल ने दी है। इसका जीवन वृत्त माअसिरे रहीमी में सुन्दर दिया गया है। इसके पिता का नाम काजी चक था। † एक कश्मीरी तर्क = ८ सेर अकबरशाही सेर = ४ कश्मीरी मन। १ कश्मीरी मन = ४ कश्मीरी सेर। १ कश्मीरी सेर = ७½ पल; १ पल = ३ तोला ४ माशा। ‡ यह स्थान कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के दक्षिण में स्थित है। आईने अकबरी के तृतीय ग्रन्थ में 'मरुराज' के स्थान पर 'मरराज' पाठ है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है। इसके अतिरिक्त इसकी खेती कमराज की ओर, इन्द्रकोल के निकट, परसपुर के परगने में लगभग एक कोस तक होती है।

१८. आफताबी (सूर्य मुखी या सूरज मुखी)—यह गोल, चौड़ा, बड़ा और पंखड़ियों से भरा होता है और उसका मुँह सदा सूर्य की ओर रहता है। इसका पौधा तीन गज ऊँचा होता है।

१९. कँवल (कमल)—दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार वह है जो सूर्योदय के पश्चात् खिलता है और जिधर सूर्य जाता है फूल का मुँह उधर ही हो जाता है और सूर्यास्त के पश्चात् बन्द होकर कली हो जाता है। यह शकाइक* से मिलता-जुलता है परन्तु इसकी लालिमा श्वेतता लिए रहती है। इसकी पंखड़ियाँ छः से कम नहीं होती। उनके भीतर पीले रेशे होते हैं। उनके बीच में एक ऐसी चीज निकलती है जिसकी शक्ल गाजर से मिलती है और उसका आधार ऊपर की तरफ होता है। यही उसका फल है जिसमें बीज होते हैं। दूसरे प्रकार के कमल† में चार पंखड़ियाँ होती हैं और वह सफेद होता है। यह रात को खिलता है और चाँद के घूमने के अनुसार अपना मुँह घुमाता रहता है लेकिन बन्द नहीं होता।

२०. जाफरी—यह फूल गोल और सुन्दर होता है और गेंदे से बड़ा होता है। यह फूल पञ्चदल और शतदल होता है। शतदल दो महीने तक ताजा रहता है। इसका पेड़ आदमी के बराबर ऊँचा होता है और उसके पत्ते बेद के पत्ते के समान परन्तु कटे हुए होते हैं। यह दो महीने में फूलता है।

२१. गुड़हल—यह जुगासू फूल की तरह होता है और इसमें अनेक पंखड़ियाँ होती हैं। इसका पौधा दो गज और उससे अधिक ऊँचा होता है और उसकी पत्तियाँ तूत की तरह होती हैं। यह दो साल में फूलता है।

२२. रतनमंजनी—इसमें चार पँखड़ियाँ होती हैं और चमेली से छोटा होता है। पेड़ और पत्ते रायवेल की तरह होते हैं। दो साल में फूलता है।

२३. केसू (रेशू)—इसमें पाँच पँखड़ियाँ होती हैं और प्रत्येक पँखड़ी व्याघ्र नख की भाँति होती है। उनके बीच में पीला रेशा होता है जिसका आकार जीभ का सा होता है। इसका पेड़ बहुत बड़ा होता है और प्रत्येक वन में खिलता है और देखने में ऐसा प्रतीत होता है मानो सावन सुन्दर अग्निज्वालाओं से पर्यवेष्ठित है।

२४. कनेर—अधिक समय तक खिला रहता है। देखने में सुन्दर लगता है परन्तु विषैला होता है। जो मनुष्य इसको अपने सिर पर रखता है वह लड़ाई-झगड़े में फँस जाता है। इसमें अधिकतर पँखड़ियाँ होती हैं। शाखायें फूलों से लदी होती हैं। पेड़ दो गज और उससे अधिक ऊँचा होता है। एक वर्ष में फूलता है।

२५. कदम—तुमागा‡ से मिलता जुलता है। इसके पत्ते और पेड़ अखरोट के पत्ते और पेड़ से मिलते जुलते हैं।

२६. नागकेसर—गुलाब के फूल के सदृश; इसमें पाँच पंखड़ियाँ होती हैं और अनेक रेशे होते हैं। इसके पत्ते और पेड़ अखरोट की तरह होते हैं। यह सात साल में फूलता है।

२७. सुरपन—तिल्ली के फूल की तरह होता है और उसके बीच में पीला पुष्पकेसर होता है॥ उसका पौधा मेंहदी की तरह और पत्ते बेद की तरह होते हैं।

२८. श्रीखंडी—चमेली की तरह परन्तु उससे छोटा होता है और दो साल में फूलता है।

---

* सम्भवतः अँग्रेजी में इसको anemone कहते हैं। श्री रामलाल पांडेय ने इसका अर्थ 'लाला' लिखा है।
† अबुल फज्ल ने गलती से कुमुदिनी को कमल समझ लिया है।—अनुवादक। ‡ शाही टोपी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२९. **हेना (मेंहदी)**—इसमें चार पँखड़ियाँ होती हैं। यह 'नाफरमान' फूल की तरह होता है। हर पौधे में रङ्ग विरंगे फूल खिलते हैं।

३०. **दुपरिया**—गोल, छोटा और 'सदा बहार' से मिलता जुलता है। दोपहर को खिलता है। उसका पौधा दो गज का होता है।

३१. **भून चम्पा**—नीलूफर की तरह होता है और इसमें पाँच पँखड़ियाँ होती हैं। तना एक बीता ऊँचा होता है। यह उस जमीन में पैदा होता है जो कुछ समय तक पानी में डूबी रहती है। कभी कभी एकाध पौधा पानी के तल के ऊपर दिखाई देता है।

३२. **सुदर्शन**—राय बेल की तरह होता है और उसके भीतर पीले रेशे होते हैं और उसका पौधा सौसन की तरह होता है।

३३. **सेंबल**—इसमें पाँच पंखड़ियाँ होती हैं; प्रत्येक पंखड़ी की लम्बाई दस अंगुल और चौड़ाई तीन अंगुल होती है।

३४. **रतनमाला**—गोल और छोटा होता है। इसके रस को पका कर गन्धक के तेजाब और मुअसफर† में मिलाते हैं और इससे कपड़ों को रङ्गते हैं। रङ्ग पक्का होता है। इसकी जड़ को घी और तिल्ली के तेल में उबालते हैं। यह बैगनी रङ्ग हो जाता है और इससे कपड़े रङ्गते हैं।

३५. **सूनजर्द**—चमेली से मिलता-जुलता है परन्तु कुछ बड़ा होता है। इसमे पाँच छः पंखड़ियाँ होती हैं। इसका पौधा चमेली की तरह होता है। दो साल में फूलता है।

३६. **मालती**—चमेली से मिलता-जुलता है पर उससे छोटा होता है। बीच में पोस्ते के दानों की तरह पराग होता है। न्यूनाधिक दो वर्ष में फूलता है।

३७. **करील**—यह तीन छोटी पंखड़ियों वाला फूल होता है। यह अधिकता से खिलता है और आँखों को सुखद होता है। उसको उबाल कर खाते हैं और अचार भी बनाते हैं।

३८. **जैत**—इसका पौधा बड़ा पेड़ होता है। इसकी पत्तियाँ इमली की पत्तियों जैसी होती हैं।

३९. **चँपला**—गुलदस्ते की तरह होता है। इसके पेड़ की पत्तियाँ अखरोट की पत्तियों की तरह होती हैं। दो वर्ष में फूलता है। जब इसकी छाल पानी में उबालते हैं तो पानी लाल हो जाता है। यह बहुधा पहाड़ में होता है। इसकी लकड़ी मोमबत्ती की तरह जलती है।

४०. **लाही**—इसका पौधा १½ गज ऊँचा होता है। फूलने से पहले उसके डण्ठलों का शाक बनाते हैं और इसको खाकर ऊँट मोटे और मस्त हो जाते हैं।

४१. **करौंदा**—जूही की तरह होता है।

४२. **धनन्तर**—नीलूफर की तरह बहुत सुन्दर और बेलदार होता है।

४३. **सिरस**—इस फूल में रेशमी धागों की तरह रेशे होते हैं और आकार में तुमागा से मिलता-जुलता है। दूर से सुगन्ध देता है। यद्यपि हिन्दू लोग पीपल और बरगद की पूजा करते हैं तथापि इसको पेड़ों का राजा कहते हैं। इसका पेड़ बहुत बड़ा होता है और लकड़ी मकान बनाने के काम आती है। उसके तने के भीतर से काली लकड़ी निकलती है जिस पर बसूला नहीं चलता।

४४. **कँगलाई**—इसमें पाँच पंखड़ियाँ होती हैं। प्रत्येक पंखड़ी चार अंगुल लम्बी होती है। फूल सुन्दर होता है और हर डाल पर एक ही फूल खिलता है।

---

† दोगला जाफरान को शायद मुअसफर कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

४५. सन —गुलदस्ते की तरह खिलता है। इसकी पत्तियाँ चिनार की पत्तियों से मिलती-जुलती हैं। इसके पेड़ की छाल से रस्सियाँ बटते हैं। यह बहुत मजबूत होती है। एक प्रकार के सन का फूल कपास के फूल की तरह होता है। उसको **पटसन** कहते हैं। उसकी रस्सियाँ बहुत नर्म होती हैं।

मुझ जैसे अज्ञान व्यक्ति के द्वारा हिन्दुस्तान के फूलों का वर्णन किया जाना कठिन है। लोगों की जानकारी के लिए कुछ का उल्लेख किया गया है। ईरानी और तूरानी फूल जैसे गुले सुर्ख (गुलाब), नरगिस, बनफशा, यास्माने कबूद, सौसन, रैहाँ, राना, जेबा, शकाइक, ताजे खुरूस, कलगा, नाफरमान, और खतमी इत्यादि भी अधिकता से होते हैं। जगह जगह बाग और चमन हैं जो आँखो को ताजगी देते हैं। पहले लोग अपने बागों में बिना किसी क्रम के पौधों को लगाते थे परन्तु जब से स्वर्गीय बाबर बादशाह हिन्दुस्तान में आए तब से क्यारियों का बनाना और बागों का सजाना आरम्भ हुआ।† चित्ताकर्षक भवनों का निर्माण हुआ और कलकल ध्वनि करने वाले चश्मे तैयार हुए जिनको देखकर यात्री चकित हो गए।

इस देश के उन पेड़ों का वर्णन करना असम्भव है जिनके फूल, फल, कलियाँ, पत्ते और जड़ आदि भोजन तथा औषधि के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। हिन्दुओं की पुस्तकों में ऐसा लिखा है कि यदि प्रत्येक प्रकार के वृक्ष की एक पत्ती लें तो १८ बार (बोझ) इकट्ठे हो जाँयगे। ५ सुर्ख का १ माशा, १६ माशे का १ कर्ग, ४ कर्ग का १ पल, १०० पल का १ तुला, २० तुला का १ बार होता है। यदि इस बोझ को वर्तमान समय के बाँटों से तौलें तो ९६ मन होगा। वही पुस्तकें यह भी कहती हैं कि पेड़ का जीवन दो घड़ी से कम और दस हजार वर्ष से अधिक नहीं होता। किसी पेड़ की ऊचाई एक हजार योजन तथा कुछ अधिक से आगे नहीं बढ़ती। कहते हैं कि जब पेड़ मरता है तब उसका प्राण इन दस पदार्थों में से किसी एक में मिल जाता है: अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, वनस्पति, पशु, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय तथा पंचेन्द्रिय प्राणी।

आईन ३१

वस्त्रशाला

बादशाह के ध्यान देने से तरह तरह के वस्त्र बनने लगे और ईरानी, यूरोपीय, और मंगोल वस्त्रों की अधिकता हो गई। चतुर उस्ताद और कारीगर भारत में आए और कारीगरी सीखने का बाजार गर्म हुआ। शाही कारखानों में लाहौर, आगरा, फतेहपुर, अहमदाबाद, और गुजरात में अत्युत्तम वस्त्र बनने लगे हैं और तरह २ के चित्र, बेल-बूटे काढ़े और बनाए गए जिनको देखकर संसार के वस्तु-पारखी यात्री चकित हो गए। थोड़े समय में बादशाह ने इस उद्योग का सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त कर लिया। उनकी गुणग्राहकता के कारण तीव्र बुद्धि शिल्पकारों ने इस विषय की उत्तम शिक्षा प्राप्त कर ली। सब प्रकार के ऊनी कपड़ों की बुनाई और रेशम की कताई उन्नति के शिखर पर पहुँच गई और जितनी कारीगरियाँ संसार में पाई जाती हैं वह सब शाही कारखानों में जमा हो गईं। इससे अनेक लोगों को सजावट का शौक पैदा हो गया और सभाओं की सजावट वर्णनातीत हो गई। खरीदी हुई, बुनी हुई, उपहार के रूप में मिली हुई सब वस्तुयें बहुत सावधानी के साथ सुरक्षित रखी जाती हैं और जिस क्रम से वे रखी गयी थीं उसी क्रम से वे फिर निरीक्षण, काटने, सीने, पहनने या उपहार रूप में देने के लिए निकाली जाती हैं। एक साथ आई हुई वस्तुओं

---

† अबुल फज्ल की यह धारणा बिल्कुल गलत है क्योंकि संस्कृत साहित्य में अनेक चित्ताकर्षक उपवनों तथा वाटिकाओं का सुन्दर वर्णन मिलता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

का मूल्य आँका जाता है और मूल्य की कमी या अधिकता के दृष्टिकोण से उनकी श्रेणी और क्रम निर्धारित किए जाते हैं। अनुभवी कर्मचारी सदा सब वस्तुओं का भाव मालूम करते रहते हैं और पुराने तथा नए भावों की तुलना करते हैं। थोड़े ही समय में माल की अधिकता हो गई और मूल्य घट गया। उदाहरणार्थ, गयास नक्शबन्द के हाथ का तैयार किया हुआ जो माल पहले १०० मुहरों पर खरीदा जाता था उसका मूल्य अब ५० मुहर रह गया और बहुत सी वस्तुओं का मूल्य तीस के बदले दस या चालीस के बदले दस हो गया।* बादशाह की उदारता के कारण हर समुदाय के लोग अपनी रीति-रिवाज के अनुसार कपड़े पहनते हैं और कोई रोक-टोक नहीं करता। यह विवरण बहुत लम्बा है इसलिए बाध्य होकर लेखक उन वस्त्रों में से केवल कुछ का वर्णन लिखता है जो बादशाह पहनते हैं :

१. **टकौचिया**—हिन्दुस्तानी शैली का बिना अस्तर का वस्त्र है। अगले समय में इसका दामन फटा (या खुला) रहता था और बाईं तरफ बाँधा जाता था। बादशाह ने इसको गोल दामन का बनवाया और दाहनी ओर बंद लगवाया। यह ७ गज और ८ गिरह में तैयार होता है और पाँच गिरह में बंद बनते हैं। सादी सिलाई की मजदूरी ३ रु० से १ रु० तक है। जिस टकौचिया में अनेक प्रकार के बेल-बूटे बनाए जाते हैं उसकी सिलाई १ रु० से ४$\frac{3}{4}$ रु० तक होती है और इसमें एक मिस्काल रेशम खर्च होता है।

२. **पेशवाज**—यह उपरोक्त वस्त्र की तरह होता है परन्तु बंद सामने लगाते हैं। कुछ लोग बिना बंद का पेशवाज तैयार करते हैं।

३. **दुताही**—इस कपड़े में ६ गज ४ गिरह उपल्ले के लिए, ६ गज अस्तर के लिए और ४ गिरह बंद के लिए और ६ गिरह गोट के लिए खर्च होता है। इसके बनाने की मजदूरी ३ रु० से १ रु० तक है और एक मिस्काल रेशम खर्च होता है।

४. **शाह अजीदा**—एक गिरह में ६० नगन्दे† बनाते हैं इसलिए इसको शस्त खत भी कहते हैं। अधिकतर इसमें दो अस्तर होते हैं। कुछ लोग इसमें रुई डालते हैं। इसको बनाने की मजदूरी २ रु० प्रतिगज है।

५. **सोजनी**—इसमें $\frac{1}{4}$ सेर रुई और २ दाम रेशम लगता है। बखिया करने वाले की मजदूरी ८ रु० और अजीदा करने वाले की मजदूरी ४ रु० है।

६. **कलमी**—इसमें $\frac{3}{4}$ सेर रुई और १ दाम रेशम लगता है और मजदूरी २ रु० है।

७. **कबा**—प्रचलित भाषा में इसको जायये पम्बादार (रुईदार जामा) कहते हैं। इसमें १ सेर रुई और २ मिस्काल रेशम खर्च होता है। मजदूरी १ रु० से $\frac{1}{4}$ रु० होती है।

८. **गदर**—यह कबा से लम्बा और चौड़ा होता है और इसमें रुई भी अधिक भरते हैं। हिन्दुस्तान में पोस्तीन‡ का काम करता है। इसमें ७ गज कपड़ा उपल्ले में, ६ गज अस्तर में, ४ गिरह बन्द में और ६ गिरह गोट में खर्च होता है। २$\frac{1}{2}$ सेर रुई और ३ मिस्काल रेशम काम में लाया जाता है। सिलाई १$\frac{1}{2}$ रु० से $\frac{1}{2}$ रु० तक।

९. **फर्जी**—इसमें बंद नहीं होते और सामने खुला होता है। कुछ लोग इसमें तकमा (घुंडी) लगाते हैं। बहुधा इसको जामे के ऊपर पहनते हैं। इसको बनाने में उपल्ला ५ गज १२ गिरह, अस्तर ५ गज ५ गिरह, गोट १४ गिरह; १ सेर रुई और १ मिस्काल रेशम लगता है। मजदूरी १ रु० से $\frac{1}{4}$ रु० तक है।

१०. **फरगुल**—यापंजीऽ से मिलता-जुलता है परन्तु उससे अधिक सुन्दर तथा सुखद है। यह यूरोपीयनों का

---

* यों कह सकते हैं कि बहुत सी वस्तुओं का मूल्य ६६$\frac{2}{3}$ या ७५ प्रतिशत कम हो गया। † नगन्दा का अर्थ ब्लाकमैन ने ornamental stitche, लिखा है। दे० पृ० ९५। जामेउल्लुगात में इसका अर्थ 'बखिया' लिखा है। परन्तु सन्दर्भ से पता चलता है कि 'डोभ' से तात्पर्य है। ‡ Fur-coat अर्थात् गर्म तथा नर्म रोयें वाले पशुओं की खाल का बना हुआ कोट। ऽ एक कोट जो वर्षा में पहनते हैं; बरसाती कोट।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आविष्कार है परन्तु आजकल सब छोटे-बड़े इसको पहनते हैं और अपनी शान बढाते हैं। यह तरह तरह के कपड़ों से बनाया जाता है। इसके उपल्ले में ९ गज ६½ गिरह, अस्तर में ९ गज ६½ गिरह, ६ मिस्काल रेशम और १ सेर रुई खर्च होती है। यह बिना अस्तर के या अस्तर के सहित होता है। मजदूरी २ रु० से ½ रु० तक होती है।

११. **चकमन**—बानात, ऊन और मोमजामे से बनाया जाता है। बादशाह ने इसे दाराई मोमजामे का बनवाया है जो बहुत हल्का और सुन्दर है। पानी उससे छनकर भीतर नहीं जाता। यह ६ गज में बनता है। ५ गिरह के बंद लगते हैं और २ मिस्काल रेशम खर्च होता है। बानाती चकमन की मजदूरी २ रु०, ऊनी की १½ रु० और मोमजामें की ½ रुपया है।

१२. **शलवार**—तरह-तरह के कपड़ों से सिली जाती है। एक तही, दो तही और रुईदार होती है। इसमें ३ गज ११ गिरह कपड़ा लगता है। नेफा में ६ गिरह, अस्तर में ३ गज ५ गिरह कपड़ा, १¼ मिस्काल रेशम और ½ सेर रुई खर्च होती है। मजदूरी ½ रु० से ¼ रु० तक होती है।

इन वस्त्रों में से हर एक विभिन्न प्रकार का होता है। पगड़ी, पटुका और दुपट्टा का वर्णन करना कठिन है। जो बहुमूल्य वस्त्र बादशाह उत्सवों में पहनते हैं या उमरा को उपहार देते हैं वे वर्णनातीत हैं। हर मौसम के लिए १००० विशेष वस्त्र शाही वस्त्रागार के लिए बनाए जाते हैं और बारह गठरियों में १२० वस्त्र हर समय तैयार रखते हैं। सांसरिक वस्तुओं से उदासीनता के कारण सम्राट् ऊनी वस्त्रों को बहुत पसन्द करते हैं और काम में लाते हैं खासकर शाल।* बादशाह के प्रताप का एक नमूना यह है कि उनके वस्त्र प्रत्येक मनुष्य के शरीर पर ठीक हो जाता है चाहे वह लम्बा और चाहे नाटा। और लोग यह देख कर चकित रह जाते हैं।

बादशाह ने हर वस्त्र को एक नया नाम प्रदान किया है और यह नाम बहुत कर्ण-प्रिय है।

पुराने नाम	अकबर के दिए हुए नाम
जामा	सर्वगाती (सब शरीर को ढकने वाला वस्त्र)
इजार	यारेपीराहन (अंगरखे का साथी)
नीमतना	तनजेब (शरीर शोभा)
फौता	पतगत
बुर्का	चित्रगुपिता (चित्रगुप्त)
कुलाह	शीश शोभा
मुयेबाफ (चोटी)	केशधन

पुराने नाम	अकबर के दिए हुए नाम
पट्का	कटिजेब (कटि-शोभा)
शाल	परम नर्म
फर्द (एक प्रकार का ऊनी वस्त्र है)	परम गर्म
कपूर धूर (तिब्बत में बुना जाता है और बहुत बढ़िया होता है)	कपूर नूर
पाये अफजार (जूता)†	चरन धरन

इस प्रकार अकबर ने बहुत सी चीजों को नया नाम देकर विख्यात किया।

आईन ३२

शाल

कार्य कुशल बादशाह ने चार प्रकार के शाल बनवाये। पहला, तूस—इसी नाम के पशु के बालों से तैयार की जाती है। उसका प्राकृतिक रंग काला, सफेद और लाल, विशेषकर काला है। कभी कभी शाल बिल्कुल सफेद

---

* अबुलफज्ल संकेत करते हैं कि अकबर उच्चकोटि का सूफी था क्योंकि सूफी लोग ऊन पहनते थे। फारसी में ऊन को 'सूफ' कहते हैं। † सैयद अहमद के फारसी ग्रन्थ में 'पाय अफराज' आया है और सैयद अहमद ने हाशिये में इसका अर्थ पापोश या कफ्श अर्थात् जूती लिखा है। यही शब्द शुद्ध मालूम पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

होता है। हल्केपन, गर्मी और नर्मी में यह अद्वितीय है। इसकी सुन्दरता के कारण लोग इसके रंग में परिवर्तन नहीं करते थे। बादशाह ने इसको विभिन्न रंगों से रगवाया। आश्चर्य यह है कि यह लाल रंग नहीं पकड़ता। दूसरा, **सफेद अल्चा**—इसके अपने वास्तविक रग में तरहदार भी कहते हैं। ऊन सफेद या काला होता है। यह तीन प्रकार के बुने जाते हैं—सफेद, काला और मिश्रित। पहले समय में सफेद शाल तीन या चार रंग में रग जाते थे। बादशाह ने भिन्न भिन्न रंगों में रंगवाया। तीसरा, जरदोजी, कलाबतून, कशीदा, कलगाई, बाँधनू, छींट, अल्चा, पुर्जदार—बादशाह के आविष्कार हैं। चौथा, बादशाह ने कमअर्ज वाले कपड़ों को इतना अर्जदार कर दिया कि उनसे जामा बन सकता है।

शालों की श्रेणियाँ दिन, महीना, साल, मूल्य, रंग, और वजन के हिसाब से निर्धारित कर शाही वस्त्रागार में क्रमानुसार रखते हैं। इस विभाग को वर्तमान समय की प्रचलित भाषा में **मिस्ल** कहते हैं। इस विभाग के मुशरिफ प्रत्येक शाल की श्रेणी एक कपड़े के टुकड़े पर लिखकर शाल के कोने में टाँक देते हैं। यदि एक ही प्रकार के शाल इलाही सन् के फरवरदीन महीने के उर्मुज्द* के दिन शाही वस्त्रागार में आवें और यदि वे अच्छे प्रकार के हों तो उनको ऊँची श्रेणी दी जाती है अपेक्षा उन शालों के जो दूसरे दिनों को आते हैं। यदि शाल मूल्य में बराबर हों तो दिन के हिसाब से† बढ़िया और घटिया समझते हैं। यदि दाखिले का दिन एक ही होता है तो हल्का शाल श्रेष्ठ माना जाता है। यदि शालों का वजन एक ही होता है तो रंग के हिसाब के उनको अच्छा या बुरा समझते हैं। रंगों का क्रम इस प्रकार है : तूस, सफेद अल्चा, लाल, जरीं (सुनहला), नारंजी, बिरंजी (पीतल का रंग), किरमिजी (गहरा लाल), काही, गुले पुंबई (कपास का फूल), सन्दली (चन्दन), बदामी, अरगवानी (बैगनी), उन्नाबी, तोतली (तोता जैसा), असली (शहद जैसा), सौसनी, मंजनी (रतन मंजनी), गुले कासनी, सेबी (सेब जैसा), अलफी (घास का रंग), पिस्तई (पिस्ते जैसा), पुरगुल†, गुलखारे बरन‡, भोजपत्र, गुलाबी, आस्मानी, कलगी, आबी (पानी जैसा), जैतूनी, जिगरी (जिगर जैसा), जमुर्रदी, चीनी, बनफशई (बनफशा जैसा), चेहरई (हल्का गुलाबी), अम्बोहई (आम जैसा), मुश्कीं (कस्तूरी जैसा), फाख्तई (फाख्ता जैसा)। एक दिन की व्यवस्था से एक साल भर का अनुमान कर सकते हैं।

पहले शालों को लोग समय समय पर कश्मीर से लाते थे। इनके प्रेमी इनकी चार तहें करके बहुत दिनों तक ओढ़ते थे। आजकल छोटे-बड़े सभी बिना तह के शाल को अपने कंधों पर डालते हैं अर्थात् ओढ़ते हैं। बादशाह ने शाल को दो तह करके ओढ़ना आरम्भ किया जो देखने में बहुत सुन्दर लगता है। बादशाह की कृपा से कश्मीर में शाल बुनने के उद्योग ने बहुत उन्नति प्राप्त की। लाहौर में हजार से अधिक कारखाने खुल गए। वहाँ रेशम और ऊन से शाल तैयार किया जाता है उसे मायाँ कहते हैं और यह दोनों पगड़ी और पटका बनाने में भी काम आते हैं।

लोगों की अधिक जानकारी के लिए इस कारखाने की एक छोटी सी तालिका दी जाती है :

जरीं (सोने के काम किए हुए कपड़े)

नाम		मूल्य	नाम		मूल्य
जरबफ्त मखमल			,, गुजराती	,,	१० मोहर से ५० मोहर
,, यज्दी[1]	एक थान	१५ मोहर से १५० मोहर	,, काशी[3]	,,	१० मोहर से ४० मोहर
,, फिरंगी[2]	,,	१० मोहर से ७० मोहर	,, हेरावी[4]	—	—

* पहला दिन। † अकबर शुभ और अशुभ दिनों में विश्वास करता था। ‡ इन शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं है। [1] यज्द की बनी हुई। यज्द खुरासान प्रान्त के दक्षिण ओर एक विख्यात नगर है। [2] यूरोपीय। [3] काशान की बनी हुई। काशान फारस में इस्फहान के उत्तर में, एक स्थान है जहाँ से रेशमी वस्त्र तथा गुलाब जल का निर्यात होता है। [4] हेरात की बनी हुई।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम		मूल्य
जरबफ्त लाहौरी	एक थान	१० मोहर से ४० मोहर
,, बरसेह[1]	,,	३ मोहर से ७० मोहर
,, मुतब्बक[2]	,,	२ मोहर से ७० मोहर
,, मीलक	,,	३ मोहर से ७० मोहर
जरबफ्त गुजराती[3]	,,	४ मोहर से ६० मोहर
तास गुजराती[4]	,,	१ मोहर से ३५ मोहर
दाराई बाफ[5]	,,	२ मोहर से ५० मोहर
मुकैय्यश	,,	१ मोहर से २० मोहर
शिरवानी	,,	६ मोहर से १७ मोहर
मुशज्जर फिरंगी[7]	प्रतिगज	१ मोहर से ४ मोहर
देबा[8]	,,	१ मोहर से ४ मोहर
,, यज्दी	,,	१ मोहर से १½ मोहर

नाम		मूल्य
खारा[9]	,,	५ रु० से २ मोहर
अतलस खताई (चीनी साटन)		—
नवार खताई		—
खज्ज		—
तफसीला (मक्का से आता है)	,,	१५ रु० से २० रु०
कुर्तावार गुजराती	,,	१ मोहर से २० मोहर
मिन्दील	,,	१ मोहर से १४ मोहर
चीरा	,,	½ मोहर से ८ मोहर
दुपट्टा	,,	६ रु० से ८ रु०
फौता	,,	½ मोहर से १२ मोहर
पलङ्गपोश	,,	१ मोहर से २० मोहर

रेशमी कपड़े

नाम	मूल्य
मखमल फिरंगी	प्रतिगज १ मोहर से ४ मोहर तक
,, काशी[10]	प्रतिथान २ ,, ७ ,,
,, यज्दी	,, २ ,, ४ ,,
,, मशहदी[11]	,, २ ,, ४ ,,
,, हेरवी	,, १½ ,, ३ ,,
,, खाफी	,, २ ,, ४ ,,
,, लाहौरी	,, २ ,, ४ ,,
,, गुजराती	प्रतिगज १ रु० से २ रु० तक

नाम	मूल्य
कतीफा पूर्वी[12]	,, १ ,, १½ ,,
ताजाबाफ	प्रतिथान २ मोहर से ३० मोहर तक
दाराई बाफ	,, २ ,, ३० ,,
मुतब्बक	,, १ ,, ३० ,,
शिरवानी	,, १½ ,, १० ,,
मीलक	,, १ ,, ७ ,,
कमखाब विलायती[13]	,, १ ,, ५ ,,
तवार[14]	,, १ रु० से २ मोहर तक

[1] इस स्थान का पता नहीं। श्री रामलाल पांडेय का अनुमान है कि "कदाचित् यह पौलैंड का वारसा हो या उत्तर इटली का बैरीज हो। पिछले स्थान में आजकल भी रेशम का अच्छा काम होता है।" [2] मुतब्बक एक प्रकार का वस्त्र जो मुख्यतया खल्लुख से और मीलक नौशाद से आते थे जो तुर्किस्तान में स्थित थे। [3] एक प्रकार का रेशमी वस्त्र जिसकी बुनाई में सोने के तारों से या कलाबत्तू देकर बेल बूटे बनाए जाते हैं। [4] तास साधारणतया कमखाब (brocade को कहते हैं। [5] दाराई बाफ एक प्रकार का किमखाबी रेशम (brocaded silk) है। [6] मुकैय्यश वह रेशम है जिस पर चाँदी की धारियाँ हों। गयासुल्लुगात के अनुसार यह हिन्दी 'केश' का अरबी रूप है। यहाँ पर सोने और चाँदी के तारों की तुलना बालों से की गई है। [7] मुशज्जर एक प्रकार का रेशमी वस्त्र है जिसमें पत्तियाँ और शाखायें बनी हुई हों। [8] देबा रङ्गीन रेशम है। [9] खारा या खारह एक बारीक और धारीदार रेशमी वस्त्र है जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि धूप में रखने से वह टुकड़े टुकड़े हो जाता है।—गयासुल्लुगात। [10] काशान का बना हुआ। [11] मशहद का बना हुआ। [12] एक प्रकार का मखमल। [13] काबुल और फारस की बना हुआ। [14] एक प्रति में 'नवार' या 'नेवार' पाठ है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम	मूल्य
खूरी	— ४ रु० से १० रु० तक
मुशज्जर फिरंगी	प्रतिगज २ रु० से मोहर
,, यज्दी	प्रतिथान १ मोहर से २ मोहर तक
अतलस फिरंगी (यूरोपीय साटन)	प्रतिगज २ रु० से १ ,,
अतलस हेरावी	प्रतिथान ५ रु० से २ ,,
खारा	प्रतिगज १ ,, ६ रु०
सेहरंग*	प्रतिथान १ मोहर से ३ मोहर
कुतनी†	,, १½ रु० से २ ,,
कतान फिरंगी‡	प्रतिगज ½ ,, १ रु० तक
ताफ्ता ऽ	,, ¼ ,, २ ,,
अंबरी	,, ४ दाम से ½ ,,
दाराई	,, ⅛ ,, २ ,,

नाम	मूल्य
सितीपुरी	प्रतिथान ६ रु० से २ मोहर तक
कबावंद	,, ६ ,, २ ,,
टाट बन्दपुरी	२ ,, १½ ,,
लाह	प्रतिगज ⅓ ,, ⅙ रु०
मिस्री	प्रतिथान ½ मोहर से १ मोहर
सार	प्रतिगज १/१० रु० से ⅛ रु० तक
टसर	प्रतिथान ⅓ ,, २ ,,
अतलस सादा कुर्तावार	प्रतिगज ½ ,, १ ,,
कपूरनूर जिसको पहले कपूरधूर कहते थे	प्रतिगज ¼ ,, १ ,,
अल्चा	प्रतिगज ⅛ ,, २ ,,
तफसीला	प्रतिथान ८ ,, १२ ,,

सूती कपड़े

नाम		मूल्य
खासा		३ रु० से १५ मोहर तक
चौतार⊙		२ ,, ६ ,,
सालू		३ ,, २ ,,
डोरिया		६ ,, २ ,,
मलमल	प्रति थान	४ ,,
तनसुख	,,	४ ,, ५ ,,
सिरीसाफ[1]	,,	२ ,, ५ ,,
गंगा जल[2]	,,	४ ,, ५ ,,
भैरों (या भीरो)[3]	,,	४ ,, ४ ,,
सहन[4]	,,	१ मोहर से ३ ,,

नाम		मूल्य
झोना	प्रतिथान	१ रु० से १ मोहर तक
अटान	,,	२½ ,, १ ,,
असावली	,,	१ मोहर से ५ ,,
बाफ्ता	प्रति थान	१½ रु० से ५ मोहर तक
महमूदी	,,	½ मोहर ३ ,,
पञ्चतौलिया[5]	,,	१ ,, ३ ,,
झोला	,,	½ ,, २½ ,,
सालू	,,	३ रु० से २ ,,
डोरिया	,,	६ ,, २ ,,
बहादुरशाही	,,	६ ,, २ ,,

* तिरङ्गा; रङ्ग बदलने वाला रेशमी कपड़ा। † रेशम और ऊन का बना हुआ वस्त्र। ‡ बहुत ही महीन वस्त्र। इतना बारीक होता है चाँदनी पड़ने से फट जाता है। ऽ भली भांति बुना हुआ रेशमी वस्त्र। ⊙ चौतार हवेली सहारनपुर में बुना जाता था।—रामलाल पांडेय। [1], [3] सिरीसाफ तथा भैरों खानदेश के अन्तर्गत धरन गाँव में तैयार होते थे। [2] एक बारीक सफेद कपड़ा जो घोड़ाघाट (बंगाल) में बुना जाता था। [4] गाढ़े की जाति का एक गफ, चिकना सूती कपड़ा जो मगहर में अच्छा तैयार होता है। [5] पंचतौलिया का उल्लेख द्वितीय ग्रन्थ में मनसबदार नं० १९ गयासबेग के जीवन चरित्र के सम्बन्ध में हुआ है। नूरजहाँ ने ओढ़नी के स्थान में पञ्चतौलिया का चलन चलाया था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम		मूल्य	नाम		मूल्य
गरबासूती	प्रतिथान	१½ मोहर से २ मोहर तक	कतांनचा	—	१ ” १ ”
दक्खिनी शेला	”	½ ” २ ”	फौता	—	½ ” ६ ”
मिहिरकुल*	”	३ रु० से २ ”	गोशपेच†	—	१ ” २ ”
मिन्दील	—	½ मोहर से २ ”	छींट	प्रति गज	२ दाम से १ रुपये तक
सरबन्द	—	½ ” २ ”	गजीना	”	½ रु० से १½ ”
डुपट्टा	—	१ रु० से १ ”	सिलाहटी	”	२ दाम से ४ दाम तक

ऊनी कपड़े

नाम		मूल्य	नाम		मूल्य
सकलात (बानात)			रेवकार	प्रति थान	२ रु० से १ मोहर तक
फिरंगी, पुर्तगाली	प्रतिगज	२½ रु० से ४ मोहर तक	मिस्री	”	५ ” ५० रु० तक
सकलात नागौरी व लाहौरी	प्रतिथान	२ ” १ ”	बुर्देयमनी	”	५ ” ३५ ”
सूफ मुरब्बा	”	४ मोहर से १५ ”	मांजी नमद	”	२ ” १ मोहर तक
सूफ मुसज्जर	”	३ रु० से १½ ”	कंपक नमद	”	२ ” १ ”
परम नर्म	”	२ ” २० ”	तकियानमद विलायती	”	—
चीरा परम नर्म	”	२ ” २५ ”	तकियानमद हिन्दी	”	१½ ” ५ रु० तक
फौता	”	½ मोहर से ३ ”	अगरी	”	७ ” २½ मोहर तक
जामावार परम नर्म	”	½ ” ४ ”	परम गर्म	”	३ ” ” ”
गोश पेच	”	१½ रु० से १½ ”	कतास	”	२½ ” १० ”
सरपेच	”	½ मोहर से ४ ”	लोई	—	१४ दाम ४ रु० तक
फूक	”	२½ रु० से १५ रु० तक	कम्बल	”	१० ” २ ”
दुर्मा	”	२ ” ४ मोहर तक	कुलाह कश्मीरी	एक नग	२ ” १ ”
पट्टू	”	१ रु० से १० रु० तक			

आईन ३३

रंगों की उत्पत्ति

रंगों में सफेद और काले को मूल समझते हैं। वे दोनों सिरों पर (आत्यन्तिक) गिने जाते हैं और शेष रंग इन्हीं दोनों के मिश्रण से बनते हैं। अधिक सफेद और थोड़े काले रंग को मिलाने से पीला रंग बनता है। यदि सफेद और काला बराबर हो तो लाल रंग पैदा होता है। थोड़ा सफेद रंग और अधिक काले रंग के साथ मिलाने से हरा रंग बनता है। दूसरे रंग दूसरे अनुपातों से उत्पन्न होते हैं। सर्दी तर चीज को सफेद, और सूखे को काला बना देती है। गर्मी तर चीज को काला और सूखे को सफेद कर देती है। यह दोनों कारण (गर्मी और सर्दी) अपनी २ जगह पर वस्तु

---

* मिहिरकुल इलाहाबाद में बुना जाता था—रामलाल पांडेय। † विभिन्न प्रतियों में विभिन्न पाठ हैं जैसे महजर, मुखैयर, मजहज, मुखिर आदि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के रंग में परिवर्तन पैदा करते हैं और वस्तुयें इन शक्तियों के प्रभाव को ग्रहण करने की क्षमता रखती हैं और वे ग्रहों तथा नक्षत्रों से विशेषकर सूर्य से, जो गर्मी का स्रोत है, प्रभावित होती हैं।

आईन ३४

चित्रशाला

आकृति आकृतिवान् को प्रकट करती है और आकृतिवान् भाव को प्रकट करता है। इस प्रकार लिपि से हमें अक्षर या शब्द का बोध होता है और फिर इससे भाव का पता चलता है। यद्यपि चित्र में, जैसा साधारणतया प्रसिद्ध है, शरीर का आकार उतारते हैं पर यूरोप के चित्रकार सुन्दर चित्रों में उदारता और क्रोध आदि आन्तरिक भावों का चित्रण करते हैं और अल्पबुद्धि उन्हें वास्तविक वस्तु समझते हैं तथापि लिखित अक्षर चित्र से बहुत श्रेष्ठ होते हैं क्योंकि यह पूर्व कालीन लोगों के अनुभव का हमें ज्ञान देता है और बौद्धिक विकास का साधन है।

अतएव पहले लेखक लेखन कला के विषय में कहता है क्योंकि वह दोनों कलाओं (लेखन कला तथा चित्र कला) में से श्रेष्ठ है। सम्राट् इन पर बहुत ध्यान देते हैं और जाहिर (आकार form) और बातिल (विचार thought) में बहुत गम्भीर दृष्टि रखते हैं। वास्तव में, सौन्दर्य के उपासकों की दृष्टि में वर्ण अवरुद्ध प्रकाश का प्रतिष्ठान है और दूरदर्शियों की दृष्टि में वह संसार की झलक दिखाने वाला प्याला* है। वर्ण एक चमत्कार या आध्यात्मिक ज्यामिति है जो आविष्कार की लेखनी से निकला है अथवा वह एक दिव्य आलेख है जिसे भाग्य के हाथों ने लिखा है। यह वार्ता के रहस्य का धारक है और हाथ की जिह्वा है। वार्ता केवल उपस्थित लोगों के हृदय को शक्ति देती है परन्तु वर्ण दूरवर्ती तथा निकटवर्ती सबको ज्ञान प्रदान करता है। यदि लिखित वर्ण न होते तो वार्ता का जीवन स्थिर न होता और अतीत कालीन लोगों का उपहार हृदय तक न पहुँचता। स्थूलदर्शी वर्ण को केवल काला चिह्न समझते हैं परन्तु सूक्ष्मदर्शी इसको ज्ञान का दीपक मानते हैं। लिखित वर्ण एक अंधकार है परन्तु इसमें सहस्त्रों ज्योतियाँ होती हैं। नहीं, नहीं, यह एक प्रकाश है जिस पर एक तिल है जिससे उसे नजर न लग जाय।† वर्ण ज्ञान का चित्रकार है, विचार-जगत की श्यामता है, अँधेरी रात है जिससे सूर्योदय होता है, काला बादल है जो ज्ञान की वृष्टि करता है, अन्तर्प्रकाश रूपी कोश के लिए ऐसा अद्भुत इन्द्रजाल है जो मूकावस्था में भी बोलता है, अचल होने पर गतिशील है, और पड़ा रहने पर ऊचाई पर उड़ता है।

ईश्वरीय ज्ञान का आभास मनुष्य की आत्मा पर पड़ता है। मन उसको विचार जगत में ले जाता है जो

---

* जामे गेती नुमाय—कहते हैं कि फारस के बादशाह जमशेद ने एक प्याला बनाया था जिससे सातों आसमानों का रहस्य प्रकट हो जाता था। † फारसी शायरों की दृष्टि में प्रेयसी का सौन्दर्य अधूरा रहता है जब तक उसके चेहरे पर तिल न हो। हाफिज अपनी प्रेयसी के कपोल पर के तिल के लिए समरकन्द और बुखारा को उपहार में दे देने को तैयार थे। दूसरे कवि तिल को एक ताबीज समझते हैं जो कुदृष्टि से प्रेयसी के सौन्दर्य की रक्षा करता है।

अगर आँ तुर्के शीराजी बदस्त आरद मारा।
बखाले हिन्दुअस बख्शम समरकन्दो बुखारा रा ॥—हाफिज

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

व्यक्तिगत अस्तित्व की चेतनता (मुजर्रद)* और जड़ (माद्दी) का मध्यवर्ती है, जिससे वह तु रुदों† से सम्बन्ध स्थापित करे और पूर्ण (मुत्लक) सीमाबद्ध हो जाय। इसके पश्चात् वह मिश्रित आभास जिह्वा पर आता है और वायु की सहायता से दूसरों के कान में प्रवेश करता है। इसके बाद शनैः शनैः भौतिक सम्बन्ध के बोझों को अपने कंधों से फेंक देता है और अपने स्थान (विचार-जगत) को वापस चला जाता है। कभी कभी आकाश का यह यात्री उँगलियों के पोरों की सहायता से भिन्न दिशा में चलता है और लेखनी रूपी महाद्वीप तथा स्याही रूपी महासागर पार करके पृष्ठ के समृद्धनगर में उतरता है और पाठक के नेत्रों के मार्ग से अपने आदिम निवास-स्थान (विचार-जगत) को लौट जाता है।

चूँकि वर्ण उच्चरित ध्वनि का प्रतीक है इसलिए लेखक के लिए आवश्यक प्रतीत होता है कि ध्वनि के विषय में कुछ कहे और ज्ञान-दीप प्रज्वलित करे। ध्वनि एक विशेष अवस्था का नाम है जो वायु-तरङ्गों की विभिन्नता से पैदा होती है। जब दो पदार्थ कठोरता के साथ टकराते हैं तो उसको **करअ** कहते हैं और जब कठोरता के साथ एक दूसरे से पृथक होते हैं उसको **कलअ** कहते हैं। दोनों दशाओं में मध्यवर्ती वायु जल की भाँति तरङ्गित होती है और उससे जो अवस्था उत्पन्न होती है उसको ध्वनि कहते हैं। कुछ लोग इसको दूरवर्ती कारण कहते हैं और वायु-तरङ्ग की गति को ध्वनि कहते हैं परन्तु कुछ लोग इसको निकटवर्ती कारण मानते हैं और करअ या कलअ को ही ध्वनि समझते हैं। ध्वनि की अन्य अवस्थायें भी होती हैं जैसे जेरी (अनुदात्त या नीचा स्वर), बमी (उदात्त या ऊँचा स्वर), गुन्नगी (अनुनासिक या नक्की), और बहूहत (कण्ठ्य) जो गला पड़ जाने से पैदा होती है। जिस अङ्ग से मनुष्य ध्वनि उत्पन्न करता है उसकी बनावट तथा वायु के परमाणुओं के पृथक्करण की विधि के अनुसार दूसरी अवस्था उत्पन्न होती है, जब दो जेर (अनुदात्त स्वर), दो बम (उदात्त स्वर), दो गुन्ना (अनुनासिक स्वर), और दो बहूहत (कण्ठ्य स्वर) एक दूसरे से पृथक होते हैं। इसी को ध्वनि कहते हैं। यही मत अबू अली सीना का है। कुछ बुद्धिमान मौलिक अवस्था के रूपान्तर को ध्वनि समझते हैं। बहुत से दूरदर्शी लोग रूपान्तरकारी तत्व तथा रूपान्तरित मौलिक अवस्था के संयोग को ध्वनि कहते हैं, और यही राय ठीक है।

---

* मुजर्रद का अर्थ जामेयुल्लुगात में 'अकेला', 'तारिकुद्दुनिया' (दुनिया का छोड़ने वाला) और 'आजाद' दिया है। गयासुल्लुगात में इसका अर्थ दिया है 'नंगा किया हुआ', 'दलीलों और अलामतों से मकसद पर पहुँचने वाला दार्शनिकों का समूह'। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ लिखा है, 'that which is conscious of individual existence' अर्थात् वह जो व्यक्तिगत अस्तित्व की चेतनता रखता है। श्री रामलाल पांडेय ने इसका अर्थ चेतनता लिखा है। यह वाक्य बहुत सन्दिग्ध है। ब्लाकमैन ने इसका अनुवाद इस प्रकार किया है, 'when a ray of God's knowledge falls on man's soul, it is carried by the mind to the realm of thought, which is the intermediate station between that which is conscious of individual existence (mujarrad) and that which is material (maddi). The result is a concrete thing mixed with the absolute, or an absolute thing mixed with that which is concrete.' (जब ईश्वरीय ज्ञान की एक किरण मनुष्य की आत्मा पर पड़ती है, तो मन उसे विचार-जगत में ले जाता है जो वैयक्तिक अस्तित्व के चेतनाधारक के और जड़ पदार्थ के बीच का मध्यवर्ती स्थान है। इससे मूर्त्त वस्तु पूर्ण से या पूर्ण वस्तु मूर्त्तवान् से मिश्रित होती है।), पृ० १०३। श्री रामलाल पांडेय ने यों लिखा है : 'ईश्वरीय ज्ञान-राशि का आभास, जब मनुष्य की आत्मा पर पड़ता है, तो मन उसको विचार-प्रदेश में—जो कि चेतनता और जड़ता का मध्यवर्ती स्थान है—पहुँचाता है, जिससे शुद्ध पदार्थ संश्लिष्ट हो जाता तथा स्वच्छन्दता बद्ध हो जाती है।'—पृ० २२१। † इसका अर्थ है 'उच्चरित शब्द अथवा ध्वनि से प्रकट किया हुआ विचार'।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हिन्दी भाषा में ५२ ध्वनियाँ होती हैं, यूनानी में अमुक* और फारसी में अठारह† । अरबी में २८ वर्ण होते हैं परन्तु उनके आकार १८ ही होते हैं और यदि हमजा को अलिफ से पृथक न करें तो मिलावट में केवल १५ रह जाते हैं। (मुफरद) अरबी वर्णमाला में अमिश्र वर्णों के अन्त में अलिफ और लाम को संयुक्ताक्षर के रूप में (ला) लिखने का कारण यह है कि साकिन वर्ण को किसी अन्य वर्ण के साथ मिलाना आवश्यक है और लाम को इस लिए चुना है कि लाम (ल की ध्वनि) अलिफ ध्वनि के बीच में आता है और अलिफ (अ की ध्वनि) लाम के बीच में आता है। पूर्व काल में ऐराब‡ नहीं थे। वर्णों पर कुछ विभिन्न रङ्ग के बिन्दु लगाए जाते थे। उदाहरणार्थ, यदि किसी अक्षर के ऊपर लाल बिन्दु लगाया जाता था तो वह जबर (अकार) का चिह्न समझा जाता था; यदि उसके सामने लगाया जाता था तो पेश (उकार) का काम करता था और यदि नीचे लगाया जाता था तो जेर (इकार) का काम करता था। खलील बिन अहमद अरूजी§ ने हर स्वर के लिए एक चिह्न निर्धारित किया जो आज तक प्रचलित है। यह बात निपुण लोगों से छिपी नहीं है कि वर्ण और उसके अवयवों की सुन्दरता देखने वालों की रुचि के अनुसार विभिन्न होती है। इसलिए प्रत्येक समुदाय की अपनी अपनी वर्णमाला होती है जैसे हिन्दी, सुरियानी⊙, यूनानी, इबरी∠, किबती (काप्टिक), मअकली, कूफी, कश्मीरी, हब्शी, रैहानी, अरबी, फारसी, रूमी, हिमारी, बर्बरी, अन्दुलसी, तथा रूहानी आदि जिनका पुरानी किताबों में वर्णन है। कुछ पद्यों △ में लिखा गया है कि आदम हफ्त हजारी ⋀ ने इबरी वर्णों का आविष्कार किया है और एक समुदाय का कहना है कि इसके आविष्कारक इदरीस ± हैं। कुछ लोग कहते हैं कि इन्होंने मअकली वर्णों को पूरा किया। अनेक लोग कहते हैं कि हजरत अली ने मअकली लिपि से कूफी लिपि निकाली थी। वर्णों में सतह (सरल रेखा) तथा दौर (गोल रेखा)γ के अनुपात के कारण विभिन्नता हुआ करती है। इस प्रकार कूफी वर्ण में ⅓ गोल रेखायें और शेष (अर्थात् ⅔) सीधी रेखायें होती हैं और मअकली में सब सीधी रेखायें होती हैं। इससे प्राचीन इमारतों पर खुदे हुए लेख अधिकतर इसी लिपि में हैं। वह लिपि अच्छी है जिसमें स्याही और सफेदी इस ढङ्ग से पृथक हों कि पढ़ने में कोई भ्रम न उत्पन्न हो। आजकल ईरान, तूरान, रूम और हिन्दुस्तान में सुलेखन-कला के वर्ण की आठ शैलियाँ ⋀ प्रचलित हैं और प्रत्येक समुदाय एक विशेष लिपि से अनुराग रखता है। इनमें से छः को इबने मुकला ने ३१० हिजरी में मअकली और कूफी वर्णों से निकाला जिनके नाम सुल्स, तौकीअ, मुहक्कक, नस्ख, रैहाँ, और रिकाअ हैं। एक समुदाय गुबार लिपि को भी उनमें सम्मिलित करता है और कहता है कि यह सातों लिपियाँ उसी की आविष्कार

---

* अबुल फज्ल यूनानी भाषा की ध्वनियों की संख्या देना भूल गया। † लेखक फारसी में केवल १८ वर्ण आकृतियाँ मानता है क्योंकि जीम, चे और खे की मूल आकृति एक ही है। ‡ जेर (इकार), जबर (अकार) और पेश (उकार); अर्थात् स्वर ध्वनियों के चिह्न। § कहते हैं कि यह हिजरी सन् १०० में पैदा हुए थे और हिजरी सन् १७५ या १९० में बसरा में मरे। उन्होंने इल्मे अरूज का आविष्कार किया और उस पर अनेक ग्रन्थ लिखे। इन्होंने काव्य तथा कोश सम्बन्धी कई ग्रन्थों का भी निर्माण किया था। ⊙ सीरिया का। ∠ यहूदी। △ मुद्रित ग्रन्थ में 'अशआर इबरी' पाठ है, किन्तु एक मूल प्रति के आधार पर सैयद अहमद ने 'इस्फार इबरी' शुद्ध पाठ माना है जिसका अर्थ होता है इबरानी भाषा के ग्रन्थ। ⋀ इनको हफ्त हजारी इसलिए कहते हैं कि इनकी मृत्यु के समय तक संसार में मनुष्यों की संख्या ७००० थी। बदायूनी ने इससे अधिक बुद्धि-संगत कारण बतलाया है। उसके अनुसार उक्त व्यक्ति के समय तक आदम को ७००० वर्ष हो चुके थे। ± यह एक पैगम्बर थे जिनके विषय में कहा जाता है कि वह जीवितावस्था में स्वर्ग पहुँच गए थे। γ 'सतह' को 'कशिश' या 'मद' अर्थात् सरल रेखा कहते हैं और 'दौर' 'दायरे' अर्थात् गोल या वर्तुलाकार रेखा को कहते हैं जैसे बे, ते तथा टे में सतह है और सीन, मून और काफ में दौर है। ⋀ यह ध्यान देने की बात है कि पूरे आईन में विद्वान् लेखक ने कहीं भी मुद्रण कला की ओर संकेत नहीं किया है। Giovanni Gonsalvez की लिखी हुई Doctrina Christiana पहली पुस्तक है जो सन् १५७७ ई० में भारत में छपी थी।—ब्लाकमैन, पृ० १०६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं। कुछ लोग नस्ख को याकूत मुस्तअसमी* का आविष्कार समझते हैं। सुल्स और नस्ख में $\frac{1}{3}$ गोल रेखायें और $\frac{2}{3}$ सीधी रेखायें होती हैं। पहली (सुल्स) का नाम जली† और दूसरी (नस्ख) का नाम खफी‡ है। तौकीअ और रिकाअ में $\frac{3}{4}$ गोल रेखायें और $\frac{1}{4}$ सीधी रेखायें होती हैं। पहली (तौकीअ) जली और दूसरी (रिकाअ) खफी है। मुहक्कक और रैहाँ में $\frac{3}{4}$ सीधी रेखायें होती हैं। पहली (मुहक्कक) जली और दूसरी (रैहान) खफी है। अली बिन हेलाल, जो इब्ने बव्वाबेऽ के नाम से प्रसिद्ध है, इन छहों को खूब सुन्दर लिखता था। याकूत ने उनको कमाल पर पहुँचाया। इसके छः प्रसिद्ध शिष्य थे: १. शेख अहमद जो शेख जादा सुहरवर्दी के नाम से संसार में प्रसिद्ध है; २. अरगून काबुली; ३. मौलाना यूसुफ शाह मशहदी; ४. मौलाना मुबारक शाह जर्री कलम; ५. हैदर गन्दाह नवीस (अर्थात् जली-लेखक); और ६. मीर याहया। निम्नलिखित सुलेखक भी छहों प्रकार की लिखावट के उस्ताद थे: सूफी नसरुल्लाह जिसको सद्रे इराकी भी कहते हैं; अरकून; अब्दुल्ला; ख्वाजा अब्दुल्ला सैरफी; हाजी मुहम्मद; मौलाना अब्दुल्ला आशपज; मौलाना मुही शीराजी; मुईनुद्दीन तनूरी; शमसुद्दीन खताई; अब्दुर्रहीम खलूली; अब्दुल हई; मौलाना जाफर तब्रीजी; मौलाना शाह मशहदी; मौलाना शम्सुद्दीन बायसंगरी; मुईनुद्दीन फराही; अब्दुल हक सब्जवारी; मौलाना नियामतुल्लाह बव्वाब; मौलाना मारूफ बगदादी; ख्वाजगी मोमिने मरवारीद जो कागज को भिन्न-भिन्न रंगों का बनाने तथा उसपर छिड़की जाने वाली बुकनी का आविष्कारक था; सुल्तान इब्राहीम जो मिर्जा शाहरुख का पुत्र था; मौलाना मुहम्मद हकीम हाफिज; मौलाना महमूद सियाऊश; मौलाना जमालुद्दीन हुसेन; मौलाना पीर मुहम्मद; मीर फजलुल्हक कजवीनी।

सातवें प्रकार की लिखावट तालीक है जो रिकाअ और तौकीअ से निकली है। इसमें सीधी रेखायें बहुत कम होती हैं। इसको ख्वाजा ताज सल्मानी ने कमाल पर पहुँचाया जो छः अन्य लिपियों को भी बहुत सुन्दर लिखता था। कुछ लोग कहते हैं कि यह उसका आविष्कारक है। वर्तमान कालीन सुलेखकों में मौलाना अब्दुल हई जो सुल्तान अबू सईद मिर्जा के मुन्शी थे γ 'तालीक' को बहुत सुन्दर लिखते थे। मौलाना दर्वेश ⊙ अमीर मंसूर; मौलाना इब्राहीम

---

* याकूत खलीफा मुस्तअसम बिल्ला का गुलाम था। मुस्तअसम बिल्ला ने १२४२ से १२५८ तक शासन किया जब चंगेज खाँ के पौत्र हुलागू ने उनकी हत्या कर दी। † जली का अर्थ है साफ। यह मोटे कलम से और साफ साफ लिखा जाता है। ‡ खफी का अर्थ है गुप्त। यह 'जली' शब्द का विपरीत है। ऽ इबन मकला, इब्न बव्वाब और याकूत सबसे पुराने सुलेखक थे। इसका पूरा नाम अबू अली मुहम्मद इब्न अली इब्न हसन इब्न मकला था। वह बगदाद के तीन खलीफों मुकतदिर बिल्लाह, अलकाहिर बिल्लाह और अर्राजी बिल्लाह का मन्त्री था। इन खलीफों ने ९०७ ई० से ९४० ई० तक शासन किया। अन्तिम अर्राजी बिल्लाह ने अप्रसन्न होकर उसका दाहिना हाथ कटवा लिया था और उसे बन्दी बना लिया था। ९३८-३९ ई० में बन्दीगृह में उसका प्राणान्त हो गया।

इब्न बव्वाब अथवा अबुल हसन अली इब्नहिलाल महमूद गजनवी के समसामयिक पच्चीसवें खलीफा अल-कादिर बिल्लाह (९९२-१०३० ई०) के शासन काल में था और १०२५ ई० में इसका देहान्त हो गया।

याकूत का दूसरा नाम शेख जमालुद्दीन था। उसका जन्म बगदाद में हुआ था। वह सैंतीसवें और अन्तिम खलीफा मुस्तअसम बिल्लाह का पुस्तकालयाध्यक्ष था। शिया मत की ओर उसकी प्रवृत्ति होने के कारण एक बार खलीफा ने उसे कैद कर लिया था। वह हलागू खाँ के कत्लआम (१२५८ ई०) से बच गया था। उसकी मृत्यु १२० वर्ष की अवस्था में सन् १२९७ ई० में हुई।

γ मूलग्रन्थ पृष्ठ ११४ पंक्ति ५ में गलती से मौलाना अब्दुल हई और 'मुन्शी' के बीच में 'वाव' लग गया है। वास्तव में यह एक ही व्यक्ति का नाम है।

⊙ मौलाना दर्वेश मुहम्मद खुरासान के बादशाह सुल्तान हुसेन मिर्जा (१४७० से १५०५ ई०) के मन्त्री अमीर अली शेर का मित्र और जामी कवि का सरक्षक था। बाद में उसने फारस के बादशाह शाह जुनैद सफवी (१४९९-१५२५ ई०) के यहाँ नौकरी कर ली थी। मआसिरे रहीमी (पृ० ७५१) में मौलाना का जीवनवृत्त दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अस्तराबादी; ख्वाजा इख्तियार;* मुन्शी जमालुद्दीन; मुहम्मद कजवीनी; मौलाना इदरीस; ख्वाजा मुहम्मद हुसेन मुन्शी भी सुलेख के लिए प्रसिद्ध थे। बादशाह के मीर मुन्शी अशरफ खाँ† ने इस लिपि में बहुत सुधार किया।

आठवीं लिपि नस्तालीक है। इसमें सब गोल रेखायें ही होती हैं। तैमूर के समय में ख्वाजा मीर अली तब्रीजी ने इस लिपि को **नस्ख** और **तालीक** से निकाला था परन्तु इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता क्योंकि तैमूर के समय के पहले की नस्तालीक लिपि में लिखी हुई पुस्तकें देखने में आई हैं। मीर अली तब्रीजी के दो शिष्य‡ मौलाना जाफर तब्रीजी और मौलाना अजहर इस लिपि में दूसरों से बाजी ले गए। नस्तालीक के दूसरे सुलेखकों में मौलाना मुहम्मद औबहीऽ इस कला में अद्वितीय हैं। मौलाना बारी हेरावी एक दूसरे अच्छे सुलेखक हैं। सबसे बढ़कर मौलाना सुल्तान अली मशहदीγ हैं यद्यपि उन्होंने मौलाना अजहर से कुछ नहीं सीखा तथापि उनकी शैली का अनुकरण किया। उनके छः शिष्यों ने नाम कमाया : सुल्तान मुहम्मद खन्दाँ⊙; सुल्तान मुहम्मद नूर; मौलाना अला-उद्दीन हेरावी ±; मौलाना जैनुद्दीन; मौलाना अब्दी नीशापुरी; मुहम्मद कासिम शादी शाह। इनमें से प्रत्येक ने नस्तालीक को एक विशेष रीति से लिखा जिसको लोगों ने पसन्द किया। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य व्यक्तियों ने नस्तालीक में सुलेख लिखे जैसे मौलाना सुल्तानअली कायिनी△; मौलाना सुल्तानअली मशहदी∧; मौलाना हिजरानी ∴। इन लोगों के बाद सुलेखकों की सूची में मौलाना मीरअली हेरावी∀ प्रथम हैं। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से यह मौलाना जैनुद्दीन के शिष्य थे तथापि मौलाना सुल्तान अली के सुलेखों का अनुकरण करके यह उस्ताद हुए। अपनी प्रतिभा से उन्होंने लेखन कला प्रणाली में परिवर्तन किया और स्मारक-स्वरूप अनेक प्रसिद्ध कृतियाँ छोड़ीं। एक बार किसी ने उनसे प्रश्न किया, "आपकी शैली और मौलाना की शैली में क्या अन्तर है?" उन्होंने उत्तर दिया "यद्यपि मैंने इस शैली को चरम

---

* ख्वाजा इख्तियार मौलाना इब्राहीम असतराबादी का समकालीन तथा सफल प्रतिद्वन्द्वी था। यह सुल्तान हुसेन मिर्जा का मीर मुंशी था। † मशहद के, या तबकाते अकबरी के अनुसार, अरबशाही के मुहम्मद असगर नामक एक सैयद की यह उपाधि थी। उसने मीर मुंशी, मीर अर्जी और मीर माली के रूप में हुमायूँ की सेवा की थी। जब तरदी बेग दिल्ली से भागा था तब यह भी उसके साथ था। बैराम खाँ ने उसे बन्दी बना लिया। तत्पश्चात् वह मक्का चला गया। जब ९६८ हिजरी में बैराम का पतन हो गया तो वह फिर अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ और दूसरे वर्ष अशरफ खाँ की उपाधि से विभूषित हुआ। फिर मुनीम खाँ की अध्यक्षता में उसने बङ्गाल में सेवा की। ९७३ हिजरी में उसका देहावसान हो गया। ग्रन्थ द्वितीय में मनसबदारों की सूची में अबुल फज्ल ने उसे दो हजारी लिखा है और बदायुनी ने उसका उल्लेख समकालीन कवियों में किया है। ‡ 'मिरात' में मीर अली के तीसरे शिष्य मौलाना ख्वाजा मुहम्मद का भी नाम आया है और लिखा है कि वह अपनी कृतियों में मीर अली का नाम देता था किन्तु इससे मीर अली अप्रसन्न नहीं होता था। ऽ औबह का निवासी। औबह हिरात के निकट है। γ यह भी खुरासान के बादशाह (१४७० से १५०५ ई०) के मंत्री अमीरअली शेर का मित्र था। ९१० हिजरी में उसका शरीरान्त हो गया। ⊙ चूँकि वह सदा प्रसन्न रहता था इसलिए वह खन्दाँ कहलाता था। वह भी अमीर अली शेर का मित्र था। ९१५ हिजरी में इसकी मृत्यु हो गई। ± 'मकतूबात' में उसका नाम अलाउद्दीन मुहम्मद हेरावी लिखा है। △ सुल्तान हुसेन मिर्जा के बच्चों का शिक्षक था। अफगानिस्तान की सीमा के निकट, खुरासान के दक्षिण-पूर्व, फारस में 'काइन' या 'गायन' नामक एक नगर था। यह वहीं का निवासी था। इसकी मृत्यु ९१४ हिजरी में हुई। ∧ मकतूबात के अनुसार इसका पूरा नाम मौलाना सुल्तान अली शेर मशहदी था। ∴ कवि तथा अमीर शेर अली का मित्र था। ९२१ हिजरी में इसका देहावसान हो गया। ∀ हिरात का निवासी एक सैयद था जिसका प्राणान्त ९२४ हिजरी में हुआ। कवि के रूप में उसकी गणना दिल्ली के अमीर खुसरो के पुत्र मीर अहमद और अकबर के संरक्षक बैराम खाँ खानखाना के साथ दख्ल कविता के उस्तादों में की जाती है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उत्थान तक पहुँचाया है तथापि मौलाना की शैली में एक अन्य ही आकर्षण है। उपरोक्त व्यक्तियों के अतिरिक्त निम्नलिखित और व्यक्तियों ने इसके अभ्यास में अपना जीवन व्यतीत किया : शाह महमूद नीशापुरी❀, महमूद इसहाक, शमसुद्दीन किरमानी; पहेलियों के लेखक मौलाना जमशेद; सुल्तान हुसेन खुजन्दी; मौलाना ऐशी; सोने की कलई करने वाला गयासुद्दीन; मौलाना अब्दुस्समद; मौलाना मालिक; मौलाना अब्दुल करीम; मौलाना अब्दुर्रहीम ख्वारिज्मी, मौलाना शेखमुहम्मद; मौलाना शाह महमूद जर्रीं कलम; मौलाना मुहम्मद हुसेन तबरीजी†, मौलाना हसन अली मशहदी‡, मीर मुइज्ज काशी (काशान का निवासी), मिर्जा इब्राहीम इस्फहानी तथा कुछ अन्य व्यक्ति।

सम्राट् के गुण-ग्राहकता तथा कलाभिज्ञता के कारण भिन्न भिन्न लिपियों की बहुत उन्नति हुई और बहुत से चतुर सुलेखक पैदा हो गए हैं। नस्तालीक लिपि का विशेष प्रचलन हुआ है। जिस मनोमोहक सुलेखक ने राजसिंहासन की छत्र छाया में उच्चतम ख्याति प्राप्त की उसका नाम मुहम्मद हुसेन कश्मीरी‡ है जो 'जर्रीं कलम' की उपाधि से संसार में विख्यात है। यह मौलाना अब्दुल अजीज का शिष्य है परन्तु अपने गुरु से भी आगे बढ़ गया है। इसके मद्दातऽ और दवायर⊙ उचित अनुपात में होते हैं और विशेषज्ञ उसको मुल्ला मीरअली का समकक्ष मानते हैं। प्रसिद्ध मुल्ला मीर अली के पुत्र मौलाना बाकर, मुहम्मद अमीन मशहदी, मीर हुसेन कुलंकी, मौलाना अब्दुल हई, मौलाना दौरी△, मौलाना अब्दुर्रहीम, मीर अब्दुल्ला, निजामी कजवीनी, अली चमन कश्मीरी और नुरूल्ला कासिम अरसलाँ ने भी इस शासन काल में ख्याति प्राप्त की।

अपनी बुद्धिमानी से सम्राट् ने पुस्तकालय को कई भागों में बाँटा है। कुछ पुस्तकें राज-प्रासाद के भीतर और कुछ बाहर रखी जाती हैं। इन दोनों में से प्रत्येक को कई उपभागों में विभक्त किया है। सदैव विभिन्न विद्या तथा विषयों की पुस्तकों को मूल्य के विचार से उच्च तथा निम्न पद देते हैं। पद्य, गद्य, हिन्दी, फारसी, यूनानी, कश्मीरी और अरबी की पुस्तकें अलग अलग रखी जाती हैं। इसी क्रम से वे बादशाह के सामने लाई जाती हैं। अनुभवी लोग प्रति दिन उनको बादशाह के सामने पढ़ते हैं और वह प्रत्येक पुस्तक को आरम्भ से अन्त तक सुनते हैं। प्रति दिन जहाँ तक पुस्तक पढ़ी जाती है वहाँ सम्राट् अपनी कलम से चिह्न लगा देते हैं और पृष्ठों की संख्या के अनुसार पाठक को सोना या चाँदी पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। प्रसिद्ध पुस्तकों में से कम ऐसी होंगी जो बादशाह के दरबार में न पढ़ी जाती हों। कोई ऐतिहासिक घटना, विज्ञान के अद्भुत तथ्य अथवा दर्शन के विषय ऐसे न थे जो इस बुद्धिमानों में श्रेष्ठ बादशाह को न मालूम हो। किसी पुस्तक को बार २ सुनने से बादशाह ऊबते नहीं बल्कि और अधिक रुचि के साथ सुनते हैं। अखलाके नासिरी, कीमियाये सआदत, काबूस नामा, शरफे मुनेरी के ग्रन्थ, गुलिस्ताँ, हदीका, मसनवीए मअनवी, जामे जम, बोस्ताँ, शाहनामा, खमसये शेख निजामी, खुसरो और मौलाना जामी के लिखे हुए ग्रन्थ, खाकानी और अनवरी के दीवान और इतिहास के अन्य ग्रन्थ सदा सम्राट् के सम्मुख पढ़े जाते हैं। भाषाविदों से सदैव हिन्दी, यूनानी, अरबी और फारसी की पुस्तकों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद कराया जाता है। जीचिये जदीदे मिर्जाई के कुछ भाग का अनुवाद अमीर फतेह उल्लाह शीराजी की देखरेख में हुआ और इस ग्रन्थ के

❀ मक्तूबात और मिरआत में शाह मुहम्मद नीशापुरी लिखा है। दोनों ग्रन्थों में मीर सैयद अहमद नामक एक और सुलेखक का उल्लेख है। † मिरआत में उल्लेख किए हुए प्रसिद्ध सुलेखक इमाद का गुरु था। ‡ अकबर की मृत्यु के छः वर्ष उपरान्त १०२० हिजरी में उसकी मृत्यु हो गई। ऽ 'मद्दात' 'मद' का बहुवचन है। इसका अर्थ है 'विस्तार'। इससे सुलेखकों का तात्पर्य फे और बे जैसे वर्णों से है। ⊙ 'दवायर' 'दायरा' का बहुवचन है। इसका अर्थ है 'गोलाई'। इससे सुलेखकों का तात्पर्य जीम और नून जैसे वर्णों से है। △ उसका वास्तविक नाम सुल्तान बायजीद हिरावी था। कविता में उसका उपनाम दौबरी था। अकबर ने उसको कातिबुलमुल्क की उपाधि दी थी। उसका शिष्य ख्वाजा मुहम्मद हुसेन था जो एक अहदी था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेखक की व्याख्यानुसार किशनजोशी, गंगाधर, और मोहेश महानन्द हिन्दी (संस्कृत) से फारसी में अनूदित हुए। महाभारत का जो हिन्दुस्तान के प्राचीन ग्रन्थों में से एक है, नकीब खाँ❀ और मौलाना अब्दुल कादिर बदायूनी† और शेख सुल्तान थानेसुरी की देखरेख में हिन्दी (संस्कृत) से फारसी में अनुवाद हुआ। इसमें लगभग एक लाख हजार श्लोक हैं और बादशाह ने इस प्राचीन इतिहास का नाम रज्मनामा‡ रखा है। इन्हीं लोगों ने रामायण का फारसी में

❀ आईने अकबरी के द्वितीय ग्रन्थ के आईन ३० (प्रथम भाग) में इसका नाम आया है।

† मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी, जिसका कविता में उपनाम कादिरी है, दिल्ली के निकटस्थ कस्बा बदायूँ में ९४७ (अथवा ९४९) हिजरी में उत्पन्न हुआ था। वह अवस्था में अकबर से दो वर्ष बड़ा था। उसके पिता को लोग शेख मुल्क शाह कहते थे। वह संभल के सन्त बेचू का शिष्य था। उसकी मृत्यु ९६९ हिजरी में हुई थी। अब्दुल कादिर ने जो साधारणतया बदायूनी के नाम से अधिक विख्यात है, अपने समय के प्रसिद्ध तथा धार्मिक गुरुओं से विभिन्न विज्ञानों की शिक्षा ग्रहण की। इनमें से अधिकांश का उल्लेख उसने अपनी 'मुन्तखिबुत्तवारीख' के तृतीय भाग के आरम्भ में किया है। उसने संगीत, इतिहास तथा गणित-ज्योतिष में विशेष योग्यता प्राप्त की थी। उसका कंठ बहुत मधुर था इसलिए बुधवार के लिए वह दरबार का इमाम नियुक्त किया गया था। जलाल खाँ कूर्ची ने अकबर के दरबार में उसका प्रवेश कराया था। चालीस वर्ष तक बदायूनी शेख मुबारक और उसके पुत्र फैजी तथा अबुल फज्ल के साथ रहा किन्तु उनके साथ उसकी हार्दिक मित्रता कभी नहीं हुई क्योंकि वह उनको काफिर समझता था। अकबर की आज्ञा से उसने रामायण के २४००० श्लोकों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया जिसके लिए १५० अशर्फी और १०००० तंगा पुरस्कार में मिला। उसने महाभारत के कुछ भागों, 'तवारीख रशीदी' तथा 'बहरुल असमार' नामक ग्रन्थों का भी अनुवाद किया। उसके लिखे हुए नजातुर्रशीद नामक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि बंगाल की एशियाटिक सोसायटी के हस्त-लिखित ग्रन्थों में वर्तमान है। उसका ऐतिहासिक ग्रन्थ 'मुन्तखिबुत्तवारीख' बहुत बहुमूल्य है क्योंकि अकबर के शत्रु द्वारा लिखे जाने के कारण अकबर के गुणों और दोषों का जैसा चित्रण उसमें हुआ है वैसा 'अकबरनामा, 'तबकात अकबरी' अथवा 'मआसिर रहीमी' में नहीं हो पाया है। अकबर के धार्मिक विचारों के अध्ययन के लिए वह विशेष महत्वपूर्ण है। साथ ही इसमें अकबर के समय के प्रसिद्ध मनुष्यों तथा कवियों के जीवनवृत्त भी दिए गए हैं। इस इति-हास में हिजरी सन् १००४ अथवा अकबर की मृत्यु के ११ वर्ष पूर्व तक का हाल है। सम्भवतः १००४ हिजरी के बाद शीघ्र ही बदायूनी का देहान्त हो गया। यह इतिहास-ग्रन्थ गुप्त रखा गया था और 'मिरातुल आलम' के अनुसार जहाँगीर के शासन काल में प्रकाशित किया गया। जहाँगीर बदायूनी के पुत्रों से बहुत अप्रसन्न हुआ और वह उनके कथन का विश्वास नहीं करता था कि उनको स्वयं इस ग्रन्थ के अस्तित्व का पता नहीं था। 'तुजुके जहाँगीरी' में इस विषय का कहीं उल्लेख नहीं है। परन्तु १०२५ हिजरी, जहाँगीर के शासन के दसवें वर्ष तक यह ग्रन्थ अज्ञात था। इसी वर्ष मुआसिरे रहीमी नामक पुस्तक लिखी गई थी और उसके लेखक ने शिकायत की थी कि 'तबकात' और 'अकबरनामा' के अतिरिक्त अन्य कोई इतिहास ग्रन्थ नहीं है। बदायूनी की लेखन-शैली के विषय में ब्लाकमैन की धारण है कि 'मिरातुल आलम' के लेखक बख्तावरखाँ तथा 'आलमगीर नामा' के रचयिता मुहम्मद काजिम की शैली से उसकी शैली बहुत निकृष्ट है किन्तु 'तबकात' के लेखक अपने मित्र मिर्जा निजामुद्दीन अहमद हेरावी तथा 'बादशाह नामा' के लेखक अब्दुल हमीद लाहौरी की शैली से कुछ श्रेष्ठ है। ‡ बदायूनी ने लिखा है कि दो रात तक सम्राट् ने स्वयं महा-भारत के कुछ अंशों का अनुवाद किया और नकीब खाँ को आज्ञा दी कि उसका अर्थ साधारण फारसी में लिख दो। तीसरी रात को मुझे भी उसमें सम्मिलित कर लिया। तीन चार मास के उपरान्त १८ पर्वों में से दो का अनुवाद सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। वह मेरे अनुवाद से असन्तुष्ट हुआ और मुझको 'हरामखोर' और 'शलमखोर' कह कर डाँटा। उसका दूसरा भाग नकीब खाँ और मुल्ला शेरी ने समाप्त किया और कुछ भाग का अनुवाद सुल्तान हाजी थानेसुरी ने किया। तब शेख फैजी की नियुक्ति की गई। उसने गद्य और पद्य में दो पर्वों का अनुवाद किया तब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुवाद किया जो हिन्दुस्तान का प्राचीन ग्रन्थ है जिसमें रामचन्द्र का विस्तृत विवरण है और साथ ही दर्शनशास्त्र के अनेक अद्भुत तथ्य हैं। हाजी इब्राहीम सरहिन्दी ने अथर्वन* का अनुवाद किया जो हिन्दुओं के अनुसार चार अपौरुषेय ग्रन्थों (वेदों) में से एक है। लीलावती हिन्दुस्तान के गणितज्ञों की श्रेष्ठ पुस्तक है। मेरे बड़े भाई फैजी ने संस्कृत से फारसी में इसका अनुवाद किया। ताजक का, जो गणित-ज्योतिष की प्रामाणिक पुस्तक है, सम्राट् की आज्ञा से मुकम्मल खाँ गुजराती ने फारसी में अनुवाद किया। हजरत गेती सितानी‡ के वाकयात का अनुवाद मिर्जा खानखानाऽ ने तुर्की से फारसी में किया जिसमें व्यावहारिक सिद्धान्तों का निरूपण किया गया है। कश्मीर का इतिहास का जिसमें उस देश के चार हजार वर्षों का वर्णन हैं, मौलाना शाह मुहम्मद शाहाबादी ने कश्मीरी से फारसी में भाषान्तर किया। मुअजमुल बुल्दाँ का जिसमें शहरों और देशों के वृतान्त पाए जाते हैं मुल्ला अहमद ठट्ठा, कासिम बेग, शेख मुनव्वर, और अन्य भाषाविदों ने अरबी से फारसी में अनुवाद किया। हरिवंश का, जिसमें कृष्ण के जीवन का वर्णन है, मौलाना शेरी ने फारसी में अनुवाद किया। कलिला दमना⊙ का, जो व्यावहारिक ज्ञान की पुस्तक है फारसी में अनुवाद नसरुल्ला मुस्तवफी और मौलाना हुसेन वायज ने किया था। चूँकि इसमें अनेक अलङ्कार और कठिन शब्द आए थे, इसलिए सम्राट् की आज्ञा से इस ग्रन्थ लेखक (अबुलफज्ल) ने उसको सरल फारसी में लिखा और 'अयार दानिश' नाम रखा। नल और दमन△ की प्रेम कहानी का, जो संस्कृत के भावुक पाठकों के हृदयों को द्रवित कर देती है, अनुवाद शेख फैजी फैयाजी ने 'लैला मजनू' के मसनवी छन्द में फारसी पद्य में अनुवाद किया जो नल-दमन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जब बादशाह को नकल और अनुवाद के खजाने θ से जानकारी हुई तो उन्होंने अभिज्ञ इतिहासज्ञों को आज्ञा दी कि वे एक ग्रन्थ लिखें जिसमें सप्त भूखण्डों में अन्तिम हजार वर्ष में होने वाली घटनाओं के वृत्तान्त एकत्र हों। पहले नकीब खाँ और कुछ अन्य लोगों ने यह इतिहास आरम्भ किया। ठट्ठा के मौलाना अहमद ने इस पुस्तक का बहुत अधिक भाग लिखा। जाफर बेग आसफ खाँ ने इसको पूरा किया। इसका प्राक्कथन इकबाल नामा के लेखक (अबुलफज्ल) ने लिखा। इसका नाम **तारीख अल्फी**⊥ है।

हाजी ने दो और पर्वों का अनुवाद किया और जो भाग छूट गए थे उनका अनुवाद पूरा किया। थोड़े समय के उपरान्त वह दरबार से निकाल दिया गया। दूसरे अनुवादक और व्याख्याता काम में लगे हुए हैं। रज्म नामा चित्रों आदि से अलंकृत किया गया है और अमीरों द्वारा उसकी अनुकृतियाँ कराई गई हैं।

* सन १५७५ ई० में सम्राट् ने बदायूनी को अथर्ववेद का अनुवाद करने की आज्ञा दी। इसी वर्ष दक्षिण से शेख भावन आया था जो पहले विद्वान् ब्राह्मण था परन्तु बाद में मुसलमान हो गया था। भावन बदायूनी का सहायक नियुक्त हुआ। वेद में कुछ कठिनाइयाँ थीं जिनका अर्थ भावन कर सका। बदायूनी ने सम्राट् को इस बात की सूचना दी। इसलिए सम्राट् ने पहले शेख फैजी और बाद में हाजी इब्राहीम सर हिन्दी को यह काम सुपुर्द किया। यद्यपि हाजी की इच्छा थी तथापि उसने कुछ नहीं लिखा। इस प्रकार यह काम अधूरा ही रह गया। ‡ बाबर की उपाधि जिसका अर्थ है 'विश्व-विजेता'। ऽ अब्दुर्रहीम खानखाना।

⊙ कालीय दमन। △ दमयन्ती। θ ब्लाकमैन ने 'खजानए नक्ल' का अनुवाद Treasure of History (इतिहास-कोश) किया है। दे० पृ० ११३। ⊥ एक हजार वर्ष का इतिहास। हिजरी सन् १००० (१५५१-९२ ई०) में मुसलमानों में यह विश्वास फैला हुआ था कि इसलाम और संसार का अन्त निकट आ गया है। अतएव अनेक मनुष्यों ने अपने को इमाम मेंहदी घोषित करना आरम्भ कर दिया जो पृथ्वी पर ईसा के पुनरागमन के पहले आने वाले थे। बदायूनी भी इस विषय में दुविधा में पड़ गया। अकबर के शिष्यों ने इन किंवदन्तियों को दीन इलाही के प्रचार का शुभ लक्षण समझा। मालूम होता है कि तारीख अल्फी भी इसी भावना को महत्व देती थी। इसकी एक प्रति एशियाटिक सोसायटी बङ्गाल के पुस्तकालय में है। उसमें भूमिका नहीं है और वह पैगम्बर साहब की मृत्यु

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चित्रकला

किसी चीज की शक्ल खींचना (शबीहकशी) **तसवीर** (चित्र) कहलाता है। यह अध्ययन और मनोरंजन का सुन्दर साधन है। बालकपन से ही बादशाह ने इस काम पर ध्यान देने लगे जिससे उनकी उन्नति होती रही। इसलिए इस चित्ताकर्षक कला की उन्नति हुई और अनेक चित्रकारों ने इस कला में ख्याति प्राप्त की। दारोगा और बितक्ची हर सप्ताह में चित्रकारों की कृतियाँ को सम्राट् के सामने प्रस्तुत करते हैं और वह कला की श्रेष्ठता के अनुसार चित्रकारों को पुरस्कार देते हैं अथवा उनका मासिक वेतन बढ़ा देते हैं। चित्रकारी के मसाले काफी मात्रा में तैयार होने लगे और उनके मूल्य निर्धारित कर दिए गए। रङ्गों की मिश्रण कला का विशेष उत्थान हुआ और चित्रों की सफाई बहुत बढ़ गई। बहुत से उत्कृष्ट चित्रकार उत्पन्न हुए जिन्होंने बिहजाद❀ की अद्भुत कृतियों तथा यूरोपीयों के विश्व-विख्यात मौलिक चित्रों के समकक्ष चित्रों के ढेर के ढेर लगा दिए।

कार्य-लालित्य, बेलबूटों की सफाई, और हस्तकौशल तथा अन्य गुणों ने अद्वितीय स्थान प्राप्त किया और निर्जीव पदार्थ सजीव मालूम होते हैं। सौ से अधिक चित्रकार इस कला के अग्रणी हो गए हैं और उन्होंने उच्च ख्याति प्राप्त की है। जो लोग गन्तव्य स्थान के निकट पहुँचे हैं अथवा जो मध्य मार्ग में हैं उनकी संख्या बहुत अधिक है। हिन्दुओं का क्या उल्लेख करूँ जिनके चित्रों के भावों की कल्पना भी नहीं की जा सकती।† वास्तव में इस प्रकार की कला संसार के अन्य देशों में बहुत कम मिलेगी।

इस विद्या के राजमार्ग पर आगे चलने वालों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :

१. **मीर सैयद अली तबरीजी**‡—उन्होंने अपने पिता से शिक्षा प्राप्त की थी। जब से उन्होंने शाही दरबार में प्रवेश किया सम्राट् की उनपर विशेष कृपा रहने लगी। वह अपनी कला में बहुत प्रसिद्ध हुए और सफलता का सौभाग्य प्राप्त किया।

२. **ख़्वाजा अब्दुस्समद शीरींकलम शीराजी**—यद्यपि वह इस कला को बादशाह के दरबार में सेवा आरम्भ करने के पहले से जानते थे तथापि सम्राट् के दृष्टि-रसायन से वह उच्चतम पद पर पहुँचे और वह कला के बाह्य रूप से हट कर उसकी आत्मा तक पहुँच गए। उस उस्ताद के शिष्यों ने उसकी शिक्षा से दक्षता प्राप्त करली।

३. **दसवन्थ**ऽ—यह कहार का लड़का है। यह इस विभाग में सेवक था और चित्रकला में रुचि के कारण दीवारों पर चित्र तथा बेलबूटे बनाया करता था। एक दिन बादशाह की दूरदर्शी दृष्टि उस पर पड़ी। अपनी गम्भीर दृष्टि से उसकी प्रतिभा को पहचान कर बादशाह ने उसे ख्वाजा अब्दुस्समद को सौंप दिया। अल्प काल में वह अपने समय में अद्वितीय कलाकार तथा चित्रकला का सर्वश्रेष्ठ आचार्य हो गया किन्तु उसके पागलपन के अंधकार ने उसकी बुद्धि के प्रकाश को छिपा दिया और उसने आत्महत्या कर ली। उसकी सुन्दर कृतियाँ अब तक स्मृति के रूप में विद्यमान हैं।

४. **बसावन**—पृष्ठ भूमि-निर्माण, मुखमंडल-चित्रण, रंगों के मिश्रण, वस्तुओं का यथारूप चित्रण, तथा

(८ जून, ६३२ ई०) के बाद से आरम्भ होती है तथा उमर इब्ने अब्दुल मालिक के शासन-काल (७१७-१८ ई०) तक समाप्त हो जाती है। उसमें सनों की गणना मुहम्मद साहब की मृत्यु से की गई है, हिजरत के साल से नहीं।

❀ बिहजाद प्रसिद्ध चित्रकार था जो फारस के शाह इस्माईल सफवी के दरबार में रहता था। † अबुल फज्ज की सम्मति से एलफिन्स्टन की राय की तुलना कीजिए : देखिए पृष्ठ १७४, द्वितीय संस्करण : एलफिन्स्टन : हिस्टरी आफ इन्डिया। ‡ यह कवि भी थे और जुदाई नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं; देखिये द्वितीय ग्रन्थ के आईन ३० (तृतीय भाग) के पद्यात्मक उद्धरण। ऽ दशवन्त।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस कला के अन्य कार्यों में अपने समय में अद्वितीय हुआ। इस कला के अनेक समालोचक इसको दसवन्त से श्रेष्ठ समझते हैं।

केसू, लाल, मुकुन्द, मुशकीं, फर्रुख कलमाक, माधो, जगन, महेश, खेमकरन, तारा, साँवला, हरबंश, और राम इस काल के प्रसिद्ध कलाकार हैं। यदि हर एक के कामों का वर्णन किया जाय तो कथन लम्बा हो जायगा। इसलिए लेखक "हर बाग से एक फूल और हर खलियान से एक बाली चुनता है।"

आश्चर्य यह है कि वस्तुओं तथा व्यक्तियों के रूपों का निरीक्षण तथा उनके चित्र बनाने की गर्म बाजारी ने, जो पहले व्यर्थ का काम समझा जाता था, बुद्धिमानी को नया जीवन दे दिया और अज्ञान के रोगी दर्द की दवा पाकर स्वस्थ हो गए। कट्टर अंधविश्वासियों और चित्रकला के शत्रुओं की वास्तविकता देखने वाली आँख खुल गई। एक दिन बादशाह ने अपनी खास सभा में, जिसमें केवल उनके भाग्यशाली शिष्य ही जा सकते थे, कहा, 'एक वर्ग चित्रण कला का शत्रु है परन्तु ऐसे लोग मुझे पसन्द नहीं हैं। मेरा विचार है कि चित्रकार ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने में बहुतेरों से बढ़ जाता है क्योंकि वह प्राणियों के प्रत्येक अङ्ग का चित्र खींचता है और जब उसमें प्राण का संचार नहीं कर सकता है तब उसे प्राणदाता ईश्वर का ध्यान आता है और उससे परिचय प्राप्त करता है।" जिस तरह इस उद्योग का उत्थान हुआ उसी तरह सुन्दर चित्रों का निर्माण भी होने लगा। फारसी गद्य और पद्य की पुस्तकें चित्रों से अलंकृत की गईं और बहुत से चित्ताकर्षक चित्र का संग्रह किया गया। **दास्ताने हमजा** को बारह दफ्तरों (ग्रन्थों) में विभक्त करके चित्रों द्वारा सुशोभित किया गया और निपुण चित्रकारों ने कहानी के एक हजार चार सौ अनुच्छेदों से सम्बद्ध चित्र बनाए जिन्होंने देखने वालों को चकित कर दिया। चिंगिजनामा, जफरनामा,* यह इकबालनामा, रज्मनामा, रामायण, नलदमन, कलीला दमन, और ऐयार दानिश आदि पुस्तकें चित्रों से अलंकृत की गईं। बादशाह स्वयं अपना चित्र खिचाने के लिए बैठते हैं और उनकी आज्ञा से दरबार के अधिकारियों के चित्र भी खींचे गए और चित्रों की एक बड़ी किताब (album) तैयार की गई। अतीत के लोगों को नया जीवन दिया गया है और वर्तमान लोगों को अमरता प्राप्त हुई। जिस तरह चित्रकारों के पद ऊँचे हुए, उसी तरह, नक्काशों, सोने की कलई करने वालों, हाशिया सजाने वालों, सहाफान (जिल्दसाजों) का भी बाजार गर्म हुआ।

अनेक मनसबदार, अहदी और सवार इस विभाग में सेवा करके सम्मानित होते हैं। प्यादों का वेतन १२०० से ६०० दाम तक होता है।

आईन ३५

शस्त्रशाला

शस्त्रागार से राजकीय शालाओं का पद ऊँचा होता है। सेना अपने कर्तव्यों का पालन करती है और देश का कल्याण होता है। इसी कारण सम्राट् इस विभाग पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं और इसके सजाने में गम्भीर दृष्टि से काम लेते हैं। बादशाह ने नए नए तरीके आरम्भ किए और उनसे कार्य कुशलता बढ़ गई। बादशाह के सामने एक कवच पर गोली मारी गई परन्तु उस पर कोई चिह्न नहीं बना। सदैव इतने कवच तैयार रखे जाते है जो पूरी सेना के लिए पर्याप्त हों। व्यापारियों की सुविधा के लिए सम्राट् ने प्रत्येक अस्त्र-शस्त्र का मूल्य निर्धारित कर दिया है। जिन शस्त्रों का प्रयोग सम्राट् करते हैं, उनके नाम और पद नियत हैं। सम्राट् के प्रयोग में आने वाली तीस तलवारें

---

* शरफुद्दीन यज्दी द्वारा लिखा हुआ तैमूर वंश का इतिहास।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(**खासा शमशीर**) हैं जिनमें से प्रतिदिन एक उनके शयनागार में भेजते हैं और पहली वाली तलवार वापस लाते हैं और अन्तःपुर के बाहर के कर्मचारी उनको रखते जाते हैं। इनके अतिरिक्त चालीस दूसरी तलवारें तैयार रखी जाती जिनको **कोतल** कहते हैं। जब उपहार आदि देने के कारण **खासा** तलवारों में कमी हो जाती है और बारह तलवारें रह जाती हैं तो शेष तलवारें **कोतल** से पूरी कर दी जाती हैं। बारह यकबदी* हैं जिनमें से प्रत्येक की बारी एक सप्ताह बाद आती है। जमधर और **खपवा** चालीस चालीस हैं और प्रति सप्ताह एक के बाद दूसरे की बारी आती है। प्रत्येक के तीस **कोतल** हैं और उपरोक्त ढंग से कमी की पूर्ति की जाती है। आठ चाकू, बीस **नेजें**, और बीस **बर्छे** प्रति मास एक-एक काम में लाते हैं। छियासी **मशहदी** और **भदायन** धनुष और इनके अतिरिक्त चौबीस अन्य धनुष हैं जिनमें से हर महीने दो धनुष काम में लाए जाते हैं ·····†। इसी प्रकार प्रत्येक का पद निर्धारित किया गया है।

जब बादशाह सवार होकर बाहर जाते हैं और दरबार आम के समय, अमीरजादे, दूसरे मनसबदार और अहदी कूर (शस्त्रों) को अपने हाथों में और कंधों पर रख कर चलते हैं। चार चार आदमी चार चार तरकश, धनुष, तलवार और ढाल लिए रहते हैं।‡ इनके अतिरिक्त नेजा, बर्छा, कुल्हाड़ी, नुकीली कुल्हाड़ी, पियाजीऽ, गुर्ज, कमाने गुरोहा, कुतक, सन्दली क्रम और नियम के साथ उठाये जाते हैं। ऊँटों और खच्चरों की कई **कतारें** ⊙ विभिन्न प्रकार के हथियारों से लादी जाती हैं और तैयार रखी जाती हैं। कुछ गर्दून और बोख्तीγ आदि ऊँटों को सफर में हथियार ढोने के लिए तैयार रखते हैं। बादशाह के दरबार में अमीर और अन्य मनुष्य सेवा करने की प्रतीक्षा में कूर के बराबर खड़े रहते हैं और बादशाह की सवारी के समय वे पीछे चलते हैं परन्तु बादशाह के कुछ मुख्य सेवक, सुसज्जित हाथी, ऊँट, बहल, नक्कारे, झंडे, कौकबे, और शान शौकत के दूसरे सामान कूर के साथ रहते हैं। परिश्रमी यसावल (मुद्गर वाले) देख-भाल करते हैं और मीर बख्शी लोग उनकी सहायता करते हैं। जब बादशाह शिकार के लिए जाते हैं तो कुछ तेज दौड़ने वाले लोग उनके साथ होते हैं और कुछ लोग अपने पास सामान लिए रहते हैं।

वर्णन को संक्षेप करने के लिए कुछ हथियारों के नाम तालिका में दिए जाते हैं और कुछ हथियारों का चित्रों के द्वारा परिचय कराया जाता है।

हथियारों के नाम

नाम	मूल्य	नाम	मूल्य
१. शमशीर (थोड़ी झुकी हुई)	½ रुपये से १५ मोहर तक	९. जम्बवा	½ " १ "
२. खाँडा (सीधी तलवारें)	१ रुपये से १० रुपये तक	१०. कटारा	½ " १ "
३. गुप्ती असा	२ " २० "	११. नरसिंक मोठ	½ " २ "
४. जमधर (चौड़ी खंजर)	¼ " २½ मोहर तक	१२. कमान	⅛ " ३ "
५. खंजर	½ " ५ रुपये तक	१३. तख्श कमान	१ " ४ रुपये तक
६. खपवा	½ " १½ मोहर तक	१४. नावक	½ " १ मोहर तक
७. जमखाक	½ " १½ "	१५. तीर प्रति दस्ता या बंडल	½ " ३० रुपये तक
८. बाँक	½ " १ "		

* यह शब्द कोश में नहीं मिलता। † इसके बाद फारसी में एक वाक्य है जिसका अर्थ नहीं निकलता। ‡ प्रत्येक मनुष्य एक तरकश, एक धनुष, एक तलवार और एक ढाल लिए रहता है। ऽ एक प्रकार का मुद्गर, गुर्ज। ⊙ पाँच ऊँटों की पंक्ति कतार कहलाती है। अगले ऊँट की दुम में पिछले ऊँट की नकेल बाँध कर चलते हैं। γ एक प्रकार के ऊँट।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम	मूल्य
१६. तरकश	¼ रुपये से २ मोहर तक
१७. डडी	¼ ,, ५ रुपये तक
१८. तीरबरदार*	१ दाम से २½ दाम तक
१९. फैकानकश	¼ रुपये से ३ रुपये तक
२०. नेजा	१¾ ,, ६ मोहर तक
२१. बर्छा	¾ ,, २ ,,
२२. साँक (सांग)	¼ ,, १½ रुपये तक
२३. सैंथी	¼ ,, १ ,,
२४. सेलरा	१० दाम से ¾ ,,
२५. गुर्ज	¼ रुपये से ५ ,,
२६ शशपर	½ ,, ३ मोहर तक
२७. केस्टन†	१ ,, ३ रुपये तक
२८. तबर (कुल्हाड़ी)	¼ ,, २ मोहर तक
२९. पियाजी (एक प्रकार का मुद्गर)	½ रु० से ५ रु० तक
३०. जागमोल (नुकीली कुल्हाड़ी)	½ ,, १ मो० तक
३१. चकर वसूला	१ ,, ६ रु० तक
३२. तबर जागनोल	१ ,, ४ ,,
३३. तरंगग्यल	¼ ,, २ ,,
३४. कार्द	२ दाम से १ मोहर तक
३५. गुप्ती कार्द	३ रुपये से १½ रु० तक
३६. कम्ची कार्द	१ ,, ३½ ,,
३७. चाकू	२ दाम से ¼ ,,
३८. कमाने गुरोहा	२ ,, १ ,,
३९. कम्ठा	५ ,, ३ ,,
४०. तुफ्के दहान‡	१० ,, ½ ,,
४१. पुश्तखार	२ ,, ½ ,,
४२. शस्तावेज	२ ,, १ ,,
४३. गिरिह कुशा	१ ,, ¼ ,,
४४. खार माही	१ रुपये से ५ ,,
४५. गोभनऽ	१½ दाम से ¼ ,,
४६. गजबाग	१ रुपये से ५ ,,

नाम	मूल्य
४७. सिपर	१ ,, ५० ,,
४८. ढाल	½ ,, ४ मोहर तक
४९. खेरा	१ ,, ४ ,,
५०. पहरी	१ ,, १ ,,
५१. उदाना	½ ,, ५ रुपये तक
५२. दुबुल्गा	½ ,, ३½ मोहर तक
५३. खोबी	१ ,, ४ रुपये तक
५४. जिरिह कुलाह	१ ,, ५ ,,
५५. घुघुवा	१ ,, २ मोहर तक
५६. जैवाह	२० ,, ३० ,,
५७. जिरिह	१¾ ,, १०० ,,
५८. बकतर	४ ,, १२ ,,
५९. जोशन	४ ,, ९ ,,
६० चार आईना	२ ,, ७ ,,
६१. कोठी	५ ,, ८ ,,
६२. सादिकी	३ ,, ८ ,,
६३. अंगिरखा	१½ ,, ५ ,,
६४. भंजू	३ ,, २ ,,
६५. चेहरी जिरिहे आहनी	१½ ,, १ ,,
६६. सलह कबा	५ ,, ८ ,,
६७. चिहिल कद	५ ,, २५ रुपये तक
६८. दस्तबाना	१½ ,, २ मोहर तक
६९. राग	१ ,, १० ,,
७०. कंठ शोभा	१ ,, १० रुपये तक
७१. मोजपे आहनीं	½ ,, १० ,,
७२. कजेम	५० ,, ३०० ,,
७३. अर्तके कजेम	४ ,, ७ मोहर तक
७४. कश्का	१ ,, २½ ,,
७५. गरदनी γ	१ ,, १ ,,
७६. बन्दूक	½ ,, १ ,,
७७. बान	२½ ,, ४ रुपये तक

* शायद यह तीर परदार होना चाहिए जिसका अर्थ होगा वह तीर जिसकी मुठिया में पर लगा होगा। † यह नाम सन्दिग्ध है। भिन्न २ हस्तलिपियों में अलग २ हिज्जे दिए हैं। ‡ शायद इसका शुद्ध रूप तुफंगे दहान होगा। ऽ शायद इसको गोफन कहते हैं। γ गोल, कवच की तरह का पत्तर जो घोड़े की गर्दन में बाँध कर इस प्रकार लटकाया जाता है जिससे उसका सीना सुरक्षित रहे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ३६

तोपखाना

तोपखाना राज्य रूपी प्रासाद की रक्षा के लिए आश्चर्यजनक ताला और देश-विजय के दरवाजे की चित्ताकर्षक चाभी है। शासन की रक्षा का यह विजयपूर्ण अस्त्र जिस अधिकता से इस राज्य में पाया जाता है उतना शायद रूम (तुर्की) में भी नहीं पाया जाता। कुछ तोपें इतनी बड़ी हैं कि उनसे १२ मन के गोले फेंके जा सकते हैं। प्रत्येक तोप को खींचने के लिए कई हाथी और हजारों बैलों की जरूरत होती है। विजेता बादशाह इस विभाग की व्यवस्था को बहुत महत्वपूर्ण समझते हैं और उस पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं। परिश्रमी दारोगा और गम्भीर दृष्टि वाले मुंशियों को नियुक्त करके इस विभाग की कार्यकुशलता को दूनी कर दिया है।

सम्राट् ने अनेक प्रकार की तोपों का आविष्कार किया है जिन्होंने सारे संसार को चकित कर दिया है। उन्होंने एक ऐसी तोप बनाई है जिसके भागों को यात्रा में सरलता से अलग अलग कर सकते हैं और आवश्यकता के समय फिर जोड़ सकते हैं। बादशाह ने सत्तरह तोपों को आपस में ऐसा मिला दिया है कि एक ही फतीले से सब तोपों को छोड़ सकते हैं। उन्होंने एक ऐसी भी तोप बनाई है जिसको एक हाथी सरलता से ले जा सके। उसको **गजनाल** कहते हैं। एक तोप ऐसी बनाई है जिसको एक मनुष्य आसानी से ले जा सकता है। इसको नरनाल कहते हैं। सम्राट् ने सम्पूर्ण राज्य में तोपों का वितरण कर दिया है और हर सूबे में आवश्यकता के अनुसार तोपें रखी गई हैं। किलों के घेरे के लिए और समुद्री युद्ध के लिए तोपें अलग अलग कर दी गई हैं जो विजयी सेना की यात्रा में सदा साथ रहती हैं। उनकी गणना असम्भव है। इनके अतिरिक्त चतुर कारीगर सदैव नई नई तोपें तैयार करते रहते है विशेष कर गजनाल और नरनाल। उमरा और अहदी इस विभाग में मासिक वेतन पर नियुक्त हैं। प्यादे का वेतन ४०० दाम से अधिक और १०० दाम से कम नहीं है।

आईन ३७

बन्दूक

सम्राट् को इस अस्त्र का बहुत शौक है। इसके निर्माण और लक्ष्य-वेधन में वह अपने समय में अद्वितीय हैं। उन्होंने ऐसी बन्दूकें बनाई हैं जिनको बारूद से लबालब भर कर आग लगाते हैं तो भी वे नहीं फटतीं। पहले ⅛ से अधिक नहीं भर सकते थे। इसके अतिरिक्त वे इसे हथौड़े और निहाई से लोहे को चौड़ा बनाते थे और पत्तरों के दोनों सिरों को जोड़ देते थे। कुछ लोग दूरदर्शिता से, पत्तरों को एक तरफ नहीं मिलाते थे। इससे हानि की सम्भावना थी विशेषकर पहली दशा में। बादशाह ने उसके निर्माण के एक अच्छे ढङ्ग का आविष्कार किया है। चौड़ा किए हुए लोहे को तिर्छे २ इस प्रकार लपटते हैं कि हर पेच में उसकी लम्बाई बढ़ती जाती है। वे इनके सिरों को नहीं मिलाते बल्कि एक दूसरे के ऊपर रखते हैं और धीरे धीरे आग से उसको गर्म करते हैं। लोहे के पत्तरों को गर्म करके एक कील उसमें ठोकते हैं जिससे सूराख हो जाती है। तीन या चार ऐसी तहें बड़ी बन्दूक के बनाने के लिए आवश्यक होती हैं; छोटी बन्दूक के लिए दो तहें पर्याप्त समझी जाती हैं। बड़ी बन्दूक की लम्बाई दो गज के लगभग होती है और छोटी की सवा गज और उसको (छोटी को) **दमानक** कहते हैं। उसका दस्ता भिन्न भिन्न प्रकार से बनाते हैं। सम्राट् की कार्यकुशलता से ऐसी बन्दूकें तैयार की गई हैं जो बिना फतीले के, माशे (cock) की गति से, आग पकड़

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेती हैं और चल जाती हैं। बहुत सी गोलियाँ ऐसी बनाई गई हैं जो तलवार का काम देती हैं। बादशाह की बुद्धिमानी से बड़े बड़े गुणवान कारीगर पैदा हो गए हैं, जैसे, उस्ताद कबीर और हुसेन। आग में गर्म करने से लोहा आधा कम हो जाता है।

बन्दूक की नली की लम्बाई पूरी हो जाने पर इसके पहले कि चादर की तहें की जाँय अर्थात् तिर्छा नीचे का भाग पूरा हो, बन्दूक पर लोहे की मात्रा और उसका लम्बाई-**दर्जा** गिनती में खोद देते हैं। ऐसी दशा में बन्दूक को **दौल** कहते हैं। इसके बाद उन्हें बादशाह के सामने लाते हैं और अन्तःपुर के कर्मचारियों को क्रम से दे दी जाती हैं। और फिर उसी क्रम से बाहर **तरफान*** के लिए लाई जाती हैं। इसी समय गोली का वजन निर्धारित होता है और उसके अन्दाजे के मुताबिक सूराख की चौड़ाई बनाई जाती है। लम्बी बन्दूकों के लिए २५ टांक से अधिक की गोली नहीं बनती और छोटी के लिए १५ टांक से अधिक की। प्रथम प्रकार की बन्दूकों को चलाने का साहस बादशाह के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता।† जब बन्दूकों पर पालिश हो जाती है तब वे दूसरी बार अन्तःपुर में भेजी जाती हैं और क्रम से रखी जाती हैं। उसी क्रम से वे निकाली जाती हैं और सम्राट् की आज्ञा से उनमें निचला भाग लगा करके एक पुराना दस्ता लगाया जाता है। नली का $\frac{1}{3}$ भाग बारूद से भर कर चलाते हैं। यदि तराविश‡ नहीं होती तो बन्दूक अच्छी समझी जाती है और बादशाह के दरबार में पेश होती है और नली का मुँह बनाने की आज्ञा होती है। हथियार में इसी प्रकार दस्ता लगा कर उसकी परीक्षा करते हैं। यदि गोली टेढ़ी जाती है तो नली को गर्म करते हैं और उसमें लकड़ी डालकर उसे सीधी करते हैं और सम्राट् के सामने उसे सोहानगर (लोहार) को सुपुर्द करते हैं। वह सम्राट् की आज्ञा के अनुसार बाहरी भाग को तरह तरह से अलंकृत करता है। इसके बाद उसे फिर बादशाह के सामने ले जाते हैं। तब बन्दूक की लकड़ी और कुन्दे का रूप निर्धारित होता है। इस अवसर पर बन्दूक पर कई चीजें खोदी जाती हैं: कच्चे और पक्के लोहे का वजन जो कुछ पहले लिखा गया था अब मिटा दिया जाता है; लोहे के उत्पादन का स्थान; कारीगर; निर्माण-स्थान; वर्ष और मास और बन्दूक की संख्या। कभी कभी सम्राट् की आज्ञा से, बिना किसी क्रम के, कोई अधूरी बन्दूक पूरी की जाती है। तब उसको दूसरी जगह ले जाते हैं और निचले भाग को उसमें लगाते हैं और माशा, गज और परगज बनाने के लिए बादशाह आज्ञा देते हैं। जब आज्ञा दी हुई सब वस्तुएँ पूरी हो जाती हैं तब दूसरी बार परीक्षा करने की आज्ञा होती है। यदि जाँच में बन्दूक पूरी उतरती है तो उसको सामने लाते हैं और तीसरी बार शाही हरमसरा में सुपुर्द कर देते हैं। इस दशा में बन्दूक को **सादा** कहते हैं। इसके साथ पाँच गोलियाँ भेजी जाती हैं। बादशाह स्वयं चार बार गोलियाँ चलाते हैं और पाँचवीं गोली के साथ बन्दूक को लौटा देते हैं। इस समय बन्दूक और कुन्दे का रङ्ग निर्धारित होता है। नौ रङ्गों में से एक रङ्ग दस्ता के लिए नियत होता है। सोने और लाजवर्द की अधिकता से बन्दूकों में बहुत अन्तर पैदा हो जाता है। बन्दूक पर एक ही रङ्ग चढ़ाया जाता है और इस दर्जे पर उसे **रङ्गीन** कहते हैं। पहले की तरह फिर पाँच गोलियों के साथ उसको अन्दर सुपुर्द करते हैं। बादशाह चार बार परीक्षा करते हैं और पाँचवीं गोली के साथ उसे लौटा देते हैं। जब १० रङ्गीन बन्दूकें तैयार हो जाती हैं तब बादशाह की आज्ञा होती है कि उसके दोनों सिरे सोने से जड़ दिये जाँय। तब वे फिर शाही अन्तःपुर में सुपुर्द कर दी जाती हैं और जब दस बन्दूकें पूरी हो जाती हैं तो दासों को सुपुर्द कर देते हैं।

*** इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। प्रतीत होता है कि यह विदेशी शब्द है। † अकबर अपनी शारीरिक शक्ति के लिए विख्यात था; देखिए तुजुके जहाँगीरी, पृ० १६। ‡ तराविश का अर्थ टपकना होता है। इस संदर्भ में इसका पारिभाषिक अर्थ स्पस्ट नहीं है।**

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ३८

बन्दूकों को साफ करना

पहले बलवान् मनुष्य लोहे के औजारों से बन्दूकों को साफ करने में बहुत परिश्रम करते थे। अपनी बुद्धिमानी से सम्राट् ने एक ऐसे चर्ख (पहिये) का आविष्कार किया है जिससे एक बैल के एक चक्कर में सोलह बन्दूकें थोड़े समय में साफ हो जाती हैं। यहाँ पर पाठकों की जानकारी के लिये चर्ख का चित्र बना दिया गया है।

आईन ३९

बन्दूकों की श्रेणियाँ

राजकीय शस्त्रागार में जो बन्दूकें वर्तमान हैं वे या तो शाही कारखानों की बनी हुई हैं या खरीदी हुई या उपहार के रूप में मिली हैं। प्रत्येक प्रकार की बन्दूकों में कुछ लम्बी और कुछ छोटी हैं और प्रत्येक में सादा, रंगीन, और कोफ्तकार (हथौड़े से पीटकर बनाई हुई) बन्दूकें हैं। हजारों बन्दूकों में से सम्राट् ने १०५ बन्दूकें खासा के लिए (स्वयं अपने प्रयोग के लिए) चुनी हैं। १२ बन्दूकें बारह महीने के लिए, बारह महीनों के बाद हर एक की बारी आती है। तीस बन्दूकें प्रत्येक सप्ताह के लिए, हर सात दिन के बाद एक बन्दूक जाती है और दूसरी आती है। ३२ बन्दूकें सौर मासों के लिए, प्रति दिन के लिए एक। ३१ बन्दूकें **कोतल** रहती हैं और कभी कभी २८। जब कभी पहले वाली बन्दूकों में से कुछ खर्च हो जाती हैं तब यह कमी कोतल से पूरी की जाती है। उनका आगे और पीछे का क्रम यह है: महीना, सप्ताह, दिन, कोतल, सादा, रंगीन, कोफ्तकार जो दासों को सुपुर्द न की गई हों, कोफ्तकार जो दासों को सुपुर्द की गई हों, दराज (लम्बी) तलवारें जो उपहार में मिली हों या खरीदी गई हों, दमानक जो उपहार में मिली हों या खरीदी गई हों, इन दोनों में से चुनी हुई में से चुनी हुई। सम्राट् ने खासा की १०५ तलवारों को सात श्रेणियों में विभक्त किया है। पन्द्रह पन्द्रह बन्दूकों का एक **किश्क** है जिनको गुलाम सदा तैयार रखते हैं। रविवार को पहली श्रेणी में से दो, दूसरी में से चार, तीसरी में से पाँच, और चौथी में से चार चुनी जाती हैं। सोमवार, मंगल, और बुधवार को ऐसा ही होता है। बृहस्पति को पहली श्रेणी में से दो, दूसरी में से चार, तीसरी में से चार, और चौथी में से पाँच चुनी जाती हैं। शुक्रवार को पहली श्रेणी में से एक, दूसरी से पाँच, तीसरी से चार, और चौथी से पाँच बन्दूकें चुनते हैं। ऐसा ही शनिवार को भी होता है। जो खासा बन्दूकें खर्च हो जाती हैं उनकी पूर्ति के लिए पाँच श्रेणियाँ निर्धारित की गई हैं। नीम कोतल, चौदह; पाव कोतल, सात; $\frac{१}{८}$ कोतल, चार; $\frac{१}{१६}$ कोतल; दो $\frac{१}{३२}$ कोतल, एक। जब कोतल बन्दूकें खर्च हो जाती हैं तब नीम कोतल से पूरी की जाती हैं। इसी ढंग से जब एक श्रेणी की बन्दूकें खर्च हो जाती हैं तब दूसरी श्रेणी की बन्दूकों से उनकी पूर्ति होती है और अन्तिम बन्दूक की पूर्ति खरीदी हुई बन्दूकों में से करते हैं।

एक सौ एक बन्दूकें सदैव अन्तःपुर में रखी रहती हैं। उनकी श्रेणियाँ निम्नांकित हैं। प्रत्येक सौर मास के प्रथम दिन को ११ बन्दूकें अन्तःपुर के कर्मचारियों के सुपुर्द की जाती हैं। उनमें से एक एक बन्दूक महीना, सप्ताह, दिन, कोतल, सादा, रंगीन, कोफ्तकार जो गुलामों के सुपुर्द न की गई हों, कोफ्तकार जो गुलामों के सुपुर्द हों, चुनी हुई लम्बी तलवारें, चुनी हुई दमानक और चुनी हुई तलवारों में से चुनी हुई। दूसरे दिन महीनों की बन्दूकों के सिवाय दूसरी बन्दूकें उसी क्रम से सुपुर्द की जाती हैं। दस दिन तक बराबर इसी संख्या में बन्दूकें अन्तःपुर में भेजी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाती हैं। सम्राट् बन्दूकें चलाने का अभ्यास करते हैं। जब वह प्रत्येक बन्दूक को एक बार चला चुकते हैं तो वह फिर आरम्भ से आरम्भ करते हैं। जब हर बन्दूक चार बार चल चुकती है तब उसको अन्तःपुर से बाहर भेज देते हैं और हर प्रकार की नई बन्दूक उनका स्थान ग्रहण कर लेती है। यदि महीने के आरम्भ में कुछ बन्दूकें अप्रयुक्त बच जाती हैं तब उन्हें अन्तिम स्थान मिलता है और प्रचलित महीने की बन्दूकें प्रथम स्थान पर रखी जाती हैं। नियम यह है कि वितक्ची लोग बादशाह के द्वारा मारे हुए शिकारों और प्रयोग में लाई हुई बन्दूकों को लिखते जाते हैं। उदाहरणार्थ सग्राम नामक बन्दूक से, जो खासा में प्रथम है, और फरवरदीन माह इलाही में ही प्रयोग में लाया जाता है, १०१६ जानवर मारे गए हैं।

आईन ४०

बन्दूक ले जाने वालों का मासिक वेतन

मीरदहा* के वेतन की चार श्रेणियाँ हैं—३०० दाम, २८० दाम, २७० दाम और २६० दाम। दूसरे कर्मचारियों के वेतन की पाँच श्रेणियाँ हैं और प्रत्येक श्रेणी को तीन उपश्रेणियों में विभक्त किया है। पहली श्रेणी—२५० दाम, २४० दाम, २३० दाम। दूसरी श्रेणी—२२० दाम, २१० दाम, २०० दाम। तीसरी श्रेणी—१६० दाम, १८० दाम, १७० दाम। चौथी श्रेणी—१६० दाम, १५० दाम, १४० दाम। पाँचवीं श्रेणी—१३० दाम, १२० दाम, ११० दाम।

आईन ४१

गजशाला

यह आश्चर्यजनक पशु शरीर और शक्ति में पहाड़, और साहस एवं आखेट में सिंह के समान है। यह राजा की महत्ता और विजेता की सफलता को बढ़ाता है। यह सेना और देश की रक्षा के लिए प्रमाणपत्र है। भारत के अनुभवी मनुष्य अच्छे हाथी को पाँच सौ सवारों के बराबर समझते हैं और जब बन्दूक चलाने वाले बहादुर सैनिक इसके साथ होते हैं तब एक हाथी हजार सवारों का काम करता है। प्रचण्डता और लगाम के हल्के-से संकेत को मानने में वह ताजी घोड़े के समान है। आज्ञाकारिता तथा रहस्य जानने (रूमूजदानी) में बुद्धिमान मनुष्य के समान है। मस्ती के अड़ियलपन और बदला लेने में वह मनुष्यों से बढ़कर है। वह मादा को कभी क्षति नहीं पहुँचाता यद्यपि वह उसके पकड़े जाने का कारण होती है। वह छोटे हाथियों से लड़ाई नहीं करता और उनको दण्ड के योग्य नहीं समझता। स्वामिभक्ति के कारण वह अपने महावत को हानि नहीं पहुँचाता। वह सदैव धूल उड़ाता है परन्तु जब उस पर महावत सवार होता है तब वह धूल नहीं उड़ाता।

एक बार एक हाथी मस्ती और क्रोध की दशा में अपने प्रतिद्वन्द्वी से लड़ रहा था। एक हाथी का बच्चा उसके पैरों के पास पहुँच गया। उसने कृपा पूर्वक उसको सूँड़ से उठाकर अलग रख दिया और लड़ाई में व्यस्त हो गया।

---

* मीरदहा के दो अर्थ हो सकते हैं : (१) दस मनुष्यों का सरदार, अथवा (२) वह सेवक जो दस घोड़ों की देख रेख करता हो। यहाँ पर पहला अर्थ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जब कोई मदोन्मत्त नर हाथी बन्धन से मुक्त हो जाता है तो जैसी उसकी इच्छा होती है वह करता है और उसके पास जाने का कोई साहस नहीं करता। तब कोई चतुर और वीर मनुष्य मादा हाथी पर सवार हो कर उसके निकट जाता है और उसका पाँव बाँध देता है। कभी कभी मादा हाथी अपने बच्चे के शोक में खाना-पीना बन्द कर देती है और शोक में मर जाती है। हाथी को तरह तरह का शिक्षण दिया जाता है। वह उन रागों को याद कर लेता है जिनको संगीतज्ञों के सिवाय दूसरा व्यक्ति नहीं समझ सकता। और शरीर के अंगों को उसी प्रकार हिलाता है और अपनी चतुराई का तरह तरह प्रदर्शन करता है। धनुष-बाण चलाना, बन्दूक चलाना, और पड़ी हुई चीजों को उठाकर महावत को दे देने की आदत वह सीख लेता है। प्रथा है कि अनाज को घास में लपेट कर हाथी को दिया जाता है और महावत के संकेत से वह दाने को मुँह के कोने में छिपा लेता है और एकान्त में दाना निकाल कर उसके सुपुर्द कर देता है। हाथी का स्तन और योनि स्त्रियों की सी होती हैं। तोते की तरह उसकी जीभ गोल होती है। उसके अंडकोश दृष्टिगोचर नहीं होते। हाथी प्रायः अपने पेट में से सूंड़ के द्वारा पानी निकाल लेता है और अपने ऊपर छिड़कता है। इस पानी में दुर्गन्ध नहीं होती। वह खाई हुई घास को दूसरे दिन बाहर लाता है परन्तु उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ रहता। एक हाथी का मूल्य एक लाख रुपए* से सौ रुपए तक होता है। पाँच हजार रुपए मूल्य वाले और दस हजार रुपए मूल्य वाले हाथी बहुत पाए जाते हैं।

चार प्रकार के हाथी होते है। पहला **भद्दर**—इसके अङ्ग बहुत सुडौल होते हैं; सिर ऊँचा, सीना चौड़ा, कान बड़े, दुम लम्बी होती है। वह बहादुर और परिश्रमी होता है। उसके ललाट से मोती की शकल का एक बड़ा मोहरा निकालते हैं जिसको हिन्दी भाषा में **गजमणिक**† कहते हैं। उसमें बहुत से गुण होते हैं। २. **मन्द** यह काला होता है, आँखे पीली होती हैं, पेट सपाट होता है, लिङ्ग लम्बा होता है, बहुत शोख और उद्दंड होता है। ३. **मिर्ग**—शरीर कुछ सफेद होता है, काली चित्तियाँ होती हैं। आँखें लाल, पीली, काली, और सफेद की मिश्रण होती हैं। ४. **मिर**—इसका सिर छोटा होता है; सरलता से आज्ञा मानता है और बादल की गरज से डरता है।

इनके आपस में जोड़ा खाने से विभिन्न नाम और गुण वाले अनेक प्रकार के हाथी पैदा होते हैं। हाथी का रङ्ग तीन प्रकार का होता है: सफेद, काला, और दोनों का मिश्रण। सत्, रज और तम के विचार से, जिनका वर्णन बाद में किया जायगा,‡ हाथी तीन प्रकार के होते हैं। पहला, **फरावाँ सत्**—जिसमें सत् की अधिकता हो। वह बहुत चतुर, सुडौल अंग वाला, देखने में सुन्दर, अल्पाहारी तथा आज्ञाकारी होता है। मादा की इच्छा कम रखता है और चिरायु होता है। दूसरा **बेशरज**—जिसमें रज की अधिकता होती है। उसकी दृष्टि तीव्र होती है। वह भयानक, बहादुर, शोख, तथा प्रचण्ड होता है और बहुत खाता है। तीसरा, **अफ़ज़ूतम**—जिसमें तम की अधिकता होती है। वह हठी, और विनाशकारी होता है। वह बहुत सोता और बहुत खाता है।

मादा साधारणतया १८ चान्द्र मास में बच्चा देती है। तीन महीने नर और मादा का वीर्य मादा की योनि में मिलता है और पारे की तरह गतिशील होता है। पाँचवें महीने तक वह स्थिर हो जाता है और उसमें गाढ़ापन आ जाता है। सातवें महीने तक वह और ठोस हो जाता है और नवें महीने तक बढ़ जाता है। ग्यारहवें महीने तक शरीर बन जाता है और बारहवें महीने में रगें, हड्डियाँ, नाखून, बाल प्रकट होते हैं। तेरहवें महीने में पुरुषत्व और स्त्रीत्व के लक्षण पैदा होते हैं। पन्द्रहवें महीने तक जान पड़ती है। यदि मादा बलवान होती है तो नर पैदा होता है

---

* अकबर के उत्तराधिकारी के समय में शिक्षित हाथी का मूल्य और अधिक हो गया था।—तुज़ुके जहाँगीरी, पृष्ठ १५८। शाहजहाँ के समय में पीगू से पहला सफेद हाथी लाया गया था।—पादिशाहनामा, पृष्ठ २६७।

† इसको गजमोती या गजमुक्ता भी कहते हैं। ‡ आईने अकबरी के चतुर्थ ग्रन्थ में।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और दुर्बलता में मादा। सोलहवें महीने में बच्चे में चेतना उत्पन्न होती है। सत्तरहवें महीने में वह बाहर आने की चेष्टा करता है और अठारहवें महीने में पेट से बाहर आता है।

कुछ लोग कहते हैं कि पहले ही महीने में वीर्य बँध जाता है। दूसरे महीने में आँख, कान, नाक, मुँह और जबान प्रकट होते हैं। तीसरे महीने में अन्य अङ्ग बनते हैं। चौथे महीने में वृद्धि और दृढ़ता होती है। पाँचवें महीने में प्राण पड़ जाता है। छठवें महीने में चेतना हो जाती है। सातवें महीने में पहचाना जा सकता है। आठवें महीने में गर्भपात का भय रहता है। नवें, दसवें और ग्यारहवें महीने में वृद्धि होती है और बारहवें महीने में जन्म होता है। यदि नर का वीर्य अधिक होता है तो नर बच्चा पैदा होता है और यदि मादा का रज शक्तिशाली है तो मादा बच्चा पैदा होता है। यदि नर और मादा दोनों का वीर्य बराबर हाता है तो नपुंसक या हिंजड़ा पैदा होता है। गर्भस्थ नर शिशु दाहनी तरफ होता है और मादा शिशु बाईं तरफ और नपुंसक बीच में।

मादा की योनि से लाल तरल पदार्थ बारह दिन तक निकलता है जिसके बाद वह गर्भवती होती है। इस काल में वह विचित्र व्यवहार करती है, पानी और मिट्टी से खेलती है, कान और दुम को उठाती है और नर से बहुत कम अलग होती है। अपने शरीर को नर से रगड़ती है; उसके दाँतों के नीचे अपना सिर करके खड़ी होती है, उसके मल-मूत्र को सूंघती है और उसके निकट दूसरी मादा का आना पसन्द नहीं करती। कभी कभी मादा नर के साथ जोड़ा खाने से घृणा करती है और जोड़ा खाने के लिए विवश की जाती है। दूसरी मादा हथिनियाँ उसकी आवाज सुनकर उसके पास पहुँचती हैं और उसको छुटकारा दिलाती हैं।

पहले समय में लोग घर में हाथी नहीं पालते थे और उसको अशुभ समझते थे। सम्राट् की आज्ञा से अब अच्छी जाति के हाथी पाले जाते हैं और वह भ्रान्ति लोगों के हृदय से दूर हो गई। साधारणतया मादा हाथी एक बच्चा देती है परन्तु कभी कभी दो बच्चे भी देती है। पाँच वर्ष तक बच्चा दूध पीता है। इसके बाद घास खाता है। इस अवस्था में उसको 'बाल' कहते हैं। दस साल वाले को **'पूत'**, बीस वर्ष वाले को **'बिक्क'**; तीस वर्ष वाले को **'कल्बा'** कहते हैं। हर वर्ष उसका रूप बदलता है और वह नए नाम से पुकारा जाता है। साठ वर्ष की अवस्था में जवान होता है। उसका सिर गेंद के दो टुकड़ों के समान होता है और कान सूप की तरह होते हैं। यदि आँखों का रङ्ग सफेदी, पीलापन, कालापन, और सुर्खी मिला होता है तो जानवर उत्तम समझा जाता है। ललाट सपाट होता है; घट बढ़ नहीं होता और झुर्रियाँ नहीं होतीं। सूड़ उसकी नाक है लेकिन इतनी लम्बी होती है कि जमीन तक पहुँच जाती है। इसीसे वह खाना उठाकर मुँह में रखता है और पानी को इसीसे खींच कर अन्दर डालता है। उसके अठारह दाँत होते हैं। सोलह दाँत मुँह के भीतर होते हैं, आधे ऊपर और आधे नीचे और दो बाहर निकले रहते हैं। बाहर वाले दाँत प्रायः एक गज या उससे अधिक लम्बे, गोल, चमकदार, मजबूत, और सफेद होते हैं। कभी कभी वे लाल भी होते हैं। वे सीधे और कुछ ऊपर उठे होते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि बाहरी दाँत चार भी होते हैं। उपयोगिता और अलंकार के विचार से बाहरी दाँतों का ऊपरी भाग काट लिया जाता है और वे फिर बढ़ जाते हैं। कुछ हाथियों के दाँत हर वर्ष और कुछ के दूसरे या तीसरे वर्ष काटे जाते हैं। दस साल और अस्सी साल वाले जानवरों के दाँत नहीं काटे जाते। उत्तम हाथी वह होता है जो आठ हाथ ऊँचा और नौ हाथ लम्बा होता है और जिसके पेट और पीठ की गोलाई दस हाथ होती है। इससे भी बड़े हाथी को श्रेष्ठ समझते हैं। यदि उसके नौ अङ्ग जमीन पर पहुँच जाते हैं तो वह बहुत श्रेष्ठ समझा जाता है अर्थात् सामने वाले पैर, पीछे वाले पैर, सूँड़, दो दाँत, लिंग, और दुम। ललाट पर सफेद चित्ते शुभ समझे जाते हैं। मोटी गर्दन सुन्दरता का लक्षण समझी जाती है। कानों के ऊपर और निकट बालों का बड़ा होना जानवर की जाति अच्छी होने का चिह्न है।

कुछ हाथी जाड़े में, कुछ गर्मी में और कुछ वर्षा में मदोन्मत्त होते हैं और विचित्र व्यवहार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वे घरों को गिराते हैं, पत्थर की दीवारों को तोड़ते हैं और सवार को घोड़े समेत अपनी सूँड़ में लपेट लेते हैं। विभिन्न हाथियों की भयानकता और बहादुरी में बहुत अन्तर होता है।

मस्ती के समय दोनों कनपटियों से या एक ही कनपटी से एक प्रकार का कालापानी निकलता है जिसमें बहुत दुर्गन्ध होती है। कभी कभी यह पानी सुर्खी मिला हुआ सफेद होता है। दोनों कनपटियों में बारह सूराख होते हैं जिनसे यह दुर्गन्धपूर्ण पानी निकलता है। जो जल्दी होशियार हो जाता है उससे पानी बहुत निकलता है और जो देर में होश में आता है उससे बूँद बूँद टपकता है। पानी बहना बन्द होने के बाद जानवर में भयानकता आ जाती है और वह बहुत सुन्दर दिखाई पड़ता है। ऐसी अवस्था में उसको **'तप्ती'** या **'सरहरी'** कहते हैं। यदि एक ही कनपटी के कुछ ऊपर से पानी टपकता है तो पशु को **'सिंगाढाल'** कहते हैं, और यदि तीनों स्थानों से टपकता है तो हाथी को **'ललजोर'** कहते हैं। मस्ती के समय में कुछ हाथी कुछ विशेष प्राणियों से अनुराग रखते हैं जैसे मनुष्य और घोड़े, और कुछ हाथी सब प्राणियों से अनुरक्त हो जाते हैं, जैसा हिन्दी पुस्तकों में लिखा गया है।

भद्दर हाथी तुला और वृश्चिक राशि में मस्ती में आते हैं; मन्द वसन्त में; मिर्ग धनु और मकर में, और मिर हर ऋतु में। महावत दवा के द्वारा भी हाथियों को मस्त बनाते हैं परन्तु इस तरीके से कभी कभी हाथी को हानि होती है। कुछ अच्छे हाथी लड़ाई के बाजे सुन कर भी मस्ती में आते हैं। कभी २ चौकने से भी हाथी मस्त होता है। उदाहरणार्थ, खासे का 'गजमुक्ता' हाथी शाही ढोल की आवाज सुनकर आनन्दित हो जाता है और उससे मद निकलने लगता है। बहुधा तीस वर्ष की अवस्था में यह मस्ती होती है। और कभी कभी पच्चीस वर्ष में। कुछ में यह मस्ती सालों तक रहती है; जैसे कुछ शाही हाथी पाँच साल तक मस्ती में झूमते रहते हैं। अधिकतर नर हाथी जोश में मस्त हुआ करते हैं। ऐसी अवस्था में वह धूल उड़ाते हैं, मादा की खोज में रहते हैं, तथा कीचड़ और पानी में देर तक रहना पसन्द करते हैं। मस्ती की दशा में वह बहुत क्रोधी होता है और बहुत अँगड़ाई लेता है, और कम सोता है। अन्त में दाना नहीं खाता, कैद से घबड़ाता है, स्वतन्त्रता चाहता है और शोर गुल मचाता है।

मनुष्यों की भाँति हाथी की आयु १२० वर्ष होती है। इसके बहुत से नाम होते हैं जैसे हस्ती, गज, पील, और हाथी इत्यादि। होशियार महावतों की देख भाल से उसमें बहुत से गुण पैदा हो जाते हैं और कभी कभी थोड़े समय में १०० रु० का हाथी १० हजार रुपए का हो जाता है।

बुद्धिमान् हिन्दुओं की सम्मति है कि हाथी के रूप में एक देवता संसार की आठों दिशाओं की रक्षा करता है और उनके विषय में वे विचित्र कथायें कहते हैं। उनके नाम यह हैं : १. पूर्व में **ऐरावत**; २. पूर्व-दक्षिण के कोने में **पुण्डरीक**; ३. दक्षिण में **बामन**; ४. दक्षिण-पश्चिम में **कुमुद**; ५. पश्चिम में **अञ्जन**; ६. पश्चिम-उत्तर में **पुहुपदन्त***; ७. उत्तर में **सार्वभौम**; ८. उत्तर-पूर्व में **सुप्रतीक**। हिन्दू कामों को पूरा कराने के लिए मन्त्र पाठ करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं। ऐसा कहते हैं कि संसार का प्रत्येक हाथी इन्हीं आठों में से किसी एक की सन्तान है। इस प्रकार, सफेद चमड़े और बाल वाले हाथी को पहले की सन्तान समझते हैं; यदि सिर बड़ा होता है, बाल लम्बे होते हैं, क्रोधी और साहसी होता है, पलकों को खुला रख कर देखता है तो उसको दूसरे की सन्तान समझते हैं; यदि·····† देखने में सुन्दर, काला, पीठ के बीच में ऊँचा हो तो तीसरे की सन्तान समझा जाता है; यदि ऊँचा कद, लाल आँख, लाल और काला मिला हुआ आँख का रङ्ग, शोख, समझदार, छोटे बाल हों तो वह चौथे की सन्तान माना जाता है; यदि काला चमकीला हो और एक दाँत दूसरे से बड़ा हो, सीना और पेट सफेद हो, अगले पाँव लम्बे और मोटे हों तो

---

* पुष्पदन्त। † यहाँ 'खुशसखी' शब्द आया है जिसका कुछ अर्थ नहीं निकलता। शायद 'खुशसज', 'खुशसखुन', होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पाँचवें की सन्तान समझते हैं; यदि जानवर भयानक हो, उसकी रगें चमड़े के ऊपर दिखाई पड़ती हों, कोहान हो, कान छोटे हों, और सूँड़ लम्बी हो तो छठें की सन्तान समझते हैं; यदि कोमल शरीर, लाल आँखें और लम्बी सूँड़ हो तो सातवें की सन्तान समझते हैं; और यदि किसी हाथी में उपर्युक्त सातों के गुण पाये जाते हैं तो वह आठवें की सन्तान माना जाता है।

हिन्दू हाथियों को आठ वर्गों में भी विभाजित करते हैं। १. यदि हाथी के चमड़े में झुर्रियाँ न हों, जो बीमार न हो, देखने में शानदार हो, युद्ध क्षेत्र में मुंह न मोड़े, गोश्त से अरुचि रखता हो, साफ खाना उचित समय पर चाहे तो उसको **देव-मिजाज** कहते हैं। २. यदि जानवर में हाथियों के सब अच्छे गुण पाये जाते हैं अपने कर्तव्यों का ज्ञान रखता हैं, सिर, कान, सूड़ अगले पाँव, पिछले पाँव, और दुम को हिलाता है, बिना संकेत के किसी को हानि नहीं पहुँचाता तो उसको **'गन्धर्व-मिजाज'** कहते हैं। ३. यदि क्रोधी हो, भूख लगने पर खाये, पानी में रहना पसन्द करे तो उसको **ब्राह्मण-मिजाज** कहते हैं। ४. जो हाथी बहुत बलवान, अच्छी दशा में, युद्ध प्रेमी, और उद्दण्ड हो उसको **खत्री-मिजाज*** कहते हैं। ५. यदि छोटे कद का भुलक्कड़, अपने काम में शोख, मालिक के काम में सुस्त, गन्दे खाने का शौकीन, दूसरे हाथियों से लड़ने वाला तो उसको **शूद्र मिजाज** कहते हैं। ६. यदि वह बहुत दिनों तक मस्त रहता है, धोखेबाज, घातक, रास्ते को भूलने वाला हो तो उसको **मार-मिजाज†** कहते हैं। ७. यदि तिरछा देखता है, धीरे धीरे सीखता है, मस्ती का बहाना करता है तो उसको **पिशाच मिजाज** कहते हैं। ८. यदि बलवान, तीव्रगामी, मनुष्यों को कष्टप्रद, रात में घूमना पसन्द करता है तो उसको **राक्षस मिजाज‡** कहते हैं।

इन विभिन्न स्वभावों के वर्णन करने के लिए हिन्दुओं ने बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखी हैं और उनमें हाथियों की बीमारियों, उनके कारण और उनकी दवा का वर्णन किया है। हाथी निम्न स्थानों में पाए जाते हैं :

सूबा आगरा में, बरार तक बयावान और नरवर§ के जंगल में; सूबा इलाहाबाद में, भठ (पन्ना) की सीमा में, घोराघाट$ रतनपुर⊙, नन्दनपुर, सरगछ, बस्त,⊙ मालवा के सूबों में, हंडिया, उछोद, चन्देरी, सन्वास, बीजागढ, रायसीन, होशंगाबाद, गढा, हरियागढ; सूबा बिहार में रोहतास और झारखंड के पड़ोस में; बंगाल के सूबे में, उड़ीसा में और सातगाँव। पन्ना के हाथी सबसे अच्छे होते हैं।

हाथी के झुंड को हिन्दी में **'सहन'** कहते हैं। झुंड में हाथियों की संख्या भिन्न भिन्न होती है, कुछ में १००० हाथी होते हैं। जंगल में यह बहुत सावधानी से रहते हैं। जाड़े और गर्मी में अपना निवास स्थान चुन लेते हैं और अपने सोने के स्थान के निकट के पेड़ों को तोड़ कर गिरा देते हैं। मनोरंजन के लिए या खाने पीने के लिए वे बहुत लम्बी यात्रा करते हैं। यात्रा में एक हाथी झुंड के आगे आगे सन्तरी की तरह चलता है और यह बहुधा कम आयु की मादा होती है। जब यह सोते हैं तो चारों दिशाओं में चार चार मादा हाथियों को रक्षा के लिए नियुक्त कर देते हैं जो बारी बारी से रखवाली करती हैं।

बच्चा पैदा होने के बाद हाथी बच्चे को तीन चार दिन सूंड से उठाकर अपनी पीठ पर बैठाती है और कभी कभी दाँतों पर। जब मादा हाथी बीमार होती है या बच्चा देती है, तब नर हाथी उनके लिए दवा तैयार करते हैं और उनके चारों तरफ एकत्र होते हैं। जब हाथी पकड़ जाते हैं तब मादा हाथी जालों को तोड़ देती है और महावत को नीचे ले आती है। जब हाथी का बच्चा जाल में पकड़ जाता है तब वे घात में छिपा जाती हैं और रात को उस स्थान पर पँहुचकर बच्चे को छोड़ा लेती हैं और शिकारियों को कुचल कर मार डालती हैं। कभी कभी उसकी माँ

---

* क्षत्रिय-मिजाज। † साँप जैसा स्वभाववाला। ‡ राक्षस-मिजाज। § नरवर जह बाद में सलीम की उत्तेजना से अबुल फज्ल की हत्या कर दी गई देशान्तर ७७°५८′ और अक्षांश २५°३५′। $ दिनाजपुर के निकट देशान्तर ८९°७७′ और अक्षांश २५०° १२′। ⊙ देशांतर ८१°-५८′ और अक्षांश १९° १३′।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अकेली चुपके से आती है और चालाकी से उसको बाहर ले जाती है। सम्राट् कहते थे कि एक बार जङ्गल में हाथी का एक बच्चा कुँये में गिर पड़ा। चूँकि रात हो गई थी हम उसके निकालने में व्यस्त नहीं हुए। प्रातःकाल जब हम लोग वहाँ गए तो मालूम हुआ कि जङ्गली हाथियों ने कुंए को लकड़ी और घास से पाटकर बच्चे को बाहर निकाल लिया। और फिर "एक बार एक मादा हाथी ने बहाना किया और ऐसा प्रकट किया कि उसमें प्राण शेष नहीं हैं। उसको छोड़कर हमलोग आगे बढ़ गए परन्तु जब रात को लौटे तब देखा कि उसका कहीं निशान तक नहीं है।"

अयाज नामक खासे का एक हाथी महावत का शत्रु हो गया और सदैव घात में रहता था। एक रात को उसने उसको सोता हुआ पाया, एक बड़ी लकड़ी लाकर उसकी पगड़ी सिर से उतारी और उसके सिर के बाल पकड़ कर घसीटने लगा जिससे वह मर गया। हाथियों की बुद्धिमानी की अनेक कहानियाँ हैं जो कही नहीं जा सकतीं और सुनने वालों को विश्वास भी कम होता है।

राजा लोग इस पशु को हृदय से चाहते हैं और उनको एकत्र करने की बहुत चेष्टा करते हैं। वे महावतों की कदर करते हैं और पहचानने वालों को ऊँचा पद दिया जाता है। दुष्ट और नीच लोग हाथी को अनुशासन हीनता का साधन समझते हैं। विनाशक दुष्ट इस पशु के द्वारा अत्याचार करते हैं। इसलिए पहले के शासकों ने न तो इनका कोई इलाज किया और न तो उनकी मनोकामना पूरी हुई। परन्तु अन्य महत्वपूर्ण कामों के होते हुए भी सम्राट् ने ईश्वर की सहायता और अनेक हाथियों से इन नीच अभिमानियों को अपने अधीन कर लिया और बुद्धिमत्तापूर्ण कानूनों के द्वारा उनको शान्ति का सुख दिया। सम्राट् ने राजकीय हाथियों को वर्गों में विभक्त कर दिया है और उन्हें ईमानदार दारोगों को सुपुर्द कर दिया और कुछ को खासा निर्धारित कर दिया अर्थात् उन पर केवल सम्राट् ही सवारी कर सकते हैं।

आईन ४२

हाथियों की श्रेणियाँ

सम्राट् ने अपनी बुद्धि के प्रकाश से हाथियों को सात श्रेणियों में विभक्त किया। १. मस्त (जवान), २. शेरगीर (शेर पकड़ने वाला), ३. सादा, ४. मँझोला, ५. करहा; ६. फनदुरकिया; ७. मोकला। पहली श्रेणी—जब जानवर पर जवानी का नशा सवार होता है और उसके सिर में विशेष प्रकार की मस्ती आती है और उसमे विचित्र प्रकार की शक्ति पैदा हो जाती है तो उसको **मस्त** कहते हैं। दूसरी श्रेणी—जो हाथी पठा हो और दो-एक बार युवावस्था का लक्षण प्रकट कर चुका हो और सदा प्रसन्न रहता हो शेरगीर कहलाता है। तीसरी श्रेणी—वह है जिसमें उपयोगी हाथी हों और लगभग शेरगीर के दर्जे के हों। चौथी श्रेणी—उससे नीचे दर्जे की, और पाँचवीं—उससे कम दर्जे की; छठी श्रेणी के हाथी पाँचवीं श्रेणी के हाथियों से कुछ छोटे होते हैं। अन्तिम श्रेणी में वह सब कम आयु के हाथी आते हैं जो सवारी के योग्य न हों।

प्रत्येक श्रेणी को तीन उपभागों में बाँटते है—बड़ा, मंझोला और छोटा। अन्तिम दस प्रकार का होता है। प्रत्येक श्रेणी का भोजन उसके शरीर के अनुसार निर्धारित किया गया है।

आईन ४३

हाथियों का भोजन

पुराने समय में हाथियों का वर्गीकरण नहीं होता था। इसलिए उनको खिलाने में बहुत खाना नष्ट होता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

था। जब सम्राट् पर्दा उठा कर* प्रजा के सुख की चिन्ता करने लगे तब उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से काम लिया और विभिन्न कानून बनाए। १. **मस्त**—बड़ा २ मन २४ सेर भोजन पाता है; मंझोला २ मन १६ सेर; छोटा २ मन १४ सेर। २. **शेरगीर**—बड़ा २ मन ६ सेर; मंझोला २ मन ४ सेर; छोटा १ मन ३६ सेर। ३. **सादा**—बड़ा १ मन ३४ सेर; मझोला १ मन २६ सेर; छोटा १ मन २४ सेर। ४. **मंझोला**—बड़ा १ मन २२ सेर; मझोला १ मन २० सेर; छोटा १ मन १८ सेर। ५. **करहा**—बड़ा १ मन १४ सेर; मंझोला १ मन ६ सेर; छोटा १ मन ४ सेर। ६. **फनदुरकिया**—बड़ा १ मन, मंझोला ३६ सेर, छोटा ३२ सेर। ७. **मोकल**—बड़ा २६ सेर, मंझोला २४ सेर, तीसरी श्रेणी २२ सेर, चौथी २० सेर, पाँचवीं १८ सेर, छठीं १६ सेर, सातवीं १४ सेर, आठवीं १२ सेर, नवीं १० सेर, दसवीं ८ सेर।

मादा हाथी को चार श्रेणियों में विभक्त किया है—**कलाँ (बड़ी); मियाना (मँझोली)**।; खुर्द (छोटी); **मोकल**। पहले दो प्रकारों को तीन भागों में, तीसरे को चार भागों में और चौथे को नौ भागों में बाँटा है। १. **बड़ी**—बड़ी १ मन २२ सेर भोजन पाती है, मँझोली १ मन १८ सेर, छोटी १ मन १४ सेर। २. **मँझोली**—बड़ी १ मन १० सेर, मँझोली १ मन ६ सेर, छोटी १ मन २ सेर। ३. **छोटी**—बड़ी ३७ सेर, मंझोली ३२ सेर, छोटी २७ सेर, उससे छोटी २२ सेर। ४. **मोकल**—प्रथम श्रेणी २२ सेर, द्वितीय २० सेर, तृतीय १८ सेर, चतुर्थ १६ सेर, पंचम १४ सेर, षष्टम १२ सेर, सप्तम १० सेर, अष्टम ८ सेर, नवम ६ सेर।

आईन ४४

गजशाला के सेवक

१. **मस्त हाथी**—प्रत्येक के लिए ५½ व्यक्ति‡ होते हैं। पहला, महावत–उसकी गर्दन पर बैठता है और इस विचित्र पशु से काम लेता है। वह उसके गुणों और दोषों को पहचानता है और उसकी उपयोगिता में उसका सहायक होता है। उसका मासिक वेतन २०० दाम है। यदि हाथी **खुटहर** अर्थात् दुष्ट और महावत को गर्दन पर से फेंकने वाला है तो २२४ दाम। दूसरा, **भोई**—हाथी के पुट्ठे पर बैठता है और युद्ध क्षेत्र में तथा हाथी को तेज चलाने में सहायता करता है और प्रायः महावत का काम भी करता है। ११० दाम मासिक पाता है तीसरा, **मेठ**—चारा लाता है। उसके बाँधने और खोलने आदि में सहायता करता है। ३½ मेठ नियुक्त होते हैं और छोटे हाथी के लिए ३। प्रत्येक को यात्रा में प्रति दिन ४ दाम मिलता है और दूसरे समय में ३½ दाम।

२. **शेरगीर**—इसके लिए ५ सेवक होते हैं। महावत का मासिक वेतन १८० दाम होता है। भोई का १०३ दाम; और तीन मेठ पहले के नियमानुसार।

३. **सादा**—इसके लिए ४½ सेवक होते हैं। महावत १६० दाम, भोई ६० दाम, और २½ मेठ।

४. **मंझोला**—इसके लिए ४ सेवक होते हैं। महावत १४० दाम पाता है, भोई ८० दाम, और २ मेठ।

५. **करहा**—३½ सेवक। महावत १२० दाम, भोई ७० दाम, १½ मेठ।

६. **फनदुरकिया**—२ सेवक। महावत १०० दाम और १ मेठ।

७. **मोकल**—२ सेवक। महावत ५० दाम और, १ मेठ।

---

* यही शब्द-समूह मूल ग्रन्थ के पृष्ठ ९ पंक्ति २३ (आईने खजीनये आबादी) में भी आया है। यह सन् १५६० की तरफ संकेत करता है जब बैराम खाँ का पतन हो गया और अकबर ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। ‡ या तो दो हाथियों के लिए ११ सेवक अथवा अन्तिम सेवक लड़का होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मादा हाथी—१. बड़ी के लिए ४ सेवक होते हैं। महावत १०० दाम, भोई ६० दाम, दो मेठ। २. मंझोली के लिए ३½ सेवक। महावत ८० दाम, भोई ५० दाम, और १½ मेठ। ३. छोटी के लिए २ सेवक। महावत ६० दाम, १ मेठ। **मोकल** के लिए २ सेवक। महावत ५० दाम, और १ मेठ।

फौजदार—बादशाह ने दस दस, बीस बीस और तीस तीस हाथियों को एक एक अनुभवी कर्मचारी को सुपुर्द किया है। हाथियों के समूह को **हल्का** कहते हैं और उनकी देख भाल करने वालों को **फौजदार**। उसका काम हाथी के स्वास्थ्य की देख रेख करना और शिक्षित करना है। वह उनको बहादुरी, गोली चलाने और तोप की आवाज के समय दृढ़ खड़े रहने की शिक्षा देता है। हाथी के अच्छे और बुरे व्यवहार का दायित्व फौजदार के ऊपर होता है। जो फौजदार **सदी** या उससे ऊँचे पद पर आसीन होता है २५ से ३० तक हाथी उसके सुपुर्द किए जाते हैं। दूसरे फौजदार बीस्ती* और दहबाशी† उनके अधीन होते हैं। यह क्रम दहबासी से हजारी‡ तक होता है। सदी से ऊपर वाले फौजदारों के वेतन में अन्तर होता है। कुछ फौजदार अमीर के पद पर भी पहुँच जाते हैं। सदी दो घोड़ों पर दाग दिलाते हैं। प्रथम श्रेणी के बीस्ती का वेतन ३० रु० प्रति मास होता है, दूसरी श्रेणी का २५ रु० और तीसरी श्रेणी का २० रु०। प्रथम श्रेणी के दहबाशी को २० रु०, दूसरी श्रेणी १६ रु०, और तीसरी श्रेणी १२ रु०। परन्तु बीस्ती और दहबाशी एक घोड़े को दाग दिलाते हैं और उनकी गणना अहदियों में होती है। जिन फौजदारों के पास ३० या २५ हाथी होते हैं उनको उस हाथी के महावत और एक भोई का वेतन देना पड़ता है जिसको वह सवारी के लिए चुनता हैं। जिन फौजदारों के सुपुर्द २० या १० हाथी होते हैं वह केवल महावत का वेतन देता है।

सम्राट् सेवकों की इस व्यवस्था को पर्याप्त नहीं समझते। उनको इस विषय का बहुत अनुभव है। इसलिए उन्होंने प्रत्येक अमीर को कई हल्के सुपुर्द कर दिए हैं और उनकी देखभाल करने के लिए आज्ञा दी है। हाथियों का चारा सरकार देती है। एक विश्वसनीय तथा परिश्रमी लिपिक इस विभाग के लिए नियुक्त किया गया है जो इस विभाग की आमदनी और खर्च का हिसाब लिखता है और यह देखता है कि सम्राट् की आज्ञाओं का पालन होता है या नहीं। वह इन बातों को लिख कर बादशाह की सेवा में प्रस्तुत करता है।

आईन ४५

हाथी के सामान

१. **धरना**—एक लम्बी लोहे की जञ्जीर है। सोने और चाँदी से भी तैयार की जाती है। इसमें साठ लम्बे छल्ले होते हैं, जिसमें से हर एक की तौल तीन सेर होती है। हाथी की शक्ति का अनुमान करके जञ्जीर की लम्बाई और मोटाई में अन्तर कर दिया जाता है। उसका एक सिरा जमीन में गाड़ते हैं या किसी खम्भे में बाँध देते हैं। और दूसरा सिरा उसके पिछले बायें पैर में बाँध देते हैं। पहले दूसरा सिरा अगले पाँव में बाँधा जाता था। इससे सीने पर चोट पहुँचती थी। अतएव सम्राट् ने इस नियम को रद्द कर दिया।

२. **आण्डू**—एक जञ्जीर है जिससे उसके दोनों अगले पाँव बाँधे जाते हैं। चूँकि यह हाथी को कष्ट देती है इसलिए बादशाह इसे पसन्द नहीं करते।

३. **बेड़ी**—एक जंजीर है जिससे दोनों पिछले पैरों को बाँधते हैं।

४. **बलन्द**—एक प्रकार की बेड़ी है जिसका आविष्कार सम्राट् ने स्वयं किया है। इससे हाथी चल तो सकता है पर दौड़ नहीं सकता।

---

* जिसके सुपुर्द २० हाथी हों। † जिसके सुपुर्द १० हाथी हों। ‡ जिसके सुपुर्द एक हजार हाथी हों।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

५. **गद्द बेड़ी**—आंडू से मिलती जुलती है और इसको बलवान तथा तीव्र गामी हाथी के पाँव में (उपरोक्त बेड़ियों के अतिरिक्त) बाँधते हैं।

६. **लोह लङ्गर**—एक लम्बी जंजीर है जो हाथियों की शक्ति और कद के अनुकूल बनाई जाती है। इसका एक सिरा अगले दाहिने पाँव में बाँधते हैं और दूसरा सिरा एक गज लम्बे कुन्दे में मजबूत बाँधते हैं। उसको महावत अपने पास रखते हैं, और जानवर की तेज चाल और दुष्टता के समय, जब वह अधिकार से बाहर हो जाता है, तब नीचे गिरा देते हैं। जंजीर पाँव में लिपट जाती है। कुन्दा जानवर को कष्ट पहुँचाता है और वह विवश होकर खड़ा हो जाता है। इसका भी आविष्कार बादशाह ने किया है। इससे लोगों के प्राण बच गए हैं और महल और दीवारें सुरक्षित हो गए।

७. **चर्खी**—पोले बाँस का एक टुकड़ा है जिसके बीच में एक छेद होता है। इसकी लम्बाई आधा गज और दो तस्सूज है। इसमें मिट्टी भरकर बीच से बन्द कर देते हैं और दोनों तरफ बारूद डालकर दोनों तरफ एक एक फतीला लगाते हैं और फतीलों को कागज में लपेट देते हैं। उस सूराख में एक लकड़ी सलीब की तरह लगा देते हैं और वह लटकती रहती है। जब उसमें आग लगाई जाती है तो घूमती है और भयंकर ध्वनि पैदा करती है। एक बहादुर प्यादा उसको हाथ में लेकर हाथी के आगे जाता है। इससे हाथी दूसरे हाथियों के साथ लड़ाई करना बन्द कर देता है, पहले हाथियों को लड़ाई से रोकने के लिए आग जलाते थे जिससे कष्ट अधिक होता था मगर लाभ कम होता था। सम्राट् ने इस ढङ्ग का आविष्कार किया और सबको आराम मिल गया।

८. **अँधियारी**—अर्थात् अंधकार। सम्राट् ने इसका नाम **'उजियाली'** (प्रकाश) रखा। यह एक चौकोर सूती वस्त्र है जिसकी लम्बाई और चौड़ाई ढाई गज से अधिक होती है। इसको जरबफ्त और मखमल इत्यादि से भी तैयार करते हैं और इसके दो सिरों को **'किलावा'*** से बाँधकर दुष्टता के समय हाथी के चेहरे पर डाल देते हैं जिससे वह देख न सके। इससे बहुत से लोग कष्ट से बच गए हैं। कभी कभी हाथी के क्रोध की अवस्था में यह एक तरफ हट जाती है। सम्राट् ने तीन वजनी घुँघुरू उसके सिरों पर सिलवा दिए जिससे वह अच्छी तरह लटका रहने लगा। इससे कमी पूरी हो गई।

९. **किलावा**—बिना बटी हुई कुछ रस्सियों को इकट्ठा करके इस प्रकार बटते हैं कि उसकी मोटाई आठ अंगुल और लम्बाई तीन गज होती है। उसके दोनों तरफ छल्ले डालकर हाथी के गले में बाँधते हैं। महावत अपने दोनों पैर छल्ले (रकाब) में डालकर गर्दन पर बैठता है। यह रेशम और चमड़े की भी होती है। कुछ लोग लोहे की तेज सलाखें लटका देते हैं जिससे दुष्ट हाथी अपने सिर को हिला कर महावत को नीचे नहीं गिरा सकता।

१०. **दुल्थी**—पाँच गज की एक रस्सी है। यह लाठी के बराबर मोटी होती है। इसको कलावा के ऊपर बाँधते हैं जिससे उसकी मजबूती बढ़ जाती है।

११. **कनार**—यह एक तेज नुकीला छड़ है जो ½ गज लम्बा होता है। इसको भी कलावा में बाँधते हैं। इसको हाथी के कान में चुभोकर उसको तेजी और जोश में लाते हैं।

१२. **डोर**—मोटी रस्सी है जो हाथी की दुम से गले तक इस प्रकार बाँधते हैं जिससे देखने में वह बहुत सुन्दर मालूम होता है। जब हाथी दुष्टता के कारण अपना शरीर हिलाता है तब लोग इस रस्सी को पकड़ लेते हैं। इसमें बहुत सी सजावट की वस्तुएँ बाँधी जाती हैं।

१३. **गदेला**—एक गद्दा है जिसको हाथी की पीठ पर रखकर नीचे रस्सी से बाँधते हैं जिससे पीठ घायल नहीं होने पाती और जानवर को आराम रहता है।

---

* इसे 'कलावा' होना चाहिए। मालूम होता है कि अबुल फज्ल ने इस फारसी शब्द को हिन्दी समझ लिया था अन्यथा वह 'एराब' (उच्चारण का ढङ्ग) क्यों देता ?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१४. **गुदौती**—पीतल की एक जंजीर है। इसको दुम के निकट बाँधते हैं। यह रस्सी के घाव से दुम को सुरक्षित रखता है और सजावट बढ़ा देता है।

१५. **पिचवा**—रस्सी की एक पेटी है जो हाथी के पुट्ठे पर बाँधी जाती है। भोई इससे सहारा लेता है। यह बन्दूक चलाने में उसको सहायता करती है।

१६. **चौरासी**—कुछ घुंघुरुओं को डोरे में पिरो कर बानात के कपड़े में सिल देते हैं, और उसको हाथी के आगे और पीछे बाँधते हैं। इससे उसकी शान और सजावट बढ़ जाती है।

१७. **पितकछ**—दो जंजीरें हैं जो जानवर के दोनों तरफ बाँधी जाती हैं। एक घंटा जंजीर में लटका कर पेट के नीचे बाँधते हैं। इससे जानवर की सुन्दरता और महत्ता बढ़ जाती है।

१८. **बड़े घंटे**—हर पहलू में छः और कलावा में तीन बाँधते हैं। इसका बादशाह ने आविष्कार किया।

१९. **कुतास**—❀ पचास या उससे कम ज्यादा होते हैं। दाँत, माथा, गला, और गर्दन पर लटकाते हैं। सफेद, काले और चितकबरे होते हैं। इनसे हाथी की सजावट बढ़ जाती है।

२०. **तैचा**—पाँच लोहे के पत्तरों को जो एक एक गज लम्बे और चार-चार अंगुल चौड़े होते हैं लोहे के छल्लों से एक दूसरे से बाँधते हैं। दोनों तरफ दो दो जंजीरें डालते हैं, जो एक-एक गज लम्बी होती हैं। एक जंजीर को कान के ऊपर से और दूसरी को कान के नीचे से ऊपर लाकर कलावा में मजबूत बाँधते हैं। इन दोनों के बीच में एक दूसरी जंजीर लटका कर उसको सिर के ऊपर लाकर कलावा से बाँधते हैं और ऊपर की ओर लोहे की चार कीलें जिनके सिरे झुके होते हैं, सलीब की तरह बाँधते हैं। इन कीलों में लट्टू होते हैं, और इसी स्थान पर घंटे भी लटकाये जाते हैं और नीचे की तरफ इसी तरह तीन जंजीरें लटकाते हैं और इसके बाद चार जंजीरें लट्टू से लटकाई जाती हैं। पहली की तरह दो के सिरों पर लट्टू होते हैं और शेष दो को हाथी के दातों से मजबूत बाँधते हैं। इस लट्टू में तीन दूसरी जंजीरें लटकाते हैं, जिनमें से दो उसकी सूड़ के चारों ओर बाँधते हैं और बीच वाली भी लटकती हुई छोड़ देते हैं। उस लट्टू में मोर्छल और खंजर लगे रहते हैं और यह ललाट पर लगाए जाते हैं। इनसे सौन्दर्य बढ़ जाता है और इससे दूसरे जानवर डरकर भागते हैं।

२१. **पाखर**—कवच की तरह होता है और लोहे से बनता है। यह सिर और सूंड़ के लिए अलग अलग हथियार होता है।

२२. **गज-झूप**—एक वस्त्र है जो पाखर के ऊपर डालते हैं। इससे शान बढ़ जाती है। किरमिच को तीन तह करके सीने से यह बनता है और उस पर चौड़े बन्द टाँकते हैं।

२३. **मेघडम्बर**—एक शामियाना है जिसका आविष्कार सम्राट् ने किया है। यह हाथी की शान को बढ़ाता है और महावत उसकी छाया में आराम पाता है।

२४. **रनपियल**—पेशानी बंद है जो जरबफ्त और दूसरी चीजों से बनाया जाता है। उसके किनारे पर बढ़ियाँ फीते और मोर्छल लटकाते हैं जो हिलते रहते हैं।

२५. **गतेली**—चार छल्लों को मिलाते हैं। तीन उनके ऊपर रखते हैं और दो छल्ले उनके ऊपर रखते हैं। इसको हाथी के पाँव में बाँधते है और उसकी आवाज शान को बढ़ाती है।

❀ तिब्बत के बैल की पूँछ के छोटे मोर्छल।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२६. **पाय रञ्जन**- पहले के समान कुछ घुँघुरू हैं।

२७. **अंकुश**—लोहे का एक छोटा छड़ है। सम्राट् ने इसका नाम **गजबाक** रखा है। इससे हाथी को अधिकार में रखते हैं और जहाँ चाहें खड़ा कर लेते हैं।

२८. **गद**—नेजा है जिसमें नोक के बदले लोहे के दो फल होते हैं। यह भोई के हाथ में रहता है और इससे वह हाथी को दुष्टता करने से रोकता है।

२९. **बँगरी**—लोहे और पीतल के कुछ छल्लों को कहते हैं जो दाँत में पहनाये जाते हैं। इनसे सजावट और मजबूती बढ़ जाती है।

३०. **जगावत**—गद की तरह होता है। यह एक हाथ लम्बा होता है। भोई इससे हाथी की चाल तेज करता है।

३१. **झण्डा**—तोग (तोक) की तरह होता है। इसमें मोर्छल बाँधते हैं और हाथी की कमर में लटका देते हैं।

हथियों की सजावट के सामानों का वर्णन करना असम्भव है। हर साल प्रत्येक **मस्त शेरगीर** और **सादा** के लिए सात रुई की चादरें दी जाती हैं जिनमें से प्रत्येक का मूल्य ८½ दाम होता है। चार कम्बल भी दिए जाते हैं जिनमें से प्रत्येक का मूल्य १० दाम होता है। बैलों का आठ चमड़े दिए जाते है जिनमें से प्रत्येक का मूल्य ८ दाम होता है। **मँझोला** और **करहा** हाथियों के लिए रुई की चार चादरें, तीन कम्बल और सात चमड़े दिए जाते हैं। **फन्दुरकिया** और **मोकल** और मादा हाथी के लिए ३ रुई की चादरें, २ कम्बल और ४ चमड़े दिए जाते हैं। उपल्ला और अस्तर को सिल कर हाथी के लिए झूल तैयार करते हैं और हर झूल के सीने के लिए आधा सेर रुई का तागा निर्धारित है। एक मन दाने के साथ दस सेर लोहा जंजीर आदि के लिए २ दाम प्रति सेर के हिसाब के हल्कादार को सौंप दिया जाता है और हर चमड़े के लिए एक सेर तिल्ली का तेल नियत है जिसका मूल्य ६० दाम प्रति मन है। पाँच सेर साफ की हुई रुई का मोटा सूत उस हाथी के कलावा के लिए दिया जाता है जिस पर **फौजदार** सवार होता है। एक सेर तागा का मूल्य ८ दाम है। दूसरे हाथियों के लिए चमड़े आदि से **कलावा** बनाते हैं और उनको स्वयं इकट्ठा करते हैं। प्रति वर्ष पुराने कपड़ों के बदले में नौकरों से १२ दाम काट लिए जाते हैं।

आईन ४६

सम्राट् की सवारी के हाथी

सम्राट् की सवारी के लिए सदैव १०१ हाथी रहते हैं। इनका भोजन परिमाण के विचार से वही होता है जो दूसरे हाथियों का, परन्तु उनके प्रकार में अन्तर होता है। अधिकांश हाथियों को ५ सेर शक्कर, ४ सेर घी, आधा मन चावल देते हैं। मिर्च और लौंग आदि भी उसमें मिलाते हैं। कुछ को अनाज के अतिरिक्त १॥ मन दूध दिया जाता है। गन्ने के मौसम में दो महीने तक हर हाथी को कम या अधिक ३०० गन्ने प्रतिदिन देते हैं। बादशाह स्वयं इनके महावत होते हैं। मस्ती की अवस्था में हर हाथी पर तीन भोई रहते हैं और साधारण समय में दो। उनका मासिक वेतन ४०० दाम से अधिक और १२० दाम से कम नहीं है। इसको सम्राट् स्वयं नियत करते हैं। हर हाथी के लिए चार मेठ होते हैं। बड़े हाथियों के हल्कों में मादा हाथी बहुत कम शामिल की जाती हैं। खासा हाथियों में से प्रत्येक के लिए तीन-तीन और कुछ के लिए इससे भी अधिक मादा हाथियाँ होती हैं। प्रथम श्रेणी की मादा हाथी के लिए ढाई; दूसरी के लिए दो; तीसरी के लिए डेढ़ मेठ निर्धारित हैं। दूसरे प्रकार के हाथियों के लिए हल्कों के अनुसार मेठ होते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जैसे हर हल्का एक अमीर के सुपुर्द है उसी तरह खासा के हर हाथी की देखभाल एक अमीर के सुपुर्द की गई है। खासा के हर दस हाथियों की देख भाल एक अनुभवी मनुष्य के जिम्मे है जिसको **दहाईदार** कहते हैं। पहले का मासिक वेतन १२ रु०, दूसरे का १० रु० और तीसरे का ८ रु० नियत है। खासा के प्रत्येक दस हाथियों के लिए एक कार्यपटु तथा ईमानदार व्यक्ति नियुक्त है। इसको **नकीब** कहते हैं। यदि कोई हाथी कम खाता है या कम भोजन पाता है या बीमार होता है अथवा यदि कोई असामान्य बात होती है तो वह उसकी दैनिक रिपोर्ट सम्राट् के पास भेजता है। वह एक घोड़े को दाग लगाता है और अहदियों में वेतन पाता है। हर दस हाथी के लिए सम्राट् अपने एक निकटवर्ती सेवक को नियुक्त करते हैं जो सप्ताह में एक बार जाकर हाथियों को देखता है और उन्हें रिपोर्ट देता है।

आईन ४७

खासा हाथियों की सवारी की विधि

आरम्भ से अब तक सम्राट्, जो सौभाग्य के मैदान के सवार हैं, इस आकाश जैसे शरीर वाले सब श्रेणियों के हाथियों पर सवारी करते हैं और उन देवाकारों को अपने अधिकार में रखते हैं। कभी-कभी जब हाथी मस्ती की हालत में होते हैं तब भी वह उनके दाँतों पर पैर रख कर चढ़ जाते हैं और अनुभवी लोगों को चकित कर देते हैं।*

तीव्रगामी हाथियों के ऊपर हौदे भी कसे जाते हैं जो शयनागार का काम देते हैं। ऐसा एक हाथी महल में सदा तैयार रखते हैं। जब बादशाह सवार होते हैं तब भोइयों को एक महीने का वेतन पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। जब दस हाथियों पर सवारी हो जाती है तब वह निकटवर्ती सेवक जो प्रति सप्ताह हाथियों के विषय में रिपोर्ट भेजता है उसको विशेष पुरस्कार दिया जाता है। पहले वाला १०० रु० पाता है; **दहाईदार** ३१ रु०; **नकीब** १५ रु०; और मुशरिफ (लिपिक) (७'५०' रु०। इसके अतिरिक्त, अच्छे काम और सेवा के लिए सेवक सम्राट् से जो पुरस्कार प्राप्त करते हैं उनका वर्णन असम्भव है।

लड़ने के लिए प्रत्येक हाथी का एक प्रतिद्वन्द्वी नियुक्त है और कुछ सदैव महल में युद्ध के लिए तैयार रहते हैं और सम्राट् की आज्ञा पाकर उनको लड़ाते हैं। यदि खासा के हाथी लड़ते हैं तो जब लड़ाई समाप्त हो जाती है तब खासों के भोइयों को २५० दाम पुरस्कार में दिए जाते हैं। यदि दूसरे हाथी लड़ते हैं तो दूसरे भोइयों को २०० दाम दिए जाते हैं। खासा हाथियों में **दहाईदार भोई** और **मेठ** के वेतन से प्रति रुपया १ दाम लेता है, **मुशरिफ** आधा दाम और **नकीब** चौथाई दाम। **हल्का** के हाथियों में **सदीवाल, दहबाशी** और **बीस्ती** प्रति रुपया १ दाम लेते हैं और **मुशरिफ** और **नकीब** पहले के समान (अर्थात् क्रम से आधा दाम और चौथाई दाम प्रति रुपया) पाते हैं।

आईन ४८

दण्ड

कर्तव्य-पालन की उपेक्षा को रोकने और कर्तव्यपरायणता की शिक्षा देने के लिए सम्राट् ने, दूसरे विभागों की तरह, अर्थ दण्ड निर्धारित किये हैं। जब खासे का नर या मादा हाथी मर जाता है तो भोइयों से तीन महीने का वेतन

---

* तुजुके जहाँगीरी पृ० १६ में जहाँगीर ने अकबर के ऐसे अनेक साहसिक कार्यों का उल्लेख किया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वापस ले लिया जाता है। यदि हाथी का सामान खो जाता है तो **भोई** और **मेठ** से पूरे मूल्य का $\frac{2}{3}$ वसूल किया जाता है, यदि भूल खो जाता है तब उसका पूरा मूल्य वसूल किया जाता है। यदि मादा हाथी दुर्बलता अथवा कम सेवा के कारण मर जाती है तो उसका मूल्य **भोई** से वसूल कर लिया जाता है। यदि महावत हाथी को मस्ती में लाने के लिए दवायें खिलाता है और इससे जानवर मर जाता है तो महावत को प्राणदण्ड मिल सकता है या उसका एक हाथ काटा जा सकता है या वह दास के रूप में बेचा जा सकता है। यदि हाथी खासे का होता है तो भोई से भी तीन मास का वेतन ले लिया जाता है और वह एक वर्ष के लिए निलम्बित (मुअत्तल) कर दिया जाता है।

प्रतिमास दो अनुभवी पुरुष गजशाला में जाकर खासा हाथियों की मोटाई और दुबलेपन का अनुमान करते हैं। यदि हाथी दुर्बल होते हैं तो आईन पागोश्त (देखिये आईन ८३) के नियत वजन के अनुसार सम्बन्धित अमीर से जुर्माना वसूल कर लिया जाता है और साथ ही भोइयों का भी वेतन कम कर दिया जाता है। उदाहरणार्थ, गोश्त के चौथाई भाग की कमी पर वेतन का चौथाई भाग कम कर दिया जाता है। जहाँ तक हल्का हाथियों की बात है हर चौथे महीने अहदी लोग हाथीखाने में जाकर जाँच करते हैं और सम्राट् के पास रिपोर्ट भेजते हैं। यदि हाथी मर जाता है तो महावत और **भोई** का तीन-तीन महीने का वेतन काट लिया जाता है। यदि दाँत टूट जाता है और **कली** तक चोट पहुँच जाती है—यह दाँत की जड़ के पास का स्थान है और खोखला होकर बेकार हो जाता है तो हाथी के मूल्य का $\frac{1}{2}$ भाग वसूल किया जाता है जिसमें से $\frac{2}{3}$ भाग **दारोगा** और $\frac{1}{3}$ भाग **फौजदार** देता है। यदि कली तक चोट नहीं पहुँचती तो हाथी के मूल्य का $\frac{1}{12}$ भाग पूर्वोक्त अनुपात के अनुसार दारोगा और फौजदार के वेतन से काट लेते हैं। परन्तु अब हाथी के मूल्य का $\frac{1}{100}$ भाग लिया जाता है तथापि खासा हाथियों के विषय में सम्राट् की इच्छा के अनुसार अर्थ-दण्ड लगाते हैं।

आईन ४९

अश्वशाला

घोड़ा शासन की तीनों शाखाओं में उच्च स्थान रखता है और देशों को विजय करने और कष्ट निवारण का उत्तम साधन है। बादशाह को उससे अधिक रुचि है। व्यापारी ईराक, अरब, अजम, रूम, तुर्किस्तान, बदख्शाँ, शिरवान, किरगिज, तिब्बत, कश्मीर तथा अन्य देशों से अच्छे घोड़े सम्राट् के दरबार में लाते हैं। सदैव तूरान और ईरान से काफिले के काफिले पहुँचते रहते हैं। वर्तमान समय में सम्राट् की अश्वशाला में बारह हजार घोड़े हैं। जिस प्रकार प्रति दिन घोड़े आते उसी प्रकार सम्राट् उनको उपहार आदि के रूप में निकालते रहते हैं।

चतुर और अनुभवी आदमी इस होशियार और आदमी की सी आदत रखने वाले जानवर की नस्ल बढ़ाने में व्यस्त रहते हैं और थोड़े समय में हिन्दुस्तान अरब से इस विषय में आगे बढ़ गया और बहुत से हिन्दुस्तानी घोड़े अरबी और ईराकी घोड़ों से पृथक् नहीं किए जा सकते। यद्यपि इस देश में सर्वत्र अच्छे घोड़े पाए जाते हैं तथापि कच्छ के घोड़े अरबी घोड़ों के समान होते हैं। कहते हैं कि पहले समय में अरब का एक जहाज नष्ट होकर कच्छ के समुद्र तट पर आया। उस पर सात अच्छे अरबी घोड़े थे और इन घोड़ों से नस्ल बढ़ाई गई। पंजाब में भी ईराकी जैसे घोड़े पैदा हुए, विशेष कर सिन्ध और बहत (झेलम) के बीच में। उनका नाम **सनूजी*** है। पती हैबतपुर† के जिले में, बजवारा, तिहारा,‡ आगरा के सूबे में, मेवात और अजमेर सूबे में उनको **पचवारिया** कहते

---

* कई पांडुलिपियों में सतूजी लिखा मिलता है। † हैबतपुर, अक्षांश २९°५१′, देशान्तर ७६°२′। ‡ तिहारा, अक्षांश ३०°५७′, देशान्तर ७५°२५′।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं। हिन्दुस्तान के उत्तरी पहाड़ी भागों में एक प्रकार के छोटे परन्तु मजबूत घोड़े पैदा होते हैं जिनको **गूत** कहते हैं। बङ्गाल की सीमा के पास कूचविहार के निकट दूसरे प्रकार का घोड़ा पाया जाता है जो तुर्की घोड़े और गूत के बीच का होता है। इनको **टांघन*** कहते हैं। वे मजबूत और बलवान होते हैं।

अपनी दूरदर्शिता और बुद्धिमानी से सम्राट् छोटे छोटे पदार्थों से अपने को परिचित रखते हैं और उनकी श्रेणी या वर्ग नियत करते हैं और सब सामानों के हाल को जानते रहते हैं। युग की आवश्यकताओं पर वह ध्यान देते हैं और समुचित अधिनियम बनाते हैं। इसलिए वह घोड़ों से सम्बन्धित विषयों पर बहुत ध्यान देते हैं क्योंकि वह शासन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और महत्ता प्राप्त करने के लिए अक्सीर का काम करता है।

प्रथम, सम्राट् ने घोड़ों के क्रय-विक्रय के लिए अलग स्थान नियत कर दिया है जिससे व्यापारी बिना प्रतीक्षा के कष्ट के आराम करें और ऋतुओं के कष्टों से छुटकारा पावें। इस व्यवस्था से घोड़ों को वर्तमान काल के व्यापारियों की निष्ठुरता और लोभ से कष्ट नहीं पहुँचता† और न तो वे अच्छे विचार वाले व्यापारियों के हाथ से दूसरों के हाथ में जाते। परन्तु जिस व्यापारी की सचाई विदित हो गई है और अपने वचनों का पूरा करने वाला सिद्ध हो चुका है वह जहाँ चाहे अपने घोड़ों को रखे और नियत समय पर लावे। द्वितीय, बादशाह ने एक सावधान व्यक्ति **कारवानसरा का अमीन** नियुक्त किया है ताकि वह अपनी बुद्धिमानी और अनुभव से व्यापारियों को अनाज्ञाकारिता के मार्ग पर न चलने दे और दुष्ट चुगुलखोरों की बेहूदा जबान बन्द हो जाय। तृतीय, उन्होंने एक योग्य **बितक्ची** (लिपिक) नियुक्त किया है जो उन घोड़ों का हिसाब रखता है जो आते हैं और जिनका निरीक्षण हो चुकता है। साथ ही वह लोगों के हृदय से शाही आईनों को भूलने नहीं देता। चतुर्थ, उन्होंने विश्वसनीय और घोड़ों के मूल्य जानने वाले व्यक्तियों को नियुक्त किया है जो घोड़ों की श्रेणियों और उनके आने के क्रम के अनुसार उनके मूल्य निर्धारित करते हैं। कृपालु सम्राट्, जितना मूल्य निर्धारित हुआ है उसका ½ भाग और देते हैं और बिना प्रतीक्षा किए हुए ही व्यापारी घोड़ों का मूल्य पाकर वापस जाते हैं।‡

आईन ५०

घोड़ों की श्रेणियाँ

घोड़े दो प्रकार होते हैं—१. **खासा** और २. **गैर खासा**। खासा घोड़े निम्नांकित हैं: चुने हुए अच्छे अरबी और अजमी घोड़ों के छः अस्तबल जिनमें से प्रत्येक में चालीस घोड़े हैं; राजकुमारों के अस्तबल; तुर्की राहवार घोड़ों के अस्तबल; शाही अस्तबलों में पैदा होने वाले घोड़े। प्रत्येक एक नाम से प्रसिद्ध है जिसमें तीस से अधिक घोड़े नहीं होते। बादशाह छः अस्तबलों के घोड़ों पर सवारी करते हैं।

दूसरी श्रेणी के घोड़े तीन प्रकार के होते हैं—सी-अस्पी ऽ १. बीस्त अस्पी,γ और दह अस्पी ⊙। जिस

---

* इसको ताघन भी कहते हैं। † अकबर पालतू जानवरों के ऊपर की गई निष्ठुरता से घृणा करता था। जीवन के अन्तिम भाग में, जैसा आगे वर्णन किया जायगा, उसने शिकार और जानवरों की लड़ाई बन्द कर दी। ‡ अबुल फज्ल इस ग्रन्थ में प्रायः इस बात का उल्लेख करता है। ठेकेदार साधारणतया स्थानीय कोश के नाम हुँडी पाते थे। परन्तु वे दूसरे स्थानीय खजाने को भी भेजे जा सकते थे यदि वे मुहासिल को कुछ रिश्वत न दें अथवा महाजन के हाथ कम दाम पर हुँडी को न बेच दें। यही दशा फारस की भी थी, देखिए ताहिर नसिराबादी का 'तजकिरा'। ऽ जिस अस्तबल में तीस घोड़े रहते हैं। γ जिस अस्तबल में बीस घोड़े रहते हैं। ⊙ जिस अस्तबल में दस घोड़े रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

घोड़े का मूल्य दस मोहर तक होता है वह देहमोहरी अस्तबल में स्थान पाता है; जिसका मूल्य ११ से २० मोहर तक होता है वह बीस मोहरी अस्तबल में स्थान पाता है, इत्यादि ।

उमरा, दूसरे मनसबदार और बड़े अहदी अस्तबलों की देख भाल के लिए नियुक्त हैं। घास और दला हुआ दाना सब घोड़ों के लिए सरकार से मिलता है सिवाय उस घोड़े के जिस पर शाही आज्ञा के अनुसार हर एक अस्तबल का यताकदार* सवारी करता है और जिसके घास और दाने का प्रबन्ध वह स्वयं करता है ।

आईन ५१

घोड़ों का भोजन

खासा के प्रत्येक घोड़े के लिए ८ सेर दाना† उस समय दिया जाता था जब एक सेर का वजन २८ दाम था । किन्तु इस समय जब सेर का वजन तीस दाम हो गया है प्रत्येक घोड़े को ७½ सेर दाना दिया जाता है। जाड़े में मोठ या माश उबाल कर देते हैं और गर्मी में चना दिया जाता है । प्रतिदिन दो सेर आटा और १½ सेर शक्कर दी जाती है । जाड़े में हरी घास खाने से पहले ½ सेर घी देते हैं । प्रतिदिन दो दाम घास के लिए दिये जाते हैं जब हरी घास‡ प्राप्य होती है तब सूखी घास नहीं दी जाती है । लगभग तीन बीघे की घास एक घोड़ा खा जाता है । जब शक्कर के बदले गुड़ दिया जाता है तब घी देना बन्द कर देते हैं । हरी घास खिलाने के आरम्भ में तीन दिन तक दाना नहीं देते हैं और इसके बाद प्रतिदिन छः सेर अनाज और दो सेर गुड़ देते हैं। दूसरे ईराकी और तुर्की अस्तबलों में ७½ सेर दाना देते हैं । छः महीने तक जब सर्दी रहती है दाना उबाल कर देते हैं। एक मन दाना उबालने के लिए १ दाम दिया जाता है । सप्ताह में एक बार ¼ सेर नमक देते हैं । जिस काल में घोड़े को घी और हरी घास देते हैं उस काल में, यदि घोड़े का मूल्य ३१ मोहर से अधिक है तो उसको एक सेर शक्कर भी देते हैं और जिसका मूल्य तीस मोहर से कम और २१ मुहर से अधिक है उसको केवल ½ सेर शक्कर दी जाती है । दूसरे घोड़ों को शक्कर बिल्कुल नहीं दी जाती । हरी घास देने से पहले उस प्रत्येक घोड़े को, जिसका मूल्य २१ मोहर से १०० मोहर या उससे अधिक होता है, १ मन १० सेर घी खाने को दिया जाता है । जिनका मूल्य ११ मुहर से २० मुहर तक होता है उनको ३० सेर घी देते हैं । दस मुहर तक मूल्य वाले घोड़ों को घी, शक्कर या हरी घास कुछ नहीं देते हैं । हर घोड़े के लिए प्रतिदिन ८½ दाम के हिसाब से नमक नियत है परन्तु प्रायः एक बार इकट्ठा खिलाते हैं । उन इराकी और तुर्की घोड़ा के लिए जो बादशाह की सवारी में रहते हैं घास के लिए प्रतिदिन दो दाम निर्धारित है परन्तु जो घोड़े देहात में रहते हैं उनके लिए केवल १½ दाम । जाड़े में हर घोड़े को सूखी घास के बदले में १ बीघे की हरी घास देते हैं । जो घोड़े बादशाह की सवारी में रहते हैं उनके लिए २४० दाम खर्च होते हैं और जो परगनों अर्थात् देहात में रहते हैं उनके लिए २०० दाम । हरी घास के समय में हर घोड़े को दो मन गुड़ कन्दे सियाह दिया जाता है और उतना ही दाना कम कर देते हैं ।

विभाग के कर्मचारी सब खर्चों का बजट तैयार करते हैं और अच्छे कानून के अनुसार नियत समय पर उसका भुगतान पाते हैं । जब घोड़ा बीमार होता है तो जो कुछ खर्च होता है घोड़ों के डाक्टर के प्रमाणपत्र पर दे दिया जाता है ।

---

* अस्तबल का रक्षक । † दाना से तात्पर्य चने से है । ‡ खवीद उस जौ या गेहूँ के डंठल को कहते हैं जिसकी बालें कच्ची होती हैं ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जो घोड़ा घोड़ियों के समूह में बाँधा जाता है उसकी खूराक खासा के घोड़ों के समान होती है। **गूत** घोड़ों के लिए ५॥ सेर दाना दिया जाता है और पहले के अनुसार नमक। यदि घोड़ा दरबार में रहता है तो उसकी घास के लिए प्रतिदिन १॥ दाम दिया जाता है और परगना के घोड़ों को १$\frac{3}{8}$ दाम। परन्तु उनको घी, शक्कर या हरी घास नहीं दी जाती। किस्राक (घोड़ी) जब दरबार में रहती है तब ४॥ सेर दाना पाती है, पहले के अनुसार नमक, और घास के लिए १ दाम। परगना की घोड़ियों के लिए पहले के अनुसार परन्तु घास के लिए केवल $\frac{3}{4}$ दाम दिया जाता है। जिन घोड़ियों से बच्चे पैदा किये जाते हैं उनको २$\frac{3}{4}$ सेर दाना दिया जाता है परन्तु घास, नमक और लकड़ी नियत नहीं है।

बच्चा जब पैदा होता है तब तीन महीने तक माँ का दूध पीता है और नौ महीने तक दो गाय का दूध दिया जाता है। इसके बाद छः महीने तक प्रतिदिन २$\frac{3}{4}$ सेर अनाज दिया जाता है। इसके पश्चात् हर छः महीने पर १ सेर दाना बढ़ा देते हैं। जब तीन साल पूरे हो जाते हैं तब वह उपरोक्त नियमों के अनुसार खूराक पाता है।

आईन ५२

घोड़ों के सामान

खासा के घोड़ों को, सवारी के समय, जिन प्रकार के आभूषणों, हीरे जवाहर और कपड़ों से सजाते हैं उनका विवरण कठिन तथा लम्बा है। प्रतिवर्ष पोशिश (वस्त्र) के लिए २७७॥ दाम दिए जाते हैं। **अर्तक** रूई भरी हुई छींट है। इसका मूल्य ४७ दाम है। **यालपोश** (अयाल ढकने का वस्त्र) जिसका मूल्य ३२ दाम है। **पश्मीन रूपाक** (ऊनी रूमाल जो घोड़े के मुँह पर बाँधा जाता था) जिसका मूल्य दो दाम होता है। ये वस्तुएँ हर छः महीने में नई दी जाती हैं। पुराने **अर्तक** के बदले क्रय मूल्य का आधा काट लेते हैं; पुराने **यालपोश** के लिए $\frac{1}{2}$ भाग। **जुल** इसका उपल्ला बटे बाल का होता है और अस्तर नम्दे का होता है। इसका मूल्य ४२ दाम होता है। नख्ता बन्द (सर बन्द) और **पायबंद रीसमानी*** । इसका मूल्य ४० दाम होता है। **पुश्त तङ्ग** ८ दाम। मगसरान† ३ दाम; **नुख्ता** और **कैजा** १४ दाम। **खरखरा**‡ १॥ दाम। तोबरा ६ दाम। **सब्द**-दाना खिलाने के लिए, मूल्य १ दाम§। ये वस्तुयें वर्ष में एक बार दी जाती हैं और पुरानी वस्तुओं के बदले में १५$\frac{1}{10}$ दाम काट लिए जाते हैं।

जो घोड़े खासे के नहीं हैं और जिनका मूल्य २१ मुहर से कम नहीं है उनके लिए वर्ष में १९६॥ दाम खर्च होते हैं। वस्तुओं का भाव पूर्वोक्त है। पुरानी चीजों के बदले में २५$\frac{1}{2}$ दाम काट लिए जाते हैं।

जिन घोड़ों का मूल्य ११ मुहर से २० मुहर तक होता है उनके लिए प्रति वर्ष १५५$\frac{1}{4}$ दाम खर्च होता है। **अर्तक,** ३९$\frac{3}{4}$ दाम; **यालपोश,** २७$\frac{1}{4}$ दाम; **नम्दी जुल** (झूल), ३० दाम; **पुश्ततंग** ६ दाम; **नुख्ता और कैजा,** १० दाम; अगाड़ी और पछाड़ी, ३२ दाम; **मगसरान,** २ दाम; रूमाल, १॥ दाम; **खरखरा,** १$\frac{1}{4}$ दाम; **सब्द,** १ दाम; तोबरा ४॥ दाम। पुराने सामानों के बदले २० दाम काट लिए जाते हैं।

दस मुहर वाले घोड़ों और **किस्राक** और **गूत** पर ११७$\frac{1}{4}$ दाम खर्च होते हैं। **अर्तक,** ३७ दाम; यालपोश, ३४॥ दाम; जुल, २४ दाम; नुख्ता बन्द और पाय बन्द, ८ दाम; नुख्ता और कैजा, ८ दाम; पुश्त तंग, ५ दाम; मगसरान और दस्तमाल हरेक १॥ दाम; खरखरा, १$\frac{1}{4}$ दाम; सब्द, १ दाम; तोबरा, ४॥ दाम। पुरानी वस्तुओं के लिए उपरोक्त की भाँति मूल्य काटा जाता है।

---

* अगाड़ी और पछाड़ी की रस्सियाँ। † मोछल। ‡ खरहरा। § इसका योग केवल ११६$\frac{1}{3}$ दाम होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१. **कराह आहिनी** एक लोहे का बर्तन जिसमें १० घोड़ों का दाना उबाला जाता है। एक मन लोहे का मूल्य १४० दाम है। इसमें लोहार की मजदूरी भी शामिल है। २. **मिसीन सत्ल** पीतल का बर्तन है जिससे घोड़ों को पानी पिलाया जाता है। खासे के दस घोड़ों के लिए एक होता है। इसका मूल्य १४० दाम है। दूसरे घोड़ों के लिए जैसे ३० घोड़ों के अस्तबल में एक ही होता है। ३. **कमन्द** में लोहे के खूंटे लगे रहते हैं जिससे घोड़ों को बाँधते हैं। चालीस घोड़ों वाले अस्तबल में तीन कमन्द होते हैं; तीस घोड़ों वाले अस्तबाल में दो, और दूसरों में एक। हर एक कमन्द का वजन २० सेर होता है। उसका क्रय मूल्य १४० दाम होते हैं और १६ दाम मजदूरी के दिए जाते हैं। ४. **आहनीं मेख** (लोहे का खूंटा) हर कमन्द में दो होती हैं और हर एक का वजन ५ सेर होता है और उसका मूल्य १५ दाम होता है। ५. **तबर तुख्माक** (हथौड़ा) का वजन ५ सेर है और लोहे की मेख ठोंकने के काम आता है। हर अस्तबल में एक होता है।

ताँबे और लोहे की चीजें जो खासे के जानवरों के लिए दी जाती हैं, टूट जाने पर ठीक की जा सकती हैं और दारोगा उनको ठीक कर लेता है। जब वे बेकार हो जाती हैं तो वर्तमान भाव के अनुसार मूल्य काट कर शेष रुपया नकद दे दिया जाता है। दूसरे अस्तबलों में हर तीसरे वर्ष आधा मूल्य काट लिया जाता है। ६. **नाल** साल में घोड़ों को दो बार बाँधी जाती है। पहले चारों पैरों के लिए ८ दाम दिये जाते थे परन्तु आज काल दस। ७. **कुण्डलान** दस घोड़ों के लिए एक दिया जाता है; मूल्य ८०¾ रुपया है।

आईन ५३

अश्वशाला के सेवक-वृन्द

१. **आटबेगी** सब सरकारी घोड़ों की दशा की जानकारी रखता है* और सेवकों का तरह तरह से पथ-प्रदर्शन करता है। यह बहुत ऊँचा पद है जो किसी बड़े अमीर को दिया जाता है। आजकल यह सेवा खानखाना† के सुपुर्द है; २. **दारोगा**—हर एक अस्तबल के लिए अच्छे स्वभाव वाला एक दारोगा नियुक्त है। पाँच हजारी से बुजुर्ग अहदी तक इस पद पर नियुक्त होता है। ३. **मुशरिफ** घोड़ों की गणना करता है, विभाग की लेन-देन की निगरानी करता है और बादशाह के कानून का पालन कराता है और इस विभाग के आवश्यक सामानों की सूची तैयार करता है और उमरा के समुदाय में होता है। ४. **दीदावर** (निरीक्षक) घोड़ों के शाही दरबार में हाजिर होने से पहले यह उनकी जाँच करता है और उनकी श्रेणी तथा दशा निर्धारित करता है। मुशरिफ इन बातों को लिख लेता है। अधिकांश दीदावर लोग मनसबदारों और अहदियों में सम्मिलित हैं। ५. **आख्तची** सामान की देखभाल करता है और घोड़े को सजाता है। अधिकांश अहदियों में वेतन पाते हैं। ६ **चाबुकसवार** सवारी करता है और तेजी और रास्ते का अन्दाजा करता है और मुशरिफ उसको लिख लेता है। इसको अहदी के बराबर वेतन मिलता है। ७. **हादा** राजपूतों का एक वर्ग है। यह घोड़ों को तरह तरह की चाल सिखाता है।‡ कुछ हादा अहदियों के समुदाय में वेतन पाते हैं। ८. **मीरदहा** एक साईस है जो मातहतों से अधिक जानकारी रखता है और दस साईसों का सरदार होता है। यह

---

* **'बरहमगी तगावर आगही अन्दोजद'** पृष्ठ १४३ का अर्थ ब्लाकमैन ने लिखा है, **'समस्त सरकारी अश्वों की देखभाल का प्रभार उस पर है'**। horses belonging to the government), **पृष्ठ १४५**। † **मिर्जा खानखाना अर्थात् अब्दुर्रहीम आत्मज बैरामखाँ**। ‡ **'अस्थान रा गूनागूँ उसूल याद देहन'** पृ० १४४ का अर्थ ब्लाकमैन ने लिखा है, **'जो अश्वों को प्रारम्भिक चालें सिखाते हैं'**.(who teach horses the elementary steps), **पृष्ठ १४५**।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अहदियों में वेतन पाता है। खासा के दूसरे अस्तबलों में वह १७० दाम; देशी घोड़ों के अस्तबलों में १६० दाम; दूसरे सी अस्पी अस्तबलों में १४० दाम; बीस्त अस्पी अस्तबलों में १०० दाम; और देह अस्पी अस्तबलों में ३० दाम पाता है। वह भी दो घोड़ों की सेवा करता है। ९. बैतार (घोड़ों का हकीम) अहदियों में वेतन पाता है। १०. नकीब कुछ कर्मठ और चतुर मनुष्यों को खबरदारी के लिए नियुक्त करते हैं जो हर तबीले (अस्तबल का) समाचार दारोगा और मुशरिफ को पहुँचाते हैं। वे घोड़ों को तैयार रखते हैं। दो मुख्य नकीब अहादियों में हैं और तीस साईस उनके अधीन होते हैं। हर एक को १०० दाम से लेकर १२० दाम वेतन देते हैं। ११. साईस-दो घोड़ों पर एक साईस होता है। चिहिल अस्पी अस्तबलों में उसका वेतन १७० दाम मासिक है, बड़े राजकुमार के अस्तबल में १३८ दाम; दूसरे राजकुमारों के अस्तबलों में और समाचार वाहक घोड़ों के अस्तबलों में १३६ दाम; देशी घोड़ों के अस्तबलों में १२६ दाम; दूसरे सी अस्पी अस्तबलों में १०६ दाम; बीस्त अस्पी में १०३ दाम और देह अस्पी अस्तबलों में १०० दाम वेतन पाते हैं। १२. जिलौदार और पायक (हरकारा)-उनका मासिक वेतन १२०० दाम से अधिक और १२० दाम से कम नहीं है। तेज चाल और अच्छी सेवा के लिए उनके वेतन में भिन्नता होती है। उनमें से प्रतिदिन बहुत से पचास कोस से सौ कोस तक दौड़ते हैं। १३. नालबन्द उनमें से कुछ अहदी और कुछ प्यादा होते हैं और १६० दाम पाते हैं। १४. जीनदार—नालबंद के समान इनका पद तथा वेतन होता है। चालीस घोड़ों के खासा अस्तबल में हर दो घोड़ों के लिए एक जीन निम्न ढंग से नियत है—पहले और इक्कीसवें घोड़े के लिए एक जीन, दूसरे और बाईसवें के लिए एक जीन; आदि आदि। यदि पहला घोड़ा बाहर आता है तो जीन अपने स्थान पर रहती है और दूसरा घोड़ा पहला हो जाता है और दूसरे की जीन तीसरे को मिल जाती है। इसी प्रकार अन्त तक होता है। यदि बीच का घोड़ा बाहर जाता है तो उसकी जीन उसके पहले वाले को मिलती है। १५. आबकश चालीस घोड़ों वाले अस्तबल में तीन आदमी; तीस घोड़ों के अस्तबल में दो; और दूसरे अस्तबलों में एक आबकश नियुक्त है। उनका मासिक वेतन १०० दाम है। १६. फर्राश-हर खासा तवेले में एक होता है। उसका मासिक वेतन १३० दाम है। १७. सिपन्दसोज[1] केवल चालीस घोड़ों के अस्तबल में होता है। उसका मासिक वेतन १०० दाम है। १८. खाकरूब (झाड़ू लगाने वाला)-हिन्दुस्तान में इसको हलालखोर कहते हैं। बादशाह ने इस नाम को प्रचलित किया है। चालीस घोड़ों के तवेले में दो व्यक्ति; तीस और बीस में एक व्यक्ति नियुक्त रहता है। उसका मासिक वेतन ६५ दाम है। यात्रा के समय में वे दारोगा जिनको प्यादों का भी वेतन दिया जाता है अपने साथ जानवरों को ले जाने के लिए कुछ कुली रखते हैं। तीस घोड़े वाले तवेले में १५ कुली होते हैं और साथ जाते हैं। जिन दारोगों को अतिरिक्त वेतन नहीं मिलता उनके लिए कुली सरकार द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। और हर एक को प्रतिदिन दो दाम दिये जाते हैं।

---

[1]सिपन्द के बीज गर्म तावे पर रखे जाते हैं। उनका धुआँ बुरी नजर (नजरे बद, चश्मे रसीदन) से बचाती है जो अकबर के घोड़ों पर भी लग जाया करती थी। जो आदमी इन बीजों को जलाता था वह सिपन्दसोज कहलाता था (देखिए दूसरे ग्रन्थ में शिकेबी के अन्तर्गत पद्यात्मक उद्धरण)। कभी कभी साईस सिपन्द के बदले में अस्तबल के फाटक पर बन्दर रखते हैं। कुदृष्टि का प्रभाव घोड़ों से हटकर बन्दर पर चला जाता है। दूसरा इलाज यह है कि लोग अस्तबलों के फाटक पर घोड़ों की पुरानी नालें गाड़ देते हैं। फतेहपुर सीकरी में फाटकों पर सैकड़ों नालें अब भी देखी जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ५४

बारगीर

सम्राट् में मनुष्यों की योग्यता पहचानने की विलक्षण क्षमता है। इसलिए वह लोगों को सवारी करने योग्य तो समझते हैं परन्तु उनको घोड़ों के अच्छे रक्षक नहीं समझते। कुछ तवेलों को अलग करके दारोगों के सुपुर्द कर दिए हैं और उनके लिए अलग २ मुशरिफ नियुक्त हैं। सेवा के समय वितिक्ची की आज्ञा के अनुसार उनको घोड़े दे दिए जाते हैं परन्तु इनको घोड़े रखने का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। इनको बारगीर सवार कहते हैं।

आईन ५५

घोड़ों को दागना

घोड़ों की अदला बदली रोकने और यह सन्देह मिटाने के लिए कि अमुक घोड़ा शाही है अथवा नहीं दाग का आईन बनाया गया है। कभी नजर शब्द और कभी दाग शब्द और एक समय में (सात) की गिनती दाग लगाने[1] के लिए निर्धारित की गई थी। जो घोड़ा शाही तवेले में आता था उसके दाहिने गाल पर दाग लगाया जाता है और जो वहां से वापस होता है उसके बाँयें गाल पर। कभी कभी ईराकी और मुजन्नस[2] घोड़ों के दाहिने गाल पर उनके मूल्य की संख्या का दाग लगाया जाता था और तुर्की और ताजी घोड़ों के बायें गाल पर। आजकल हर तवेले के घोड़ों पर मूल्य की संख्या का दाग लगा दिया जाता है। इस प्रकार देह मुहरी घोड़ों पर संख्या दस का निशान और बीस्त मुहरी पर बीस का निशान लगाते हैं, आदि आदि। इसी तरह पेशी में जानवर के मूल्य में वृद्धि या कमी होती है तो पहले दाग को मिटाकर नये मूल्य का दाग लगाते हैं।

आईन ५६

अश्वशाला में घोड़ों की कमी की पूर्ति करना

पहले यह नियम था कि यदि चालीस घोड़ों वाले और देशी तवेलों के दस जानवर और राहवार तवेलों के पाँच जानवर कम हो जाते थे तो निम्न प्रकार से उनकी पूर्ति कर दी जाती थी। पहले अर्थात् चालीस घोड़ों वाले तवेलों की कमी पूरी करने के लिए राजकुमारों के अच्छे घोड़े चुन लिए जाते थे; दूसरे में देशी घोड़े से कमी की पूर्ति की जाती थी और राहवारों की कमी दूसरों तवेलों से की जाती थी। यदि बड़े राजकुमार (सलीम) के तवेलों में पन्द्रह घोड़ों की कमी होती थी तो उसके भाइयों के अच्छे घोड़ों से पूर्ति की जाती थी। यदि मँझले

---

[1]. देखिए दूसरे ग्रन्थ कि आईन ७ और ८। घोड़ों पर दाग लगाने की प्रथा ९८१ हिजरी तदनुसार १५७३ ई० में पुनः चालू की गई जब शाहबाज मीर बख्शी नियुक्त हुआ। उसने अलाउद्दीन खिल्जी और शेरशाह के कानूनों का अनुसरण किया। देखिये बदायूनी, पृ० १७३ और १९०। [2]. 'मुजन्नस' का अर्थ है ईराकी का हमजिन्स, अर्थात् वह दोगला घोड़ा जो ईराकी के समान होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजकुमार (मुराद) के तवेलों में बीस घोड़ों की कमी होती थी तो छोटे राजकुमार और दूसरे तवेलों से कमी की पूर्ति की जाती थी। यदि छोटे राजकुमार (दानयाल) के तवेलों में पच्चीस घोड़ों की कमी होती थी तो दूसरे तवेलों से उसकी पूर्ति की जाती थी।

किन्तु इलाही सन के सैंतीसवें वर्ष (१५९३ ई०) में आज्ञा हुई कि अब से हर वर्ष हर तवेले में एक-एक घोड़ा बढ़ाया जायगा। इस प्रकार जब इस वर्ष खासा तवेलों के ग्यारह घोड़े कम हुए तो उनकी पूर्ति करनी आरम्भ हो गई और दूसरे तवेलों की कमी पेशी के समय पूरी की गई।

आईन ५७

अर्थ दण्ड

जब खासा का घोड़ा मर जाता है तो क्रय मूल्य के हर मुहर के लिए दारोगा को १ रु० और मीरदहा को दस दाम देने पड़ते हैं और साईसों को अपने वेतन का चौथाई भाग देना पड़ता है। यदि कोई घोड़ा चोरी चला जाता है या चोट खा जाता है तो ऐसी दशा में जुर्माना की कोई रकम निर्धारित नहीं है बल्कि इसकी सूचना सम्राट् को दी जाती है और उनकी आज्ञा के अनुसार जुर्माना वसूल किया जाता है।

दूसरे तवेलों में एक घोड़े की मृत्यु के लिए प्रति मुहर एक रुपया और दो की मृत्यु के लिए प्रति मुहर दो रुपये दारोगा से वसूल किया जाता था। मीरदहा और साईस से पूर्वोक्त ढंग के अनुसार जुर्माना लिया जाता था। परन्तु अब एक से तीन घोड़ों तक की मृत्यु पर प्रति मुहर एक रुपया और चार घोड़ों की मृत्यु के लिए प्रति मुहर दो रुपया और पाँच घोड़ों की मृत्यु पर प्रति मुहर तीन रुपये लिए जाते हैं।

यदि घोड़े का मुंह फट जाता है तो मीरदहा से प्रति मुहर १० दाम जुर्माना वसूल करते हैं और वह यह जुर्माना दूसरे साईसों से वसूल करता है।

आईन ५८

घोड़ों को सवारी के लिए तैयार रखना

खासा के दो, राहवार से तीन, सत्तर मुहरी से लेकर दस मुहरी तक और गूत के हर तवेले से एक-एक हाजिर रखते हैं। चार-चार को अलग करते हैं[1] और हर एक को मिस्ल कहते हैं। पहली मिस्ल : चिहिल अस्पी तवेलों में से एक; बड़े राजकुमार के तवेलों में से एक; मँझोले राजकुमार के तवेलों में से एक; और खासा राहवार घोड़ों में से एक। दूसरी मिस्ल : छोटे राजकुमार के तवेले में से एक; देशी घोड़ों में से एक; चिहिल अस्पी में से एक; और राहवार में से एक। तीसरी मिस्ल : तीनों राजकुमारों के तवेलों में से तीन और खाना जाद (देशी) में से एक। चौथी मिस्ल : चालीस, तीस, बीस, दस मुहर वालों में से प्रत्येक से एक घोड़ा।

---

[1]. 'चहार चहार जुदा साजन' पृ० १४५ का अनुवाद ब्लाकमैन ने "उनके चार विभाग बनाये जाते हैं" किया है, पृष्ठ १४६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चौथी मिस्ल के घोड़ों पर बादशाह बहुत कम सवारी करते हैं। राजकुमार मुराद के देहान्त के बाद[1] चालीस मुहर वाले अच्छे घोड़े भी बादशाह की सवारी के लिए आने लगे। पहली मिस्ल : चिहिल अस्पी में से एक, बड़े राजकुमार, छोटे राजकुमार और राहवार तवेलों में से एक-एक। दूसरी मिस्ल : खानाजाद में से एक; सत्तर से अधिक मुहर वालों में से एक; चालीस मुहर वाले खासा में से एक; राहवार में से एक। तीसरी मिस्ल : दोनों राजकुमारों, खानाजादों और सत्तर मुहर वालों में से एक-एक। चौथी मिस्ल : साठ, पचास, चालीस और तीस मुहर वालों में से एक-एक।

बीस और दस मुहर वाले घोड़ों और गूत में से भी घोड़े तैयार रखे जाते हैं।

आईन ५९

उपहार

जब बादशाह खासा के छः तवेलों में से किसी एक घोड़े पर सवार होते हैं तो निश्चित नियम के अनुसार, उत्साह और सेवा का भाव बढ़ाने के लिए सेवकों को कुछ देते हैं। कभी ऐसा होता था कि यदि वह खासा घोड़े पर सवारी करते थे तो एक रुपया देते थे जिसमें से एक दाम आतबेगी, दो दाम जिलौदार; १८½ दाम साईस पाते थे और शेष मुशरिफ, नकीब, आख्तची, और जीनदार आपस में बाँट लेते थे। यदि बादशाह बड़े शाहजादे के तवेलों के घोड़े पर सवारी करते थे तो तीस दाम दिए जाते थे और उपरोक्त में से हर एक ½ दाम कम पाता था। यदि दूसरे राजकुमार के घोड़े पर सवार होते थे तो २० दाम। इसी हिसाब से सेवकों की बख्शिश घटती जाती थी। यदि छोटे राजकुमार के तवेलों के घोड़े, राहवार और खानाजाद पर सवारी करते थे तो वितरण के उसी ढंग पर दस दाम दिए जाते थे।

अब चालीस मुहर वाले घोड़े पर सवारी करने पर पहले की तरह एक रुपया दिया जाता है; बड़े राजकुमार के तवेलों के घोड़े पर सवारी करने पर २० दाम; छोटे शाहजादे के घोड़े के लिए १० दाम; राहवार के लिए ५ दाम; खानाजाद के लिए ४ दाम और दूसरे तवेलों के घोड़ों के लिए २ दाम दिए जाते हैं।

---

[1] रुखसत शुद का अर्थ होता है मर गया परन्तु ब्लाकमैन ने इसका अर्थ 'पद ग्रहण किया' है और टिप्पणी में लिखा है कि १५९६ में वह गुजरात की सेना का अध्यक्ष हुआ और अहमद नगर को विजय करने के लिए उसे आज्ञा मिली। परन्तु कुछ समय उपरान्त बादशाह ने सुना कि मुराद की सेना का हाल बहुत बुरा है तो बादशाह ने १५९९ में स्वयं वहाँ जाने का संकल्प किया और अबुल फज्ल को भेजा कि मुराद को वापस लावे। परन्तु जब अबुल फज्ल वहाँ पहुँचा तो देखा कि मुराद मर रहा है; पिछले वर्ष से उसे मिरगी आने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ६०

जिलौआना[1]

जब कोई घोड़ा उपहार में दिया जाता है तो उसका मूल्य ५० प्रतिशत बढ़ा देते हैं और पाने वाले को हर मुहर पर १० दाम देना पड़ता है। इसको निम्न प्रकार बाँटते हैं : २½ दाम जिलौवेगी; १½ दाम मुशरिफ; ५ दाम आतवेगी; ६ जीतल नकीब; ½ दाम साईस; १५ जीतल तहसीलदार और शेष जीनदार और आख्तची बराबर बाँट लेते हैं।

इस देश में घोड़ों की प्राकृतिक आयु ३० वर्ष है और उनका मूल्य ५०० मुहर से लेकर दो रुपये तक।

आईन ६१

उष्ट्रशाला

शासनकाल के आरम्भ से बादशाह को इस विचित्र आकृति वाले पशु से अत्यधिक रुचि है। चूंकि यह जानवर शासन की तीनों शाखाओं के लिए बहुत उपयोगी है और बोझा ढोने तथा कम खाने से सन्तुष्ट होने के कारण वह बादशाह को बहुत प्रिय है इसलिए वह इस पर बहुत ध्यान देते हैं। इस देश में बहुत अच्छे अच्छे ऊँट पैदा हुए और वे ईरानी और तूरानी ऊँटों से आगे बढ़ गये।

अपने दरबार का गौरव और अन्य लोगों के मनोरंजन के लिए सम्राट् इन जानवरों की लड़ाई कराते हैं। सदैव कुछ अच्छे ऊँट इस काम के लिए तैयार रखे जाते हैं। खासों में सबसे श्रेष्ठ शाहपसन्द नामक बारह वर्ष का देशी ऊँट है। यह अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित करता है और कुश्ती के दांव पेच और अद्भुत करतब दिखाता है।

अजमेर, जोधपुर, नागोर, बीकानेर, जैसलमेर, भटिन्डा और भटनेर के समीप ऊँट बहुत पाये जाते हैं। कच्छ के निकट गुजरात प्रान्त में सबसे अच्छे ऊँट पाए जाते हैं। सिंध में सबसे अधिक ऊँट पाये जाते हैं। वहाँ प्रायः लोग दस हजार और उससे अधिक ऊँटों के मालिक होते हैं। तेज चाल के लिए अजमेर के ऊँट और बोझा ढोने के लिए ठट्ठा के ऊँट प्रसिद्ध हैं।

इस विभाग की माया[2] अरवाना अर्थात् मादा ऊँट है। हर देश में वे जाड़े में मस्ती में आती हैं और जोड़ा खाती हैं। यदि नर दो कोहान का होता है तो उसे 'बुगुर' कहते हैं। बच्चे को नर और माया कहते हैं।

---

१. 'जिलो' उस रस्सी को कहते हैं जो लगाम में लगी रहती है और जिसको पकड़ कर घोड़े को ले जाते हैं। जिस घोड़े को ले जाते हैं उसको 'जनीबा' कहते हैं। विशेषण 'जिलौआना' कोश में नहीं मिलता। इसका अर्थ है 'ले जाए हुए घोड़े से सम्बद्ध'। 'जिलौदार' या 'जनीबादार' वह सेवक है जो रस्सी पकड़कर घोड़े को ले जाता है। 'जिलौवेगी' उन घोड़ों का अधीक्षक है जो उपहार के लिए चुने जाते हैं। तहसीलदार फीस वसूल करता है। २. माया का अर्थ होता है पूँजी, सरमाया। ब्लाकमैन ने इसका अर्थ सफलता लिखा है। इस शब्द के प्रयोग में श्लेष अलंकार है, क्योंकि माया का अर्थ 'मादा ऊँट' भी होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बादशाह ने नर का 'बुगदी'[1] और माया का जम्माज़ा नाम रक्खा है। बोझ उठाने और लड़ाई करने के लिए बुगदी मजबूत होता है और तेज चाल के लिए जम्माजा। हिन्दुस्तानी ऊँट जिसे 'लोक' कहते हैं और अरवाना तेजी में लगभग इसके बराबर हैं और कुछ उससे भी अधिक तेज हैं। यदि बुगुर जम्माजा के साथ जोड़ा खाता है तो नर बच्चे को 'घुर्द' और मादा बच्चे को 'माया घुर्द' कहते हैं। यदि 'बुगदा' या 'लोक' जम्माजा से जोड़ा खाता है तो बच्चों को यही दो नाम देते हैं (अर्थात् क्रम से 'बुगदी' और 'लोक' कहते हैं)। यदि बुगदी या लोक अरवाना से जोड़ा खाता है तो नर को बाप के नाम से और मादा को मा के नाम से पुकारते हैं। 'लोक' 'घुर्द' और 'मायाघुर्द' से नस्ल में अच्छा होता है।

बोझा ढोते समय और यात्रा करते समय ऊँटों की कतार बनाते हैं और हर कतार में पाँच ऊँट होते हैं। हर एक कतार के पहले ऊँट को पेशंग[2]; दूसरे को पेशदरा; तीसरे को मिआना कतार; चौथे को दुमदस्त; और अन्तिम को दुमदार कहते हैं।

आईन ६२

ऊँटों का भोजन

बोझ ढोने वाले ऊँटों में बुगदी को २½ वर्ष से ३ वर्ष की आयु तक जब वह गल्ले से बाहर लाया जाता है २ सेर दाना प्रतिदिन देते हैं, ३½ वर्ष से ४ वर्ष की आयु तक ५ सेर, सात वर्ष तक ६ सेर, और आठ वर्षीय को १० सेर दिया जाता है। बुगुर को भी इसी प्रकार दाना दिया जाता है। इसी प्रकार जम्माजा, घुर्द, माया घुर्द और लोक को चार वर्ष तक, इसके बाद ७ वर्ष तक ७ सेर, आठ वर्ष की आयु वाले को ७½ सेर दाना देते थे जब सेर २८ दाम का था। अब जब सेर ३० दाम का है, दाना की मात्रा घट गई है। मस्ती के समय में बुगदी दाना कम खाता है और पागोस्त आईन (आईन ८३) के अनुसार दुबला हो जाने पर उसको १० सेर दाना दिया जाता है। मस्ती का समय जब समाप्त हो जाता है तब दारोगा लोग उसे अतिरिक्त दाना देकर पहले की कमी को पूरी कर देते हैं। यदि मस्ती चढ़ने के पहले निर्धारित मात्रा से दाना अधिक दिया गया है और वृद्धि रोज नामचे में दर्ज है तो इसको पागोस्त आईन के अनुसार छूट दे देते हैं। इसी तरह यदि किसी दूसरे कारण वृद्धि की नौबत आती है तो इस अधिकता को भी पागोश्त आईन के अनुसार छूट दे देते हैं। नगर में रहने के समय आठ महीने तक ऊँटों को शासन द्वारा घास दी जाती है। वह ऊँट जो शहर के अन्दर सरकारी काम में लगाए जाते हैं उनको प्रति दिन प्रति ऊँट २ दाम के हिसाब से घास दी जाती है और जो शहर के बाहर होते हैं वह १½ दाम पाते हैं। वर्षा के चार महीनों में और जब वे यात्रा में होते हैं तो उनके लिए घास का मूल्य नहीं दिया जाता। ऊँटवान् उन्हें चारागाह में ले जा कर चरा लाते हैं।

---

[1] बगदी 'बुख्ती' का अपभ्रंश है। [2] यह शब्द पेशाहंग का अपभ्रंश है जिसका अर्थ होता है 'समूह का नेता'।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ६३

ऊँटों के सामान

खासा के ऊँटों को निम्नलिखित वस्तुयें दी जाती हैं : अफसार (सिरबन्द), दुम अफसार (दुमची,) महार काठी जो जीन के समान परन्तु उससे कुछ लम्बी होती है। यह बादशाह का आविष्कार है। कूची चार जामे का काम करती है। कतारचा[1] सर्बची[2], तंग, सरतंग, शेब बन्द, जलाजिल, गर्दनबन्द, सेह चादर जो बानात, रंगीन किरमिच और मोम जामे की होती है। इन सामानों को सजाने में जितने जवाहर, जड़ाऊ काम, गोटा और रेशम काम में लाए जाते हैं उनके मूल्य का वर्णन असम्भव है।

सजे हुए ऊँटों की पांच कतारें सवारी के लिए सदा तैयार रखते हैं और दो ऊँट मिह्फ्फा खींचने के लिए तैयार रहते हैं जो दो खम्भों पर बना हुआ लकड़ी का एक खेमा है। सवारी के समय उसको दो ऊँटों पर लटकाते हैं।

सजावट के सामान या तो रंगे हुए हैं या सादा। हर दस कतारों में तीन (कतारें) रंगीन होती हैं।

बुगदी पर (रंगीन) सामानों के लिए २२५¾ दाम खर्च होते हैं अर्थात् अफसार जिसमें कौड़ियाँ जड़ी हैं २०½ दाम, पीतल का छल्ला १½ दाम, लोहे की जंजीर ४½ दाम, कल्लगी ५ दाम, पुश्तपोजी ८ दाम, दुम-अफसार १½ दाम, तकलतू और सर्बची जिसमें ५ सेर रुई खर्च होती है २० दाम, जुल (झूल) ६८ दाम, जहाजे गजकारी[3] जो काठी का काम करता है ४० दाम, तंग, शेबबन्द, गुलूबंद २४ दाम, तनाब बोझा कसकर बाँधने वाली रस्सियाँ, ऊँटवान् इन रस्सियों को 'ताका तनाब' या 'खरवार' कहते हैं, ३८ दाम, बालापोश १५ दाम।[4]

जम्माजा पर दो चीजें अधिक होती हैं, अर्थात् गरदनबन्द दो दाम, सीनाबन्द १६ दाम।

दूसरी सात सादा कतारों में से बुगदी और जम्माजा पर १६८½ दाम खर्च होते हैं, अर्थात् कौड़ियाँ लगा हुआ अफसार १० दाम, दुम अफसार ½ दाम, जहाज १६½ दाम, जुल ५२½ दाम, तंग, शेबबंद, और गुलूबंद २४ दाम, ताका तनाब ३७½ दाम, बालापोश २८ दाम।[5]

लोक के लिए १४३ दाम अर्थात् अफसार, जहाज, खरवार के लिए उपरोक्त की भाँति, जुल ३७½ दाम, तंग, शेबबंद, गुलूबंद १४½ दाम, बालापोश २८ दाम[6]।

रंगीन और सादा को तीन वर्ष में लोहे और लकड़ी के सामानों के सिवाय अन्य सामान एक बार नया देते हैं। हर कतार के पुराने रंगीन सामानों के लिए १६ दाम और सादा के लिए १४ दाम काट लिए जाते हैं। जब तीन वर्ष बीत जाते हैं तब सामानों का अनुमानित व्यय का चिट्ठा तैयार करते हैं जिसमें से ¼ काट लिया

---

[1] इसका अर्थ संदिग्ध है; शायद गद्दी से तात्पर्य है। [2]ब्लाकमैन ने 'कतारची' लिखा है, पृष्ठ १५३। [3]. अरबी में जहाज का अर्थ है काठी जो साधारणतया टाट की बनी होती है और उस पर चूना (गज) पुता रहता है। इसलिए 'गजकारी' का अर्थ चूना पुती हुई है। कुछ पुस्तकों में 'जहाजे कुंजकारा' दिया है। [4]. इन खर्चों का योग २४६ दाम होता है न कि २२५¾ दाम। [5]. इन खर्चों का योग १६९ दाम हो जाता है न कि १६८ दाम जैसा अबुल फज्ल ने लिखा है। [6]. इन खर्चों का योग १४४ दाम होता है न कि १४३ दाम।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाता है, फिर शेष का $\frac{1}{10}$ काट कर अब जो शेष रह जाता है उसे सामान खरीदने के लिए दे देते हैं[1]।

अलफी ऊँटों[2] को साल में एक बार नया सामान देते हैं। खानाजाद और लोक पर ५२½ दाम खर्च होते हैं अर्थात् अफसार ५ दाम; जुल ३६½ दाम; सरदोज ½ दाम; तंग और शेब बन्द १०¾ दाम[3], लोक के लिए अफसार, तंग, शेब बन्द उपरोक्त की भाँति; जुल ४५¾ दाम; सरदोज ¾ दाम[4]।

हर साल अनुमानित व्यय का ¾ काटकर शेष रकम सामानों को खरीदने के लिए देते हैं।

शलीता टाट—ऊँटों को दाना खिलाने के लिए होता है; हर कतार के लिए एक दिया जाता है। बुगदी और जम्माजा के लिए ३०¾ दाम और लोक के लिए २४½ दाम का शलीता टाट देते हैं।

सदा इस भाव के अनुसार अनुमानित व्यय से कटौती कर ली जाती थी और ऊँटवानों से ठेका कर लिया जाता था। सन् ४२ इलाही (१५५८ ई०) में जब बादशाह के सामने यह मामला पेश किया और उन्हें बतलाया गया कि इन लोगों को इससे हानि पहुँचती है तो बादशाह ने इस नियम को रद्द कर दिया और सब सामानों का मूल्य बाजार भाव से दिया जाने लगा। इसलिए अब मूल्य घटता बढ़ता रहता है।

हर वर्ष के पहले दिन ऊँटवानों के अफसर ऊँटों के बाल तराशने, तेल मलने, नाक में तेल डालने और अलफी ऊँटों के सामान खरीदने के लिए अनुमति प्राप्त करते हैं।

आईन ६४

ऊँटों को तेल मलना और नाक में तेल डालना

वैज्ञानिक भाषा में तेल मलने को 'ततलिया' और नाक में तेल टपकाने को 'तजरीअ' कहते हैं। उचित यह था कि 'ततलिया' और 'तनशीक' कहते क्योंकि नाक में तेल टपकाने को 'तनशोक' कहते हैं। हर बुगदी और जम्माजा के लिए प्रति वर्ष ३¾ सेर तिल्ली का तेल निर्धारित है, तीन सेर शरीर पर मलने के लिए और ¾ सेर नाक में डालने के लिए। ¾ सेर गंधक और ६½ सेर छांछ भी नियत है। दूसरे प्रकार के ऊँटों के लिए २½ पाव गंधक; ६½ सेर छांछ और नाक में डालने के लिए ३ पाव तेल दिया जाता है।

पहले यह सब वस्तुयें वर्ष में तीन बार देते थे परन्तु अब केवल एक बार देते हैं।

आईन ६५

ऊँटों और उनके सेवकों के पद

बादशाह ने ऊँटों को कतारों में विभक्त किया है और हर कतार को एक सारबान (ऊँटवान) के सुपुर्द किया है। उनके वेतन के चार क्रम हैं: पहला ४०० दाम, दूसरा ३४० दाम, तीसरा २८० दाम, चौथा २२० दाम प्रति मास।

---

[1] इस प्रकार सरकार अनुमानित व्यय का $\frac{9}{10} \times \frac{3}{4} = \frac{27}{40}$ देती थी। [2] गल्ला ढोने वाले ऊंट। [3] इन खर्चों का योग ५२¾ होता है न कि ५२½। [4] इन खर्चों का योग ६२¾ दाम होता है न कि ५२½ दाम। अबुल फज्ल ने प्रायः ऐसी गलतियाँ की हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कतारें तीन प्रकार की हैं। प्रथम, हर पाँच कतारें एक अनुभवी व्यक्ति के सुपुर्द की गई हैं जिसका नाम बीस्तो पंजी (पच्चीस ऊँटों का स्वामी) रखा है। उसका मासिक वेतन ७२० दाम है। यह एक याबू घोड़े पर दाग लगाता है और वह चार सारबानों (ऊँटवानों) का अफसर है। द्वितीय, पहले का दुगुना अर्थात् दस कतारें एक व्यक्ति के सुपुर्द करते हैं और उसको पंजाही (पचास ऊँटों का स्वामी) कहते हैं। यह एक घोड़े पर दाग लगाता है।[1] इसका वेतन ९६० दाम है और यह नौ सारबानों का अफसर है। तृतीय सौ कतारें एक अनुभवी व्यक्ति के सुपुर्द होती हैं जिसको पंज सदी (पाँच सौ ऊँटों का स्वामी) कहते हैं। दस कतारें उसकी निजी देख रेख में होती हैं। एक कतार के सिवाय, सब कतारों के लिए सारबान सरकार से दिए जाते हैं। पंजाही और बीस्तो पंजी इसके अधीन हैं। इसका वेतन बदलता रहता है। आजकल बहुत से युजबाशी (सौ सैनिकों का अध्यक्ष) इस पद पर नियुक्त हैं। बादशाह ने एक-एक ऊँट फर्राशों के लिए नियुक्त कर दिया है। एक निपुण बितिक्ची नियुक्त कर दिया गया है। अपनी कार्य पटुता से बादशाह ने हर पंज सदी को एक अमीर की अधीनता में दिया है। कुछ होशियार प्यादों को भी नियुक्त किया है जो समय समय पर आख्या देते रहते हैं जिससे इस विभाग में असावधानी न आने पावे। वर्ष में दो बार बुद्धिमान् सवार ऊँटों के मोटेपन और दुबलेपन का निरीक्षण करते हैं वर्षा के प्रारम्भ में और पेशी के समय।

यदि कोई ऊँट कम हो जाता है तो सारबान को उसका पूरा मूल्य जुर्माने में देना पड़ता है। पंजाही और पंज सदी भी इसमें सहायता करते हैं। यदि ऊँट अंधा या लंगड़ा हो जाता है तो उसके मूल्य का $\frac{1}{4}$ भाग देना पड़ता है।

रैबारी—यह हिन्दुओं के एक वर्ग विशेष का नाम है जो इस जानवर की आदतों से भली भाँति परिचित होते हैं। खानाजाद लोक को वे ऐसा तेज चलना सिखाते हैं कि वह बहुत लम्बी यात्रा थोड़े समय में तय कर लेता है। यद्यपि राजधानी से राज्य की सीमाओं तक चारों तरफ डाक ले जाने वाले घोड़े नियुक्त हैं और हर पाँच कोस की दूरी पर तेज दौड़ने वाले हरकारे नियुक्त हैं तथापि अपनी बुद्धिमानी से बादशाह इन सारबानों में से कुछ को अपने दरबार में तैयार रखते हैं। हर पचास अरवाना को एक रैबारी के सुपुर्द किया है और नसल बढ़ाने के लिए एक बुगुर और दो लोक साथ रखे जाते हैं। इन दोनों नर ऊँटों को सामान्य नियम के अनुसार दाना सरकार से मिलता है परन्तु घास नहीं मिलती। पचास अरवानों के लिए अनाज या घास का मूल्य नहीं दिया जाता। साल में एक बार हर बुगुर, बुगुदी और जम्माजा के ततलिया और तनशीक के लिए ४ सेर तिल्ली का तेल, तीन पाव गन्धक और $६\frac{1}{2}$ सेर छाँछ निर्धारित है। इसमें ३ पाव तेल तनशीक के लिए भी शामिल है। लोक, अरवाना, घुर्द और माया घुर्द के लिए $३\frac{5}{8}$ सेर तिल्ली का तेल जिसमें से $\frac{5}{8}$ सेर तनशीक के लिए होता है; $६\frac{1}{2}$ सेर छाँछ और $\frac{5}{8}$ सेर गन्धक निर्धारित है।

बोता और दुम्बाला के लिए $२\frac{1}{2}$ सेर तेल जिसमें से $\frac{1}{2}$ सेर तनशीक के लिए होता है; $\frac{1}{2}$ सेर गन्धक, $४\frac{1}{4}$ सेर छाँछ नियत है। यह दोनों ऊँट के बच्चे हैं लेकिन पहले पर कुछ बोझ लादते हैं।

हर सप्ताह गल्ला के बड़े ऊँट को $\frac{1}{2}$ सेर शोरा और नमक देते हैं, बोता को $\frac{1}{4}$ सेर।

---

१. 'बरयक अस्प' पृ० १४९ का अर्थ ब्लाकमैन ने 'उसे एक घोड़ा रखने की अनुमति दी जाती है' लिखा है; दे० पृ० १५५; और मु० फिदा अली साहब ने 'अस्प को दाग दोजी कराता है' लिखा है, दे० पृ० २७७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गल्लावान का मासिक वेतन २०० दाम है। हर पचास ऊँट पर उसको पाँच चरवाहे दिए जाते हैं और प्रत्येक प्रति दिन दो दाम पाते हैं। पचास पचास ऊँटों के दो गल्लों का मालिक हर वर्ष बादशाह को तीन अरवाना पेश करता है अन्यथा उनका मूल्य उसके वेतन से काट लेते हैं।

पहले बुगदी और जम्माजा के बाल का ¼ लेते थे और हर ऊँट के बाल वजन में चार सेर होते थे। बादशाह ने इनको बख्शिश में दे दिया और इसके बदले में गल्लावान दुम अफसार और खूंटे आदि देने लगे।

बुग़दी का दाम ५ मुहर से १२ मुहर तक होता है, जम्माजा ३ मुहर से १० मुहर तक; बुगुर ४ मुहर से ७ मुहर तक; माया बुगुर ३ से ५ मुहर तक; घुर्द ३ मुहर से ८ मुहर तक, माया घुर्द और लोक ३ से ७ मुहर तक, दोगला लोक ८ से ९ मुहर; देशी या बिलोची लोक ३ से ८ मुहर तक, और अरवाना २ से ४ मुहर तक।

बादशाह पहली श्रेणी के बुग़दी पर १० मन तक का बोझ लदवाते हैं, दूसरी श्रेणी के बुगदी पर ८ मन, प्रथम कोटि के जम्माजा और लोक आदि पर ८ मन और द्वितीय कोटि पर ६ मन।

इस देश में ऊँट की आयु चौबीस वर्ष से अधिक नहीं होती।

आईन ६६

गोशाला

सारे हिन्दुस्तान में इस पशु को शुभ तथा पवित्र समझते हैं और उसकी बहुत सेवा करते हैं। इस पशु की सहायता से खेती का काम होता है और जीवन की आवश्यकतायें इसी से पूरी होती हैं। इसके दूध, छाँछ और घी से भोजन को स्वादिष्ट बनाते हैं। यह जानवर बोझा ढोने और गाड़ी खींचने में बहुत शक्तिशाली होता है और इस प्रकार शासन की तीनों शाखाओं में बहुत अच्छा सहायक होता है।

यद्यपि यह सर्वत्र पाया जाता है और विभिन्न प्रकार का होता है तथापि गुजरात के प्रान्त में सबसे अच्छा होता है। कभी-कभी उसका एक जोड़ा १०० मुहर को खरीदते हैं जो रात दिन में ८० कोस दौड़ता है और तीव्र-गामी घोड़ों से भी आगे बढ़ जाता है और रास्ते में पेशाब पाखाना नहीं करता। बीस मुहर और दस मुहर वाले बैल पाये जाते हैं। बंगाल और दक्षिण में भी अच्छे जानवर पाये जाते हैं। बोझा लादते समय वह बैठ जाते हैं। गाय आधा मन तक दूध देती है। दिल्ली प्रान्त में अधिकतर १० रु० से अधिक मूल्य वाली गायें नहीं हैं। बादशाह ने एक जोड़ा ज नवर दो लाख दाम (५००० रु०) पर खरीदा।

तिब्बत और कश्मीर के नजदीक कुतास गाय पाई जाती है जो देखने में बहुत सुन्दर होती है।

इस पशु की प्राकृतिक आयु २५ वर्ष है।

बादशाह ने इस जानवर के अद्भुत गुणों को देखकर इसके पालन-पोषण पर बहुत अधिक ध्यान दिया है। उन्होंने उनको समूहों में विभक्त करके दयालु रक्षकों को सौंप दिया है। एक सौ अच्छे जानवरों को खासा के लिए चुना है और इनका 'कोतल' नाम रखा है। इनको सदा सेवा के लिए तैयार रखते हैं और शिकार में बिना बोझ के चालीस जानवर साथ रहते हैं जैसा आगे बयान किया जायगा (ग्रन्थ दो आईन २७)। लगभग इतने ही अच्छे ५१ पशु 'नीम-कोतल' और ५१ और पशु 'पाव कोतल' कहलाते हैं। पहले की कमी दूसरे से और दूसरे की तीसरे से की जाती है। इन तीनों को खासा गावखाना कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बादशाह ने ५० से १०० तक पशुओं के झुंड बनाये हैं और सच्चे सेवकों के सुपुर्द कर दिये हैं। पेशी के समय हर एक की श्रेणी निर्धारित होती है और वह अपने साथियों में जगह पाता है। इसी तरह झुंड के झुंड बोझ लदी हुई गाड़ियां, बहल और पानी खींचने के लिए नियत हैं।

इस जानवर का एक प्रकार 'गूत' की तरह होता है। इसको 'गैनी' कहते हैं। यह देखने में बहुत सुन्दर होता है।

इसी तरह दूध देने वाली गायों और भैंसों को समूहों में बांट कर अनुभवी सेवकों के सुपुर्द कर दिया है।

आईन ६७

गायों और बैलों का भोजन

खासा के प्रथम वर्ग के प्रत्येक पशु के लिए प्रतिदिन ६½ सेर दाना[1] और १½ दाम की घास नियत है। हर गोशाले के लिए प्रतिदिन १ मन १९ सेर गुड़ मिलता है। दारोगा हर जानवर को उसकी सेवा और स्थिति के अनुसार दाना देता है। खासा के दूसरे वर्ग के पशु प्रतिदिन ६ सेर दाना और पहले की तरह घास पाते हैं परन्तु उनको गुड़ नहीं दिया जाता।

दूसरी गोशालाओं में प्रथम वर्ग को ६ सेर अनाज और दरबार में रहने वालों को १½ दाम की घास तथा दूसरों को १ दाम की घास दी जाती है। दूसरे वर्ग को ५ सेर दाना और उपरोक्त की भांति घास दी जाती है। बहल खींचने वाले जानवरों को छः सेर दाना और घास उपरोक्त की भांति। प्रथम कोटि की गैनी को ३ सेर दाना और १ दाम घास के लिए यदि दरबार में रहें अन्यथा ¾ दाम। द्वितीय कोटि की गैनी के लिए २½ सेर दाना और ¾ दाम घास के लिए यदि दरबार में रहे, अन्यथा ½ दाम।

भैंसा (जिसको अर्ना कहते हैं) को ८ सेर गेहूँ का आटा उबाल कर, २ सेर घी, ½ सेर गुड़, १½ सेर दाना और २ दाम की घास दी जाती है। युवावस्था में वह जानवर आश्चर्यजनक युद्ध करता है और शेर को टुकड़े-टुकड़े कर डालता है। जब उसकी आश्चर्यजनक शक्ति कम हो जाती है तब वह दूसरी श्रेणी के जानवरों में दाखिल किया जाता है और पानी खींचने के काम में लगा लिया जाता है। तब उसको ८ सेर दाना और २ दाम की घास देते हैं। पानी खींचने वाली भैंस ६ सेर दाना और २ दाम की घास पाती है। चीता गाड़ी खींचने वाले[2] प्रथम कोटि के बैलों को ६¾ सेर दाना और दूसरों को ५ सेर दाना परन्तु उतनी ही घास दी जाती है। भारी बोझा की गाड़ियों को खींचने वाले बैलों को पहले ५ सेर दाना और १½ दाम की घास मिलती थी परन्तु अब वह एक पाव कम दाना परन्तु घास पहले की भांति पाते हैं।

दुधार गाय और भैंसे जब हुजूर में रहती हैं तब उनके दूध के अनुपात में उनको दाना दिया जाता है। गाय और भैंसों के गल्ले को 'ठाट' कहते हैं। हर गाय प्रतिदिन १ सेर से १५ सेर और हर भैंस २ सेर से ३० सेर तक दूध देती है। इस दृष्टिकोण से पंजाब की भैंसे सबसे अच्छी होती हैं। जब यह निश्चय हो जाता है कि प्रत्येक गाय कितना दूध देती है तब प्रति सेर दूध के लिए २ दाम घी की मांग की जाती है।

---

[1]दाना का तात्पर्य चने से है। [2]पालतू और सिखाए हुए चीतों के यातायात की गाड़ियाँ। देखिए ग्रन्थ दो, आईन २७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ६८

गोशाला के सेवक

खासा की गोशालाओं में हर चार पशु पर एक सेवक नियुक्त है। प्रथम गोशाला के १८ सेवक प्रतिदिन ५ दाम और अन्य सेवक ४ दाम पाते हैं। अन्य गोशालाओं में भी सेवकों का वेतन यही है परन्तु प्रत्येक सेवक छः पशुओं की देखभाल करता है। अधिकांश बहल हाँकने वाले अहदियों की सूची में वेतन पाते हैं। शेष बहल हांकने वालों का वेतन ३६० दाम से अधिक और ११२ दाम से कम नहीं होता। बहल दो प्रकार की हैं १. छतरीदार जिसके ऊपर चार या अधिक लकड़ियां बांध कर उनके ऊपर छतरी लगा देते हैं; २. सादा बहल जिन पर छतरी नहीं होती। जो बहल घोड़े खींचते हैं उनको 'घुड़बहल' कहते हैं। हर दस बहल पर बीस हांकने वाले और एक बढ़ई नियुक्त हैं। हांकने वालों के अध्यक्ष या 'मीर दहा' बढ़ई को प्रति दिन ५ दाम दिये जाते हैं और दूसरों को ४ दाम। कुछ समय तक १५ चलाने वाले नियुक्त थे और बढ़ई अलग कर दिया गया था। हांकने वाले स्वयं मरम्मत करते थे और इसके लिए २२०० दाम (५५ रुपया) प्रति वर्ष पाते थे।

यदि बैल का सींग टूट जाता है या वह अन्धा हो जाता है तो असल कीमत की चौथाई रकम दारोगा से वसूल की जाती है। इस प्रकार का जुर्माना हानि की कमी या अधिकता के विचार से घटता बढ़ता रहता है।

पहले दारोगा स्वयं मरम्मत के लिए धन खर्च करते थे। लेकिन जितने दिन गाड़ी चलती थी उतने दिनों के लिए प्रतिदिन ½ दाम के हिसाब से 'ऊंग' के लिए वसूल कर लेते थे। ऊंग वह सन है जिसमें घी लपेट कर चिकना करके एराबे की कील में जो धुरी के समान है लपेट देते हैं जिससे गाड़ी का पहिया घिसने और टूटने से बचा रहे किन्तु बाद में जब हांकने वालों को दारोगा का काम भी सौंप दिया गया तो ऊंग का खर्च भी वे ही देने लगे। पहले यह नियम था कि यात्रा के समय शाही कारखाने का अधिकांश असबाब गाड़ियां ले जाया करती थीं परन्तु जब हांकने वाले दारोगा का काम करने लगे तब उनको दरबार में खर्च होने वाला ईंधन और मकानी माल भी ले जाना पड़ता था। परन्तु बाद में इमारतें बनाने में काम आने वाली लकड़ियों के ढोने के लिए २०० बैलगाड़ियां अलग कर दी गईं। इसी तरह ६०० दूसरी बैलगाड़ियाँ शाही पाकालय के लिए १० महीने में १,५०,००० मन लकड़ियाँ लाने के लिए नियत कर दी गईं। यदि सरकारी अफसर किसी दिन शाही गाड़ियों को किसी दूसरे काम में लगाते थे तो उस दिन का तथा जो सेवा दरबार की की जाती थी उसका अलग हिसाब रखा जाता था। हांकने वाले आईने पागोश्त से मुक्त होते थे। परन्तु यदि कोई बैल मर जाता था तो उनको उसके बदले में दूसरा बैल खरीदना पड़ता था।

परन्तु जब बादशाह को ज्ञात हुआ कि ठेके की उपरोक्त प्रथा से इन उपयोगी परन्तु मूक पशुओं को बहुत कष्ट होता है तो उन्होंने इस प्रथा को बन्द कर दिया और उनको फिर ईमानदार सेवकों के सुपुर्द किया। गाड़ी के हर एक बैल के लिए ४ सेर दाना और १½ दाम घास के लिए नियत कर दिया गया। दूसरे बैलों के लिये इसकी आधी खुराक मिलती थी। वर्षा ऋतु में घास के लिए पैसा नहीं दिया जाता था। हर अठारह गाड़ियों पर १२ हांकने वाले नियुक्त हुए जिनमें से एक बढ़ई का कार्य भी जानता था। अब, यदि कोई बैल मर जाता है तो सरकार से

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरा बैल मिलता है। इसी प्रकार ऊंग और मरम्मत का खर्च भी सरकारी खजाने से मिलता है।

हर वर्ष अनुभवी व्यक्ति गोशाले में जाकर उन जानवरों की मोटाई या दुबलेपन का अनुमान करते हैं जिनसे काम लिया जाता है। जो पशु काम में नहीं लगाये गये हैं उनका निरीक्षण वर्ष में दो बार किया जाता है। उपरोक्त ईंधन आदि ढोने के बदले में अब हांकने वालों को वह दूसरी सेवायें करनी पड़ती हैं जिनकी सरकार को आवश्यकता होती है।

आईन ६९

खच्चरों के अस्तबल

खच्चर में घोड़े की शक्ति और गधे का धैर्य है। यद्यपि यह घोड़े की तरह समझदार नहीं होता तथापि यह गधे जैसा नासमझ भी नहीं होता। अपना तय किया हुआ रास्ता यह कदापि नहीं भूलता। इस कारण सब वस्तुओं का व्यावहारिक ज्ञान रखने वाले सम्राट् इसे पसन्द करते हैं और इसका पालन करते हैं। बोझ ढोने और ऊँची नीची जमीन पर चलने में अद्वितीय है और इसके कदम हल्के हल्के पड़ते हैं। लोग कहते हैं गधा घोडी से जोड़ा खाता है लेकिन कभी कभी इसके विरुद्ध भी होता है जैसा कि पुरानी किताबों में लिखा हुआ है। खच्चर अपनी मा से मिलता जुलता है। बादशाह ने एक अच्छे गधे को घोड़ी से जोड़ा खिलाया और उनसे एक बढ़िया खच्चर पैदा हुआ।

बहुत से देशों में न्यायी चतुर राजा खच्चर पर सवारी करते हैं और पीड़ित लोग अपना दुःख सरलता से उनसे कह सकते हैं[1] और सवार को कोई असुविधा नहीं होती।

यह जानवर हिन्दुस्तान में पखली[2] और उसके इर्द गिर्द पाया जाता है। इस देश के रहने वाले सरल लोग खच्चर को गधा समझते थे और इस पर सवारी करना अपमान-जनक समझते थे परन्तु बादशाह के ध्यान देने यह घृणा लोगों के हृदय से लुप्त हो गई।

खच्चर ईराक, अरब और फारस से लाए जाते हैं। अच्छे जानवर का मूल्य १००० रु० तक होता है।

ऊँटों की तरह खच्चरों की कतारें भी पाँच-पाँच की बनाते हैं और वही नाम भी रखते हैं सिवाय इसके कि दूसरे खच्चर को बरदस्त कहते हैं।

खच्चर की आयु ५० वर्ष होती है।

---

१. यदि राजा लोग हाथी पर सवार होकर चलते तो पीड़ित अपना दुःख इतनी सरलता से उनसे नहीं कह सकते थे क्योंकि वे राजा से काफी नीचे रहते। २. पखली अटक और कश्मीर के बीच में रावल पिण्डी से कुछ उत्तर में स्थित है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ७०

खच्चरों का भोजन

जो खच्चर देशी नहीं होता उसको ६ सेर दाना और हुजूर में रहने के समय २ दाम की घास दी जाती है अन्यथा १½ दाम की। देशी खच्चर के लिए ४ सेर दाना और हुजूर में रहने के समय १½ दाम की घास अन्यथा १ दाम की घास दी जाती है। हर सप्ताह में हर खच्चर को ३½ जीतल नमक के लिए दिए जाते हैं परन्तु नमक एक बार दाने में मिला कर खिला देते हैं।

आईन ७१

खच्चरों के सामान

बाहर से लाए हुए खच्चर के लिए तख्ता (सरबंद) २०¾ दाम; दो सेर वजन की लोहे की जंजीर १० दाम; चमड़े की रामकी (दुमची) ४ दाम; पालान १०२ दाम; शालतंग और पलासतंग ३६¼ दाम; ताका तनाब (बोझा बांधने की रस्सी) ६३ दाम; कन्तर शलाक[1] (छोटा कोड़ा) ६ दाम; हर एक कतार के लिए एक घंटा १० दाम; मुईनजुल (घोड़े के बाल का जीन) ४० दाम; चमड़े का कलावा १३ दाम; रस्सियों का समूह ९ दाम; नमदा ५¼ दाम; सरदोज ४ दाम; खुरजीन १५ दाम; तोबरा ४ दाम; चमड़े का मगंसरान (मोर्छल) १ दाम; खरखरा और हत्ती (दस्ताना) ४ दाम; इस प्रकार कुल ३४५¾ दाम खर्च किए जाते हैं।

देशी खच्चर पर १५१¼ दाम खर्च किए जाते हैं, अर्थात् नुख्तए चिरमीन (चमड़े का सरबन्द) ४ दाम; पालान ५१ दाम १८¾ जीतल; दो तंग १६½ दाम; ताका तनाब और सरदोज ४० दाम; घंटा ५ दाम; तोबरा ३ दाम; रानकी ३ दाम; जुल २४ दाम; खरखरा और हत्ती ४ दाम।

हर तीसरे वर्ष नये सामान दिए जाते हैं। लोहे और लकड़ी के पुराने सामान के बदले आधा दाम काट लिया जाता है। एक साल के बाद ४० दाम सामान की मरम्मत के लिए दिए जाते हैं। लड़ाई के समय पुराने सामानों को आवश्यकतानुसार नया बनाते रहते हैं। हर छः महीने के बाद नाल बांधी जाती है और हर बार प्रति खच्चर ८ दाम दिए जाते हैं।

प्रत्येक कतार की देख भाल एक आदमी करता है। तूरानी, ईरानी और हिन्दुस्तानी सेवक सेवा के लिए नियुक्त किए जाते हैं। पहले दो का मासिक वेतन १९२० दाम से अधिक और ४०० दाम से कम नहीं है और तीसरे का २५६ दाम से अधिक और २४० दाम से कम नहीं है। जिस सेवक का वेतन १० रु० (४०० दाम) या उससे अधिक होता है वह 'वेशंग' (कतार के पहले) खच्चर के दाने और घास का मूल्य स्वयं देता है। अनुभवी लोग साल में दो बार खच्चरों की मोटाई और दुर्बलता का निरीक्षण करते हैं और वर्ष में एक बार हुजूर में पेश करते हैं।

---

[1] ब्लाकमैन ने कातिर शलाक लिखा है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यदि कोई जानवर अंधा या लँगड़ा हो जाता है तो उसके मूल्य का चौथाई भाग अस्तरबान से लेते हैं और यदि खो जाता है तो उससे आधा मूल्य लेते हैं।

बोझ ढोने और पानी लाने के लिए भी गधे नियुक्त किए गए हैं। हर गधा ३ सेर दाना और १ दाम घास के लिए पाता है। उसका सामान वही होता है जो देशी खच्चर का; लेकिन भूल नहीं देते। साल में २३ दाम मरम्मत के लिए दिए जाते हैं। उसका सेवक १२० दाम प्रतिमास से अधिक नहीं पाता।

आईन ७२

सम्राट् की दिनचर्या

इस आईन से शासन की तीनों शाखायें सम्पन्न होती हैं और छोटे बड़े सब मनुष्यों के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। हृदय की दशाओं से सावधान रहना और व्यग्र हृदय को शान्त रखना शाश्वता का चिह्न और अमरता का लक्षण है। हजारों कामों में व्यस्त रहते हुए भी अपने साफ हृदय में वह चिन्ता की गंदगी नहीं बैठने देते और न तो मानसिक शक्तियों में भय की धूल आने देते। बादशाह में ईश्वर की इच्छा के अनुकूल काम करने की मनोवृत्ति दिन पर दिन बढ़ती जाती है और उनकी गहरी दृष्टि और दूरदर्शिता धीरे २ बढ़ती जाती है। अपनी बुद्धिमानी और विवेक बुद्धि से दूसरों की योग्यताओं का अनुमान करते हैं परन्तु अपने नित्य प्रति बढ़ने वाले सद्गुणों पर बहुत कम दृष्टिपात करते हैं। वह छोटे-बड़े हर एक की सुनते हैं क्योंकि वह आशा करते हैं कि कदाचित् कोई मनको अच्छी लगने वाली बात अथवा प्रशंसनीय काम उनके हृदय में बुद्धिमानी का दीपक प्रकाशित कर दे। यद्यपि युगों बीत गए परन्तु उनको कोई वास्तविक महान व्यक्ति नहीं मिला। न्यायप्रिय लोगों का समुदाय बादशाह का हाल देख कर अपनी बुद्धिमानी को तुच्छ समझता है और नया जीवन आरम्भ करता है। उच्चाकांक्षी सम्राट् पहले वाले उत्साह के साथ खोज के मार्ग में इस विचार से अग्रसर होते हैं कि शायद किसी सद्गुण-सम्पन्न व्यक्ति का सत्संग प्राप्त हो जाय।

हजारों बाह्य वैभव, ऐश्वर्य और अगणित विषयभोग की सामग्रियाँ रहने पर भी बादशाह अपनी इच्छा और क्रोध को बुद्धि की आज्ञा के वृत्त से बाहर नहीं जाने देते तो भला वह कोई बुरा काम क्यों कर सकते हैं? कहानियों का कहना भी जो अन्य लोगों के लिए नींद का कारण है बादशाह को जाग्रत रखता है।

ईश्वर-प्राप्ति की उत्कट इच्छा तथा सत्यानुसंधान की अभिलाषा के कारण सम्राट् अपने तन मन को आन्तरिक तथा बाह्य तपस्या में लगाये रहते हैं। कभी-कभी वह सार्वजनिक प्रार्थनाओं में सम्मिलित होते हैं जिससे कट्टर निन्दकों की जबान बंद हो जाय। परन्तु वह उन सद्गुणों की खोज में रहते हैं जिनकी खोज में बुद्धिमान् लोग दिव्य प्रकाश देखते और धार्मिक लोगों के व्यंगों से सुरक्षित रहते हैं।

समय को मूल्यवान् समझकर वह अपने महत्वपूर्ण जीवन की एक सांस भी नष्ट नहीं होने देते और न वह अपने किसी कर्तव्य की उपेक्षा करते हैं। सत्कार्यों के कारण बादशाह की आदतें ईश्वर की उपासना बन गई हैं।

उनकी उपासनायें वर्णनातीत हैं। सम्राट् एक क्षण भी आध्यात्मिक आत्म-परीक्षण तथा ईश्वर की उपासना की उपेक्षा नहीं करते। बादशाह विशेष कर प्रातःकाल ऐसा करते हैं जो सफलता प्राप्ति और प्रकाश-

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रसार का आरम्भ है; दोपहर को जब सूर्य संसार को प्रकाशित करता है और लोगों को तरह तरह की खुशियाँ देता है; शाम को जब प्रकाशदाता सूर्य मनुष्य की आँखों से छिप गया है और प्रकाश चाहने वालों को दुःख देता है; और आधी रात को जब जीवन दाता सूर्य ऊपर चढ़ने लगता है और उन सब लोगों के लिए सुखद समाचार लाता है जो रात के अंधकार से दुःखित थे। यह सब समय ईश्वर की महत्ता की विभिन्नता के प्रदर्शक हैं और संसार-स्रष्टा ईश्वर की उपासना के लिए हैं। यदि अंधकार पूर्ण हृदय वाले अज्ञान लोग इस रहस्य को न समझें तो किसका दोष है और किसकी हानि होगी ? प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि परोपकारी के प्रति कृतज्ञता और सम्मान प्रकट करना आवश्यक है। जिस प्रकाशों के प्रकाश अर्थात् सूर्य के उपकारों की गणना नहीं की जा सकती उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह विशेष कर बादशाहों का कर्तव्य है जिनपर, बुद्धिमानों की सम्मति के अनुसार, आसमानी तख्त का यह बादशाह अर्थात् सूर्य विशेष दृष्टि डालता है।[1] यही कारण है कि बादशाह अग्नि का सम्मान और दीपक की महत्ता पर दृष्टि रखते हैं और उनकी विभिन्न कृपाओं का उल्लेख करते हैं और इनको प्रकाश पूर्ण सूर्य का प्रतिबिम्ब समझते हैं। निबुद्धि लोग जो तकलीद को पसन्द करते हैं बादशाह के इस काम को सूर्य की उपासना और अग्नि की उपासना समझते हैं और व्यंग करते हैं।

दयालु सम्राट् किसी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाते और न किसी का हृदय भग्न करते हैं। वह सदा लोगों के जीवन की रक्षा करते हैं और उनको सुखी बनाते हैं।

वह गोश्त खाने से परहेज करते हैं और महीनों बीत जाते हैं जब वह गोश्त में हाथ नहीं लगाते। यद्यपि अधिकांश लोग गोश्त खाना अच्छा समझते हैं तथापि बादशाह के स्वच्छ हृदय में उसका कोई स्थान नहीं है। बादशाह की उच्च प्रकृति सांसारिक भोगों पर बहुत कम ध्यान रखती है। रात दिन में वे एक बार से अधिक भोजन नहीं करते और अपना समय आवश्यक और उचित कार्यों में व्यय करते हैं। वह थोड़ा रात में सोते हैं और थोड़ा दिन में, परन्तु उनका सोना जागने के बराबर है।

बादशाह की प्रशंसनीय आदत रात को जागकर ईश्वर की उपासना करने की है। अपने निजीभवन (खिलवतकदेय खास private audience hall) में वह वक्ता दार्शनिकों और स्वच्छ हृदय सूफियों की सभा सजाते हैं और उनमें से हर एक अपने पद के अनुसार स्थान ग्रहण करता है और चित्ताकर्षक वार्तालाप करता है। बादशाह जो इन रहस्यों से परिचित हैं उसको ज्ञान की कसौटी पर कसते हैं और पुराने आईन जाहिर होते हैं और उनका नया अर्थ लगाया जाता है। होनहार युवक बादशाह का आदर-सम्मान करते हैं और अपनी मनोकामना सिद्ध करने का आनन्द प्राप्त करते हैं और न्याय-प्रिय बूढ़े लोग अपने को खेद के विस्तृत क्षेत्र में पाते हैं क्योंकि उन्हें नई शिक्षा प्राप्त करनी होती है।

इन सभाओं में निष्पक्ष इतिहासकार वर्तमान रहते हैं जो ऐतिहासिक तथ्यों को न घटाते हैं और न बढ़ाते हैं बल्कि आश्चर्य-जनक पुरानी कथाओं का वर्णन करते हैं। बुद्धिमान बादशाह इन कथाओं से विचित्र-विचित्र विचार पैदा करते हैं और उन पर वार्तालाप करते हैं। प्रायः इन सभाओं में शासन-सम्बन्धी मामले पेश किये जाते हैं और प्रत्येक आवश्यक कार्य का फैसला किया जाता है।

जब एक पहर रात बाकी रहती है तब हरेक देश के संगीतज्ञ एकत्र होते हैं और अपने गाने, बजाने तथा भजनों से सभा को मुग्ध कर देते हैं। जब चार घड़ी रात शेष रहती है तब बादशाह अपने व्यक्तिगत कक्ष में

---

१. देखिए अबुल फज़्ल की भूमिका पृष्ठ १८।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जाते हैं और अपने बाह्य रूप को आन्तरिक सरलता के साथ सामंजस्य कर देते हैं और विचार-सागर में तैरने लगते हैं। रात के समाप्त होने पर सातों देशों के सभ्य लोग जैसे सैनिक, व्यापारी, कृषक, शिल्पी तथा अन्य उद्यमों के लोग बादशाह के दर्शन के लिए प्रतीक्षा करते हैं। सूर्योदय के कुछ समय उपरान्त वे कोर्निश करने की सफलता प्राप्त करते हैं जैसा आगे बयान किया जायगा।[1] इसके बाद बादशाह अन्तःपुर के कर्मचारियों को दर्शन देते हैं और दीन और दुनिया के बहुत से काम पूरे होते हैं। इसके बाद कुछ देर तक वह निजी कक्ष में विश्राम करते हैं।

बादशाह की अच्छी आदतें इतनी अधिक हैं कि वे शब्दों में नहीं कही जा सकतीं और न तो लेखनी उन्हें लिपिबद्ध कर सकती है। उनके गुणों की गणना नहीं की जा सकती।

आईन ७३

दरबार में प्रवेश

यह आईन संसार की सजावट, शासन की तीनों शाखाओं का रक्षक, और वर्तमान समय की विपत्तियों के लिए शरणालय है। इसकी सिंचाई से राज्य का बाग हरा भरा है और इससे आशाओं की खेती में फल लग जाते हैं।

रात और दिन में बादशाह प्रायः दो बार दर्शन देते हैं और झुंड के झुंड लोग अपनी आँखों और हृदय को प्रकाशित करते हैं। प्रथम, जब बादशाह प्रातः काल की उपासना पूरी कर चुकते हैं तो परदे से बाहर आकर हर छोटा बड़ा बिना चोबदारों और सेवकों के मना किए हुए बादशाह को देखने में सफल होता है। इसको देश की भाषा में दर्शन कहते हैं और कभी कभी इस समय दूसरे काम भी किए जाते हैं। द्वितीय, दरबार खास में बादशाह के दर्शन होते हैं यह बहुधा एक पहर दिन बीतने पर, और कभी दिनान्त में और कभी रात को होता है, प्रायः वह एक झरोखे से भी दर्शन देते हैं जो दरबार की ओर खुलता है और काम पूरा कराने के लिए बैठते हैं। वह न्यायासन पर शान्त और हँसमुख विराजते हैं। राज्य के पदाधिकारी विभिन्न आवश्यकतायें और इच्छायें बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं और हर एक व्यक्ति को समुचित उत्तर दिया जाता है। ईश्वरोपासना की भावना की अधिकता से और अपने समय की प्रकृति के ज्ञान से, प्राचीन बादशाहों की प्रथा के विरुद्ध, मानव अस्तित्व को ईश्वर को दिखाने वाला दर्पण[2] समझकर उन कामों को तुच्छ नहीं समझते जिनको बाह्य दृष्टि वाले लोग तुच्छ समझते हैं और प्रजा के सुख को अपना सुख समझकर अपने मन में मलाल नहीं आने देते।

दर्शन के आरम्भ के पहले ऊँची आवाज वाला नक्कारा बजाया जाता है और ईश्वर का यशोगान किया जाता है और इस प्रकार लोगों को सूचना दी जाती है। बादशाह के पुत्र, पौत्र, बड़े बड़े अमीर और दूसरे लोग जो प्रवेश की अनुमति पाते हैं कोर्निश करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं और प्रत्येक अपने उचित स्थान पर खड़ा रहता है। उच्चकोटि के बुद्धिमान और चतुर शिल्पी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। अनुभवी दारोगा और दूरदर्शी वितक्ची अपनी

---

[1]देखिये आईन ७४। [2]यह अर्थ 'हस्तिये जात' को शुद्ध मानकर किया गया है। ब्लाकमैन ने 'हस्तिये जर्रात' को शुद्ध मानकर जो अर्थ लगाया है वह यह है, सम्राट् लघुतम विवरणों को एक व्यापक रूपरेखा को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आवश्यकतायें प्रस्तुत करते हैं और न्याय के अधिकारी अपनी अपनी रिपोर्ट पेश करते हैं। बादशाह, अपनी अन्तर्दृष्टि से, उचित उत्तर देते हैं और प्रत्येक कार्य भली भाँति सम्पन्न होता है। चतुर तलवार चलाने वाले और हर देश के पहलवान आज्ञा की प्रतीक्षा में सेवा में तैयार रहते हैं। गायक और गायिकायें आज्ञा पालन की प्रतीक्षा में प्रस्तुत रहती हैं। आश्चर्यजनक जादूगर और आह्लाद वर्द्धक बाजीगर अपने खेलों के प्रदर्शन की आज्ञा पाने का अवसर ढूंढ़ते रहते हैं।

बादशाह अपने उचित इरादे, स्वतंत्र हृदय, स्वभाव की नम्रता, उच्च साहस उच्च प्रकृति, हँसमुख चेहरा और शान्त भाव से दरबार में आने वाले भिन्न-भिन्न लोगों को बुद्धि की शिक्षा देते हैं और अपने सहजज्ञान से सब मामलों को सरलता पूर्वक और सन्तोषजनक ढंग से तै कर देते हैं।

यह शोक पूर्ण संसार विश्राम पूर्ण हो जाता है और सेना तथा प्रजा सन्तुष्ट हो जाती है। ईश्वर इस सम्राट् के धन को बढ़ावें और इन्हें दीर्घायु बनावें!

आईन ७४

कोर्निश और तसलीम

यद्यपि वाह्यद्रष्टा लोग न्यायप्रिय बादशाह को सांसारिक चिन्ताओं का दूर करने वाला समझते हैं तथापि ज्ञानी और गम्भीर दृष्टि वाले व्यक्ति के निकट आध्यात्मिक संसार का ठीक रहना ईश्वर के इस समुदाय (बादशाहों) के बिना सम्भव नहीं है और अहंकार का कलंक मिटाकर विनम्रता के मेहराव को सजाना भी उनके बादशाहों) बिना सम्भव नहीं है।[1]

इसी कारण विनम्रता बढ़ाने के उद्देश्य से बादशाहों ने अपनी बुद्धिमानी के अनुसार आज्ञाकारिता के आईन बनाए हैं। कुछ बादशाहों ने सिर झुकाने की आज्ञा दी है सम्राट् ने दाहिने हाथ की हथेली को ललाट पर रख कर सिर झुकाने की आज्ञा दी है और इसको एतद् कालीन भाषा में कोर्निश कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि कोर्निश करने वाला अपने सिर को जो संवेदना तथा ज्ञान का अधिष्ठान है अपने विनम्र हाथ में रख कर बादशाह की पवित्र सभा में उपहार के रूप में प्रस्तुत करता है और अपने को आज्ञा पालन के लिए तैयार करता है।

कायदा यह है कि कृपाकांक्षी लोग अपने दाहिने हाथ की पीठ को जमीन पर रख कर धीरे-धीरे उठाते हैं और सीधे खड़े होकर हाथ की हथेली को सिर पर रखते हैं और इस सुन्दर ढंग से अपने को बादशाह के सुपुर्द कर देते हैं। इसको तसलीम कहते हैं।

एक दिन बादशाह ने कहा 'एक दिन मेरे स्वर्गीय पिता ने मुझको अपना ताज दिया। मैंने उसको सिर पर रखा। चूंकि टोपी बड़ी थी इसलिए उसको मैंने (दाहिने) हाथ से पकड़ा और सिर को झुकाया और उपरोक्त ढंग से

---

[1] इसी कारण बादशाह की उपस्थिति से विनम्रता का विकास होता है जो आध्यात्मिक जीवन की आधार शिला है। यह बात अकबर के लिए विशेष रूप से लागू है जो नए धर्म का प्रमुख था और जिसके सम्मुख प्रजा शिष्य समझी जाती थी। देखिए आईन ७७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सलाम (कोर्निश) किया। बादशाह को यह ढंग बहुत पसन्द आया और उन्होंने कोर्निश और तसलीम का यही नियम निर्धारित किया।"

बिदाई और सेवा के समय मनसब, जागीर, सम्मान के वस्त्र, तथा हाथी और घोड़े की बख्शिश पाने के समय तीन बार तसलीम की जाती है परन्तु बख्शिश के दूसरे अवसरों पर और विभिन्न प्रकार के पुरस्कार आदि के समय एक ही बार तसलीम की जाती है।

प्रत्येक सेवक अपने स्वामी के प्रति ऐसा ही करता है और उसको अपनी सम्पत्ति वृद्धि का साधन समझता है। बादशाह के शिष्य आदान के अतिरिक्त ताजीमी सिज्दा (सम्मान सूचक माथा टेकना) कहते हैं और उसको ईश्वर के सामने माथा टेकना समझते हैं। बादशाह ईश्वर की शक्ति का प्रतीक है और ईश्वर रूपी सूर्य का प्रतिबिम्ब है।

इस सत्य को समझ कर बहुत से लोगों ने इस ढंग को पसन्द किया और आशीर्वाद पर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। चूंकि विपरीत बुद्धि वाले अज्ञानी लोग इस सिज्दे को मानव-पूजा समझते हैं इसलिए बादशाह दरबार आम में अपने निजी सेवकों को भी ऐसा सिज्दा करने से मना करते हैं। परन्तु दरबार खास में जब कि भाग्यशाली लोगों को बैठने की आज्ञा मिलती है तो आवश्यक रूप से वे सिज्दा करते हैं और सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

खास लोगों को सिज्दा करने की आज्ञा देकर और आम लोगों को सिज्दा करने से मना करके बादशाह दोनों की इच्छायें पूरी करते हैं और अच्छे ढंग से लोगों को व्यावहारिक बुद्धि की शिक्षा देते हैं।

आईन ७५

शिष्टाचार

जैसे आध्यात्मिक शासन के कर्तव्य हृदय की स्वच्छता और लोभ तथा क्रोध को अधिकार में रखने से पूरे होते हैं उसी प्रकार राजनैतिक शासन बाहरी सजावट, विभिन्न पद वाले मनुष्यों का सम्मान करने और दानशीलता की अधिकता पर निर्भर करता है। यदि शासक का मस्तिष्क सुसंस्कृत होता है तो उसके आध्यात्मिक तथा राजनैतिक नेतृत्व में सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और उसके भिन्न-भिन्न प्रकार के राजनैतिक काम ईश्वर की उपासना बन जाते हैं। जो व्यक्ति इन बातों को व्यावहारिक रूप में देखना चाहता है उसको चाहिए कि वह बादशाह के कामों को पढ़े और गम्भीर दृष्टि से उनके कानूनों की वास्तविकता को पहचाने जिससे उसके ज्ञान में वृद्धि हो और वह बादशाह का यशोगान करे।[1]

बादशाह जब सिंहासन पर बैठते हैं तो सौभाग्यशाली बन्दे कोर्निश करते हैं और अपने दोनों हाथों को आगे रखकर पद[2] के अनुसार अपने अपने स्थान पर खड़े होते हैं और उनके दर्शन के प्रकाश में जीवन का अमृत प्राप्त करते हैं और उनकी सेवा की प्रतीक्षा में शाश्वत आनन्द प्राप्त करते हैं।

बड़ा राजकुमार सिंहासन से एक गज से ४ गज की दूरी पर खड़ा होता है और २ गज से ८ गज की

---

[1]ब्लाकमैन ने यह नोट लिखा है कि यहाँ पर मूल पाठ संदिग्ध है जिसका यह भी अर्थ हो सकता है, 'वह मेरी प्रशंसा करे क्योंकि मैंने उसको इस उदाहरण का निर्देश दिया है'। [2]बायें हाथ की उँगलियों के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूरी पर बैठता है। मँझला राजकुमार १½ गज से ६ गज की दूरी पर खड़ा होता है और ३ गज से १२ गज की दूरी पर बैठता है और तीसरा राजकुमार इसी अनुपात की दूरी पर खड़ा होता है और बैठता है। कभी कभी वह दूसरे राजकुमार की अपेक्षा अधिक निकट से सेवा करता है और कभी कभी दोनों इकट्ठे होकर एक ही दूरी से सेवा करते हैं परन्तु कभी कभी छोटे राजकुमार बादशाह कृपा की अधिकता के कारण दूसरे राजकुमारों की अपेक्षा अधिक निकट रहते हैं।

इसके बाद प्रथम कोटि के अमीर जो बादशाह पर विश्वास रखते हैं और बन्दों के पथ-प्रदर्शन के योग्य होते हैं[1] तीन से १५ गज की दूरी पर खड़े होते हैं और ५ से २० गज तक की दूरी पर बैठते हैं। द्वितीय श्रेणी के अमीर प्रथम श्रेणी के अमीरों से ३½ गज पर खड़े होते और बैठते हैं और शेष अमीर १० और १२½ गज की दूरी पर।

दूसरे लोगों के समूह यसल[2] में स्थान पाते हैं। एक या दो खास कर्मचारी [3]सब की अपेक्षा बादशाह के निकट सेवा में रहते हैं।

आईन ७६

सम्राट् के सम्मुख लोगों का प्रस्तुत किया जाना

चूंकि बादशाह के दैनिक कार्य अगणित हैं इसलिए उनमें से कुछ कामों का वर्णन किया जाता है जो बराबर होते रहते हैं।

अंजुमने दाद व दिहिश (पुरस्कार आदि वितरण की सभा) में भिन्न भिन्न मनुष्य बादशाह के सम्मुख हाजिर होते हैं। उनके गुणों को कसौटी पर कसा जाता है और उनकी पहचान का सिक्का प्रचलित हो जाता है (सब लोगों को उनके गुणों का ज्ञान हो जाता है)। कुछ लोग सम्राट् के अनुयायियों में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट करते हैं। दूसरे लोग अपनी बीमारियों की दवा चाहते हैं। [4]कुछ लोग धार्मिक कठिनाइयों को हल करने के लिए आते हैं और कुछ लोग सांसारिक समस्याओं का हल चाहते हैं।[5]इन मामलों का वर्णन असम्भव है। इसलिए उचित मालूम होता है कि इनसे हाथ खींचकर दैनिक आवश्यक कार्यों का वर्णन किया जाय।

सिरे दाहिनी कोहनी को छूते हैं और दाहिने हाथ की उँगलियों के सिरे बायें हाथ की कोहनी को छूते हैं; या, दोनों हाथों की उँगलियाँ विपरीत हाथ की बाह के नीचे होती हैं। बाहों का निचला भाग कमरबंद पर रहता है। जब सेवक इस स्थिति में खड़ा होता है तब उसे आमादये खिदमत (सेवा के लिए तैयार) कहते हैं। कभी कभी दाहिना पाँव बाँयें पाँव पर रहता है, केवल उसकी उँगलियाँ पृथ्वी को छूती हैं। जूते बाहर साफये निकाल पर छोड़ दिए जाते हैं। बादशाह सिंहासन पर पल्थी मार कर या चहार ज़ानू बैठते हैं।

[1]बरह नुमाइये बन्दगान का अर्थ ब्लाकमैन ने यह किया है जो लोग बादशाह के आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन के पात्र हैं। [2]यसल का अर्थ होता है 'सेना का बाजू'। यहाँ उन दो बाजुओं से तात्पर्य है जिसमें शाही मुहफिल विभक्त होती थी। सिंहासन के सामने का स्थान रिक्त रहता था। एक बाजू में साधारणतया अमीर और अधिकारी वर्ग रहते थे और दूसरे में कूर, मुल्ला और उलेमा। [3]जो सेवक सायाबान (पंखे या चँवर) लिए रहते हैं, देखिये आईन १९। [4]इसका अर्थ यह है कि अकबर जिस पानी को कुछ पढ़ कर फूँकता था वह सब बीमारियों की दवा होता था। देखिए अगला आईन। [5]जैसे पारिवारिक कलह, विवाह-सम्बन्ध और नवजात शिशु का नामकरण आदि।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तूरानी, ईरानी, रूसी, फिरंगी, हिन्दी और कश्मीरी हर देश के लोगों[1] का मासिक वेतन राज्य के पदाधिकारियों द्वारा नियत किया जाता है जैसा आगे के आईन में वर्णन किया जायगा और बख्शी उनको बादशाह के सामने लाते हैं। पहले कुछ समय तक घोड़ा और उसका सामान दरबार में लाने का नियम था परन्तु आजकल अहदी के सिवाय और कोई घोड़ा नहीं लाता। [2]तै किए हुए वेतन में कमी और वृद्धि होती है परन्तु प्रायः वेतन बढ़ा दिया जाता है और पुरस्कार आदि की गर्म बाजारी होती है। मनुष्यों की कमी और अधिकता के विचार से कुछ लोग प्रतिदिन बादशाह के सामने पेश होते हैं। जो घुड़सवार सप्ताह में समाट् के सामने प्रस्तुत किये जाने से बच जाते हैं वे सोमवार को पेश किए जाते हैं। प्रोत्साहन देने और सेवा भाव बढ़ाने के उद्देश्य से बादशाह लाने वालों को प्रति सवार दो दाम बख्शिश देते हैं। खास बितिक्ची[3] अहदियों को भी इसी प्रकार बादशाह के सामने पेश करते हैं। बादशाह इन लोगों का प्रस्तावित वेतन अवश्य बढ़ा देते हैं। चूंकि कायदा यह है कि अहदी स्वयं सवारी का घोड़ा नहीं खरीदता है इसलिए वह सवार जिनके जानवर मर चुके होते हैं हुजूर में पेश होते हैं और बादशाह उनके मासिक वेतन में घोड़ा दे देते हैं, अहदी उनकी सेवा करते हैं और बादशाह उन्हें ईनाम देते हैं।[4]

ऐसे अवसरों पर बड़े-बड़े दरबारी तथा दूसरे अमीर कुछ सेवकों को मनसब दिलाने के उद्देश्य से बादशाह के सामने पेश करते हैं। बादशाह परिस्थिति के अनुसार उनका पद निर्धारित करते हैं। यह लोग ५० ६० मासिक वेतन की इच्छा नहीं करते।

इसी मुहफिल में हर विभाग के सेवकों का मासिक वेतन निर्धारित किया है और अच्छे सेवकों को विभिन्न सेवायें सुपुर्द की जाती हैं।

आईन ७७

आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन

जब बुद्धि का दाता तथा विश्व का स्रष्टा भगवान चाहता है कि मनुष्यों के गुण प्रकट हों और उदार हृदयता तथा संकुचित हृदयता उत्पन्न होवें तब मनुष्यों की दृष्टि में दो विपरीत भावों (द्वन्द्वों) को भर देता है जिनमें से कुछ दीन को अपना लेते हैं और कुछ दुनिया को। हर वर्ग के नेता अलग अलग हो जाते हैं [5] और एक दूसरे

---

[1]अबुलफज्ल का तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जो अकबर की स्थायी सेना में भर्ती होना चाहते थे। [2]अहदियों का वेतन अधिक होता था। इसलिए वे अच्छे घोड़े खरीद सकते थे और उनका पालन पोषण कर सकते थे; देखिए ग्रन्थ दो, आईन। [3]दूसरे ग्रन्थ के आईन ४ में लिखा है कि केवल एक ही अफसर अहदियों की भरती करता था। [4]ब्लाकमैन ने इसका विपरीत अर्थ लगाया है। उनका किया हुआ अर्थ यह है: "चूँकि कायदा यह है कि अहदी अपना घोड़ा लाता है, इसलिए बादशाह ने आज्ञा दी है कि जो अहदी मर जाँय उनके घोड़े हुजूर में लाए जाँय। बादशाह इन घोड़ों को नए नियुक्त अहदियों को देते हैं या तो उपहार के रूप में अथवा उनका दाम अहदियों के मासिक वेतन में मुजरा दे दिया जाता है।" परन्तु दूसरे ग्रन्थ के आईन ४ में दिया है कि जब अहदी का घोड़ा मर जाता था तो उसको बादशाह घोड़ा देते थे, परन्तु साधारणतया अहदी अपना घोड़ा लाया करते थे। इस प्रकार दोनों अर्थ ठीक प्रतीत होते हैं। [5]धर्म के नेता पैगम्बर और राज्य के नेता राजा।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की निन्दा में लग जाते हैं। तब अदूर दृष्टि और हीनता का बाजार गर्म होता है और पारस्परिक सद्भावना तथा उदारहृदयता बहुमूल्य होकर लुप्त होती हैं।

अन्यथा दीन क्या है और दुनिया क्या है? एक चित्ताकर्षक सौन्दर्य[1] है जो इन हजार पर्दों में चमकता है। ईश्वर ने एक चौड़ा कालीन[2] बिछा दिया है और उस पर तरह तरह का रंग बिखेर दिया है।

पद्य

दर हकीकत नसबे आशिक व माशूक यके अस्त
बुल फ़ज़्लाने सनम व बरहमने साख्ता अन्द
यक चिराग़ अस्त दरीं ख़ाना व अज़ परतवे आन
पर .कुंजा मी निगरम अंजुमने साख्ता अन्द।

वास्तव में प्रेमी (आशिक) और प्रेयसी (माशूक) एक ही हैं। व्यर्थ बातें करने वालों ने मूर्ति (सनम) और ब्राह्मण को अलग अलग कर दिया है। इस घर में एक चिराग़ है और उसके प्रतिबिम्ब से जहाँ कहीं मैं देखता हूँ सजी हुई सभा मुझको दिखाई पड़ती है।[3]

एक मनुष्य काम क्रोध आदि भावों की तवहीन को अपना उद्देश्य समझता है अर्थात् इनके ऊपर अधिकार जमाने को वह ईश्वर की उपासना समझता है। दूसरे व्यक्ति देश की देख रेख को अपनी देखरेख समझता है। इस तरह बहुत से मनुष्य अपने विश्वास पर दृढ़ रहते हैं और अपने स्वप्न और विचार में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। जब मनुष्य अपनी आदत को छोड़ देता है और विचार का समय आता है तो तकलीद[4] (धार्मिक अंधविश्वास) के पर्दे का ताना-बाना टूट जाता है और एकरंगी का चेहरा[5] जाहिर हो जाता है।

परन्तु बुद्धिमानी का प्रकाश हर घर में नहीं पाया जाता और हर हृदय इस ज्ञान को धारण करने की क्षमता नहीं रखता। यदि किसी को ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो प्राण जाने के भय से वह शान्त रहता है और यदि कोई व्यक्ति ज्ञान को प्रकट करता है तो अच्छे विचार वाले मूर्ख लोग उसको पागल कहकर उसका विश्वास नहीं करते और दुष्ट अभागे उसकी बात को कुफ्र और नास्तिकता समझ कर उसका प्राणान्त करना चाहते हैं।

जब कभी मनुष्यों के सौभाग्य का अवसर आता है और ईश्वर (सत्य) की उपासना उसमें सम्मिलित होती है तो वे बादशाह को इस ऊँचे पद पर लाते हैं और आध्यात्मिक जगत का नेतृत्व उसको सौंपते हैं और बिना किसी सम्भव सहायता के वह दिव्य प्रकाश प्राप्त करता है जिससे दुई का नक्श (द्वैत भाव) दिल से मिट जाता है।

---

[1] ईश्वर। अकबर नेअपने जीवन में दीन तथा दुनिया का समन्वय कर दिया था, देखिए अबुल फज्लकी लिखी हुई भूमिका। [2]संसार। [3]यह सूफियाना पंक्तियों का अनुवाद है। इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर प्रत्येक स्थान में और प्रत्येक वस्तु में है। अतएव प्रत्येक वस्तु ईश्वर है। इस प्रकार ईश्वर रूपी माशूक मनुष्य रूपी आशिकमें रहता है और दोनों एक ही हैं। यहाँ ब्राह्मण = मनुष्य; सनम = ईश्वर; और चिराग = ईश्वर; और खाना = मनुष्य का हृदय। [4]तकलीद का अर्थ है गले में गुलूबंद बाँधना, अर्थात् आँख मूँदकर किसी का अनुसरण करना विशेषकर धार्मिक मामलों में। बदायूनी के अनुसार, अबुल फज्ल, हकीम और अबुल फतेह पैगम्बरी बातों और इलहामी मजहब को तकलीदियात कहते थे क्योंकि वे धर्म का आधार बुद्धि को मानते थे, प्राप्त वचन को नहीं, (देखिए बदायूनी :पृष्ठ २८१)। [5]संसार की सब वस्तुओं में ईश्वर ही ईश्वर दिखाई पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कभी कभी बादशाह अनेकता में एकता देखता है और कभी कभी इसके प्रतिकूल एकता में अनेकता देखकर आनन्द प्राप्त करता है![1] जब बादशाह सिंहासन पर बैठता है तो वह सुख और दुःख से निरपेक्ष रहता है उदाहरणार्थ वर्तमान बादशाह ऐसे ही हैं और यह ग्रन्थ इस बात का साक्षी है।

भविष्यवक्ता प्रारम्भ से ही[2] यह जान गये थे और इस रहस्य के अन्य जानने वालों के साथ प्रसन्नतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु दूरदर्शी सम्राट् ने कुछ समय तक अपने को इस प्रकार छिपा रखा मानों वह इस रहस्य से अपरिचित हों और अपने को इस काम का जानकार न प्रकट किया। परन्तु जिस बात को ईश्वर चाहता है उसको रोकने की किसमें क्षमता है। सम्राट् ने पहले कुछ ऐसे काम किये जिससे उस समय के पक्षपाती लोग चकित हो गए। बादशाह अपने संकल्पों को प्रकट करने से बाज न आ सके। उनकी इच्छा न रहने पर भी उनके संकल्प परिपक्व हो गए और अब पूर्णतया ज्ञात हैं। अब वह राष्ट्र के आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक हैं और इस कर्त्तव्य के सम्पादन को ईश्वर को प्रसन्न करने का साधन समझ कर हिदायत का दरवाज़ा खोल दिया और सत्य की तलाश के जंगल के प्यासों की प्यास बुझाई।

अपनी बुद्धिमत्ता से सम्राट् कभी कभी लोगों को शिष्यत्व की मनोकामना से वंचित करके और कभी कभी उनको सफल बनाकर आनन्द के संसार में उनका पथ-प्रदर्शन करते हैं। बहुत से सत्यान्वेषी बादशाह के नेत्रों के प्रकाश और उनकी पवित्र साँस से उतना ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं जितना दूसरे आध्यात्मिक मुजाहिद[3] सिल्लाकशी[4] करने पर भी नहीं प्राप्त कर सके। बहुत से लोग जिन्होंने संसार का त्याग कर दिया है जैसे सन्यासी, योगी, सेवड़ा, कलन्दर, हकीम तथा सूफ़ी और हजारों सांसारिक लोग जैसे सिपाही, व्यापारी, शिल्पी और कृषक प्रतिदिन बादशाह के दरबार में उपस्थित होते हैं जिससे उनके ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं अथवा उनकी आँखों का ज्ञान प्रकाश बढ़ जाता है। हर देश के लोग-तुर्क और ताजेक, छोटे और बड़े, अपने और पराए दूर और नजदीक से अपनी कठिनाइयों के हल के लिए बादशाह की कृपा दृष्टि की अभिलाषा करते हैं और सफलता प्राप्त करने पर बादशाह के दरबार में आकर गुणगान करते हैं। बहुत से मनुष्य रास्ते की दूरी और दरबार में भीड़ के कारण स्वयं वहाँ उपस्थित न होकर अपने घर से ही (गायबाना) उपहार बादशाह को चढ़ा कर उनका यशोगान करते हैं। जब देश के प्रबन्ध के लिए, अथवा किसी देश की विजय के लिए अथवा सैर और शिकार के मनोरंजन के लिए बादशाह यात्रा करते हैं तो ऐसे कम गाँव, कस्बा या शहर होते हैं जहाँ के पुरुष और स्त्रियों के समूह अपने हाथों में संकल्प का उपहार लेकर और जीभ से यशोगान करते हुए न आते हों और अपने ललाट से पृथ्वी को न छूते हों, अथवा बादशाह की नजर की क्षमता की प्रशंसा न करते हों और उनसे प्राप्त होने वाली आध्यात्मिक सहायता का वर्णन न करते हों। बहुत से लोग शाश्वत आनन्द, सच्चा हृदय, अच्छे काम करने की शक्ति, स्वास्थ्य, आँख का प्रकाश, पुत्रोत्पत्ति और मित्रों की भेंट, दीर्घ आयु, जीविका की वृद्धि और पदोन्नति और अन्य मनोकामनाओं की पूर्ति बादशाह से चाहते हैं। सत्य के ज्ञाता बादशाह प्रत्येक को उचित उत्तर देते हैं और आन्तरिक व्यग्रताओं का उपचार करते हैं। एक दिन भी ऐसा नहीं बीतता कि कुछ लोग प्याले में पानी लेकर बादशाह के सामने न आते हों और उसे दम करने के लिए प्रार्थना न करते हों। बादशाह उसके ललाटों की तख्ती पर आसमानी अक्षरों[5] को पढ़ते हैं और आशाओं के आमंत्रण सुनकर पानी को

[1]तुलना कीजिए वैदिक मंत्रों से "सोऽहम्" और "तत्त्वमसि, एकोऽहंबहुस्याम्"।[2] यह इस बात की ओर संकेत करता है कि पैदा होने के समय अकबर ने अपनी माता से कुछ बातें की थीं। देखिए दबिस्तानुल मजाहिब : कलकत्ता संस्करण : पृष्ठ ३६०। [3]. जो व्यक्ति इन्द्रियदमन की चेष्टा में लगा रहता है।[4] एक अमल है जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चालीस दिन तक उपवास और प्रार्थना करते हैं। [5]भाग्य को जानकर।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जरूरतमन्द के हाथ से ले लेते हैं और संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य के प्रकाश में रख कर प्रार्थी की इच्छा पूरी करते हैं। बहुत से बीमार आदमी, जिनकी आशायें टूट चुकीं थीं और जिनका इलाज प्रसिद्ध हकीम नहीं कर सके थे इस इलाही तिलिस्म[1] (ईश्वरीय) जादू से स्वस्थ हो गए।

आश्चर्य की बात यह है कि एक सरल हृदय वाले फकीर ने अपनी कटी जबान को बादशाह के चौखटे पर रख दी और कहा, "यदि ईश्वर ने अपने हाथ से मुझमें सत्यता[2] रखी है तो मेरी सच्ची नियत से मेरी जीभ ठीक हो जाय।" कुछ दिन नहीं बीते थे कि उसकी आकांक्षा पूरी हो गई।

जो व्यक्ति बादशाह के धार्मिक ज्ञान तथा ईश्वरोपासना से परिचित है वह बादशाह की अद्भुत आदतों[3] पर ध्यान नहीं देता और जो मनुष्य बादशाह की न्यायप्रियता तथा कृपालुता जानता है वह इनको देखकर आश्चर्य में नहीं पड़ता। उदार हृदय सम्राट् संसार को अलंकृत करने वाले अपने सद्गुणों पर बहुत कम ध्यान देते हैं। इसलिए जो लोग बादशाह के शिष्य होना चाहते हैं उनको स्वीकार करने में वह देर करते हैं। वह प्रायः कहते हैं, "मैं स्वयं पूर्णता को प्राप्त किए बिना मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन कैसे कर सकता हूँ?" परन्तु जब किसी के ललाट से सच्चाई का चिह्न प्रकट होता है और उसके सत्यान्वेषण की अग्नि दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है तब वह स्वीकार कर लिया जाता है और रविवार को विश्व को प्रकाशित करने वाले सूर्य के प्रकाश में अपनी मनोकामना प्राप्त करता है। हर प्रकार की कठिनाई तथा सम्राट् की अनिच्छा रहते हुए भी हर वर्ग के हजारों व्यक्ति विश्वास की चादर कंधों पर रख कर शिष्यत्व प्राप्त करने को अपना सौभाग्य समझते हैं।

इस अवसर पर ज्ञान के चिरन्तन सौभाग्य को ढूंढ़ने वाला व्यक्ति अपनी पगड़ी को हाथ में रख कर सम्राट् के पवित्र चरणों पर अपना सिर रख देता है मानों प्रतीकात्मक भाषा[4] में कहता है कि मैंने अपने भाग्योदय से अहंकार तथा स्वार्थ जो अनेक बुराइयों के मूल हैं, अपने सिर से फेंक कर हृदय को बादशाह की सेवा में अर्पित कर दिया और अमर जीवन के साधन की खोज में सिर रखा। वह बादशाह जिनको ईश्वरीय सहायता प्राप्त हो चुकी है, कृपापूर्ण हाथ फैलाकर प्रार्थी को उठाते हैं और पगड़ी को उसके सिर पर रखते हैं। प्रतीकात्मक भाषा में इसका अर्थ होता है कि सद्भावपूर्ण बादशाह ने प्रार्थी को अपनी सहायता से उठाया और नश्वर जीवन से अमर जीवन में पहुँचा दिया। बादशाह उसको शस्त[2] खासा देते हैं जिस इस्मे

---

[1]झाड़ फूँक। [2] उसके मन में जो विचार आया था वह यह था। यदि अकबर पैगम्बर है तो वह अपने अति प्राकृत ज्ञान से जान जाय कि मैं यहाँ किस स्थिति में पड़ा हूँ। [3] अकबर मुसलमानों के साथ कोई पक्षपात नहीं करता था। जब उसे रुपये की आवश्यकता होती थी तब वह अपने घुड़सवारों को सुसज्जित करने के लिए मसजिदों को भी लूट लेता था तथापि उसके हृदय में मूर्ति-पूजा का सुदृढ़ दुर्ग था जिस पर पुर्तगाली पादरी लोग कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सके। वह दिन में चार बार सूर्य की उपासना ही नहीं करता था बल्कि स्वयं अपने को भी राज्य समझता था। यद्यपि वह अन्य मामलों में बहुत सहिष्णु था तथापि वह यह सहन नहीं कर सकता था कि कोई उसकी दिव्यता में हस्तक्षेप करे। देखिए मरेज़ डिसकवरीज़ द्वितीय भाग पृष्ठ ६५)। [4]मूल ग्रन्थ में जबाने हाल आया है और कुछ नीचे जबाने बे जुफानी आया है। जबाने हाल का अर्थ प्रतीकात्मक या आलंकारिक भाषा जो जबाने मकाल (बोली हुई भाषा) का विपर्यय वाची है। शास्त का अर्थ होता है कोई गोल वस्तु जैसे अंगूठी या जनेऊ। यहाँ शायद अंगूठी से तात्पर्य है। अथवा यह बादशाह का चित्र हो सकता है जो, बदायूनी के अनुसार, दीन इलाही के मानने वाले अपनी पगड़ी पर लगाते थे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आजम[1] (महा नाम) और पवित्र मंत्र 'अल्ला हो अकबर' खुदा होता है और इससे वह यह शिक्षा ग्रहण करता है :

पद

शस्ते पाक व नज्रे पाक खताये न कुनद (या न रसद)

[पवित्र शस्त और पवित्र दृष्टि गलती अर्थात् पाप नहीं करतीं ।]

सत्य की खोज करने वाले सेवक बादशाह की अद्भुत आदतें देखकर आवश्यकता के समय पथ-प्रदर्शन प्राप्त करते हैं और अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक उपदेशों को मूक भाव से स्वीकार करते हैं। वे ईश्वर की कृपा के स्रोत पर अपने हृदय की प्यास बुझाते हैं और अपनी आँखों तथा कानों के लिए नया प्रकाश प्राप्त करते हैं। कुछ को, उनकी क्षमता के अनुसार और चित्ताकर्षक वार्तालाप के द्वारा, सम्राट् महत्त्वपूर्ण ज्ञान की शिक्षा देते हैं।

जिस प्रकार सम्राट् मनुष्यों को ज्ञान की शिक्षा देते हैं, भयानक बीमारियों को चंगा करते हैं और कठोर बीमारियों का उपचार करते हैं इस ग्रन्थ में उन सबका वर्णन करना असम्भव है। यदि काम से अवकाश मिला और यदि जीवन बना रहा तो इस विषय का वर्णन एक दूसरे ग्रन्थ में किया जायगा।

दीन इलाही के नियम

दीन इलाही के अनुगामी एक दूसरे को देखने पर इस प्रकार अभिवादन करते हैं। एक कहता है "अल्ला हो अकबर" और दूसरा उत्तर में कहता है "जल्ले जल्लाल हू"[2]। अभिवादन की यह प्रणाली निर्धारित करने से बादशाह का उद्देश्य था कि लोग अस्तित्व के स्रोत को न भूलें और ईश्वर की चर्चा से हृदय को सन्तुष्ट करें, जिह्वा को कृतकृत्य करें और उनकी मनोकामना पूरी हो।

बुद्धिमान बादशाह की आज्ञा है की जो भोज और दान-दक्षिणा मरने के बाद दी जाती है उसे लोग अपने जीवन में ही पूरी कर दिया करें और अन्तिम यात्रा का संबल पहले से तैयार करलें।

सदस्य हर वर्ष अपने जन्म दिवस का उत्सव मनावे, लोगों को नाना प्रकार का भोजन खिलावें, दान दें और अन्तिम लम्बी यात्रा का संबल तैयार करें।

बादशाह ने यह भी आज्ञा दी है कि लोग आईन मुकदस (पवित्र कानून) के अनुसार गोश्त न खाँय। वे दूसरों को गोश्त खाने की अनुमति दे सकते हैं परन्तु स्वयं न खाँय, किन्तु अपने जन्म के महीने में वे गोश्त के निकट भी न जाँय। वे अपने मारे हुए जानवर के निकट न जाँय और न तो उसका गोश्त खाँय। वे कसाइयों, मछुवों और बहेलियों के साथ खान-पान का सम्बंध न रखें। उन्हें चाहिए कि गर्भवती, बूढ़ी, बाँझ और अल्प-वयस्क कुमारियों के साथ न मिलें।

---

[1]ईश्वर का नाम। ईश्वर के ९ नाम हैं जैसे अल्लाह, अस्समद, अलहई आदि। [2]ब्लाकमैन ने 'जल्लो जल्लाल हू' लिखा है। उपरोक्त दोनों सूत्र हमें अकबर के नाम की याद दिलाते हैं, "जल्लाल उद्दीन मुहम्मद अकबर"। शब्द "अल्लाहो अकबर" संदिग्ध है। उनका अर्थ हो सकता है कि "ईश्वर महान है" 'अथवा अकबर ईश्वर है'। इसमें सन्देह नहीं कि अकबर इन शब्दों को, संदिग्धता के कारण, पसन्द करता था क्योंकि इसका प्रयोग सिक्कों पर, मुहरों पर और फरमानों पर होता था। उसका चलाया हुआ सन् 'इलाही सन्' और उसका चलाया हुआ धर्म 'दीन इलाही' कहलाता था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ७८

हाथियों का निरीक्षण

पशुओं के निरीक्षण का प्रारम्भ इसी विचित्र जानवर से होता है। प्रति दिन सबसे पहले खासे का एक हाथी अपने साज और सामान से सजा कर बादशाह के सामने लाते हैं और इलाही महीने की पहली तारीख को दस हाथी लाते हैं। इसके बाद इसी संख्या में हल्कों के हाथी लाये जाते हैं। सोमवार को दस से बीस हाथी लाते हैं। खासे के हाथियों को प्रस्तुत करते समय बितिक्ची बादशाह से कुछ निवेदन करता है। हाथी पाँच हजार से अधिक हैं और प्रत्येक का पृथक्-पृथक् नाम है। बादशाह जानते हैं कि अधिकांश हाथी किस दहाई के हैं (दस-दस अच्छे हाथियों का नाम दहाई है और हरएक दहाई एक चतुर रक्षक के सुपुर्द है); कि जानवर किस प्रकार बादशाह के यहाँ लाया गया; मूल्य; भोजन की मात्रा; आयु; जन्म स्थान; मस्ती का समय और प्रत्येक बार की मस्ती की अवधि; युद्ध में उसका स्थान; कितनी बार सवारी के लिए लाया गया; कितनी बार बादशाह ने सवारी की, खासा हाथियों में दाखिल होने का वर्ष और महीना; हल्कों में उसका चक्कर अर्थात् किस हल्के में कितने दिन रहा; किस समय उसके दाँत काटे जाते हैं; वह पिछली बार कब निरीक्षण के लिए लाया गया था; उसकी देख भाल करने वालों की दशा और उसके रक्षक अमीर का नाम। दूसरे हाथियों के विषय में सम्राट् के सामने आठ बातों की आवश्यक रिपोर्ट दी जाती है: नाम-परिवर्तन (?); उसकी पुनरावृत्ति, मूल्य; किस प्रकार वह शाही अधिकार में आया; सवारी के योग्य है अथवा बोझा ढोने के; पद; सादा है या इसके विपरीत; फौजदार ने उसका क्या पद रखा है। नियम यह है कि हर एक फौजदार अपने हाथियों को चार वर्गों में विभक्त करता है; अच्छे जानवरों को बुरे जानवरों से अलग कर देता है और वह यह भी देखता है उन्हें अपने पास रहने दे या दूसरों के हाथ सुपुर्द कर दे।

प्रतिदिन पाँच तहवीली (हस्तान्तरित किए जाने वाले), हाथियों का अनुभवी व्यक्ति द्वारा निरीक्षण किया जाता था। नियम यह है कि जब नए हाथी सरकार में दाखिल होते हैं तो वह पचास पचास अथवा सौ-सौ के समूह में अनुभवी व्यक्तियों को पद की पहचान के लिए सुपुर्द किए जाते हैं। एतत्कालीन भाषा में उनको 'तहवीली' हाथी कहते हैं। जब वे बादशाह के सम्मुख पहुँचते हैं तो उनका पद निर्धारित कर दिया जाता है और वे अपनी श्रेणी या पद के हाथियों में भेज दिए जाते हैं। हर शनिवार को एक हाथी बादशाह के सामने बख्शिश के लिए लाते हैं और वह किसी योग्य सेवक को दिया जाता है। इस काम के लिए कुछ हल्के अलग कर दिए गए हैं। पहले खासा हाथियों का पद इस बात पर निर्भर होता था कि वे कितनी बार बादशाह के सामने प्रस्तुत किए गए हैं परन्तु अब इस बात पर निर्भर करता है कि बादशाह ने उस पर कितनी बार सवारी की है। हल्कों में कौन हाथी आगे रहेगा और कौन पीछे यह बात उनके मूल्य की कमी या अधिकता से निर्धारित की जाती है। जब सब हाथियों का निरीक्षण हो चुकता है तब फिर नए सिरे से खासा के दस-दस हाथी प्रतिदिन आते हैं। इसके बाद राजकुमार अपने हाथियों पर सवार होकर गुजरते हैं और इसके बाद हल्कों के हाथी पेश होते हैं। चूंकि हाथियों के हल्के उनके मूल्य के अनुसार बनाये गए हैं इसलिए हर निरीक्षण में उनके मूल्य में कमी या वृद्धि हो जाती है और पुराने हल्के से निकाल अपने नए मूल्य वाले हल्के के हाथियों में वह स्थान पाता है। इसी कारण बहुत से फौजदार अपने हल्कों की पूर्ति करने की इच्छा रखते हैं और हाथियों के गुजरने के समय पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। बादशाह जिसको चाहते हैं उसको सुपुर्द करते हैं। यदि किसी फौजदार के हाथी पूरी संख्या में गुजरते हैं तो उसे कुछ और हाथी दे दिए जाते हैं। ऐसे फौजदारों का विचार पहले करते हैं। जिन फौजदारों के हाथी दुबले होते हैं पहले उनके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हाथियों की, कमी की पूर्ति की जाती है। तत्पश्चात् उनकी जिनके हाथियों की संख्या निर्धारित से कम होती है। प्रत्येक फौजदार को जो निर्धारित संख्या में हाथियों को प्रस्तुत करता है कुछ हाथी मिलते हैं। बादशाह की आज्ञा पाकर मुशरिफ यह निश्चय करता था कि सेवा के लिए हाथियों को कहाँ रखा जाय।

यद्यपि अमीरों के हाथियों का मनोनयन नहीं होता तथापि कदाचित् कोई दिन ऐसा व्यतीत होता हो जब उनके कुछ हाथी बादशाह के सामने न लाये जाते हों, और बादशाह उनका पद न निर्धारित करके उन पर खास दाग न लगवाते हों इसी प्रकार व्यापारियों के हाथी भी बादशाह के सामने प्रस्तुत होते हैं और वह उनका पद तथा मूल्य निर्धारित करते हैं।

आईन ७९

घोड़ों का निरीक्षण

चालीस मोहरी घोड़ों से आरम्भ होता है। इसके बाद राजकुमारों के घोड़े आते हैं, इसके पश्चात् राहवार खासा, तब खाना जाद और दूसरे तवीलों के घोड़े आते हैं। जब दस मुहरी घोड़े गुजर चुकते हैं तब गूत, किसराक, चीता-गाड़ियों को खींचने वाले और बोझा ढोने वाले घोड़े पेश होते हैं। मूल्य के विचार से घोड़ों को पहले या पीछे रखते हैं। एक ही मूल्य होने पर उनके दाखिल होने के समय पर ध्यान देते हैं अर्थात् जो घोड़ा पुराना होता है उसको पहले और नए को बाद में पेश करते हैं। बादशाह के सामने पेश होने के बाद घोड़ों को पहिचानने वाले उनको काम में लगा कर निरीक्षण करते हैं, उनका नया मूल्य निर्धारित करते हैं और प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी में विभक्त करते है। यदि उसका मूल्य घट या बढ़ जाता है तो अपने समकक्षों में रख दिया जाता है। तृतीय श्रेणी के घोड़ों का अलग तवेला बनाते हैं और सामान्य लोगों को बख्शिश में दिए जाते हैं। जिन घोड़ों के मूल्य में वृद्धि हो जाती है वह उन सेवकों के सुपुर्द किए जाते हैं जिनके तवेले में कमी नही होती अथवा जिनके तवेले में दो से अधिक घोड़ों की कमी नहीं होती। तवीले की कमी निरीक्षण-काल में प्रतिदिन पूरी की जाती है और यदि कमी पूरी नहीं होती तो उन्हें दूसरे सेवक के सुपुर्द कर दिया जाता है। प्रतिदिन बीस घोड़े बादशाह के सामने पेश किए जाते हैं। रविवार को जब निरीक्षण का आरम्भ घोड़ों से होता है तब दूने घोड़े पेश होते हैं। कुछ घोड़े दरबार में सदा तैयार रखे जाते हैं : साठ मोहरी से चालीस मोहरी तक एक-एक; और तीस मोहरी से दस मोहरी तक एक- एक वे उपहार या वेतन के रूप में दिए जाते हैं। व्यापारियों के घोड़ों को उनके आने तथा मूल्य के अनुसार आगे या पीछे रखते हैं। कमी या अधिकता के अनुसार बीस से सौ घोड़े तक पेश होते हैं। बादशाह के सामने लाने से पहले अनुभवी लोग मूल्य निर्धारित करते हैं। निरीक्षण के समय मूल्य बढ़ा दिया जाता है। तीस मुहरी से अधिक मूल्य वाले घोड़ों का मूल्य बादशाह के सामने निर्धारित होता है। खजान्ची दरबार आम में नकद रुपया तैयार रखता है और व्यापारियों को प्रतीक्षा का कष्ट नहीं उठाना पड़ता। खरीदने के बाद घोड़ों पर खास दाग लगाया जाता है जिससे उनके परिवर्तन की सम्भावना नहीं रहती।

अपनी दूरदर्शिता तथा व्यापारियों के अधिक लाभ के कारण ईराकी, मुजन्नस और अरबी घोड़ों पर जो अन्य देशों से[1] आते हैं तीन-तीन रुपया प्रति घोड़ा कर लेते हैं; जो तुर्की और अरबी घोड़े कंदहार के रास्ते आते

[1] 'अज विलायत आमद' का अर्थ ब्लाकमैन ने, 'काबुल और फारस से आयात किए गए' लिखा है, पृ० २२५।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है उन पर २½ रुपया और काबुली तथा देशी घोड़ों पर दो रुपया कर लेते हैं।

आईन ८०

ऊँटों का निरीक्षण

निरीक्षण का आरम्भ देशी ऊँटों से होता है। प्रतिदिन पाँच कतारें सम्राट् के सामने प्रस्तुत करते हैं। पहले पानसदी (जिन अफसरों के पास पाँच सौ ऊँट हैं) आते हैं। उनमें जो पुराने होते हैं वह पहले आते हैं। बड़े दारोगा को आज्ञा है कि अच्छे बुगदियों और जम्माजों की एक कतार सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करें। इसके बाद बुगदी, तत्पश्चात् जम्माज, घुर्दे, लोक और दूसरे ऊँट पेश होते हैं। शुक्रवार को इस पशु का निरीक्षण आरम्भ होता है। उस दिन दूने ऊँट सम्राट् के सामने से गुजरते हैं। मूल्य की कमी या अधिकता के विचार से उनको पहले या पीछे पेश करते हैं।

आईन ८१

गाय-बैलों का निरीक्षण

मूल्य के अनुसार दस जोड़े बादशाह के सामने पेश होते हैं। बुधवार को इस पशु का निरीक्षण आरम्भ होता है और दो दो बराबर पेश होते रहते हैं।

दीवाली के दिन—जो इस देश का पुराना त्योहार है और जिस दिन हिन्दू लोग गाय की पूजा करते हैं और उसकी सेवा को ईश्वरोपासना समझते हैं—सम्राट् की आज्ञा से कुछ पशु सजा कर उनके सामने पेश करते हैं जिनको देख कर लोग मोहित हो जाते हैं।

आईन ८२

खच्चरों का निरीक्षण

इस बोझा ढोने वाले पशु का निरीक्षण बृहस्पतिवार से करते हैं और मूल्य के हिसाब से छः कतारें पेश होती हैं। खच्चरों का निरीक्षण वर्ष में एक बार से अधिक नहीं होता।

पहले पूर्वोक्त ढंग से निरीक्षण होता था परन्तु अब घोड़े रविवार को; ऊँट, खच्चर और गाय-बैल सोमवार को; सिपाही मंगल को; खजाने का हिसाब किताब बुध को; और दीवानी के मामले बृहस्पति को पेश किए जाते हैं। शुक्रवार को सम्राट् अन्तःपुर में व्यतीत करते हैं और शनिवार को हाथियों का निरीक्षण होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ८३

पाव गोश्त[1]

बादशाह ने व्यावहारिकता को नवीनता प्रदान की है और एक सुन्दर अधिनियम बनाया है जो पशुओं का रक्षक, भंडार का अधीक्षक, न्याय का शिक्षक, सज्जनों का प्रकाशक और अनुद्योगी को अध्यवसायी बनाने वाला है। इसने अनुभवी लोगों के नेत्र के प्रकाश (ज्ञान) को बढ़ाया और जो लोग घाटे में थे उन्हें लाभ होने लगा।

बादशाह ने हर पशु के खाने की मात्रा निर्धारित की और उनकी मोटाई के साधन को अपने हाथ में लिया अर्थात् यह निर्धारित किया कि कौन सा पशु कितना भोजन पाने से कितना मोटा और स्वस्थ हो सकता है। अपनी गम्भीर दृष्टि से और लोगों को शिक्षा देने की इच्छा से सम्राट् ने बेईमानी की श्रेणियाँ बनी दी हैं। इसको पाव गोश्त आईन कहते हैं। समय-समय पर एक अनुभवी मनुष्य इन मूक पशुओं के तबेलों पर जाता है। वह उनका निरीक्षण करता है और उनकी मोटाई या दुबलापन नापता है। सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत होने के समय भी पहले अनुभवी लोग पशुओं की मोटाई या दुबलेपन की जाँच करते हैं और उनकी रिपोर्ट देते हैं। तब बादशाह स्वयं उनका निरीक्षण करते हैं और रिपोर्ट की हुई मोटाई या दुर्बलता में अपनी दूरदर्शिता से कमी या वृद्धि कर देते हैं और दुर्बलता के लिए जुर्माना लगाया जाता है। यदि किसी कारण किसी जानवर के दाने और घास में कमी की रहती है तो इस कमी पर ध्यान रखा जाता है। दुर्बल हाथियों की तेरह श्रेणियाँ निर्धारित हुई हैं....।[2]

---

[1]इस विचित्र अधिनियम का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि अकबर अपने उन अफसरों तथा कर्मचारियों से कितना जुर्माना वसूल कर सकता था जिनको खासा पशुओं के खिलाने पिलाने का भार सौंपा गया था यदि वे उसकी आशा के अनुसार स्वस्थ और मोटे नहीं होते थे। पशुओं के दैनिक भोजन की मात्रा आईन ४३, ५१, ६२, ६७ तथा ७० के अनुसार नियत कर दी गई थी और कई दारोगा अपने रोजनामचों में लिखते थे कि प्रत्येक पशु को कितना भोजन दिया गया है। यह रोजनामचे निरीक्षण के समय देखे जाते थे और विशेष पदाधिकारी पशुओं की मोटाई नापने के लिए नियुक्त किए जाते थे जो मोटाई की तुलना रोजनामचे में लिखी हुई खुराक से करते थे। मान लीजिए किसी पशु को पूर्ण भोजन (अ) दिया जाता था तो अकबर उसकी पूर्ण मोटाई (आ) निर्धारित करता था। इसी प्रकार यदि भोजन की मात्रा (ब) दी जाती थी तो उसकी मोटाई (बा) निर्धारित होती थी। खेद है कि अबुल फज्ल ने यह नहीं लिखा है कि मोटाई का निर्धारण कैसे किया जाता था। तब मोटाई का परिमाण आ और बा आदि को कई भिन्नों या अंशों में विभक्त करते थे, जैसे $\frac{८आ}{८}$, $\frac{७आ}{७}$ और $\frac{६आ}{६}$, इस प्रकार हाथियों की पूर्ण मोटाई आ को १३ श्रेणियों में विभक्त करते थे। पावगोश्त का अर्थ है चौथाई गोश्त और इससे प्रकट होता है कि भोजन (अ) से $\frac{३}{४}$ आ मोटाई के बदले में केवल $\frac{३}{४}$ आ मोटाई होती थी। इसलिए यही नाम आईन का रख दिया गया। हम नहीं जानते कि मोटाई की जाँच करने वाले अधिकारी पशु की परिधि नाप कर अथवा उसको तौल कर परीक्षा करते थे। यह अधिनियम कल्पनामूलक तथा अव्यावहारिक प्रतीत हो सकता है परन्तु इससे पता चलता है कि अकबर अपने दारोगों की बेईमानी का पता लगाने के लिए कितना दृढ़ संकल्प था। [2]यहाँ पर पाठ संदिग्ध है। तेरह भिन्नें या दुर्बलता की मात्रायें गिनाई गई हैं परन्तु उनसे कुछ अर्थ नहीं निकलता। —ब्लाकमैन पृ० २२६-७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हाथी के सिवाय अन्य पशुओं के लिए (हाथियों की तेरह श्रेणियों में से) छः श्रेणियाँ निर्धारित की गई हैं : दूसरी, तीसरी, पाँचवीं, सातवीं, नवीं, और दसवीं। चूँकि कानून यह है कि हल्कों के गुजरने के समय फौजदार अपने देखने में जो सबसे अच्छा हल्का है उसे चुन लेते हैं और इसी प्रकार सबसे खराब हल्का भी अलग कर लिया जाता है इसलिए हाथियों की मोटाई तथा दुर्बलता की जाँच करने वाले अफसर प्रथम श्रेणी का जो पद या दर्जा निर्धारित करते हैं उसी हिसाब से ५० प्रतिशत धन वापस ले लिया जाता है और बाद वाले में आधा धन ले लेते हैं यदि फौजदार दरोगा से मिल जाता है और रोजनामचे में दोनों मुहर करते है तो खाने के चौथाई के लिए फौजदार उत्तरदायी होता है और शेष के लिए दरोगा। बूढ़े हाथी की दुर्बलता पूरे हल्के की दशा से निर्धारित की जाती है। घोड़ों के अस्तबलों में साईस, भिश्ती और मेहतर का वेतन का ¾ भाग जुर्माने में लेते है। ऊँटखाने में दरोगा से दाने का मूल्य और चरवाहे से घास का दाम वसूल करते हैं। बहलखाने में बैलों के दाने और घास दोनों के मूल्य का एक भाग दरोगा से वसूल करते हैं। गाड़ीवान पर खूराक का कोई दायित्व नहीं है। बोझा ढोने वाली गाड़ियों में जुर्माने का आधा भाग छोड़ दिया जाता है।

आईन ८४

पशुओं की लड़ाई और बाजी लगाना

सम्राट् की इच्छा यह है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग सामञ्जस्य के चित्ताकर्षक भवन में आनन्द प्राप्त करें और मित्रता तथा एकता की सभा सजे जिससे कार्य उचित ढंग से हो और व्यवस्था के डोरे दृढ़ हों। चूँकि प्रत्येक मनुष्य की बुद्धि सत्य तक नहीं पहुंचती और प्रत्येक कान बुद्धिमानी की बातें नहीं सुनता, इसलिए सम्राट् ने हर्षवर्द्धक उत्सव आरम्भ किए और अनेक मनुष्यों को उस काम में लगाया। मनुष्यों के हृदयों में विचारों के ले आने से इच्छाओं का क्षेत्र सत्य का प्रकाशागार बन गया और अहंकार और स्वार्थ ईश्वर की उपासना के साधन बन गए। बाह्य रूप और प्रत्यक्ष के पुजारियों को उत्साह और अनुराग के साधन प्राप्त हुए और सौभाग्य पथ के अनुगामी हुए।[1]

हिरण की लड़ाई

हिरण का रंग और चाल बड़ी मनमोहक होती है और उसकी भाग दौड़ लोगों को हर्ष प्रदान करती है। इस कारण बादशाह इस पशु पर बहुत ध्यान देते हैं और मीरु उस वन्य पशु को प्रेम करना सिखाया है। खासा में १०१ हिरण हैं और प्रत्येक के अलग-अलग नाम और गुण हैं। हर दस को एक निरीक्षक के सुपुर्द करते हैं। लड़ाकू हिरण तीन से अधिक प्रकार के नहीं होते : पहले, वे जो पालतू और जंगली दोनों हिरणों से लड़ते हैं; दूसरे, केवल पाले हुए हिरणों से लड़ते हैं; और तीसरे, जो जंगली हिरणों पर भयानक आक्रमण करते हैं। इनकी लड़ाई भी तीन प्रकार की होती है : पहली, एक दूसरे से इस तरह, पहला हिरण दूसरे से और तीसरा चौथे से लड़ता है। इस तरह सबकी बारी आती है। जब दूसरी बारी प्रारम्भ होती है तब पहला तीसरे और दूसरा चौथे से लड़ता है। इस तरह सबकी बारी आती है। जो कोई हिरण भाग जाता है उसकी बारी अन्त में आती है। जब तीन बार भाग जाता है तो खासा से अलग कर दिया जाता है। इनमें बाजी भी लगती है। यह बाजी पाँच दाम से अधिक नहीं होती।

[1] दीन इलाही में सम्मिलित हुए।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरी, राजकुमारों के हिरणों के साथ। खासा के पाँच जोड़े एक दूसरे से लड़ते हैं, इसके बाद शिकार खासा के दो जोड़े, तत्पश्चात् खासा के पाँच जोड़े एक दूसरे से लड़ाई करते हैं। उसी समय शिकार खासा के दो जोड़े लड़ते हैं। इसके बाद खासा के पाँच हिरण और बड़े राजकुमार के पाँच हिरणों से लड़ते हैं। इसके बाद खासा के चौदह जोड़े आपस में लड़ते हैं और तब राजकुमार के उतने ही हिरणों से लड़ाई करते हैं जब तक राजकुमार के हिरणों की लड़ाई समाप्त नहीं हो जाती। तत्पश्चात् राजकुमारों के हिरण एक दूसरे से लड़ते हैं और इसके बाद खासा के हिरण लड़ते हैं। इन लड़ाइयों में एक मुहर से अधिक की बाजी नहीं लगाई जाती। तीसरी, अन्य लोगों के हिरणों के साथ।

सम्राट् ने अपने निकट के मित्रों में से ४२ को चुना है और हर दो का एक प्रतिद्वन्द्वी जोड़ा नियत किया है। इस प्रकार २१ जोड़े तैयार हो गए हैं। पहली जोड़ में जीतने वालों में से प्रत्येक को तीस-तीस हिरण दिए जाते हैं। इसके बाद एक-एक कम होते जाते हैं, यहाँ तक कि अन्तिम जोड़ों में विजय पाने वालों में से प्रत्येक को ग्यारह-ग्यारह हिरण देते हैं। हर जोड़ा को एक मल[1], एक भैंस, एक बैल, एक भेड़ा, एक बकरा और एक मुर्गा देते हैं। पुराने समय में बैल और बकरे की लड़ाइयों का पता बहुत कम चलता है। लड़ाई आरम्भ होने के पहले दो खासा हिरण सजा कर लाए जाते हैं और उपरोक्त विभिन्न जोड़ों के दो हिरणों से लड़ाए जाते हैं। पहले, मनसबदार के सामने लड़ाई होती है और इसके बाद सम्राट् के सामने। यदि दरबार आम होता है तो भी लड़ाई का तमाशा होता है यदि हिरण एक हजारी से ऊँचे मनसबदार का है। खासा हिरण पर ८ मुहर की बाजी लगती है और उपरोक्त जोड़ों में के हिरणों पर ५ मुहर यदि हिरण अटकल और ४ मुहर यदि अनीन है। चूंकि हिरण स्वास्थ्य में, शक्ति में और लड़ने में बराबर नहीं होते इसलिए लड़ाई लड़ाने वालों के लिए यह नियम है कि हर एक अपने चुने हुए हिरणों में से प्रत्येक को एक बार लड़ाई के मैदान में लावें। उनको अनीन कहते हैं। दूसरा व्यक्ति उसके बल का अनुमान करता है और अपने हिरण को उससे लड़ने के लिए लाता है। उसको अटकल कहते हैं। मलों की बाजी ५ मुहर; भैंसों और मुर्गों की ४ मुहर; बैलों, भेड़ों और बकरों की बाजी दो मुहर है। एक हजारी खासा हिरण पर ६ मुहर; अपने समकक्ष अमीर के अटकल हिरण पर ३¾ मुहर, अनीन पर ३ मुहर को बाजी लगा सकता है। इसी अनुपात से मलों, भैंसों और मुर्गों पर बाजी लगा सकता है, परन्तु बैलों, भेड़ों और बकरों पर वह केवल २ मुहर लगा सकता है। नौ सदी खासा हिरण पर ५० रुपया; अपने समकक्ष अमीर के अटकल हिरण पर ३०½ रुपया और अनीन पर २५ रुपया; मल पर ३½ मुहर; भैंसे और मुर्गे पर ३¼ मुहर; और दूसरे जानवरों पर १½ मुहर की बाजी लगा सकता है। आठ सदी खासा हिरण पर ४० रुपया; अपने समकक्ष अमीर के अटकल पर ३० रु०, अनीन पर २४ रु० और मल पर ३½ मुहर; भैंसे और मुर्गे पर २½ मुहर और दूसरे जानवरों पर पहले की भाँति अर्थात् १½ सात सदी खासे के हिरण पर ४४ रु० अपने समकक्ष के अटकल हिरण पर २७½ रु० और अनीनपर २२ रु० मल पर ३ मुहर और दूसरे पशुओं पर पहले की भाँति। छः सदी खासे के हिरण पर ४० रु०; अपने समकक्ष के अटकल पर २५ रु० और अनीन पर २० रु० और दूसरे पशुओं पर पहले की भाँति। पाचसदी खासे के हिरण पर ४ मुहर, अपने समकक्ष के अटकल हिरण पर २½ मुहर और अनीन पर २ मुहर, और शेष पर छः सदी की भांति। चार सदी खासे के हिरण पर ३४ रु० अपने समकक्ष के अटकल पर २१¼, अनीन पर १७ रु०, मल पर २¾ मुहर भैंसे और मुर्गे पर २ मुहर; बैल, मेढ़े और बकरे पर १ मुहर। तीन सदी खासे के हिरण पर ३० रु० अपने समकक्ष के अटकल पर १८¾ रु. अनीन पर १५ रु. मल पर २½ मुहरऔर शेष पर चार सदी की तरह। दो सदी खासे के हिरण पर २४ रु. समकक्ष के अटकल पर १५ रु., अनीन पर १२ रु., दूसरे पशुओं पर पहले के समान। एक सदी खासे के हिरण पर २

[1] द्वितीय ग्रन्थ के आईन ६ के अनुसार गुजराती पहलवान को मल कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुहर, समकक्ष के अटकल पर १½ मुहर, अनीन पर १ मुहर और शेष उपरोक्त की भाँति। चार बीस्ती (८० घोड़ों का मनसबदार) खासे के हिरण पर १६ रु., समकक्ष के अटकल पर १० रु., अनीन पर ८ रु., मल पर १७ रु., भैंसे और मुर्गे पर १½ मुहर, शेष पर उपरोक्त की भांति। तीन बीस्ती खासे के हिरण पर १४ रु. समकक्ष के अटकल पर ८¾ रु. अनीन पर ७ रु. और शेष उपरोक्त की भांति। दो बीस्ती खासे पर १२ रु. समकक्ष के अटकल पर ७½ रु. अनीन पर ६ रु., शेष पहले की भांति। बीस्ती खासे पर १० रु. समकक्ष के अटकल पर ६¼ रु. अनीन पर ५ रु. शेष, पहले की भांति। देहबाशी (दस सवारों का मनसबदार) खासे पर ८ रु. समकक्ष के अटकल पर ५ रु. अनीन पर ४ रु., शेष उपरोक्त की तरह। जो लोग मनसबदार नहीं है वे खासे के हिरण पर ४ रु. समकक्ष के अटकल पर २½ रु. अनीन पर २ रु. मल पर १५ रु. और शेष पर पहले की तरह बाजी लगा सकते हैं।

यदि विरोधी कम मनसब का है तो बाजी की वही रकम नियत की जाती है जो ऊँचे पद का प्रतिद्वन्द्वी अपने समकक्ष के अनीन पर लगा सकता है। जब अन्तिम जोड़ लड़ाई के लिए आती है तो लड़ाई हर जगह हिरणों की होती है। मलों की लड़ाई में जो कुछ एक दूसरे से पाते हैं उसका चौथाई विजयी मल को दे देते हैं। सम्राट् के उपहारों की कोई सीमा नहीं है।

नियम यह है कि जो व्यक्ति बाजी के पशु पालते हैं वे प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की चौदहवीं रात को एक-एक हिरण लड़ाई के लिए लाते हैं। इस विभाग का बितिक्ची आधे हिरणों को अनीन में और आधे को अटकल में दर्ज करता है। वह अटकल जानवरों के नाम कागज के टुकड़ों पर लिखता है और मोड़ कर बादशाह के सामने लाता है। बादशाह उनमें से एक को उठा लेते हैं। इस प्रकार जिस हिरण का नाम निकलता है वह अनीन से लड़ता है। चूंकि रात प्रकाशपूर्ण होती है इसलिए पशुओं की लड़ाई इसी रात को नियत की जाती है। इनके अतिरिक्त, दो प्रकार के हिरण और होते हैं—कोतल और नीम कोतल। प्रत्येक की संख्या निर्धारित है। जब खासा हिरणों में कमी होती है तो वह कमी कोतल से पूरी करते हैं और यदि कोतल में कमी होती है तो उसकी पूर्ति नीम कोतल से की जाती है। एक जोड़ा कोतल भी सदा लड़ाई के लिए लाते हैं और उनकी परीक्षा करते हैं। शिकारी सदैव जंगली हिरणों को लाते हैं और सम्राट् के दरबार में उनका मूल्य निर्धारित होता है। खूब मोटे हिरण का मूल्य २ मुहर, खूब दुबले का १ मुहर से १५ रु. तक, औसत दर्जे के मोटे का मूल्य १२ रु. औसत दर्जे के दुबले का मूल्य ८ रु. तृतीय श्रेणी के मोटे का ७ रु. दुबले का ५ रु. चौथी श्रेणी के मोटे का ४ रु. और दुबले का २½ रु. से २ रु. तक मूल्य है। इनकी रक्षा और भोजन के निम्नलिखित नियम हैं।

खासे के हिरण जो सम्राट् के सामने लड़ने के लिए चुने जाते हैं २ सेर दाना, ½ सेर उबाला हुआ आटा, ⅛ सेर घी, और घास के लिए ½ दाम पाते हैं। जो पशु सम्राट् के आखेटालय में पाले जाते हैं, कोतल, मिस्ल (जोड़ों) के लड़ने वालों को १¾ सेर दाना, तथा आटा और घी पहले की भाँति देते हैं। खासा, खानाजाद, शिकारीखासा, और कोतल में से प्रत्येक हिरण पर एक सेवक नियुक्त होता है। मिस्ल के लड़ने वाले हिरणों के लिए दो जानवरों पर एक निरीक्षक होता है। यदि अन्त में एक हिरण शेष रह जाता है तो उसके लिए अलग निरीक्षक नियुक्त कर देते हैं परन्तु उसके लिए घास का मूल्य नहीं देते। जो हिरण मोटा करने के लिए किसी रक्षक के सुपुर्द किया जाता है उसे १¾ सेर दाना और ½ दाम घास के लिए देते हैं। ऐसे हर चार पशुओं पर एक रक्षक नियुक्त किया जाता है परन्तु यदि वे खासा में भरती होने के योग्य होते हैं तो प्रति दो पशुओं के लिए एक रक्षक नियुक्त होता है। कुछ हिरणों को दूसरे नगरों में भेज देते हैं। वे १½ सेर दाना पाते हैं और प्रत्येक के लिए एक रक्षक होता है। नए पकड़े हुए हिरण के लिए सात दिन तक भोजन का कोई प्रबन्ध नहीं किया जाता। इसके बाद १५ दिन तक उन्हें ½ सेर दाना प्रति दिन देते हैं। तब वे १ सेर पाते हैं। जब १½ महीना बीत जाता है तब १½ सेर दाना देते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मृगागार में मनसबदार, अहदी और दूसरे सैनिक सेवक हैं। प्यादों का वेतन ४०० दाम से अधिक और ८० दाम से कम नहीं होता।

सम्राट् के मृगागार में १२,००० अच्छे हिरण हैं। वे विभिन्न वर्गों में विभक्त हैं और हर एक के लिए समुचित नियम बनाए गए हैं। हिरणियों से बच्चे उत्पन्न करने की व्यवस्था है और उनसे नए नए हिरण प्राप्त होते हैं। बड़ी हिरणी को १½ सेर दाना और ½ दाम घास के लिए मिलता है। नवजात मादा बच्चा दो महीने तक अपनी माँ का दूध पीता है। इसके बाद उसे ½ सेर दाना दिया जाता है और इस प्रकार हर दो महीने के बाद एक एक पाव बढ़ा देते हैं यहाँ तक कि दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में बच्चे का भोजन माँ के बराबर हो जाता है और सातवें महीने से दसवें महीने तक घास के लिए ¼ दाम देते हैं। नवजात नर बच्चा दो महीना माँ का दूध पीने के बाद १½ पाव दाना पाता है और हर दो महीने के बाद उतना ही दाना बढ़ा दिया जाता है यहाँ तक कि दूसरे वर्ष के आरम्भ में वह २½ सेर दाना पाता है। पाँच महीने से आठ महीने तक घास के लिए ¼ दाम दिया जाता है और इसके बाद ½ दाम।

लेखक ने पशुओं की लड़ाई का संक्षिप्त वर्णन किया है। सम्राट् दिन को भी इसी प्रकार मृग युद्ध में लोगों को एकत्र करते हैं। किन्तु जब इससे अधिक महत्वपूर्ण उपासना करनी होती है तो उत्सव रात में होते हैं। अन्यथा सम्राट् ईश्वर-चिन्तन करते हैं और आत्म-निरीक्षण में प्रकाश की खोज करते हैं। इन कामों को पूरा करने में वह गर्मी और सर्दी का विचार नहीं करते और जिस समय लोग आराम करते हैं उस समय वह लोगों के कल्याण में व्यस्त रहते हैं और परिश्रम को विश्राम की अपेक्षा अधिक पसन्द करते हैं।

आईन ८५

भवन-निर्माण

इस आईन से महल बुलन्द किए जाते हैं, सेना सुख प्राप्त करती है और साम्राज्य का वैभव प्रकट होता है। जो लोग संसार में अनुरक्त हैं वे नगरों में एकत्र होते हैं जिनके बिना देश की प्रगति नहीं हो सकती। इसी से बादशाह बड़ी-बड़ी इमारतें बना कर हृदय और मस्तिष्क के विचारों को पानी और मिट्टी का वस्त्र पहनाते हैं। इस प्रकार बड़े-बड़े दुर्ग बनवायें गए हैं। जिनसे भीरु हृदयों को रक्षा विद्रोहियों को भय और आज्ञाकारियों को हर्ष प्राप्त होता है। सम्राट् ने मनोमोहक भवनों और हर्षवर्द्धक दृश्यों को तैयार कराया है जो गर्मी, सर्दी और वर्षा से रक्षा करते हैं और अन्तः पुर की राजकुमारियों को इससे सुख मिलता है। इसके अतिरिक्त, उन भवनों से उस महत्ता और वैभव का पता लगता है तो सांसारिक शान बनाये रखने के लिए बहुत आवश्यक है।

निर्धन यात्रियों के सुख के लिए स्थान-स्थान पर सरायें बनवाई गई हैं। बहुत से तालाब और कुएँ खोदे गए हैं जिनसे प्रजा का लाभ और जमीन की सिंचाई होती है। पाठशालायें और उपासनागृह बनवाए गए हैं और विद्या की मेहराब भली भाँति सजाई गई है।

बुद्धिमान सम्राट् ने इस विभाग के विभिन्न कार्यों की जिनका पूरा करना बहुत कठिन था और जिसमें बहुत अधिक व्यय की आवश्यकता थी जाँच करवाई। सम्राट् ने अच्छे-अच्छे कानून बनाए। सच्चाई के दीपक को प्रकाशित किया और

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सरल प्रकृति अनुभव हीनों को ज्ञान का साधन प्राप्त हुआ।[1]

आईन ८६

मकानी मालों के मूल्य

बहुत से लोग मकान बनाने के इच्छुक हैं परन्तु लोगों में, विशेष कर व्यापारियों में, सच्चाई और ईमानदारी बहुत कम पाई जाती है। सम्राट् ने बहुत सावधानी के साथ उनके लाभ और हानि की जाँच पड़ताल की है और वस्तुओं का मूल्य इस प्रकार निर्धारित किया है कि दोनों पक्षों को लाभ रहे।

लाल पत्थर—का मूल्य ३ दाम प्रतिमन है। वह राजधानी फतेहपुर सिकरी की पहाड़ियों में मिलता है और चट्टानों में से अभीष्ट लम्बाई और चौड़ाई का काटा जा सकता है। चतुर कारीगर उसको छेनी से ऐसी सफाई से काटते हैं जैसी सफाई से कोई बढ़ई लकड़ी भी नहीं काट सकता और उनके काम मानी (ससन राजवंश का एक महान चित्रकार) की चित्रावली की समता करते हैं।

संगे गुलूला—(लाल पत्थर के टुकड़े) जो भिन्न-भिन्न आकारों में चट्टानों से काटे जाते हैं फरी में बेचे जाते हैं जिसका अर्थ है पत्थरों की ढेर, जिसमें मिट्टी न मिली हो, ३ गज लम्बी २½ गज़ चौड़ी और १ गज़ ऊँची। ऐसी ढेर में १७२ मन पत्थर होता है और प्रति मन १ दाम ११¾ जीतल के भाव से उसका मूल्य २५० दाम होता है।

खिश्त[2]—(ईंट) तीन प्रकार की होती है—पक्की, अधपकी और कच्ची। यद्यपि पहले प्रकार की ईंट बहुत भारी बनाई जाती है तथापि अधिकांश ३ सेर की होती है और प्रति हजार ३० दाम मूल्य होता है। दूसरे प्रकार की ईंट २४ दाम और तीसरी १०½ दाम प्रति हजार।

लकड़ी—साधारणतया आठ प्रकार की लकड़ी काम में लाई जाती है।

१. सीसों—सुन्दरता और मजबूती में अद्वितीय होता है। १. इलाही गज़ लम्बे, सात-आठ तस्सूज चौड़े और ऊँचे लट्ठे का मूल्य १५ दाम ६ जीतल है। यदि ऊचाई ५ या ६ तस्सूज होती है तो मूल्य ११ दाम १०¾ जीतल होता है। इसी अनुपात से दूसरे आकार के लट्ठों का मूल्य है। २. नाजू - हिन्दी में चीड़ कहते हैं। १० तस्सूज चौड़े और ऊँचे लट्ठे का मूल्य प्रतिगज़ ५ दाम १३¾ जीतल है। आधा लट्ठा जिसकी चौड़ाई और ऊचाई ७ से ६ तस्सूज होती है प्रतिगज़ ५ दाम ३¾ जीतल के भाव से बिकता है। ३. दसंग—जिसको हिन्दी में कड़ी कहते हैं, ३ तस्सूज चौड़े और ४ गज़ लम्बे लट्ठे का मूल्ल ५ दाम १७½ जीतल है। ४. बेर—१ तस्सूज चौड़े और ऊँचे तथा ४ गज लम्बे का मूल्य ५ दाम १७¾ जीतल; तूत का भी यही मूल्य है। ५. बबूल—नं० ४ की लम्बाई और चौड़ाई वाले लट्ठे का मूल्य ५ दाम २ जीतल। ६. सिर्स—उपरोक्त चौड़ाई और ऊचाई के लट्ठे का मूल्य १० दाम ४ तस्सूज। ७. दयाल—उपरोक्त आकार की प्रथम कोटि का मूल्य ८ दाम २२¾ जीतल; द्वितीय कोटि, ८ दाम ६½ जीतल। ८. बकाइन—उपरोक्त आकार, ५ दाम २ जीतल।

---

[1] ब्लाकमैन ने इसका अर्थ इस प्रकार किया है "व्यावहारिक ज्ञान का भंडार सरल तथा अनुभव-हीन लोगों के हाथ में रख दिया।" 'सरमाया' का अर्थ 'साधन' तथा 'पूँजी या भंडार' दोनों होता है। 'शिनाशाई' का अर्थ उन्होंने 'व्यावहारिक ज्ञान' लगाया है। [2] आधुनिक फारसी में इसका अर्थ होता है सुखाई हुई कच्ची ईंट। पक्की ईंटको आजुर कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गजे शीरीन—बहीरा के निकट इसकी खान है। यदि व्यापारी उसको लाते हैं तो एक रुपये का तीन मन खरीदा जाता है। यदि कोई स्वयं अपने ढोने वाले भेजता है तो १ मन का १ दाम होता है। कलई संगीन—प्रति-मन ७ दाम ५ जीतल। सदफी ५ दाम। चूना --२ दाम प्रतिमन जो अधिकतर कंकड़ जलाकर बनाते हैं। कंकड़ एक प्रकार की कड़ी मिट्टी है जो कठोरता में पत्थर के समान होती है।

आहन जामा (दीवार पुष्ट करने का झुका हुआ लोहे का छड़)—कलई किये १३ जामों का मूल्य १८ दाम और सादे का ६ दाम।

हल्कये जजीरे दरवाज़ा—ईरानी और तूरानी कलईदार, बड़े प्रति जोड़ ८ दाम; छोटे, ४ दाम। हिन्दुस्तानी कलईदार ५½ दाम और सादे, ४ दाम १२ जीतल। गुलमेख (बड़ा कीला जिसका माथा चौड़ा होता है) १२ दाम प्रतिसेर। दीनारीं कीलें ५ दाम प्रति सेर। गोगा (छोटी कीलें) कलईदार प्रथम कोटि सौ का मूल्य ७ दाम; द्वितीय कोटि ५ दाम और सबसे छोटी, ४ दाम।

नर व मादगी (पेच और ढेबरी)—दरवाजों और सन्दूकों में काम आती हैं। कलईदार, १२ दाम प्रतिसेर; सादा, ८ दाम।

हल्के (छल्ले)—कलईदार, ६ दाम प्रतिसेर और सादा, ४ दाम।

खपरेल—मिट्टी से बनाते हैं; एक हाथ लम्बा और दस अंगुल चौड़ा; आग में पकाते हैं; उससे घर छाते हैं; वह गर्मी-सर्दी से बचाता है। सादा का मूल्य ८६ दाम प्रति हजार और रंगीन, १० का मूल्य ३० दाम।

कुल्बा—पानी बहाने के लिए; २ दाम के तीन।

बाँस—बाँसुरी और नेज़ा (बर्छी) बनाने के काम आता है। प्रथम कोटि, बीस का मूल्य १५ दाम; द्वितीय कोटि, १२ दाम; तृतीय, १० दाम। कुछ बांसों का मूल्य बहुत अधिक होता है, यहाँ तक कि १ बांस को ८ अशर्फी में खरीदते हैं। सिंहासन[1] बनाने के काम आता है। साधारणतया १ रुपये का १ बांस मिलता है। पतल (चटाई)—नरकुल या सरकंडे से बनती है। नरकुल से कलम बनाते हैं। यह छाने के काम आती है। प्रथम कोटि, साफ की हुई, १½ दाम प्रति वर्ग गज; द्वितीय, १ दाम। कभी-कभी २ गज़ लम्बी और डेढ़ गज़ चौड़ी चटाई को २ दाम पर बेंचते हैं। सिरकी—सरकंडे से बनाते हैं जिससे बढ़िया कलम बनता है। यह देखने में अच्छा और साफ होता है। १½ गज लम्बी और १६ गिरह चौड़ी सिरकी के जोड़ का मूल्य १½ दाम है। इससे छत और घर सजाते हैं।

खस—एक सुगन्धित घास की जड़ है जो नदी के किनारे पैदा होती है। गर्मी के दिनों में उससे टट्टियां बनाते हैं जिसको दरवाजों के सामने रखते हैं और पानी छिड़कते हैं। इससे हवा ठंडी और सुगन्धित हो जाती है। १ मन का मूल्य १½ रुपया है।

काहे छप्पर (छाने की घास)—बांधकर बेचते हैं जिसको हिन्दी में पूला कहते हैं। इसका वजन १ सेर होता है और मूल्य १०० से १० दाम।

भुस (भूसा)—गेहूँ की नरई का चूरा है; गारा में मिलाते हैं। ३ दाम प्रति मन।

काहे दाभ—छत के ऊपर डालते हैं। २ मन बोझ का मूल्य ४ दाम।

---

[1]मूल पाठ में बस्कासन छपा है और फिलाट ने टिप्पणी में सकासन छापा है। देखिए पृष्ठ २३४ 'सकासन' 'सिंहासन' का विकृत रूप प्रतीत होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मूंज—सरकंडे की छाल है। इससे रस्सियां बटी जाती हैं और छप्पर बांधने के काम में आता है। १ मन का मूल्य २० दाम।

सन—एक पौधा है। किसान उसे काम में लाते हैं और चूना में मिलाते हैं। इससे डोल की रस्सियां बनाते हैं। इसके अतिरिक्त और चीजें बनाते हैं। मूल्य प्रति मन ३ दाम।

समग जुबून (खराब किस्म की गोंद)—चूने में मिलाई जाती है। प्रति मन ७० दाम।

सिरीशे काही—गजेशीरीन में मिलाते हैं। प्रति सेर ४ दाम।

लुक—सरकंडे के फूल का गुच्छा जिससे चटाई बनाते हैं। यदि लोग जलाते है तो चिराग की तरह प्रकाश देता है। इसे चूने और कलई में मिलाते हैं। १ मन का मूल्य १ रुपया।

सीमगिल—सफेद और चिकनी मिट्टी है; १ मन का मूल्य १ दाम। मकानों को उससे पोतते हैं। यह मकान को ठंडा और सुन्दर बनाता है। गिले सुर्ख जिसे हिन्दी में गेरू कहते हैं। ४० दाम प्रतिमन। ग्वालियर की पहाड़ियों में इसकी खान है।

शीशा—खिड़कियों में इस्तेमाल होता है। १½ सेर का दाम १ रुपया या १ टुकड़े का मूल्य ४ दाम।

आईन ८७

मजदूरी

गिल्कार (चुनाई या मिट्टी की दीवार बनाने वाला)—प्रथम श्रेणी ७ दाम; द्वितीय श्रेणी ६ दाम; तृतीय श्रेणी ५ दाम; और चतुर्थ ४ दाम।

संगतराश (पथरकट)—नक्काश १ गज का ६ दाम; सादा काम करने वाला ५ दाम।

संगबर (पत्थर तोड़ने वाला)—प्रतिमन २२ जीतल।

बढ़ई—प्रथम श्रेणी ७ दाम; द्वितीय श्रेणी ६ दाम; तृतीय श्रेणी ४ दाम, चतुर्थ श्रेणी ३ दाम; पंचम श्रेणी २ दाम।

सादा काम करने वाला बढ़ई—प्रथम श्रेणी, १ गज के लिए १ दाम १७ जीतल; द्वितीय श्रेणी १ गज के लिए १ दाम ६ जीतल और तृतीय श्रेणी २१ जीतल।

पिंजड़ा साज बसली—जब लकड़ियों को रस्सी से बांधते हैं और बीच-बीच के सूराख १२ भुजाओं वाले होते हैं तब एक वर्ग गज के लिए २४ दाम दिए जाते हैं और जब सूराखों में बारह वृत्त बनते हैं तब २२ दाम; जब सूराखों में ६ भुजायें होती हैं तब १८ दाम; जब समबाहु चतुर्भुजाकार सूराख बनाते हैं तब १६ दाम और जब वर्गाकार सूराख बनाते हैं तब १२ दाम प्रति वर्ग गज दिया जाता है।

पिंजड़ा साज गैर बसली—(जिसमें लकड़ियां रस्सी से नहीं बांधी जातीं बल्कि आपस में बुन दी जाती हैं)। प्रथम श्रेणी के काम के लिए प्रति वर्ग गज ४८ दाम और द्वितीय श्रेणी के काम के लिए ४० दाम।

आराकश—सीसों की लकड़ी चीरने के लिए प्रति वर्गगज २½ दाम और नाजू के लिए २ दाम, दिन भर के मजदूर को २ दाम। हर आरे के लिए तीन आदमी होते हैं—एक ऊपर और दो नीचे और दो भी काफी होते हैं।

बेलदार—प्रथम श्रेणी प्रतिदिन ३½ दाम; द्वितीय श्रेणी ३ दाम। जो बेलदार किले के कंगूरे बनाने के लिए नियुक्त किए जाते हैं उन्हें एक गज के लिए ४ दाम दिए जाते हैं; नींव डालने के लिए १ गज के लिए २½

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दाम; और दूसरी दीवारों के लिए २ दाम। खाईं खोदने के लिए प्रतिगज ½ दाम। बेलदार का गज़ ३२ तस्सूज का होता है।

चाहकन (कुंआ खोदने वाले)—प्रथम श्रेणी प्रतिगज २ दाम; द्वितीय श्रेणी १½ दाम और तृतीय श्रेणी १¼ दाम।

गोताखोर—कुंये से मिट्टी निकालते हैं। जाड़े में प्रतिदिन ४ दाम और गर्मी में ३ दाम। यदि काम ठेके पर दिया जाता है तब १ गज गहरी मिट्टी निकालने के लिए २ रु० देते हैं।

खिश्त तराश (ईंटे बनाने वाले)—१०० ईंटों को बनाने के लिए ८ दाम लेता है।

सुर्खी कोब (ईंटों की सुर्खी बनाने वाले)—८ मन के लिए १½ दाम।

ताबदान तराश (शीशा काटने वाले)—प्रतिगज १०० दाम।

बाँस तराश—प्रति दिन २ दाम।

छप्पर-बंद—प्रति दिन ३ दाम। यदि ठेके पर काम करता है तो १०० गज के लिए २४ दाम पाता है।

पाटल बन्द—चार गज के लिए १ दाम।

लखीरा—यह लोग लकड़ी को लाह से रंगते हैं; प्रति दिन २ दाम।

आबकश—प्रथम श्रेणी प्रति दिन ३ दाम और द्वितीय श्रेणी दो दाम। जो मिट्टी और चूने का गारा बनाने के लिए पानी पहुंचाते हैं वे २ दाम प्रतिदिन पाते हैं।

आईन ८८

मकानी मालों का अनुमान

पत्थर की इमारत—१२ गज में एक फरी और ७५ मन चूना खर्च होता है। यदि दीवारों पर लाल पत्थर चढ़ाते हैं तो प्रतिगज ३० मन चूना लगता है।

ईटों की इमारत—प्रतिगज ३ सेर की २५० ईंटें, ८ मन चूना और २ मन २७ सेर सुर्खी खर्च होती है।

मिट्टी की इमारत—प्रतिगज ३०० कच्ची ईंट लगती हैं; १ ईंटें के लिए १ सेर मिट्टी और ½ सेर पानी खर्च होता है।

अस्तरकारी—प्रतिगज १ मन चूना, १० सेर कलई, १४ सेर सुर्खी और पाव भर सन खर्च होता है।

सन्दलाकारी—प्रतिगज ७ सेर कलई और ३ सेर सुर्खी खर्च होती है।

सफेदकारी—प्रतिगज १० सेर कलई।

गजकारी—दीवार और छत में प्रतिगज १० सेर; भण्डार घर के लिए ६ सेर और पाकालय में १० सेर।

खिड़कियों—में २४ सेर चूना, २½ सेर शीशा और ¾ सेर काही सिरीश। दीवार के बाहर मिट्टी का पलस्तर—१४ गज के लिए १ मन घास और २० मन मिट्टी; कोठों और आंगन की फर्श में १० गज में उतना ही लगता है। छत और दीवारों के भीतरी भागों में १५ गज में उतना ही लगता है।

लाह—चिक के लिए। यदि चिक लाल होती है तो प्रतिगज ४ सेर लाह और १ सेर सेंदुर और यदि पीली होती है तो सेंदुर के स्थान में हड़ताल; यदि हरी, तो ¾ सेर नील, लाह और हड़ताल में मिला देते हैं और यदि काली होती है तो ४ सेर लाह और १ सेर नील खर्च होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ८९

काटने में लकड़ी नष्ट होने का अनुमान

१ गज = २४ तस्सुज; १ तस्सुज = २४ तिसवांसा; १ तिसवांसा = २४ खाम; १ खाम = २४ जर्रा।

जितनी लकड़ी खर्च होती है उसका $\frac{1}{2}$ भाग छीलन समझा जाता है। सीसों में १ तस्सुज में २६$\frac{1}{4}$ सेर १५ टाँक; बबूल में २३$\frac{1}{2}$ सेर ५ दाम; सिर्स में २७$\frac{1}{2}$ सेर १५ टाँक, नाजू में २० सेर बेर में १८$\frac{1}{2}$ सेर, और दयाल में १७ सेर २० टाँक।

आईन ९०

विभिन्न प्रकार की लकड़ियों की तौल

गुणज्ञ तथा बुद्धिमान सम्राट् ने इसकी कसौटी निर्धारित की और दुनिया के चारों तरफ बाजार गर्म हुआ। हर प्रकार को सूखी लकड़ी का १ घन गज टुकड़ा अलग अलग तराजू पर तौला गया और उनका अन्तर मालूम किया गया। सबसे भारी लकड़ी खञ्जक और सबसे हल्की सफीदार होती है। बहत्तर प्रकार की एक घन गज लकड़ी का वजन, जो काम में आती है, निम्नलिखित है :

नाम	वजन मन	वजन सेर	वजन टाँक
१. खंजक	२५	१४	—
२. अम्बली (इमली)	२४	८$\frac{3}{4}$	२५
३. जैतून } ४. बलूत	२१	२४	—
५. खैर } ६. खिरनी	२१	१६	—
७. परसिद्ध	२०	१४	१७
८. आबनूस	२०	९	२०
९. सैन	१९	३२	—
१०. बकाम	१९	२१$\frac{1}{2}$	१०
११. खरहर	१९	११$\frac{1}{4}$	२५
१२. महुवा	१८	३२$\frac{1}{2}$	२
१३. चन्दनी } १४. फुलाही	१८	२०$\frac{1}{2}$	१०
१५. लाल चन्दन जिसे हिन्दी में रक्त चन्दन कहते हैं	१८	४$\frac{1}{2}$	१०
१६. चमरी	१८	२	७$\frac{1}{2}$
१७. चमर ममरी	१७	१६$\frac{1}{4}$	—
१८. उन्नाब	१७	५	४
१९. सीसों पतंग	१७	१$\frac{3}{4}$	२७
२०. साँदन	१७	१	२८
२१. शमशाद	१६	१८	२५
२२. धौ	१६	१	१०
२३. आम्ला जिसे हिन्दी में आँवला कहते हैं	१६	१$\frac{1}{2}$	१
२४. करील	१६	१	१०
२५. सन्दल (चन्दन)	१५	१७	२०
२६. साल	१५	४$\frac{3}{4}$	७
२७. बनौस (जिसे बादशाह शाह आलू कहते हैं परन्तु विलायत की भाषा में			

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम	वजन मन	वजन सेर	टाँक
उसे आलू बालू कहते हैं	१४	३६½	१०
२८. कैलास (गिलास)	१४	३५½	—
२९. नींब (नीम)	१४	३२¼	३१
३०. दारहद	१४	३२¼	१९
३१. मैन } ३२. बबूल	१४	२२¾	—
३३. सागौन	१४	१०	२०
३४. बिजैसार } ३५. पीलू	१३	३४	—
३६. तूत	१३	२८½	१५
३७. धामन	१३	२५	२०
३८. बान बरास	१३	१० सेर में २९ टाँक कम	
३९. सिर्स	१२	३८	२१
४०. सीसों	१२	३४¼	५
४१. फिन्दुक	१२	२६	४
४२. छौकर } ४३. दुद्धी	१२	१७½	२२
४४. हल्दी	१२	१३½	३०
४५. कैम	१२	१२½	३०
४६. जामन } ४७. फरास	१२	८	२०
४८. बर	१२	३¼	२५
४९. खन्दू } ५०. चनार	११	२९	—
५१. चारमग्ज (अखरोट) } ५२. चम्पा	११	९¼	१७
५३. बेर	११	४	—
५४. आँव (आम) } ५५. पापरी	११	२	२०
५६. दियार } ५७. बेद	१०	२०	—
५८. कुंभी } ५९. चीड़	१०	१९½	२२
६०. पीपल (ब्राह्मण इस पेड़ की पूजा करते हैं)	१०	१०¾	२१
६१. कटहल } ६२. गुरदैन	१०	७½	३४
६३. रुहेरा	१०	७	३०
६४. पलास	९	३४	—
६५. मुर्खबंद	८	२५	२०
६६. आक	८	१९¼	२५
६७. सेंबल (सेमर)	८	१३	३४
६८. बकाइन	८	९	३०
६९. लसोड़ा } ७०. पदमाख	८	९	२०
७१. अन्द	७	७	३१
७२. सफीदार	६	७ में २२½ टाँक कम	

उपरोक्त वजनों में १ सेर २८ दाम का समझा गया है।

प्रथम ग्रन्थ समाप्त

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्वितीय ग्रन्थ

सेना

आईन १

सेना के भाग

सम्राट् अपनी सुन्दर सम्मति तथा परामर्श से राजकीय सेना का पथ-प्रदर्शन करते हैं और विभिन्न प्रकार से अनशाकारिता की उत्पत्ति को रोकते हैं सेना के आधिक्य के कारण उन्होंने उसको कई भागों में विभक्त करके देश में शान्ति स्थापित कर दी है।

कुछ जन जातियों के आत्म-समर्पण से सम्राट् सन्तुष्ट हो जाते हैं, वह उनसे बहुत अधिक सेवा नहीं लेते। इस प्रकार वह अनेक वन्य जन-जातियों को सभ्यता के मार्ग पर ले आते हैं।

देश के जमीनदारों की सेना की संख्या चौवालीस लाख से कुछ अधिक है, जैसा बाद में (तृतीय ग्रन्थ) में वर्णन किया जायगा।

सेना के कुछ रिसालों के घोड़ों पर शाही दाग लगाए गए। उनको विभिन्न श्रेणियों में विभक्त किया गया और उनका निरीक्षण (चेहरा नवीसी) किया जाने लगा।

सैनिकों का एक समूह एक ही अधिकारी की अधीनता तथा आज्ञाकारिता में रखा गया। चूंकि यह समूह मेल और सामंजस्य के लिए बहुत उचित है; इसलिए इसके सदस्यों को 'अहदी' नाम से अभिहित किया गया। सम्राट् कुछ लोगों में नेतृत्व की योग्यता देख कर उन्हें अधिकारी नियुक्त करते हैं।

अगणित व्यक्ति सैनिक सेवा की अर्हता रखते हैं किन्तु दरिद्रता के कारण अपने कर्तव्यों की पूर्ति नहीं कर सकते थे। सम्राट् ने इनकी सवारी के व्यय की व्यवस्था की और उन्हें भूमि प्रदान की। इसके अतिरिक्त, ये सवार घोड़ों पर शाही दाम लगाने से मुक्त किए गए। तूरानियों और ईरानियों को २५ रुपए दिए जाते हैं और हिन्दुस्तानियों को २० रुपए। यदि ये माल गुजारी वसूल करने के लिए नियुक्त होते हैं तो इनको १५ रुपए वेतन मिलता है और इनको 'बर आवर्दी' कहते हैं।

कुछ अधिकारियों के लिए सैनिकों का एकत्रीकरण कष्टसाध्य कार्य था। उनको कुछ ऐसे सैनिक दिए जाते हैं जो शाही दाग को स्वीकार करते हैं। इन सैनिकों को दाखिली के नाम से अभिहित किया जाता है।

दस हजारी अमीरों की अधीनता में एक हजारी तक, आठ हजारी की अधीनता में आठ सदी तक, सात हजारी की अधीनता में सात सदी तक, पाच हजारी की अधीनता में पांच सदी तक और पांच सदी की अधीनता में एक सदी तक सेवा करने के लिए नियुक्त किये जाते हैं। उपरोक्त अमीरों से कम पद वाले मनसबदार उच्च अमीर नहीं समझे जाते।

कुछ मनसबदारों को सहायक सैनिक प्रदान किए जाते हैं। इन सवारों को 'कुमकी' कहते हैं।

आजकल जो सैनिक राजकीय दाग लगे हुए घोड़ों पर सवार होते हैं उनका अधिक सम्मान होता है और वे वरिष्ठ माने जाते हैं। साम्राट् का मुख्य उद्देश्य यह है कि सैनिक (निरीक्षण के समय) घोड़ों को दूसरों से उधार न ले सकें, उनको दूसरे निकृष्ट घोड़ों से बदल न सकें और उनकी यथेष्ठ सेवा तथा पालन करें, क्योंकि वह जानते हैं कि लोभ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनुष्य को इतना अन्धा बना देता है कि वह हानि को लाभ समझने लगता है। वर्तमान शासन के प्रारम्भ में जब सम्राट् "पर्दे के पीछे" थे, अनेक राजकीय कर्मचारी भ्रष्टाचार करते थे। उनके ऊपर कोई नियंत्रण नहीं था और आत्म-सम्मान के अभाव के कारण वे चरित्र भ्रष्ट हो जाते थे। नीच लोभी लोग अपने घोड़े बेंच देते थे और प्यादों की भाँति सेवा करके सन्तुष्ट रहते थे अथवा उत्तम घोड़े के बदले में टट्टू खरीद कर लाते थे जो देखने में खच्चर मालूम होता था और सवारों में सम्मिलित हो जाते थे। यह लोग बहुत अस्वामिभक्त थे तथा मासिक वेतन प्राप्त करने के लिए बहुत झूठ बोलते थे। कभी कभी बात इतनी बढ़ जाती थी कि यह लोग खुल कर अपना असन्तोष प्रकट करते थे या विद्रोह कर बैठते थे। अतएव सम्राट् ने आईन चेहरा नवीसी[1] प्रचलित किया और इस आईन के आधार पर वेतन दिए जाने लगे। इस अधिनियम ने अल्पकाल में स्वेच्छाचारिता बन्द कर दी और सैन्य विभाग में व्यवस्था उत्पन्न कर दी। परन्तु उस समय घोड़ों पर शाही दाग लगाने का अधिनियम नहीं जारी किया गया था क्योंकि सम्राट् ने कुछ अनुभवहीन व्यक्तियों का परामर्श स्वीकार कर लिया था जो पशुओं पर दाग लगाना निष्ठुरता समझते थे। नियम है कि लोभी लोग अच्छाई और बुराई में अन्तर नहीं समझ सकते। उनमें न तो आत्मसम्मान होता है और न स्वामिसम्मान तथा स्वामिभक्ति। इस प्रकार के मनुष्य स्वार्थ को ध्यान में रखकर प्रत्येक अशुभ काम को इस प्रकार करते हैं कि अन्त में स्वयं उन्हीं का अहित हो जाता है। इसी कारण लोभी मनुष्यों ने भ्रष्टाचारिता का आश्रय ग्रहण किया जिसके परिणामस्वरूप सेना में कार्यक्षमता का पर्याप्त अभाव हो गया। घोड़ों का उधार लेना सैनिकों का सामान्य कार्य हो गया। यह दशा देखकर सम्राट् ने चेहरा नवीसी के अतिरिक्त दाग लगाने का अधिनियम भी प्रचलित किया। अल्पबुद्धि तथा पथभ्रष्ट लोगों को सत्य का मार्ग मिला और इस प्रकार यह लोग परिणामदर्शी योग्य नागरिक बने। दुराग्रही नीचों को आत्मसम्मान और मानवता की शिक्षा मिली। भावहीन लोभी लोग उदार हृदय हो गये। सेना में सुव्यवस्था स्थापित हो गई। नए अधिनियम राजकीय कोष के लिए भी उपादेय सिद्ध हुए। ये हैं वे परिणाम जो बुद्धि तथा व्यावहारिक ज्ञान से उत्पन्न किए जा सकते हैं। घोड़ों को दागना स्पष्टतया उनको दुःखद ज्ञात होता है किन्तु उच्चतर दृष्टिबिन्दु से उसके लाभों पर विचार करने से बुद्धिमान् मनुष्यों को बहुत शान्ति तथा सन्तोष प्राप्त होता है।

आईन २

सेना के पशु

अपने शासन के अठारहवें वर्ष में सम्राट् ने दाग लगाने की प्रथा प्रचलित की। मनुष्यों के पदों का यथेष्ट रूप से निर्धारण हुआ और सैन्य विभाग के पशुओं का वर्गीकरण किया गया। प्रत्येक पशु की आवश्यकताओं की सूची तैयार की गई और वरिष्ठ अधिनियम प्रचलित हुए। सम्राट् ने प्रत्येक वस्तु के अधिकतम तथा न्यूनतम मूल्यों की पूछताछ करके उनके आधार पर औसत मूल्य निर्धारित किया। लेखा जोखा का समुचित निरीक्षण आरम्भ हुआ और इस विषय के समुचित अधिनियमों का निर्माण हुआ। सेना के बख्शी लोग नए मनुष्यों के लाने के भारी दायित्व से मुक्त हो गए और प्रत्येक कार्य सुचारू रूप से चलने लगा।

१. अश्व : घोड़े सात श्रेणियों में विभक्त किए गए हैं और उनका दैनिक भोजन भी नियत कर दिया गया है। ये सात प्रकार हैं : अरबी, ईराकी, मुजन्नस, तुर्की, याबू, ताजी और जंगला।

---

[1]. ब्लाकमैन ने इसका अनुवाद 'विवरणात्मक नामावली प्रणाली' किया है; दे० आईन ७।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पहली श्रेणी अरबी घोड़ों की या उन घोड़ों की है जो चाल तथा सौंदर्य में उनके सदृश हैं। उनके व्यय के लिए ७२० दाम प्रतिमास नियत हैं। उनको प्रति दिन छः सेर दाना प्रत्येक पशु की बर आउर्द (अनुमानित व्यय में दाने का मूल्य प्रतिमन बारह दाम लिखा जाता है, २½ दाम घी के लिए, २ दाम शक्कर के लिए और ३ दाम घास के लिए दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, जुल, अरतक, अयालपोश, तंग (जिसे सम्राट् फरखी कहते हैं), गद्दी, नख्तावन्द, कैजा (जिसे साधारण लोग काइजा कहते हैं), मगस्सान, खरखरा, हत्थी (घोड़े को धोने के लिए घोड़े के बालों का एक थैला), तौलिया, पायबन्द, और नाल आदि के लिए सत्तर दाम मासिक स्वीकृत है। व्यय के इस द्रव्य को 'खर्जे यराकये अस्प' (घोड़े के जीन का व्यय) कहते हैं। ६० दाम प्रति दो मास जीन और अप्‌ची (?) के लिए, ७ दाम प्रति मास नाल के लिए, ६३ दाम प्रति दाम साईस के लिए नियत हैं। यदि कोई साईस दो घोड़ों की सेवा करता है तो उसे दो गुना वेतन दिया जाता है। कुल व्यय का योग ४७९ दाम होता है। किन्तु चूँकि सम्राट् सेना के सुख का ध्यान रखते हैं और सैनिकों की सन्तोषजनक स्थिति की पूछ ताछ करते हैं उन्होंने आरम्भ में ही ४७९ दाम के व्यय में ८१ दाम की वृद्धि कर दी और जब रुपए का मूल्य ३५ दाम से बढ़ा कर ४० दाम कर दिया गया तब सम्राट् ने ८० दाम की अतिरिक्त वृद्धि कर दी। रुपया वेतन में सदैव ४० दाम का समझा जाता है। इसके पश्चात् जंगला के सिवाय अन्य घोड़ों की प्रत्येक श्रेणी के लिए २ रुपए (८० दाम) का तृतीय अतिरिक्त भत्ता देने की आज्ञा हुई। आजकल जंगला घोड़ों के हिसाब-किताब का उल्लेख नहीं होता।

दूसरी श्रेणी के घोड़े ईराके अजम से आते हैं या आकार और चाल में ईराकी घोड़ों के सदृश होते हैं। इनका मासिक व्यय ६८० दाम है। इस द्रव्य में ४५८ दाम आवश्यक व्यय के हैं जो अरबी घोड़े के व्यय से २१ दाम कम है अर्थात् १० दाम की कमी यराक में है, दस दाम जीन और लगाम में और एक दाम की कमी नालबन्दी में होती है। पहली वृद्धि ६७ दाम की, दूसरी ७५ दाम की और तीसरी ८० दाम की स्वीकृत हुई थी।

तीसरी श्रेणी मुजन्नस हैं। ये पशु आकार तथा चाल में ईराकी घोड़ों के समान होते हैं और इनमें से अधिकांश तुर्की और ईराकी घोड़ों के दोगले होते हैं। इनका मासिक व्यय ५६० दाम होता है। इसमें से ३५८ दाम आवश्यक व्यय के हैं। इन घोड़ों के व्यय में ईराकी घोड़ों के व्यय से १०० दाम की कमी है अर्थात् ३० दाम की कमी शक्कर के लिए, ३० दाम की कमी जीन और लगाम के लिए, १५ दाम की घी के लिए, ३ दाम की साईस के लिए और २ दाम की नालबंदी के लिए।[1] इन पशुओं के व्यय के लिए पहली बार ७२ दाम, दूसरी बार ५० दाम और तीसरी बार ८० दाम की वृद्धि स्वीकार की गई।

चौथी श्रेणी तुर्की घोड़ों की है। ये घोड़े तूरान से लाए जाते हैं। यद्यपि ये बलवान् और हृष्ट-पुष्ट होते हैं तथापि मुजन्नस की समता नहीं कर सकते। इनका मासिक व्यय ४८० दाम है जिसमें से २९८ दाम जीवन की आवश्यकताओं पर व्यय होते हैं। मुजन्नस घोड़ों के मासिक व्यय से यह द्रव्य ६० दाम कम है अर्थात् तीस-तीस दाम शक्कर और घास में कमी है, दस दाम यराक के व्यय में, चार दाम जीन और लगाम में, दो दाम नालबंदी और २ दाम घी में कम है।[2] परन्तु इन पशुओं के दाने में दो सेर की वृद्धि की गई है जिससे १८ दाम मासिक व्यय बढ़ गया है और शक्कर में कमी कर दी गई है। प्रथम व्यय वृद्धि ५२ दाम की, द्वितीय ५० दाम तथा तृतीय ८० दाम की थी।

पाँचवीं श्रेणी याबू घोड़ों की है। इनका जन्म और पालन इसी देश में होता है। यह आकार और शक्ति में मुजन्नस की समानता नहीं कर सकते। इनके स्वभाव और कार्य भी अच्छे नहीं होते। ये तुर्की घोडों और अन्य

---

१. इस कमी का योग केवल ८० दाम होता है। २. इस कमी का योग ७८ दाम होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बुरी जाति के घोड़ों के दोगले होते हैं। इनका मासिक व्यय ४०० दाम है। इसमें से २३९ दाम जीवन की आवश्यकताओं पर होता है इनका व्यय तुर्की घोड़ों से ५९ दाम कम है, अर्थात् २८ दाम की कमी घी में, १५ दाम की साईस के वेतन में, १० दाम की यराक में, ६ दाम की जीन और लगाम आदि में। प्रथम व्यय वृद्धि ४१ दाम की द्वितीय ४० दाम की, तथा तृतीय ८० दाम की थी।

छठीं और सातवीं श्रेणियाँ अधिकतर देशी घोड़ों की हैं जिनमें से सर्वश्रेष्ठ को ताजी, मध्यम को जंगला और निकृष्ट को टट्टू कहते हैं।

अच्छी घोड़ियों की गणना ताजी घोड़ों में की जाती है, शेष घोड़ियों की गणना जंगला श्रेणी में होती है।

(क) ताजी : इनका मासिक व्यय ३२० दाम है जिसमें से १८८ दाम जीवनोपयोगी आवश्यकताओं पर व्यय होते हैं। इनका व्यय याबू के व्यय से ५१ दाम कम है; अर्थात् १८ दाम की कमी दाने में, क्योंकि वे केवल ६ सेर प्रति दिन पाते हैं; १५ दाम की घास में; १० दाम की घी और शक्कर में और ८ दाम की कमी यराक में है। इन पर प्रथम व्यय-वृद्धि २२ दाम की थी; द्वितीय ३० दाम की तथा तृतीय ८० दाम की हुई थी।

(ख) जंगला : इनका मासिक व्यय २४० दाम है जिसमें से १४५½ दाम जीवन के आवश्यक पदार्थों पर व्यय होता है। इनका व्यय ताजी की अपेक्षा ४२½ दाम कम है। जंगला को प्रतिदिन ५ सेर दाना दिया जाता है। इस प्रकार, १५ दाम की कमी घास में; ९ दाम की दाने में; छः छः दाम की घी और गुड़ में; ४½ दाम की यराक में; और २ दाम की कमी नालबदी में होती है। इनकी प्रथम व्यय वृद्धि २९½ दाम की; द्वितीय २५ दाम की और तृतीय ४० दाम की हुई थी।

पूर्व काल में खच्चरों की गणना ताजी घोड़ों में होती थी किन्तु आजकल वे जंगला घोड़ों में गिने जाते हैं।

टट्टू का मासिक व्यय १६० दाम है किन्तु अब यह श्रेणी पूर्णतया उपेक्षणीय हो गई है।

ब्लाकमैन ने अबुल फज्ल द्वारा दिए हुए व्यय को इस प्रकार सारिणी बद्ध कर दिया है।

	१	२	३	४	५	६	७	८
	अरबी घोड़े	ईराकी घोड़े	मुजन्नस	तुर्की	याबू	ताजी	जंगला	टट्टू
दाना (चना)	५४ दाम	५४ दाम	५४ दाम	७२ दाम	७२ दाम	५४ दाम	४५ दाम	
घी	७५ दाम	७५ दाम	६० दाम	} ५८ दाम	} ३० दाम	१० दाम	४ दाम	
शक्कर	६० दाम	६० दाम	३० दाम			१० दाम	४ दाम	
घास	९० दाम	९० दाम	९० दाम	६० दाम	६० दाम	४५ दाम	३० दाम	अनुल्लिखित
यराक	७० दाम	६० दाम	४० दाम	३० दाम	२० दाम	१२ दाम	७½ दाम	
जीन आदि	६० दाम	५० दाम	२० दाम	१६ दाम	१० दाम	१० दाम	१० दाम	

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाल	७ दाम	६ दाम	४ दाम	२ दाम	२ दाम	२ दाम	—
साईस	६३ दाम	६३ दाम	६० दाम	६० दाम	४५ दाम	४५ दाम	४५ दाम
मूल व्यय का योग	४७९ दाम	४५८ दाम	३५८ दाम	२९८ दाम	२३९ दाम	१८८ दाम	१४५½ दाम
प्रथम वृद्धि	८१ दाम	६७ दाम	७२ दाम	५२ दाम	४१ दाम	२२ दाम	२९½ दाम
द्वितीय वृद्धि	८० दाम	७५ दाम	३० दाम	५० दाम	४० दाम	३० दाम	२५ दाम
तृतीय वृद्धि	८० दाम	८० दाम	८० दाम	८० दाम	८० दाम	८० दाम	४० दाम
मासिक व्यय का कुल योग	७२० दाम	६८० दाम	५६० दाम	४८० दाम	४०० दाम	३२० दाम	२४० दाम १६० दाम

अनुल्लिखित

अबुल फज्ल के अनुसार गुड़ का भत्ता चौथी श्रेणी के पश्चात् बन्द हो जाता है, परन्तु चूंकि उसने निम्नतर श्रेणियों में उसका उल्लेख जारी रखा है मैंने (ब्लाकमैन ने) ऊपर कोष्ठों का प्रयोग किया है। साधारणतया घी और गुड़ एक साथ दिये जाते थे।

२. हाथी—दाग लगे हुए हाथी सात श्रेणियों में विभक्त हैं : मस्त, शेरगीर, सादा, मँझोला, करहा, फन्दुरकिया, और मोकल, परन्तु इनकी उपश्रेणियाँ नहीं हैं जैसा कि सम्राट् के खासे हाथियों में हैं।

मस्त—इसका मासिक व्यय १३२० दाम (३३ रुपये) है। इसे प्रतिदिन २½ मन दाना दिया जाता है। किसी हाथी की सेवा के लिए तीन से अधिक सेवक नहीं नियत हैं अर्थात् महावत, भोई और मेठ। महावत का वेतन १२० दाम और भोई तथा मेठ में से प्रत्येक का ९० दाम प्रतिमास है। इस पशु के व्यय में १२० दाम की वृद्धि स्वीकृति हुई है। आरम्भ से हाथी पर दाग लगाया जाता था परन्तु आजकल उसमें कुछ परिवर्तन कर दिया गया है।

शेरगीर—मासिक व्यय ११०० दाम जो पूर्वोक्त से २२० दाम कम है। दाना २ मन प्रति दिन जिससे प्रतिमास १८० दाम व्यय कम हो जाता है। महावत और भोई के वेतन में भी पन्द्रह-पन्द्रह दाम की कमी कर दी गई है। सम्राट् ने व्यय में ११० दाम की वृद्धि स्वीकार की है।

सादा—मासिक व्यय ८०० दाम जो शेरगीर से ३०० दाम कम है। दाना १½ मन प्रतिदिन जिससे व्यय प्रति मास १८० दाम कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त मेठ को ३० दाम कम और महावत तथा भोई प्रत्येक को १५ दाम कम वेतन दिया जाता है। इसके व्यय में ५० दाम वृद्धि स्वीकार की गई है।

मंझोला—मासिक व्यय ६०० दाम। दाना १ मन प्रतिदिन। शेरगीर की अपेक्षा सादा के व्यय में जो कमी की गई है वही कमी सादा की अपेक्षा मंझोले के व्यय में की गई है। इसके व्यय में ९० दाम की वृद्धि स्वीकृत हुई है।

करहा—मासिक व्यय ४२० दाम; दाना ३० सेर। इसलिए दाने के मूल्य में ३० दाम की कमी और महावत के वेतन में १५ दाम की कमी। भोई नहीं होता। व्यय वृद्धि ६० दाम।

फन्दुरकिया—मासिक व्यय ३०० दाम; दाना १५ सेर प्रतिदिन जिससे १३५ दाम प्रति मास की कमी होती है। केवल एक सेवक होता है जिसका वेतन ६० दाम प्रतिमास है। व्यय-वृद्धि १०५ दाम।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मोकल—यह पहले किसी श्रेणी में नहीं गिने जाते थे परन्तु अब इनकी भी एक श्रेणी में गणना की जाती है। मासिक व्यय २८० दाम। हाथियों के व्यय में दाम से काम लिया जाता है, रुपये से नहीं। इसलिए उसमें किसी प्रकार की घटती-बढ़ती की सम्भावना नहीं होती।

३. ऊँट—मासिक व्यय २४० दाम। दाना ६ सेर; घास १ दाम; सामान के लिए २० दाम; ऊँटवान का वेतन ६० दाम। ५८ दाम को व्यय-वृद्धि स्वीकृत हुई और जब रुपए का मूल्य ४० दाम निर्धारित हुआ तो व्यय में २२ दाम और बढ़ा दिया गया।

४. बैल—मासिक व्यय १२० दाम। दाना ४ सेर; घास १ दाम; सामान ६ दाम, व्यय-वृद्धि ३८ दाम। जब रुपए का मूल्य बढ़ गया तब व्यय में १० दाम की और वृद्धि कर दी गई।

५. बैलगाड़ी या छकड़ा—प्रति गाड़ी का व्यय ६०० दाम है; अर्थात् ४८० दाम चार बैलों के लिए; १२० दाम मसाला, मरम्मत तथा सुख की सामग्री के लिए स्वीकार किए गए हैं।

हाथी और बैलगाड़ी केवल मनसबदारों और उन लोगों को दिए जाते हैं जो दाग लगाने के लिए अच्छे घोड़े और ऊँट तथा मध्यम श्रेणी के बैल लाते हैं।

आईन ३

मनसबदार[1]

सब बुद्धिमान् तत्त्वद्रष्टा एक ही नियम का अनुसरण करते हैं और वर्तमान युग के लोग प्राचीन काल के दूरदर्शी लोगों से किसी प्रकार का पार्थिक्य नहीं रखते। वे सब सहमत हैं कि जब तक हम अनेक पर एकता का प्रकाश डालकर समस्त मानव को एक ही दृष्टि से न देखेंगे तब तक संसार झगड़ा तथा संघर्ष की आँधियों से सुरक्षित न होगा और विद्रोह की विपत्तियाँ शान्त न होंगी। तत्वों की यही दशा है; जब तक उनमें एकता तथा सामंजस्य का नियम नहीं आता तब तक उनके प्राणहीन शरीर में प्राण का संचार नहीं होता और वे प्रकृति-जगत् के आश्चर्यों को व्यक्त नहीं कर सकते। पशु भी अपने समुदाय बनाते हैं और हठपूर्ण हिंसा से बचते हैं। इस तरह वे सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं और अपने हानिलाभ की देख रेख करते रहते हैं। परन्तु अपनी दुर्वासनाओं तथा कुप्रवृत्तियों के कारण मनुष्यों को पशुओं की अपेक्षा एक न्यायप्रिय नेता तथा पथ-प्रदर्शक की बहुत अधिक आवश्यकता है जिसका वे अनुसरण करें। सत्य यह है कि उनका सामाजिक अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उन पर एक राजा का शासन होवे, क्योंकि मनुष्यों की असाधारण दुष्टतायें और उनकी असत् प्रवृतियां उनके कुभावों तथा दुर्वासनाओं को कुकृत्यों के नूतन मार्गों का निर्देशन करती रहती हैं और वे मानव-हत्या तथा क्षति को धार्मिक कर्तव्य समझने लगते हैं। अज्ञान के इस मेघ को दूर करने के लिए ईश्वर एक व्यक्ति को चुनता है और पूर्ण सहायता तथा दैनिक बुद्धिमान् अनुग्रह से उसका मार्ग निदर्शन करता है। वह व्यक्ति अपने अनुभव, साहस तथा महानुभावता से मनुष्यों के कलहों और द्वेषों को शान्त करता है, और उनको नई शक्ति तथा प्रेरणा देता है।

परन्तु अकेला एक व्यक्ति ऐसे महत्वपूर्ण तथा दुष्कर कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकता, अतएव वह अपनी विवेक बुद्धि से कुछ श्रेष्ठ पुरुषों को अपने सहायतार्थ मनोनीत करता है और साथ ही उनकी सेवा के लिए कुछ सेवक नियुक्त करता है। इसी कारण सम्राट् ने दहबाशी (दस के नायक या अध्यक्ष) से लेकर दस हजारी तक मनसबदारों के पदों की स्थापना की है जिनमें से पाँच हजारी से उच्चतर मनसब राजकुमारों के लिए सुरक्षित हैं।

---

[1]अरब के लोग 'मन्सिब' कहते हैं। ईरान और भारत में इसको 'मन्सब' कहते हैं। इसका अर्थ 'पद' होता है। अतएव 'मनसबदार' का अर्थ हुआ 'अधिकारी' किन्तु साधारणतया इसका प्रयोग उच्च अधिकारियों के लिए होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

तत्त्वद्रष्टाओं तथा बुद्धिमानों ने अल्लाह के पवित्र नाम के अक्षरों के मूल्य की संख्या में एक संकेत देखा[1] और उसको एक अत्यन्त शुभ लक्षण समझा और इससे विचार किया कि वर्तमान शासन अत्यन्त शान्तिपूर्ण तथा कल्याणप्रद होगा। मनसबों की संख्या ६६ है जो अल्लाह के नाम के अक्षरों के मूल्य के बराबर है जो शाश्वत आनन्द के शुभ सम्वाद का घोषक हैं।

मनसबदारों के मनोनयन में सम्राट् युगधर्म के ज्ञान से काम लेते हैं। उनका यह ज्ञान उनकी ईश्वर प्रदत्त बुद्धि को विलक्षण कान्ति से परिपूर्ण कर देता है। अनेक मनुष्यों की योग्यता को वह प्रथम दृष्टि में समझ लेते हैं[2] और उनको उच्च पदों पर नियुक्त करते हैं। सम्राट् कभी-कभी किसी सेवक के मनसब में वृद्धि कर देते हैं परन्तु उसके सवारों की संख्या कम कर देते हैं। वह भारवाहक पशुओं की संख्या भी निर्धारित करते हैं। सवारों की संख्या तथा दशा के विचार से मनसबदारों के मासिक वेतन में न्यूनता और अधिकता होती है। जिन मनसबदारों के सवार उनके मनसब के अनुसार होते हैं वह अपने मनसब के प्रथम श्रेणी में गिने जाते हैं, यदि सवारों की संख्या निर्दिष्ट संख्या की आधी अथवा उससे अधिक होती है तो मनसबदार की गणना द्वितीय श्रेणी में होती है और यदि सवारों की संख्या निर्दिष्ट संख्या के आधे से भी कम होती है तो मनसबदार की गणना तृतीय श्रेणी में की जाती है यह सब ब्यौरा निम्नांकित तालिका में दिखाया गया है।

यूजबाशी (एक सदी या सौ सवारों के नायक) मनसबदारों की ग्यारह श्रेणियाँ हैं। प्रथम श्रेणी में वे मनसबदार हैं जिनके पास पूरे सौ सवार हों। उनको ७०० रुपए मासिक वेतन मिलता है। ग्यारहवीं श्रेणी उन मनसबदारों की है जिनके साथ उनके निजी सवार बिलकुल न हों। इनकी गणना दाखिली सेना में होती है। इन लोगों को ५०० रुपया मासिक वेतन दिया जाता है। नौ मध्यवर्ती श्रेणियों के वेतन का हिसाब यह है कि प्रति दस सवार की न्यूनता पर ७०० रु. में से २० रूपये की कमी होती जाती है।

दोबीस्ती अमीर तुर्की तथा जंगला घोड़े तथा हाथियों की निर्दिष्ट संख्या रखने पर विवश नहीं किये जाते। तीस या बीस सवारों के मनसबदारों के हिसाब में चार घोड़े रखे जाते हैं जो मुजन्नस या याबू बहुत कम होते हैं। देह-बाशी मनसबदारों को तुर्की घोड़े रखने से मुक्ति प्रदान कर दी गई है किन्तु उनके वेतन में कोई अन्तर नहीं हुआ है।[3]

---

[1]अल्लाह में अलिफ = १ + लाम = ३० + लाम = ३० + छोटी हे = ५ = ६६। अकबर का नाम जलाल-उद्दीन था जिसमें जलालह का अर्थ अल्लाह या ईश्वर होता है और उसने मनसबों की संख्या ६६ निर्धारित की थी। अबुल फज्ल इस बात को बहुत महत्व देता था यद्यपि ६६ के केवल आधे ही मनसब वास्तव में थे। [2]अबुल फ़ज्ल बहुधा अकबर की सहजमुखसामुद्रिकविद् के रूप में प्रशंसा करता है। बदायूनी कहता है कि अकबर ने यह कला योगियों से सीखी थी। [3]निम्नाँकित सारणी में ६६ मनसबों का जो उल्लेख अबुल फज्ल ने किया है वह उन मनसबों का विवरण नहीं है जो अकबर के समय में वर्तमान थे वरन् वह एक प्रकार के सूक्ष्म वर्गीकरण का परिणाम है। यह सारणी अकबर की योजना का विवरण हो सकती है किन्तु स्वयं अबुल फज्ल ने इस ग्रन्थ के आईन ३० में मनसबदारों की जो सूची दी है उससे पता चलता है कि उस समय वास्तव में केवल ३३ प्रकार के मनसबदार वर्तमान थे-तीन राजकुमार जो दस हजारी, आठ हजारी तथा सात हजारी थे और ३० अन्य मनसबदार जो ५०००, ४५००, ४०००, ३५००, ३०००, २५००, २०००, १५००, १२५०, १०००, ९०० (?), ८००, ७००, ६००, ५००, ४००; ३५०, ३०० (?), २५०, २००, १५०, १२०, १००, ८०, ६०, ५०, ४०, ३०, २० और १० सवारों के अध्यक्ष थे। इनमें से ९०० और ३०० के मनसब संदिग्ध हैं क्योंकि आईन की सब पाण्डुलिपियों में इनका उल्लेख नहीं मिलता, यद्यपि पदिशाहनामा में शाहजहाँ के समय के अमीरों की सूची में पृष्ठ ७१७ पर ९०० सवारों के अमीर का वर्णन है। उसमें पाँच सदी अमीरों से न्यून श्रेणी के अमीरों का वर्णन नहीं है; अतएव तीन सदी अमीरों के मनसब के अस्तित्व के विषय में निश्चयात्मक ढंग से कुछ नहीं कहा जा सकता।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
जिनस	दस हजारी	आठ हजारी	सात हजारी	पाँच हजारी	चार हजार नौ सदी	चारहजार आठ सदी	चार हजार सात सदी	चार हजार छः सदी	चार हजार पाँच सदी	चार हजार चार सदी
घोड़े										
ईराकी	६८	५४	४९	३४	३३	३२	३१	३१	३१	३०
मुजन्नस	६८	५४	४९	३४	३३	३२	३१	३१	३०	२९
तुर्की	१३६	१०८	९८	६८	६७	६६	६५	६३	६१	६०
याबू	१३६	१०८	९८	६८	६७	६६	६५	६३	६१	६०
ताजी	१३६	१०८	९८	६८	६७	६५	६३	६२	६१	५९
जंगला	१३६	१०८	९८	६८	६७	६५	६३	६२	६१	५९
हाथी										
शरगीर	४०	३५	३०	२०	२०	२०	१९	१८	१८	१८
सादा	६०	५०	४२	३०	३०	२९	२९	२८	२८	२८
मँझोला	४०	३६	२९	२०	१९	१९	१९	१९	१९	१९
करहा	४०	३४	२७	२०	१९	१९	१८	१८	१७	१६
फन्दुरकिया	२०	१५	१२	१०	१०	९	९	९	८	७
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियां										
ऊँटों की कतारें	१६०	१३०	११०	८०	७७	७७	७५	७४	७२$\frac{3}{4}$	७१
खच्चरों की कतारें	४०	३४	२७	२०	१९	१९$\frac{2}{3}$	१९$\frac{1}{2}$	१८$\frac{4}{5}$	१८$\frac{3}{5}$	१८$\frac{1}{5}$
गाड़ियाँ	३२०	२६०	२२०	१६०	१५७	१५२	१५१	१४८	१४५	१४२

मासिक वेतन (रुपयों में)

प्रथम श्रेणी	६०,०००	५०,०००	४५,०००	३०,०००	२७,६००	२७,१००	२६,८००	२६,४००	२६,०००	२५,२००
द्वितीय श्रेणी	—	—	—	२९,०००	२७,४००	२७,४००	२६,६००	२६,२००	२५,८००	२५,०००
तृतीय श्रेणी	—	—	—	२८,०००	२७,३००	२७,३००	२६,५००	२६,१००	२५,७००	२४,८००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
मनसब	चार हजार तीन सदी	चार हजार दो सदी	चार हजार एक सदी	चार हजारी	तीन हजार नौ सदी	तीन हजार आठ सदी	तीन हजार सात सदी	तीन हजार छः सदी	तीनहजार पाँच सदी	तीन हजार चार सदी

घोड़े

ईराकी	२९	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२४	२३
मुजन्नस	२८	२७	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२४	२३
तुर्की	५९	५८	५६	५४	५३	५१	५०	४९	४७	४६
याबू	५९	५८	५६	५४	५३	५१	५०	४८	४७	४६
ताजी	५८	५७	५६	५४	५२	५१	५०	४८	४७	४६
जंगला	५८	५६	५५	५४	५२	५१	४९	४७	४६	४४

हाथी

शेरगीर	१७	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
सादा	२७	२६	२६	२५	२४	२३	२३	२३	२३	२२
मंझोला	१९	१९	१८	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७
करहा	१६	१६	१६	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४
फन्दुरकिया	७	७	६	६	६	६	६	६	५	५

बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियाँ

ऊँटों की कतारें	६९$\frac{3}{4}$	६८	६८	६५	६३$\frac{3}{4}$	६२	६०$\frac{3}{4}$	५९	५७$\frac{3}{4}$	५६
खच्चरों की कतारें	१८	१७$\frac{3}{4}$	१७$\frac{1}{4}$	१७	१६$\frac{4}{4}$	१६$\frac{1}{4}$	१६$\frac{1}{4}$	१५$\frac{4}{4}$	१५$\frac{3}{4}$	१५$\frac{1}{4}$
गाड़ियाँ	१३९	१३६	१३३	१३०	१२७	१२४	१२१	११८	११५	११२

मासिक वेतन (रुपयों में)

प्रथम श्रेणी	२४,४००	२३,६००	२२,८००	२२,०००	२१,४००	२०,८००	२०,२००	१९,६००	१९,०००	१८,६००
द्वितीय श्रेणी	२४,२००	२३,४००	२२,४००	२१,८००	२१,२००	२०,६००	२०,०००	१९,४००	१८,८००	१८,४००
तृतीय श्रेणी	२४,०००	२३,२००	२२,४००	२१,६००	२१,१००	२०,५००	१९,९००	१९,३००	१८,७००	१८,३००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मनसब	तीन हजार तीन सदी	तीन हजार दो सदी	तीन हजार एक सदी	तीन हजारी	दो हजार नौ सदी	दो हजार आठ सदी	दो हजार सात सदी	दो हजार छः सदी	दो हजार पाँच सदी	दो हजार चार सदी
घोड़े										
ईराकी	२२	२१	२०	२०	१९	१७	१८	१७	१७	१७
मुजन्नस	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१७	१७	१७
तुर्की	४५	४४	४३	४०	३९	३८	३७	३६	३४	३३
याबू	४५	४४	४३	४०	३९	३८	३७	३६	३४	३३
ताजी	४४	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३५	३५	३३
जंगला	४३	४२	४०	४०	३९	३८	३७	३५	३४	३३
हाथी										
शेरगीर	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१३	१२	१२
सादा	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३
मंझोला	१७	१७	१७	१६	१६	१४	१३	१२	१२	११
करहा	१४	१४	१४	१४	१३	१२	११	११	१०	१०
फन्दुर किया	५	५	५	५	४	३	३	१	२	२
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियाँ										
ऊँटों की कतारें	५४$\frac{3}{4}$	५३	५१$\frac{3}{4}$	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८
खच्चरों की कतारें	१५	१४$\frac{3}{4}$	१४$\frac{3}{4}$	१४	१३$\frac{1}{4}$	१२$\frac{3}{4}$	११$\frac{3}{4}$	१०$\frac{4}{4}$	१०	९$\frac{2}{4}$
गाड़ियाँ	९	१०६	१०३	१००	९६	९२	८८	८४	८०	७६
मासिक वेतन (रुपयों में)										
प्रथम श्रेणी	१८,२००	७,८००	१७,०००	१७,०००	१६,४००	१५,८००	१५,२००	१४,६००	१४,०००	१३,६००
द्वितीय श्रेणी	१८,०००	१७,६००	१७,२००	१६,८००	१६,२००	१५,६००	१५,०००	१४,४००	१३,८००	१३,४००
तृतीय श्रेणी	१७,९००	१७,५००	१७,१००	१६,७००	१६,१००	१५,५००	१४,९००	१४,३००	१३,७००	१३,३००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
मनसब	दो हजार तीन सदी	दो हजार दो सदी	दो हजार एक सदी	दो हजारी	एक हजार नौ सदी	एक हजार आठ सदी	एक हजार सात सदी	एक हजार छः सदी	एक हजार पाँच सदी	एक हजार चार सदी
घोड़े										
ईराकी	१६	१६	१५	१५	१४	१४	१४	१६	१२	१२
मुजन्नस	१६	१६	१५	१५	१४	१३	१३	१३	१२	१२
तुर्की	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२४
यावू	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२४
ताजी	३२	३१	३१	३०	२९	२८	२७	२५	२४	२३
जंगला	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२७	२५	२४	२३
हाथी										
शेरगीर	१२	११	१०	१०	१०	१०	९	९	८	८
सादा	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	१०	१०	१०
मँझोला	१०	९	९	९	९	९	९	९	८	८
करहा	१०	१०	९	७	७	७	७	७	७	७
फुन्दर किया	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियाँ										
ऊँटों की कतारें	३६	३४	३२	३०	२८$\frac{४}{५}$	२७$\frac{३}{५}$	२६$\frac{२}{५}$	२५$\frac{१}{५}$	२८	२३$\frac{२}{५}$
खच्चरों की कतारें	८$\frac{४}{५}$	८$\frac{१}{५}$	७$\frac{३}{५}$	७	६$\frac{३}{५}$	६$\frac{१}{५}$	५$\frac{४}{५}$	५$\frac{२}{५}$	५	४$\frac{४}{५}$
गाड़ियाँ	७२	६८	६४	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४९
मासिक वेतन (रुपयों में)										
प्रथम श्रेणी	१ ,२००	१२,८००	१२,४००	१२,०००	११,७५०	११,४००	११,२२०	१०,६००	१०,०००	९,६००
द्वितीय श्रेणी	१३,०००	१२,६००	१२,२००	११,९००	११,६५०	११,३५०	११,०००	१०,४००	९,८००	९,४००
तृतीय श्रेणी	१२,९००	१२,५००	१२,१००	११,८००	११,४५०	११,३००	१०,८००	१०,२००	९,७००	९,३००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
मनसब	एक हजार तीन सदी	एक हजार दो सदी	एक हजार एक सदी	एक हजारी	नौ सदी	आठ सदी	सात सदी	छः सदी	पाँच सदी	साढ़े चार सदी
घोड़े										
ईराकी	१२	११	११	१०	१०	१०	६	५	४	४
मुजन्नस	१२	११	११	१०	१०	१४	१३	७	७	६
तुर्की	२३	२२	२२	२१	२०	१७	९	११	८	८
याबू	२३	२२	२२	२१	२०	१७	१३	९	८	८
ताजी	२३	२२	२१	२१	२०	९	१४	४	४	४
जंगला	२२	२२	२१	२१	२०	३	७	४	३	३
हाथी										
शेरगीर	८	७	७	७	७	७	५	४	४	३
सादा	१०	९	९	८	८	८	६	३	१	२
मँझोला	७	७	७	७	६	५	४	५	२	२
करहा	७	७	७	७	७	५	४	२	२	२
फन्दुरकिया	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियाँ										
ऊँटों की कतारें	२३	२२	२२	२१	२०	१७	१५$\frac{२}{८}$	१४	१३	१०
खच्चरों की कतारें	४$\frac{३}{८}$	४$\frac{३}{८}$	४$\frac{२}{८}$	४$\frac{१}{८}$	४	३$\frac{२}{८}$	३	२$\frac{२}{८}$	२	—
गाड़ियाँ	४८	४६	४४	४२	४०	३४	२७	२१	१५	१२
मासिक वेतन (रुपयों में)										
प्रथम श्रेणी	९,२००	९,०००	८,७००	८,२००	७,७००	५,०००	४,४००	३,५००	२,८००	२,५००
द्वितीय श्रेणी	९,१००	८,९००	८,५००	८,१००	७,४००	४,७००	४,०००	३,२००	२,७५०	२,३००
तृतीय श्रेणी	९,०५०	८,८००	८,४००	८,०००	७,१००	४,४००	३,८००	३,०००	२,७००	२,१००

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनसब	५१ चार सदी	५२ साढ़े तीन सदी	५३ तीन सदी	५४ ढाई सदी	५५ दो सदी	५६ डेढ़ सदी	५७ सवा सदी	५८ एक सौ बीसी
घोड़ा								
ईराकी	३	३	३	३	२	२	२	२
मुजन्नस	४	४	३	३	३	३	२	२
तुर्की	५	४	३	३	३	३	२	२
याबू	६	४	४	४	३	३	३	३
ताजी	२	२	२	१	१	—	२	२
जंगला	—	—	—	—	—	—	—	—
हाथी								
शेरगीर	२	१	१	१	१	१	—	—
सादा	२	१	१	१	२	१	१	१
मँझोला	२	२	२	२	१	१	१	१
करहा	२	३	२	२	२	२	२	२
फन्दुर किया	१	१	१	—	—	—	—	—
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियां								
ऊँटों की कतारें	५	४½	४	३½	३	२	२½	२½
खच्चरों की कतारें	—	—	—	—	—	—	—	—
गाड़ियाँ	१२	११	१०	८	७	६	५	५
मासिक वेतन (रुपयों में)								
प्रथम श्रेणी	२,०००	१४,५००	१,३००	१,१५०	९७५	८७५	७८०	७४५
द्वितीय श्रेणी	१,७००	१३ ७५	१,२५०	१,१००	९५०	८५०	७६०	७४०
तृतीय श्रेणी	१,५००	१३,५०	१,२००	१,०००	९००	८००	७५०	७३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनसब	५९ यूजबाशी (एक सदी)	६० चार बीसी	६१ तीन बीसी	६२ पंचही (आधा सदी)	६३ दो बीसी	६४ तरकश बंद (डेढ़ बीसी)	६५ बीसी	६६ दहबाशी
घोड़े								
ईराकी	२	२	१	१	१	—	—	—
मुजन्नस	२	१	१	१	२	१	१	—
तुर्की	२	२	२	२	१	१	१	२
याबू	२	२	२	२	१	२	१	२
ताजी	२	१	१	१	१	१	२	—
जंगला	—	१	१	१	—	—	—	—
हाथी								
शेरगीर	—	—	—	—	—	—	—	—
सादा	१	—	—	—	१	—	—	—
मँझोला	१	१	१	१	—	—	—	—
करहा	१	२	१	१	—	१	१	—
फन्दुर किया	—	—	—	—	—	—	—	—
बोझा ढोने वाले पशु और गाड़ियाँ								
ऊँटों की कतारें	२	२	१ २/८	१ ३/८	१ ३/८	१ ३/८	१ १/८	—
खच्चरों की कतारें	—	—	—	—	—	—	—	—
गाड़ियाँ	५	३	२	२	१	१	१	—
मासिक वेतन (रुपयों में)								
प्रथम श्रेणी	७००	४१०	३०१	२५०	२२३	१८५	१३५	१००
द्वितीय श्रेणी	६००	३८०	२८५	२४०	२००	१६५	१०५	८२½
तृतीय श्रेणी	५००	३५०	२७०	२३०	१८५	१५५	११५	७५

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ४

अहदी

सम्राट् अनेक वीर तथा योग्य पुरुषों को कोई मनसब नहीं प्रदान करते परन्तु उनको अन्य व्यक्तियों के आज्ञापालन से मुक्त रखते हैं। वे पुरुष स्वयं सम्राट् के निजी सेवक होते हैं और अपनी स्वाधीनता से गौरवान्वित होते हैं। उन्हें उनके कर्तव्यों की शिक्षा दी जाती है और उनके ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। जो कुछ वाह्य है उसको भी आध्यात्मिक अर्थ प्रदान करना सम्राट् का उद्देश्य है, अतएव वह ऐसे पुरुषों को 'अहदी' कहते हैं ('अहदी' शब्द 'अहद' से बना है जिसका अर्थ 'एक' है।)। इस प्रकार उनमें ईश्वर की एकता की स्मृति बनी रहती है।

पद सम्बन्धी एक नूतन अधिनियम का निर्माण हुआ।

अहदियों की सुविधा के लिए एक पृथक् दीवान तथा बख्शी की नियुक्ति की गई और एक उच्च पदस्थ अमीर उनका प्रधान नियुक्त हुआ। एक योग्य अधिकारी इस उद्देश्य से नियुक्त हुआ कि वह अहदियों में सम्मिलित होने वाले अभ्यार्थियों को सम्राट् के सम्मुख निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करे। निष्पक्ष भाव से बिना कोई उत्कोच लिए हुए वह प्रतिदिन कुछ व्यक्तियों को सम्राट् के सम्मुख उपस्थित करता है और वह उनकी परीक्षा लेते हैं। जब सम्राट् उनसे सन्तुष्ट हो जाते हैं तब 'याददाश्त', 'तअलीका', 'चेहरा नवीसी' और 'बरआउर्द' की नौबत आती है (दे० आईन १०)। तब बख्शी उन लोगों से प्रतिभू (जमानत) लेता है और उनको द्वितीय बार सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करता है। सम्राट् उनके वेतन में $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ तक अथवा $\frac{6}{5}$ से भी अधिक वृद्धि कर देते हैं।[1] अनेक अहदियों का वेतन ५०० रुपये मासिक से भी अधिक है। इन सवारों के घोड़ों पर संख्या ६ का दाग लगा दिया जाता है (दे० आईन ७)। आरम्भ में जब उनके पद की स्थापना हुई थी तब कुछ अहदी आठ घोड़े रखते थे परन्तु अब कोई पांच से अधिक घोड़े नहीं रख सकता। अपने 'सरखत' (दे० आईन ११) के आधार पर प्रत्येक अहदी को एक 'फरमान्चा' (आज्ञापत्र) प्राप्त होता है जिसको देखकर कोषाध्यक्ष प्रति वर्ष उसका वेतन देता रहता है।

प्रति चौथे मास अहदियों का समारोह होता है जिसमें एक प्रमाणपत्र पर जिस पर दीवान और बख्शी के हस्ताक्षर होते हैं कोषागार के लिपिक को दिया जाता है और वह इस प्रमाण पत्र के आधार पर जिसको 'तसहीहा'[2] कहते हैं एक रसीद लिखता है और उस पर अपना हस्ताक्षर करता है; इसके पश्चात् रसीद पर राज्य के वजीरों के हस्ताक्षर होते हैं। कोषाध्यक्ष इस रसीद को अपने पास रख लेता है और द्रव्य चुका देता है। चार मास का समय व्यतीत होने के पूर्व ही अहदी को एक मास का वेतन पेशगी दिया जाता है। पूरे वर्ष में उसे मासिकवेतन का $\frac{10}{12}$ भाग दस मास तक दिया जाता है। इन दस महीनों की बचत तथा शेष दो मास के पूरे वेतन का कुल योग उसके घोड़ों तथा अन्य व्ययों के काम में लगाया जाता है। सेवा में प्रवेश करते समय साधारणतया अहदी अपना घोड़ा स्वयं लाता है परन्तु इसके उपरान्त घोड़े के मर जाने पर उसे शासन से घोड़ा मिलता है। यदि सम्बन्धित निरीक्षकों के प्रमाण पत्र में जिसे 'सकतनामा' कहते हैं घोड़े की अनुपस्थिति की व्याख्या रहती है तो मृत अश्व के लिए उसे क्षमा प्रदान कर दी जाती है परन्तु जब तक वह नूतन प्रमाण पत्र नहीं लाता तब तक उसे घोड़ा रखने के लिए द्रव्य नहीं दिया जाता। किन्तु यदि उसके पास सकतनामा नहीं रहता तो पूर्ववर्ती समारोह से लेकर वर्तमान समय तक घोड़े के व्यय के लिए उसे कुछ भी द्रव्य नहीं दिया जाता। जिन अहदियों को घोड़ों की आवश्यकता होती है वह निरन्तर

[1] या यों कह सकते हैं कि सम्राट् ७५ प्रतिशत अथवा ८५$\frac{5}{6}$ प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि कर देते हैं। [2] ब्लाकमैन के अनुसार 'तसहीहा' एक प्रकार का 'आजीवन प्रमाणपत्र' है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत होते रहते हैं जो उन्हें उपहार या आंशिक वेतन के रूप में घोड़े देते हैं। यदि घोड़ा आंशिक वेतन के रूप में दिया जाता है तो आधा मूल्य इरमास[1] द्रव्य के रूप में मुजरा कर लिया जाता है और शेषार्द्ध परवर्ती चार समारोहों के समय चार किस्तों में उनके वेतन से काट लिया जाता है। यदि अहदी ऋणी होता है तो आठ किस्तों में कटौती होती है।

आईन ५

अन्य प्रकार के सवार

मनसबदारों और अहदियों का संक्षिप्त वर्णन करने के पश्चात् तृतीय वर्ग के सवारों का भी कुछ विवरण दिया जाता है जिससे पाठकों को इस विभाग की पूर्ण अभिज्ञता प्राप्त हो जाय।

स्वामी स्वयं घोड़ों के गुण का निर्धारण करता है और बख्शी अत्यन्त सावधानी के साथ उनका निरीक्षण करता है। इसके पश्चात् चेहरानवीसी होती है अर्थात् मनुष्य का वर्णन लिपिबद्ध किया जाता है। यदि सवार के पास एक से अधिक घोड़े हैं तो उसके हिसाब में एक ऊँट या बैल का व्यय भी सम्मिलित कर दिया जाता है। उसके व्यय के लिए जितना द्रव्य उच्च श्रेणी के सवार को दिया जाता है उसका आधा इस वर्ग के सवार को मिलता है। यदि यह वृद्धि नहीं की जाती तो नियत व्यय-द्रव्य का $\frac{3}{5}$ भाग बढ़ा दिया जाता है।

यकअस्पा सवार को निम्नलिखित भाव से व्यय-द्रव्य दिया जाता है: ईराकी घोड़े के लिए ३० रुपये मासिक, मुजन्नस के लिए २५ रुपये, तुर्की के लिए २० रुपये; याबू के लिए १८ रुपये, ताजी के लिए १५ रुपये और जंगला के लिए १२ रुपये।

खालसा भूमि की मालगुजारी वसूल करने वाले सवार को पहले २५ रुपये मिलते थे परन्तु अब केवल १५ रुपये मिलते हैं।

इन सवारों को पहले चार घोड़ों तक रखने की आज्ञा थी किन्तु अब वे तीन से अधिक घोड़े नहीं रख सकते।

प्रत्येक दहबाशी अमीर को दो चहारअस्पा, तीन सीअस्पा, तीन दो अस्पा और दो यक अस्पा सवार (अर्थात् १० सवार और २५ घोड़े) रखना पड़ता था और दूसरे मनसबदार भी इसी अनुपात में सवारों और घोड़ों को रखते थे। परन्तु अब दहबाशी के सेनादल में ३ सी अस्पा, ४ दो अस्पा और ३ यक अस्पा (अर्थात् १० सवार और २० घोड़े) रहते हैं।

आईन ६

पैदल सेना

घुड़सवारों का संक्षिप्त वर्णन लिखने के पश्चात् पैदल सैनिकों का भी कुछ विवरण दिया जाता है। पैदल सैनिक विभिन्न प्रकार के हैं और वे भी प्रशंसनीय सेवायें सम्पन्न करते हैं। सम्राट् ने उनके विभिन्न वर्गों के

---

[1] ब्लाकमैन के अनुसार 'इरमास' का अर्थ है 'सैनिक पूर्ति या वेतन के लिए प्रार्थना'।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लिए समुचित अधिनियम बनाए हैं और उच्च तथा निम्न प्रत्येक वर्ग के लोगों का सन्तोषजनक रूप से पथ-प्रदर्शन करते हैं।

इन[1] का लेखक 'आवारा नवीस' है। आवारा नवीसों का समुदाय भी महत्वपूर्ण सेवा करता है; अतएव वे पैदल सैनिकों में सम्मिलित हैं। इनकी कई श्रेणियां हैं। प्रथम श्रेणी ५०० दाम, द्वितीय श्रेणी ४०० दाम, तृतीय श्रेणी ३०० दाम तथा चतुर्थ श्रेणी २४० दाम मासिक पाते हैं।

बन्दूक्ची

बारह हजार बन्दूक्ची राजकीय सेवक हैं। इस विभाग की सम्यक् व्यवस्था के लिए एक अनुभवी बितिक्ची, एक ईमानदार खजान्ची तथा एक कर्मठ दारोगा की नियुक्ति की गई है। इन पदों के लिए कुछ बन्दूक्ची चुने जाते हैं; दूसरे बन्दूक्ची निम्नांकित पदों पर नियुक्त होते हैं। कुछ बन्दूक्ची बहुत अनुभवी और उत्साही होते हैं। वे कुछ अन्य बन्दूक्चियों के सरदार नियुक्त किए जाते हैं जिससे सबमें एकरूपता स्थापित हो जाय और सब लोग अपने-अपने कर्तव्यों को औचित्य तथा बुद्धिमत्ता के साथ करें। इन अधिकारियों के वेतन की चार श्रेणियाँ हैं; प्रथम, ३०० दाम; द्वितीय, २८० दाम; तृतीय, २७० दाम; चतुर्थ, २६० दाम।

साधारण बन्दूक्ची पांच श्रेणियों में विभक्त हैं और प्रत्येक श्रेणी तीन उपश्रेणियों में विभक्त है। उनके मासिक वेतन निम्नलिखित हैं।

प्रथम श्रेणी : २५०, २४०, २३० दाम; द्वितीय श्रेणी : १२०, २१०, २०० दाम; तृतीय श्रेणी : १९०, १८०, १७० दाम; चतुर्थ श्रेणी : १६०, १५०, १४० दाम; पंचम श्रेणी : १३०, १२०, ११० दाम।

दरबान

एक सहस्त्र सतर्क तथा कर्मण्य दरबान राजप्रासाद की रखवाली करते हैं। इनके मीरदहा के वेतन की पांच श्रेणियां हैं : २००, १६०, १४०, १३०, और १२० दाम। साधारण दरबानों का वेतन १०० से १२० दाम है।

खिदमतिया

खिदमतियों की गणना भी पैदल सैनिकों में की जाती है। यह लोग राजप्रासाद के आस-पास पहरा देते हैं और ध्यान रखते हैं कि आज्ञाओं का पालन किया जाय। इनमें पंजाही से बीस्ती तक २०० दाम मासिक पाते हैं, दहबाशी १८ दाम और १४ दाम पाते हैं। दूसरे खिदमतिया १२०, ११० और १०० दाम पाते हैं।

यह लोग जिस जाति के हैं वह चोरी और डकैती के लिए कुख्यात थी। पूर्व कालीन शासक उनका नियंत्रण न कर सके थे परन्तु सम्राट् की प्रभावोत्पादक आज्ञाओं ने इनको सच्चा तथा ईमानदार बना दिया है। अब वे विश्वसनीयता के लिए सुख्यात हैं। पहले वे 'मावी' कहलाते थे। वर्तमान शासन में उनके मुखिया को 'खिदमतराय' की उपाधि मिली है। सम्राट् का निकटस्थ व्यक्ति होने के कारण वह वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। उसके अधीनस्थ लोग खिदमतिया[2] के नाम से अभिहित हैं।

म्यौड़ा[3]

---

[1]पुस्तक में एक शब्द है जो संदर्भ के अनुकूल नहीं है। [2] तुजुके जहाँगीरी में उन्हें 'पिय दहाये खिदमतिय्या' कहा गया है और जहाँगीर के शासन में उनके सरदार का नाम 'राय मान' था। [3] अकबर ने जिन नवीनताओं का प्रचलन किया था उनमें से एक डाकम्यौड़ों की नियुक्ति थी जिनमें से कुछ हर स्थान पर रखे जाते थे। खाफी खाँ, प्रथम भाग पृ० २४३। अतएव म्यौड़े मुख्यतया हरकारे या डाकिए थे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह लोग मेवात के निवासी हैं और अपनी तीव्रगति के लिए प्रसिद्ध है वे अत्यन्त दूरवर्ती स्थानों से अभीष्ट पदार्थ बहुत उत्साह के साथ लाते हैं। यह लोग उत्कृष्ट गुप्तचर हैं और जटिलतम कर्तव्यों को दक्षतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इनकी संख्या भी एक सहस्त्र है और ये सदैव आज्ञापालन के लिए कटिबद्ध रहते हैं। इनके मासिक वेतन खिदमतियों के समान हैं।

शमशेरबाज (तलवार चलाने वाले)

शमशेरबाजों की कई श्रेणियाँ हैं जिनमें से प्रत्येक आश्चर्यजनक कार्य करते हैं। युद्ध में वे बड़ी फुर्ती और हाथ की सफाई से काम करते हैं और पैतरा बदलने में बड़ी निपुणता तथा साहस प्रदर्शन करते हैं। इनमें से कुछ लोग युद्ध में ढाल का प्रयोग करते हैं और कुछ लोग लाठियों से काम लेते हैं। द्वितीय वर्ग वालों को 'लकराइत' कहते हैं। कुछ शमशेरबाज सुरक्षा के किसी साधन का उपयोग नहीं करते और केवल एक हाथ से युद्ध करते हैं। इनको 'यक-हाथ' कहते हैं। प्रथम समुदाय के लोग मुख्यतया पूर्वी जिलों के निवासी हैं। इनकी ढाल साधारण ढाल से कुछ छोटी होती है जिसे यह लोग 'चिरवा' कहते हैं जो शमशेरबाज दक्षिणी जिलों के हैं उनकी ढाल इतनी बड़ी होती है कि एक सवार उसकी आड़ में छिप जाता है। इस प्रकार की ढाल को वे 'तिल्वा' कहते हैं।

दूसरा समुदाय 'फराइत' नाम से अभिहित है। इनकी ढाल इतनी बड़ी नहीं होती जो एक मनुष्य को छिपा सके परन्तु वह एक गज चौड़ी होती है।

कुछ लोग 'वानाइत' कहलाते हैं। इनका खड्ग बहुत लम्बा होता है जिसका दस्ता एक गज से अधिक लम्बा होता है। दोनों हाथों से उसे पकड़ कर यह लोग विचित्र-विचित्र खेल दिखलाते हैं।

इसी प्रकार 'वंकुली' (या बंगुली) समुदाय भी विख्यात है। यह लोग एक विशेष प्रकार का खड्ग प्रयोग में लाते हैं जो नोककी ओर झुका हुआ परन्तु मुठिया के निकट सीधा होता है। यह लोग ढाल का प्रयोग नहीं करते। ये वर्णनातीत कौशल का प्रदर्शन करते हैं। कुछ शमशेरबाज भाँति-भाँति की कटारें और छुरे बनाते हैं और उनसे अत्यन्त असाधारण खेल दिखलाते हैं। इन लोगों के प्रत्येक वर्ग के अलग-अलग नाम हैं और उनके कृत्य एक दूसरे से भिन्न हैं। वास्तव में इनके कामों और खेलों का वर्णन करना लगभग असम्भव है और केवल श्रवण मात्र से उनका अटकल भी नहीं लगाया जा सकता।

इन लोगों की संख्या एक लाख से अधिक है जिनमें से एक सहस्त्र सदैव राजदरबार में कटिबद्ध प्रस्तुत रहते हैं। इनका एक सदी अधिकारी अहदी या उससे भी ऊँचे पद का होता है। इनका वेतन ८० दाम से ६०० दाम होता है।

पहलवान

राजदरबार में अनेक ईरानी, और तूरानी कुश्ती लड़ने वाले, मुक्की लड़ने वाले, लक्ष्य पर पत्थर फेंकने वाले, हिन्दुस्तानी बाजीगर, गुजरात के कुशल मल और दूसरे प्रकार के लड़ने वाले लोग हैं। उनके वेतन ७० दाम से ४५० दाम है। प्रतिदिन पहलवानों की एक सुन्दर जोड़ी लड़ती है और उनको भाँति-भाँति के उपहार दिए जाते हैं। इस समय के श्रेष्ठ पहलवानों के नाम निम्नलिखित हैं, मिर्जा खाँ गीलानी, मुहम्मद कुली तबरीजी जिसे सम्राट् ने 'शेर हमला' नाम दिया है, सादिक बुखारी, अली तबरीजी, मुराद तुर्किस्तानी, मुहम्मद अली तूरानी, फौलाद तबरीजी, कासिम तबरीजी, मिर्जा कुहना सवार तबरीजी शाह कुली कुर्द, हिलाल हब्शी, मुद्धू दयाल, अली, श्रीराम, कन्हैया, मंगोल, गणेश, अम्बा, नान्का, बलभद्र, बज्रनाथ।

चेला (या दास)

धार्मिक मनोवृत्ति के कारण सम्राट् को 'बन्दा' या दास शब्द से अरुचि है। उनका विचार है कि ईश्वर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के सिवाय दूसरा कोई स्वामी नहीं हो सकता। इसलिए वह इस समुदाय के लोगों को 'चेला'[1] कहते हैं जो हिन्दी शब्द है और जिसका अर्थ है सच्चा शिष्य। सम्राट् के अनुग्रह से उनमें से अनेकों ने आनन्द के मार्ग को ग्रहण किया।[2]

'चेला' शब्द के अनेक अर्थ लगाए गए हैं। प्रथम, वही अर्थ है जो सामान्य लोग 'दास' से समझते हैं। कुछ लोग अन्य जाति या धर्म के दुर्बल लोगों पर अधिकार प्राप्त करके उनका क्रय-विक्रय करते हैं। बुद्धिमान लोग इस प्रथा को अत्यन्त निन्दनीय समझते हैं। द्वितीय, वह व्यक्ति चेला कहलाता है जो स्वार्थ का मार्ग त्याग कर आध्यात्मिक आज्ञाकारिता का मार्ग ग्रहण करता है। तृतीय, अपनी सन्तान। चतुर्थ, वह व्यक्ति जो किसी दूसरे मनुष्य की सम्पत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से उसकी हत्या करता है। पञ्चम, एक डाकू जो अपने कुकृत्य के लिए पश्चाताप करके उस व्यक्ति की सेवा करता है जिसको उसने लूटा था। षष्ठम, वह हत्यारा जिसका अपराध द्रव्य देने के कारण क्षमा कर दिया गया है और वह उस व्यक्ति का दास हो जाता है जिसने उसे मुक्ति दिलाई थी। सप्तम, वह व्यक्ति जो आनन्द तथा स्वेच्छा से दास हो कर रहना अच्छा समझता है।

चेलों का वेतन १ रुपया से १ दाम प्रति दिन है। सम्राट् ने उनको विभिन्न वर्गों में विभक्त कर दिया है और प्रत्येक वर्ग को एक अनुभवी तथा कर्मण्य अधिकारी की अधीनता में दे दिया है जो उन्हें भिन्न-भिन्न कला-कौशल की शिक्षा देते हैं। इस प्रकार यह लोग ज्ञानार्जन करते हैं और अपनी स्थिति सुधारते हैं तथा अपने कर्तव्यों का उचित ढंग से सम्पादन करते हैं।

सम्राट् प्रत्येक अच्छाई का प्रोत्साहन करते हैं और योग्यता का मूल्य जानते हैं। सेना में नियुक्त करके वह विभिन्नवर्ग के लोगों का सम्मान करते हैं और सामान्य सैनिक के पद से ऊपर उठा कर उनको अमीरों का गौरव प्रदान करते हैं।

कहार

यह लोग पैदल सेना के एक वर्ग हैं जो केवल हिन्दुस्तान में पाये जाते हैं। वे अपने कंधों पर भारी बोझे ढोते हैं और पहाड़ों तथा घाटियों में यात्रा करते हैं। यह लोग पालकी, सिंहासन, चौडोल और डोली अपने कंधों पर उठा कर ऐसी सुन्दर गति से चलते हैं कि सवार को किसी झटके का अनुभव नहीं होता। इस देश में कहार बहुत हैं किन्तु इनमें से उत्कृष्ट लोग दक्षिण तथा बंगाल के निवासी हैं। राजप्रासाद में कई सहस्त्र कहार सेवार्थ उपस्थित रहते हैं। इनके सरदार का वेतन १९२ दाम से ३८४ दाम होता है। साधारण कहार १२० दाम से १६० दाम तक पाते हैं।

दाखिले प्यादे

इन सैनिकों की एक निर्दिष्ट संख्या मनसबदारों के सुपुर्द की जाती है परन्तु उनका वेतन राजकोष से दिया जाता है। चेहरा नवीसी के कार्यालय में यह लोग राजकीय आज्ञा के अनुसार 'नीमा सवारान' (अर्द्ध अश्वारोही) लिखे जाते हैं।

दाखिली सैनिकों का चतुर्थांश बन्दूकची हैं और शेष धनुष-बाण का प्रयोग करते हैं।

बढ़ई, लोहार, भिस्ती और बेलदार भी इसी समुदाय के होते हैं।

---

[1] 'चेला' शब्द का अर्थ वही है जो अरबी शब्द 'मुरीद' का है अर्थात् वह शिष्य जो अपने 'मुर्शिद' या 'पीर' में दृढ़ विश्वास रखता है। "सम्राट् के अनेक विशेष शिष्यों ने ९९१में जोगी समुदाय का अनुकरण करके अपने आप को 'चेला' कहना आरम्भ कर दिया।" बदायूनी, द्वितीय, पृ० ३२५। [2] दीन इलाही को स्वीकार करके।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बन्दूक्चियों का सरदार १६० दाम या ४ रुपया पाता है और साधारण बन्दूक्ची १४० दाम पाता है। धनुषधारियों के मीरदहा को १२० से १८० दाम तक दिया जाता है और साधारण धनुषधारी १०० दाम से १२० दाम पाते हैं।

लेखक इस विषय का और सविस्तर वर्णन कर सकता है परन्तु प्रधान वर्गों का वर्णन करके उसे सन्तुष्ट होना पड़ेगा। लेखक ने इनका कुछ विवरण राजकीय शालाओं के अन्तर्गत भी दिया है

आईन ७

पशुओं पर दाग लगाने के अधिनियम

सैनिकों के विभिन्न पदों को निर्धारित करके और घोड़ों की श्रेणियों से परिचय प्राप्त करके सम्राट् ने सच्चे बितिक्चियों को आज्ञा दी कि वे सैनिकों की चेहरानवीसी करें और उनके विशेष चिह्नों को लिपिबद्ध करके उनकी वर्णनात्मक सूची तैयार करें। इस प्रकार प्रत्येक सैनिक की अवस्था, पिता का नाम, जाति तथा निवास-स्थान लिखा जाता है। एक दारोगा की भी नियुक्ति की गई जो यह देखता है कि लोग कहीं अकारण प्रतीक्षा में न रोके जाँय। इन कर्मचारियों को आज्ञा है कि वे अपने कर्तव्य-सम्पादन में लोगों से उत्कोच या पारिश्रमिक न लें।

प्रत्येक मनुष्य जो सेना में भरती होना चाहता है सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। सम्राट् के सामने उसका पद निर्धारित किया जाता है, तत्पश्चात् विभागीय लिपिक 'तालिका' लिखते हैं (दे० आईन १०)।

'दाखिली' सैनिक अपने मनसबदार के हस्ताक्षर पर भरती किए जाते हैं।

सम्राट् ने पाँच अनुभवी अधिकारियों को नियुक्त किया है जो मनुष्यों और उनके घोड़ों की दशा ज्ञात करके उनके वेतन निर्धारित करते हैं। सम्राट् की आज्ञा से दाखिली प्यादे एक खुले मैदान में एकत्र होते हैं। चेहरा-नवीसी के कागज (वर्णनात्मक सूची) सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत होती है और सैनिक अपने घोड़ों के सहित उपरोक्त पाँच अधिकारियों के सुपुर्द किये जाते हैं। वर्णनात्मक सूची के अन्त में सैनिक के वेतन की द्रव्य-राशि लिखी जाती है और उन अधिकारियों द्वारा प्रति हस्ताक्षरित होती है। इस कार्यवाही का उद्देश्य यह है कि वेतन-राशि में किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सके और वह प्रमाणित समझी जाय तब सूची दारोगा के पास निरीक्षण के लिए भेजी जाती है। वह उपरोक्त ढंग से (दे० आईन ४) उनको सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करता है। सम्राट् प्रत्येक व्यक्ति के वेतन में कमी या वृद्धि करते हैं। सम्राट् प्रत्येक मनुष्य के ललाट् की रेखाओं को देख कर उसकी योग्यता समझ लेते हैं, इसलिए वह उसका वेतन घटा या बढ़ा सकते हैं। मुखाकृति देखकर सम्राट् व्यापारी तथा सैनिक को पृथक् कर देते हैं जिससे अनुभवी लोग भी चकित हो जाते हैं और कहते हैं कि सम्राट् की इस विलक्षण शक्ति का उद्गम उनका 'रहस्यमय ज्ञान' है। जब सूची इस प्रकार प्रमाणित हो जाती है तब 'वाकिया नवीस' (दे० आईन १०), मीर अर्ज और सरदार किशक भी हस्ताक्षर कर देते हैं। इस प्रमाणपत्र के आधार पर दाग का दारोगा घोड़ों पर दाग लगा देता है।

आरम्भ में जब दाग डालने की प्रथा चली तो घोड़े की गरदन की दाहिनी ओर 'सीन' अक्षर के सोसे की आकृति का दाग लगाया जाता था। इसके पश्चात् कुछ समय तक चिह्न की आकृति दो 'अलिफ' अक्षर की होती थी जो एक दूसरे को समकोण पर काटते थे। 'अलिफ' के सिरे मोटे होते थे। यह दाग घोड़े की दाहनी जाँघ पर लगाया जाता था। तत्पश्चात् चिह्न उस धनुष के आकार का

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लगाया जाता था जिसकी प्रत्यञ्चा उतार ली गई हो। अन्त में धोखा तथा छलकपट रोकने के लिए संख्याओं के दाग लगाए जाने लगे। लोहे की संख्यायें बनाई जाती हैं और इस प्रकार कोई सन्देह या द्विविधा शेष नहीं रह जाती। ये नए चिह्न भी घोड़े की दाहनी जाँघ पर लगाए जाते हैं। पहले जब घोड़े निरीक्षण के लिए प्रथम बार एकत्र होते थे तब उन पर संख्या १ का दाग लगाया जाता था। दूसरी बार संख्या दो का दाग लगाया जाता था। इसी प्रकार जितनी बार दाग डाले जाते थे संख्या में उतनी ही वृद्धि हो जाती थी। परन्तु अब सम्राट् ने आज्ञा दी है कि राजकुमारों, मनसबदारों, प्रान्तों के राज्यपालों (सिपह सालारों) तथा अन्य दरबारियों के घोड़ों पर भिन्न-भिन्न दाग लगाए जाँय।

जिस सावधानी से चिह्न लगाने का कार्य सम्पन्न किया जाता है उसका परिणाम यह हुआ है कि घोड़ों की मृत्यु का ठीक ठीक समाचार प्राप्त होने लगा है क्योंकि चिह्नों की पुनरावृत्ति की प्रथा प्रचलित होने (दे० आईन ८) के पश्चात् जब कोई सैनिक परिवर्तित घोड़ा लाता था तब वह प्रार्थना करता था कि उस अन्तिम वेतन पाने के बाद से घोड़ा लाने के समय तक का कुल वेतन दिया जाय और बख्शी दूसरा (परिवर्तित) घोड़ा लाने के समय से उसके वेतन का हिसाब लगाता था। किन्तु जिस समय से वर्तमान चिह्न की प्रथा प्रचलित हुई तब से नियम बना दिया गया कि सैनिक मरे हुए घोड़े के बदले जो नया घोड़ा लावे उसको चेहरा नवीसी करके उस पर वही दाग लगावें जो मुर्दा घोड़े पर लगाया गया था। चिह्न (दाग की पुनरावृत्ति के अवसर पर बख्शी इसी दाग के अनुसार कार्यवाही करें? सवारों का यह भी नियम था कि वे निरीक्षण के समय किराये के ऐसे घोड़े लाते थे जिनका आकार-प्रकार सूची में दिए हुए वर्णन से बिल्कुल मिलता जुलता था परन्तु अब चूंकि दाग लगाने की प्रथा नियमित रूप से प्रचलित है किराये के घोड़े दाग न होने के कारण सरलता से पहचान लिए जाते हैं। इस नियम ने बेईमानी का अन्त कर दिया और सैनिकों ने ईमानदारी सीखी।

आईन ८

चिह्नों की पुनरावृत्ति

सम्राट् के सेवक (मनसबदार) प्रतिवर्ष अपने घोड़ों पर नए दाग लगवाते हैं और इस प्रकार सेना की योग्यता तथा कार्यकुशलता को बनाए रखते हैं क्योंकि उनके प्रयासों से सिद्धान्तहीन पुरुष सत्य मार्ग पर चलने का आदेश प्राप्त करते हैं। यदि कोई मनसबदार अपने मनुष्यों का समारोह में लाने और घोड़ों पर दाग डलवाने में देर करता है तो उसकी जागीर (अक्ता[1]) का दशमांश ले लिया जाता है। पूर्वकाल में जब चिह्न की पुनरावृत्ति (दाग का फिर से लगाना) होती थी तो समारोह की संख्या घोड़े की जाँघ पर बना देते थे, उदाहरणार्थ यदि दूसरी बार दाग लगाया जाता था तो २ की संख्या बना दी जाती थी। इसी प्रकार दाग लगाने के साथ साथ संख्या में भी वृद्धि होती जाती थी। परन्तु अब जब कि प्रत्येक वर्ग के लिए एक विशेष चिह्न नियत कर दिया गया

[1]इस शब्द का शुद्ध उच्चारण 'इक्ता' है किन्तु भारत में साधारणतया इसको 'अक्ता' कहते हैं। इसका अर्थ है अमीरों को भूमि देना। इसलिए बादशाह को 'मुक्ती' (अमीरों को भूमि देने वाला) कहते हैं। मुगल इतिहासकार शेरशाह पर इसका दोषारोपण करते हैं (दे० ग्रन्थ तृतीय, आईन १० का अन्तिम भाग)। अकबर के पहले केवल 'अक्ता' शब्द का प्रचलन था, उसके समय में 'अक्ता' और जागीर पर्याय-वाची हो गए और उसके पश्चात् अधिकांश इतिहासकार 'जागीर' शब्द का ही प्रयोग करते थे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है तब जब कभी दाग की पुनरावृत्ति होती है तो उसी विशेष चिह्न से घोड़े को फिर दाग देते हैं। अहदियों के लिए अभी तक वही पुराना नियम प्रचलित है। कुछ बितिक्ची और सम्राट् के निकटवर्ती सेवक जिनको अपनी जागीर की देखभाल करने का समय नहीं मिलता अपना मासिक वेतन राजकीय कोष से नकद पाते हैं और प्रति १८ मास के उपरान्त अपने घोड़ों पर दाग लगवाते हैं। जो अमीर राजधानी से बहुत दूर रहते हैं वे बारह वर्ष व्यतीत होने के पहले घोड़ों का दाग लगवाने के लिए समारोह में नहीं आते। परन्तु यदि दाग लगाने के पश्चात् छः वर्ष व्यतीत हो जाते हैं तो जागीर का दशमांश ले लिया जाता है। यदि किसी मनसबदार की पदोन्नति होती है और उसके घोड़ों पर दाग लगे हुए तीन वर्ष हो जाते हैं तो उसके व्यक्तिगत वेतन में तो वृद्धि कर दी जाती है परन्तु उसके बढ़े हुए सवारों के वेतन प्रथम समारोह (दाग लगाने) के पश्चात् दिए जाते हैं। तब उसके पुराने और नए मनुष्य अपनी नियत धनराशि पाते हैं। यदि परवर्ती समारोह में चिह्न की पुनरावृत्ति के समय कोई सैनिक किसी दाग लगे हुए घोड़े के बदले में उससे उत्तम घोड़ा लाता है तो वह सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। सम्राट् उसका निरीक्षण करके उसे स्वीकार कर लेते हैं।

आईन ९

किशक[1] (चौकी) अर्थात् पहरा

किशक को हिन्दी में चौकी कहते हैं। चौकी के तीन प्रकार हैं। सेना के चारों अंग सात भागों में विभक्त किये गये हैं और प्रत्येक भाग को एक विश्वसनीय मनसबदार की देख रेख में एक दिन की सेवा सुपुर्द की गई है एक दूसरा मनसबदार जो दरबार के सब शिष्टाचारों से अवगत है 'मीर अर्ज' नियुक्त किया गया है। सम्राट् की सब आज्ञायें इन्हीं दोनों अधिकारियों के द्वारा दूसरों तक पहुँचती और पूरी की जाती हैं। ये दिन रात राजप्रासाद में उपस्थित तथा प्रत्येक राजाज्ञा को पूरी करने के लिये कटिबद्ध रहते हैं। संध्या समय राजकीय कूर राजसभा में प्रस्तुत किया जाता है। जो सवार पहरा देने के लिये आते हैं वे दाहिनी ओर खड़े होते हैं और जो समूह मुक्त होता है वह दूसरी ओर पंक्ति बद्ध खड़ा होता है, साधारणतया सम्राट् स्वयं पहरेदारों का निरीक्षण करते हैं और सैनिकों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति पर ध्यान देते हैं, दाहिनी तथा बाईं दोनों ओर के सैनिक कोर्निश करते हैं, यदि किसी विशेष आवश्यक कार्य के कारण सम्राट् इनका निरीक्षण नहीं करते तो किसी राजकुमार को इनका निरीक्षण करने की आज्ञा होती है। स्नेह, सैनिकों को उनके कर्तव्यों की शिक्षा देने तथा सामान्य क्षमता की व्यवस्था के उद्देश्य से सम्राट् पहरेदारों पर बहुत ध्यान देते हैं। यदि कोई सैनिक बिना किसी समुचित कारण के अथवा आलस्य वश अनुपस्थित होता है तो उसका एक सप्ताह का वेतन काट लिया जाता है अथवा उसको उचित डाँट फटकार मिलती है।

राज सेना बारह भागों में विभक्त की गई है जिसमें से प्रत्येक भाग एक मास तक पहरा देता है। इस व्यवस्था से दूर तथा निकट हर स्थान के रहने वाले सैनिकों को राजप्रासाद में आने तथा सम्राट् की उदारता में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होता है। परन्तु जो सैनिक सीमा पर नियुक्त रहते हैं अथवा जिन्हें कोई विशेष कार्य सुपुर्द रहता है वे अपनी वास्तविक स्थिति का समाचार भेजते रहते हैं और सम्राट् की विशेष आज्ञाओं का पालन करते रहते हैं प्रत्येक सौरमास की प्रथम तिथि को साप्ताहिक नियम के अनुसार पहरेदार सैनिक-सम्राट् को कोर्निश करने के लिए पंक्तिबद्ध खड़े होते हैं और सम्राट् के अनुग्रह से विशेष सम्मान प्राप्त करते हैं।

[1] ब्लाकमैन ने इसका अनुवाद, 'सवार प्रहरी' (mounting guard) किया है, (दे० पृ० २६७)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इसी प्रकार राज सेना बारह अन्य भागों में भी विभक्त की गई है। इनमें से प्रत्येक भाग बारी बारी से एक वर्ष के लिए प्रासाद में आता है और सम्राट् के निकट अपना कर्तव्य सम्पन्न करता है।

आईन १०

वाकया नवीसी[1]

राज्य की घटनाओं का वर्णन लिपिबद्ध करना केवल शासन के लिए ही उपयोगी नहीं है वरन् समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आवश्यक है। यद्यपि प्राचीन काल में भी इस नियम का कुछ पता चलता है तथापि इसके उच्च उद्देश्यों से केवल वर्तमान शासन में लोगों का परिचय हुआ। सम्राट् ने चौदह, उत्साही, अनुभवी तथा निष्पक्ष बितक्ची नियुक्त किए हैं जिनमें से प्रति दिन दो व्यक्ति बारी बारी से यह कार्य करते हैं। इस प्रकार चौदह दिन के पश्चात् एक बितक्ची की बारी आती है।[2] कुछ और उचित मनुष्य मनोनीत हुए हैं जो कोतल (अतिरिक्त) वाकया-नवीस के रूप में काम करते हैं। इनमें से प्रत्येक एक दिन के लिए नियुक्त होता है। यदि किसी आवश्यक कार्य से चौदह बितक्चियों में से कोई सेवा में उपस्थित नहीं होता तो एक अतिरिक्त मनुष्य उसके स्थानापन्न के रूप में कार्य करता है। इस कारण उनको 'कोतल' (या अतिरिक्त कहते हैं।

निम्नांकित को लिपिबद्ध करना वाकयानवीसों का कर्तव्य है: सम्राट् की आज्ञायें तथा कार्य; विभिन्न विभागों के अध्यक्षों के वृत्तान्त और समाचार; सम्राट् जो कुछ खाते-पीते हैं, वह कब सोते और कब जागते हैं; राजसभा का शिष्टाचार; वह समय जो सम्राट् अन्तःपुर में व्यतीत करते हैं, कब वह दरबार आम और दरबार खास में जाते हैं, सम्राट् के आखेट का समाचार, पशुओं का मारा जाना[3], सम्राट् कब प्रस्थान करते हैं और कब विश्राम करते हैं, राष्ट्र के आध्यात्मिक गुरु के रूप में सम्राट् के कार्य तथा उनको जो कुछ नजर (उपहार) के रूप में दिया जाता है, सम्राट् की चित्ताकर्षक वाणी (दे० ग्रन्थ पंचम), जो पुस्तकें पढ़कर उन्हें सुनाई जाती हैं; जो दान वह देते हैं, जो उपहार वह देते हैं, जो दैनिक तथा मासिक संयम[4] वह करते हैं; मनसबों पर नियुक्ति, सैन्यदल वेतन, जागीर, 'इर-मास'[5] द्रव्य, सयूरगाल (कर-मुक्त भूमि) करों में वृद्धि या कमी, ठेके, विक्रय, द्रव्य-हस्तांतरण; पेशकश; पत्र प्रेषण, राजाज्ञाओं का जारी होना, जिन कागजों पर महाराज के हस्ताक्षर होते हैं, वृत्तान्तों का आना, उनका संक्षिप्त संस्मरण, दरबारियों का आगमन, उनका प्रस्थान, अवधि-निर्धारण[6], पहरेदारों का निरीक्षण, युद्ध, विजय, तथा शान्ति या संधि, विख्यात व्यक्तियों की मृत्यु, पशुओं की लड़ाइयाँ और उन पर बाजियाँ लगाना; घोड़ों की मृत्यु, मृत्युदण्ड, महाराज

---

[1] वाकया = घटना + नवीसी = लिखना। इस प्रकार वाकया नवीसी का अर्थ है घटनाओं का वर्णन लिपिबद्ध करना। जो मनुष्य यह कार्य करता था उसे 'वाकया नवीस' कहते थे। प्रत्येक सूबे में एक वाकयानवीस होता था। तुजुके जहाँगीरी के अनेक स्थलों से हमें पता चलता है कि सूबों के बख्शी प्रायः वाकया-नवीसभी हुआ करते थे। (दे० तुजुक, पृ०१२१ पंक्ति २; पृ०१३७ पंक्ति १; पृ०१७१, पंक्ति ५)। [2]कदाचित् ऐसी व्यवस्था रही होगी कि पहले दिन पहले और दूसरे बितक्ची, दूसरे दिन दूसरे और तीसरे बितक्ची, तीसरे दिन तीसरे और चौथे बितक्ची और इसी प्रकार अन्य दिनों के लिए। [3]अकबर पशुओं की हत्या को सीमित करना चाहता था। [4]विशेषकर व्रत। [5]. दे. आईन ५ में टिप्पणियाँ। [6]'ताईने मुद्दत' का अर्थ फुटनोट में ब्लाकमैन ने समय-समय पर होने वाले निरीक्षणों का निर्धारण किया है (दे. पृ. २६६), और मौलवी फिदाअली ने कारहाय सलतनत के अन्सराम की मुद्दत का ताअयुन अर्थ किया है। (दे० पृ० ३८२)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

द्वारा क्षमा-प्रदान, दरबार आम की कार्यवाही, विवाह, जन्म, चौगान के खेल (दे० आईन २६), चौपड़ नर्द, शतरंज, कार्ड के खेल आदि, असाधारण घटनायें तथा दृश्य, वर्ष की फसलें, घटनाओं के वृतान्त।

इसके पश्चात् एक विशेष राजकीय सेवक दैनन्दिनी को शुद्ध करता है और तब वह महाराज के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है और वह स्वीकृति प्रदान करते हैं। बितक्ची प्रत्येक रिपोर्ट की प्रतिलिपि तैयार करता है, उस पर हस्ताक्षर करता है और जो व्यक्ति उसे प्रमाण के रूप में चाहता है उसे देता है। ऐसी स्थिति में उस कागज पर 'परवान्ची' और 'मीर अर्ज' के भी हस्ताक्षर होते हैं और इसके पश्चात् जिस सेवक ने दैनन्दिनी पर महाराज की स्वीकृति ली थी वह हस्ताक्षर करता है। यह सब कार्यवाही हो जाने पर रिपोर्ट को 'याद-दाश्त' या स्मृति-पत्र कहते हैं।

इनके अतिरिक्त, अनेक लिपिक नियुक्त किए गए हैं जिनकी लिखावट बहुत सुन्दर तथा चित्ताकर्षक है। उपरोक्त याद-दाश्त पूर्ण होने पर उनके सुपुर्द की जाती है। वे उसे अपने पास रखते हैं और उनका संक्षेप कर देते हैं। इस पर हस्ताक्षर करके वे याद-दाश्त के बदले में इसको लौटा देते हैं। इस संक्षिप्त रूप पर 'वाकया नवीस' 'रिसालादार', 'मीर अर्ज' और 'दारोगा' के हस्ताक्षर होते हैं और उनकी मुहरें लगती हैं। इस प्रकार से पूर्ण किया हुआ संक्षिप्त रूप 'तआलिका' कहलाता है और उसका लेखक 'तआलिकानवीस' कहलाता है।

तब, जैसा ऊपर कहा गया है, तआलिका पर राज्य के अधिकारियों का हस्ताक्षर होता है और मुहर लगती है।

महाराज का उद्देश्य यह है कि प्रत्येक कर्तव्य सुचारू रूप से सम्पादित किया जाय और किसी विभाग में अनुचित वृद्धि या कमी न हो, बेईमान लोग निकाल दिए जांय और ईमानदारों का सम्मान किया जाय, तथा कर्मण्य सेवक निर्भय होकर अपना कर्तव्य पूरा करें और असावधान एवं भुलक्कड़ लोगों का निरीक्षण तथा नियंत्रण होता रहे।

आईन ११

सनद (प्रमाणपत्र)

धन का प्रत्येक मामला तभी सन्तोषजनक रूप से तै हो सकता है जब सम्बद्ध पक्ष के लोग अपने हार्दिक विचारों को स्पष्ट प्रकट करें और तब लेखनी की सहायता से अपने वक्तव्य को साफ-साफ लिपिबद्ध करें। लेखे का प्रत्येक लिखित वक्तव्य 'सनद' कहलाता है। सब श्रेणी के लोग इसी प्रथा का अनुसरण करते हैं।

'सनद' वह प्रमाण पत्र है जिसके द्वारा खजांची अपने सब दायित्वों से मुक्त होता है और जिसके आधार पर लोगों के पावना की भुगतान होती है। ईमानदार अनुभवी अधिकारी जिनके ललाट पर शुद्धता की मुहर दीप्तिमान् है स्वीकार-पत्र (इकरारनामा को आबद्ध पृष्ठों और पन्नों पर लिखते हैं जिससे अभिमत विषय विस्मृत न हो जाय। वे आबद्ध पन्ने जिन पर सनदें लिखी जाती हैं 'दफ्तर' कहलाते हैं।

महाराज ने इस विभाग का पूर्ण परिचय प्राप्त किया और इसका कार्य सुव्यवस्थित ढंग से होने लगा। उन्होंने चतुर, ईमानदार, शुद्धाचारी तथा अनुभवी लिपिक नियुक्त किए हैं और 'दफ्तर' का प्रबन्ध निष्पक्ष अधिकारियों को सौंपा है जो उनके अतिसन्निहित नियंत्रण में रहते हैं।

साम्राज्य का 'दफ्तर' तीन भागों में विभक्त है :

१. अववाबुलमाल या राजस्व-सम्बन्धी प्रविष्टियाँ—दफ्तर के इस भाग में साम्राज्य के राजस्व, वृद्धि या कमी के विवरण तथा आय के अन्य स्रोतों (जैसे उपहार आदि) का उल्लेख रहता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२. अरबाबुल्तहावील--इस भाग में राजकीय शालाओं के सम्पूर्ण व्यय लिखे होते हैं, दरबार में नियुक्त खजांचियों को दी हुई और उनसे प्राप्त हुई धनराशि का विवरण होता है, तथा दैनिक क्रय-विक्रय की वस्तुओं का लेखा रहता है।

३. तौजीह[1]—इस भाग में सेना के वेतन की सब प्रविष्टियाँ होती हैं और उस विधि का उल्लेख होता है जिससे वेतन वितरण होता है।

कुछ सनदों पर केवल सम्राट् की मुहर लगी होती है। कुछ सनदों पर अरकाने दौलत (राज्य-मंत्रियों) की मुहर लगती है; तत्पश्चात् वे महाराज के सम्मुख हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत की जाती हैं। कुछ सनदें ऐसी हैं जिनपर केवल दरबार के अमीरों के हस्ताक्षर होते हैं और मुहरें होती हैं। इसका विवरण निम्नांकित है।

फरमाने सब्ती

यह फरमान तीन उद्देश्यों के लिए जारी किए जाते हैं;

१. मनसबदार की नियुक्ति के लिए, वकील की नियुक्ति के लिए, सिपहसालार (प्रान्त के राज्यपाल अथवा प्रधान सेनाध्यक्ष) की नियुक्ति के लिए, राजकुमारों के शिक्षकों की नियुक्तियों के लिए; अमीरुल उमरा की नियुक्ति के लिए, नाहियती या जिले के अधिकारी की नियुक्ति के लिए, वजीर या अर्थमंत्री की नियुक्ति के लिए, बख्शी की नियुक्ति के लिए सद्र या न्यायाधीश की नियुक्ति के लिए।

२. बिना सैनिक सेवा की जागीर प्रदान करने के लिए[2]; नव विजित भूखंड को साम्राज्य में सम्मिलित करने तथा उसके लिए अधिकारियों की नियुक्ति के लिए; कभी कभी .....[3]।

३. सयूरगाल प्रदान के लिए (दे० आईन १९); दैनिक व्यय का भत्ता देने के लिए, और लोकोपकारी दान के लिए।

जब 'तआलीका' पूरा हो जाता है तब 'दीवाने जागीर' (जो जागीरों का लेखा-जोखा रखता है) निर्दिष्ट धनराशि चुका देता है। यदि जागीर सैनिक सेवाओं के लिए दी गई है और जागीरदार को आज्ञा मिली है कि वह समारोह में घोड़ों को चेहरा नवीसी के लिए लावे तब दानपत्र एक बार फिर जाँच के लिए बख्शियों के पास भेजा जाता है और उस पत्र की पीठ पर या कोने में निम्नांकित शब्द लिख दिए जाते हैं: खासा ओ मरदुम बर आबुर्द नुमायन्द; कार गराने ईन शुगल चेहरा नवीसी कुनन्द (यह विशेष हैं, वेतन की बर आबुर्द (प्राक्कलन) तैयार की जाय। सम्बंधित अधिकारी चेहरा नवीसी अर्थात् वर्णनात्मक सूचियाँ बनाने के लिए तैयार रहें। तत्पश्चात् समारोह के समय जब घोड़ों पर दाग लग जाता है तब 'मुख्य बख्शी' 'तआलीका' को अपने पास रख लेता है और उसके बदले में एक दूसरा अभिलेख देता है जिस पर मासिक वेतन लिखा रहता है और उस पर मुख्य बख्शी का

[1]या, सेना को वजेह (वेतन) देना अतएव तौजीह का अर्थ है सैनिक लेखा। कुछ पाण्डुलिपियों में तौजीहाह मिलता है। [2]मालूम होता है कि जिन जागीरों के लिए सैनिक सेवा नहीं करनी पड़ती थी वे 'बेदाग ओ महल्ली' कहलाती थीं अर्थात् इस प्रकार के जागीरदार को न तो सेना और समारोह से कुछ सम्बन्ध था जब मनसबदार अपने सैनिकों का वेतन वसूल करते थे और न तो महालों या परगनों से कर वसूल करने से। इस प्रकार फतेहउल्ला शीराजी को 'बसावर' जागीर 'बेदाग व महल्ली' के रूप में प्रदान किया गया था। (दे० बदायूनी, पृ० ३१५)। बदायूनी को भी १००० बीघे की जागीर दी गई थी जिस पर वह प्रायः असन्तोष प्रकट किया करता था और हँसी में अपने आपको 'हजारी' कहता था। [3]मूल पुस्तक में 'जाय ब उनवाने मुल्क (या मिल्क) दादन' दिया है जिसका अर्थ समझ में नहीं आता—ब्लाकमैन, पृ० २७१।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हस्ताक्षर रहता है तथा मुहर लगी रहती है। यह अभिलेख जो बख्शी 'तआलीका' के बदले में देता है 'सरखत' कहलाता है।

सरखत सब 'उपबख्शियों' के दफ्तर में जमा होते हैं और विशेष चिह्नों के द्वारा उनको एक दूसरे से अलग करते हैं। तब दीवान 'सरखत' अपने पास रख लेता है और उसके आधार पर वार्षिक तथा मासिक वेतन का लेखा तैयार करके उसे सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करता है। यदि सम्राट् जागीर प्रदान करने की आज्ञा देते हैं तो लेखा के सिरे पर ये शब्द अंकित किए जाते हैं "तआलीक ये तन गलमी (कलमी) नुमायन्द" वेतन का प्रमाण पत्र लिखा जाय)। यह आज्ञा बितिक्चियों के लिए पर्याप्त होती है वे आज्ञापत्र को अपने पास रख लेते हैं और इस आशय का एक लेख तैयार करते हैं। दीवान इस अभिलेख का निरीक्षण करता है और इस पर 'सन्तनुमायन्द' (दफ्तर में दाखिल किया जाय) शब्द लिखकर इसका समर्थन करता है। इसके पश्चात् अभिलेख पर दफ्तर का चिह्न बनाया जाता है और दीवान, बख्शी और मुशरफ दीवान की मुहरें क्रम से लगाई जाती हैं और हाशिये पर महाराज की दानाज्ञा लिखी जाती है। इस प्रकार की पूर्ति हो जाने पर अभिलेख दीवान के पास उसके हस्ताक्षर के लिए भेजा जाता है।

'साहिबे तौजीह' (सैन्य लेखाधिकारी) पूर्वोक्त 'तआलीका' को अपने पास रख लेता है परन्तु उसका पूर्ण ब्यौरा 'फरमान' पर लिख कर अपना हस्ताक्षर करके मुहर लगा देता है तब 'मुस्तौफी उसका निरीक्षण करके उस पर अपना हस्ताक्षर करता तथा मुहर लगाता है। इसके उपरान्त नाजिर और बख्शी भी ऐसा ही करते हैं। फिर 'दीवान', उसका 'मुशरिफ' और राज्य के वकील उस पर मुहर लगाते हैं।

यदि महाराज नकद वेतन की आज्ञा देते हैं तो फरमान पर ऐसी ही कार्यवाही होती है। इस प्रकार के फरमान को साधारणतया 'बरात' (हुंडी या चेक) कहते हैं। उसके नीचे सम्बद्ध विषय की पूर्ति की कार्यवाही का विवरण लिख देते हैं। नाजिर के पश्चात् 'दीवान ब्यूतात' उस पर हस्ताक्षर करता है और बख्शियों तथा दीवान के हस्ताक्षर के पश्चात् 'खान सामान' उस पर हस्ताक्षर करता है और मुहर लगाता है। राजकीय कारखानों (या विभागों) के व्यय और उनकी रसीदें, तहवील (जमा) और सेवकों के वेतनों (जिसमें से कुछ को सैनिक वर्णनात्मक सूची पर वेतन दिया जाता है और शेष हस्तिशाला, अश्वशाला या गाड़ी विभाग में की हुई सेवाओं के अनुसार वेतन पाते हैं) कि सब कार्यवाही 'बरात' के अनुसार की जाती है। प्रत्येक विभाग का मुशरिफ (लेखाधिकारी) वर्ष में दो बार बरात तैयार करता है, एक छः मास के लिए फरवरदीन (फरवरी-मार्च) से शहरीवार (अगस्त) तक और दूसरा मिह (सितम्बर) से इस्फन्दियारमुज (जनवरी) तक। मुशरिफ दाना और घास आदि का मूल्य तथा परिमाण आदि अंकित करता है और साथ ही सेवकों के वेतनों की धनराशि लिखकर हस्ताक्षर करता है। 'दीवाने ब्यूतात' इन सूचियों का सूक्ष्म निरीक्षण करता है और धनराशि की भुगतान की आज्ञा देता है। यदि धनराशि में पहले की अपेक्षा न्यूनाधिक्य होता है तो दीवान उसकी भली भांति जांच पड़ताल करता है और हाशिये पर लिखता है "अज तहवीले फलानी बरात नवीसन्द' (अमुक अमुक मुशरिफ के पास जमा की जाने वाली धनराशि की 'बरात' तैयार की जाय)। तब कारखाने का मुशरिफ उसे लेता है और आज्ञा तथा रसीद लिखकर हस्ताक्षर करता है और मुहर लगाता है। नकद धन भुगतान करने में चतुर्थांश काट लिया जाता है और उस धनराशि के लिए दूसरी 'सनद' दी जाती है। तब दीवाने ब्यूतात उसको दाखिल करने की आज्ञा देता है। मुशरिफ इस आज्ञा की पूर्ति करता है और बरात तथा रसीद पर हस्ताक्षर करके मुहर लगाता है। तत्पश्चात् साहिबे तौजीह (सैन्य लेखाधिकारी), नाजिर, दीवाने ब्यूतात, दीवाने कुल; खाने सामान, मुशरिफे दीवान, और वकील उस पर हस्ताक्षर तथा मुहर करते हैं। प्रत्येक दशा में बरात के साथ बर आउर्द (अनुमानित व्ययपत्र) भी रहता है जिससे किसी प्रकार की गलती न होवे। जब वह सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत हो चुकती है तब मुशरिफ रसीद लिखता है जो उपरोक्त विधि से विभिन्न

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दफ्तरों में प्रविष्ट होती है। धनराशि की भुगतान का विधि-विवरण भी उस पर पृष्ठांकित किया जाता है; अर्थात् चतुर्थांश की भुगतान अशर्फियों में, अर्द्धांश की रुपयों में और चतुर्थांश दामों में की जाती है। इस कार्य में सिक्कों के निर्दिष्ट मूल्य का ध्यान रखा जाता है।

फरमाने मनसब (मनसबदारों के फरमान) भी इस प्रणाली से अंकित तथा प्रचालित होता है किन्तु उससे सम्बंधित कागज-पत्र कारखानों और शालाओं के अधिकारियों के पास नहीं भेजे जाते।

जहाँ तक 'सयूरगाल' (दे० आईन १९) मुस्तौफी के हस्ताक्षर के पश्चात् फरमानों की प्रविष्टि दीवाने सआदत (दे० आईन १९) के दफ्तरों में की जाती है और इसके उपरान्त सद्र तथा दीवाने कुल उन पर हस्ताक्षर तथा मुहर करते हैं। कभी कभी फरमान 'तुगरा' अक्षरों में लिखे जाते हैं परन्तु प्रथम दो पंक्तियाँ अन्य पंक्तियों से छोटी नहीं होतीं। ऐसे फरमान को 'परवान्चा' कहते हैं

परवान्चे निम्नांकित के लिए जारी किए जाते हैं : बेगमों और राजकुमारों के निर्दिष्ट वेतनों के लिए, दीवाने सआदत की देख रेख में रहने वाले लोगों की वृत्तियों के लिए (दे० आईन १९), अहदियों, चेलों, और कारखानों के कुछ अधिकारियों के वेतनों के लिए, और बोझा ढोने वाले घोड़ों के भोजन के भत्तों के लिए (दे० आईन ५४ ग्रन्थ प्रथम)। खजान्ची प्रति वर्ष नई सनद नहीं माँगता बल्कि केवल रसीद देने पर जिस पर राज्य के मंत्रियों के हस्ताक्षर और मुहर होती है धनराशि दे देता है। मुशरिफ रसीद लिखता है जिसपर पाने वाला हस्ताक्षर करता है और तब वह आज्ञा के लिए दीवान के पास भेजी जाती है। इस पर मुशरिफ मुस्तौफी, नाजिरे व्यूतात, दीवाने कुल, खाने सामान, और मुशरिफे दीवान के हस्ताक्षर होते हैं। अहदियों के वेतन जारी करने के लिए जो परवान्चे दिए जाते हैं उन पर मुस्तौफी, दीवान और बख्शी के हस्ताक्षर और मुहर के बाद अहदीबाशी (अहदियों के अध्यक्ष) के हस्ताक्षर, मुहर और आज्ञा की आवश्यकता होती है क्योंकि दयालुता के उद्देश्य से तथा इस विचार से द्रव्यराशि के चुकाने में देर न हो यह आज्ञा दी है कि इन परवान्चों को निरीक्षणार्थ उनके सम्मुख प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

सरखतों, क्रय-विक्रय की रसीदों, निर्खनामों (मूल्य-सूचियों); अर्जनाम्चों (द्रव्यराशियों के विवरण जो खालसे के तहसीलदार दरबार में भेजते हैं), करारनामों (वह अभिलेख जिसमें रैयत से तहसीलदारों द्वारा वसूल की हुई धनराशि का विवरण होता है), और मुकासा (हिसाब का वह विवरण जो तहवीलदार मुस्तौफी से लेता है और जिससे यह प्रकट होता है कि जमा की हुई धनराशि ठीक तरह से व्यय की गई है) पर भी महाराज हस्ताक्षर नहीं करते।

आईन १२

मुहरों के क्रम

फरमान, परवान्चा और बरात कई तहों में मोड़े जाते हैं। तह कागज के अन्त से आरम्भ होती है। पहली तह दूसरी तहों से कम चौड़ी होती है। इस तह के किनारे पर जहाँ कागज काटा जाता है वकील अपनी मुहर लगाता है। उसके सामने परन्तु थोड़ा नीचे मुशरिफ दीवान अपनी मुहर इस प्रकार लगाता है कि उसका आधा भाग दूसरे पर्त पर लगता है। इसी प्रकार परन्तु उससे कुछ नीचे सद्र की मुहर होती है। परन्तु जब शेख अब्दुन्नबी और सुल्तान ख्वाजा सद्र थे तो वे अपनी मुहरें वकील की मुहर के सामने लगाते थे। इस पर्त के मध्य में उस व्यक्ति की मुहर लगती है जो पद में वकील का निकटतम होता है जैसा कि मुनीम खां और अदहम खां के समय में अत्का खां का हाल था। मीर माल, खान, सामान, और परवान्ची आदि दूसरी तह पर अपनी मुहर इस प्रकार लगाते हैं कि उसका

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

थोड़ा सा भाग पहली पर्त पर भी पड़ता है। दीवान और बख्शी की मुहरें दूसरी तह के किनारे से आगे नहीं जातीं। दीवान जुज और बख्शिये जुज और दीवाने ब्यूतात अपनी मुहरें तीसरी तह पर लगाते हैं। मुस्तौफी चौथी तह पर और साहिबे तौजीह पाँचवीं तह पर मुहर लगाता है। सम्राट् की मुहर तुगरा पंक्तियों के ऊपर फरमान के शीर्ष पर लगती है। तआलिका के शीर्ष पर राजकुमारों की मुहरें लगती हैं।

आईन १३

फरमाने बैयाजी

शासन के कुछ मामले ऐसे होते हैं कि न तो उनमें देर की जा सकती है और न वे सर्वसाधारण को बतलाये जा सकते हैं। इस प्रकार के कार्यों के विषय में जो फरमान जारी होते हैं उनपर केवल सम्राट् की मुहर लगती है और उनको फरमाने बैयाजी (कोरा फरमान कहते हैं)। इन फरमानों को लपेट कर उनके दोनो सिरों को परस्पर मिला देते हैं और सिरों पर कागज की एक गांठ देकर उस पर लाख की मुहर इस प्रकार लगा देते हैं कि फरमान का विषय देखा नहीं जा सकता। लाख कुनार, बर पीपल तथा अन्य वृक्षों की गोंद से बनाई जाती है। गर्म करने पर यह मोम की तरह फैल जाती है और बाद में ठंढी होने पर कठोर हो जाती है। मुहर किए हुए फरमान सुनहले थैलों (खरीतों) में रखे जाते हैं क्योंकि सम्राट् वैभव के बाह्य चिह्नों के उपयोग को भी ईशोपासना का कार्य समझते हैं। इन फरमानों को मनसबदार, अहदी तथा प्यादे सम्बंधित व्यक्तियों तक पहुँचाते हैं।

जब किसी अधिकारी के पास ऐसा फरमान पहुँचता है तो वह उसका स्वागत करने के लिए कुछ दूर आगे बढ़ता है, आदर-सत्कार के विभिन्न कार्य करता है, फरमान को अपने सिर पर रखता है, सिज्दा करता है और महाराज द्वारा दिए हुए मान तथा पद अथवा अपनी स्थिति के अनुसार समाचार-वाहक को पुरस्कार देता है। महाराज की इच्छा के अनुसार खरीतों पर फरमाने बैयाजी की भाँति लाख की मुहर लगाई जाती है जिससे फरमान की शब्दावली में किसी प्रकार का परिवर्तन सम्भव नहीं रहता। इसके परिणाम स्वरूप बहुत कष्ट टल गया और बेईमानियाँ बन्द हो गईं।

आईन १४

वेतन देने की प्रणाली

जो व्यक्ति अपने सौभाग्य से सेना में भरती होता है और समारोह में ले जाने पर उसके घोड़ों पर दाग लग जाता है तो बिना प्रतीक्षा के कष्ट और व्यय के उसको सनद मिल जाती है। वेतन का सब हिसाब दामों में किया जाता है। परन्तु बर आउर्द बनाने के समय उसको वेतन का अर्द्धांश रुपयों में मिलता है। हर रुपया अड़तीस (पांडुलिपियों में अड़तालीस लिखा है) दाम का होता है। शेष का आधा (अर्थात् कुल का चतुर्थांश) मुहरों में दिया जाता है। मुहर नौ रुपये के बराबर होती है। शेष चतुर्थांश दामों में सामानों के लिए दिया जाता है। जब रुपये का मूल्य चालीस दाम कर दिया गया तब महाराज के अनुग्रह से सैनिकों को वेतन भी उसी हिसाब से मिलने लगा। प्रतिवर्ष एक मास का वेतन घोड़े तथा सामानों के बदले में काट लिया जाता है। घोड़े का मूल्य वास्तविक क्रय मूल्य ५० प्रतिशत अधिक पर निर्णीत होता है। परन्तु चूँकि घोड़ों के क्रय में बहुत सावधानी से काम लिया जाता है इस

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लिए यह मूल्य वृद्धि सैनिकों के लिए हानिप्रद नहीं होती। इसके अतिरिक्त, अहदी सवार राज्य के आवश्यक कार्यों और महाराज के आज्ञा-पत्रों और फरमानों के पहुँचाने में सदा व्यस्त रखे जाते हैं और इन फरमानों के प्राप्त करने वाले अहदियों की सेवाओं के लिए उन्हें पुरस्कार देते हैं। यदि वे अपनी सेवायें सुचारु रूप से करते हैं तो पुरस्कार का सारा धन उन्हें उपहार के रूप में दे दिया जाता है, नहीं तो इस पुरस्कार का एक भाग उनके मासिक वेतन में जोड़ दिया जाता है।

कर्तव्य पालन में उत्साह की शिक्षा देने तथा आलस्य की छाप मिटाने के उद्देश्य से सम्राट् उन सैनिकों पर अर्थ-दण्ड लगाते हैं जो किशक (चौकी) में अनुपस्थित रहते हैं। अहदी का पन्द्रह दिन का वेतन और अन्य सैनिकों का एक सप्ताह का वेतन कट जाता है।

प्रत्येक तावीनवाशी (सेनादल के अध्यक्ष) को अधिकार है कि वह अपने सैनिकों के वेतन का बीसवां भाग अपने पास रख ले और आवश्यकता के समय इस धनराशि में से व्यय करे।

आईन १५

मुसाअदत (अधिकारियों को ऋण)

जो उच्चाधिकारी जागीरदार हैं या मासिक वेतन पाते हैं वे यदा कदा कठिनाई में पड़ सकते हैं। ऐसी परिस्थिति में उनका दूसरों से उपहार माँगना शासन के नियमों के विरुद्ध होगा। इस कारण महाराज ने एक खजांची और एक पृथक् मीर अर्ज नियुक्त किया है और जो व्यक्ति ऋण लेना चाहते हैं वे किसी असम्मान अथवा प्रतीक्षा के कष्ट के बिना अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। प्रथम वर्ष ऋण राशि में कोई वृद्धि नहीं होती। दूसरे वर्ष ऋण का $\frac{1}{16}$, तीसरे वर्ष $\frac{1}{8}$, चौथे वर्ष $\frac{1}{4}$, पांचवें से सातवें वर्ष तक $\frac{1}{2}$, आठवें से दसवें वर्ष तक $\frac{3}{4}$, और दस वर्षों के पश्चात् ऋण की दूनी धनराशि वसूल की जाती है। दस वर्ष के व्यतीत होने के उपरान्त ऋण राशि में कोई वृद्धि नहीं होती।

महाराज का एक मात्र उद्देश्य यह है लेन-देन के कार्य कलाप में लोगों को औचित्य की शिक्षा दी जाय अन्यथा इस कार्य की व्यावसायिकता के कारण उनमें कभी पारस्परिक सम्मान का भाव नहीं विकसित हो सकता।

इस आईन से अत्यधिक व्याज लेने वाले विवेकहीन मनुष्य उचित मार्ग पर लाए गए और इस प्रकार अनौचित्य का अन्त हुआ तथा सुव्यवस्था स्थापित हुई।

आईन १६

उपहार

मानव प्रकृति के ज्ञान के कारण महाराज विभिन्न प्रकार से पुरस्कार और उपहार देते हैं। देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि वह ऋण देते हैं परन्तु अपने हृदय से वह उपहार देते हैं; अथवा यों कहना चाहिए कि वह उपहार को ऋण कहते हैं परन्तु उनको कभी वसूल नहीं करते। निकटवर्ती तथा दूरवर्ती, धनी और निर्धन सभी महाराज के पुरस्कारों और उपहारों से लाभान्वित होते हैं। नकद के अतिरिक्त वह हाथी, घोड़े तथा अन्य बहुमूल्य पदार्थ उपहार में देते हैं। प्रतिदिन बक्शी चौकीदारों तथा अन्य सैनिकों के नामों की सूची पढ़ते हैं और पहले उनका उल्लेख करते

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

हैं जिन्हें कभी कुछ प्राप्त नहीं हुआ है। महाराज उन्हें अश्व प्रदान करते हैं। जो सैनिक उपहार में घोड़ा पाता है वह एक वर्ष तक सम्राट् के सम्मुख किसी दूसरे उपहार के लिये नहीं प्रस्तुत किया जाता।

आईन १७

दान

सम्राट् दीन-दुखियों को धन तथा जीवन के अन्य आवश्यक पदार्थ दान देते हैं और इस प्रकार गुप्त तथा सार्वजनिक रूप से लोगों के हृदय पर अपना अधिकार जमाते हैं। अनेक लोग दैनिक, मासिक अथवा वार्षिक दान पाते हैं और यह दान उन्हें बिना प्रतीक्षा का कष्ट उठाये हुये मिलता है। सम्राट् के निकटवर्ती लोगों की सिफारिश के अनुसार जो द्रव्य राशि कुछ लोगों को मिलती है उसका वर्णन करना असम्भव है और जो धन प्रतिदिन भिखारियों अथवा दीन-दुखियों के लिए स्थापित किये हुये भोजनालयों के लिए दिया जाता है उसके वर्णन करने में अत्यधिक समय लगेगा।

राज-दरबार में सदैव एक खजांची विद्यमान रहता है। जो भिखारी महाराज के सम्मुख उपस्थित होता है उसे अवश्य दान प्राप्त होता है।

आईन १८

तुलादान

कल्याण के लिए तथा दीनों को दान देने के अवसर के रूप में सम्राट् वर्ष में दो बार तौले जाते हैं। विभिन्न वस्तुयें तराजू में रखी जाती हैं। आवान मास के प्रथम दिन (अक्तूबर १५) जो सम्राट् का सौर जन्म-दिवस है महाराज निम्नांकित बारह वस्तुओं से बारह बार तौले जाते हैं। सोना, पारा, रेशम, सुगन्ध, तांबा, रूहेतूतिया, औषधि, घी, लोहा, चावल की खीर, सप्तान्न, नमक। जो वस्तु जितनी मंहगी है वह उतनी ही पहले तौली जाती है। इनके अतिरिक्त सम्राट् की आयु का जो वर्ष होता है उसी संख्या में भेड़ें, बकरियां और मुर्गियां उन दीन व्यक्तियों को दान दी जाती हैं जो उनको पालते और उनकी नस्ल बढ़ाकर लाभ उठाते हैं। बहुत से छोटे पशु बन्धन मुक्त कर दिए जाते हैं।

दूसरी बार रजब की पाँचवी तिथि[1] को महाराज आठ वस्तुओं अर्थात् चाँदी, रांगा, वस्त्र, सीसा मेवा, शीरीनी, कड़ुवा तेल और सब्जी से तौले जाते हैं। दोनों अवसरों पर सालगिरह (जन्म-दिवस) का उत्सव मनाया जाता है और सब श्रेणियों के लोगों को उपहार दिए जाते हैं अथवा क्षमा प्रदान की जाती है।

राजकुमार तथा सम्राट् के पौत्र सौर वर्ष में एक बार तौले जाते हैं। राजकुमार के तुलादान की प्रथा उनकी दो वर्ष की अवस्था से आरम्भ होती है और प्रथम बार वे केवल एक ही वस्तु से तौले जाते हैं। प्रति वर्ष एक नई वस्तु की वृद्धि होती है। जब वे बड़े हो जाते हैं तो साधारणतया सात या आठ वस्तुओं से तौले जाते हैं परन्तु बारह से अधिक वस्तुओं से कभी नहीं तौले जाते। सामान्य प्रथा के अनुसार पशु बन्धन मुक्त किए जाते हैं।

[1] सम्राट् का चान्द्र जन्म-दिवस। चूँकि यह मुसलमानी जन्म-दिवस था इसलिए वस्तुएँ संख्या तथा मूल्य दोनों में कम होती थीं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

इस कार्य के लिए एक पृथक् लेखाधिकारी तथा खजान्ची नियुक्त किए जाते हैं जिससे इस विभाग के व्यय में दुर्व्यवस्था न होने पावे।[1]

आईन १९

सुयूरगाल

सम्राट्, प्रजापालन के ध्यान से विभिन्न श्रेणियों के लोगों को दान तथा उपहार देते हैं और अपनी ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि से उसे भगवदुपासना समझते हैं। सम्राट् की यह सदा इच्छा रहती है कि विभिन्न श्रेणी के लोगों के सम्मान तथा पद में अन्तर बना रहे। अतएव वह निम्नांकिह चार श्रेणियों के लोगों को भूमि तथा वृत्ति प्रदान करते हैं :

प्रथम, तत्वान्वेषी लोग जो संसार की प्रत्येक वस्तु से पराङ्मुख हैं और सत्य ज्ञान के अनुसंधान में अहर्निश व्यस्त रहते हैं। द्वितीय, जो आत्म-त्याग के लिए घोर परिश्रम करते हैं और एकान्त स्थान में मानव प्रकृति की स्वार्थपूर्ण वासनाओं से संघर्ष करते हैं। तृतीय, जो दुर्बल तथा दीन हैं और जो जीविकोपार्जन में असमर्थ हैं। चतुर्थ कुलीन भद्रपुरुष जो ज्ञानाभाव के कारण कोई व्यवसाय नहीं कर सकते।

जीविका के लिए जो धन नकद दिया जाता है उसको वजीफा कहते हैं; जो भूमि दी जाती है उसे मिल्क अथवा मददे मआश कहते हैं इस प्रकार करोड़ों रुपए दिए जाते हैं और तिस पर भी दानों और उपहारों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है।

दान देने के पहले मनुष्यों की परिस्थिति की जाँच पड़ताल करनी होती है और उनके प्रार्थनापत्रों पर निष्पक्ष भाव से न्यायपूर्वक विचार करना होता है, अतएव इस कार्य का सम्पादन करने के लिए एक अनुभवी तथा सदाचारी अधिकारी नियुक्त किया जाता है। प्रत्येक दान के साथ उसका मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध होना चाहिए और वचन तथा कर्म से उसको जनता के प्रति दयालु होना चाहिए। इस अधिकारी को सद्र कहते हैं। काजी तथा मीर अद्ल उसके अधीन होते हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य में एक लिपिक उसकी सहायता करता है और आर्थिक विषयों की देख-रेख करता है। वह दीवाने सआदत कहलाता है।

महाराज ने दयालुता से अपने सेवकों को यह आज्ञा दे रखी है कि वे ऐसे मनुष्यों को उनके सम्मुख प्रस्तुत करें जो दान के पात्र हों। इस प्रकार अनेक लोग अभीष्ट सहायता प्राप्त करते हैं।

जब महाराज ने इस विभाग की जाँच पड़ताल आरम्भ की तो ज्ञान हुआ कि पूर्ववर्ती सद्र उत्कोच तथा भ्रष्टाचार के अपराधी हैं। अतएव अपने निकट मित्रों के परामर्श से उन्होंने शेख अब्दुन्नबी को इस महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया। जो भूमि अफगानों और चौधरियों के अधिकार में थीं वे ले ली गईं और खालसा भूमि में सम्मिलित

---

[1]तुजुके जहाँगीरी (पृ० १६३) और पादिशाहनामा (प्रथम भाग, पृ० २४३) के अनुसार सम्राट् के शरीर का तौल जाना अकबर के द्वारा प्रारम्भ किया था। यह एक प्राचीन हिन्दू प्रथा थी। पहले अपने जन्म दिवस को सम्राट् तौले जाते थे परन्तु इलाही (सौर) सम्वत आरम्भ होने पर प्रत्येक वर्ष के इतिहास में हमें वज़ने शमशी या सौर तुलादान तथा वजने कमरी या चान्द्र तुलादान का उल्लेख मिलता है। ऐसे अवसरों पर जश्न या भोज होता था और उसी दिन दरबारियों को उच्च मनसब प्रदान किया जाता था या पेशकश दिया जाता था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कर दी गई । इसके अतिरिक्त जो अन्य भूमि मददे मआश में दी गई थीं उनकी सनदों की जाँच पड़ताल की गई और उसके परिणाम के अनुसार कार्यवाही की गई । कुछ समय के उपरान्त यह रिपोर्ट मिली कि जिन व्यक्तियों को वृत्ति रूप (मददे मआश) में भूमि प्रदान की गई है उनकी सब भूमि एक ही स्थान पर नहीं है जिसका परिणाम यह होता है कि जिन निर्धन तथा दुर्बल लोगों की भूमि खालसा या मनसबदारों की जागीर की निकटवर्ती है उनको अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं और विवेकहीन व्यक्ति उनकी भूमि पर अतिक्रमण करते हैं । महाराज ने आज्ञा दी कि यह लोग कोई स्थान चुन लें और अपनी सब भूमि वहीं पर लें । यह आज्ञा दोनों समुदायों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई । इस आज्ञा के प्राप्त होने पर शासन के अधिकारियों ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ गाँवों को पृथक कर दिए । इस प्रकार जो शक्तिहीन थे उनकी रक्षा हुई और सिद्धान्तहीन लोगों का दूसरों की भूमि पर अतिक्रमण समाप्त हो गया ।

परन्तु जब समय ने अपनी रीति के अनुसार, रहस्योद्घाटन करना आरम्भ किया तब वर्तमान सद्र के विषय में भी अनेक किम्वदन्तियाँ महाराज के कानों तक पहुँचीं । अतएव आज्ञा हुई कि जिन लोगों को पाँच सौ बीघों से अधिक भूमि प्रदान की गई है वे स्वयं अपने फरमान महाराज के सम्मुख प्रस्तुत करें और जो ऐसा न करेंगे उनकी भूमि जब्त कर ली जायगी । तथापि माफीदारों के कार्य महाराज के बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श के अनुसार नहीं थे, अतएव आज्ञा हुई कि एक सौ बीघे से अधिक भूमि को, यदि फरमानों में वृद्धि का उल्लेख न हो घटा कर $\frac{3}{4}$ कर दिया जाय और $\frac{3}{4}$ भाग खालसा भूमि में मिला लिया जाय । केवल ईरानी और तूरानी स्त्रियों को इस आज्ञा से छूट दी गई थी ।

महाराज के पास समाचार पहुँचा कि अशिष्ट और लोभी लोग अपनी पुरानी भूमि को छोड़कर नई भूमि पर अधिकार कर लेते हैं, तब उन्होंने आज्ञा दी कि जो व्यक्ति ऐसा करे उसकी माफी का चौथाई भाग जब्त करके उसको नई सनद दी जाय ।

फिर सम्राट् को यह भी ज्ञात हुआ कि काजी माफीदारों से उत्कोच लिया करते हैं तो ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के उद्देश्य से उन्होंने यह संकल्प किया कि अब से मैं इन काजियों पर विश्वास न करूँगा जो सम्मान सूचक पगड़ी पहनते हैं परन्तु जिनका हृदय कलुषित होता है तथा जो लम्बी आस्तीनें पहनते हैं परन्तु अल्प बुद्धि हैं । उन्होंने इस विषय की छानबीन की और सुल्तान ख्वाजा के सदारत काल में नियुक्त किए हुए काजियों के सिवाय शेष सब काजियों को सेवा मुक्त कर दिया । ईरानी और तूरानी स्त्रियाँ भी धोखे के दण्डित हुईं और आज्ञा हुई कि यदि उनकी माफी सौ बीघे से अधिक है तो उसकी छानबीन करके देखा जाय कि उनका अधिकार उचित है या नहीं ।

अजीज उद्दौला (मीर फतेह उल्ला शीराजी) की सदारत में निम्नांकित आज्ञा दी गई : यदि कोई व्यक्ति सुयूरगाल भूमि पर किसी दूसरे व्यक्ति का साझीदार है और फरमान में दोनों व्यक्तियों के भागों का उल्लेख नहीं है तो किसी साझीदार की मृत्यु होने पर, जब तब कि मृत व्यक्ति के उत्तराधिकारी स्वयं महाराज के सम्मुख प्रार्थना पत्र न प्रस्तुत करें, सद्र बिना और किसी जाँच पड़ताल के भूमि का बँटवारा कर ले और मृत व्यक्ति का भाग खालसा भूमि में सम्मिलित कर ले । नूतन सद्र को आज्ञा दी गई थी कि वह अधिकार से केवल १५ बीघे जमीन दे सकता है और इससे अधिक के लिए वह महाराज के सम्मुख प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करके उनकी स्वीकृति प्राप्त करता था ।

साम्राज्य में शान्ति और सुरक्षा थी । इसलिए माफीदारों ने अपने भूमिखण्डों में बाग लगवा कर अत्यधिक लाभ उठाया । इससे शासन के अधिकारियों में लोभ जाग्रत हुआ और उन्होंने सुयूरगाल के लाभ का अटकल लगाकर माफीदारों से कर माँगे । उनका यह कार्य सम्राट् को अरुचिकर लगा और उन्होंने आज्ञा दी कि इस प्रकार के लाभों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जाय ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

फिर जब यह ज्ञात हुआ कि एक सौ बल्कि इससे कम के माफीदार भी उत्कोच के अपराधी हैं तो मीर सद्र जहाँ को आज्ञा हुई कि वह इन व्यक्तियों को महाराज के सम्मुख प्रस्तुत करें। बाद में यह निर्णय हुआ कि सद्रजहाँ इस ग्रन्थ के लेखक की राय से माफी में कमी या वृद्धि करे। अब जिस नियम पर कार्यवाही होती है वह निम्नांकित है, सयूरगाल भूमि ऐसी होनी चाहिये जिसके अर्द्धांश में खेती होती हो और अर्द्धांश ऐसा हो जिस पर खेती की जा सके। यदि पूरी भूमि पर खेती होती हो तो उसका चतुर्थांश ले लिया जाय और शेषांश के लिए नई सनद दी जाय।

विभिन्न जिलों में प्रति बीघा मालगुजारी की दर विभिन्न है परन्तु किसी भी स्थान पर एक रुपया से कम नहीं है।

बुद्धिमानी की शिक्षा देने तथा सच्चे धर्म को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से महाराज इस विभाग पर बहुत ध्यान देते हैं और निष्पक्ष तथा निर्लोभ व्यक्तियों को जिलों के सद्र तथा साम्राज्य के सद्र नियुक्त करते हैं।

आईन २०

सम्राट् द्वारा आविष्कृत गाड़ियाँ आदि

महाराज ने एक असाधारण गाड़ी का आविष्कार किया है जिससे लोगों को बहुत सुख और सुविधा प्राप्त है। गाड़ी यात्रा में सवारी या बोझा ढोने के लिए काम में आती है और साथ ही अनाज पीसने की चक्की का भी काम दे सकती है।[1]

महाराज ने एक दूसरी बड़ी गाड़ी का भी आविष्कार किया है जिसे एक हाथी खींचता है। यह इतनी बड़ी है कि इसमें कई स्नानागार हैं और इस प्रकार यह गाड़ी एक गतिशील स्नानागार का काम देती है। इसको बैल भी सरलता से खींच सकते हैं।

ऊँट और घोड़े भी गाड़ियाँ खींचने के काम में लाए जाते हैं। इस प्रकार मनुष्यों के सुख-सुविधा में बहुत वृद्धि हो गई है। सुन्दर बनाई हुई गाड़ियाँ बहल कहलाती हैं। जब यह समतल भूमि पर चलती है तो इसमें कई मनुष्य बैठ कर यात्रा कर सकते हैं।

पानी के चर्ख और गाड़ियाँ भी बनाई गई हैं जो बहुत गहराई से पानी निकाल सकती हैं। चार चर्ख को एक साथ दो बैल और दो चर्ख को एक बैल चलाता है।

एक यंत्र ऐसा तैयार किया गया है जो कुँये से पानी खींचता है और इसी के साथ चक्की का भी काम देता है।

आईन २१

दहसेरी

खेती की हुई भूमि के प्रत्येक बीघे पर दस सेर अनाज राजकर के रूप में लिया जाता है। प्रत्येक जिले में अनाज के गोदाम बनाए गए हैं। इन गोदामों से सरकारी पशुओं को भोजन दिया जाता है और बाजार से अनाज

[1]निजाम की तबकात के अनुसार फतेह उल्ला शीराजी का आविष्कार था। निजाम कहता है,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मोल लेने की आवश्यकता नहीं होती। ये गोदाम प्रजा के लिए भी बहुत उपयोगी हैं क्योंकि उनसे निर्धन किसान बोने के लिए बीज प्राप्त कर सकते हैं और अकाल के समय लोग वहाँ से सस्ते दामों पर अनाज खरीद सकते हैं। परन्तु अनाज क्रेता की आवश्यकता से अधिक नहीं दिया जाता। इसके अतिरिक्त, यह अन्नराशि जनता के उपकार में व्यय की जाती है, क्योंकि सम्राट् ने देश में अनेक स्थानों पर अनाथालय स्थापित किए हैं जहाँ दीन और दरिद्र लोगों को निर्मूल्य भोजन वितरित होता है। इन गोदामों की देखरेख करने के लिए महाराज अनुभवी लोगों को नियुक्त करते हैं और इस कार्य के लिए परिश्रमी दारोगा और चतुर बितक्ची मनोनीत करते हैं जो आय-व्यय का लेखा-जोखा रखते हैं।

आईन २२

भोज तथा उत्सव

सम्राट् अतीतकाल की सुन्दर रीतियों पर ध्यान देते हैं और तत्कालीन लोगों पर विशेष ध्यान न देकर रीतियों की अच्छाइयों और बुराइयों पर विचार करते हैं और जो रीतियाँ अच्छी होती हैं उनको किसी भी मूल्य पर ग्रहण करते हैं। वह विभिन्न श्रेणियों के लोगों के पालन-पोषण पर विशेष ध्यान देते हैं और उनको उपहार देने के अवसरों की खोज में रहते हैं। इस प्रकार जब उनको जमशेद के उत्सवों और भोजों तथा पारसी पुजारियों के उत्सवों का हाल ज्ञात हुआ तो उन्होंने उनको ग्रहण कर लिया और दान एवं उपहार देने के अवसरों के रूप में उनका उपयोग किया। सबसे महत्वपूर्ण उत्सव निम्नांकित हैं : १. नववर्षोत्सव (जश्ननौरोजी)[1] यह उत्सव उस दिन आरम्भ होता है जब सूर्य अपने वैभव के साथ मेषराशि में प्रवेश करता है और (फर्वरदीन) मास के उन्नीसवें दिन तक चलता है। इस अवधि में दो दिन विशेष पर्व मनाए जाते हैं और द्रव्य तथा विभिन्न पदार्थ दान और उपहार के रूप में दिए जाते हैं। ये दिन फर्वरदीन मास के प्रथम और उन्नीसवें दिवस हैं जो शरफ के दिन हैं। फिर प्राचीन पारसियों में प्रथा थी कि महीने के नाम वाले दिन को ये महोत्सव मनाते थे और भोज देते थे[2]। महाराज ने इस प्रथा को ग्रहण किया और प्रत्येक सौर मास एक विशेष उत्सव के लिए निर्णीत हो गया। उन दिनों की सूची जिनके नाम वही है जो महीने के हैं निम्नांकित हैं : फर्वरदीन का उन्नीसवाँ, उर्दीबिहिश्त का तीसरा, खूरदाद का छठाँ, तीर का तेरहवाँ अमुरदाद का सातवाँ, शहरीवर का चौथा, मिहिर का सोलहवाँ, आबान का दसवाँ, आजार का नवाँ दे का आठवाँ पन्द्रहवाँ और तेईसवाँ, वहमन का दूसरा, इस्फन्दारमुज का पाँचवाँ दिन। इनमें से प्रत्येक दिन आदर्श भोज दिया जाता है। लोग आन्तरिक आनन्द के गीत गाते हैं। प्रत्येक पहर के प्रारम्भ में नक्कारे बजते हैं और गायक तथा संगीतज्ञ गाने गाते हैं। उपरोक्त उत्सव में से पहले उत्सव को तीन रात तक और दूसरे उत्सव को एक रात को रंगीन दीपक जलते हैं और सब लोग आनन्द मनाते हैं।

इस प्रकार के उत्सवों का संक्षिप्त वर्णन प्रथम ग्रन्थ में दिया गया है (आईन १८)।

'उसने एक चक्की बनाई जो गाड़ी पर रखी जाती है। वह स्वयं घूमती थी और अनाज पीसती थी। उसने एक दर्पण का भी आविष्कार किया था जिसमें निकट या दूर से देखने पर विचित्र-विचित्र आकृतियाँ दिखाई पड़ती थीं। उसने एक पहिया भी बनाया था जो एक साथ बारह नलियों को साफ करता था।' अबुल फज्ल ने इस पहिए के आविष्कार का श्रेय भी अकबर को दिया है, दे० ग्रन्थ प्रथम, आईन ३८।

[1]बदायूनी साधारणतया इस दिन को नौरोजये जलाली कहता है।[2] इस प्रकार आठवें मास का नाम आबान था परन्तु प्रत्येक मास के दसवें दिन का भी यही नाम था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन २३

खुशरोज (मीना बाजार)

संसार में पाई जाने वाली अनेक आश्चर्यजनक वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से सम्राट् मासिक उत्सवों के तीसरे दिन एक बड़ा बाजार लगवाते हैं। इस युग के व्यापारी उस बाजार में आने के लिए उत्सुक रहते हैं और वे सब देशों की वस्तुयें दूकानों में भलीभाँति सजाते हैं। सम्राट् के अन्तःपुर की बेगमें आती हैं और दूसरे लोगों की स्त्रियाँ भी आमन्त्रित होती हैं और सामान्य रूप से क्रय-विक्रय होता है। इन दिनों महाराज भी बाजार जाते हैं और अभीष्ट पदार्थ मोल लेते हैं अथवा वस्तुओं के मूल्य निर्धारित करते हैं और इस प्रकार अपनी ज्ञान-वृद्धि करते हैं। साम्राज्य के रहस्यों, लोगों के चरित्रों और प्रत्येक विभाग तथा कार्यालय की अच्छाइयों और बुराइयों का उन्हें ज्ञान होता है। महाराज इन दिनों को खुशरोज (अथवा आनन्द दिवस) कहते हैं, क्योंकि उनसे सबको बहुत आनन्द प्राप्त होता है।

स्त्रियों के बाजार के उपरान्त पुरुषों के लिए बाजार लगता है। तब सब देशों के व्यापारी अपने सामान बेचते हैं। महाराज लेन-देन को देखते हैं और दरबार में प्रवेश पाने वाले लोग क्रय का आनन्द प्राप्त करते हैं। ऐसे अवसरों पर बाजार के लोग महाराज के सम्मुख अपने कष्टों का उल्लेख कर सकते हैं। मुद्गरधारी लोग उनको ऐसा करने से नहीं रोकते वे सम्राट् के सम्मुख सामानों को प्रस्तुत करके उनको अपनी स्थिति से अवगत कराते हैं। सज्जनों की अभिलाषायें पूर्ण होती हैं और दुष्टों तथा सदाचारियों को दण्ड मिलता है।

क्रय-विक्रय के सुचारु संचालन के उद्देश्य से सम्राट् ने एक पृथक् खजाञ्ची और मुशरफ नियुक्त किया है जिससे विक्रेता अपनी सामग्रियों के मूल्य अविलम्ब प्राप्त कर लें। ऐसे अवसरों पर व्यापारियों को अत्यधिक लाभ होता है।

आईन २४

विवाह

मनुष्यों के इस आश्चर्यजनक सम्बन्ध पर ध्यान देने से मानव जाति के स्थायित्व की रक्षा होती है और संसार की प्रगति निश्चित होती है। विवाह दुर्वासनाओं के प्रसार का प्रतिरोधक है और इससे परिवारों की स्थापना होती है। सम्राट् दयालु हैं, वह महान् तथा लघु प्रत्येक की देखरेख करते हैं। वह विवाह में आध्यात्मिक एकता तथा सारभूत समता देखते हैं और मनुष्यों को इस विचार से प्रभावित करते हैं। वह तरुणावस्था से पहले मनुष्य और स्त्री के विवाह से घृणा करते हैं। ऐसे विवाह से कोई लाभ नहीं होता; इसके प्रतिकूल सम्राट् उन्हें हानिप्रद समझते हैं क्योंकि ऐसे दम्पति जब यौवन की परिपक्वता प्राप्त करते हैं तो प्रायः उनका वैवाहिक सम्बन्ध अरुचिकर हो जाता है और उनका घर उजड़ जाता है।

भारत में जहाँ मनुष्य उस स्त्री को नहीं देख सकता जिसके साथ उसकी सगाई हुई है, प्राग्-वयस्क विवाह और भी हानिप्रद हैं। महाराज की सम्मति है कि विवाह के पूर्व दम्पति की स्वीकृति तथा उनके माता-पिता की अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

महाराज निकट सम्बन्धियों में विवाह अनुचित समझते हैं। वह कहते हैं कि प्राचीन काल में भी बालिका अपने यमजभ्राता के साथ नहीं ब्याही जाती थी, यह तथ्य उन लोगों को निरस्त करने के लिए पर्याप्त है जो ऐतिहासिक प्रमाण चाहते हैं। जो लोग मुहम्मद साहब के धर्म के कट्टर अनुयायी हैं उनको चचेरे, ममेरे, मौसेरे तथा फुफेरे भाई बहनों में विवाह अनुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि इस विषय में धर्म का आरम्भ मानव जाति की सृष्टि के आरम्भ के सदृश है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

महाराज लम्बे दहेजों को अच्छा नहीं समझते क्योंकि यह धनराशि कदाचित् ही कभी दी जाती है और यह केवल धोखा मात्र होता है। इसी के साथ महाराज का यह भी कहना है कि भारी मिहर[1] से एक यह लाभ अवश्य होता है कि सरलता से तलाक नहीं दिया जा सकता। सम्राट् एक से अधिक स्त्रियों से विवाह करने के विरोधी हैं क्योंकि इससे मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और घर की शान्ति भंग हो जाती है। सम्राट् उन वृद्धा स्त्रियों की निन्दा करते हैं जो युवा पुरुषों से विवाह करती हैं और उनके इस काम को निर्लज्जता कहते हैं। उन्होंने दो बुद्धिमान तथा निर्लोभ व्यक्तियों की नियुक्ति की है जिनमें से एक दूल्हे की स्थिति का पता लगाता है और दूसरा दुलहिन की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करता है। इन दोनों अधिकारियों को तूये बेगी (विवाहाधिकारी, कहते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि एक ही व्यक्ति दोनों पक्षों की स्थितियों का पता लगाता है। सम्राट् दोनों पक्षों से आभार प्रदर्शनोपहार के रूप में एक कर लेते हैं। इस कर का चुकाना मंगलदायक समझा जाता है। पाँच हजारी से एक हजारी तक मनसबदार १० मोहरें देते हैं; एक हजारी से पानसदी तक मनसबदार ४ मोहरें; पानसदी से दो सदी तक दो मोहरें; दो सदी से दो बीस्ती तक १ मोहर; और दो बीस्ती से दहबाशी तक ४ रुपये देते हैं। अन्य धनी लोग ४ रुपये देते है। मध्यम वर्ग के लोग १ रुपया और साधारण लोग १ दाम देते थे।[1] इस कर के वसूल करने में दुलहिन के पिता की स्थिति का ध्यान रखा जाता था।

आईन २५

शिक्षा

साधारणतया प्रत्येक देश में और विशेषकर हिन्दुस्तान में लड़के कई वर्षों तक पाठशाला में रखे जाते हैं और वहाँ वे स्वर और व्यंजन सीखते हैं। विद्यार्थियों के जीवन का बहुत बड़ा भाग अनेक पुस्तकों के पढ़ने में नष्ट हो जाता है। महाराज की आज्ञा है कि विद्यार्थियों को पहले वर्णमाला के अक्षरों का लिखना सिखाया जाय और इस बात की चेष्टा की जाय कि वे उनकी विभिन्न आकृतियों से परिचित हो जांय। लड़के आरम्भ में प्रत्येक अक्षर की केवल आकृति तथा नाम याद करें और दो दिनों में सब अक्षरों को समाप्त करके संयुक्ताक्षरों को पढ़ना और लिखना सीखें। एक सप्ताह तक इनका अभ्यास किया जा सकता है। तत्पश्चात् विद्यार्थी को कुछ गद्य तथा पद्य कण्ठाग्र करना चाहिए। फिर उसे ईश्वर गुणगान में लिखे हुए कुछ पद्य अथवा नीति के वाक्यों को मुखस्थ करना चाहिये। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विद्यार्थी प्रत्येक वस्तु को स्वयं समझना सीखें परन्तु शिक्षक उसकी थोड़ी सहायता कर सकता है। तत्पश्चात् कुछ समय तक वह कोई पद्य अथवा उसके अर्द्धांश को लिखने का अभ्यास करे। शीघ्र ही वह शीघ्रता से लिखने लगेगा। शिक्षक को पाँच वस्तुओं पर विशेष ध्यान रखना चाहिये। अक्षरों का ज्ञान; शब्दों के अर्थ; पद्य का अर्द्धांश (मिश्रा), पद्य (शेर) और पूर्व पाठ (आमोखा)। यदि यह अध्यापन-प्रणाली ग्रहण की जाय तो बालक एक मास में, अथवा एक दिन में भी, उतना सीख लेगा जितना अन्य बालक वर्षों में सीखते हैं और लोग चकित हो जाँयगे। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह नीति शास्त्र, अंक गणित; अंकों का चिह्नों द्वारा चित्रण (सियाक), कृषि; मेनसूरेशन (अकलैदिस), ज्यामिति, ज्योतिष; मुखसामुद्रिक, गृहविज्ञान, शासन

[1] साधारण लोगों के पुत्रों और पुत्रियों को आज्ञा थी कि जब तक वे कोतवाली में नहीं आयेंगे तब तक वे विवाह नहीं कर सकते थे। कोतवाल के मनुष्य उनको अच्छी तरह देखते थे और उनकी आयु लिखते थे। कल्पना की जा सकती है कि अधिकारियों, विशेषकर कोतवाल के लोगों को कैसे सुअवसर और अधिकार प्राप्त थे—बदायूनी, द्वितीय भाग, पृष्ठ ३६१ (दे० ग्रन्थ तृतीय का आईन ५)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रणाली, चिकित्सा शास्त्र, तर्क शास्त्र, तबोई, रियाजी, इलाही विज्ञान[1], और इतिहास का शनैः शनैः ज्ञान प्राप्त करे।

संस्कृत के अध्ययन में विद्यार्थियों को व्याकरण, न्याय, वेदान्त तथा पातंजल (योगशास्त्र) का अध्ययन करना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए वर्तमान काल की आवश्यक वस्तुओं का अध्ययन अनिवार्य समझा गया।

इन अधिनियमों से पाठशालाओं को नवीन प्रकाश प्राप्त हुआ और विद्या तथा विज्ञान की उन्नति हुई।

आईन २६

जलसेनाध्यक्ष (मीर बहरी)

यह विभाग सेना के सफल कार्य तथा देश के सामान्य लाभ के लिए बहुत आवश्यक है। इसके द्वारा महत्वपूर्ण वस्तुयें प्राप्त होती हैं और कृषि तथा राजप्रासाद की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। शक्ति के इस साधन की रक्षा करने में सम्राट् अपने सम्मुख चार उद्देश्य रखते हैं और इस विभाग की कार्य पटुता की वृद्धि करने को ईश्वर की उपासना समझते हैं।

प्रथम—इतनी बड़ी और दृढ़ नावें तैयार कराना जिन पर हाथी सरलता से जा सकते हैं। कुछ नावें इस ढंग से बनाई गई हैं कि वे दुर्गों के घेरों और उन पर विजय प्राप्त करने में बहुत सहायक होती हैं। अनुभवी अधिकारी जहाजों को भवन और साड़िनी समझते हैं और विजय के उत्कृष्ट साधन के रूप में उनका उपयोग करते हैं, ऐसा विशेष कर तुर्की, जंजीबार और यूरोप में होता है। सम्राट् के साम्राज्य के हर भाग में जहाज पर्याप्त संख्या में पाये जाते हैं। परन्तु बंगाल, कश्मीर और ठट्ठा में वे इतने अधिक हैं कि वहाँ का व्यापार उन्हीं पर निर्भर करता है। सम्राट् ने प्रायः नावों के पिछले भाग को आश्चर्यजनक पशुओं के आकार के तैयार कराया है, इस प्रकार भय और मनोरंजन का संयोग हो गया है। इसी प्रकार नदियों पर कँगूरे, सुन्दर कुश्क, बाजार, तथा फूलों की आकर्षक क्यारियाँ तैयार कराई गई हैं। हिन्दुस्तान के पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण में समुद्र तट पर विशाल जहाज बनाए जाते हैं जो जल यात्रा के लिए उपयुक्त हैं। बन्दरगाहों की दशा बहुत सुधर गई है और नाविकों के अनुभव में बहुत वृद्धि हो गई है। इलाहाबाद और लाहौर में भी बड़े-बड़े जहाज बनते हैं और समुद्र तट पर भेजे जाते हैं। कश्मीर में एक नमूने का जहाज बनाया गया जिसकी लोगों ने बहुत प्रशंसा की।

द्वितीय—ऐसे अनुभवी नाविक नियुक्त करना जो समुद्र के ज्वार-भाटों, उसकी गहराई और विभिन्न हवाओं के बहने के समय तथा उनके लाभों एवं हानियों से परिचित हों। उन्हें समुद्र के उथले भागों तथा समुद्र तट से भी परिचित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त नाविक को स्वस्थ, बलवान्, तैरने में दक्ष, दयालु, परिश्रमी, कष्ट सहिष्णु तथा धीर प्रकृति होना चाहिए। संक्षेप में यह कहना चाहिए कि उसमें सब सद्गुणों का होना आवश्यक है। स्पष्ट है कि ऐसे गुणवान् व्यक्तियों की उपलब्धि अत्यन्त कष्टसाध्य है। सब से अच्छे नाविक मलाबार के होते हैं।

नदियों में भी नावें चलती हैं और नाविक मनुष्यों तथा उनके सामानों को नदी के एक तट से दूसरे तट पर पहुँचा देते हैं।

---

[1] विज्ञान के ये तीन भेद या प्रकार हैं। तबई विज्ञान से तात्पर्य भौतिक विज्ञान है। रियाजी विज्ञानों में परिमाण का अध्ययन होता है जैसे गणित, ज्योतिष, संगीत, यंत्र शास्त्र। इलाही विज्ञान से धर्मशास्त्र और ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के साधनों का अध्ययन होता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जहाज पर नाविकों की संख्या उसके आकार पर निर्भर करती है। बड़े जहाजों में बारह वर्ग के सेवक होते हैं।

(१) नाखुदा या नाव का स्वामी अर्थात् प्रधान अधिकारी। यह शब्द 'नावखुदा' का संक्षिप्त रूप है। यह जहाज की दिशा निर्धारित करता है।

(२) मुअल्लिम या कप्तान—यह व्यक्ति महासागर के गहरे तथा उथले स्थानों से परिचित होता है और ज्योतिष का ज्ञाता होता है। यही मनुष्य जहाज को अपने गन्तव्य स्थान में ले जाता है और उसको भयावह स्थानों में नहीं जाने देता।

(३) टन्डैल या तम्डैल—खलासियों या जहाज चलाने वालों का सरदार। नाविकों की भाषा में मल्लाह को 'खलासी' या 'खारवा' कहते हैं।

(४) नाखुदा-खशब—यह यात्रियों को लकड़ी तथा घास फूस देता है और जहाज पर माल लादने तथा उतारने में सहायता देता है।

(५) सरहंग—जहाजों का लंगर डालना और लंगर उठाकर तट से प्रस्थान कराना इसी व्यक्ति का कर्तव्य है। यह प्रायः मुअल्लिम का काम करता है।

(६) भंडारी—जहाजी आवश्यकताओं का भंडार इसी के सुपुर्द रहता है।

(७) कर्रानी (आजकल इसे किरानी कहते हैं)—यह एक लिपिक है जो जहाज के सब व्यय को लिखता और यात्रियों को पानी पहुँचाता है।

(८) सुक्कानगीर—यह मुअल्लिम के आदेशानुसार जहाज की दिशा में परिवर्तन करता है। कुछ जहाजों में कई सुक्कानगीर होते हैं परन्तु उनकी संख्या बीस से कभी अधिक नहीं होती।

(९) पंजरी—यह जहाज के मस्तूल पर बैठता और मार्ग निरीक्षण करता है। जब वह स्थल, दूसरा जहाज, और तूफान आता हुआ देखता है तो उसकी सूचना देता है।

(१०) गुम्ती—यह एक प्रकार का खलासी है। जहाज के छिद्रों द्वारा जो पानी भीतर आ जाता है उसको यह बाहर उलीचता है।

(११) तोप-अन्दाज—समुद्री युद्धों में इसकी आवश्यकता पड़ती है। इनकी संख्या जहाजों के आकार पर निर्भर करती है।

(१२) खारवा (सामान्य मल्लाह)—पाल को खींचना और बाँधना इन्हीं के सुपुर्द रहता है। कुछ खारवा समुद्र में डुबकी लगाकर जहाज के छिद्रों को बन्द करते हैं और यदि कहीं लंगर जकड़ जाता है तो उसको खोलते हैं।

नाविकों का पारिश्रमिक हर यात्रा में भिन्न होता है। यात्रा को नाविकों की भाषा में कूश कहते हैं। विभिन्न बन्दरगाहों में नाविकों के वेतन विभिन्न होते हैं।

सात गांव (हुगली) के बन्दरगाह में नाखुदा ४०० रुपया मासिक पाता है। इसके अतिरिक्त उसको जहाज में चार मलीख या कोठरियाँ दी जाती हैं। नाखुदा इन कोठरियों में नाना प्रकार की सामग्रियाँ एकत्र करता है और उनके विक्रय से अत्यधिक लाभ उठाता है। प्रत्येक जहाज को यात्रियों के उठने-बैठने तथा सामान रखने के लिए कई भागों में विभक्त कर देते हैं। इनमें से प्रत्येक भाग को मलीख कहते हैं। मुअल्लिम २०० रुपया और दो मलीख पाता है; टन्डैल, १२० रु०; कर्रानी ५० रु० और एक मलीख; नाखुदा-खशब, ३० रु०, सरहंग; २५ रु०; सुक्कानगीर, पंजरी तथा भंडारी में से प्रत्येक १५ रु०, प्रत्येक खारवा, ४० रु० और इसके अतिरिक्त दैनिक भोजन;

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

देगन्दाज[1] या बावर्ची १२ रु० ।

कम्भायत (कैम्बे) के बन्दरगाह में ८०० रुपए मिलते हैं और अन्य कर्मचारियों को भी इसी अनुपात में वेतन मिलता है ।

लाहरी—में नाखुदा ३०० रु० पाता है और शेष कर्मचारी उसी अनुपात में वेतन पाते हैं ।

दक्षिणी बन्दरगाहों में वह जितना वेतन पाता है आचीन में उसका ड्यौढ़ा पाता है, पुर्तगाल में ढाई गुना और मलाका में दूना । पीगू और दहनासिरी में वह कैम्बे का दूना वेतन पाता है । इस प्रकार स्थान तथा यात्रा की दूरी के अनुसार वेतन में अन्तर होता है किन्तु इससे अधिक विवरण देने में अत्यधिक समय लगेगा ।

नदियों के नाविकों को १०० दाम से ५०० दाम तक मासिक वेतन दिया जाता है ।

तृतीय—एक अनुभवी व्यक्ति नदियों के निरीक्षण के लिए नियुक्त किया गया है । यह मनुष्य लम्बे चौड़े डीलवाला, निर्भय, ऊँची आवाज का, कष्ट-सहिष्णु, कर्मण्य, उत्साही, दयालु, यात्राप्रेमी तथा अच्छा तैराक होता है । चूँकि यह अनुभवी होता है, इसलिए यह घाट सम्बंधी सब कठिनाइयों को हल कर देता है और इस विषय का ध्यान रखता है कि इन स्थानों पर न तो अधिक भीड़ हो, न वहाँ का मार्ग संकुचित हो और न ऊँचा-नीचा तथा कीचड़ से भरा हो । वह यह निर्धारित करता है कि किस नाव में कितने यात्री आ जा सकते हैं । वह यात्रियों को घाटों पर देर तक नहीं रोकता । वह यह भी देखता है कि दीन व्यक्तियों को निःशुल्क नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचा दिया जाय । वह लोगों को तैर कर नदी पार करने की अनुमति नहीं देता और सामान को घाट के सिवाय अन्यत्र कहीं नहीं उतरने देता । वह यात्रियों को नदी नहीं पार करने देता जब तक उनको कोई बहुत आवश्यक काम न हो ।

चतुर्थ—कर मुक्ति । सम्राट् ने अनेक करों को जिनकी आय एक पूरे देश के राजस्व के बराबर है अपनी दयालुता से क्षमा कर दिया है । वह केवल इतने कर लगाते हैं जिससे नाविकों को वेतन दिए जा सकें । राज्य बन्दरगाहों से कुछ कर लेता है जो २½ प्रतिशत से कभी अधिक नहीं होते । पूर्व काल में वसूल किए जाने वालों करों से यह इतना कम है कि व्यापारी समझते हैं कि उन्हें पूरी कर-मुक्ति दे दी गई है ।

निम्न पर लिए जाने वाले कर निम्नांकित है :

हर नाव पर जिसमें १०९० मन का बोझ हो प्रति कोस १ रुपया कर निर्धारित है यदि नाव और उस पर का सामान एक ही व्यक्ति की सम्पति हों । परन्तु यदि नाव किराए की है और उस पर का सब बोझा दूसरे व्यक्ति का है जिसने नाव किराये पर ली है तो प्रति २½ कोस पर १ रुपया कर लिया जाता है । घाटों पर नदी पार करने के लिए निम्नांकित कर लिए जाते हैं ।

प्रति हाथी दस दाम; लदी हुई गाड़ी, ४ दाम; खाली गाड़ी, २ दाम; लदा हुआ ऊँट, १ दाम; बिना लदा हुआ ऊँट, लदा हुआ घोड़ा या बैल, ½ दाम; खाली घोड़ा या बैल, ¼ दाम; बोझा ढोने वाले दूसरे पशु, 1/16 दाम । नदी पार करने के लिए २० दाम लिया जाता है परन्तु यह कर प्रायः क्षमा कर दिया जाता है ।

नियम यह है कि इस प्रकार एकत्र किए हुए करों का आधा या एक तिहाई राज कोष में जमा हो जाता है (शेष आधा नाविकों को मिल जाता है) ।

सम्राट् की सुव्यवस्था के कारण व्यापारियों से सद् व्यवहार किया जाता है और विदेशों से आयात की बहुत वृद्धि हो गई है ।

---

१. ब्लाकमैन ने देगन्दाज का अर्थ 'शिकारी' लिखा है । दे० पृ० २९१ : पंक्ति १७ ।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन २७

आखेट

बाह्य द्रष्टा सांसरिक लोग पशुओं के आखेट को हर्ष-वर्द्धक समझते हैं और अज्ञान के कारण अपनी इच्छाओं के क्षेत्र में उन्मत्तों की भाँति विचरण करते हैं। किन्तु सत्यान्वेषक आखेट को ज्ञान वृद्धि का एक साधन समझते हैं और इससे उपासना-मन्दिर को एक अद्भुत द्योति प्राप्त होती है। सम्राट् की यही दशा है। वह सदा आखेट के द्वारा अपनी ज्ञान-वृद्धि करते हैं। इसके अतिरिक्त जब वह कहीं आखेट के लिए जाते हैं तो इसकी पूर्व सूचना किसी को नहीं देते और इन अवसरों का उपयोग वह, प्रजा तथा सेना की वास्तविक स्थिति के जाँच पड़ताल के लिए करते हैं। वह वेश बदल कर यात्रा करते हैं और राजस्व, सयूरगाल भूमि तथा वैयक्तिक विषयों की अभिज्ञता प्राप्त करते हैं। वह अत्याचार-पीडितों की सहायता करते हैं और अत्याचारियों को दण्ड देते हैं। इन उच्चाशयों से वह आखेट करते हैं और उस पर मुग्ध रहते हैं। इस कारण अल्पज्ञ बाह्य द्रष्टा समझते हैं कि आखेट में सम्राट् का कोई अन्य उद्देश्य नहीं रहता, किन्तु बुद्धिमान् तथा अनुभवी लोग जानते हैं कि आखेट से सम्राट् के उत्कृष्ट उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

जब सम्राट् आखेट के लिए प्रस्थान करते हैं तब उद्योगी करावल (मीर शिकार द्वारा नियुक्त किए हुए मनुष्य) आखेट-स्थल को चारों ओर से घेर लेते हैं। कूर आखेट-स्थल से लगभग पाँच कोस की दूरी पर सेवा के लिए प्रस्तुत रहता है। राज्य के अमीर तथा अन्य पुरुष कूर के निकट अवस्थान करके सम्राट् के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। जो व्यक्ति वस्तुओं की रक्षा के लिए नियुक्त होते हैं वे अपने स्थान पर बैठते तथा अपने कर्तव्यों को सम्पन्न करते हैं। उनके लगभग एक गज पीछे मीर तूजक सेवा के लिए कटिबद्ध खड़ा रहता है और उनके लगभग डेढ़ कोस पीछे सम्राट् के 'खिदमतिया' तथा अन्य सेवक खड़े रहते हैं। इस स्थान का अधीक्षण 'खिदमतिया'-वृन्द के सुपुर्द होता है। लगभग उतनी ही दूरी पर एक सावधान तथा स्वामिभक्त अधिकारी सम्राट् के कुछ सेवकों के साथ खड़ा रहता है। वह शनैः-शनैः आगे बढ़ता है और खासा आखेट-स्थल की रक्षा करता है। उसके पीछे एक अनुभवी अधिकारी सब वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए अवस्थित रहता है। सम्राट् के कुछ निकटवर्ती सेवकों को भी इस स्थल में प्रविष्टि की अनुमति मिलती है परन्तु इनमें विशेषकर वे ही व्यक्ति होते हैं जो आखेट में उनकी सेवा कर सकते हैं।

थोड़ी दूर चलने के पश्चात् सम्राट् कुछ मनुष्यों को अपने साथ जाने के लिए मनोनीत कर लेते हैं और तब अग्रसर होते हैं। कुछ दूर और जाने के पश्चात् वह प्रायः अकेले आगे बढ़ते हैं अथवा कभी-कभी एक या दो व्यक्ति उनके साथ होते हैं। जब विश्राम का समय आता है तब साथियों के दोनों दल जो पीछे छोड़ दिये गये थे उनके साथ हो जाते हैं।

आखेट के विषय में सम्राट् के विचारों तथा उद्देश्यों एवं आखेट कालीन व्यवस्थाओं का उल्लेख करने के पश्चात् आखेट की विभिन्न प्रणालियों तथा आविष्कारों का उल्लेख किया जाता है जिनका लोग व्यवहार करते हैं।

सिंह का आखेट

(१) लोहे के छड़ों का एक दृढ़ पिंजड़ा बनाया जाता है। लोग उसको उस स्थल में रखते हैं जहाँ सिंह प्रायः आते-जाते रहते हैं। उसको पृथ्वी में जकड़कर बाँध देते हैं। उसका द्वार खुला रहता है परन्तु वह ऐसा बना

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

होता है कि तनिक से कम्पन से वह बन्द हो जाता है। पिंजड़े के भीतर वे एक बकरा इस प्रकार बाँधते हैं कि सिंह उसको देख तो सकता है परन्तु बिना भीतर प्रवेश किये हुए उसको पा नहीं सकता। भूख के कारण ज्यों ही वह पिंजड़े में घुसता है त्यों ही पिंजड़ा बन्द हो जाता है।

(२) एक विषाक्त बाण को हरे रंगे हुए धनुष पर लगा कर वृक्ष की शाखा से इस प्रकार बाँधते हैं कि तनिक कम्पन से बाण चल जाय। जब सिंह वहाँ से होकर निकलता है और धनुष में तनिक सी कम्पन होते ही बाण छूट कर सिंह को बेध देता है और वह मर जाता है।

(३) जहाँ सिंह प्रायः आते जाते हैं वहाँ लोग एक भेड़ बाँध देते हैं और भेड़ के चारों ओर पृथ्वी पर सूखी घास के छोटे-छोटे पूले रखते हैं इन पूलों को शिलिम (बरगद और पीपल की गोंद) से बिल्कुल ढँक देते हैं। सिंह झपटता हुआ आता है और पूलों पर पंजा मारता है। गोंद उसके पंजों में चिपक जाती है और वह उसे छुड़ाने का प्रयत्न करता है। जितना ही अधिक वह गोंद छुड़ाने का प्रयास करता है उतनी ही वह उसके पैरों में चिपकती जाती है। जब वह एकदम थक जाता है और बेसुध हो जाता है तब शिकारी झाड़ियों से निकल कर या तो उसको मार डालते हैं या जीवित पकड़ कर उसे पालू बना लेते हैं।

सत्यप्रियता के कारण सम्राट् को इस प्रकार छलपूर्ण आखेट से अरुचि है। वह इस मानव-घातक पशु का बाण या बन्दूक से खुलकर आखेट करना अधिक अच्छा समझते हैं।

(४) एक साहसी तथा अनुभवी शिकारी भैंसा पर सवार होकर सिंह के सम्मुख आता है और उससे लड़ाता है। भैंसा शीघ्रता से सिंह को अपने सींगों पर रख लेता है और उसको इतना ऊपर उछालता है कि नीचे गिर कर सिंह मर जाता है। सिंह के आखेट की इस प्रणाली का रोमांच अवर्णनीय है। समझ में नहीं आता कि किस वस्तु की अधिक प्रशंसा की जाय—सवार के साहस की अथवा भैंसे की नंगी पीठ पर उसके जमकर खड़े रहने की।

एक दिन ज्ञात हुआ कि एक मानव-भक्षी सिंह बारी के जिले में दृष्टिगत हुआ है। सम्राट् नाहिर खाँ नामक हाथी पर सवार होकर वन में गए। सिंह ने निकल कर विशाल हाथी के ललाट पर पंजा मारा और उसका सिर पृथ्वी पर झुका दिया। शक्तिशाली पहलवान की भाँति हमला करके सम्राट् ने उस दृढ़शरीर सिंह को मार डाला। इस घटना से साहसी और अनुभवी शिकारी भी चकित हो गए।

दूसरे अवसर पर सम्राट् ने टोडा के निकट एक सिंह का आखेट किया। सिंह ने एक मनुष्य को पंजे में दबोचा। सम्राट् ने लक्ष्य करके ऐसा बाण मारा कि हिंसक पशु मर गया और मनुष्य उसके पंजे से छूट गया।

एक बार कमरगा के आखेट में एक विशाल सिंह हाँका गया। सिंह ने सम्राट् पर आक्रमण किया। उन्होंने साधकर उसके सिर में ऐसा बाण मारा कि वह वहीं ढेर हो गया।

एक बार एक सिंह ने एक प्यादे को पंजे में दबोचा। सब दर्शक उसके जीवन से निराश हो गए। किन्तु सम्राट् ने उसके शरीर में ऐसी गोली मारी कि उसका प्राणान्त हो गया और अभागा प्यादा बच गया।

एक बार मथुरा के वन में एक आश्चर्यजनक घटना हुई। शुजआत खाँ (दे० आईन ३०, नं० ५१) जो बहुत आगे निकल गया था भयभीत होकर लौट पड़ा। सम्राट् अपने स्थान पर खड़े रहे और सिंह को क्रुद्धदृष्टि से देखा। उस दिव्य दृष्टि के सम्मुख सिंह सिकुड़ गया और काँपता हुआ वापस चला गया।[1] थोड़े ही समय में वह मार डाला गया।

[1]यह अकबर के आश्चर्यजनक कार्यों में से एक है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सम्राट् के साहस तथा चतुरता के कार्य इतने अधिक हैं कि उनकी कल्पना नहीं की जा सकती। मेरे जैसे हिन्दुस्तानी के लिए विशद तथा प्राञ्जल शैली में उनका वर्णन करना असम्भव है।

शेरान जहाँ सिकार कुर्दा वजमोर्चये कनार कुर्दा। दर मार्कये कि बस्तये शमशीर पजबीम फसादा नाखुनशीर—(फैजी कृत नल-दमन से)।

[वह सिंह को मार डालते हैं परन्तु चींटियों को क्षति नहीं पहुँचाते। वह युद्ध के लिए कटि में खड्ग बाँधते हैं परन्तु सिंह भय के कारण अपने पंजों को झुका देता है।]

२. हाथी का आखेट

हाथी के आखेट करने की अनेक प्रणालियाँ हैं।

(१) खेदा—घोड़ों पर सवार और पैदल शिकारी ग्रीष्मऋतु में इस आश्चर्यजनक पशु के चरने के स्थान में जाते हैं और ढोल तथा बाँसुरी बजाते हैं। उनके शब्द से पशु भयभीत हो जाते हैं। वे इधर-उधर दौड़ने लगते हैं। अपने शरीर की गुरुता तथा परिश्रम से वे थक जाते हैं और उनमें शक्ति नहीं रह जाती। तब वे विश्राम के लिए किसी वृक्ष की छाया में जाते हैं। तब कुछ अनुभवी शिकारी उनके पैरों या गरदनों में मजबूत रस्सी डालकर वृक्षों से बाँध देते हैं। ये रस्सियाँ सन या किसी वृक्ष की छाल से तैयार की जाती हैं। कुछ समय उपरान्त कुछ पालू हाथियों के साथ उसको ले जाते हैं और शनैः शनैः वह भी पालू हो जाता है। हाथी के मूल्य का चतुर्थांश पकड़ने वालों को पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता है।

(२) चोर खेदा—शिकारी एक पालू हथिनी को वन्य हाथियों के चरने के स्थान में ले जाते हैं। हाथीवान् चिमट कर लेट जाता है। वह न तो हिलता है और न उसकी उपस्थिति का कोई लक्षण दृष्टिगोचर होता है। जंगली हाथी उससे युद्ध आरम्भ करते हैं। तब हाथीवान् बहुत सावधानी के साथ एक हाथी के पैरों में रस्सी डालकर उसे पकड़ लेता है।

(३) गाड—जिस स्थान पर हाथी बहुत आते जाते हैं वहाँ एक गहरा गड्ढा खोदा जाता है और उसको सूखी घास से ढक देते हैं। ज्योंही हाथी उसके निकट आते हैं त्योंही शिकारी झाड़ियों के भीतर से कोलाहल करने लगते हैं। हाथी घबड़ा जाते हैं और अपनी प्राकृतिक सतर्कता खोकर चिल्लाते हुए तीव्रगति से भागते और गड्ढे में गिर पड़ते हैं। नवगृहीत हाथी को कुछ दिनों तक भूखा-प्यासा रखते हैं, तत्पश्चात् वह शीघ्र पालू हो जाता है।

(४) बार—हाथियों के विश्रामस्थल के तीन ओर खाईं खोद देते हैं और केवल एक ओर समतल भूमि छोड़ते हैं। इसी दिशा में एक दरवाजा लगाते हैं। दरवाजा खुला रहता है किन्तु उसको रस्सी से इस प्रकार बाँधते हैं कि रस्सी कटते ही वह बन्द हो जाता है। इस दरवाजे के बाहर और भीतर दोनों ओर हाथी का प्रिय भोजन रखते हैं। हाथी उसको खाने लगते हैं। वे ऐसे लोभग्रस्त होने के कारण असावधान हो जाते हैं और निर्भय दरवाजे से भीतर चले जाते हैं। एक निडर शिकारी जो दरवाजे के पास छिपा रहता है रस्सी को काट देता है और दरवाजा बन्द हो जाता है। हाथी इससे चौंककर दरवाजा तोड़ने का प्रयास करते हैं। उनमें बड़ी हलचल रहती है। तब शिकारी आग जलाते हैं और कोलाहल करते हैं। हाथी चारों तरफ दौड़ते दौड़ते थक जाते हैं और उनमें शक्ति शेष नहीं रह जाती। तब पालू हथिनियाँ उस स्थान पर लाई जाती हैं और उनकी सहायता से वन्य पशु पकड़ लिए जाते हैं। शीघ्र ही वे पालू हो जाते हैं।

प्राचीन काल से लोग उपर्युक्त प्रणालियों से हाथी का शिकार करते रहे हैं। सम्राट् ने एक नई विधि का आविष्कार किया है जिसमें बड़े कार्य कौशल की आवश्यकता होती है। सत्य तो यह है कि इस पशु के आखेट की सब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उत्कृष्ट प्रणालियां सम्राट् के आविष्कार हैं। वन्य हाथियों के समूह को शिकारी तीन ओर घेर कर हँकाते हैं, केवल एक दिशा खुली रहती है। इस खुले मार्ग पर कुछ हथिनियाँ खड़ी कर दी जाती हैं चारों तरफ से हाथी हथिनियों की तरफ बढ़ते हैं। ये हथिनियां धीरे धीरे आगे बढ़ती हैं यहां तक कि घेरे में प्रविष्ट हो जाती हैं और हाथी भी इनके पीछे पीछे घेरे में चले जाते हैं। तब वे उपर्युक्त प्रणाली से पकड़ लिए जाते हैं।

३. चीतों का शिकार

चीते वन्य अवस्था में तीन स्थान चुनते हैं। देश के एक भाग में वे शिकार करते हैं; दूसरे भाग में वे विश्राम तथा शयन करते हैं और तीसरे भाग में वे खेल कूद तथा मनोरंजन करते हैं। प्रायः वे पहाड़ी की चोटी पर सोते हैं। चीते के लिए वृक्ष की छाया पर्याप्त होती है। वह वृक्ष के तने से अपने शरीर को रगड़ता है और उसी वृक्ष के चारों तरफ विष्ठा करता है जिसको हिन्दी में 'आखर' कहते हैं।

पूर्व काल में शिकारी गहरे गड्ढे खोदकर उनको घास से ढँकते थे। इन गड्ढों को 'ओदी' कहते थे। चीते उन गड्ढों के निकट आते और उनमें गिर पड़ते थे। परन्तु इस तरह उनके गिरने से प्रायः उनके पैरों या टांगों में चोट आ जाती थी या वह कूदकर गड्ढे से बाहर निकल जाते थे। इस प्रणाली से एक गड्ढे में एक से अधिक चीते नहीं पकड़े जा सकते थे। अतएव सम्राट् ने इनको पकड़ने की एक नवीन प्रणाली का आविष्कार किया जिससे बड़े बड़े अनुभवी शिकारी चकित हो गए। उन्होंने गड्ढा खोदवाया जो केवल दो या तीन गज गहरा होता है और उसमें एक विचित्र दरवाजा लगता है जो चीते के गड्ढे में गिर जाने के पश्चात् स्वयं बंद हो जाता है। इस विधि से पशु को चोट नहीं लगती और कभी कभी एक से अधिक चीते पकड़ जाते हैं। एक अवसर सात चीते एक साथ ही पकड़ लिए गए थे। शीतऋतु में, जब इन पशुओं में कामोद्दीपन होता है, एक मादा चीता जंगल में इधर-उधर घूम रही थी और छः नर चीते उसके पीछे पीछे आ रहे थे। संयोगवश मादा चीता इस प्रकार के एक गड्ढे में गिर पड़ी। उसके नर साथी उसको छोड़ना नहीं चाहते थे। अतएव वे एक एक करके गड्ढे में कूद पड़े। वास्तव में यह बड़ा सुन्दर दृश्य था।

सम्राट् चीतों को थकाकर भी पकड़ते हैं जो देखने में बड़ा मनोरंजक होता है।

इस पशु के पकड़ने की एक विधि यह है कि वह जिस वृक्ष की छाया में विश्राम करता है उसकी जड़ में फन्दे या जाल लगाते हैं। जब चीता अपना शरीर खुजलाने के लिये तने के पास आता है तब जाल में फँस जाता है।

सम्राट् आगरा से तीस या चालीस कोस की दूरी पर चीतों का आखेट करते हैं। इनका शिकार विशेषकर वारी, सीमावली, अलापुर, सुन्नाम, भटिन्डा, भटनीर, पंजाब में पाटन, फतेहपुर, झिन्झनू, नागौर, मीरथा, जोधपुर, जैसलमेर, और अमरसरनाइन में खेला जाता है, किन्तु बहुत से दूरवर्ती स्थान भी आखेट-क्षेत्र चुने गये हैं। सम्राट् प्रायः प्रथमोल्लिखित स्थानों में जाते थे, उन चीतों को जो गड्ढों में गिर पड़ते थे बाहर निकालते थे और सेवकों के सुपुर्द करते थे। प्रायः वह बहुत लम्बी यात्रा करते हैं और मार्ग में किसी स्थान पर विश्राम की तैयारी करते हैं कि इसी बीच में कुछ चीतों के पकड़े जाने का शुभ समाचार प्राप्त होता है और सम्राट् किसी तीव्रगामी अश्व पर आरूढ़ होकर प्रस्थान कर देते हैं।

पूर्ववर्ती समय में शिकारी नवगृहीत चीते को तीन मास में आखेटागार के लिये प्रशिक्षित करते थे और कभी कभी बहुत परिश्रम करने पर पशु दो मास में प्रशिक्षित हो जाता था। परन्तु अब सम्राट् के ध्यान देने से चीते केवल १८ दिनों के अल्पकाल में सुन्दर विधि से प्रशिक्षित हो जाते हैं। पुराने और कर्मण्य सेवक इन परिणामों को देखकर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

चकित हो गये और सम्राट् के ज्ञान की मोहिनी शक्ति की प्रशंसा करने लगे। सदुद्देश्य से तथा दरबार की वैभव वृद्धि के लिए सम्राट् कभी कभी चीतों की सेवा तथा प्रशिक्षण का कार्य स्वयं अपने हाथों में लेते हैं और उनकी सफलता को देखकर बहुत अनुभवी सेवक भी चकित हो जाते हैं।

एक आश्चर्यजनक घटना निम्नांकित है। एक बार एक चीता पकड़ा गया था, और बिना किसी पूर्व प्रशिक्षण के सम्राट् के केवल संकेत मात्र पर वह प्रशिक्षित चीतों की भांति शिकार पकड़ लाया। जो लोग वहाँ वर्तमान थे सत्य के प्रति उनके नेत्र उन्मीलित हो गये और उन्होंने सम्राट् पर विश्वास तथा श्रद्धा करके उनके सम्मुख दण्डवत करने के आनन्द का अनुभव किया।[1]

एक बार सम्राट् के स्नेहमय हृदय के आश्चर्यजनक प्रभाव से आकृष्ट होकर बिना पट्टे और जंजीर के एक चीता उनका अनुसरण करता था और बुद्धिमान् मनुष्य की भाँति उनकी आज्ञा का पालन करता था। वह हर शिकार में अपनी दक्षता का परिचय देकर हर्षोत्फुल्ल होता था।[2]

खासे के चीतों पर दो सौ सेवक नियुक्त हैं और चीतों के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की गई है।

आईन २८

चीतों का भोजन और उनके सेवकों का वेतन

प्रथम कोटि के चीतों को प्रतिदिन ५ सेर मांस दिया जाता है; दूसरी कोटि को ४½ सेर; तीसरी कोटि को ४ सेर; चौथी को ३¾ सेर; पाँचवीं को ३½ सेर; छठीं को ३¼ सेर; सातवीं को ३ सेर; आठवीं को २¾ सेर। मांस के पिण्ड दिए जाते हैं। टुकड़े-टुकड़े कर के नहीं दिया जाता। यकशम्बे को जानवर नहीं मारे जाते इसलिए दो शम्बे को दैनिक मात्रा का दूना मास दिया जाता है।[3]

पहले प्रति छः महीने के पश्चात् परन्तु अब वर्ष में एक बार चार सेर तेल (घी) और ¼ सेर गन्धक शरीर पर मलने के लिए दी जाती है जिससे जानवरों को खुजली न हो। पहले प्रत्येक चीते के शिक्षण तथा देख-रेख के लिए चार सेवक नियुक्त रहते थे परन्तु अब उन चीतों के लिए तीन सेवक दिए जाते हैं जो घोड़ों पर बैठकर आखेट-क्षेत्र में जाते हैं और केवल दो सेवक उन चीतों के लिए जो बैलगाड़ियों या डोलियों पर जाते हैं। सेवकों का वेतन ३० रुपए से ५ रुपए प्रति मास होता है। उनको चीतागाड़ी खींचने वाले बैलों का भी पालन-पोषण करना होता है। बैलों की देख-रेख करने वाले सेवकों को प्रधान तथा गौड़ दो वर्गों में विभक्त करते हैं; फिर प्रत्येक वर्ग को पाँच उपवर्गों में विभाजित करते हैं। प्रथम वर्ग के सेवकों को ३०० दाम, २६० दाम, २२० दाम, २०० दाम और १८० दाम प्रति मास दिया जाता है और द्वितीय वर्ग वालों को १६० दाम, १४० दाम, १२० दाम, ११० दाम, तथा १०० दाम। वैभव-प्रदर्शन के लिए चीतों के लिए जरबफ्त की झूलें, हीरे जवाहर जड़ी हुई जंजीरें, मोटे कम्बल और बैठने के लिए गुशकानी[4] कालीन दिए जाते हैं। हर चीते के सेवकों के निरीक्षण के लिए दरबार के अमीर नियुक्त किए जाते हैं जो इस बात का ध्यान रखते हैं कि चीतों के वस्त्र अच्छे रहें और नए चीते बराबर

१-२ये अकबर के आश्चर्यजनक कार्यों के दो और उदाहरण हैं। ३ ब्लाकमैन ने गलत अर्थ किया है, 'शनिवारों को दैनिक मात्रा का दूना दिया जाता है, क्योंकि रविवारों को कोई पशु नहीं मारे जाते' पृ० २६८। ४ 'गोशकान' ईरान में एक नगर है जो कालीनों के लिए प्रसिद्ध है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भरती होते रहें। प्रत्येक चीते का उसके गुणों के विचार से नाम रखा जाता है। प्रति दस चीतों के समूह को 'मिस्ल' या 'तरफ' कहते हैं। वे अपने पद के अनुसार भी निम्न भाँति विभक्त किए गए हैं। सम्राट् के आखेटागार में एक हजार चीते रखे जाते हैं जिनसे एक विचित्र लश्कर तैयार हो गया है। पहली तीन मिस्लें खासा हैं। वे दो और मिस्लों के साथ दरबार में तैयार रखे जाते हैं। चीतों की सवारी के लिए दो मिहाफे[1] एक हाथी पर कसे जाते हैं। हाथी के हर तरफ एक मिहाफा होता है और हर मिहाफे में एक शिकारी चीता बैठाया जाता है जो बड़ी चतुराई से जानवरों का शिकार करता है। इसी तरह मिहाफे ऊँटों, घोड़ों और खच्चरों पर भी कसे जाते हैं। चीतों की सवारी के लिए गाड़ियाँ भी बनाई गई हैं जिनको घोड़े या बैल खींचते हैं। कभी-कभी वे घोड़ों पर बिठाले जाते हैं और कभी-कभी इनको कहार डोलियों में ले जाते हैं। सम्राट् के सबसे उत्तम चीते का नाम समन्द-मानिक है। वह चौडोल पर ले जाया जाता है। वह बड़ी···उसके सेवक सुन्दर वस्त्र धारण करके उसकी बगल में दौड़ते हैं। सवारी के आगे नक्कारा बजता है। कभी-कभी इस पशु को मनुष्य घोड़ों पर ले जाते हैं चौडोल के दोनों डंडे घोड़ों की गर्दनों पर रखे रहते हैं। पहले एक चीते के लिए दो घोड़े नियत थे किन्तु अब दो चीतों के लिए तीन घोड़े नियत हैं। कुछ चीतों के लिए डोली और कुछ के लिए गाड़ियाँ नियत हैं जिनको चार बैल खींचते हैं। अनेक चीते केवल एक ही गाड़ी में अकेले यात्रा करते हैं। पालू और प्रशिक्षित चीते की डोली को तीन (दो(कहार और दूसरे जानवरों की डोलियों को तीन कहार ढोते हैं

शिकारी चीते की चतुराई

चीते हवा की विरुद्ध दिशा में दौड़ते हैं। इस प्रकार वे उसकी गंध पाते हैं या उसके शब्द सुनते हैं। तब वे आक्रमण की योजना बनाते हैं और शिकारी को सूचना देते हैं कि शिकार कहाँ है।[2] शिकारी चीतों को अपने साथ लेकर शिकार पकड़ने के लिए आगे बढ़ते हैं। चीतों के द्वारा तीन विधियों से शिकार किया जाता है।

१. उपरघटी – जहाँ हिरण दिखाई पड़ते हैं उस स्थान के दाहिनी ओर शिकारी अपने चीते को छोड़ते हैं और चीता झपट कर अपने पंजे से हिरण को पकड़ लेता है।

२. रिघनी—चीता हिरण की दृष्टि से छिपा रहता है। शिकारी दूर से चीते को हिरण दिखलाता है। तब उसकी जंजीर खोल दी जाती है। चीता बड़ी चतुराई से एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी को फाँदता हुआ हिरण के निकट पहुँचता है और उसको पकड़ लेता है।

३. मुहारी—चीते को गाड़ी से उतार कर एक झाड़ी में छिपा देते हैं किन्तु हवा चीते की ओर बहती है। गाड़ी को विपरीत दिशा में ले जाते हैं। दोनों तरफ से संदेह में पड़कर हिरण व्याकुल और चकित होता है। तब चीता हठात् उसके निकट पहुँच कर उसे पकड़ लेता है।

इस पशु के आश्चर्यजनक कार्यों का वर्णन करना असम्भव है। उसके छल और चातुर्य को भाषा में नहीं व्यक्त किया जा सकता। वह अपने को छिपाने के लिए अपने अगले तथा पिछले पैरों से धूल उड़ाता है या पृथ्वी पर इस प्रकार लेट जाता है कि वह पृथ्वी से अलग दिखाई ही नहीं पड़ता।

पहले चीता एक आक्रमण में तीन से अधिक हिरण नहीं मारता था किन्तु अब एक बार में वह बारह हिरण पकड़ लेता है।

सम्राट् ने आखेट की एक प्रणाली का आविष्कार किया है जिसको 'चक्रमंदल' कहते हैं। शिकारी हिरणों

---

[1] डोली। [2] इस वाक्य का अनुवाद संदिग्धपूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

के चरने के स्थान में विभिन्न झाड़ियों में छिपकर बैठते हैं और वृत्त बनाकर हिरणों को घेर लेते हैं। तत्पश्चात् चीतों को हर दिशा में छोड़ देते हैं। इस प्रकार अनेक हिरण पकड़ लिए जाते हैं।

जब कभी चीते चातुर्य-प्रदर्शन करते हैं तो उनके सेवकों तथा प्रशिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार दिये जाते हैं जिससे वे भविष्य में और अच्छा काम करें। प्रत्येक पशु के लिए एक विशिष्ट पारितोषिक निर्दिष्ट है किन्तु उसका विवरण असम्भव है।

सम्राट् की दयालुता का एक विचित्र उदाहरण यह है कि एक बार एक हिरण और चीते में बड़ी मित्रता हो गई थी। दोनों एक साथ रहते थे और परस्पर बहुत प्रेम करते थे। आश्चर्य यह है कि यही चीता जब किसी दूसरे हिरण पर छोड़ा जाता था तो अन्य चीतों की भाँति उनका आखेट करता था।

पहले संध्या समय चीते बाँध दिए जाते थे क्योंकि भय रहता था कि हठ तथा वन-प्रियता के कारण यह पशु कहीं भाग न जाँय किन्तु सम्राट् के कार्य-कुशल नियमों के फलस्वरूप वे संध्या समय खोल दिए जाते हैं तथापि वे आज्ञा पालन करते हैं। पहले आखेट करने के समय के अतिरिक्त हर समय उनकी आँखों पर पट्टी बँधी रहती थी क्योंकि वे भड़ककर अधीर हो जाते थे और पागल की भाँति इधर-उधर दौड़ने लगते थे किन्तु आज कल उनकी आँखों पर पर्दा नहीं डाला जाता। दरबार के अमीर लोग खासे के चालीस चीतों पर बाजी लगा सकते हैं। जो कोई जीतता है वह दूसरों से बाजी का रुपया लेता है। यदि कोई चीता सबसे पहले बीस हिरण लाता है तो उसका डोरिया[1] अपने समकक्षों से पाँच रुपया पाता है। खासा चीतों का संरक्षक अमीर, सैयद अहमद बारहा[2] हर बाजी से एक मोहर पाता है, इस प्रकार उसे बहुत अधिक धन प्राप्त होता है। यदि कोई अमीर बीस हिरणों के सींग[3] सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत करता है तो वह अपने समकक्ष प्रत्येक अमीर से एक अशर्फी वसूल करता है। इसी प्रकार तरफदारों और करावालों[4] में भी बाजी लगाई जाती है। सारांश यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अधिक से अधिक हिरण लाने की चेष्टा करता है। मृग चर्म प्रायः दीनों को नकद उपहारों के आंशिक रूप में दिए जाते हैं।

आश्चर्य की बात तो यह है कि खाल देखकर सम्राट् बता देते हैं कि हिरण किस आखेटागार का है।

शुक्रवार को सम्राट् आखेट नहीं करते क्योंकि बड़े राजकुमार के जन्म के पूर्व उन्होंने शपथ ली थी और उसको पूरी करते हैं।

सियाह गोश

सम्राट् इस छोटे परन्तु साहसी पशु से आखेट कराना बहुत पसन्द करते हैं। पूर्व काल में ये लोमड़ी और खरगोश का शिकार करते थे किन्तु अब ये काले हिरण को भी पकड़ते हैं। प्रत्येक पशु को प्रतिदिन एक सेर मांस दिया जाता है। प्रत्येक सियाह गोश के लिए एक पृथक् सेवक नियुक्त है जो प्रतिमास १०० दाम वेतन पाता है।

---

[1] जो व्यक्ति चीते की जंजीर को पकड़ता है। [2] यह दो हजारी था; दे० आईन ३०; नं० ६१। [3] अकबर को सींगों की आवश्यकता थी। बदायूँनी ने लिखा है कि ९८१ में सम्राट् ने आगरा से अजमेर जाने वाली सड़क पर अनेक भवनों तथा प्रासादों का निर्माण कराया क्योंकि वह प्रतिवर्ष अजमेर जाता था जहाँ मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह थी। हर कोस पर उसने एक मीनार और एक कुँआ बनवाया था। इन मीनारों में हजारों हिरणों के सींग लगाए गए थे। [4] 'तरफदार' का अर्थ है तरफ वाला। ऊपर अबुल फज्ल ने 'तरफ' शब्द का प्रयोग मिस्ल या सेट (पूरक वस्तुओं का समूह) के अर्थ में किया है। 'तरफदार' का अर्थ जमीनदार भी होता है। 'करावाल' का अर्थ है चालक, चलाने वाला या हाँकने वाला।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कुत्ते

सम्राट् इस पशु को इसके अच्छे गुणों के कारण बहुत पसन्द करते हैं। वह विभिन्न देशों से कुत्ते मंगाते हैं। सबसे अच्छे कुत्ते काबुल से आते हैं, विशेष कर हजारा जिले से (रावल पिंडी के उत्तर में)। कुत्तों को आभूषण पहनाते हैं और उनके विभिन्न नाम रखते हैं। कुत्ते हर प्रकार के पशु पर आक्रमण करते हैं। आश्चर्य का विषय तो यह है कि वे चीते पर भी आक्रमण करते हैं। कई कुत्ते मिलकर आक्रमण करते हैं और शत्रु को मार डालते हैं। खासे के हर कुत्ते को दो सेर मांस दिया जाता है और दूसरों को १½ सेर। हर दो ताजी कुत्तों के लिए एक सेवक नियुक्त है। प्रत्येक सेवक को १०० दाम प्रतिमास वेतन मिलता है।

हिरण का हिरण से शिकार

यह भीरु पशु भी पाला और प्रशिक्षित किया जा सकता है। हिरण के सींग पर एक जाल बाँध देते हैं और उसको वन्य पशु के सामने छोड़ देते हैं। वन्य हिरण भयभीत होकर पालू पशु से लड़ता है। युद्ध में वन्य मृग के सींग, पैर या कान जाल में फँस जाते हैं। तब झाड़ी में छिपे हुये शिकारी दौड़कर उन्हें पकड़ लेते हैं। इस प्रकार पकड़ा हुआ हिरण सिखाया जाता है और शनैः शनैः वह पालू हो जाता है। यदि जाल टूट जाता है या हिरण लड़ते-लड़ते थक जाता है तब वह अपने संरक्षक के पास वापस आता है जो या तो नया जाल बाँध देता है या दूसरे हिरण को युद्ध के लिये भेजता है।

सुल्तान फ़ीरोज़ ख़िल्जी इस प्रकार के शिकार को बहुत पसन्द करता था और प्रायः उसमें व्यस्त रहता था। किन्तु सम्राट् ने आखेट की इस प्रणाली को सुव्यवस्थित कर दिया है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि वन्यमृग प्रातःकाल से संध्या तक युद्ध जारी रखता है और चार-चार पालू हिरणों को परास्त कर देता है और पाँचवें हिरण से पराजित होता है। आजकल हिरण ऐसे आज्ञाकारी बना दिये गये हैं कि रात को भी आखेट करते हैं। यदि जाल टूट जाता है या यदि वन्य मृग भाग जाता है तो वे अपने आप अपने संरक्षक के पास वापस लौट आते हैं। ऐसा भी होता है कि पुकार सुनकर वे लड़ाई बन्द कर देते हैं, संरक्षक के पास वापस आते हैं और यदि लड़ाई की आज्ञा पाते हैं तो फिर जाकर युद्ध करते हैं।

पूर्व काल में हिरण रात को नहीं खोले जाते थे क्योंकि डर रहता था कि कदाचित् वह भाग जाय। यदि कभी वह खोले जाते थे तो एक पैर में भारी गेंद बाँध देते थे।

पालू हिरण की चतुरता तथा स्वामिभक्ति के विषय में अनेक कहानियाँ कही जाती हैं।

निकट अतीत में एक हिरण ने बड़ी सनसनी पैदा की थी। वह इलाहाबाद से भागा था और वीरता-पूर्वक अनेक नदियों और मैदानों को पार करके अपने घर पंजाब पहुँचा और अपने स्वामी के द्वार पर जाकर खड़ा हो गया।

पूर्वकाल में एक या दो से अधिक व्यक्ति हिरण के आखेट के आनन्द में सम्मिलित नहीं होते थे। ये लोग भी हिरण की भीरुता के डर से वेश बदल कर झाड़ियों में छिपे रहते थे और वन्य हिरण के सिवाय पालू हिरण से आखेट का काम नहीं लेते थे। किसी प्रकार वे उनको पकड़ते थे और आखेट करना सिखाते थे। सम्राट् ने एक नई प्रणाली का आविष्कार किया है जिसमें दो सौ से अधिक व्यक्ति एक साथ हिरण के आखेट में सम्मिलित हो सकते हैं। वे लगभग चालीस बैलों को हाँकते हुये धीरे-धीरे उस स्थान पर जाते हैं जहाँ हिरण हैं और स्वयं उनके पीछे छिपे रहते हैं। निकट पहुँच कर वे हिरणों का शिकार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आज कल हिरणों की नस्ल भी बढ़ाई जाती है और इस प्रकार उत्पन्न होने वाले हिरण आखेट के काम में लाये जाते हैं।

एक प्रणाली यह भी है : हिरण के सेवक स्वयं झुक जाते हैं और पालू हिरण उनके पीछे से उनको फाँदता है। वन्य हिरण समझते हैं कि वह जोड़ा खा रहा है। इसलिये वे उसके निकट आकर लड़ते हैं और पकड़ लिये जाते हैं। सम्राट् को आखेट की इस प्रणाली से अरुचि है। वे हिरणियों के द्वारा वन्य हिरणों में युद्ध कराते हैं।

एक बार एक हिरण ने एक चीते को पकड़ा जिसका पाँव हिरण के जाल में फँस गया था। दोनों पशु गुजरात से सम्राट् के सम्मुख लाये गये जैसा ऊपर कहा गया है (?)।

'घंटाहेरा' आखेट की निम्नलिखित प्रणाली का नाम है। शिकारी एक ढाल या टोकरी को उलटा पकड़ता है और उसकी आड़ में प्रकाशित दीपक रखता है और घंटा बजाने लगता है। साथ ही दूसरे शिकारी भी प्रतीक्षा में रहते हैं। दीपक का प्रकाश और घंटों के शब्द हिरणों को उस स्थान की ओर आकृष्ट करते हैं। तब छिपे हुये शिकारी उसको बाणों से मार डालते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बाजे के शब्द सुनकर हिरण मुग्ध हो जाते हैं और शिकारी उन्हें पकड़ लेते हैं। कभी-कभी शिकारी मधुर कंठ से गीत गाकर हिरणों को मोहित कर लेते हैं और जब हिरण निकट आ जाते हैं तब उठकर वे उन्हें मार डालते हैं। बहुत समय से सम्राट् ने इन दोनों प्रणालियों को अस्वीकार कर दिया है।

थाँगी—एक शिकारी नंगे सिर हिरण के सामने जाता है और दूर से पागलों की भाँति अपने सिर को हिलाता तथा विचित्र व्यवहार करता है। पशु उस व्यक्ति को पागल समझ कर उसके निकट आता है। तब दूसरे शिकारी जो छिपे रहते हैं झपट कर उसका शिकार करते हैं।

बीकारा कुछ शिकारी धनुषबाण लेकर एक दूसरे से कुछ दूरी पर झाड़ियों में छिपकर बैठ जाते हैं। कुछ लोग हिरणों को उनकी तरफ हाँकते हैं। हाँकने वाले अपने सिर के ऊपर सफेद चादर फहराते हैं। हिरण भय-भीत होकर छिपे हुये शिकारियों की ओर भागते हैं जो उनको मार डालते हैं।

डडावन—दो धनुष चलाने वाले हरे वस्त्र पहनकर उपरोक्त भांति छिप जाते हैं और हिरण उनकी ओर हांके जाते हैं। आखेट की यह प्रणाली बड़ी मनोरंजक है, क्योंकि हिरण नितान्त चकित हो जाते हैं।

अजारा—शिकारी सिर से पांव तक अपने शरीर में छोटी छोटी हरी टहनियां बांध लेते हैं। इसी प्रकार वे अपने धनुष-बाण भी छिपा लेते हैं। तब वे स्वतन्त्रतापूर्वक उस स्थान में जाते हैं जहां हिरण प्रायः आते हैं और उनका शिकार करते हैं। अथवा वे मृगचर्म की रस्सियां बनाते हैं और उन रस्सियों को पेड़ों से दृढ़ बांध देते हैं। अथवा वे उनको खम्भों से बांधकर उस स्थान के चारों ओर लटका देते हैं जहां हिरण सोते हैं और वायु की दिशा के विरुद्ध किसी स्थान पर जाल बिछा देते हैं। शिकारी एक ओर से प्रकट होते हैं। हिरण विवश होकर उसी स्थान की ओर भागते हैं जहां जाल बिछा रहता है और इस प्रकार पकड़ लिये जाते हैं। कभी कभी शिकारी वृक्ष की आड़ में छिपकर हिरण की बोली बोलता है। जब हिरण उसके निकट आते हैं तो वह उनको मार डालता है, अथवा कभी कभी शिकारी मैदान में किसी स्थान पर एक हिरणी बांध देते हैं, अथवा वे पालू हिरण को वन्य हिरणों की चरा-गाह में छोड़ देते हैं। वन्य मृग उसके निकट आते हैं और उनके पांव जाल में फँस जाते हैं।

ठाँगी—शिकारी पागलों की भांति नंगे सिर इधर उधर चलता है। उसके सब कपड़ों पर पान की पीक के दाग होते हैं। शिकारी स्वयं इस प्रकार व्यवहार करता है मानों वह घायल हो। वन्य-पशु उसके निकट एकत्र होकर उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं परन्तु अपनी बुरी इच्छा तथा लोभ के कारण अपने प्राण खो बैठते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

भैंसे का शिकार

जहां भैंसे सोते हैं वहां एक स्थान पर एक रस्सी पृथ्वी में गाड़ देते हैं। इस रस्सी का सिरा ऊपर रहता है जिसमें फंदा लगा रहता है। इस रस्सी में एक दूसरी लम्बी रस्सी बांधते हैं। दूसरी रस्सी में एक मस्त भैंस को बांध देते हैं। एक फुर्तीला तथा साहसी मनुष्य छिप जाता है। जंगली भैंसा भैंस को देखकर उस स्थान पर आता है और उससे जोड़ा खाता है। ऐसी दशा में शिकारी झाड़ी से निकलकर फन्दा भैंसे के पांव में डाल देता है। प्रायः ऐसा होता है कि मनुष्य का साहस छूट जाता है और उसको अपने प्राण से हाथ धोना पड़ता है।

उनको पकड़ने की दूसरी विधि यह है कि शिकारी उन तालाबों पर जाते हैं जहां भैंसे प्रायः एकत्र होते हैं। वे तालाबों के चारों ओर जाल लगा देते हैं। शिकारी पालू भैंसों पर सवार हाथ में बर्छे लेकर पानी में उतरते हैं। उनको देखकर जंगली भैंसे निकट आते हैं। उनमें से कुछ बर्छों से मार डाले जाते हैं और दूसरे जालों में फँस जाते हैं। जंगली भैंसों की चरागाहों में भी उनका इसी प्रकार शिकार करते हैं।

पक्षियों का शिकार

सम्राट् इन ऊँचे उड़ने वाले पक्षियों को बहुत पसन्द करते हैं और प्रायः उनसे शिकार का काम लेते हैं। यद्यपि वह बाज, शाहीन, शुनगार और बुरकत सब पक्षियों को पालते और उनसे आश्चर्यजनक काम कराते हैं तथापि वह बाशा को सबसे अधिक पसन्द करते हैं और उसको विभिन्न नामों से पुकारते हैं।

चूंकि विनम्र लेखक को शीघ्रता से यह काम समाप्त करना है और सब विषयों का संक्षेप में वर्णन करना है इसलिये इस विषय के सम्बन्ध में अधिक कहना और प्रत्येक पक्षी की चतुराई का पृथक् वर्णन करना असम्भव है। पहले तो लेखक को इन पक्षियों का बहुत कम ज्ञान है और दूसरे स्वभावतः उसे पशु-हत्या से घृणा है। इन कारणों से वह संक्षेप में वर्णन करता है।

वसन्त ऋतु के मध्य में पक्षियों का निरीक्षण होता है। तत्पश्चात् उनके पर झड़ते हैं और वे देहात में भेज दिये जाते हैं। ज्योंही पर झड़ने का समय समाप्त होता है त्योंही उनका पुनः निरीक्षण होता है। निरीक्षण का आरम्भ खासे के बाजों से होता है और क्रय-तिथि के क्रम से उनका निरीक्षण किया जाता है। जुर्रा बाज जितना अधिक शिकार किये रहते हैं उतना ही पहले उनका निरीक्षण किया जाता है। इसके उपरान्त बाशा, शाहीन, खेला चपकबाशा, बहरी, बच्चा बहरी, शिकरा, चपक शिकरा, तुरमती, रेकी, बेसरा, धोती, चर्ग, चर्गेला, लगड़ और झगड़ (जिसको सम्राट् चपक लगर कहते हैं) आते हैं। मोल्चीन का भी निरीक्षण होता है। यह एक पक्षी है जो गवरैया के सदृश होता है; शाहीन की तरह इसके पंख पीले रंग के होते हैं और यह कुलंग (सारस) का शिकार करता है। कुछ लोग कहते हैं कि उड़ते समय यह कुलंग के पर तोड़ डालता है; दूसरे लोग कहते हैं कि यह उसकी आंखें फोड़ देता है किन्तु इस कथन की सत्यता प्रमाणित नहीं हुई है। ओधपपर[1] भी कश्मीर से लाये जाते हैं। यह पक्षी हरे रंग का और तोते से कुछ छोटा होता है। इसकी चोंच लाल, सीधी और लम्बी होती है। इसकी दुम अधिक लम्बी होती है। यह हवा में उड़ता, छोटे पक्षियों का शिकार करता और आ कर अपने स्वामी के हाथ पर बैठ जाता है।

बहुत से अन्य पक्षियों को शिकार करने का प्रशिक्षण दिया जाता है किन्तु उन सबका उल्लेख नहीं किया जा सकता। उदाहरणार्थ, कौआ, गवरैया, बोदना और सारू को भी शिकार करने की शिक्षा दी जाती है।

---

[1] इस पक्षी का नाम संदिग्धपूर्ण है। 'इकबालनामा' पृष्ठ १५६ पर कश्मीरी पक्षियों की सूची में यह नाम नहीं मिलता।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उदारहृदयता तथा अपने दरबार के वैभव-वृद्धि के दृष्टि कोण से सम्राट् बाज द्वारा शिकार करना अधिक पसन्द करते हैं यद्यपि प्रत्यक्ष द्रष्टा यह समझते हैं उनका ध्येय केवल आखेट है।

इस विभाग में अनेक मनसबदार, अहदी और अन्य सैनिक नियुक्त हैं। इसके प्यादे अधिकतर कश्मीरी तथा हिन्दुस्तानी हैं। उनके वेतन निम्नलिखित हैं :

कश्मीरी

प्रथम श्रेणी में प्रथम कोटि को ७½ रुपए मासिक, द्वितीय कोटि को ७ रुपए मासिक, तृतीय कोटि को ६¾ रुपए मासिक; द्वितीय श्रेणी में प्रथम कोटि को ६½ रुपए मासिक, द्वितीय कोटि को ६¼ रुपए मासिक, तृतीय कोटि को ५¾ रुपए मासिक; तृतीय श्रेणी में प्रथम कोटि को ५½ रुपए मासिक, द्वितीय कोटि को ५ रुपए मासिक, तृतीय कोटि को ४½ रुपए मासिक।

हिन्दुस्तानी

प्रथम श्रेणी में प्रथम कोटि को ५ रुपया मासिक; द्वितीय कोटि को ४¾ रुपया मासिक; तृतीय कोटि को ४½ रुपया मासिक; द्वितीय श्रेणी में प्रथम कोटि को ४¼ रुपया मासिक; द्वितीय कोटि को ४ रुपया मासिक; तृतीय कोटि को ३¾ रुपया मासिक; तृतीय श्रेणी में प्रथम कोटि को ३½ रुपया मासिक; द्वितीय कोटि को ३¼ रुपया मासिक; तृतीय कोटि को ३ रुपया मासिक।

पक्षियों का भोजन

कश्मीर तथा हिन्दुस्तान की पक्षीशालाओं में पक्षियों को साधारणतया एक बार भोजन दिया जाता है परन्तु राजकीय पक्षीशालाओं (कुशखानों) में उन्हें दो बार भोजन दिया जाता है। पक्षियों को निम्नलिखित मात्रा में मांस दिया जाता है।

बाज ७ दाम; जुर्रा ६ दाम; बाहरी, लाचीन और खेला, पाँच-पाँच दाम; बाशा, ३ दाम; चपक बाशा, शिकरा, चपक शिकरा, बेसरा, धोती आदि, २ दाम। संध्या समय पक्षियों को गवरैया का मास खिलाते हैं। बाज, जुर्रा और बहरी को सात-सात गवरैया; लाचीन को पाँच; बाशा को तीन और दूसरों को दो गवरैया देते हैं। इस समय चर्ग और लगर को भी मांस दिया जाता है। शुन्कार, शाहबाज, और बुरकत को प्रति दिन एक सेर मांस खिलाया जाता है। शिकार के दिन यह पक्षी अपने किए हुए शिकारों को खाते हैं।

पक्षियों का मूल्य

अपनी इच्छा तथा अनुभवहीनता के कारण लोग पक्षियों को अधिक मूल्य पर मोल लेते हैं। सम्राट् व्यापारियों के लाभ का उचित ध्यान रखते हैं किन्तु न्याय के विचार से उन्होंने पक्षियों के मूल्य निर्धारित कर दिए हैं। पक्षियों के व्यापारी लाभ तो प्राप्त करते हैं परन्तु ग्राहकों को घाटा नहीं उठाना पड़ता। बाज पक्षियों को क्रय करते समय लोगों को देखना चाहिए कि पक्षी निम्नांकित तीन वर्गों में से किस वर्ग का है: प्रथम, खाना कुरीज पक्षी वे हैं जिनके बाल और पर अनुभवी शिकारी सेवकों की देख-रेख में तैयार हुए हैं। द्वितीय, चूज पक्षी वे हैं जिनके बाल और पर अभी नहीं निकले हैं। तृतीय, तरीनाक पक्षी वे हैं जो जंगल में ही तैयार हो चुके हैं। पक्षियों के निम्नांकित मूल्य निर्धारित हैं :

बाज—प्रथम श्रेणी में, प्रथम कोटि को १२ मोहर; द्वितीय कोटि को ९ मोहर; तृतीय कोटि को ६ मोहर, द्वितीय श्रेणी में, प्रथम कोटि को १० मोहर; द्वितीय कोटि को ७ मोहर; तृतीय कोटि को ४ मोहर; तृतीय श्रेणी के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बाज पक्षियों के मूल्य द्वितीय श्रेणी वालों से कम हैं।

जुर्रा—प्रथम श्रेणी ८, ५, २, १ मोहर; द्वितीय श्रेणी ६, ४, १½, १ मोहर, ५ रुपया।

बाशा—प्रथम श्रेणी ३, २, १ मोहर, ४ रुपया; द्वितीय श्रेणी २, १ मोहर, ५ रुपया।

शाहीन—प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी ३, २, १ मोहर।

बहरी—२, १½, १ मोहर। बहरी के बच्चों का मूल्य जवान बहरी से कुछ कम होता है।

खेला—१½, १½ मोहर।

चर्ग—२½, २, १½ रुपया।

चपक बाशा—१, ½, ¼ रुपया।

शिकरा—१½, १, ½ रुपया।

बेसरा—२, १½, १ रुपया।

चपक शिकरा, लगड़, झगड़, तुरमती, रेकी १, ½, ¼ रुपया। उनके मूल्यों का वर्गीकरण नहीं हुआ है।

सम्राट् प्रत्येक मीर शिकार[1] को उसके पद के अनुकूल समुचित पुरस्कार देते हैं। प्रत्येक शिकार के लिए जो पारितोषिक नियत है वह एक मोहर से एक दाम तक दिया जाता है। यदि बाज शिकार को जीवित या मृत पकड़ लाते हैं तो पारितोषिक बाज की चतुराई तथा शिकार के आकार के विचार से दिया जाता है। पक्षी के सेवक को पारितोषिक का अर्द्धांश दिया जाता है। यदि सम्राट् स्वयं शिकार करते हैं तो पचास प्रतिशत पारितोषिक कम कर दिया जाता है। यदि पक्षी राजकीय पक्षीशाले में पेशकश के रूप में लिया जाता है तो कुशबेगी (पक्षीशाला के अधीक्षक) को प्रति बाज १½ रुपया और मुहासिब को ½ रुपया दिया जाता है। जुर्रा के लिए कुशबेगी को १ रुपया और मुहासिब को ¼ रुपया; बाशा के लिए कुशबेगी का ¼ रुपया और मुहासिब को ⅛ रुपया; प्रत्येक लाचीन, चर्ग, चर्गेला, खेला, बाहरी बच्चा के लिए कुशबेगी को ⅛ रुपया और मुहासिब को १/१६ रुपया; तथा प्रत्येक चपक बाशा, धोती आदि के लिए कुशबेगी को १/१६ और मुहासिब को १/३२ रुपया दिया जाता है।

राजकीय पक्षीशाला में पक्षियों की न्यूनतम निर्धारित संख्या निम्नांकित है: बाज और शाहीन चालीस-चालीस; जुर्रा, तीस; बाशा, एक सौ; बहरी और चुर्ग, बीस-बीस; लगड़ और शिकरा, दस-दस।

जल पक्षी (मुर्गाबी)

मुर्गाबी का शिकार बड़ा मनोरंजक होता है। उसके पकड़ने की एक विचित्र विधि यह है: मुर्गाबी के चमड़े से एक कृत्रिम पक्षी तैयार करते हैं जिसमें पर, डैने, चोंच और दुम सब अंग होते हैं। इस कृत्रिम पक्षी के शरीर में आँखों के स्थान में दो छेद बना देते हैं। शरीर खोखला होता है। शिकारी उसमें अपना सिर डालकर पानी में खड़ा होता है। पानी उसकी गर्दन तक होता है। शिकारी बहुत सावधानी के साथ आगे बढ़ता हुआ जानवरों के पास जाता है और एक एक करके उनको पानी में डुबो कर पकड़ता जाता है। परन्तु इनमें से कुछ पक्षी चतुर होते हैं और उड़ जाते हैं।

कश्मीर में बाज को ऐसा सिखाते हैं कि वह मुर्गाबियों को तैरने की दशा में पकड़ता और शिकारी के पास नाव में ले आता है। अथवा, कभी-कभी बाज मुर्गाबी को पानी में डुबोकर उसकी पीठ पर बैठ जाता है और शिकारी निकट पहुँच कर उसे पकड़ लेता है।

[1] 'मीर शिकार' किसी भी पक्षी पकड़ने वाले को या बाज के सहायक सेवक को कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दूसरी विधि यह है कि भैंसों को पानी में छोड़ देते हैं और शिकारी स्वयं उनकी आड़ में छिप कर चलते और निकट पहुँचकर पक्षियों को पकड़ लेते हैं।

दुर्राज—इस पक्षी के पकड़ने की विभिन्न विधियां हैं। उनमें से सबसे विचित्र विधि यह है कि कुछ लोग दुर्राज के बच्चों को पकड़ कर उनको शिकार करने की शिक्षा देते हैं जिससे वह प्रत्येक आज्ञा का पालन करता है। वह दूसरे पक्षियों से लड़ता है। पालू दुर्राज को एक पिंजड़े में बन्द करते हैं पिजड़े के चारों ओर बाल के फन्दे या जाल लगा देते हैं। शिकारी का संकेत पाकर दुर्राज बोलने लगता है। दूसरे दुर्राज स्नेह के कारण अथवा उससे युद्ध करने के लिये उसके निकट आते हैं और जाल में फँस जाते हैं।

बोदना—शिकारी मिट्टी का एक भोंपू बनाता है जिसकी गर्दन तंग होती है। शिकारी रात को उसको बजाता है जिससे उल्लू की बोली जैसा शब्द निकलता है। बोदना इस शब्द से भयभीत होकर किसी स्थान पर एकत्र हो जाते हैं। दूसरा व्यक्ति घास फूस का एक गट्ठा जलाता है और उसको तेजी के साथ घुमाता है जिससे पक्षियों की आंखें चकाचौंध हो जाती हैं। तब बहेलिए उनको पकड़ कर पिंजड़ों में बन्द कर देते हैं।

लगड़—यह रूपरेखा में चर्ग तथा आकार-प्रकार में जुर्रा के सदृश होते हैं। शिकारी प्रशिक्षित लगर के शरीर के चारों तरफ जाल बांधते हैं और पक्षियों के पर उसके पंजों में दे देते हैं। इस तरह तैयार करके पालू लगड़ को हवा में छोड़ देते हैं। दूसरे लगड़ समझते हैं कि उसके पंजे में शिकार है। इसलिए वे उसके निकट आते हैं और जाल में फँस कर लड़ने लगते हैं तथा पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं।

गौगाई—शिकारी पालू गौगाई को उल्लू के साथ एक सलीबनुमा ? लकड़ी पर बांध देते हैं और उनके चारों तरफ बालों के जाल लगा देते हैं। शीघ्र ही उल्लू अधीर होकर फड़फड़ाता है। गौगाई यह समझकर कि उसका साथी लड़ना चाहता है चिल्लाने लगता है। दूसरे गौगाई और उल्लू उनके शब्द सुनकर सहायता के लिए आते हैं और जालों में फँस जाते हैं।

मेंढक—मेंढकों को भी गवरैया पकड़ने की शिक्षा देते हैं। यह शिकार बहुत मनोरंजक होता है।

उत्सुकता के कारण बादशाह मकड़ियों को अपने शिकार पकड़ते हुये देखना बहुत पसन्द करते हैं। मकड़ी से बचने की मक्खी की चेष्टा, उसकी उछल-कूद तथा शत्रु के साथ उसके संघर्ष को देखकर सम्राट् बहुत प्रसन्न होते हैं। 'इश्क अस्तव सद हजार तमन्ना मेरा चा जुर्म गर ख्वाहिशे कुनद दिल शैदा मेरा चा जुर्म।' [मैं प्रेम के वश में हूँ; यदि मेरी हजारों इच्छायें हों तो कोई अपराध नहीं है। यदि मेरे प्रेमासक्त हृदय में कोई अवैध इच्छा हो तो यह कोई अपराध नहीं है।]

सत्य यह है कि सम्राट् का चीतों से इतना स्नेह करना उनकी प्रेम-भावना तथा उनकी आश्चर्यजनक अन्तर्दृष्टि का एक उदाहरण है।

इससे अधिक विवरण देने में बहुत अधिक समय लगेगा। सब व्यौरों की गणना करना असम्भव है। इसलिये लेखक दूसरा विषय आरम्भ करता है।

आईन २९

मनोरंजन (निशातबाजी)

सम्राट् मनोरंजन के नये साधनों का आविष्कार करते हैं और अपने मनोरंजनों के द्वारा मनुष्य के चरित्र

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

की परीक्षा करते हैं।

मनोरंजन के अनेक प्रकार हैं जिनमें कुछ विशेष का वर्णन किया जाता है।

चौगान का खेल[1] (हाकी)

वाह्य द्रष्टा इस खेल को केवल मनोरंजन तथा खेल समझते हैं; परन्तु उदारचेता इसको उत्साह तथा विवेकशीलता सीखने का एक साधन समझते हैं। इससे मनुष्य का मूल्यांकन होता है और यह मैत्री सम्बन्ध को दृढ़ बनाता है। शक्तिशाली मनुष्य यह खेल खेलने में अश्वारोहण कला का ज्ञान प्राप्त करते हैं और इससे घोड़ों में आज्ञाकारिता तथा चुस्ती आती है। यही कारण है जिससे सम्राट् को यह खेल बहुत रुचिकर है। वाह्य रूप से यह खेल राज-सभा की वैभव-वृद्धि करता है परन्तु उच्च दृष्टिकोण से देखने से प्रतीत होता है कि यह मनुष्य के गुप्त गुणों को प्रकाश में लाता है।

जब सम्राट् यह खेल खेलने के लिए मैदान में जाते हैं तो वह अपना एक प्रतिद्वन्द्वी तथा कुछ अन्य फुर्तीले एवं दक्ष खिलाड़ी चुनते हैं जिनके मन में केवल एक विचार रहता है कि सम्राट् की ओर से उनके प्रतिद्वन्द्वी के विरुद्ध अपनी क्रीड़ा पटुता को दिखावें।।दया-भाव के कारण सम्राट् किसी को कभी खेलने की आज्ञा नहीं देते वरन् पाँसा डालकर जोड़ निर्धारित करते हैं। इस खेल में दस से अधिक मनुष्य भाग नहीं लेते किन्तु इनके अतिरिक्त और भी बहुत से मनुष्य मैदान से बाहर खेलने के लिए तैयार रहते हैं। एक घड़ी व्यतीत होने के उपरान्त एक जोड़ विश्राम करती है और उनके स्थान में दो अन्य खिलाड़ी मैदान में आते हैं।

चौगान दो प्रकार से खेली जाती है। प्रथम विधि यह है कि गेंद को चौगान स्टिक के झुके हुए भाग में लेकर शनैः शनैः मैदान के मध्य से हाल[2] तक ले जाते हैं। इस विधि को हिन्दी में 'रोल' कहते हैं। दूसरी विधि यह है कि गेंद को ताक कर चौगान स्टिक जोर से मारते हैं और मैदान के मध्य से दूर फेंक देते हैं। तब खिलाड़ी गेंद के पीछे दौड़ता है और दूसरों से पहले गेंद के निकट पहुँचकर उसको फिर मैदान के मध्य की ओर वापस फेंकता है। इस विधि को 'वेला' कहते हैं। यह विभिन्न ढंगों से खेला जाता है। खिलाड़ी या तो अपने दाहने हाथ से चौगान पकड़ता है और गेंद को चोट मारकर उसको दाहिनी ओर आगे या पीछे फेंकता है, अथवा वह बायें हाथ में चौगान लेकर ऐसा ही करता है, अथवा गेंद को घोड़े के सामने लाकर उसको दाहने या बायें फेंकता है। घोड़े के पांव के पीछे से अथवा उसके शरीर के नीचे से गेंद उसी दिशा में फेंकी जा सकती है। यदि गेंद घोड़े के सामने है तो भी सवार उसको आगे फेकता है या यह कि घोड़े की पीठ पर कुछ पीछे हटकर गेंद को घोड़े के पैरों के बीच से आगे बढ़ाता है।[3]

विभिन्न विधियों से गेंद पर चोट लगाने की पटुता में वह अद्वितीय हैं, प्रायः वह गेंद पर उस समय भी चोट मारते हैं जब वह ऊपर हवा में होती है। उनकी यह निपुणता देखकर सब दर्शक चकित हो जाते हैं। जब गेंद हाल के पास पहुँचती है तब दूर तथा निकट के लोगों के सूचनार्थ नक्कारा बजाया जाता है। इस खेल में उत्साह तथा

---

[1] शायद ही कोई मुसलमान इतिहासकार हो जो इस खेल का उल्लेख न करता हो। बाबर लिखता है कि यह तिब्बत भर में खेला जाता है। भारत के पूर्व मनीपुर (असम) के लोग चौगान के अच्छे खिलाड़ी समझे जाते हैं। सैयद अब्दुल्ला खाँ आत्मज मीर ख्वाँदा अकबर का चौगानबेगी अथवा चौगान खेल का अधीक्षक था। अकबर के शासन के आरम्भ में, ९७० के पश्चात्, आगरा से एक फ़र्लांग की दूरी पर गरीवाली अकबर का प्रिय चौगान-क्रीड़ा-क्षेत्र था।

[2] वे स्तम्भ जो क्रीड़ा-क्षेत्र की सीमा प्रकट करते हैं। [3] इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अभिरुचि बढ़ाने के लिए दांव (बाजी) लगाने की भी अनुमति दी गई है। खिलाड़ी एक दूसरे से दांव जीतते हैं और जो व्यक्ति गेंद को हाल तक पहुँचाता है दांव की धनराशि में उसका भाग दूसरों से अधिक होता है। यदि हवा में गेंद पर इस तरह चोट मारी जाती है कि वह 'मील' (अर्थात् सीमा) के बाहर गिरता है या गिराया जाता है तो खेल बुर्द समझी जाती है, अर्थात् यह समझा जाता है कि दोनों दलों में से कोई नहीं जीता। ऐसे अवसर पर खिलाड़ी गेंद के निकट एकत्र होकर उसको ले जाने की यथाशक्ति चेष्टा करते हैं और आश्चर्य-जनक कौशल दिखलाते हैं।

सम्राट् अंधकार-पूर्ण रात्रि में भी चौगान खेलते हैं जिसको देखकर चतुर खिलाड़ी भी चकित हो जाते हैं। रात को प्रज्वलित गेंदें काम में लाई जाती हैं। ये गेंदें पलास की लकड़ी की बनाई जाती हैं जो बहुत हल्की होती है तथा देर तक जलती रहती है। खेल की वैभव-वृद्धि के लिए, जो सांसारिक विषयों में अत्यावश्यक है, सम्राट् सोने और चाँदी के घुँघुरू चौगान के सिरों पर लगवाते हैं। यदि कोई घुँघुरू चौगान से टूट कर पृथ्वी पर गिर जाता है तो जो खिलाडी उसको पाता है वह उसी की सम्पत्ति समझा जाता है।

इस खेल की अच्छाइयों का वर्णन करना असम्भव है, विशेषकर लेखक जैसे अल्पज्ञ के लिए संक्षिप्त वर्णन भी अत्यन्त कठिन है।

इश्कबाजी (कबूतर उड़ाना)

कबूतर उड़ाने को सम्राट् 'इश्कबाजी' की संज्ञा देते हैं यह प्रवृत्ति साधारण लोगों के लिए सामान्य मनोरंजन है किन्तु सम्राट् की बुद्धिमत्ता के कारण उनके लिए यह ज्ञानार्जन का एक साधन है। सम्राट् इस खेल के द्वारा अनेक सिद्धान्तहीन सांसारिक मनुष्यों को आज्ञाकारिता की शिक्षा देते हैं और उसकी सहायता से संसार में एकता तथा मैत्री स्थापित करते हैं। कबूतरों के गिरने और उड़ने से सम्राट् को जो मनोरंजन प्राप्त होता है वह हमें उत्साही दरवेशों के आनन्दातिरेक का स्मरण कराता है, सृष्टि के आश्चर्यों को देखकर वह ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं। अतएव उच्च उद्देश्यों के कारण इस मनोरंजन पर इतना अधिक ध्यान देते हैं।

वर्तमान युग के कबूतरों ने उच्च कोटि की दक्षता प्राप्त की है। ईरान और तूरान के नरेश कबूतरों को उपहार रूप में भेजते हैं। व्यापारी भी उत्कृष्ट पक्षियों को बडी-बडी संख्या में लाते हैं।

बालकपन में सम्राट् कपोतोड्डयन में अत्यभिरुचि रखते थे किन्तु उसके उपरान्त जब उनकी आयु तथा बुद्धि में वृद्धि हुई तब उन्होंने उसका ऐकान्तिक त्याग कर दिया। परन्तु बुद्धि के परिपक्व होने पर उन्होंने फिर उस पर ध्यान दिया है।

एक सुप्रशिक्षित हरित कपोती जो पूर्व काल में खान आज़म कोकलताश की थी सम्राट् को हस्तगत हुई। सम्राट् ने उस पर बहुत ध्यान दिया है जिसके कारण वह समस्त राजकीय कपोतों में अग्रणी हो गई है और 'मोहना' नाम से विख्यात है। उससे अनेक उत्तम कपोत उत्पन्न हुए जो अश्की (अश्रुपूर्ण), परीजाद (परीपुत्र), अल्मास (हीरक), तथा शाह ऊदी नाम से विख्यात हैं। उनकी सन्तानें संसार के सर्वश्रेष्ठ कपोतों में गिनी जाती हैं। उन्होंने उमर शेख मिर्जा (बाबर के पिता) और सुल्तान हुसैन मिर्जा के प्रशिक्षित कपोतों की स्मृति लोगों के हृदयों से मिटा दी। राजकीय कपोतालय में ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है कि ईरानी और तूरानी कपोत-पालक चकित हो गए हैं और उन्होंने इस कला की शिक्षा फिर से ग्रहण करना आरम्भ कर दिया है।

पूर्वकाल में हर प्रकार के कबूतर प्रायः जोड़ा खाते थे, परन्तु सम्राट् ने सौन्दर्य तथा उड्डीयन आदि गुणों के अनुसार उनके जोड़े निर्धारित किये हैं जिससे बहुत उत्तम बच्चे उत्पन्न होते हैं। नियम यह है कि अपरिचित कपोत तथा कपोती को पाँच-छः दिन एकत्र रखते हैं; इस काल में वे एक दूसरे से ऐसे परिचित हो जाते हैं कि

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

दीर्घकालीन विछोह के पश्चात् भी वे एक दूसरे को पहचान लेते हैं। कपोती जोड़ा खाने के उपरान्त कम से कम आठवें या अधिक से अधिक बारहवें दिन अण्डे देती है। यदि कपोती छोटी या बीमार होती है तो कुछ दिन और लगते हैं। यह पक्षी सितंबर-अक्टूबर से जोड़ा खाने लगते हैं। और फरवरदीन (फरवरी-मार्च) में एक दूसरे से पृथक् हो जाते हैं। कबूतरी साधारणतया दो परन्तु कभी-कभी एक ही अण्डे देती है। दिन को कपोत अंडों को सेता है और रात को कपोती, इससे वे उनको गर्मी और नर्मी पहुँचाते हैं। शीत ऋतु में इक्कीस दिन में बच्चे निकल आते हैं और यदि मौसम गर्म होता है तो सत्तरह या अठा रह ही दिन लगते हैं। लगभग छः दिन तक बच्चा फला' खाता है। फला का अर्थ है वह दाना जिसको माँ बाप अपने गले में लुब्दी की तरह बना देते हैं इसके उपरान्त माँ-बाप अपने पोटे से बिना पचा हुआ दाना निकाल कर बच्चे के मुँह में डालते हैं वे लगभग एक महीने तक ऐसा करते हैं। इसके पश्चात् बच्चे अपने आप दाना चुगने लगते हैं तब माँ बाप उससे अलग कर दिए जाते हैं। कभी कभी एक कबूतरी के अण्डे, और बच्चे भी, दूसरी कबूतरी को सेने और पालने के लिए दे दिए जाते हैं। गृह-पोषित बच्चे सिखाये जाते हैं। इनमें से कुछ 'तोर' (?) में रख कर बलवान् बनाये जाते हैं और वे उस स्थान से परिचित हो जाते हैं।[1] जब ये दोनों वस्तुयें समाप्त हो जाती हैं तब कपोतों को दैनिक भोजन का केवल तृतीयांश या चतुर्थांश दिया जाता है। जब वे थोड़ा क्षुधाभ्यस्त हो जाते हैं तब उनको उड़ने की शिक्षा दी जाती है। वे प्रति दिन चालीस 'हवा' (अर्थात् उड्डीयन या उड़ान) करते हैं। उड़कर बैठने तक एक हवा वा उड़ान मानी जाती है। इस काल में प्रशिक्षक 'चर्ख' और 'बाजी' पर ध्यान नहीं देते। दस परों के निकलने के उपरान्त उड़ान आरम्भ की जाती है और जब आठ पर गिर जाते हैं तो उनका उड़ना रोक दिया जाता है। इस विश्राम को कपोत-पालकों की भाषा में 'ख्वाबानीदन' कहते हैं। दो मास उपरान्त कपोतों के नूतन पंख निकल आते हैं और ये बहुत बलवान् हो जाते हैं। वे फिर उन्मुक्त कर दिए जाते हैं। उनकी दक्षता प्रदर्शन का यह सर्वोत्तम समय है। जब कबूतर 'बाजी' और 'चर्ख' करना भली भाँति सीख लेते हैं तो वे सम्राट् के निरीक्षणार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं और चार मास तक अपनी उड्डीयन कलादक्षता का प्रदर्शन करते हैं। कपोत की उस बलवती उड्डीयन गति को, जिसमें वह पूरा चक्कर काट लेता है, 'चर्ख' कहते हैं। यदि यह चक्राकार उड्डीयन सफल नहीं होता तो उसको 'कित्फ' (कंधा) कहते हैं और इसका कोई महत्व नहीं समझा जाता। 'बाजी' का तात्पर्य है 'मुअल्लक जदन' अर्थात् पीठ को नीचे और पैरों को ऊपर करके शीघ्रता से चक्कर काटना जिसको हिन्दी में कला या कलाबाजी कहते हैं। कुछ लोग सोचते थे कि उड़ते समय पक्षी के दोनों डैने परस्पर मिल जाते हैं और दर्शक को ऐसा प्रतीत होता है कि पक्षी कलाबाजी खा रहा है। इस सम्मति की परीक्षा के लिए सम्राट् ने एक कपोत के एक डैने को काला रँगवा दिया जिससे इस विचार की अशुद्धता स्पष्ट हो हो गई। कुछ कबूतर बाजी और चर्ख में घबड़ा जाते हैं और स्तम्भित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। इसको 'गुलूला' कहते हैं और यह पक्षी का दोष माना जाता है। कभी कभी कबूतर चोट खाकर नीचे गिरते हैं किन्तु प्रायः जब वे पृथ्वी के निकट आते हैं तब ठीक हो जाते हैं और साहस तथा शक्ति एकत्र करके फिर उड़ जाते हैं। खासे के कपोतालय का प्रत्येक कपोत पन्द्रह चर्ख लगाता है और सत्तर कलाबाजियाँ खाता है जिसको देखकर दर्शक चकित हो जाते हैं। पूर्व काल में ग्यारह या इक्कीस कबूतर एक साथ उड़ाये जाते थे परन्तु आज कल एक सौ एक कबूतर एक साथ उड़ाये जाते हैं। सम्राट् के विशेष ध्यान से कपोतों को ऐसा उत्कृष्ट प्रशिक्षण मिला है कि वे रात को भी बहुत ऊचाई तक उड़ाये जाते हैं।

यात्रा और शिविरोपरान्त प्रस्थान के समय कबूतर साथ साथ उड़ते हैं। कहार उनके अण्डों को हाथ में

[1] इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं है क्योंकि 'तोर' का अर्थ अज्ञात है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

लेकर दौड़ते हैं। कभी कभी यात्रा में कबूतर नीचे उतर कर अड्डों पर विश्राम कर लेते हैं और फिर उड़ने लगते हैं। राजकीय कपोतालय के कपोतों की गणना करना अत्यन्त कठिन है परन्तु अनुमानतः वे बीस सहस्त्र से अधिक हैं। इनमें से पाँच सौ कबूतर खासे के हैं। वे बहुत विख्यात हैं और उनकी दक्षता के विषय में अनेक विलक्षण कहानियाँ कही जाती हैं।

पूर्व काल में कपोत-पालक कपोत का मूल्यांकन करने के लिए उसका पैर मरोड़ते थे।[1] नेत्रछिद्र को देखते थे या चोंच के ऊपर के छिद्र को देखते थे परन्तु वे उसकी जाति (नस्ल) के गुणों के और लक्षण नहीं देख सकते थे। सम्राट् ने अनेक अन्य लक्षणों का पता लगाया और कपोतों का मूल्यांकन जो पूर्व काल में अत्यन्त कठिन था अब बहुत सरल हो गया है।

प्रथम—पूर्ववर्ती कपोतपालकों के तीनों लक्षणों को निम्नांकित उपश्रेणियों में विभाजित कर दी: दो आँखें, और उनके ऊपरी और नीचे के लक्षण; आठ नख; चोंच का ऊपरी तथा निम्नतल! इन लक्षणों की परस्पर तुलना करके कपोतों के मूल्यांकन के अन्य अनेक लक्षण निर्धारित कर लिए गए हैं।

द्वितीय—सम्राट् कबूतरों के पावों की छल्लेदार गाँठों के रंग और विभिन्नता को देखकर उनके गुण तथा प्रकार की पहचान करते हैं। एक ग्रन्थ तैयार कराया गया है जिसमें इन लक्षणों का क्रमबद्ध वर्णन है। इन लक्षणों के आधार पर सम्राट् ने कपोतों को दस वर्गों में विभक्त किया है और प्रत्येक वर्ग के पक्षियों के लिए पृथक कपोतालय स्थापित किए गए हैं। प्रथम कपोतालय के कपोतों का मूल्य निर्धारित नहीं किया गया है और इनका भाव बदलता रहता है। अनेक दीन व्यक्ति इन कपोतों को प्रशिक्षित करके धनवान हो गए हैं।

शेष वर्गों के कपोतों के मूल्य निम्नांकित हैं: द्वितीय वर्ग के एक युग्म (जोड़े) कपोतों का मूल्य ३ रुपया; तृतीय वर्ग के युग्म का २½ रुपया, चतुर्थ वर्ग के युग्म का २ रुपया; पंचम वर्ग के युग्म का १½ रुपया, षष्टम वर्ग के युग्म का १ रुपया; सप्तम वर्ग के युग्म का ¾ रुपया, अष्ठम वर्ग के युग्म का ½ रुपया, नवम तथा दशम वर्ग के युग्म का ⅓ रुपया है।

निरीक्षण के समय मोहना की सन्तानें पहले देखी जाती हैं, तत्पश्चात् अश्की की सन्तानें। यद्यपि अश्की की सन्तानें मोहना की ही सन्तानें हैं तथापि अब उनकी गणना पृथक् की जाती है। इनके पश्चात् चार 'जिरिही' कपोत निरीक्षण के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं। इनका पिता हाजीअली समरकन्दी का कबूतर था और इनकी माँ एक 'ऊदी' कपोती थी जिसके स्वामी का नाम लेखक को नहीं ज्ञात है। उनकी सन्तानें विख्यात हो गई हैं। अन्य कपोतों का पूर्वापर निरीक्षण उनकी आयु अथवा उनके क्रयकाल से निर्धारित होता है।

खासे के कपोतों के रंग

मगसी, जिरिही, अमीरी, जमीरी (जिरही और अमीरी का मध्यवर्ती रंग जिसके नाम का आविष्कार सम्राट् ने किया है), चीनी, नोफ्ती, शफती, ऊदी, सुरमई, किशमिशी, हल्वाई, सन्दली, जिगरी, नबाती, दूगी, वुश्की, जीलानी या चीलानी, कुराई, नीलूफरी, अजरक (पीला और बादामी का मध्यवर्ती रंग, सम्राट् ने इस रंग का नामकरण किया है), आतशी, शफ्तालू, गुलगज, पीला, कागजी, जागी, अगरी (नवाती और किशमिशी का मध्यवर्ती रंग), मुहर्रकी, खिजरी (हल्के हरे और ऊदी का मध्यवर्ती रंग), आबी, सुरमग (सुरमई और मगसी का मध्यवर्ती रंग जिसको सम्राट् इस नाम से पुकारते हैं)।

इनमें से प्रत्येक रंग के कबूतरों के प्रायः विभिन्न नाम हैं, जैसे गुलसर, दुमगाजा, यकरंग, हल्कूम सफेद, पर सफेद, कल्ला, गजगज (या गजगाज), माघ, बाबरी, आलपर, कल्तापर, माहदुम, तौकदार, मरवारीदसर, मशालदुम आदि।

---

[1] बताफ्तनये पा का अर्थ फिलाट ने "पैरों द्वारा बनाए हुए कोण" किया है; दे० फुटनोट पृष्ठ ३१२।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

वर्तमान युग के कपोत पालक प्रायः कपोतों के ऐसे नाम रखते हैं जो उनके रंगों के द्योतक हैं। सम्राट् उनके गुणों के आधार पर उनका नामकरण करते हैं, जैसे बुगुर, करापलक, अबयारी, पलंग निगारी, रेख्तापलक।

इनके अतिरिक्त, अनेक कबूतर ऐसे हैं जो चर्ख और बाजी तो नहीं करते परन्तु अपने आकर्षक रंग तथा कार्य कौशल के कारण अत्यन्त प्रिय हैं। इन कबूतरों के नाम तथा गुण निम्नलिखित हैं।

१. कोका[1] कबूतर—इसकी बोली अजान (नमाज के लिए पुकार) के सदृश होती है।

२. बगा—यह पक्षी प्रातः काल बड़े विचित्र तथा चित्ताकर्षक शब्द से लोगों को जाग्रत करता है।)

३. लुक्कन (या लुक्कान)—यह बड़े अहंकार से चलता है और सिर गर्दन तथा दुम को हिलाता है।

४. लोटन—कपोत पालक इसको घुमाकर पृथ्वी पर फेंक देते हैं और यह अधमरे पक्षी की तरह लोटने लगता है। कुछ पक्षी पालक के पृथ्वी पर हाथ पटकने से ऐसा करते है और कुछ इसी प्रकार की अधीरता प्रदर्शित करने लगते हैं जब पिंजडे से निकालने के पश्चात् कपोतपालक उनकी चोंचों का पृथ्वी से स्पर्श करा देता है।

५. खेरनी—कपोत को कपोती से असीमित प्रेम होता है। कपोत उड़ता है और इतनी ऊचाई पर चला जाता है कि अदृश्य हो जाता है। कपोती को एक पिंजडे में बन्द करके उसे दिखाते हैं। उस पर दृष्टि पड़ते ही वह अधीर हो जाता है और तुरन्त पृथ्वी पर गिर पड़ता है जो बहुत भला ज्ञात होता है। कुछ कबूतर दोनों डैनों को फैलाये हुए नीचे आते हैं; कुछ एक डैना बंद कर लेते हैं और कुछ दोनों डैने बंद कर लेते हैं अथवा वे बारी-बारी से एक डैना खोलते और दूसरा बंद करते हैं।

६. रथ—यह कबूतर विशेषकर पत्रवहन कार्य करता है। यों तो हर प्रकार के कपोत को बहुत दूर-दूर से पत्र लाने और ले जाने की शिक्षा दी जाती है, पर इस प्रकार के कपोतों से यह काम विशेष रूप से लिया जाता है।

७. निशावरी—यह अपने पिंजड़े को भली भाँति पहचानता है और जहाँ जहाँ पिंजड़ा ले जाते हैं वहाँ वहाँ उड़ता है। यह इतना ऊँचा उड़ता है कि अदृश्य हो जाता है और दो एक दिन ऐसे अदृश्य रहता है। परन्तु जब पृथ्वी पर उतरता है तो अपने पिंजड़े में रहता है।

८. परपा—इस कपोत के पाँव बालों से ढके रहते हैं और यह ठंढी साँसें भरता है।

कुछ कबूतर ऐसे हैं जो अपने पंखों की सुन्दरता के कारण पाले जाते हैं जिनके रंगों के विभिन्न नाम हैं। उनमें से कुछ शीराजी, शुस्तरी, काशानी, जोगिया, रेजादहन, मगसी और कुमरी कहे जाते हैं। वन्य कपोतों को 'गोला' कहते हैं। यदि कुछ वन्य कपोत पकड़ लिये जाते हैं तो सहस्त्रों अन्य कबूतर उनके साथ मिल जाते हैं और वे शीघ्र पालू हो जाते हैं। ये गोला कबूतर प्रतिदिन जंगल को जाते हैं और जब वापस आते हैं तो उनको खारी पानी पिलाया जाता है। ऐसा करने से वे उस दाना को उगल देते हैं जो उन्होंने जंगल में चुगा था। यह दाना इकट्ठा करके दूसरे कबूतरों को दिया जाता है।

कहते हैं कि कबूतर तीस वर्ष से अधिक नहीं जीवित रहते।

सौ उड़ाये जाने वाले कबूतरों के लिए चार सेर दाना पर्याप्त होता है किन्तु अन्य कबूतरों के लिए पाँच

---

[1] फिलाट ने लिखा है कि यह शब्द कदाचित् 'कोकला' हो जिसका शब्द मानवशब्द के सदृश होता है, दे० टिप्पणी पृ० ३१४।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सेर दाने की आवश्यकता होती है। जोड़ा खाने वाले कबूतरों को साढ़े सात सेर दाना दिया जाता है। उड़ने वाले कबूतरों को खालिस बाजरा देते हैं और दूसरों को सात अनाजों का मिश्रण देते हैं अर्थात् चावल, चना की दाल, मूँग की दाल, बाजरा, करर, लहदरा और जुवार। यद्यपि सम्राट् के अधिकांश सेवक कबूतर पालते और उनको उड़ना सिखाते हैं तथापि उनमें से कुछ ने विशेष ख्याति प्राप्त की है, जैसे कुली अली बुखारी, मस्ती समरकन्दी, मुल्लाजादा, पूर मुल्ला अहमद चाँद, मुकबिल खाँ चेला, ख्वाजा सन्दल चेला, मुनीम हेरवी, अब्दुल लतीफ बुखारी, हाजी कासिम बल्खी, हबीब शहरसब्जी सिकन्दर चेला, माल्तू, मकसूद समरकन्दी, ख्वाजा फूल (या बहलोल), चेला हीरानन्द (या भौरानन्द)।

इस विभाग के सेवक सैनिकों के मद से वेतन पाते हैं। प्यादों को २ रुपये से ४८ रुपए तक प्रति मास वेतन दिया जाता है।

चौपड़बाजी या चौसरबाजी

हिन्दुस्तान के लोगों को प्राचीनकाल से इस खेल का व्यसन है। चौपड़ में सोलह मुहरे होते हैं। इन मुहरों का आकार बिल्कुल एक सदृश होता है। हर चार मुहरे एक रंग के होते हैं। सब मुहरे एक ही तरह की चालें चलते हैं। चौपड़ पाँसों से खेली जाती है। पाँसे संख्या में तीन और आकृति में षड्तल होते हैं। प्रत्येक पाँसे के छः तलों में चार तल शेष दो तलों से बड़े होते हैं। इन चार बड़े तलों पर एक, दो, पाँच और छः विन्दुओं के चिह्न बने होते हैं खिलाड़ी दो समानान्तर रेखायें खड़ी और दो समानान्तर रेखायें आड़ी खींचते हैं। दोनों समूहों की दोनों रेखायें एक दूसरे को समकोण पर समद्विभाग करती हैं। ये समानान्तर रेखायें बराबर लम्बाई की होती हैं। दोनों समूहों की रेखाओं के एक दूसरे को काटने से मध्य में जो एक छोटा वर्ग बनता है वह ज्यों का त्यों छोड़ दिया जाता है, परन्तु उस वर्ग की चारों भुजाओं पर जो चार आयत बनते हैं उनमें से प्रत्येक को तीन पंक्तियों में और प्रत्येक पंक्ति को आठ खानों में विभक्त कर देते हैं। इस प्रकार प्रत्येक आयत में चौबीस खाने बन जाते हैं जैसा चित्र में दिखाया गया है।

प्रायः चार व्यक्ति इस खेल में भाग लेते हैं। दो दो व्यक्तियों की दो जोड़ होती हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के पास चार मुहरें होते हैं जिनमें वह दो को अपने सामने के समानान्तर चतुर्भुज की मध्य पंक्ति के छठें तथा सातवें खानों में रखता है और शेष दो को अपने दाहिने की पंक्ति के सातवें और आठवें खानों में। बायें की पंक्ति खाली छोड़ देते हैं और दाहिनी ओर से किनारे किनारे चाल चलते हैं। मुहरा इसी तरह दाहिनी ओर से चलता और सब बाहरी पंक्तियों को पार करता हुआ समानान्तर चतुर्भुज की बाहरी ओर की बाईं पंक्ति में पहुँचता है जहाँ से उसने चलना आरम्भ किया था और इस पंक्ति के भी सब खानों को पार करके वह मध्य पंक्ति में आता है। इस स्थिति में पहुँचने पर वह 'पुख्ता' (पक्का) कहलाता है। यहाँ से उसे अपने प्रत्येक मुहरे के लिये ऐसी ठीक संख्या में पाँसा फेंकना चाहिये जिससे वे केन्द्रावस्थित वर्ग में पहुँच जाँय। अब वह 'रसीदा' (पहुंचा हुआ) कहलाता है।

जब खिलाड़ी 'पुख्ता' या 'रसीदा' हो जाता है तो वह खेल को पुनः आदि से आरम्भ कर सकता है। ऐसी दशा में बडी मनोरंजक चालें चली जाती हैं। जब तक खिलाड़ी अपने दो मुहरों को एक साथ रखता है तब तक प्रतिद्वन्द्वी उनको पीट नहीं सकता। यदि खिलाड़ी छः के दो पाँसे फेंकता है तो उसके दोनों मुहरे बारह २ खाने आगे बढ़ सकते हैं यदि वे दोनों मुहरे एक ही खाने में साथ स्थित हों किन्तु यदि खिलाड़ी स्वयं चाहे तो मुहरों को केवल छः छः खाने भी आगे बढ़ा सकता है। पाँच के दो पाँसे फेंकने पर भी ऐसी क्रिया की जाती है। यदि तीन पाँसे छः, पाँच और एक के पड़ते हैं तो उनको बारह खाम (कच्चा) कहते हैं। ऐसी दशा में यदि दो मुहरे एक खाने में हों तो उनमें से प्रत्येक छः खाना आगे बढ़ते हैं और अकेला एक मुहरा बारह घर (खाना) चलता है। यदि तीन पाँसे छः के

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पड़ते हैं और तीन मुहरे एक ही घर में होते हैं तो प्रत्येक मुहरा बारह घर आगे बढ़ता है। यदि पाँसे तीन दो या तीन एक के पड़ते हैं तो भी यही नियम लागू होता है। इनके अतिरिक्त विशेष अवसरों के लिए और भी अनेक नियम हैं। यदि खिलाड़ी अपने चारों मुहरों को केन्द्रीय वर्ग में पहुँचा देता है तो अपनी चाल के समय अपने साथी के लिये पाँसे फेंकता है उसको भी आगे बढ़ाने के लिये। पुराने समय में नियम यह था कि जब मुहरा अन्तिम पंक्ति में आ जाता था। और...[1]। परन्तु सम्राट् आठवें खाने से ही ऐसा करना समुचित समझते हैं। यदि एक जोड़ के पाँसों की संख्या अपने पूर्ववर्ती जोड़ के पाँसों की संख्या के बराबर है तो सम्राट् उनको कायम (स्थित) समझते हैं। पूर्वकाल में ऐसा नियम नहीं था और सम्राट् बाजी को इस प्रकार कायम नहीं मानते थे। यदि किसी खिलाड़ी के चारों मुहरे 'पुख्ता' हैं और तिस पर भी यह बाजी हारता है तो दूसरे खिलाड़ी उससे बाजी का दूना धन वसूल करते हैं। यदि कोई खिलाड़ी खेल के बीच में किसी आवश्यक कार्य के कारण खेल को छोड़ता है और किसी अन्य व्यक्ति को अपना स्थानापन्न नियुक्त करता है तो बाजी की विजय तथा पराजय के लिए वही व्यक्ति उत्तरदायी होता है जिसने खेल आरम्भ किया था। विजय होने पर स्थानापन्न को धन का दो प्रतिशत दिया जाता है और पराजय होने पर वह एक प्रतिशत धन देता है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ से कोई मुहरा गिर जाय या यदि कोई खिलाड़ी देर तक अनुपस्थित अथवा अन्यमनस्क रहे तो उस पर एक रुपया दण्ड लगाया जाता है। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे खिलाड़ी को चाल बताता है, या यदि मुहरे को असल चाल से आगे बढ़ाता है या यदि पाँसे को दो बार फेंकता है तो उससे एक मुहर अर्थ दण्ड लिया जाता है।

पहले अनेक अमीर इस खेल में सम्मिलित होते थे, यहाँ तक कि कभी कभी दो सौ से अधिक व्यक्तियों का समारोह हो जाता था और प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य था कि बिना सोलह बाजियों के पूरा किए घर न जाय, जिसमें कभी कभी तीन मास लग जाते थे। यदि कोई व्यक्ति थक या उकता जाता था तो एक प्याला मदिरा पान कर के ताजा हो जाता था।

ऊपर से देखने में तो यह सब केवल मनोरंजन है किन्तु सम्राट् का उद्देश्य इससे कहीं अधिक उत्कृष्ट है। इससे वे मनुष्यों के गुणों तथा योग्यता का पता लगाते हैं और उनको दयालुता की शिक्षा देते हैं।

चन्दल मन्दल का खेल

इस खेल का आविष्कार सम्राट् ने किया है। इसका बिसात गोल है। इसमें सोलह समानान्तर चतुर्भुज होते हैं जो एक केन्द्र के चारों ओर स्थित होते हैं। प्रत्येक चतुर्भुज में तीन पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में आठ खाने हैं। इस प्रकार प्रत्येक समानान्तर चतुर्भुज में चौबीस घर या खाने हैं। इस खेल में चौंसठ मुहरे होते हैं। चार पाँसे हैं जिनके चार लम्बे तलों (पहलुओं) एक, दो, दस और बारह बिन्दु बने होते हैं। खिलाड़ियों की संख्या सोलह होती है। हर खिलाड़ी के पास चार मुहरे होते हैं जो मध्य में रखे जाते हैं। चौपड़ की तरह इस खेल में भी चाल दाहिनी ओर से आरम्भ करते हैं प्रत्येक मुहरे को पूरे वृत्त को पार करना होता है। जिस खिलाड़ी के मोहरे सबसे पहले पूरी बिसात का भ्रमण कर लेते हैं वह शेष पन्द्रह खिलाड़ियों से बाजी की धनराशि वसूल करता है दूसरा व्यक्ति जो खेल से मुक्त होता है अन्य चौदह खिलाड़ियों से बाजी का धन लेता है। इसी प्रकार खेल चलता रहता है। इस प्रकार पहले व्यक्ति को लाभ ही लाभ होता है और अन्तिम को हानि ही हानि। शेष खिलाड़ियों को लाभ भी होता है और हानि भी। सम्राट् कई ढंग से इस खेल को खेलते हैं। एक ढंग वह है जिसमें मुहरे इस तरह चले जाते हैं

---

१. पाण्डुलिपियों में 'अज खानाये हश्तुम पायान शबद हंगामये खाँ शुदन अमादा गरदद' लिखा है जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जैसे शतरंज में चलते हैं। इस ढग से प्रायः चन्दल मन्दल खेला जाता है : इस खेल के कुछ ढंग निम्नांकित हैं।

(१) कोई मुहरा दूसरे मुहरे को नहीं मार सकता वरन् स्वयं आगे बढ़ता है।

(२) अकेले मुहरे पीटे जा सकते हैं। जिसका मुहरा मारा जाता है वह इस मुहरे से नई चालें चलता है।

(३) पाँसा के प्रत्येक बार फेंके जाने पर दो मुहरे एक साथ चालें चलते हैं चाहे दूसरी बार पाँसे फेंके जाँय या न फेंके जाँय।

(४) यही नियम तीन-तीन और चार-चार मुहरों के लिए भी काम में लाया जाता है।

(५) पाँसे चार बार फेंके जाते हैं और हर बार चार मुहरों से चालें चलते हैं। यह विभिन्न विधियाँ बदलती रहती हैं। कुछ खिलाड़ी दाहिनी ओर से और कुछ बाईं ओर से चालें चलते हैं और कभी कभी सब खिलाड़ी एक ही ओर से मुहरों को आगे बढ़ाते हैं।

(६) जब कोई खिलाड़ी अपने मुहरे को उस स्थान पर पहुंचाता है जहाँ से उसके सम्मुख वाले खिलाड़ी ने खेल आरम्भ किया था और वहाँ से अपने प्रतिद्वन्द्वी की मध्य पंक्ति से चल कर वर्ग में पहुँच जाता है तो वह विजयी हो जाता है। अथवा, जब खिलाड़ी अपने मुहरे को उस स्थान पर पहुँचा देता है जहाँ से उसके वाम प्रतिवेशी (बायें पड़ोसी) ने चाल आरम्भ की थी तो खेल समाप्त समझा जाता है।

(७) प्रत्येक व्यक्ति अपने मुहरों को अपने सामने रखता और तीन बार पाँसा फेंकता है। पहली बार अपने दो मुहरों को आगे बढ़ाता है दूसरी बार एक मुहरा अपना चलता है और एक मुहरा अपने दाहिने पडोसी का आगे बढ़ाता है। तीसरी बार अपना कोई मुहरा चलता है और अपने बांयें पडोसी को एक मुहरा चलने की अनुमति देता है इस प्रणाली में कोई खिलाड़ी अपने पड़ोसी के बदले में पांसा नहीं फेंक सकता और जब बाजी पूरी तरह जम जाती है तो प्रत्येक व्यक्ति उस मुहरे को जो उसकी पंक्ति में आ जाता है अतिथि समझ कर अपने पाँसे के अनुसार चलने की अनुमति देता है।

(८) दो एकत्र स्थित मुहरे दूसरे दो मुहरों को मार सकते हैं किन्तु अकेला एक मुहरा दूसरे अकेले मुहरे को नहीं मार सकता।

(९) चार एकत्र स्थित मुहरे तीन एकत्र स्थित मुहरों को, तीन एकत्र स्थित मुहरें दो एकत्र स्थित मुहरों को, और दो एकत्र स्थित मुहरे एक मुहरे को मार सकते हैं किन्तु अकेला मुहरा किसी दूसरे मुहरे को नहीं पीट सकता।

(१०) प्रत्येक खिलाड़ी अपने फेंके हुए पांसों के बिन्दुओं की संख्या के अनुसार चालें चलता है परन्तु उसी के साथ वह व्यक्ति जो उसके सम्मुख बैठा होता है उस मनुष्य के पांसों के उलटी ओर के विन्दुओं के अनुसार चालें चलता है; जो व्यक्ति पांसा फेंकने वाले के दाहिनी ओर होता है वह पांसों के दाहिने के विन्दुओं के अनुसार तथा जो व्यक्ति उसकी बाईं ओर होता है वह पांसों की बाईं ओर के विन्दुओं के अनुसार चालें चलता है।

(११) खिलाड़ी पाँच पांसों और चार मुहरों से खेलते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी अपनी बारी पर पांचों पांसे फेंकता है और अपने फेंके हुए पाँसों के दो सबसे बड़े विन्दुओं के योग के अनुसार अपने मुहरों को चलता है, जो व्यक्ति उसके सम्मुख बैठा होता है वह उसके बाद के दो बड़े विन्दुओं के योग के अनुसार अपने मुहरों को आगे बढ़ाता है तथा दो सबसे कम विन्दुओं के अनुसार उसके दाहिने और बायें वाले पड़ोसी चालें चलते हैं।

(१२) प्रत्येक खिलाड़ी पांच पांसों और पांच मुहरों से खेलता है। हर फेंक (कुर्रा अन्दाजी) में वह एक पांसे के विन्दु (नकूस) अपने दाहने पड़ोसी को देता है और शेष विन्दुओं के अनुसार अपने मुहरों को चलता है। कभी कभी खिलाड़ी पहले ही उन चार व्यक्तियों के नाम बता देता है जिनको वह चार पांसों के विन्दु देना चाहता

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है और पांचवें पांसे के विन्दुओं को अपने लिए रख लेता है। यदि खिलाड़ी को 'पुख्ता' होने के लिए केवल कुछ विन्दुओं की आवश्यकता होती है तो वह अपनी आवश्यकता के अनुसार विन्दुओं को लेकर शेष अपने उन पडोसियों को दे देता है जिनके निकट पासा पड़ता है।

यह खेल पन्द्रह या इससे भी कम खिलाड़ियों के द्वारा खेला जा सकता है। जितने खिलाड़ी कम होते हैं समानान्तर चतुर्भज भी उतने ही कम कर दिये जाते हैं और उसी अनुपात में पाँसे भी घटा और बढ़ा दिए जाते हैं।

कार्ड (गुंजफा)

यह एक प्रसिद्ध खेल है। सम्राट् ने इसमें कुछ परिवर्तन कर दिए हैं। प्राचीन आचार्यों ने बारह की संख्या को आधार माना है और हर रंग में बारह पत्ते निर्धारित किए हैं; परन्तु वे भूल गए कि बारह बादशाहों को बारह विभिन्न प्रकार का होना चाहिए। सम्राट् निम्नलिखित रंग के पत्तों से कार्ड खेलते हैं :

१. अश्वपति—(घोड़ों का बादशाह) इस रंग के महत्तम (सबसे बड़े) पत्ते पर बादशाह का चित्र होता है जो घोड़े पर सवार होता है और दिल्ली के बादशाह की तरह होता है। इसके साथ चत्र (छाता), आलम तथा अन्य राजकीय ध्वजायें होती हैं। इसी रंग के दूसरे बड़े पत्ते पर वजीर घोड़े पर सवार होता है। इन दोनों पत्तों के पश्चात् दस दूसरे पत्ते होते है जिन पर एक से लेकर दस घोड़ों तक के चित्र होते हैं।

२. गजपति—अर्थात् वह बादशाह जिसके पास हाथियों की संख्या बहुत अधिक हो जैसे उड़ीसा का शासक। दूसरे ग्यारह पत्तों पर पूर्वोक्त रंग के अनुसार, वजीर तथा एक से लेकर दस हाथियों के चित्र बने होते हैं।

३. नरपति—अर्थात् वह बादशाह जो अपनी पैदल सेना की शक्ति के लिए विख्यात है जैसे बीजापुर के शासक। सबसे बड़े पत्ते पर बादशाह का चित्र होता है जो अपने ऐश्वर्यपूर्ण सिंहासन पर विराजमान होता है। दूसरे पत्ते पर सन्दली (मूंढ़े) पर बैठे हुए वजीर का चित्र होता है। शेष दस पत्तों पर एक से लेकर दस तक प्यादों का चित्र बना होता है।

४. गढ़पति—इस पत्ते पर बादशाह गढ़ (किले) के ऊपर सिंहासनासीन होता है। दूसरे पत्ते पर किले के ऊपर संदली पर वजीर बैठा हुआ है। शेष दस पत्तों पर एक से लेकर दस तक किलों के चित्र रहते हैं।

५. धनपति—अर्थात् खजाने का बादशाह—इस रंग के सबसे बड़े पत्ते पर एक बादशाह का चित्र होता है और उसके सोने-चाँदी की राशि रहती है, दूसरे पत्ते पर वजीर इस प्रकार बैठा होता है मानों वह कोष का हिसाब ले रहा है। शेष पत्तों पर सोने और चाँदी से भरे हुए एक से दस तक बर्तन बने रहते हैं।

६. दलपति—अर्थात् युद्ध का बादशाह—सबसे बड़े पत्ते पर अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित बादशाह सिंहासन पर बैठा होता है। उसके चारों ओर सैनिक वस्त्रधारी योद्धा खड़े हैं। दूसरे पत्ते पर वजीर जैबा (कवच) पहने हुए एक सन्दली पर बैठा है। शेष दस पत्तों पर एक से दस तक कवचधारी सैनिकों के चित्र रहते हैं।

७. नावपति—अर्थात् जहाजी बेड़ों का बादशाह—सबसे बड़े पत्ते पर जहाज में सिंहासन पर बैठे हुए बादशाह का चित्र होता है। दूसरे पत्ते पर वजीर जहाज के भीतर एक सन्दली पर बैठा है। शेष दस पत्तों पर एक से दस तक नावों के चित्र हैं।

८. तीपति—सबसे बड़े पत्ते पर रानी सिंहासन पर बैठी है और उसकी दासियाँ चारों ओर खड़ी हैं। दूसरे कार्ड पर एक स्त्री का चित्र है जो वजीर है। शेष पत्तों पर एक से दस तक स्त्रियों के चित्र हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

९. सुरपति—सबसे बड़े पत्ते पर देवताओं के राजा इन्द्र सिंहासन पर बैठे हैं। दूसरे पत्ते पर वजीर सन्दली पर बैठा है। शेष पत्तों पर एक से दस तक देवताओं के चित्र हैं।

१०. असुरपति—असुरों का बादशाह। सबसे बड़े पत्ते पर सुलेमान आत्मज दाऊद का चित्र है। दूसरे पत्ते पर वजीर सन्दली पर बैठा है। शेष पत्तों पर एक से दस तक असुरों के चित्र हैं।

११. वनपति—वन्य पशुओं का राजा—सबसे बड़े पत्ते पर सिंह का चित्र है जिसके निकट दूसरे पशु खड़े हैं। दूसरे पत्ते पर वजीर अर्थात् चीते का चित्र है। शेष पत्तों पर एक से दस तक वन्य पशुओं के चित्र हैं।

१२. अहिपति – सर्पों का राजा—पहले कार्ड पर एक सर्प का चित्र है जो एक अजगर पर सवार है। दूसरे पत्ते पर वजीर भी एक साँप है जो उसी प्रकार के एक दूसरे साँप पर सवार है। शेष पत्तों पर एक से दस तक साँपों के चित्र हैं।

इन बारह रंगों में पहले छः को बेशबर (प्रबल) और अन्तिम छः को कमबर (दुर्बल) कहते हैं।

सम्राट् ने पत्तों में भी समुचित परिवर्तन किए हैं। इस प्रकार धनपति या खजाने के बादशाह का चित्र ऐसा बनाया है मानों वह सिंहासन पर बैठकर धन वितरण कर रहा है। वजीर सन्दली पर बैठकर कोष का निरीक्षण कर रहा है। शेष दस पत्तों पर कोषागार के दस कर्मचारियों के चित्र बनाए हैं, उदाहरणार्थ सोनार, शुदाजगर (पिघलाने वाला), मुतल्लस-साज (टुकड़े काटने वाला), सिक्का ढालने वाला, वजान (तौल करने वाला), मुहरकुन (मुहर करने वाला), बितकचिये धन (धन टुकड़ों का लिपिक), बितकचिये मन (मन टुकड़ों का लिपिक), खरीददार, कर्जगीर। सम्राट् पत्तों पर अभिहस्तांकन के बादशाह के चित्र भी बनवाते हैं जो फरमानों, अधिकार-पत्रों तथा दफ्तर (देखिये ग्रन्थ दो, आईन ११) के अन्य कागजों (पन्नों) का निरीक्षण करता है। वजीर सन्दली पर बैठा है और उसके सम्मुख दफ्तर रखा है। शेष दस पत्तों पर अर्थ विभाग के कर्मचारियों के चित्र बने हैं, जैसे कागजगर (कागज-बनाने वाला), मिस्तर कश, नवीसन्दाये दफ्तर (दफ्तर के कागजों में प्रविष्टियाँ करने वाला), मुसव्विर (प्रभासक, नक्काश (पन्नों को अलंकृत करने वाला), जदवलकश (जो पृष्ठों पर नीली तथा सुनहली रेखायें खींचता है), फरमान नवीस, मुजल्लिद (जिल्द बांधने वाला), रंगरेज (जो कागजों को विभिन्न रंगों से रंगता है)। बादशाहे किमाश (निर्माताओं का बादशाह) बहुत ऐश्वर्य के साथ सिंहासन पर विराजमान है और विभिन्न प्रकार की वस्तुयें देखता है, जैसे तिब्बत के याक, रेशम तथा रेशमी वस्तुयें। दूसरे पत्ते पर वजीर सन्दली पर बैठा है जो सामानों का पहले निरीक्षण करके बादशाह के सम्मुख प्रस्तुत करता है। शेष दस पत्तों पर भारवाहक पशुओं के चित्र बने हैं। पादिशाह चंग (का बादशाह) सिंहासन पर आसीन है और संगीत श्रवण कर रहा है। वजीर उसके सम्मुख सन्दली पर बैठकर संगीतज्ञों के विषय में पूछ-ताछ कर रहा है। शेष दस पत्तों पर सभासदों (संगीतज्ञों) के चित्र बने हुए हैं। पादिशाह जर सफेद (चांदी का बादशाह) सिंहासन पर बैठकर लोगों को रुपये तथा चांदी के अन्य सिक्के बांटता है। वजीर सन्दली पर बैठकर दान के विषय में लोगों से पूछताछ कर रहा है। शेष दस पत्तों पर चांदी के टकसाल के कर्मचारियों के चित्र बने हैं जैसे लाल रंग के पत्तों पर। पादिशाह शमशेर (तलवार का बादशाह) सिंहासन पर बैठकर एक तलवार के लोहे की जांच कर रहा है। वजीर सन्दली पर बैठा हुआ शस्त्रागार का निरीक्षण कर रहा है। शेष दस पत्तों पर आहनगर (कवच बनाने वाला) तथा सीकलगर (पालिश करने वाला) आदि कर्मचारियों के चित्र बने हैं। पादिशाह ताज (ताज का बादशाह) विभिन्न अधिकारियों को राजकीय पदक प्रदान कर रहा है। वजीर सन्दली पर बैठा है जो राजकीय पदकों में सर्वश्रेष्ठ है। शेष दस पत्तों पर दर्जी और उत्तूकश (तहें जोड़ने वाला) आदि कारीगरों के चित्र बने हैं। पादिशाह गुलामान (गुलामों का बादशाह) हाथी पर सवार

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

है और वजीर गाड़ी (बैलगाड़ी) पर सवार है। शेष दस पत्तों पर एक से दस गुलामों के चित्र बने हैं जिनमें से कुछ बैठे हैं, कुछ श्रद्धापूर्वक खड़े हैं, कुछ मदिरा पान से बेसुध हैं तथा कुछ संयमी है।

ताश के इन साधारण खेलों के अतिरिक्त सम्राट् सगीर व कबी (चार हाथ का और दो हाथ का) शतरंज खेलते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य मनुष्यों के गुणों और योग्यताओं का मूल्यांकन तथा उनमें एकता एवं मेल स्थापित करना है।

आईन ३० (प्रथम भाग)

साम्राज्य के विशिष्ट व्यक्ति

पहले लेखक का विचार था कि राज्य के अमीरों के उल्लेख के साथ उनके उन कार्यों का भी वर्णन करे जिनके बदले में उनको उच्चपद प्राप्त हुए थे, साथ ही वह उनके गुणों और अनुभव के विषय में भी संक्षेप में कुछ कहना चाहता था परन्तु केवल प्रशंसा करना उसके हृदय ने स्वीकार नहीं किया। सत्य यह है कि सम्राट् के यशोगान करने वाले के हृदय में किसी अन्य व्यक्ति का गुणानुवाद का स्थान कैसे हो सकता है। इसके अतिरिक्त, उसकी सत्य प्रियता ने इस बात की अनुमति न दी कि वह प्रशंसनीय गुणों का उल्लेख करे और जो वस्तु अप्रशंसनीय हो उस पर दृष्टिपात न करे तथा दोनों का उल्लेख करना लज्जा के नियम के विरुद्ध है। अतएव हर अमीर का केवल नाम और उपाधि का सारिणी के रूप में दिया जाता है।

मनसबदारों के नाम तथा पद[1]

१. दस हजारी

१. शाहजादा सुल्तान सलीम, सम्राट् का ज्येष्ठ पुत्र।

२. आठ हजारी

२. शाहजादा सुल्तान मुराद, सम्राट् का मँझला पुत्र।

३. सात हजारी

३. शाहजादा सुल्तान दानयाल, सम्राट् का कनिष्ठ पुत्र।

अकबर के पाँच पुत्र थे : १. हसन, २. हुसेन, (जुडवाँ थे और केवल एक मास तक जीवित थे।) ३. सुल्तान सलीम (जहाँगीर) ४. सुल्तान मुराद और ५. सुल्तान दानयाल। पुत्रियाँ तीन थीं –(क) शाहजादा खानूम (ख) शुकुरुन्निसा बेगम और (ग) आराम बानू बेगम। अकबर की बेगमों में सात का उल्लेख प्राप्त है : १. सुल्तान रुकैया बेगम, २. सुल्तान सलीमा बेगम, ३. राजा बिहारी मल की पुत्री और राजा भगवान दास की भगिनी; ४. अब्दुल वासी की सुन्दर स्त्री जिससे अकबर ने ९७० में विवाह किया था, ५. बीबी दौलत शाद, ६. अब्दुल्ला खाँ मुगल की पुत्री ७. खान्देश के मीरान मुबारक शाह की पुत्री

४. पाँच हजारी

४. सुल्तान खुसरो शाहजादा सलीम (जहाँगीर) का ज्येष्ठ पुत्र—खुसरो का जन्म ९९ हि. में हुआ था

---

[1]. अबुल फज्ल ने मनसबदारों के केवल नाम तथा पद का उल्लेख किया है। हिन्दी अनुवाद में उनका परिचय ब्लाकमैन के आधार पर लिखा गया है। वर्ष का उल्लेख हिजरी संवत् में है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और १०३१ हि० में उसकी मृत्यु हुई। उसका मकबरा इलाहाबाद नगर के अन्तर्गत खुसरो बाग में है।

५. मिर्जा सुलेमान, आत्मज खान मिर्जा, पुत्र सुल्तान महमूद, आत्मज अबू सईद—जन्म ९२० हि०, मृत्यु ९९७। साधारणतया यह वालिये बदख्शाँ की उपाधि से विख्यात थे। जब बदख्शाँ इनके हाथ से निकल गया तो यह हिन्दुस्तान चले आये और अकबर ने इन्हें पाँच हजारी बना दिया।

६. मिर्जा इब्राहीम, आत्मज मिर्जा सुलेमान (नं० ५)।

७. मिर्जा शाहरुख आत्मज मिर्जा इब्राहीम (नं० ६)—अकबर ने अपनी पुत्री शुक्रुन्निसा का विवाह मिर्जा शाह रुख के साथ १००१ में किया और उसे मालवा का सूबेदार नियुक्त कर दिया। दक्षिण विजय में उसने बहुत पराक्रम दिखाया। १०१६ में उज्जैन में उसकी मृत्यु हो गई।

८. मिर्जा मुजफ्फर हुसेन आत्मज सुल्तान हुसेन मिर्जा आत्मज बहराम मिर्जा पुत्र शाह इस्माईल सफवी।

९. मिर्जा रुस्तम मिर्जा मुजफ्फर हुसेन (नं०८) का कनिष्ठ भ्राता।

१०. बैराम खाँ, मीर अली शुक्र बेग बहारलू की पाँचवीं पीढ़ी में उत्पन्न—बैराम खाँ आत्मज सैफ अली बेग का जन्म बदख्शाँ में हुआ था। अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त वह बल्ख में विद्यार्जन के लिए गया। सोलह वर्ष की अवस्था में वह हुमायूँ की सेना में भर्ती हुआ, कन्नौज के युद्ध में भाग लिया और भाग कर लखनोर (सम्भल) के राजा के यहाँ पहुँचा। मालवा में शेरशाह से उसकी भेंट हुई। शेरशाह ने उसको अपनी तरफ मिलाना चाहा परन्तु बैराम उससे न मिला। कुछ दिनों के बाद वह हुमायूँ के पास पहुँच गया। दोनों फारस के बादशाह के यहाँ पहुँचे जिसने उसे खाँ की उपाधि दी। भारत के पुनर्विजय में बैराम ने हुमायूँ की बहुत सहायता की। ९६३ हि. में वह अकबर का संरक्षक नियुक्त हुआ। अकबर के सिंहासनारूढ़ होने पर वह 'वकील' और 'खानखाना' नियुक्त हुआ। कुछ समय के उपरान्त अकबर उससे रुष्ट हो गया और उसने विद्रोह कर दिया परन्तु पराजित हो गया। उसने अकबर से क्षमा-याचना की। अकबर ने उसे क्षमा कर दिया और मक्का हज करने के लिए भेज दिया गुजरात के अन्तर्गत नहरवाला पटन में मुबारक नामक एक व्यक्ति ने उसे मार डाला। अब्दुर्रहीम खानखाना बैराम के पुत्र थे।

११. मुनीम खाँ आत्मज बैराम बेग (कुछ पाण्डुलिपियों में 'मीरम' लिखा है पर 'बैराम' ही शुद्ध प्रतीत होता है)—मुनीम खाँ हुमायूँ के दरबार में अमीर था परन्तु वह उसके साथ हिन्दुस्तान से फारस नहीं गया था। जब हुमायूँ ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया तो मुनीम खाँ काबुल का गवर्नर था। बैराम के पतन तक मुनीम खाँ काबुल में ही रहा। जब अकबर बैराम का पीछा कर रहा था तब लुधियाना में ९६७ हि. में मुनीम खाँ उससे मिला। अकबर ने उसे खानखाना और वकील नियुक्त कर दिया। जौनपुर का पुल मुनीम खाँ का ही बनवाया हुआ है।

१२. तर्दी बेग खाँ तुर्किस्तानी—हुमायूँ के दरबार का अमीर था। जब हुमायूँ भारत से भाग रहा था तो यह भी उसके साथ था किन्तु वह सब साथियों से अधिक अस्वामिभक्त था। जब वे लोग राजा मालदेव के राज्य से होकर जा रहे थे तो उसने हुमायूँ को अपना घोड़ा देना अस्वीकार कर दिया और अमरकोट थे उस धन का एक अंश देना अस्वीकार कर दिया जो उसने सम्राट् के दरबार में एकत्र किया था। कन्दहार में उसने सम्राट् का साथ छोड़ दिया और मिर्जा अस्करी से मिल गया। जब हुमायूँ लौटकर भारत आया तो तर्दीबेग ने क्षमा-याचना की। हुमायूँ ने उसे क्षमा कर दिया और उसे मेवात की जागीर दे दी। ९६३ हि. में हुमायूँ के देहावसान होने पर उसने अकबर के नाम से खुत्बा पढ़ा। अकबर ने उसे पाँच हजारी बनाया और दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया। बैराम खाँ और तर्दी बेग में वैमनस्य था। उसने अकबर से एक प्रकार की आज्ञा लेकर ९६३ हि. में तर्दीबेग की हत्या करा दी। बैराम से अकबर के असन्तुष्ट होने का यह भी एक कारण था।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१३. खान जमान शैबानी उसका पिता हैदर सुल्तान उजबक शैबानी हुमायूँ के साथ भारत आया और कन्दहार की विजय में बहुत वीरता दिखाई। हैदर सुल्तान के दो पुत्र थे; अलीकुली खाँ और बहादुर खाँ। अलीकुली खाँ ने काबुल और भारत की विजय में बहुत वीरता से युद्ध किया। इसने हेमू को पानीपत के निकट पराजित किया और खाने जमान की उपाधि प्राप्त की। भारत में मुगल वंश को राज्य की पुनर्प्राप्ति का सब से अधिक श्रेय बैराम खाँ को है और उसके पश्चात् खान जमान को। उसे सम्भल की जागीर मिली। ९६४ में वह जौनपुर पर सिकन्दर के 'कायम मुकाम' के रूप में शासन करता था। अकबर के शासन के तीसरे वर्ष में उसने विद्रोह कर दिया। छठें वर्ष अकबर स्वयं उससे युद्ध करने गया परन्तु खान जमान ने आत्मसमर्पण कर दिया। अकबर ने क्षमा करके उसे फिर जौनपुर भेज दिया। अकबर के शासन के दसवें वर्ष खान जमान ने फिर विद्रोह किया। मुनीम खाँ के समझाने पर उसने पुनः आत्म-समर्पण कर दिया और अकबर ने उसकी जागीर उसे वापस दे दी। ९७४ में उसने फिर विद्रोह का झंडा ऊँचा किया। अकबर उसे पराजित करने के लिए मानिक पुर आया। एक हाथी ने खान जमान को अधमरा कर दिया था जब एक सैनिक ने उसका सिर काट लिया। वह कवि भी था और 'सुल्तान' उसका उपनाम था।

१४. अब्दुल्ला खाँ उजबक—हुमायूँ के दरबार का अमीर था। हेमू की पराजय के उपरान्त उसे शुजाअत खाँ की उपाधि प्राप्त हुई और तुयूल में काल्पी मिली। अकबर ने अब्दुल्ला को पाँच हजारी बनाया और बाज बहादुर को दण्ड देने के लिए मालवा भेजा। उसने मालवा को जीत लिया और राजा की भाँति शासन करने लगा। अकबर स्वयं सेना लेकर उसे दण्ड देने के लिए मालवा पहुँचा। कुछ विफल युद्ध करके अब्दुल्ला खाँ भाग निकला और किसी प्रकार जौनपुर पहुँचा जहाँ पर खान जमान (नं० १३) के विद्रोह काल में उसका देहान्त हो गया।

१५. शम्सुद्दीन मुहम्मद अत्ग खाँ—गजनी के एक सरल किसान मीर यार मुहम्मद का पुत्र था। हुमायूं ९४७ में कनौज के युद्ध में पराजित होकर भागा और हाथी पर गंगा पार किया जिस स्थान पर वह उतरा वहाँ किनारा बहुत ऊँचा था। ऊपर चढ़ने के लिए शम्सुद्दीन ने उसे सहारा दिया। हुमायूं ने उसे अपनी सेवा में रख लिया और उसकी स्त्री को अमरकोट में अकबर को दूध पिलाने वाली दाई नियुक्त कर दिया। हुमायूँ ने उसे 'जी जी अंगा' की उपाधि दी। जब हुमायूँ फारस भाग गया था तब अकबर का पालन-पोषण शम्सुद्दीन ने ही किया। भारत वापस आने पर हुमायूँ ने उसे 'अत्ग (पोषक पिता) खाँ' की उपाधि प्रदान की। अकबर ने उसे पंजाब में खुश आब की जागीर दी। वह पंजाब का सूबेदार नियुक्त हुआ और उसने बैराम खाँ को जलंधर में पराजित कर दिया। इस विजय के उपलक्ष में सम्राट् ने उसे आजम खाँ की उपाधि दी। छठें वर्ष वह दरबार में आया और मुनीम खाँ के स्थान पर वकील का कार्य करने लगा। मुनीम खाँ बहुत रुष्ट हुआ। उसने अदहम (नं० १९) को उसकाया और ९६९ में उससे शम्सुद्दीन मुहम्मद की हत्या करवा दी।

१६. खान कलाँ मीर मुहम्मद, अत्ग खाँ का ज्येष्ठ भ्राता—वह कामरान और हुमायूँ के दरबार में सेवा करता था अकबर के शासन में उसने बड़ी ख्याति प्राप्त की। जब वह पंजाब का सूबेदार था तब उसने बड़े पराक्रम से धक्खरों को पराजित किया। ९८१ में गुजरात की पुनर्विजय के लिए अकबर ने खान कलाँ को आगे भेज दिया था। विजय के पश्चात् वह पटन (नह वाला) का गवर्नर बना दिया गया। सन ९८३ में उसका देहान्त हो गया।

१७. मिर्जा शरफुद्दीन हुसेन, ख्वाजा मुईन का पुत्र—अपने पिता से इसकी नहीं पटती थी अतएव

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

यह अकबर के दरबार में पहुँचा। अपनी दाई माहम तथा उसके पुत्र अदहम खाँ के प्रभाव से अकबर ने उसे पाँच हजारी नियुक्त कर दिया। अपने शासन के पाँचवें वर्ष में अकबर ने अपनी बहन बख्शी बानू बेगम का शरफुद्दीन के साथ विवाह कर दिया और उसे अजमेर तथा नागोर का गवर्नर नियुक्त कर दिया। कुछ समय के उपरान्त उसने विद्रोह कर दिया परन्तु अन्त में पकड़ लिया गया। अन्त में अपने प्रतिद्वन्द्वी मआसूम के संकेत से महमूद नामक व्यक्ति ने, जिसे मिर्जा शरफ बहुत पसन्द करता था, विष दे दिया और ९८८ ये उसका देहान्त हो गया।

१८. युसुफ मुहम्मद खाँ, अत्ग खाँ (नं० १५) का ज्येष्ठ पुत्र—बारह वर्ष की अवस्था में बैराम खाँ के विरुद्ध इसने बड़े पराक्रम से युद्ध किया जिससे अकबर ने इसे 'खान' की उपाधि दी। अतिशय मदिरा पान के कारण ९७३ में उसका प्राणान्त हो गया।

१९. अदहम खाँ, माहम अंगा का पुत्र—माहम अंगा अकबर की दाई थी जिसका अन्तः पुर, मुनीम खाँ तथा स्वयं अकबर पर बड़ा प्रभाव था। अदहम ने मानकोट के घेरे में बड़ी वीरता दिखलाई थी। बैराम खाँ ने आगरा के दक्षिण-पूर्व में हटकान्त उसे जागीर में दिया। ९६८ में बैराम खाँ के पतन के पश्चात् पीर मुहम्मद खाँ के साथ वह मालवा भेजा गया था। उसने बाज बहादुर को पराजित करके उसकी सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया था। कुछ समय के पश्चात् पीर मुहम्मद मालवा का गवर्नर नियुक्त हुआ और अदहम खाँ दरबार में आ गया। वह अत्ग खाँ से ईर्षा रखता था। एक रात को उसने अत्ग खाँ को मरवा डाला। कारण अकबर ने उसकी भी हत्या करवा दी।

२०. पीर मुहम्मद खाँ शीर वानी—वह पीर मुहम्मद मुल्ला और बैराम का साथी था। हेमू के साथ उसने वीरता से युद्ध किया था। अतएव उसे 'नासिरुल्मुल्क' की उपाधि मिली थी। बैराम के पतन के पश्चात् उसे 'खान' की उपाधि मिली। ९६८ में अदहम खाँ के साथ मालवा-विजय के लिए उसकी नियुक्ति हुई थी। अदहम के वापस बुलाए जाने पर वह मालवा का राज्यपाल नियुक्त हुआ था। मालवा पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उसने खान देश पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक को हरा दिया। तब मालवा के पूर्ववर्ती शासक बाज बहादुर ने उस पर आक्रमण किया और उसे पराजित कर दिया। रात को नर्मदा नदी पार करने के प्रयत्न में वह डूब मरा।

२१. खान आजम मिर्जा, अजीज कोका, अत्ग खाँ (नं० १५) का पुत्र—जीजी अंगा का पुत्र था जिससे अकबर जीवन-पर्यन्त प्रेम करता था। ९७९ में वह गुजरात का राज्यपाल नियुक्त हुआ। ९८८ में उसे आजम खाँ की उपाधि देकर अकबर ने बिहार और बंगाल में विद्रोह शान्त करने के लिए उसे भेजा। वहां उसने विद्रोहियों को पराजित किया। तत्पश्चात् ९९३ में वह गढ़ा और रायसीन में भेज दिया गया। ९९४ में वह दक्षिण का राज्यपाल नियुक्त हुआ। ९९७ में वह गुजरात का गवर्नर नियुक्त हुआ। वहां से मक्का गया। १००३ में वह वापस आया और उसने दीन इलाही स्वीकार कर लिया। १००४ में वह 'वकील' बनाया गया और उसे मुलतान की जागीर प्राप्त हुई। अकबर की मृत्यु के उपरान्त मानसिंह और मिर्जा अजीज खुसरो को सिंहासन पर बैठाना चाहते थे परन्तु उनका प्रयत्न विफल हो गया। १०३३ में अहमदाबाद में उसका देहान्त हो गया।

२२. बहादुर खान शैबानी खान जमान (नं० १३) का (कनिष्ठ) भ्राता—इसका वास्तविक नाम मुहम्मद सईद था। बैराम के पतन के उपरान्त माहम अंगा के प्रभाव से वह 'वकील' नियुक्त हो गया। शीघ्र ही वह इटावा में नियुक्त कर दिया गया। उसने कई विद्रोहों में भाग लिया था इसलिये अकबर की आज्ञा से शाहबाज खाँ कम्बू (नं० ८०) ने इसको मार डाला।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२३. राजा बिहारी मल, पृथ्वी राज कछवाहा का पुत्र—यह अम्बर का राजा था। इसके पुत्र का नाम भगवान दास और पौत्र का नाम मानसिंह था। इसने अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया था।

२४. खान जहां हुसेन कुली खां आजतमवली बेग जूल कद्र—बैराम खाँ का भाञ्जा और वली बेग जूल कद्र का पुत्र था। ९७१ में यह 'खाँ' बनाया गया और अजमेर तथा नागोर उसे तुयूल में दिए गए राय मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन से उसने जोधपुर का दुर्ग छीन लिया और चित्तौर के घेरे में उदय सिंह का पीछा करने में बड़ी वीरता का परिचय दिया। ९७६ में वह पञ्जाब में स्थानान्तरित किया गया। इसी बीच में इब्राहीम हुसेन मिर्जा और मसऊद मिर्जा ने पंजाब पर आक्रमण कर दिया। हुसेन कुली खाँ ने उनको पराजित कर दिया। इसलिये उसको खान जहाँ की उपाधि प्रदान की गई। ९८३ में वह बंगाल भेजा गया। वहाँ की दशा शोचनीय हो रही थी। खान जहाँ ने अफगानों को दबाया और दाऊद को पराजित किया। भाटी में फिर अफगानों ने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया। बड़ी कठिनाई से खान जहान ने उस जिले पर अधिकार जमाया। तत्पश्चात् वह अस्वस्थ हो गया और डेढ़ महीने की बीमारी के बाद ९८६ में मर गया।

२५. सईद खाँ आत्मज याकूब बेग आत्मज इब्राहीम जाबूक—इसको सईद खाँ चगताई भी कहते हैं। कुछ समय तक मुल्तान का राज्यपाल रहा और फिर राजकुमार दानयाल का अतालीक (अभिभावक तथा शिक्षक) नियुक्त हुआ कुछ समय के उपरान्त यह पंजाब का राज्यपाल नियुक्त हुआ और सम्भल को तुयूल में पाया। ३२ वें वर्ष में वह बंगाल का सूबेदार नियुक्त हुआ। फिर वह बिहार का सूबेदार नियुक्त हुआ। जब मुल्तान और भक्खर में विद्रोह हुआ तो सईद वहाँ भेजा गया। जहांगीर के शासन काल में वह फिर पंजाब का गवर्नर बनाया गया परन्तु वहाँ जाने के पूर्व ही उसका देहान्त हो गया।

२६. शिहाब खाँ, नीशापुर का एक सैयद—इसका पूरा नाम शिहाबुद्दीन अहमद खाँ था। यह माहम अंगा का सम्बन्धी था। बैराम खाँ के पतन में इसका भी हाथ था। ९७५ में वह मालवा का राज्यपाल नियुक्त हुआ और उसको आज्ञा दी गई कि मिर्जा लोगों को उस प्रान्त से मार भगाओ। ९८४ में वह दूसरी बार मालवा का राज्यपाल नियुक्त हुआ और पांच हजारी बना दिया गया। ९९९ में मालवा में उसकी मृत्यु हो गई।

२७. राजा भगवान दास, आत्मज राजा बिहारी मल—९८० में सरनाल के निकट इब्राहीम हुसेन मिर्जा के साथ युद्ध में राजा भगवान दास ने अकबर का प्राण बचाया था। २९ वें वर्ष में भगवान दास की पुत्री का विवाह सलीम से हुआ जिससे खुसरो उत्पन्न हुआ। ९९८ में लाहौर में भगवान दास की मृत्यु हो गई। उसको अमीरुल उमरा की उपाधि मिली थी।

२८. कुतुबुद्दीन खाँ, अत्ग खां (नं० १५) का कनिष्ठ भ्राता—यह अत्ग खैल का था। अतएव इसका तुयूल पंजाब में था। ९७२ में अकबर ने इसे काबुल भेजा। फिर वह मालवा भेजा गया। ९८७ में वह राजकुमार सलीम का अतालीक नियुक्त हुआ और उसे बेगलर बेगी की उपाधि प्राप्त हुई तत्पश्चात् वह भड़ोच का राज्यपाल नियुक्त हुआ। गुजरात के शासक मुजफ्फर ने बड़ोदा के निकट उसे पराजित कर दिया और उसकी हत्या करा दी।

२९. खानाखाना मिर्जा अब्दुर्रहीम आत्मज बैराम खाँ—यह मेवात के हसन खाँ का भाञ्जा था। इसका जन्म लाहौर में ९६४ में हुआ था। जब गुजरात प्रान्त के पटन नामक स्थान पर बैराम खाँ की हत्या कर दी गई तो अफगानों ने उसका शिविर लूट लिया। मुहम्मद अमीन दीवाना तथा बाबा जम्बूर बच्चे तथा उसकी माँ को किसी प्रकार अहमदाबाद लाए और फिर वहाँ से ९६९ में वह दिल्ली ले जाया गया। अकबर ने उसके पालन-पोषण का भार स्वीकार किया और उसे मिर्जा खाँ की उपाधि दी। कुछ समय के उपरान्त मिर्जा अजीज कोका (नं० २१) की बहन माह बानू के साथ रहीम का विवाह कर दिया गया। पच्चीसवें वर्ष वह सलीम का अतालीक

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नियुक्त हुआ थोड़े ही समय के उपरान्त वह गुजरात के मुजफ्फर के साथ युद्ध करने को भेजा गया। उसने मुजफ्फर को दो बार पराजित किया। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर अकबर ने उसे पाँच हजारी बना दिया और खानखाना की उच्च उपाधि प्रदान की। ३४ वें वर्ष में उसने वाकयाते बाबरी का फारसी अनुवाद अकबर की सेवा में प्रस्तुत किया। उसी वर्ष के अन्तिम भाग में वह 'वकील' नियुक्त हुआ और जौनपुर को तुयूल के रूप में प्राप्त किया। परन्तु ९९९ में उसकी जागीर का स्थानान्तरण मुल्तान में कर दिया गया। उसने मिर्जा जानी वेग को पराजित करके सिन्ध को अकबर के साम्राज्य में मिला दिया। उसने दक्षिण पर विजय प्राप्त की। जहाँगीर के शासन काल में भी वह अपने उच्च पद पर आसीन रहा। अन्त में वह विद्रोही महावत खाँ को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया गया किन्तु वह लाहौर में बीमार पड़ गया और दिल्ली वापस आने के थोड़े ही समय पश्चात् जहाँगीर के शासन के २१ वे वर्ष (१०३६) में उसका देहान्त हो गया। गुजरात, सिन्ध तथा बीजापुर की विजयें उसके पराक्रमपूर्ण कार्य थे। वह हिन्दी का बड़ा कवि था। उसके दोहे आजतक बड़े चाव से पढ़े जाते हैं।

३०. राजा मान सिंह आत्मज भगवान दास (नं० २७)—उसका जन्म अम्बर में हुआ था। वह मिर्जा राजा के नाम से भी विख्यात था और अकबर ने उसे फरजंद (पुत्र) की उपाधि दी थी। ९८४ में वह राणा कीका के विरुद्ध युद्ध करने के लिए भेजा गया और ९८५ में उसने गोगन्डा के महायुद्ध में विजय प्राप्त की। वह काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया था। ९९८ में भगवान दास की मृत्यु हो गई। इसलिए मानसिंह को (जो अब तक कुँअर कहलाता था) राजा की उपाधि दी गई और वह पाँच हजारी बना दिया गया। मानसिंह ने पंजाब, काबुल, बिहार बंगाल तथा दक्षिण में अपनी वीरता का परिचय दिया और अनेक विद्रोहियों को पराजित करके मुगल साम्राज्य को शक्तिशाली बनाया। जहाँगीर के शासन के नवें वर्ष में मानसिंह का देहान्त हो गया।

३१. मुहम्मद कुली खाँ बरलास जो बरमक का वंशज है—यह हुमायूँ के दरबार में अमीर था और इसे मुल्तान की जागीर मिली थी। कुछ समय तक यह मालवा का राज्यपाल था। बाद में मुनीम खाँ के अधीन इसने बिहार और बंगाल में सेवा की। ९८२ में मिदनापुर में इसका देहान्त हो गया।

३२. तरसों खाँ, शाह मुहम्मद सैफुल्मुल्क का भाञ्जा—यह बैराम खाँ का सेवक था और उसके पतन के पश्चात् अकबर की सेवा करने लगा। अकबर ने इसे बैराम खाँ को मक्का जाते समय नागोर तक पहुँचाने के लिए भेजा था। यह कुछ समय तक भक्खर और तत्पश्चात् गुजरात में पटन का राज्यपाल रहा। जब जौनपुर में विद्रोह हुआ तब तरसों खाँ बिहार गया वहाँ शान्ति स्थापित होने के बाद वह बंगाल गया। वहाँ एक युद्ध में यह घायल हो गया और ९९२ में मासूम खाँ ने इसका बध कर दिया।

३३. कीया खाँ गुंग—यह हुमायूँ का सेवक था। हेमू के आक्रमण करने पर इसने तर्दी वेग (नं० १२) का साथ दिया। हेमू की पराजय के पश्चात् यह आगरा भेजा गया। यह बैराम खाँ का साथी था, पर उसने सबसे पहले बैराम का साथ छोड़ा था। उसने खान जमान के साथ विद्रोह किया था परन्तु जब इसने पश्चाताप किया तो अकबर ने इसे क्षमा कर दिया। बंगाल की प्रथम विजय के उपरान्त यह उड़ीसा भेजा गया। वहाँ ९८९ में कुतलू खाँ ने इस मार डाला।

५. चार हजार और पाँच सदी

३४. जैन खाँ आत्मज ख्वाजा मकसूद हेरवी—इसका पिता ख्वाजा मकसूद अली अकबर की माँ का सेवक था। जब हुमायूँ भाग कर फारस जा रहा था तब ख्वाजा बराबर अकबर की माँ के हौदे के पास रहता था और सब विपत्तियों में उसका साथी बना रहा। जैन खाँ बड़ा पराक्रमी था। यूसुफ जाई जन जाति को इसने पराजित

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

किया और जकदरा में एक किला बनवाया। फिर इसने हिमालय के निकटवर्ती विद्रोही जमीनदारों को दण्ड दिया। इकतालीसवें वर्ष में यह काबुल का राज्यपाल बनाया गया। १०१० में इसका देहान्त हो गया।

३५. मिर्जा यूसुफ खाँ आत्मज मीर मुहम्मद रिजवी—यह मशहद का सैयद था और अकबर इसे बहुत पसन्द करता था। ९९५ में यह कश्मीर का सूबेदार नियुक्त हुआ यह बहुत जन-प्रिय शासक था। शासन के ३८वें वर्ष में वह तोपखाना का दारोगा नियुक्त हुआ और तुयूल में उसे जौनपुर मिला। इसके पश्चात् दूसरे वर्ष वह राज कुमार मुराद का अतालीक नियुक्त हुआ। मुराद की मृत्यु के उपरान्त उसने दक्षिण के युद्धों और अहमदाबाद की विजय में बड़ी वीरता दिखलाई। १०१० में दक्षिण में जलनापुर नामक स्थान में उसका देहान्त हो गया।

६. चार हजारी

३६. मेहदी कासिम खाँ—पहले यह बाहर के तृतीय पुत्र मिर्जा अस्करी की सेवा में था। जब हुमायूँ फारस से वापस आया तब मेहदी कासिम खाँ उसके दरबारियों में सम्मिलित हो गया और अकबर के शासनकाल के आरम्भ में चार हजारी नियुक्त हो गया। 'तरतीब'—में उसका उल्लेख पाँच हजारियों में किया गया है।

३७. मुजफ्फरे खाँ तुरबती—तुरबती खुरासान की एक जन-जाति का नाम है। इसका पूरा नाम ख्वाजा मुजफ्फर अली खाँ तुरबती है। यह बैराम का दीवान था। अकबर ने पहले इसे परसरोर परगना का आमिल (कलेक्टर) नियुक्त किया। कुछ समय के उपरान्त वह दीवान ब्यूतात (राजकीय भंडार का कलेक्टर) और अन्त में ९७१ में साम्राज्य का दीवान नियुक्त हुआ। उस समय राजा टोडरमल उसके अधीन थे। तत्पश्चात् ९८१ में साम्राज्य का वकील बनाया गया और उसे 'जुमलतुल्मुल्क' की उपाधि दी गई। ९८६ में वह बंगाल का गवर्नर नियुक्त हुआ। आगरा की जामा मसजिद इसी की बनवाई हुई है। इसलिए लोग आज तक इसको नवाब मुजफ्फर खाँ की मसजिद या काली मसजिद कहते हैं।

३८. सैफ खाँ कोका—जैन खाँ कोका (नं० ३४) का ज्येष्ठ भ्राता—अकबर सैफ खाँ को बहुत पसन्द करता था और उसने उसको अल्पायु में ही चार हजारी बना दिया। ९८० में सूरत विजय के समय उसने बड़ी वीरता दिखाई थी। ९८१ में वह आगरा से अहमदाबाद गया जहाँ मुहम्मद हुसेन मिर्जा से युद्ध करते समय उसका प्राणान्त हो गया।

३९. राजा टोडरमल खत्री का जन्म लाहौर में हुआ था और अल्पावस्था में ही उसने अकबर की सेवा करनी आरम्भ कर दी थी। ९७१ में वह मुजफ्फर जंग का सहयोगी था और ९७२ में उसने खान जमान के विरुद्ध अकबर की सेवा की थी। टोडरमल ने अनेक युद्ध-क्षेत्रों में वीरता का परिचय दिया था विशेषकर बंगाल में दाउद के साथ युद्ध करते हुए उसने प्रशंसनीय पराक्रम तथा स्वामिभक्ति से काम लिया था। उस युद्ध में खाँ आलम का बध हो गया और मुनीम खाँ का घोड़ा भाग गया परन्तु राजा टोडरमल युद्ध में चट्टान की भाँति अटल रहे। उन्होंने कहा, 'यदि खान आलम का देहान्त हो गया तो क्या हानि हुई, यदि खानखाना भाग गए तो क्या डर है, साम्राज्य हमारा है।' उनकी शूरता से दाऊद हार गया और विजयमाला उन्हें प्राप्त हुई।

परन्तु उनका सबसे प्रसिद्ध तथा महत्त्वपूर्ण कार्य माल-सम्बन्धी सुधार थे। ९९० में वह साम्राज्य के दीवान बल्कि वकील नियुक्त हुए और उन्होंने माल विभाग में सुधार आरम्भ किया। आईन के तृतीय ग्रन्थ में अस्ले जमए तूमार (नई लगान पंजी) का उल्लेख है जिससे मुजफ्फर की चलाई हुई व्यवस्था निरस्त कर दी गई। टोडरमल ने मुद्रा ढालने के नये अधिनियम बनाए। पहले हिन्दू लिपिक हिसाब का काम हिन्दी में किया करते थे। टोडरमल ने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आज्ञा दी कि शासन का सब लेखा फारसी में लिखा जाय। इस प्रकार हिन्दू लोग फारसी का अध्ययन करने के लिए विवश हो गए। यद्यपि अनेक लोग टोडरमल के ऊपर अनेक प्रकार का दोषारोपण करते हैं तथापि वह अब्दुर्रहीम खानखाना, अबुल फज्ल, मानसिंह तथा बीरबल के साथ आज तक विख्यात हैं।

४०. मुहम्मद कासिम खाँ नीशापुरी यह नीशापुर का धनी भूमिपति (जमीनदार) था। इसने हेमू को पराजित करने में बड़ी शूरता का परिचय दिया था। इसने हाजी खाँ की सेना पर आक्रमण करके नागोर तथा अजमेर पर विजय प्राप्त की थी। अकबर के शासन के पाँचवें वर्ष में उसने बैराम के दल का त्याग कर दिया और उसके पराजित करने में प्रमुख भाग लिया। तत्पश्चात् वह मालवा में सारंगपुर भेजा गया। उसके थोड़े ही समय उपरान्त उसका देहान्त हो गया।

४१. वजीर खाँ, अब्दुल मजीद आसफ खाँ हेरवी (नं० ४६) का भ्राता—अकबर के शासन के २१वें वर्ष में वह गुजरात का सिपहसालार (गवर्नर) नियुक्त हुआ परन्तु अगले वर्ष यह पद टोडरमल को दे दिया गया। २५वें वर्ष में वह 'वजीर' नियुक्त हुआ और फिर थोड़े समय बाद अवध का राज्यपाल। उसने उड़ीसा में कुतलू खाँ को पराजित किया। ३१वें वर्ष में वह बंगाल का सूबेदार नियुक्त हुआ।

४२. कुलीज खाँ; ४३. सादिक खाँ, आत्मज बाकर हेरवी; ४४. राय रायसिंह, आत्मज राय कल्याणमल (नं० ६३)।

७. तीन हजार और पाँच सदी

४५. शाह कुली महरम बहारलू; ४६. इस्माइल कुली खाँ खान जहाँ (नं० २४) का भाई।

८. तीन हजारी

४७. मिर्जा जानी बेग, ठट्ठा का शासक; ४८. सिकन्दर खाँ, उजबक राजाओं का वंशज; ४९ आसफ खाँ अब्दुल मजीद (हेरवी), आत्मज शेख अबूबकर तायबादी; ५०. मजनून खाँ काकशाल; ५१. शुजाअत खाँ, मुकीम अरब; ५२. शाह बुदाग खाँ; ५३. हुसेन खाँ मेहदी कासिम खाँ (नं० ३६) का भांजा; ५४. मुराद खाँ, आत्मज अमीर खाँ मुगल बेग; ५५. हाजी मुहम्मद खाँ सीस्तानी; ५६. अफजल खाँ ख्वाजा सुल्तान अली तुरबती; ५७. शाह बेग खाँ आत्मज इब्राहीम बेग चरीक या हरीक; ५८. खान आलम अलीम बेग आत्मज हमदम मिर्जा कोका–मिर्जा कामरान; ५९. कासिम खाँ मीर बहर चमन आराय खुरासान; ६०. बाकी खाँ, अदहम खाँ (नं० ६१) का ज्येष्ठ भ्राता; ६१. मीर मुईज्जुल्मुल्क मुसवी मशहदी; ६२. मीरअली अकबर, मुईज्जुल्मुल्क (नं० ६१) का कनिष्ठ भ्राता; ६३. शरीफ खाँ आगा खाँ (नं० १५) का भाई।

९. दो हजार पांच सदी

६४. इब्राहीम खाँ शैबानी (खान जमान नं० १३ का चाचा); ६५. ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद खुरासानी; ६६. हैदर मुहम्मद खाँ अख्ता बेगी; ६७. एतमाद खाँ गुजराती; ६८. पायन्दा खाँ, हाजी मुहम्मद खाँ कोका का भतीजा; ६९. जगन्नाथ आत्मज राजा बिहारी मल; ७०. मखसूस खाँ, सईद खाँ (नं०२५) का भ्राता; ७१. इकबालनामा का लेखक अर्थात् अबुल फज्ल आत्मज शेख मुबारक।

१०. दो हजारी

७२. इस्माईल खाँ दूल्दी; ७३. मीर बाबूस; ७४. अशरफ खाँ मीर मुंशी मुहम्मद असगर सब्जवारी; ७५. सैयद महमूद बारहा; ७६. अब्दुल्ला खाँ मुगल; ७७ शेख मुहम्मद बुखारी; ७८. सैयद हामिद बुखारी; ७९. दस्तम

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खाँ आत्मज रुस्तम खाँ तुर्किस्तानी; ८०. शाहबाज खाँ कम्बू, ८१. दरवेश मुहम्मद उजबक; ८२. शेख इब्राहीम आत्मज शेख मूसा, और शेख सलीम सीकरी का ज्येष्ठ भ्राता; ८३. अब्दुल मतलब आत्मज शाह बुदाग खाँ (नं० ५२), ८४. एतबार खाँ ख्वाजा सरा (नपुंसक)।

८५. राजा बीरबल (बीरबर) ब्राह्मण—इनका वास्तविक नाम महेश दास था। यह जाति के भट्ट थे। यह अत्यन्त दीन परन्तु बुद्धिमान थे और सब वस्तुओं को बड़ी सरलता से समझ लेते थे। बदायूनी के अनुसार अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के थोड़े समय के उपरान्त यह काल्पी से दरबार में आए और अपनी प्रत्युत्पन्न मति के कारण अल्पकाल में सर्वप्रिय हो गए। उनके पद्य भी लोगों को बहुत अच्छे लगते थे। इसलिए अकबर ने उन्हें कवि राय की उपाधि दी और वह उन्हें सदा अपने निकट रखता था। अकबर के शासन के १८वें वर्ष में नगरकोट के राजा जयचन्द ने अकबर को अप्रसन्न कर दिया। इसलिए वह बन्दी बना लिया गया और अकबर ने नगरकोट को बीरबल को जागीर के रूप में दे दिया। उनको राजा की उपाधि भी मिली किन्तु जयचन्द के पुत्र बुधचन्द या बुद्धिचन्द ने अपने को नगरकोट में बन्द कर लिया और हसेन कुली खाँ (नं० २४) को आज्ञा मिली कि नगर को विजय करे। परन्तु इसी बीच में इब्राहीम हुसेन मिर्जा ने आक्रमण कर दिया। इसलिए हुसेन कुली घेरा उठा लेने के लिए विवश हो गया और सम्भवतः बीरबल को जागीर न प्राप्त हो सकी।

बीरबल का अधिकांश समय दरबार में ही व्यतीत होता था। तथापि कभी-कभी वह दौत्य कर्म के लिए भी भेजे जाते थे। राज्य के चौंतीसवें वर्ष में बीजूर और सवाद के यूसुफ जाइयों को पराजित करने के लिए भेजा गया गया। जब उसने अकबर से और सहायता मांगी तो उसने हाकिम अबुल फतेह (नं० ११२) के साथ बीरबल को भेजा। इसका परिणाम बड़ा भयङ्कर हुआ वापस आते समय सम्राट् के ८००० सैनिकों तथा अधिकारियों को अपना प्राण खोने पड़े। इनमें बीरबल भी थे। उनकी मृत्यु के कारण अकबर को घोर दुःख हुआ।

बीरबल दानशीलता, संगीतज्ञता तथा कविता के लिए ख्यात थे। उनके चुटकुले अब भी लोगों की जिह्वा पर रहते हैं। बीरबल का ज्येष्ठ पुत्र लाला (नं० ३८७) दो सदी था। वह अमित व्ययी था। इसलिए उसकी सम्पति नष्ट हो गई। उसकी पदोन्नति भी नहीं हुई। इस कारण वह साधू हो गया।

८६. एखलास खाँ एतबार ख्वाजा सरा (नपुंसक), ८७. बहार खाँ (अथवा बहादुर खाँ) असगर, हुमायूँ का सेवक, ८८. शाह फखरुद्दीन आत्मज मीर कासिम मशहदी, ८९. राजा रामचन्द्र बघेला, कुछ पाण्डुलिपियों में भगेला लिखा है जो अशुद्ध है—रामचन्द्र भथ का राजा था। अपने संस्मरण में बाबर ने भारत के तीन महान राजाओं का उल्लेख किया है। उनमें भथ के राजाओं का नम्बर तीसरा है। रामचन्द्र प्रसिद्ध संगीतज्ञ तथा गायक तानसेन का संरक्षक था। जब तानसेन की ख्याति अकबर तक पहुँची तब उसने जलालुद्दीन कुर्ची (नं० २१३) को तानसेन के लिवा लाने के लिए भथ भेजा। रामचन्द्र ने विवश होकर तानसेन को अकबर के दरबार में भेज दिया।

९०. लश्कर खाँ मुहम्मद हुसेन खुरासानी, ९१. सैयद अहमद बारहा, ९२. काकर अली खाँ चिश्ती, ९३. राय कल्याण मल, जमीनदार बीकानेर, ९४. ताहिर खाँ मीर फरागत आत्मज मीर खुर्द जो राजकुमार हिन्दाल मिर्जा का अतालीक था, ९५. शाह मुहम्मद खाँ कलालती।

९६. राय सुर्जन हाडा—यह प्रायः केवल राय हाडा कहा जाता है। पहले यह राणा का पक्षपाती था और अपने को रणथम्भोर में सुरक्षित समझता था। चित्तौर की विजय के पश्चात् अपने शासन के तेरहवें वर्ष में अकबर ने रणथम्भोर पर आक्रमण किया। एक मास तक रणथम्भोर का घेरा चला। उसके उपरान्त रामसुर्जन ने निराश होकर अपने दो पुत्रों को अकबर के पास संधि करने के लिए भेजा। अकबर ने उनका स्वागत किया और तब से राय हाडा उसका दरबारी हो गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

९७. शाहम खाँ जलायर, ९८. आसभ खाँ (नाम) जाफर बेग आत्मज बदीयुज्जमाँ कजवीनी।

११. एक हजार और पाँच सदी

९९. शेख फरीद बुखारी, १००. समांजी खाँ आत्मज अलीम बेग या चलमा बेग, कुछ पांडुलिपियों में समांजी के स्थान पर समाजी पाया जाता है। तुर्की में 'समान' का अर्थ होता है पुवाल, फूस या सूखी घास। इसलिए समांजी का अर्थ हुआ घास की देखरेख करने वाला), १०१. तर्दी खाँ (बेग) आत्मज कीया खाँ गुंग (नं० ३३), १०२. मेहतर खाँ (नाम) अनिसुद्दीन, हुमायूँ का सेवक, १०३. राय दुर्गा सीसौदिया, १०४. माधोसिंह आत्मज राजा भगवान दास (नं० २७), १०५ सैयद कासिम आत्मज सैयद महमूद खाँ बारहा।

१२. एक हजार और ढाई सदी

१०६. राय साल दरबारी शेखावत।

१३. एक हजारी

१०७ मुहिब अली खाँ आत्मज मीर खलीफा, १०८. सुल्तान ख्वाजा (नाम) अब्दुल अजीम आत्मज ख्वाजा खावन्द दोस्त, १०९. ख्वाजा अब्दुल्ला आत्मज ख्वाजा अब्दुल लतीफ, ११०. ख्वाजा जहाँ (नाम) अमीना हेरवी, १११. तातार खाँ खुरासानी, ११२. हकीम अबुल फतेह आत्मज मुल्ला अब्दुर्रज्जाक गीलानी, ११३. शेख जमाल आत्मज शेख मुहम्मद बख्तियार, ११४. जाफर खाँ आत्मज कजाक खाँ, ११५. शाह फनाई आत्मज मीर नजफी ११६. असदुल्ला खाँ तब्रीजी, ११७. सआदत अली खाँ बदख्शानी, ११८. रूपसी बैरागी, राजा बिहारी मल (नं० २३) का भाई, ११९. एतमाद खाँ ख्वाजा सरा।

१२०. बाज बहादुर आत्मज शजावल खाँ—तृतीय ग्रन्थ, सूबा मालवा में अबुल फज्ल कहता है कि इसका वास्तविक नाम बायजीद था। इसका पिता शुजआत खाँ सूर था जिसे इतिहास में प्रायः शजाबल खाँ या सजावल खाँ कहते हैं। ९६२ में अपने पिता की मृत्यु के बाद बाज बहादुर ९६२ में मालवा का सुल्तान बन बैठा और कई शत्रुओं को पराजित किया परन्तु शीघ्र ही भोग विलास में व्यस्त हो गया। उसकी गायिकायें और नर्तिकायें सम्पूर्ण भारत में ख्यात हो गईं। जिनमें रूपमती का नाम आज तक भी लोगों को याद है। अकबर के शासन के सातवें वर्ष में अब्दुल्ला खाँ उजबक मालवा भेजा गया। बाज बहादुर बिना युद्ध किए ही भाग गया। कुछ दिनों बाद उसने अकबर से क्षमा याचना की। अकबर ने उसे एक हजारी बना दिया। कुछ समय के उपरान्त वह दो हजारी हो गया। १००१ के पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। उज्जैन में एक तालाब के बीच उसका और रूपमती का मकबरा बना हुआ है।

१२१. मोथ राजा (नाम) उदय सिंह आत्मज राय मालदेव—९९४ में अकबर ने उदय सिंह की पुत्री का विवाह जहाँगीर से कर दिया। तुजुक जहाँगीरी के पृष्ठ ८ पर लिखा है कि उसका नाम जगत गोसाइनी था। उसका पुत्र खुर्रम था जो बाद में शाहजहाँ के नाम से बादशाह बना।

१२२. ख्वाजा शाह मंसूर शीराजी, १२३. कुतलुग कदम खाँ आख्तावेगी, १२४. अली कुली खाँ इन्दराबी, १२५. आदिल खाँ आत्मज शाह मुहम्मद कलाती (नं० ९५), १२६. ख्वाजा गयाससुद्दीन खाँ कजवीनी, १२७. फर्रुख हुसेन खाँ आत्मज कासिम हुसेन खाँ। इसका पिता ख्वारिज्म का उजबक था और उसकी माँ सुल्तान हुसेन मिर्जा की बहन थी। १२८. मुईनुद्दीन खाँ फरंखूदी, १२९. मुहम्मद कुली तोकबाई, १३०. मिहि अली खाँ सिल्दोज, १३१. ख्वाजा इब्राहीम बदख्शी, ११२. सलीम खाँ काकर, १३३. हबीब

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अली खाँ कोलाली, १३४. जगमल, राजा बिहारी मल का अनुज, १३५. उलूग खाँ बदख्शी (या हबशी) जो पहले गुजरात के सुल्तान महमूद का सेवक था, १३६. मकसूद अली खाँ कोर, १३७. कबूल खाँ।

१३. नौ सदी

१३८. कूचक अली खाँ कोज़ाबी, १३९. सन्दल खाँ (नाम), सुम्बल, हुमायूँ का दास, १४०. सैयद मुहम्मद, मीर अदल, अमरोहा का एक सैयद, १४१. रजवी खाँ (नाम) मिर्जा मीरक सैयद रजवी मशहदी, १४२. मिर्जा नजात खाँ, सैयद बका का भाई, १४३. सैयद हाशिम आत्मज सैयद महमूद बरहा १४४. गाजी खाँ बदख्शी, १४५. फरहत खाँ, मेहतर सकाई, हुमायूँ का दास, कुछ पान्डुलिपियों में 'सकाही' दिया है, १४६. रूमी खाँ (नाम) उस्ताद चलपी या जलबी रूमी, १४७. समान जी खाँ कूरगची या कूरगूजी, १४८. शाहबेग खाँ आत्मज कूचक अली खाँ बदख्शी, १४९. मिर्जा हुसेन खाँ भ्राता मिर्जा नजात खाँ (नं० १४२), १५०. हकीम जन्बील भ्राता मिर्जा मुहम्मद तबीब शिराजी (या सब्जावारी) १५१. खुदा बन्द खाँ दक्खिनी, १५२. मीरजादा अली खाँ आत्मज मुहतरम बेग, १५३. सआदत मिर्जा आत्मज खिज्र ख्वाजा खाँ, १५४. शिमाल खाँ चेला, १५५. शाह गाजी खाँ सैयद तबरीजी, १५६. फाजिल खाँ आत्मज खान कलाँ, (नं० १६), १५७. मआसूम खाँ आत्मज, मुईनुद्दीन अहमद फरंग खूदी, १५८. तोलक खां कूचीन, १५९. ख्वाजा शमसुद्दीन खाफी (या ख्वाफी), १६०. जगत सिंह ज्येष्ठ पुत्र राजा मान सिंह (नं० ३०), १६१. नकीब खां आत्मज मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी, १६२. मीर मुरतजा खां, सैयद शब्जावारी, १६३. शम्सी आत्मज खान आजमा मिर्जा कोका (नं० २१), १६४. मीर जमालुद्दीन हुसेन, इंजवी सैयद, १६५. सैयद राजू बारहा, १६६. मीर शरीफ आमली १६७. हसन बेग खान बदख्शी शेख उमरी १६८. शेरोया खां आत्मज शेर अफगन खां, १६९. नजर बे उजबक, १७०. जलाल खां आत्मज मुहम्मद खां आत्मज सुल्तान आदम गक्खर, १७१. मुबारक खां आत्मज कमाल खाँ गक्खर, १७२. ताश बेग खां मुगल, १७३. शेख अब्दुल्ला आत्मज शेख मुहम्मद गौस ग्वालियारी, १७४. राजा राजसिंह आत्मज राजा अस्करन कछवाहा, १७५. रायभोज आत्मज राय सुरजन हाडा (नं० ९६)।

१४. आठ सदी

१७६. शेख ख्वाजा, १७७. मिर्जा खुर्रम आत्मज खां आजम मिर्जा अजीज कोका।

१५. सात सदी

१७८. कुरैश सुलतान आत्मज अब्दुर्रशीद खां (अब्दुल लतीफ खां), हाकिम काशगर, १७९. करा बहादुर आत्मज मिर्जा महमूद तथा भ्रातृज मिर्जा हैदर, १८०. मुजफ्फर हुसेन मिर्जा आत्मज इब्राहीम हुसेन मिर्जा १८१. कून्दूक खां उजबक भ्राता बैराम ओगलान, १८२. सुल्तान अब्दुल्ला भ्राता (सौतेला) कुरैश सुल्तान (नं० १७८), १८३. मिर्जा अब्दुर्रहमान भ्रातृज मिर्जा हैदर, १८४. कीया खां आत्मज साहब खां, १८५. दरबार खां (नाम) इनायत (उल्ला) आत्मज तकल्लू खां, किस्साख्वान, १८६. अब्दुर्रहमान आत्मज मुयैयद दूल्दी, १८७. कासिम अली खां, १८८. बाजबहादुर आत्मज शरीफ खां, (नं० ६३), १८९. सैयद अब्दुल्ला आत्मज मीरख्वादा, १९०. धारू आत्मज राजा टोडरमल, १९१. अहमद बेग काबुली, १९२. हकीम अली गीलानी, १९३. गूजर खां आत्मज कुतुबुद्दीन खां आत्गा, १९४. सद्र जहां मुफ्ती १९५. तख्ता बेग काबुली १९६. रायपत्र दास खत्री, १९७.

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शेख अब्दुर्रहीम लखनवी, १९८. मेदनीराय चौहान, १९९. मीर अबुल कासिम नमकीन या तमकीन, २००. वजीर बेग जमील, २०१. ताहिर आत्मज सैफुल्मुल्क, २०२. बाबू मंकली।

१६ छः सदी

२०३. मुहम्मद कुली खां तुर्कमान, २०४. बख्तियार बेग गुर्दे शाह मंसूर, २०५. हकीम हुमाम आत्मज मीर अब्दुर्रज्जाक गीलानी, २०६. मिर्जा अनवर आत्मज खां आजम मिर्जा कोक।

१७. पाँच सदी

२०७. बाल्तू खाँ तुर्किस्तानी; २०८. मीरक बहादुर अरगून, २०९. लाल खाँ कोलाबी; २१०. शेख अहमद आत्मज शेख सलीम २११. इस्कन्दर बेग बदख्शी; २१२. बेग नूरीन खाँ कूर्ची, २१३. जलाल खाँ कूर्ची, २१४. परमानन्द खत्री, २१५. तैमूर खाँ यक्का, २१६. सानी खाँ हेरवी; २१७. सैयद जमालुद्दीन आत्मज सैयद अहमद बारहा (नं० ९१), २१८. जगमल पँवार, २१९. हुसेन बेग भ्राता हुसेन खाँ बुजुर्ग, २२०. हसन खाँ बतनी, २२१. सैयद छज्जू बारहा, २२२. मुन्सिफ खाँ (नाम) सुल्तान मुहम्मद हेरवी, २२३. काजी खाँ बदख्शी या बख्शी, २२४. हाजी यूसुफ खाँ, २२५. रावल भीम जैसलमेरी, २२६. हाशिम बेग आत्मज कासिम खाँ (नं० ५९), २२७. मीरजा फरीदूँ आत्मज मुहम्मद कुली खाँ बरलास (नं० ३१), २२८. यूसुफ खाँ, हाकिम कश्मीर, २२९. नूर कुलीज आत्मज अल्चून कुलीज, २३०. मीर अब्दुल हई मीर अदल, २३१. शाहकुली खाँ नारंजी, २३२. फर्रुख खाँ आत्म खाँ कलां (नं० १६), २३३. शादमल खाँ आत्मज खान आजम मिर्जा कोका (नं० २१), २३४. हकीम ऐनुल्मुल्क शीराजी, ३५. जानिश बहादुर मुगल, २३६. मीर ताहिर मोसवी, २३७ मिर्जा अली बेग आलम शाही या इल्मशाही, २३८. रामदास कछवाहा, २३९. मुहम्मद खाँ नियाजी; २४०. अबुल मुजफ्फर आत्मज अशरफ खाँ (नं० ७४); २४१. ख्वाजगी मुहम्मद हुसेन मीर बर्र; २४२. अबुल कासिम भ्राता अब्दुल कादिर अरबूँद २४३. कमर खाँ आत्मज मीर अब्दुल लतीफ कजवीनी, २४४. अर्जुन सिंह आत्मज राजामान सिंह (नं० ३०), २४५. सबलसिंह आत्मज राजामानसिंह (नं० ३०), २४६. मुस्तफा गीलजी; २४७ नजर खाँ आत्मज सईद खाँ बक्खर, २४८. रामचन्द्र आत्मज मधुकर, २४९. राजानुकतमन भदौरिया, २५०. राजा रामचन्द्र जमींदार उड़ीसा, २५१. सैयद अबुल कासिम आत्मज सैयद मुहम्मद मीर अदल (नं० १४०), २५२. दलपत आत्मज राय रायसिंह।

१८. चार सदी

२५३. शेख फैजी आत्मज शेख मुबारक नागोरी—[यह महाकवि तथा अकबर का मित्र था और इसका पूरा नाम अबुल फैज था। इसका उपनाम (अथवा तखल्लुस) फैजी था। अपने जीवन के अन्तिम भाग में अपने भाई अबुल फज्ल के उपनाम अल्लामी का अनुकरण करते हुए इसने अपना उपनाम फैयाजी रखा। यह शेख मुबारक नागोरी का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म आगरा में ९५४ में हुआ था। वह अरबी साहित्य का विद्वान, प्रसिद्ध कवि तथा हकीम था। वह दीन व्यक्तियों की दवा निःशुल्क किया करता था। अकबर के शासन के तीसवें वर्ष में वह मलिकुश्शुअरा (कवि सम्राट्) की उपाधि से विभूषित किया गया। यह दमा का रोगी था और १००४ में इसका देहान्त हो गया। कहते हैं कि इसने १०१ पुस्तकों की रचना की थी।

२५४. हकीम मिस्त्री, २५५. ईरिज मिर्जा आत्मज मिर्जा खानखाना (नं० २९), २५६. सकतसिंह आत्मज राजा मानसिंह (नं० ३०), २५७. अब्दुल्ला आत्मज खान आजम मिर्जा कोका (नं० २१), २५८. अली मुहम्मद अस्प, २५९. मिर्जा मुहम्मद, २६०. शेख बायजीद आत्मज शेख सुलेमान, या पौत्र शेख सलीम निवासी फतेहपुर

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सीकरी, २६१. गजनीन खाँ जालोरी; २६२. किचक (या किजक); ख्वाजा आत्मज ख्वाजा अब्दुल्ला, २६३. शेर खाँ मुगल, २६४. फतेह उल्ला आत्मज मुहम्मद वफा, २६५. राममनोहर आत्मज लोकरन (या लवन करन), २६६. ख्वाजा अब्दुस्समद शीरीं कलम, २६७. सिलहदी आत्मज राजा बिहारी मल (नं० ३३), २६८. रामचन्द्र कछवाहा, २६९. बहादुर खाँ कूरदार, २७०. बाँका कछवाहा।

१९. साढ़े तीन सदी

२७१. मिर्जा अबू सईद आत्मज सुल्तान हुसेन मिर्जा, २७२. मिर्जा संजर, आत्मज सुल्तान हुसेन मिर्जा, २७३. अली मर्दान बहादुर, २७४. रजाकुली आत्मज खानजहाँ (नं० २४), २७५. शेख खूबू (कुतुबउद्दीन चिश्ती) फतेहपुरी, २७६. जियाउल्मुल्क काशी, २७७. हमजाबेग गत्रागली (या फरागली), २७८. मुख्तार बेग आत्मज आगा मुल्ला, २७९. हैदर अली अरब; २८०. पेशरी खाँ, २८१. काजी हसन कजवीनी, २८२. मीर मुराद जुवैनी, २८३. मीर कासिम बदख्शी, २८४. बन्दा अली मैदानी, २८५. ख्वाजगी फतेह उल्ला आत्मज हाजी हबीब उल्ला काशी, २८६. जाहिद और २८७. दोस्त मुहम्मद २८८. यार मुहम्मद तीनों, आत्मज सादिक खाँ (संख्या ४३), २८९. इज्जत उल्ला गज्दवानी।

२०. तीन सदी

२९०. अल्तून कुलीज, २९१. जान कुलीज, २९२. सैफ उल्ला और २९३. चीन कुलीज, दोनों के आत्मज कुलीज खाँ (संख्या ४२), २९४. अबुल फत्ताह अतालीक, २९५. सैयद बायजीद बारहा, २९६. बलभद्र राठौर, २९७. अबुल मआली आत्मज सैयद मुहम्मद मीर अदल (संख्या १४०), २९८ बाकर अंसारी, २९९. बायजीद बेग तुर्कमान, ३०० . शेख दौलत बख्तियार. ३०१. हुसेन पखली वाल, ३०२. केशवदास आत्मज जैमल, ३०३. मिर्जा खाँ नीशापुरी (एक पांडुलिपि में खाँ के स्थान पर जान लिखा है।), ३०४. मुजफ्फर भ्राता खानआलम (संख्या ५८), ३०५. तुलसीदास जादौन, ३०६ रहमत खाँ आत्मज मसनद अली (या सनद अली), ३०७. अहमद कासिम कोका, ३०८. बहादुर गोहलोट, ३०९. दौलत खाँ लोदी, ३१०. शाह मुहम्मद आत्मज कुरैश सुल्तान, ३११. हसन खाँमियाना ३१२. ताहिर बेग आत्मज खाँन कलाँ (संख्या ९६), ३१३. किशनदास तुनवर, ३१४. मानसिंह कछवाहा, अकबर नामा (तृ० भाग ३३३, ३३५) में मानसिंह दरबारी लिखा है, ३१५. मीर गदाई आत्मज मीर अबू तूराब, ३१६. कासिम ख्वाजा अब्दुल बारी, ३१७. नादी अली मैदानी, ३१८. नीलकंठ जमींदार उड़ीसा, ३१९. गदास बेग तेहरानी, ३२०. ख्वाजा अशरफ आत्मज ख्वाजा अब्दुलबारी, ३२१. शरफ बेग शीराजी, ३२२. इब्राहीम कुली आत्मज इस्माईल कुली खाँ (संख्या ४६)।

२१. ढाई सदी

३२३. अबुल फतेह आत्मज मुजफ्फर मुगल, ३२४. बेगमुहम्मद तोकबाई, ३२५. इमाम कुली शिकाली या शिगाली, ३२६. सफदर बेग आत्मज हैदर मुहम्मद खाँ आख्ताबेगी (संख्या ६६), ३२७. ख्वाजा सुलेमान शीराजी, ३२८. बरखुरदार (मिर्जा खाँन आलम) आत्मज अब्दुर्रहमानदूल्दी (संख्या १८६), ३२९. मीर मआसूम भकरी, ३३०. ख्वाजा मालिक अली मीर शब, ३३१. राय रामदास दीवान, ३३२. शाह मुहम्मद आत्मज सईद खाँ किकर या गक्खर, ३३३. रहीम कुली आत्मज खान जहाँ (संख्या २४), ३३४. शेख बेग यसावुलबाशी।

२२. दो सदी

३३५. इफतिखार बेग आत्मज बायजीद बेग (संख्या २९९), ३३६. प्रताप सिंह आत्मज राजा भगवानदास

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

(संख्या २७), ३३७. हुसेन खाँ कजबीनी, (देखिए २८१), ३३८. यादगार हुसेन आत्मज कबूल खाँ (संख्या १३७), ३३९. कामरान बेग गीलानी, ३४०. मुहम्मद खाँ तुर्कमान, ३४१. निजामउद्दीन आत्मज शाह मुहम्मद खाँ (संख्या ९५), ३४२. सकतसिंह आत्मज राजामान सिंह (संख्या ३०), दे० २५६, ३४३. इमादुल्मुल्क, अकबरनामा में काजी इमादुल्मुल्क लिखा है। ३४४. शरीफ सरमदी, ३४५. कराबह (या बहरी) आत्मज कराताक, ३४६. तातार बेग आत्मज अली मुहम्मद अस्क (संख्या २५८), ३४७. ख्वाजा मुहिब अली खवाफी, ३४८. हकीम (जलालउद्दीन) मुजफ्फर अर्दिस्तानी, ३४९. अब्दुस्सुभान आत्मज अब्दुर्रहमान दूल्दी (संख्या १८६) ३५०. कासिम बेग तबरीजी ३५१. शरीफ (अमीरुल उमरा) आत्मज ख्वाजा अब्दुस्समद, (संख्या २६६), ३५२. तकिया शुस्तरी, ३५३. ख्वाजा अब्दुस्समद काशी, ३५४. हकीम लुत्फउल्ला, ३५५. शेर अफगन और ३५६. उमाग उल्ला, दोनों आत्मज सैफ खाँ कोका (सं० ३८), ३५७. सलीमकुली और ३५८. खलीलकुली, दोनों आत्मज इस्माईल कुली खाँ (सं० ४६), ३५९. बली बेग आत्मज पायन्दा खाँ (सं० ६८) मुहम्मद उइगूर या ऐगूर, ३६१. मीर खां यसाउल, ३६२. सरमस्त खाँ आत्मज दस्तम खाँ या रुस्तम खाँ ३६६. सैयद अबुलहसन आत्म सैयद मुहम्मद मीरअद्ल (सं० १४०), ३६४. सैयद अब्दुल वहीद भ्रातृज मीरअद्ल, ३६५. ख्वाजा बेग मिर्जा आत्मज मआसूम बेग, ३६६. सक्रा भ्राता राणाप्रताप, ३६७. शादी बेउजबक और ३६८. बाकी बे उजबक दोनों आत्मज नजर बे (सख्या १६९), ३६९. यूनान बेग भ्राता मुरातखाँ (संख्या ५४), कुछ पाण्डुलिपियों में मुराद खां के स्थान पर मिर्जा खां लिखा है। ३७०. शेख कबीर चिस्ती (शुजआत खां रुस्तमे जमान), ३७१. मिर्जा ख्वाजा आत्मज मिर्जा असदउल्ला, ३७२. मिर्जा शरीफ आत्मज मिर्जा अलाउद्दीन। ३७३. शुकुरुल्ला (जफर खाँ) आत्मज जैन खां कोका (संख्या ३४), ३७४. मीर अब्दुल मोमिन आत्मज मीर समर कन्दी, ३७५. लश्करी आत्मज मिर्जा यूसुफ खां (संख्या ३५), ३७६. आगामुल्ला कजवीनी, ३७७. मुहम्मद अलीजामी ३७८. मथुरादास खत्री, ३७९. मथुरादास आत्मज मथुरादास, ३८०. मीर मुराद भ्राता शाहबेग कोलाबी (संख्या १४८) ३८१. कल्ला कछवाहा, ३८२. सैयद दरवेश आत्मज शम्स बुखारी, ३८३. जुनैद मुरुल, ३८४. सैयद अबू इसहाक आत्मज मिर्जा रफी उद्दीन सफवी, ३८५. फतेह खां चीताबान, ३८६. मुकीम खां आत्मज शुजआत खां (संख्या ५१), ३८७. लाला आत्मज राजाबीर बर (बल) (संख्या ८५), ३८८. यूसुफकश्मीरी, ३८९, हबीयसाउल, ३९०. हैदर दोस्त भ्राता कासिम अली खां (संख्या १८७), ३९१. दोस्त मुहम्मद आत्मज बाबा दोस्त, ३९२. शाहरुख दन्तूरी, ३९३. शेर मुहम्मद, ३९४. अली कुली, ३९५. शाह मुहम्मद आत्मज मसनद, अली (या सैयद अली); ३९६. साँवलदास जादोंन, ३९७. ख्वाजा जहीरुद्दीन आत्मज शेख खलीलुल्ला, ३९८. मीर अबुल कासिम नीशापुरी, ३९९. हाजी मुहम्मद अर्दिस्तानी, ४००. मुहम्मद खाँ भगिनी सुततरसों खां (संख्या ३२); ४०१. ख्वाजा मुकीम आत्मज ख्वाजा मीरकी, ४०२. कादिर कुली कोका, धात्री पुत्र मिर्जाशाहरुख (संख्या ७), ४०३. फीरोज खां (या फीरूजा) हुमायूँ सम्राट् का दास, ४०४. ताज खां खत्रिय, ४०५. जैनउद्दीन अली, ४०६. मीर शरीफ कोलाबी, ४०७. पहाड़ खां बलूची, ४०८. केशव दास राठौर, ४०९. सैयद लाड बारहा, ४१०. नसीर मईन (या मन), ४११. सांगा पँवार, ४१२. काबिल आत्मज अतीक, ४१३-४१४. अदवन्द और सुन्दर, दोनों जमीनदार उड़ीसा, ४१५. नूरम कोका, धात्री पुत्र मिर्जा इब्राहीम। सम्राट् के शासन के आरम्भ से लेकर सन् ४० इलाही तक के अर्थात् जिस वर्ष यह ग्रन्थ समाप्त हुआ था पांच सदी से ऊँचे पद वाले अमीरों में जीवित तथा स्वर्गीय दोनों अमीरों के नाम इस सूची में सम्मिलित हैं परन्तु पांच सदी से दो सदी तक के अमीरों में केवल उन्हीं अमीरों के नाम सम्मिलित हैं जो सन् ४० इलाही तक जीवित थे।

दो सदी से कम पद वाले अमीरों की केवल संख्या नीचे दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१. डेढ़ सदी, (१५० घोड़ों) के ५२ मनसबदार, २. सद व बीसी (१२० घोड़ों) के १ मनसबदार, ३. यूजबाशी (१०० घोड़ों) के २५० मनसबदार, ४. चार बीसी (८० घोड़ों) के ६१ मनसबदार, ५. तीन बीसी (६० घोड़ों) के २०४ मनसबदार, ६. पंजाही (५० घोड़ों) के १६ मनसबदार, ७. दो बीसी (४० घोड़ों) के २६० मनसबदार, ८. तरकश बन्द (३० घोड़ों) के ३६ मनसबदार, ९. बीसी (२० घोड़ों) के २५० मनसबदार, १०. दहबाशी (१० घोड़ों) के २२४ मनसबदार।

शायद ही कोई दिन ऐसा व्यतीत होता हो जब सम्राट् योग्य तथा उत्साही मनुष्यों को मनसबों पर न नियुक्त न करते हों अथवा निम्न पदाधिकारियों को उच्चपदों पर उन्नति न करते हों, बहुत से तुर्क और ताजेक दूर देशों से आते हैं और सेना में उच्च पद पर पहुँच कर अपनी मनोकामना सिद्ध करते हैं। अनेक पुराने और नये सेवक जो इन मनसबों पर नहीं नियुक्त हैं अवकाशग्रहण करते हैं और सम्राट् उनको रोजीना अथवा जागीर प्रदान करते हैं जिससे वे स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें।

जीवित तथा स्वर्गीय अमीरों का उल्लेख करने के पश्चात् उचित है कि उन अमीरों के नाम भी लिखे जांय जो शासन-कार्य में नियुक्त थे जिससे वे चिरविख्यात हो जाँय।

राज्य के वकील या प्रधानमंत्री

१. बैराम खां (नं० १०), २. मुनीम खां (नं० ११), ३. अत्गा खां (नं० १५), ४. बहादुर खां (नं० २२), ५. ख्वाजा जहां (नं० ११०), ६. खानखाना मिर्जा खां (नं० २६), ७. खान आजम मिर्जा कोका (नं० २१)।

राज्य के वजीर या अर्थ मंत्री

१. मीर अजीज उल्ला तुरबती, २. ख्वाजा जलाल उद्दीन महमूद खुरासानी (नं० ६५), कुछ पाण्डुलिपियों में महमूद के स्थान पर मसऊद लिखा है। ३. ख्वाजा मुइनुद्दीन फरन्खूदी (नं० १२८), ४. ख्वाजा अब्दुल मजीद आसफ खां (नं० ४६), ५. वजीर खां (नं० ४१), ६. मुजफ्फर खां (नं० ३७), ७. राजा टोडरमल (नं० ३६), ८. ख्वाजाशाह मंसूर शीराजी (नं० १२२), ९. कुलीज खां (नं० ४२), १०. ख्वाजा शम्स उद्दीन खवाफी (नं० १५६)।

बख्शी

१. ख्वाजा जहां (नं० ११०), २. ख्वाजा ताहिर सिजिस्तानी (नं० १११), ३. मौलाना हबी बिहजादी (कुछ पाण्डुलिपियों में हबी के स्थान पर हई लिखा है। 'हबी, हई का संक्षिप्त रूप है), ०. मौलाना दखेश मुहम्मद मशहदी ५. मौलाना इश्की मुकीम खुरासान (नं० ४१०), ६. सुल्तान महमूद बदख्शी, ७. लश्कर खां (नं० ६०), ८. शाहबाज खां (नं० ८०), ९. राय पुरुखोत्तम्, १०. शेख फरीद बुखारी (नं० ६६), ११. काजी अली बगदादी; १२. जाफर बेग आसफ खां (नं० ८८), १३. ख्वाजा निजाम उद्दीन अहमद (इतिहासकार), १४. ख्वाजगी फतेह उल्ला (नं० २५८)।

सद्र

१. मीर फतेह उल्ला, २. शेख गदाई आत्मज शेख जमाल कम्बू, ३. ख्वाजगी मुहम्मद सालिह प्रपौत्र ख्वाजा अब्दुल्ला मरवारीद, ४. मौलाना अब्दुल बाकी, ५. शेख अब्दुल नबी, ६. सुल्तान ख्वाजा (नं० १०८), ७. सद्र जहां (नं० १६४)।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आईन ३० (द्वितीय भाग)

राज्य के विद्वान्

लेखक अब अपने समय के विद्वानों का उल्लेख करता है और उनके धार्मिक भेदों पर ध्यान न देकर उनके ज्ञान के अनुसार श्रेणियों या वर्गों में उनका विभाजन करता है। सम्राट् भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत् के नेता और वाह्य तथा आन्तरिक जगत् के शासक हैं पांच श्रेणियों के विद्वानों का ध्यान रखते हैं तथा उनका सम्मान करते हैं। तथापि पाँचों श्रेणियों के विद्वान् अपने ज्ञान के अनुसार विश्व भूषण सम्राट् की पूर्णता से चकित रहते हैं। प्रथम श्रेणी के विद्वान् अपने सौभाग्य से वाह्य तथा अन्तर जगत् के रहस्यों से परिचित हैं और अपनी बुद्धि तथा हृदय की उदारता से विचार के दोनों क्षेत्रों से परिचित हैं और यह स्वीकार करते हैं कि उन्हें अपनी आध्यात्मिक शक्ति सम्राट् से प्राप्त हुई है। दूसरा वर्ग वाह्य जगत् पर कम ध्यान देता है किन्तु अपने हृदय के प्रकाश से विशाल ज्ञानराशि प्राप्त करता है। तीसरा वर्ग प्रत्यक्ष (नजर) से बाहर नहीं जाता और जो कुछ शब्द प्रमाण पर आधारित है उसका कुछ ज्ञान रखता है। चौथा वर्ग शब्द प्रमाण को संदिग्ध समझता है और बिना प्रमाण के कुछ भी स्वीकार नहीं करता। पाँचवाँ वर्ग रूढ़िवादियों (कट्टर लोगों)का है जो आप्त वाक्य के संकुचित क्षेत्र से आगे नहीं जाते। प्रत्येक वर्ग में कई उपवर्ग हैं।

लेखक न्यायाधीश के रूप से लोगों का छिद्रान्वेषण नहीं करना चाहता। विद्वानों का विभिन्न वर्गों में विभाजन करना ही उसके हृदय पर बोझ के समान था परन्तु सत्य लेखनी की सहायता करता है।

प्रथम वर्ग जो वाह्य तथा आन्तर दोनों जगतों का रहस्य समझते हैं—१. शेख मुबारक नागोरी, २. शेख निजाम नारनौली, ३. शेख अधन नाम अमानुल्ला, ४. मियां वजीहुद्दीन, ५. शेख रुकनुद्दीन, ६. शेख अब्दुल अजीज देहलवी, ७. शेख जलालुद्दीन थानेसरी, ८. शेख इलाहदिया खैराबादी, ९. मौलाना हुसामुद्दीन, १० शेख अब्दुल गफूर, ११. शेख पंजू सम्भली (वह गलती से बेचू कहा जाता था), १२. मौलाना इस्माईल, १३. माधव सरस्वती, १४. मधुसूदन, १५. नारायण आश्रम, १६. हरी जी सूर, १७. दामोदर भट, १८. राम तीर्थ, १९. नरसिंह, २०. परमिन्दर, २१. आदित।

द्वितीय वर्ग जो हृदय के रहस्यों को समझता है—२२. शेख रुकनुद्दीन महमूद कमानगर (धनुष बनानेवाला), २३. शेख अमानुल्ला, २४. ख्वाजा अब्दुलशहीद, २५. शेख मूसा, २६. बाबा बलास, २७. शेख अलाउद्दीन मजजूब, २८. शेख युसुफ हरकुन, २९. शेख बुरहान, ३०. बाबा कियूर मजजूब, ३१, शेख अबू इसहाक फिरंग ३२. शेख दाऊद झन्नीवाल, ३३. शेख सलीम चिश्ती—यह शेख फरीद शकर गंज के वंशज थे और फतेहपुर सिकरी में रहते थे। अकबर इन पर बहुत श्रद्धा रखता था। कहते हैं कि इन्हीं के आशिर्वाद से अकबर के प्रथम पुत्र का जन्म हुआ था। इन्हीं के नाम पर उसका नाम, 'सलीम' रखा गया जो जहाँगीर नाम से सिंहासनारूढ़ हुआ। ९७९ में इनका देहान्त हो गया, ३४. शेख मुहम्मद गौस ग्वालियरी, ३५. राम भद्र, ३६. जगरूप।

तृतीय वर्ग जो माकूल (दर्शन) और मनकूल (धर्म ग्रन्थ) के ज्ञाता हैं ३७. मीर फतेह उल्ला शीराजी, ३८. मीर मुर्तजा शरीफी, ३९. मौलाना सईद तुर्किस्तानी, ४०. हाफिज ताशकन्दी ४१. मौलाना शाह मुहम्मद, ४२. मौलाना अलाउद्दीन, ४३. हकीम मिस्त्री, ४४. मौलाना शेख हुसेन, ४५. मौलाना मीर कलाँ, ४६. गाजी खाँ बदख्शी, ४७. मौलाना सादिक, ४८. मौलाना शाह मुहम्मद,।

चतुर्थ वर्ग माकूल (दर्शन) के विद्वान्—४९. मौलाना बीर मुहम्मद, ५०. मौलाना अब्दुल बाकी,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

५१. मिर्जा मुफलिस समरकन्दी, ५२. मौलाना जादा शुक्र, ५३. मौलाना मुहम्मद, ५४. कासिम बेग, ५५. मौलाना नुरुद्दीन तरखाँ, ५६. नारायण, ५७. माधव भट्ट, ५८. श्री भट्ट, ५९. विष्णु नाथ, ६०. राम किशन, ६१. बलभद्र मिश्र, ६२. बासुदेव मिश्र, ६३. बामन भट्ट, ६४. विद्या निवास, ६५. गौरी नाथ, ६६. गोपी नाथ, ६७. किशन पंडित, ६८. भट्टाचार्ज (भट्टाचार्य), ६९. भागीरथ भट्टाचार्ज, ७०. काशी नाथ भट्टाचार्ज।

हकीम

७१. हकीम मिस्त्री, ७२. हकीमुलमुल्कइनका नाम शम्सउद्दीन था और यह कैस्पियन सागर के तट पर स्थित गीलान से भारत में आए थे। ७३. मुल्ला मीर-तबकात में इनका नाम मुल्लामीर तबीब हेरवी दिया है, ७४. हकीम अबुल फतेह, ७५. हकीम जंबील बेग, ७६. हकीम अली गीलानी, ७७. हकीम हसन गीलानी, ७८. हकीम अरस्तू, ७९. हकीम फतेह उल्ला, ८० हकीम मसीहुल्मुल्क, ८१. हकीम जलालुद्दीन मुजफ्फर, ८२. हकीम लुत्फ उल्ला, ८३. हकीम सैनुल्मुल्क लंग, ८४. हकीम हुमाम, ८५. हकीम ऐनुल्मुल्क, ८६. हकीम शिफाई, ८७. हकीम निआमत उल्ला, ८८. हकीम दवाई, ८९. हकीम तलब अली, ९०. हकीम अब्दुर्रहीम, ९१. हकीम रूह उल्ला, ९२. हकीम फखरूद्दीन ९३. हकीम इसहाक, ९४. शेख हसन पानीपती, ९५. शेख बीना (शेख हसन और उनके पुत्र शेख बीना विख्यात जर्राह थे। 'बीना' के स्थान पर मआसिर में 'फनिया' और तबकात में 'मनिया' लिखा है, ९६. महादेव, ९७. भीम नाथ, ९८. नारायण, ९९. शिवजी (तबकात में कुछ और प्रसिद्ध हिन्दू वैद्यों का उल्लेख है जो अकबर के शासन काल में रहते थे जैसे, भीराव, दुर्गामल, चन्द्र सेन और इली)।

पंचम वर्ग मनकूल (धर्मग्रन्थ) के विद्वान १००. मियां हातिम सम्भली, १०१. मियां जमाल खां, १०२. मौलाना अब्दुल कादिर, १०३. शेख अहमद, १०४. मखदूलमुल्क, १०५. मौलाना अब्दुस्सलाम, १०६. काजी सदरुद्दीन; १०७. मौलाना सआदुल्ला, १०८. मौलाना इसहाफ, १०९. मीर अब्दुल लतीफ, ११०. मीर नुरुल्ला शुस्तरी, १११. मौलाना अब्दुल कादिर, ११२. काजी अब्दुल समी; ११३. मौलाना कासिम, ११४. काजी हसन, ११५. मुल्ला कमाल ११६. शेख याकूब कश्मीरी, ११७. मुल्ला आलम, ११८. शेखअब्दुन्नबी ११९. शेख भीक, १२०. शेख अबुल फतेह, १२१. शेख बहाउद्दीन मुफ्ती, १२२. काजी जलालुद्दीन मुल्तानी, १२३. शेख जियाउद्दीन १२४. शेख अब्दुल वहाब, १२५. शेख उमर, १२६. मीर सैयद मुहम्मद मीर अद्ल, १२७ मौलाना जमाल, १२८. शेख अहमदी १२९. शेख अब्दुल गनी, १३०. शेख अब्दुल वाहिद, १३१. सद्रे जहाँ, १३२. मौलाना इस्माईल, १३३. मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी, १३४. मौलाना सद्रे जहाँ (यह न० १३१ की पुनरावृत्ति प्रतीत होती है), १३५. शेख जौहर, १३६. शेख मुनौवर, १३७. काजी इब्राहीम, १३८. मौलाना जमाल, १३९. बिजय सेन सूर, १४०. भान चन्द।

आईन ३० (तृतीय भाग)

कवि

लेखक अब इस विख्यात मानववर्ग की ओर ध्यान देता है और उनके विषय में कुछ कहना अपना कर्तव्य समझता है। कवि विचारों के दुरूह जगत् में भ्रमण करते हैं और अपनी प्रतिभा को दिव्य आलोक से प्रकाशित करते हैं। परन्तु उनमें से अनेक लोग अपनी योग्यता का उचित मूल्यांकन नहीं करते और उसको कम मूल्य पर बेच देते हैं और नीच तथा अयोग्य लोगों की प्रशंसा में अपना समय बिताते हैं अथवा बुद्धिमान् लोगों की निन्दा करके अपनी

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जिह्वा दूषित करते हैं अन्यथा प्रकट है उचित शब्दों को पद्यबद्ध करना आश्चर्यजनक कला है, क्योंकि इसके द्वारा उच्च विचार बोधगम्य होते हैं।

जो व्यक्ति शब्दों को शब्दों के साथ सम्बद्ध करता है वह अपने कलेजे के खून से एक बूंद कम करता है। प्रत्येक मनुष्य जो शब्दों को शब्दों से जोड़ता है उसका काम यदि मुअजिजा नहीं है तो करामात[1] अवश्य है।

मेरा तात्पर्य केवल वाह्य सम्बन्ध से नहीं है। सत्य और असत्य, बुद्धिमत्ता और मूर्खता, मोती और घोंघे यद्यपि एक दूसरे से अत्यन्त दूर हैं तथापि उनमें वाह्य सादृश्य होता है। मेरा तात्पर्य आध्यात्मिक सम्बन्ध से है और यह केवल समकक्ष वस्तुओं में ही सम्भव है, और इसका पहचानना बहुत कठिन है और उसका मूल्यांकन इससे भी कठिन है।

इस कारण सम्राट् कविवर्ग पर ध्यान नहीं देते और कल्पना की उड़ानों में उनकी रुचि नहीं है। मूर्ख समझते हैं कि वह कविता की चिन्ता नहीं करते और इसी कारण वह कवियों से विमुख रहते हैं। ऐसा होते हुये भी सहस्त्रों कवि निरन्तर महाराज के दरबार में रहते हैं और उनमें से अनेकों ने दीवान और मसनवी लिखे हैं। लेखक उनमें से कुछ का वर्णन करता है और उनको शाश्वत जीवन प्रदान करता है।

१. शेख अबुल फैजे फैजी—यह कवि प्रफुल्लचित्त, दानी तथा कर्मण्य था और प्रातःकाल बहुत तड़के उठता था। वह महाराज का शिष्य तथा विश्व प्रेमी था। उसकी प्रतिभा की महत्ता को जानकर महाराज ने उसे 'मलिकुश्शुअरा' (कवि-सम्राट् की उपाधि से गौरवान्वित किया। लगभग चालीस वर्ष तक उसने 'फैजी' उपनाम से कविता लिखी; तत्पश्चात् दिव्यप्रेरणा से उसने अपना उपनाम फैयाजी रखा, जैसा वह स्वयं 'नल दमन' में कहता है :

इससे पहले मैं 'फैजी' उपनाम से कविता किया करता था। परन्तु अब जब मैं आध्यात्मिक प्रेम से पवित्र हो गया हूँ तो ईश्वर के प्रेम से में फैयाजी बन गया हूँ।

उसकी सुन्दर आदतों ने उसकी प्रतिभा में चार चाँद लगा दिया। वह विभिन्न विद्याओं का विशेषज्ञ था। उसने अरबी और फारसी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से एक 'सवातेउल इलहाम' (प्रेरणा किरणें) है जो अरबी भाषा में कुरान शरीफ की वेनुक्ता टीका है अर्थात् इसमें उसने केवल ऐसे अक्षरों का प्रयोग किया है जिसमें नुक्ते (विन्दु) नहीं होते। सूरये इखलास[2] से इस ग्रन्थ की समाप्ति की तिथि ज्ञात होती है।

वह धन की अधिकता को निर्धनता का साधन[3] तथा दुर्भाग्य को आनन्द का आभूषण समझता था। उसके घर का द्वार अपने और पराये तथा मित्र और शत्रु सब के लिये खुला रहता था और उसका घर दीनों का आश्रय था, स्वभाव की दुराराध्यता के कारण वह अपनी कवताओं का विज्ञापन नहीं करता था। उसने कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया और किसी से उपहार या अनुग्रह की इच्छा नहीं प्रगट की। उसने कभी अपने सद्गुणों पर दृष्टिपात नहीं किया। अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न होने पर भी उसने कविता पर अधिक ध्यान नहीं दिया और बुद्धिविलासियों की संगत से पृथक् जीवन व्यतीत किया। वह दर्शनग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन करता था

[1]सन्त लोगों के किए हुए आश्चर्यजनक कामों को करामात और पैगम्बरों के किए हुए आश्चर्यजनक कामों को मुअजिजा कहते हैं। [2]यह कुरान शरीफ का ११२ वाँ अध्याय है जो कुल हो अल्लाहो अहद शब्दों से आरम्भ होता है। इन अक्षरों के योग से १००२ प्राप्त होता है। फैजी ने अपनी मृत्यु से दो वर्ष पूर्व यह ग्रन्थ लिखा था का शान के निवासी मीर हैदर मोअम्माई ने इस तिथि की खोज की थी।

[3]. अर्थात् उसके पास जितना अधिक धन आता था उतना ही अधिक वह दान देता था, इस प्रकार वह निर्धन हो जाता था। अथवा, धनवान् लोग अध्यात्म में अकिञ्चन होते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

और नेत्रों के माध्यम से हृदय को भोजन पहुँचाता था। वह आयुर्वेद का विशेषज्ञ था और निर्धन रोगियों की दवा करता था।

काव्य-कला-क्षेत्र में उसकी उत्कृष्ट उक्तियाँ स्मरणीय हैं। यदि अवकाश मिला और हृदय को सांसारिक विषयों में रुचि हुई तो लेखक युग के इस अद्वितीय कवि की कुछ सुन्दर कविताओ का संकलन करेगा और शत्रु (आलोचक) की दृष्टि से तथा मित्रों के नियमानुसार उसके काव्यों का संग्रह करेगा[1] लेखक को भ्रातृ-प्रेम अब आलोचना के मार्ग पर नहीं चलने देता इसलिए प्रेम से विवश होकर कवि की कुछ कवितायें लिखता है।

कसीदे

१. हे ईश्वर, अनन्त काल से तुम्हारा अस्तित्व है और वह सदा बना रहेगा। नेत्र तुम्हारे प्रकाश को नहीं सह सकते है और शब्द तुम्हारे सौन्दर्य का वर्णन नहीं कर सकते।

२. तेरा प्रकाश हमारी दृष्टि को चकाचौंध कर देता है। तेरा सौन्दर्य बुद्धि को नष्ट कर देता है, तुम्हारे विषय में सोचने पर विचार व्याकुल हो जाते हैं। तेरी खोज आश्चर्योत्पादक है।

३. तेरे व्यक्तित्व तथा गुणों के समझने में तेरी पवित्र आज्ञा से चिन्ताओं का खून उचित है और बुद्धि का नष्ट हो जाना ठीक है—तेरी खोज में बुद्धि और चिन्ता दोनों का खून हो जाता है।

४. यदि कोई तेरे व्यक्तित्व और गुणों की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहता है तो तेरी मर्यादा का रक्षक उसको आश्चर्य का तमाचा मारता है और अज्ञानता के थप्पड़ लगाता है—अर्थात् वह चकित और व्याकुल होकर रह जाता है।

५. तेरे कमाल की राह में सब अक्षर और विन्दु अर्थात् वार्तालाप मरुस्थली के रेत के समान हैं। तेरा सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए तेरे सच्चे ज्ञान की उपमा ऐसी ही है जैसा नागरिक वार्तालय और ग्रामीण जो उसको नहीं समझ सकता—इसी प्रकार कोई विद्वान् तेरी वास्तविकता को नहीं समझ सकता क्योंकि उसका समझना ऐसा ही कठिन है जैसे किसान या ग्रामीण के लिए नागरिक वार्तालाप का समझना।

६. मेरे पैरों में इस मार्ग पर यात्रा करने की शक्ति नहीं है, इस पर बुद्धिमानों को भी धोखा हो जाता है। इस मदिरा की गंध सहने की मुझमें शक्ति नहीं है। यह मेरी बुद्धि नष्ट कर देती है।

७. तेरी पवित्रता की तख्ती इतनी पवित्र है कि मानव लेखनी उसका वर्णन नहीं कर सकती। अक्सीर को सोने की मैल की आवश्यकता नहीं होती।

८. तुम्हारी महिमा के नगर के चाहने वाले हर समय गलियों में घूमते रहते हैं मगर गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुंचते। क्या यह दूरदर्शी दृष्टि और क्या यह पथप्रदर्शक बुद्धि ! (सभी गली कूचे में घूमते रहते हैं)।

९. यदि मनुष्य की बुद्धि और ज्ञान संयुक्त कर दिए जाय तो भी वह तेरे प्रेम की वर्णमाला का प्रथमवर्ण होगा।

१०. तेरी खोज और पहचान में जिह्वा जो कुछ कहे और लेखनी जो कुछ लिखे वह सब खोटा और धोखा है।

११. आरम्भ करने वाले और पूर्ण ज्ञानी सभी तेरी खोज में लगे हुए हैं परन्तु आरम्भ करने वाले इस मार्ग

---

[1] अबुल फज्ल ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया और फैजी के मृत्यु के दो वर्ष उपरान्त मकजुल अदवार के फुटकर पत्रों का संग्रह किया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में व्यर्थ भ्रमण करते हैं और ज्ञानी व्यर्थ परिश्रम करते हैं। अर्थात् कोई तुझ तक नहीं पहुंच सकता।

१२. इस संसार में प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में तुझे पहचानने का विचार भरा हुआ है अर्थात् प्रत्येक तेरी मारफत का इच्छुक है। परन्तु यह वह उन्मत्तता है कि जिसने प्लेटों जैसे बुद्धिमान् की बुद्धि को भी नष्ट कर दिया।

१३. मेरे जैसे साहसहीन लोग वहाँ कैसे पहुंच सकते हैं जब तेरी ईर्ष्या सन्तों के हृदय में कटारी मारती है।

१४. हे ईश्वर! मैं चाहता हूँ कि तेरा अनुग्रह मेरे मस्तिष्क को इस खोज की उत्कण्ठा से साफ कर दे अन्यथा मुझे भय है कि मेरी यह उत्कट इच्छा कहीं उन्मत्तता में परिवर्तित न हो जाय।

१५. तेरी महिमा के मार्ग पर नंगे पैर चलने वालों के लिए सिवाय अजगर के मुंह के और कोई मोजा नहीं है। तेरी महिमा का मार्ग अत्यन्त भयावह है।

१६—तुम्हारी दया की तुलना में पृथ्वी की नौ धातुयें आधी मुट्ठी मिट्टी हैं और तुम्हारे अनुग्रह के दस्तर-ख्वान की तुलना में सातों समुद्र रसे के एक प्याले के समान हैं।

१७—जब तेरी चौखट की मिट्टी पर सिर पहुँच गया तब फिर वहाँ से उसे उठाना न तो धर्म के अनुसार उचित है और न सत्य के अनुसार ठीक है।

१८—मेरे लोभ के मेदे को कुत्ते के समान भूख लगने की बीमारी हो गई है। प्रेम रूपी वैद्य मुझे इससे बचने का आदेश देता है।

१—हे बुद्धि और ज्ञान की पूंजी (मनुष्य), मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे कौन सा मोती कहूँ? मानव सद्गुणों के विचार से तू आकाश से भी बड़ा है और शारीरिक तत्व की अशुद्धता के विचार से तू मिट्टी से भी निकृष्ट हैं।

२—तुम दुःखी मत हो कि तुम्हारे भीतर चार तत्वों का अंधकार वर्तमान है और न तुझे इस बात का गर्व होना चाहिए कि तू सात-राज्यों अर्थात् पृथ्वी का दर्पण बना हुआ है।

३—तेरे शरीर में उन्नति तथा अवनति दोनों को क्षमता है; चाहे तू आकाश की भाँति उच्च बनो अथवा पृथ्वी की भाँति निम्न।

४—आकाश के नक्षत्र जो तेरी दृष्टि से छिपे हैं वह सब तेरे लिए कलह तथा उपद्रव के कारण हैं। हे स्वयं अपने को बुद्धिमान समझने वाले, तू इन सप्त आकाशों की कठपुतली हो।

५—हाँ सावधान हो, अपने मूल्य को जान, अपने अस्तित्व को परख, तू न्याय का तराजू है। अपनी खाक को छान कि वास्तव में तू बड़ा अकसीर है।

६—अपने मूल्य को पहचान, क्योंकि आकाश ग्रहों को प्रकाशित करने के लिए तेरे प्रकाश का क्रेता है।

७—बुद्धि के विरुद्ध काम न कर, क्योंकि वह तेरा विश्वास-पात्र परामर्श-दाता है, भ्रम को हृदय में स्थान न दे, क्योंकि वह असत्यवादी मूर्ख है।

८—तुझे अपने से इतनी शत्रुता क्यों हो गई है कि अत्यन्त मूर्खता के कारण हृदय (आत्मा) को दुर्बल कर रहा है और जिह्वा का पालन कर रहा है?

९—तेरे कारण समय के हृदय की हत्या हो रही है अर्थात् सारा संसार तुझसे असन्तुष्ट है, क्योंकि कपट के कारण तेरा वचन मरहम का काम करता है परन्तु तेरे कार्य नश्तर की भाँति हैं।

१०—तुझको स्वयं अपनी दृष्टि में लज्जित होना चाहिये क्योंकि तू अपने को पूर्ण (मीजाने कुल) की

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

उपाधि देता है परन्तु वास्तव में तू पुस्तक के किनारे पर दी हुई टिप्पणी है, अर्थात् तेरा अस्तित्व व्यर्थ है।

११—यदि तेरे व्यक्तित्व का यही जादू है तो तुझे नष्ट हो जाना चाहिए क्योंकि तू संसार के आंखों में हर्फे मुकररर[1] (दूसरी बार आया हुआ अक्षर) की भाँति है जिसका मिट जाना ही अच्छा है।

१२—हे लाभ और हानि से असावधान रहने वाले, यह क्या असावधानी है कि तू अपने सौभाग्य को बेंच कर दुर्भाग्य मोल ले रहा है।

१३—यदि इस आखेट स्थल में तू अपने साहस का डैना खोले तो गौरैया के परों से तू उनका (एक काल्पनिक पक्षी) का आखेट कर सकता है, अर्थात् तू महान् कार्य कर सकता है।

१४. इस बात पर गर्व मतकर कि दुनिया के शरीर की कमर (केन्द्र) तू ही है। क्या तू नहीं जानता कि कमर की प्रशंसा लोग तब करते हैं जब वह पतली होती है? अर्थात अपने गुणों पर तुझे अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसी स्थिति में तू प्रशंसनीय नहीं होगा।

१५. जो लोग नंगे पैर शौक के रास्ते पर चल रहे हैं उनके साहस से तुम्हें शिक्षा लेनी चाहिए और तुझको लज्जित होना चाहिए कि जमाजा (ऊंट) पर सवार होकर इस रास्ते पर यात्रा कर रहा है, इसलिए अपने कदमों को न गिन।

१६. यदि तू परोपकार (ईसार) का रहस्य जानना चाहता है तो अपने साथ कठोर व्यवहार करो और दूसरों के साथ नर्म व्यवहार करो। (ईसार का अर्थ है अपनी इच्छाओं का दूसरों की इच्छाओं पर बलिदान कर देना)।

१७. यदि तूं उपास्य ईश्वर के सम्मुख अपनी उपासना की महिमा पर विश्वास रखता है तो प्रफुल्ल चित्त से बिपत्तियों का सामना कर। (ईश्वर के सच्चे उपासक सदैव दुःख और कष्ट सहते रहते हैं)।

१८. सच्चाई की चौखट पर दरवेशी (फकीरी) के साथ अपना चेहरा रख और ऐसी दरवेशी जो सम्पत्ति पर हँसे।

१९. ऐसी फकीरी नहीं होनी चाहिए कि स्वयं तो निर्जन स्थान में बैठा रहे परन्तु तेरा लोभ पूर्व तथा पश्चिम में दौड़ता फिरे।

२०. अपने लोभ की दृष्टि पर देख रेख रख क्योंकि यह ऐसा चालाक चोर है कि जबरदस्ती जौहरी के हाथ से मोती छीन लेता है।

२१. बहुत से लोग संसार में ऐसे भी हैं जो ऊपर से पथ प्रदर्शन का दीपक हाथ में लिए हुए हैं परन्तु वही पथ प्रदर्शक रास्ते में काफिले को लूट लेते है।

२२. हे मेरे प्रिय पुत्र, तुझको नहीं मालूम कि भाग्य सदैव एक समान नहीं रहता। सदैव दशा बदलती रहती है क्योंकि तेरा और आसमान का कुछ भाई चारा तो है नहीं कि वह तेरी सहायता करे। न मालूम कल तेरी क्या दशा हो, अतएव जो कुछ करना है उसे आज ही कर ले जब समय तेरी सहायता कर रहा है।

२३. शोक! देखने वाला कोई नहीं है अन्यथा प्रत्येक क्षण में मैं अपने फटे हुए वक्षस्थल से सिकन्दर के आश्चर्यजनक दर्पण[2] को निकालकर दिखाता, अर्थात् सद्गुणों का सम्मान करने वाला कोई नहीं है।

---

[1]ब्लाकमैन ने मुकररर का अर्थ दृष्टि-भ्रम लिखा है, दे० पृ० ६२२। [2]सिकन्दर महान के दर्पण के विषय में आश्चर्यजनक कहानियाँ कही जाती हैं उसने अपने मित्र दार्शनिक बालीनास को आज्ञा दी कि सिकन्दरिया में ३६० गज ऊंचा मीनार उठाया जाय। तब उसके शिखर पर एक दर्पण रखा गया जिसका व्यास ७ गज और परिधि २१ गज थी। कुस्तुन्तुनियाँ तक संसार में जो कुछ होता था उसकी छाया उस दर्पण में पड़ती थी।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२४. हृदय के संसार हिन्दुस्तान को शिष्टाचार, मूर्ति पूजा तथा मूर्ति निर्माण[1] करना मैंने ही सिखाई है।

२५. यह कसीदा मेरे हृदय रूपी यूनान की सर्वोत्कृष्ट रचना है। इसको तू ध्यान से पढ़, यह ऐसे अक्षर नहीं हैं जिनको सरसरी पढ़ा जाय।

२६. इस कसीदे को देखकर तुझे यह समझना चाहिए कि यूनान जो मिट गया था वह अब हिन्दुस्तान में जाहिर हुआ है। मगर तू उसी तरह गहरे कुयें में पड़ा हुआ है।

१. मेरा एकान्त मेरी प्रतिभा मेरी साथी है और मेरी लेखनी का शब्द मेरे लिए अरगन बाजे की ध्वनि है।

२. यदि मेरे ज्ञान के चेहरे से पर्दा हटा लिया जाय तो मालूम होगा कि ज्ञान के पंडित लोग जिससे अपना यकीन कहते हैं वह पहला विचार है, अर्थात् बड़े बड़े विद्वानों का अन्तिम ज्ञान मेरे प्रारम्भिक ज्ञान के सदृश है।

३. यदि मेरी बुद्धि की आँख से पर्दा उठा दिया जाय तो ज्ञात होगा कि विद्वानों का जो सर्वोत्कृष्ट ज्ञान है वह मेरे पागलपन का नशा है।

४. जो कुछ मेरे मन में है यदि मैं उसको बाहर करूँ तो पता नहीं है कि युग धर्म उसे सह सकेगा।

५. अपनी बुद्धि की नियमित दशा के कारण मैं अपने को ब्रह्मांड की व्यवस्था समझता हूँ और आकाश तथा पृथ्वी मेरी गति तथा विश्राम के परिणाम हैं।

६. मेरा पात्र समय की मित्रता की मदिरा से खाली है। मेरा खून ही मेरे उत्साह की मदिरा का आधार है; अर्थात् मुझे दूसरों की सहायता की आवश्यकता नहीं है।

७. नीच (कमीना) लोगों की नम्रता के लिए मेरी इच्छा कब हो सकती है? मेरी लेखनी मेरे ज्ञान की पूजा में सिर झुकाती है और सिज्दा करती है।

गजलें

१. उठ और इस शुभ मुहूर्त में मेरे सिंहासन से अनुग्रह माँग, मेरा साहस किसी सेना से कम नहीं है।

२. मेरे अखाड़े में दोनों संसारों की विजय ढूंढो। क्योंकि मेरे राजसी झंडे से मेरे प्रेम का कंधा झुका हुआ है।

३. यदि मिट्टी में बैठने वालों पर मेरी कृपा दृष्टि पड़े तो मेरे सौभाग्य के चींटी को भी सुलेमान का मस्तिष्क मिल जाय।

४. मेरे द्वार के सब पहरेदार नंगी तलवार खींचे हुए हैं। वह कौन सी इच्छा है जो मेरे एकान्त पर आक्रमण करने का साहस कर सकती है?

५. सिर को जेब में झुकाकर मैं दोनों संसारों को देखता हूँ। प्रेम ने वस्त्र को विचार के धागों से बुना है।

६. मेरी आँखें सत्य (हकीकत) का तमाशा देखने के लिए खुली हैं। पूर्ण बुद्धि रखने वाला (अल्केकुल) मेरे आश्चर्य के सितारे से भागता है।

---

[1] यहाँ से अन्तिम तीन शेर फखरिया है। फारसी के सब कवि आत्म-प्रशंसा में शेर लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

७. मैं सरल फैजी हूँ। यदि तुझे विश्वास नहीं है तो मेरी आकृति के दर्पण से मेरे हृदय को देख।

१. मेरे भग्न हृदय से लपटें ऊपर उठती हैं। आज मेरे वक्षस्थल में अग्निज्वाला उठती है।

२. सृष्टि के प्रथम दिन प्रत्येक ने शिक्षा की तख्ती पकड़ी। मुझे देखकर प्रेम ने मुझे कंघी करने का काम सीखा।

३. मेरे व्याकुल हृदय की बात जो कोई दूसरे से कहे उसकी आँखें उसके कलेजे के ख़ून से भर जांय।

४. हे फैजी, यदि मेरे हाथ संसार के खजाने से खाली हैं, तिस पर भी कीमियागर मेरे पीत कपोलों से रंग ले जाता है।

५. अच्छा हो कि मैं हृदय को पिघलाऊँ और नये ढंग से दूसरे हृदय की नींव डालूँ। मैंने कई बार अपने टूटे हुए हृदय की रफूगरी की है।

१. जब से मेरे हृदय में प्रेम ने प्रवेश किया है तब से मेरे अंगों से प्रियतम टपकता है, अर्थात् मुझ में और प्रियतम में कोई अन्तर नहीं रह गया है।

२. मेरी शराब की गर्मी से फरिश्तों के डैने पिघल गए। शोक है उस दिन पर जब हमारे शीशे से बिजली चमके, अर्थात यदि मेरे प्रेम का रहस्योद्घाटन होवेगा तो संसार नष्ट हो जावेगा।

१. प्रेम के मार्ग में मेरे सामने दो कठिनाइयाँ पड़ी हैं, मेरे ऊपर हत्या का आरोप है परन्तु प्रियतम ही हत्यारा है।

२. हे सन्मार्ग के पथिकों। मुझसे पृथक मत हो। मैं दूर तक देखता हूँ और मेरी आँख लक्ष्य मंजिल) पर है।

मैं उस मार्ग पर चल रहा हूँ जिससे पद अपरिचित हैं। मैं उस स्थान से बोलता हूँ जिससे साँस अनभिज्ञ है।

यद्यपि तुझसे दूर रहना मृत्यु के निकट जाना है तथापि श्रद्धा के साथ दूर रहना तेरे समीप रहने के समान है।

१. इस संसार में अनेक मिष्ठभाषी ऐसे हैं जो शराब नमक के साथ मिलाते हैं और उन्मत्त रहते हैं।

२. बुलबुल सच्चा प्रेमी होने का व्यर्थ बहाना करती है, इस बाग के पक्षी प्रेम में पिघल जाते हैं और तिस पर भी चुप रहते हैं।

१. मेरे साथी यात्री कहते हैं, "हे मित्र, सावधान रहो; क्योंकि काफिले पर अचानक आक्रमण होने वाला है।'

२. मैं उत्तर देता हूँ, 'मैं असावधान नहीं हूँ, परन्तु शोक! कि सावधान हृदय पर आक्रमण करने वाले इन डाकुओं से बचने का उपाय क्या है?"

३. अपने चेहरे को प्रफुल्लित रख और चित्त को शान्त रख जब कि ईश्वर का हाथ थप्पड़ मारता है।

१. साकियों ने साक (शराब) का प्याला हाथ में लिया और खिज्र को इस आग के चश्मे का प्यासा बना दिया। खिज्र एक पैगम्बर हैं जो भूले भटकों को रास्ता बताते हैं।

२. यह कैसी शराब थी जिसको शाकी ने प्याले में उड़ेला? इसको पाने के लिए ईसा मसीह और खिज्र भी ईर्ष्या के कारण संघर्ष करने लगे।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रेम की मदिरा पीने के विषय में मत पूछ कि आखिर यह क्या चीज है ? हीरे को घिस करके घातक विष में मिलाते हैं।

मेरी दृष्टि में (प्रेम का) समुद्र और (सुरक्षा का) तद समान हैं। अमृत जल (प्रेम) मेरे लिए घातक विष के समान है।

फैजी कहते हैं कि मैंने काबा को जाने वाले काफिले का साथ नहीं छोड़ा है; सत्य यह है कि मैं उनसे एक कदम आगे हूँ, अर्थात् फैजी अपने सहधर्मियों से आगे है।

१. मैं शिकायत कैसे करूँ कि मेरे साथी यात्रियों ने मुझे पीछे छोड़ दिया है, क्योंकि वे प्रेम के साथ यात्रा कर रहे हैं जो काफिले का अध्यक्ष है ?

२. हजारों जंगल निष्ठुर मित्रों से भरे हैं। उन्होंने मेरे हृदय के हौदे को शोक के बोझ से खाली कर दिया।

१. मैं वह व्यक्ति हूँ जिसके कान में राग पूर्णता को प्राप्त होते हैं और जिसके गले में शराब संयमित हो जाती है (एतदाल को पहुँचती है) अर्थात् न तो वह बहुत तेज होती है और न बहुत निकृष्ट।

२. यदि अपने सिर को आत्मविस्मृति की ओर न खींचूँ तो क्या करूँ ? मुझको स्वयं अपने आप से चिढ़ होती है।

१. मत पूछ कि प्रेमी स्वर्ग में कैसे पहुँचे हैं, क्योंकि वे पैरों को हृदय के कंगूरों में रख कर ऊपर की तरफ कूदते हैं।

२. संसार के सब दर्शकों को एकत्र बुलाओ, उन्होंने मेरे खून का आईन[1] बनाया है।

१. जिन्होंने अस्तित्व और अनस्तित्व पर द्वार बन्द कर लिया है वह इस लोक तथा परलोक की शान्ति से कुछ लाभ-नहीं उठाते।

२. खजाने के जादू को खोल क्योंकि भाग्य के जानने वालों ने भाग्य कभी सोने की जंजीर में नहीं बाधा है। (क्योंकि जब तक मनुष्य अपना सर्वस्व नहीं दे देता तब तक उसको सच्चा सुख नहीं मिलता।

प्रकाशपूर्ण सूर्य मेरे कलम की सियाही को जानता है, क्योंकि मैं अपनी डायरी सफेद ऊषा के पास ले गया हूँ।

हे फैजी, संसार में किसे धैर्य तथा शक्ति है जो उसके रास्ते से दो बारा निकले।

मेरे हृदय से इच्छायें बाहर हैं, जब तू आवे तो खुशदिल होकर आ।

प्रेम छोड़ दो, क्योंकि यह काम सामान के साथ नहीं होता। आकाश और प्रियतम तुम्हारी आशा का पालन नहीं कर सकते।

आ, हम प्रकाश के मेहराबस्थल पर अपना चेहरा रखें और तूर पर्वत के पत्थर से दूसरे काबे का शिलान्यास करें।

२. काबा की दीवार टूट गई और किबले की बुनियाद नष्ट हो गई, आओ हम एक त्रुटिविहीन महल की नई बुनियाद डालें।

१. प्रेम कहां है जिससे हम काबा के दरवाजे की जंजीर पिघलावें और पूजा के लिए कुछ मूर्तियाँ बनावें।

---

[1] ब्लाकमैन इसका अर्थ विजयतोरण लिखता है, दे० पृ० ६२६।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२. यह काबा जिसे हज्जाज ने बनवाया था दहा दें और फिर से मन्दिर की बुनियाद रखें।

१. कब तक मैं हृदय को प्रियतम के हावभाव में फँसाये रखूँ ? मैं इस हृदय को जलाऊँ और दूसरा नया दिल बनाऊँ !

२. फैजी कहता है कि है कि मेरा हाथ खाली है और प्रेम का मार्ग सामने है। इस लिए मैं अपनी कविताओं को गिरो कर दूँ और दोनों संसारों को प्राप्त कर लूँ।

जुलेखा की जो निन्दा की गई थी मैं उसे कैसे पसन्द कर सकता हूँ। कितना अच्छा हुआ होता यदि निन्दकों की जिह्वा उनके हाथों के बदले में काट ली गई होती।

प्रेम के प्रति कृतघ्नता कैसे की जा सकती है? क्या उसने हमारे ऊपर दुःख पर दुःख नही डाला है ?

जो जादू का खेल प्रेम ने किया है मैं उसको नहीं समझ सकता क्योंकि तेरा ख्याल आँखों से भीतर आता है परन्तु छाती में नहीं समाता है।

१. भाग्य, समय का परिवर्तन युद्ध पैदा करता है। सब साथियों का व्यवहार उस लोकोक्ति के अनुसार है जो कहती है कि सुराही को टेढ़ी रख परन्तु मदिरा को न गिरा।

२. ऐसा नहीं हो सकता कि मै अपने साथियों को पीछे छोड़ दूँ। मैं उन लोगों को क्या करूँ जिनके पैरों में छाले पड़े हैं क्योंकि काफिला तेज है।

१. आज की रात तूने मेरी खबर नहीं ली और चला गया। मेरी दृष्टि से आशीर्वाद नहीं लिया और चला गया।

२. वह आँसू जो रैहान फूल के हरे भरे रहने के लिए चाहिए तूने मेरी भीगी आँखों से नहीं लिया और चला गया।

१. इच्छा के इस क्षेत्र में मनुष्य को जंगली या पालतू पशुओं से डरने की आवश्यकता नहीं है। इस मार्ग में तुम्हारी विपत्तियाँ तुम्हीं से पैदा होती हैं।

२. हे प्रेम ! क्या मुझे अनुमति है कि मैं आकाश के कंधे से अपने कंधे पर तेरी बड़ाई का झंडा रखूँ ?

१. फैजी कहता है कि मैं ऐसा उच्चाशय हूँ कि भाग्य ने मेरे विचार की कलाई को सातवें आसमान की पिंडली से जोड़ दिया है।

२. यदि दूसरे लोग अपनी कविताओं को काबा के दरवाजे पर लटकायें तो मैं अपनी कविताओं को सातवें आसमान के मेहराब पर लटका दूँ।

१. हे समय रूपी साकी, युद्ध करना बन्द कर दे। अकबरे गाजी के शासन में मुझे एक प्याला शराब दे।

२. ऐसी शराब नहीं जो बुद्धि का नाश कर देती हो और आदरणीय लोगों को मूर्ख बना देती है, जैसा भाग्य करता है।

३. ऐसी शराब नहीं जो बुरी आदत पैदा करे और अभिमान के मस्तिष्क में युद्ध क्षेत्र में वीरता का हवा दे।

४. ऐसी शराब नहीं जो हृदय को निर्लज्ज बना दे और लोभ रूपी तुर्क को भिखारी बना दे।

५. ऐसी शराब नहीं जो मस्तों की पंक्ति में शीशे (मानव हृदय) को पिघलाती है।

६. बल्कि ऐसी शुद्ध मदिरा दे जिससे भाग्य अपना जादूगरी का खेल छोड़ दें, अर्थात् वह शराब दे जो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मनुष्यों को इतनी शक्ति देती है कि वह भाग्य के ऊपर विजय प्राप्त करता है।

७. वह स्वच्छ मदिरा दे जिससे पुजारी अपनी शरीर के वस्त्र को पवित्र बनावें।

८. दृष्टि को प्रकाशपूर्ण करने वाली वह शराब दे जो जगत्-प्रेमियों को सच्चे प्रेम का मार्ग प्रदर्शित करे।

९. वह शराब दे जो दरिया के मोती के समान पवित्र हो और ज्ञानी के हृदय से मनमोजी विचारों को दूर कर दे।

कयामत के मैदान में जब लोगों के पाप क्षमा किये जायँगे तब काबा के गुनाह गिरजा घर की धूल के साथ क्षमा किये जायँगे।

फैजी के साहस के वस्त्र को देख कि फरिश्तों ने उसका दामन आसमान से जोड़ दिया है।

फैजी के हृदय से अधिक आश्चर्यजनक वस्तु मैंने कोई नही देखी है, क्योंकि वही मोती है, वही समुद्र है और वही डुबकी लगाने वाला है।

प्रियतम की दृष्टि ने फैजी के साथ जो कुछ किया है वह कोई घातकशत्रु कठिनाई से कर सकता था।

१. प्रेम के रास्ते के चलने वाले जब वहाँ तक पहुँचते हैं तब वे अपने हौदों में जीवित नहीं रहते, जब वे इस समुद्र (प्रेम) में नहीं मरते तब तक किनारे तक नहीं पहुँचते।

२. हे फैजी, चलो, इस मरुस्थली में उत्साह की ऊंटनी चलाओ, क्यों कि अपने घरों (सांसारिक वस्तुओं) के चाहने वाले होते हैं वे हृदय के काबे में नहीं पहूँचे।

फकीरी के रास्ते में धूल बिखेरने वाले दूसरे स्थान पर नहीं जाते क्योंकि इस समूह को इस स्थान पर मोती मिला है।

१. आदिकाल में कुछ प्रेम-दृष्टियों ने दर्पण बनाए जिन्होंने हमारे हृदय तथा नेत्रों को पिघला दिया।

२. प्रियतम के जुल्फों में न जाने कैसा आकर्षण है कि मनुष्य दोनों संसारों की सत्यता से अपना चेहरा ससार की ओर ले आए हैं।

३. यदि हृदय प्रेमियों के समूह से हट जाता है तो उसके विषय में पूछताछ न कर, क्योंकि इस काफिले से जो कुछ लिया जाता है वह फिर ले आते हैं।

मेरा हाथ मेरे गरीबाँ (कालर) तक नहीं पहुँचता है, इसका कारण यह नहीं है कि मैं धैर्यवान् हूँ, बल्कि यह है कि मेरा कालर इतना फट चुका है कि उसको और अधिक फाड़ा नहीं जा सकता।

१, यदि लैली को मजनूँ के साथ रहने की इच्छा न रही होती तो वह ऊँटनी पर सवार होकर इधर-उधर क्यों मारी मारी फिरती?

२. जो व्यक्ति मुझे मूर्ति पूजा से रोकता है वह काबा जाकर दरवाजे और दीवार की परिक्रमा क्यों करता है?

३. प्रेम ने फैजी से धैर्य, बुद्धि और चेतना छीन ली है, देखो इस चोर ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है जो काफिले का अध्यक्ष हूँ।

जब प्रेम पागलपन के घर में पहुँचता है तब वह जंगल में बहते हुए रेत से मेहराब बनाता है।

१. ईद की रात को सराय के बुड्ढे मनुष्य के पास समाचार ले जाओ कि पिछले तीस दिनो की कमी को आज मैं ठीक करूँगा फैजी ने रमजान के महीने में रोजा नहीं रखा है और अपनी उपेक्षा का प्रतिशोध करना चाहता है और मदिरापान करने की इच्छा करता है जो निषिद्ध है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२, फैजी के दीवान को ले और देख कि शराबी के काव्य हजारों मजहबों से सम्बन्ध रखते हैं।

१. मैं मिट्टी हो गया परन्तु मेरी कब्र की सुगन्ध से लोग पहचान सकते हैं कि इस मिट्टी से मर्द पैदा होते हैं।

२. लोग फैजी के आरम्भ से उसका अन्त जान सकते हैं क्योंकि वह अकेला ही संसार से जाता है और अकेला ही उठता है अर्थात् कोई उसकी समता करने वाला नहीं है।

हे प्रेम, काबा को नष्ट मत कर, क्योंकि वहाँ पर क्षण भर के लिए कभी कभी थके हुए यात्री विश्राम करते हैं।

किता

भाग्य देख कि प्रत्येक को उसके योग्य जौहर दिया गया है, आईना सिकन्दर के साथ और सूर्य अकबर के साथ। वह अपने को आईने में देखता था और यह सूर्य में ईश्वर को देखते हैं।

रुबाइयाँ

१. वह (अकबर) ऐसा बादशाह है जिसको उसकी बुद्धि के कारण (हम विज्ञानों का ज्ञाता) और धर्म के मार्ग में हम उसे अपना पथप्रदर्शक कहते हैं।

२. यद्यपि बादशाह खुदा की छाया हैं। वह खुदा का नूर (प्रकाश) है, तो हम उसे छाया कैसे कह सकते हैं?

वह ऐसा बादशाह है कि सारी रात दान का दरवाजा खोलता है और अंधेरे में चलने वालों को रात भर रास्ता दिखाता है।

जो व्यक्ति दिन में एक बार उसका चेहरा देखता है सारी रात वह स्वप्न में सूर्य को देखता रहता है।

यदि तू चाहता है कि मेरे समान हिदायत का मार्ग पहचाने तो बादशाह को बिना पहचाने हुए तू कैसे पहचान सकता है?

प्राचीन प्रथा के अनुसार सिज्दा करने से तुझे कोई लाभ नहीं है, अकबर को पहचान ताकि तू खुदा को पहचान सके।

हे बादशाह! रात को मुझे आशा का दीपक दे और मेरे दीपक को अमर प्रकाश दे।

जिस प्रकाश से तेरे हृदय के नेत्र प्रकाशित हुए हैं उस सूर्य के प्रकाश का एक कण मुझे दे।

अदृश्य संसार से कभी कोई मित्र नहीं आया है और अनस्तित्व के काफिले से कभी कोई शब्द नहीं आया है।

आकाश एक ऐसा घंटा है जिससे सात धातुयें आती हैं और इन हथौड़ों के होते हुए भी कभी आवाज नहीं आई है।

वे सभ्यता की सभा में शान्त हैं और रहस्य के वार्तालाप में जनसाधारण के दृष्टि से आड़ में है।

जब तू प्रेम की गली में पहुँचे तो धूल मत उड़ा क्योंकि यहाँ पर सभी सुर्मा बेचने वाले हैं।

ईश्वरोन्मत्त जब प्रसन्न होते हैं तब बिना प्याले और घड़े के स्वच्छ मदिरा-पान करते हैं।

उनसे विद्या और विज्ञान की सजावट मत चाहो, क्योंकि ये वह समूह है जिन्होंने किताब को आग में फेंक दिया है।

हे फैजी कुछ कदम अपने से आगे बढ़कर रख, अपने से दरवाजे तक जा, और अपना सामान दरवाजे पर रख।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अपने ऊपर दोनों आँखों का दरवाजा बन्द कर ले और तब उस पर पलकों के दो सौ ताले रख।

हे फैजी, वृद्धावस्था आ गई है। देख अपने पैर कहाँ रखता है। यदि अपने पैर पलकों से दूर रखता है तो सावधानी से रख।

शीशे की ऐनक से कुछ लाभ नहीं है, हृदय को थोड़ा सा काटकर आँखों पर रख।

साँस वाणी के बालछड़ की हवा है और इस हवा ने वाणी के राजा के लिए सिंहासन फैलाया है।

मैं सुलेमान सखुन के तख्त पर हूँ; चिड़ियों की भाषा मुझसे सुनो।

नोट :—सुलेमान चिड़ियों की भाषा समझते थे।

प्रेमी वह है जिसके उजाड़ हृदय से शोक नहीं जाता और जब तक शरीर में प्राण रहता है तब तक ज्वर की ताप नहीं जाती।

प्रेमी की विशेषता पारे के समान होती है जब तक वह मर नहीं जाता तब तक उसकी बेचैनी नहीं जाती।

हे फैजी, अपने हृदय के कान और चेतना के नेत्र खोल और इन आँखों और कानों को संसार के कामों से दूर रख।

समय का आश्चर्यजनक परिवर्तन देख और अपने होंठ बन्द कर ले। समय के किस्सों को सुन और आँख बन्द कर ले।

यदि शत्रु की सेना मुझ पर आक्रमण करे तो मुझे क्या हानि पहुँच सकती है? एक मुट्ठी धूल का थपेड़ा दरिया पर मारने से क्या हानि हो सकती है?

मैं मौत के हाथ में नंगी तलवार की भाँति हूँ; जो मेरे ऊपर आक्रमण करता है वह मर जाता है।

आज कल मैं तलछट और साक शराब हूँ, मैं नरक, स्वर्ग और एराफ (पापमोचन-स्थान, तपोभूमि) हूँ।

मुझसे बढ़कर आश्चर्यजनक कोई वस्तु नहीं है, क्योंकि मैं समुद्र हूँ, मोती हूँ और सर्राफ हूँ।

मेरी और तुम्हारी गणना करने से पहले ही हमसे अधिकार का हाथ ले लिया गया।

निश्चित होकर बैठ क्योंकि दोनों संसार के रचयिता ने मुझसे और तुझसे पहले मेरे और तेरे कामों को बनाया है।

२. ख्वाजा हुसेन सेनाई मशपदी—यह पहले शहर का काजी था, तत्पश्चात् काव्य-क्षेत्र में आया और संसार में प्रसिद्ध हुआ। यह प्राकृतितः सज्जन तथा सरल था।

१. मेरी वाणी सच्चे मनुष्यों की ऊषा है और मेरी जिह्वा वाणी की ऊषा की तलवार है।

२. मेरी वाणी से स्पष्ट है कि मेरे बयान की मरियम की दाई रूहे कुद्स (पवित्रात्मा) है।

३. यह पर्याप्त है कि मेरी लेखिनी ने मेरे अर्थ को सुन्दर बना दिया है; मेरी लेखनी का विन्दु (नुकता) मेरा संसार है।

४. संक्षेप यह है कि इस अल्पकालीन संसार में वाणी का अस्तित्व है और मेरी वाणी उसी से है।

५. कयामत के दिन कोई मेरा दामन नहीं पकड़ेगा सिवाय इच्छाओं के जो मेरे द्वारा बध की हुई में से हैं।

रात को जब तुम सभा को सुशोभित करते होंगे तब सूर्य की अन्तिम किरण तुम्हारे दरवाजे की दीवार पर तुम्हें देखने के लिए रहती है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

१. हुस्न और नाज के ढंग पर अनेक अच्छी चीजें होती हैं जैसे सताने के ढंग पर नाज करना और अत्याचार के ढंग पर नखरा करना।

२. यदि उस पराये प्रियतम के सामने दर्पण दिखाऊँ तो उसमें उसकी पहचानी हुई सूरत उसको भी न दिखाई पड़ेगी।

३. और ४. नं० की शेर का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

१. वह दर्द जो प्रेमियों को प्रियतम के वार्तालाप का स्मरण कराता है उनके लिये मधुर औषधि के समान है। २. मैंने दिल के शिकार को मौत पर रख दिया है परन्तु शिकारी ने मेरी दुर्बलता के कारण मेरे भागने के लिये शरण दी है। ३. यदि मित्र मित्र के साथ क़यामत तक सोयें तो प्रातःकाल की शीतलवायु उनको वाण की सी पीड़ा देगी।

४. तेरी कलम जब द्वेष के साथ लिखती है तो घात के लिये सैकड़ों झगड़े लिखती है। ५. तू गाली देता है और उस होंठ पर पवित्र आत्मा प्रशंसा लिखती है। ६. तेरे चेहरे पर पहली दृष्टि को हृदय वापस देखने के लिये देखता है अर्थात् हृदय चाहता है कि तुझको बराबर देखता रहूँ। ७. तेरे जमाने में दुखी लोगों को भी आनन्द मिलता है। ८. हे सावधान लोगों, यह गरीबाँ फाड़ने का समय है परन्तु मेरे हाथ को गरीबाँ की तरफ कौन ले जायगा? ९. इस शेर का अर्थ अस्पष्ट है। १०. इश्क की शर्त है कि हम प्रियतम के उन शब्दों को जो उसके हृदय से उसकी जिह्वा पर आते हैं अपने हृदय को फिर से सौंपें। ११. जब मेरा पैर मुझे काबा में ले जाता है तब तू मुझे बुतखाना में ढूढ़, क्योंकि मेरा पैर पीछे की तरफ चलता है और मेरा लक्ष्य गलत है। १२. प्रत्येक कण जो सेनाई की धूल से हवा में जाता है इश्क के कारण वह आसमान के बीच में नहीं समाता है। १३. आकाश के सूर्य की भाँति तू सदा जीवित रहता है; प्रत्येक आँख तुमको वैसे ही जानती है जैसे नींद को।

३. हुजनी इश्कहानी—यह दार्शनिक प्रवृत्ति का जिज्ञासु व्यक्ति था। प्राचीन काव्य तथा इतिहास से इसका पूर्ण परिचय था। वह स्वभाव से स्वतंत्रता प्रेमी तथा सतस्वभाव था। मैत्री का लक्षण उसके मुखमन्डल पर अंकित था।

१. मैंने अपने हृदय को अच्छी तरह टटोला और देखा कि उसमें एक ऐसा स्थान है जहाँ, खुदा बताये, कि यदि शोक नहीं है तो इच्छा है। २. जुलेखा बाटिका में थी और शोक से कहती थी कि वह उसे उस कारागार का स्मरण दिलाती थी जिसमें समाज का आभूषण (युसूफ़) रहता था। ३. मैं तुझसे निराश हूँ परन्तु प्रेम को लेकर क्या करूं, क्योंकि मेरे और उसके (प्रेम के) बीच में अपूर्ण इच्छा वर्तमान है। ४. जिब्रील के पर प्रेममार्ग में टूटे हुए है।" यह सम्वादवाहक वायु के समान नहीं पहुँचता। ५. चाहे अयाज हो (अयाज महमूद गजनवी का अत्यन्त स्वामिभक्त दास था) और चाहे महमूद हो, यहाँ, (प्रेम में) वह दास है, क्योंकि प्रेम दास और स्वतन्त्र व्यक्ति दोनों को एक धागे में बांध देता है। ६. कल रात को मेरे हृदय के ताप से मेरी नम आंखे जल रही थी और मेरी आंखों का चिराग तेरी राह म प्रातःकाल तक जलता रहा। ७. तेरे सौन्दर्य की शक्ति का ज्ञान उस समय मुझे हुआ जब इसकी लपट कलेजे पर पड़ी और मैं अनभिज्ञ जलता था। ८. हे हुजनी; मुझे तेरी मूर्खता पर हंसी आती है कि तू प्रेमी हो गया है और प्रियतम से सच्चाई की आशा रखता है। ९. नाज नखरा मत कर; क्योंकि मैं वह दुर्बल और प्यासी घास हूँ जिसे में तुम्हारे सौन्दर्य रूपी प्राण को जलाने वाले सूर्य को देखने की शक्ति नहीं है। १०. शोक! यदि अपने को आग में डालूं तो वह हठीला प्रियतम केवल यह कहता है कि 'हुजनी धुंआ कैसा होता है?" ११. मैंने सुना कि हुजनी उसकी कैद से छुटकारा पाने की इच्छा रखता है। हे अत्याचारी! तू जा! तू गिरफ्तारी का मूल्य क्या जाने? १२. हर रोज जैसी बातों से हुजनी आज भी तेरी झूठी बातों पर विश्वास करके चला गया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

४. कासिमे काही उर्फ मियाने काली—वह साधारण विज्ञान से कुछ परिचित था और शान्त तथा संतुष्ट रहता था। उच्च पद वाले लोगो से वह बहुत मिलता था। इस उदार प्रकृति के कारण कुछ नीच वृत्तिवाले लोग उसके यहां एकत्र होते थे और इस कारण अनुभिज्ञ लोग जो परिस्थिति से अपरिचित थे प्रायः उसको बुरा-भला कहा करते थे। कुछ तो अपने स्वतंत्रता प्रेम के कारण और कुछ सम्राट् की कृपा के कारण वह अपने को महाराज के शिष्यों में समझता था और अनेक घटनाओं की भविष्य वाणी करता था।

१. वह कमहिम्मत है सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिये अपने लालच का हाथ ईश्वर के सामने फैलाता है २. यदि प्रेमी अपने वियोग के समय की गणना करें तो इनकी आयु खिज्र की आयु से भी बड़ी होगी। ३. जहाँ कहीं तू जायागा मैं छाया की तरह तेरा अनुसरण करूंगा; कदाचित शनैः शनैः तू मेरे ऊपर कृपा करने लगे। ४. जब से मैंने देखा कि हाथी मेरे साथी से प्रेम करते हैं तब से मैंने अपनी जान के नकद को हाथी के रास्ते में व्यय कर दिया। ५. मैं जहां कहीं पहुँचता हूँ हाथियों की तरह मैं अपने सिर पर धूल डालता हूँ यदि मैं अपने हाथीवान को अपने सिर पर नहीं देखता। ६. हाथी रखने वाला तो बादशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर है जो अपने कवियों को सोने के हाथी दे देता है।

रूबाई

७. हे मित्र ! तेरी जिह्वा दिव्य ज्ञान की बातें करती है और तेरा हृदय हर समय सत्य के प्रकाश से पर्दा खोलता है। ८. तू कभी ऐसा विचार नहीं करता जिसके लिये तुम्हें लज्जित होना पड़े, और तू कभी ऐसी बात नहीं कहता जिसके लिये तुम्हें ईश्वर से क्षमा मांगनी पड़े।

५. गजाली मशहदी – बुद्धिगाम्भीर्य तथा भाषा माधुर्य में यह अद्वितीय थे और सूफियों के चित्ताकर्षक विचारों से भली भाँति परिचित थे।

१. शोर हुआ, नींद टूटी और देखा तो ज्ञात हुआ कि भयानक रात अभी शेष है—इसलिये फिर सो गया। २. सौन्दर्य से ख्याति होती है और प्रेम से कुख्याति होती है। प्रियतम का अपराध और बेचारे प्रेमी का गुनाह क्या है ? जब स्वीकृति तथा अस्वीकृति दोनों परोक्ष (ईश्वर के हाथ) में है तब सावधान ! किसी पर कभी दोष न लगाओ' क्योकि यह स्वयं एक दोष है।

वला

१. हे गजाली ! मैं उस मित्र से दूर भागता हूँ जो यदि मैं बुरा करूँ तो वह उसकी प्रशंसा करे। २. मैं उस मित्र को पसन्द करता हूँ जो दर्पण की भाँति मेरे अवगुणों को मेरे सामने कह दे।

रुबाई

३. प्रेम में पद, ख्याति, विद्या, बड़प्पन और वंश की आवश्यकता नहीं होती। इस मामले में किसे आश्चर्य हो सकता है ? माशूक स्वाभिमानी है। उसके लिए शिष्टाचार की आवश्यकता है। ४. सुल्तान कहता है कि 'नकद मेरा खजाना है।' सूफी कहता है कि 'मेरी गुदड़ी मेरा पशमीना है।' आशिक कहता है कि 'शोक मेरा पुराना मित्र है।' मैं और मेरा हृदय जानते हैं जो कुछ मेरे सीने (वक्षस्थल) में है ५. यदि काबा में तेरा दिल दूसरों की तरफ है तो तेरी उपासना पापपूर्ण है और काबा तेरे लिये मन्दिर है। यदि तेरे हृदय में ईश्वर हैं और यदि तू मदिरालय में बैठ कर मदिरापान करता है तो परलोक में तेरा कल्याण होगा।

६. उर्फी शीराजी—उसके वार्तालाप के ललाट से सभ्यता चमकती है और उसकी कविता से गाम्भीर्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

प्रकट होता है। अदूरदर्शिता से वह पुराने लोगों के विषय में व्यंग करता था। उसकी योग्यता का फूल बिना खिले ही मुरझा गया।

१. जो दिल बुलबुल की बोली से व्याकुल होता है उसके दामन से चिपक जा, क्योंकि उसको कुछ ज्ञान है। २. सरो वृक्ष की ऊंचाई पर यदि कोई कलंक करता है तो मैं ईर्ष्या से पिघल जाता हूं। क्योंकि ऊंचाई ऐसी वांछनीय है कि इसकी इसके कलंक से भी ईर्ष्या होती है। ३. जो व्यक्ति प्रातःकालीन शीतल वायु से परिचित है वह जानता है कि पतझड़ के होते हुये भी चमेली की सुगन्ध शेष है। ४. मेरा घायल हृदय चंगा करने वाले मरहम को नहीं सह सकता। मेरी पगड़ी के कोने में फूल का छाया सहने की शक्ति नहीं है। ५. मेरे लिए आवश्यक है कि मैं समाज में धीमे स्वर में बोलूं। क्योंकि समाज में समझदार लोग मूर्ख हैं और मैं केवल अरबी बोलता हूँ। ६. अज्ञानता से बाहर मत जा जब तक तू अफलातून न हो क्योंकि मध्यवर्ती स्थिति मृगतृष्णा है। ७. यह मत कहो कि प्रेम के राग अलापने वाले शान्त हैं क्योंकि राग अत्यन्त कोमल है और श्रोता लोग कानों में रुई डाले हैं। ८. मैंने बहुत ही हाथ पैर मारे परन्तु मैं व्याकुल ही रहा। यदि मैं शान्त हूँ तो समुद्र का केन्द्र तट पर है। ९. आशा है कि उर्फी के विचित्र व्यवहार को उसकी कविता की अच्छाइयों के लिए लोग क्षमा करेंगे। १०. ऐसा कौन व्यक्ति जन्म ग्रहण करता है जो प्रेम का शोक सहन करने की क्षमता रखता हो? प्रेम के कारण प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे का रंग उड़ जाता है और वह पीला पड़ जाता है। ११. हे उर्फी! अच्छे और बुरों के साथ इस प्रकार रह कि तेरे मरने के बाद मुसलमान तुझे जमजम के पानी से नहलावें और हिन्दू तुझे आग से जलावें। १२. यदि तू चाहता है कि तू अपनी बुराइयों को जान जाय तो क्षण भर के लिए कपटी की तरह अपनी घात में बैठ मानों तू अपने को जानता ही नहीं। ३. जिस बन्द दरवाजे को कोई नहीं खोलता उसके सामने खड़े होकर उर्फी ने उचित व्यवहार किया है। उसने दूसरा दरवाजा नहीं खटखटाया। नव बसन्त की प्रतीक्षा मेरी मानसिक संकीर्णता की द्योतक है, क्योंकि सैकड़ो सुख कूड़ा-करकट की ढेर में है जो बाटिका में नहीं हैं। १५. मेरा हृदय जुलेखा के कपोलों के रंग की तरह एकान्त में उड़ गया और यूसुफ के कलंक की तरह मेरे शोक के विषय में लोग बाजार में वार्तालाप करने लगे।

रुबाई

१. जिस दिन सब लोग अपने कार्यों का बिवरण देंगे और शेख और ब्राह्मण दोनों के सद्गुणों की जांच की जायगी तब जो कुछ तुमने काटा है उससे एक जौ भी नहीं लिया जायगा और जो कुछ तुमने नहीं बोया है उससे खलियान मांगा जायगा। २. तूने अच्छी और बुरी घटनाओं से सुखदुख का अनुभव किया है और फलस्वरूप कभी कभी तू धन्यवाद देता है और कभी कभी निन्दा करता है। स्वतंत्र मत हो जिससे तू बेहूदा बातों की कोशिश न करे। कभी तू हवा के रास्ते की घास बन जा और कभी दूसरों के कन्धे का बोझ बनजा। ३. हे उर्फी तू अपने हृदय को क्यों इतना प्रसन्न रखता है? क्या ऐसा उन थोड़ी सी कविताओं के लिये है जो तुमने पीछे छोड़ी है? शोक जो एक बार तुम्हारा था उसको तुम पीछे छोड़े जाते हो तुम्हें उसे अपने साथ ले जाना चाहिए था; परन्तु क्या तुम उसे अपने साथ ले जा रहे हो?

७. मैली हेरवी—इसका नाम मिर्जा कुली था। यह व्यक्ति तुर्क वंश था और प्रसन्नचित्त लोगों के समूह में निवास करता था।

१. जब से तेरे प्रेम में मैं प्रसिद्ध हो गया हूँ मैं जिनको देखता हूँ उन सबसे दूर भागता हूँ, क्योंकि मुझे डर था कि यदि मैं दूसरों के पास जाऊंगा तो तुम उसके विचारों में आ जाओगे। २. मैं मरता हूँ और जीवित लोगों पर मुझे ईर्षा होती है क्योंकि तू उन अत्याचारों से अभ्यस्त है जो तूने मेरे साथ किये हैं। ३. तेरे दर्शन से मेरे हृदय को वह स्वाद मिला कि ईश्वर क्षमा करे, यदि भाग्य बदला लेने का विचार करे। ४. तू न तो मेरा

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मित्र है और न तू मेरे लिये अपरिचित है। मैं नहीं जानता कि ऐसे सम्बन्ध का कोई क्या नाम रखे। ५. तू जानता है कि तेरे प्रेमियों का तेरे लिए जो प्रेम है वह उनके जीवन के साथ नहीं समाप्त होता क्योंकि तू उन लोगों की कब्रों के निकठ से होकर जाता है जिनको तुम्हारे प्रेम ने कत्ल किया है और तब भी प्रेम का व्यवहार करता है। ६. जब तू मुझे दूर जाने की आज्ञा देता है तो एक दृष्टि मेरे ऊपर डाल क्योंकि सावधानी के कारण लोग पक्षी के पैर में डोरा बांध देते हैं चाहे वह कितना ही पालतू क्यों न हो और हाथ में से भोजन करता हो। ७. मेरा अन्तिम समय है। हे शत्रु, मुझे उसे एक क्षण के लिए रखने दे। जिससे मैं हजारों ईर्षाओं के साथ उसका मैं तुम्हारे सुपरूद कर दूँ।

८ मैंने प्रण किया कि मैं धैर्यवान रहूँगा और मैं उस तक नहीं गया केवल इस उम्मीद पर कि मैं अपने शरीर को एकान्त के सुपुर्द करता हूँ ९. बियोग का शोक मेरा कत्ल करता है और परन्तु प्रत्येक क्षण मुझसे धीमे से कहता है, "यह उसका दण्ड है जो अपने धैर्य पर विश्वास करता है।" १०. तेरे समय के लोगों को तुझसे कुछ माँगने की आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि धन के आधिक्य के कारण प्रत्येक फकीर कारूँ हो गया है। ११. परन्तु तू माँगने वालों की प्रार्थना को स्वीकार करने में आनंद प्राप्त करता है क्योंकि वे तुझसे चापलूसी के ढंग पर निवेदन करते हैं।

८. जाफर बेग कज़वीनी—यह गम्भीर विचारों वाला व्यक्ति है। उसने बहुत कुछ सीखा है। वह अतीत कालीन घटनाओं का विशद वर्णन करता है। बितक्ची के रूप में वह अभिज्ञ है। मनुष्यों का प्रकृति पहचान कर उनसे हँसी करता है। यह चुटकुला कह कर हंगामा बरपा करता है। सौभाग्य से आसफ खाँ की उपाधि पाई और सम्राट् का शिष्यत्व प्राप्त किया।

१. मैं प्रातःकालीन वायु से ईर्षा करता हूँ परन्तु मैं अपना हृदय इससे प्रसन्न करता हूँ कि यह गुलाब का बाग है और कोई व्यक्ति वायु को रोक नहीं कर सकता। २. जब नगर मेरे हृदय के शोकों को स्थान न दे सका तो लोगों ने मेरे हृदय के लिये जंगल पैदा किया। ३. मैं आज की रात दूसरी मुलाकात के लिये तैयार हूँ क्योंकि मैंने अपने टूटे हुए हृदय को फिर से जोड़ दिया है। ४. यह मेरे प्रेम का दोष है कि वह मेरा शत्रु है। उस प्रेम का क्या महत्व है जो अपना प्रभाव नहीं डालता। ५. मैं अपने हृदय की बेगाना दशा पर उसकी सुन्दरता से जानकारी के लिये प्रशंसा करता हूँ जिसके रास्ते ऐसे अद्भुत हैं। ६. वह आया और उसने मुझे घबड़ा दिया। परन्तु वह इतनी देर भी न बैठा कि मैं अपने दिल को धैर्य से परिचित करूँ। ७. चूँकि मैं पूर्णरूप से गुनेहगार हूँ। मुझे बदले से मत डरा क्योंकि तेरे बदला लेने का आनंद गुनाह करने का मुझे साहस पैदा करता है। ८. हर्ष और बदले लाने का तूने बीरता के साथ अपना चेहरा मुझे दिखाया है। एक क्षण धैर्य रखो ताकि मैं अपने प्रेम के दुखों को सूचित कर दूँ। ९. हे जाफर, आज तेरे घर ऐसा दुखी हृदय लेकर आया कि उसकी असामान्य दशा को देख कर पत्थर का हृदय जल गया। १०. जो व्यक्ति तेरे साथ एक रात बैठा वह मेरे दुर्दिन का साथी है। ११. जाफर ने मित्र की गली का साँचा जान लिया। क्योंकि वह इतना कठिन है कि पैरों से खड़ा नहीं हो सकता। १२. प्रातः कालीन वायु में किसकी सुगंध आ रही। यद्यपि याकूब के आँखें नहीं हैं तिस पर भी वह काफिले के पीछे देखता रहता है। [यूसुफ के खो जाने पर जेकब (याकूब) रोते-रोते अंधे हो गए थे। एक दिन उनको यूसुफ के कोट की सुगंध मिली जिसको एक संवादवाहक मिस्र में ला रहा था। जब कोट याकूब की आँखों से लगाया गया तब वे खुल गईं।]

वला

१३. बाग में नया फूल खिला है, इसलिए आज की रात बुलबुल प्रातः काल तक नहीं सोई।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

९. ख्वाजा हुसेन मरवी—इसमें अनेक गुण थे और खूब धन लेकर लोगों की प्रशंसा करता था। यह हुमायूं के दरबार में रहता था और इस शासन-काल में भी उस पर बहुत विश्वास था।

रुबाई

१. मैं वह हूँ कि कविता का देश मेरे अधिकार में है। कविता का सर्राफ मेरी मोतियों की लड़ी का जौहरी है। २. सृष्टि की भूमिका मेरे ग्रन्थ का एक पन्ना है और दोनों लोकों के भेद मेरी कलम की नोक पर है।

१०. हयाती गीलानी— विचार-सागर की एक धारा उसके घर से हो कर बहती है। सत्य तथा न्याय उसके ललाट पर दृश्यमान हैं। उसमें सुशीलता तथा सत्यता समान रूप से हैं। वह कवियों के दुर्गुणों से मुक्त है।

१. जब तू वार्तालाप कर तब अपने को देख और उस वार्तालाप से लज्जित हो जिससे हृदय न खिले। २. चिड़िया के तेज डैनों की क्या जरूरत है? किन्तु चूँकि भाग्य ऐसा है इसलिए चींटी के पैर उधार ले और भाग। ३. प्रेम का बीमार मनुष्य अपने शोक में ऐसा फँसा हुआ है कि इससे छुटकारा पाने की इच्छा भी उसको हानि पहुंचाती है। ४. जो कुछ तुम देखते हो वह हर प्रकार से रास्ते का लुटेरा है। मैं किसी ऐसे मनुष्य को नहीं पहचानता जो गिरफ्तार न हुआ हो। ५. यह प्रेम का मार्ग है; यह खुला बजार नहीं है अपने होठों को बन्द रखो; यहाँ पर वार्तालाप की आवश्यकता नहीं है। ६. मैं काफिरों के बीच में भी रहा हूँ परन्तु मैंने कोई ऐसी कमर नहीं देखी जो इस पवित्र जनेऊ के योग्य हो। ७. लोभी व्यक्ति लोभ के कारण एक दूसरे के शत्रु हैं; केवल मित्रता में कोई व्यक्ति प्रतिद्वन्द्वी नहीं है। प्रत्येक काँटा जो लोग तेरे मार्ग में बोते हैं उसको अपने चेहरे की मुस्कान के पानी से ताजा कर।

९. चुप रह और अपने हृदय की घाव को विषाक्त बाणों से ताजा कर। १०. मेरे प्रेम के कारण हर काम के करने में देर होती है चाहे यह घर में सुगन्ध हो अथवा बाजार में रंग हो। '१. तुम जानते हो कि लोग मुझे 'लज्जा से पागल और नीचता से व्याकुल' कहकर पुकारते हैं। १२. जितना ही मैंने सीया उतना ही वह फट गया। मेरा हृदय सीने में ही समाप्त हो गया। १३. मैं मरता हूँ और तेरे अत्याचारों को सहता हूँ। शायद मैं अपनी वफादारी को इसी प्रकार पूरा करता हूँ। १४. तुम अपनी मुलाकात के मार्ग को मुझ से बन्द नहीं कर सकते जब तक कि तुम प्रातः कालीन वायु को बक्स में बन्द न करोगे। १५. इस घास और इस जंगल से पागलपन की गंध आती है। आजकल पागलपन और मस्ती शुभ समझी जाती है।

रुबाई

१. चाह के दर्द के साथ शोक भी बढ़ना चाहिए; उससे मिलने की इच्छा के साथ आँखों से खून के आँसू बहना चाहिए। २. प्रेम की पूर्णता प्राप्त करने का साधन न तो वह है और न यह है। उसके लिए या तो बुद्धि की पूर्णता या पागलपन की पूर्णता होनी चाहिए। ३. न तो मेरा सिर सुरैया के बराबर ऊँचा है और न पैर के बराबर नीचा है। मैं न तो पुराने शोक से ग्रस्त हूँ और न नए विचार की जकड़बन्द में हूँ। ४. यदि मैं रोने वाली बुलबुल नहीं हूँ तो यह भी एक गुण है। मैं पतंग हूँ और लपट पर आसक्त हूँ। ५. मैं अपनी अंधेरी रातों का दर्द हूँ; मैं अपने भाग्य के दिन का संकट हूँ। ६. सम्भव है कि मैं एक पग स्वयं वापस आऊं, देर से मैं अपनी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

११. शिकेबी इस्फहानी—यह सुरुचिपूर्ण कवि हैं और बहुत अच्छा लिखते हैं। यह इतिहास तथा प्रचलित विज्ञानों से अभिज्ञ हैं। अपने स्वभाव की पवित्रता के कारण यह दार्शनिक स्वतंत्रता के प्रेमी हैं।

१. यह मैंने वियोग की रातें बिताई और जीवित हूँ। मुझे अपने कठोर प्राण का विचार न था अर्थात् मैं नहीं जानता था कि मैं ऐसा कठोर प्राण हूँ। २. मेरे हाथ में न तो शोक है न हर्ष है। भाव क्या पूछता है?

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मैं जानता हूँ कि न तो तू लेगा और न मैं बेचूंगा ३. प्रतिद्वन्द्वी की ईर्ष्या के कारण तेरी सभा से दूर रहने का मैंने संकल्प किया। अभाग्य के धोखे का मैंने ईर्ष्या नाम रखा और चला गया। ४. ऐ खुदा। मेरे सौदे के लिए परलोक से बाजार दे। मैं अपने दिल को दर्शन के लिए बेंच रहा हूँ, खरीददार दे। ५. तू मेरे स्नेह में लीन है और मैं अपशकुनों को दूर करने के लिए आग के पास बैठा हूँ और काले दाने को जलाता हूँ। ६. दिल को मैंने जानसे अलग कर दिया परन्तु दिल का बोझ जान से न उठ सका। सिर शरीर से अलग हो गया परन्तु मेरे कन्धे गरेवाँ से न उठ सके।

रुबाइयाँ

१. आज मेरी जिन्दगी का प्याला लबालब भरा हुआ है और मुझे कतल करने के लिए गफलत की तलवार तेज है। २. तुम मेरे हृदय में नहीं रहते हो। तुमने घृणा पर कमर बाँध रखी है। वह घर नष्ट हो जाय जो दुश्मन पैदा करता है। ३. मेरे पक्षी (हृदय) के विलाप से पिंजड़ा बाग बना हुआ है। जिस हृदय में तू है उसकी साँस बाग बन जाती है। ४. तेरे सौन्दर्य के प्रकाश से लोभ भी प्रेम हो जाता है। आग जब प्रज्वलित होती है तब घास भी बाग बन जाता है। ५. हम भाग्यशाली तब हैं जब तेरे द्वारा तेरी तरफ आवें। अंधों की तरह हम तेरे द्वारा तेरी खोज करें। ६. तू अपनी निष्ठुरताओं को बढ़ाओ जब कि मेरे प्राणों की कठोरता मुझसे बदला न ले ले और तेरी आदत तुझसे बदला न ले ले। ७. दुनिया एक खेल है। उसका जीतना घाटा है। चतुर खिलाड़ी वह है जो थोड़े लाभ से सन्तोष कर लेता है। ८. दुनिया चौसर के खेल के दो पाँसों के समान है। पाँसों का उठाना फेंकने के लिए है।

१२—अनीसी शामलू—इनका वास्तविक नाम योल कुली है। यह शिष्ट स्वभाव तथा पवित्र प्रकृति के व्यक्ति हैं। उनसे वीरता और सच्चाई टपकती है।

१. तेरी तलाश में हम प्रेम के मार्ग पर चलने वालों के लिए यह शर्त है कि हमारे पैर हमारे वस्त्र के किनारे से परिचित न हों, अर्थात् हम वस्त्र को ऊपर कमर में बांधकर बराबर चलते रहें, कभी विश्राम न करें। २. यह रास्ता बिजली के प्रकाश में तय होता है। परन्तु हम अंधे प्रेमी तुम्हारे दीपक और शमा की प्रतीक्षा करते हैं। ३. यदि मुझे मृत्यु उपरान्त विश्राम न मिले तो क्या आश्चर्य है? कारण यह है कि दिन के परिश्रम से रात की नीद विश्राम रहित हो जाती है। ४. मेरी मृत्यु के साथ तुम्हारा प्रेम कैसे समाप्त हो सकता है? क्योंकि यह वह मदिरा नहीं है जो प्याला से टपके यदि तू पैमाना को तोड़े। ५. यदि प्रेमी में शक्ति उत्पन्न भी हो जाय तब भी वह मृत्यु के हाथों से अपने प्राण नहीं छीन सकता। खलियान का मालिक चींटी से कब दाना छीनता है? ६. समय की बाटिका में मेरे जैसा कोई गायक नहीं है, तथापि मुझे पिंजड़े के कोने से गाना पड़ता है। ७. भाग्य को सुधारने के लिए मैंने अपना जीवन गुण के कामों में लगाया परन्तु इस निपुणता के होते हुए भी मैं बोरिया (चटाई) से रेशम नहीं बना सका। ८. प्रेम तथा चुम्बक एक ही प्रकार के हैं, क्योंकि प्रेम पहले बाण को आकर्षित करता है जिससे हृदय को चोट पहुँचे जब वह उससे छुटकारा पाना चाहता है। ९. मेरी परिस्थिति से ईश्वर सबको सुरक्षित रक्खे? क्योंकि मेरी परिस्थिति फूल को खिलने और पक्षी को गाने से रोकती है। १०. प्रेम ने मुझे बेंच दिया किन्तु मैंने यह नहीं जाना कि मेरा क्रेता कौन है और मेरा मूल्य क्या है।

११. अनीसी अपने दिल का खून पीते हैं, तथापि उनके दिल का बर्तन खाली नहीं हुआ। ऐसा मालूम होता है कि प्रेम के शोक के भोज में लाल शराब पैमाने से निकलती है।

रुबाई

१. मैं प्रेम में मस्त हूँ मुझे शराब मत दो। मुझे आग में डाल दो; पानी मत दो। २. चाहे मैं शिकायत करूं या बुरा भला कहूँ, मैं उसी को सम्बोधित करता हूँ, जवाब मत दो। ३. मैं गया कि विनाश के मार्ग पर कुछ

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कदम चलूं और अपने जीवन के कुछ जालों को नष्ट कर दूँ। ४. मैं अपने साथियों के बिना कुछ दिन व्यतीत करूंगा और कुछ रातें सुबह तक बिना बत्ती के बिताऊँगा। ५. हे हृदय, सावधान! हे हृदय, सावधान! हृदय ऐसा ही होता है, माँगने का हाथ आस्तीन में होता है अर्थात् हृदय को कुछ माँगना नहीं चाहिये बल्कि धैर्यपूर्वक प्रेम करना चाहिये। ६. एक बार भी तो मनोवांछित वस्तु मिल जाती! क्योंकि शिकारी सदा घात में रहता है।

१३. नजीरी निशापुरी—कविता करने में यह निपुण हैं। विचाररूपी बाटिका का द्वार उसके लिये खुला हुआ है। बाह्य दृष्टि से वह अच्छे मनुष्य हैं, साथ ही आन्तरिक विचारों का भी सुन्दर चित्रण करते हैं।

१. प्रत्येक स्थान चाहे वह अच्छा हो या बुरा मेरे लिए अच्छा है, मैं माशूक के लिए या हर्ष करता हूँ या शोक मनाता हूँ। २. यदि तू मेरे दिल के सौदे को नष्ट करता है तो तू केवल एक ही बार हानि पहुंचाता है किन्तु मेरे दीन और दुनिया दोनों की पूँजी नष्ट हो रही है। ३. यदि तू मेरे पिंजड़े को गुलाब के पेड़ के नीचे नहीं रखता है तो ऐसे स्थान में रख जिससे मेरा विलाप बाटिका के कानों तक पहुंच सके। ४. यदि वह (माशूक) कृपापूर्वक दया करता है यह प्रेम नहीं है। मित्रता और नम्रता में पार्थक्य किया जा सकता है। ५. मैंने अपनी उम्र तेरी सेवा में बिता दी, तो मेरी क्या कदर हुई? यदि मैंने इतने जनेऊ बाँधे होते तो ब्राह्मण हो गया होता। ६. हे नजीरी! तुम्हारे खून की क्या कदर है? शान्त रहो। यह पर्याप्त है कि तेरे कातिल की तरफ से तेरे ऊपर कोई दावा नहीं है। ७. मैं बहुमूल्य हूँ और मेरे क्रेता कम हैं। मैं अपने लिए स्वयं नुकसान हूँ और तिस पर भी बाजार का आभूषण हूँ। ८. मेरी फरियाद का प्रभाव यह है कि वह माशूक के हृदय से दया को दूर कर देती है और मेरे प्रेम के स्मरण दिलाने का परिणाम यह है कि वह इसे भूल जाता है। ९. मैं चौखट का कुत्ता हूँ परन्तु रात भर अपना कालर चबाता हूँ, क्योंकि मैं उसका पीछा करने की इच्छा करता हूँ परन्तु उसकी चौकीदारी की इच्छा नहीं रखता। १०. मेरा हृदय ऐसा है कि काबा उसकी पवित्रता की कसम खाता है, किन्तु अपनी लापरवाही से मैंने उसकी फिरंगी गिरजा बना रखा है। ११. शौक के जंगल की गर्म हवा ऐसी मस्ती रखती है कि लँगड़ा आदमी भी इस मार्ग पर चलने का आनन्ददायक समझता है। १२. केवल प्रेम का जहाज सच्चे विश्राम का स्थान है। यदि तू उससे बाहर पैर रखे तो समुद्र है और घड़ियाल है। १३. कौन सी आवाज तेरे हृदय पर अधिक प्रभाव रखती? मुझसे कहो जिससे मैं उस आवाज में विलाप करूँ।

१४. दखेश बहराम—यह तुर्की नस्ल का है और बयात जन-जाति में उत्पन्न हुआ है। पैगम्बर खिज्र का उसे दर्शन हुआ है और प्रकाश प्राप्त किया। संसार का त्याग करके वह मिस्ती बन गया।

१. मैंने पवित्रता की बुनियाद तोड़ दी, देखिए आगे क्या होता है। २. मैं साधुओं की गली में अपनी जिन्दगी बेकार बिता दी। अब मैं शराबी हूँ, शराब खाने में रहता हूँ और मस्त हूँ। देखिए आगे क्या होता है। ३. लोग कभी तो मुझे पुजारियों में गिनते हैं और कभी दुराचारियों में, बे मुझे जो कुछ कहते हैं वह हूँ। अब आगे देखिये क्या होता है।

१५. सैरफी कश्मीरी—इसका नाम शेख याकूब है। यह काव्य-कला का अभिज्ञ है और अन्य भाँति-भाँति की विद्याओं तथा विज्ञानों से परिचित है। यह इब्ने अरब के उत्कृष्ट ग्रन्थों से भली भाँति परिचित है। इसने पर्याप्त देशाटन किया है और इसने अनेक फकीरों से भेंट की है। इसने शेख हुसेन ख्वारिजी से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की और उनसे अन्य लोगों के पथ-प्रदर्शन की अनुमति प्राप्त की है।

१. उसने मेरे हृदय से धैर्य को चुरा लिया और दीवाना दिल को भी चुरा लिया। मेरे चोर ने मेरे घर को सब सामान के साथ चुरा लिया।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

२. प्रेम के रोगी का शरीर की दुर्बलता के कारण विचित्र दशा हो गई है। दुर्बलता के कारण वह अपने माशूक की संगत का बोझ नहीं उठा सकता।

१६. सबूही चगताई—इसका काबुल में पालन-पोषण हुआ। यह एक बार अमीर खुसरो के शयनागार में सोया था। एक कान्तिमान् वयोवृद्ध व्यक्ति जिसके हाथ में छड़ी थी उसे जगाया और कविता करने की आज्ञा दी। चूँकि इसमें कविता लिखने की शक्ति नहीं थी, इसलिए इसको स्वप्न समझकर उठा और दूसरे स्थान पर सो गया। परन्तु उसी वीर ने फिर उसको पहले की तरह जगाया और फिर वही आज्ञा दी। पहला शेर जो उसने कहा यह था—

१. तेरे बिना मेरे आँसू धीरे-धीरे समुद्र बन गये। आ और तमाशा देख। मेरी आँखों की जहाज में बैठ और समुद्र की सैर कर। २. मेरे प्रियतम ने मेरी सच्चाई का अभिलेख देखा और मेरे शोकग्रस्त हृदय को भस्म कर दिया जिसके बाद कोई व्यक्ति उसके विषय को न पढ़ सके। ३. क्या आवश्यकता है कि मैं उससे अपनी दशा की व्याख्या करूँ? यदि मेरा हृदय जला हुआ है तो प्रभाव दिखलायेगा।

४. दुर्बलता ने मुझे पराभूत कर दिया है और मेरा हृदय विलाप करते-करते थक गया है। दूसरा कौन उसको मेरी दशा का समाचार देगा।

१७. मुशफिकी बोखारी

१. मैं उसकी गली में गया और वहाँ मेरे दिल के पैर में काँटा टूट गया। ईश्वर को धन्यवाद है कि उसके निकट बैठने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। २. हिन्दुस्तान शक्कर का मैदान है और इसके तोते शक्कर बेंजने वाले हैं। ३. उसकी मक्खियाँ देश के प्रिय व्यक्तियों की भाँति हैं जो चीरा और तकौचिया पहने हैं।

१८. सालिही—इसका नाम मुहम्मद मीरक है और यह अपने को निजामुल्मुल्क तूसी की सन्तान बतलाता है।

१. निष्ठुर लोग कहते हैं कि उसके दामन में अपना हाथ मार यदि मेरा हाथ होता अर्थात् यदि मुझे अवसर मिलता तो मैं अपने कालर को टुकड़े-टुकड़े फाड़ डालता। २. मेरी मृत्यु के यह सब कारण विद्यमान हैं और तिस पर भी मैं जीवित हूँ। हे वियोग? तेरी सहिष्णुता ने मुझे लज्जित कर दिया है। ३. मैंने अपने हृदय के शोक को व्यक्त किया, उसने कुछ ध्यान नहीं दिया। इस अपमान को देख। मैं रोया, वह हँसा। इस अविश्वास को देख। ४. मेरी मृत्यु उसके हाथ में है हे सालिही! यह स्पष्ट है कि मेरी रूबी बाज भी उसका पालतू पक्षी बनकर उसके हाथ पर बैठा है।

१९. मजहरी कश्मीरी—यह युवावस्था के आरम्भ से ही कविता लिखता है। यह ईराक में बहुत समय तक रहता था। सज्जनों के साथ रहने से वह बहुत शिष्ट हुआ।

१. मैं नहीं जानता कि सल्मा की सुन्दरता कैसी है क्योंकि उसको जितना अधिक देखा जाय उसको देखने की इच्छा उतनी ही अधिक हो जाती है। २. लैला की आँखों में प्रेम की कौन सी दृष्टि थी जिसके कारण मजनूँ ने अपने और परायों से आँखें बन्द कर ली। ३. मैं दर्पण पर निछावर हूँ क्योंकि वह मेरे माशूक की छाया को बाग में खड़े हुए दिखाता है यद्यपि वह अपने घर में है। [माशूक की आँखें बादाम की तरह है, ठुड्डी सेब की तरह है और उसके काले बाल सुम्बुल (बाल छड़) की तरह हैं। इस प्रकार उसका चेहरा बाग के समान है]। ४. मेरी सुन्दता के सौभाग्य ने तेरे कार्यों की वृद्धि कर दी है अन्यथा परामर्शदाता कार्यों का सफल सम्पादन नहीं जानता अर्थात् तुम इतने सफल न होते।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रुबाई

१. मैं दुम की भाँति अपने स्वार्थी हृदय का अनुसरण करता हूँ। यद्यपि मार्ग में कोई कष्ट नहीं है तथापि मेरे पाँवों में छाले पड़ गए हैं। २. मैंने सैकड़ों परदे फाड़ दिये किन्तु अपने से बाहर न आ सका। मैंने सैकड़ों मन्जिलें तय की परन्तु अब भी अपने स्थान पर हूँ। ३. मैं तूर का लाला (एक प्रकार का फूल) हूं; कली की भाँति मैं बाग में नहीं उत्पन्न हुआ हूँ। अपने फटे हुए कालर (गरेबाँ) पर बखिया करने के बदले मैं शोला (लपट) फेंकता हूँ। [कवि के आँसू उसके कालर पर लपट की भाँति गिरते हैं। इसलिए तूर पर्वत के ऊपर खिलने वाले फूल की भाँति वह लपटों से घिरा हुआ है; क्योंकि तूर पहाड़ ईश्वर की शान से घिरा हुआ है।] ४. जो व्यक्ति मेरी आँखों में हल्का है वह स्वर्ग के हृदय में भारी है।

२०. महवी हमदानी—इसका नाम मुगीस है। अपनी कैद की मिट्टी की चार दीवारों को वह पत्थर बनाना चाहता है और एकान्त की सुगंध से मस्त रहता है।

रुबाई

१. मैं गर्म आँसुओं को नहीं जानता था; मैं शोक ग्रस्त हृदय की आह को नहीं जानता था। २. हे प्रेम! तू ने न तो मेरा नाम छोड़ा और न निशान। मैं तुझे ऐसा नहीं जानता था। ३. तू ने कहा कि इश्क के दर्द के कारण मेरा काम मन्द है। शराब का प्याला ला क्योंकि दिल बहुत बँधा हुआ है। ४. अपने से लज्जित हो, लज्जित हो! बुलबुल किस प्याले और शराब से मस्त है? ५. हे माहबी! हाथ उठा कर अपने मित्र को बुला ले और काफिले के घंटे को बजाओ। ६. मंजिल बहुत दूर है और रात बहुत नजदीक है। हे मन्दगामी! अपने पैरों को जल्दी-जल्दी उठा कर चल। ७. एक प्रेमी के लिए सैकड़ों अनुभव, सैकड़ों जाचें सैकड़ों बुद्धियाँ आवश्यक हैं। ८. तू भाग्यशाली है, चला जा; क्योंकि प्रेम ऐसा स्थान है जहाँ दुःख की आवश्यकता होती है। ९. हे माहबी! अपने हृदय के प्रेम का गाना मत गा और किसी की गली में सराय का दरवाजा मत खटखटाओ। १०. तू ने देखा है कि सारा संसार पराया है। कभी भी मित्र के विषय में किसी से न कहो।

२१. सैरफी सावजी—यह दीन थे और निर्लोभ थे, अपनी निर्धनता में सन्तुष्ट है।

१. मेरा गुलाब का फूल बेचने वाला फूल बाजार ले जाना चाहता है; परन्तु उसको चाहिए कि वह पहले क्रेताओं के शोर गुल को सहने की शक्ति अपने भीतर लाए। २. काबा के मार्ग से मुझे रोक दिया गया है अन्यथा मैं उसके बबूलों के काटों की चोटों के लिए पैरो के तलवों को भेजता। ३. मैं संसार की ओर न देखूँ चाहे वह मेरे पैरों के नीचे गिर पड़े। जो भविष्य की चिन्ता करता है उसकी आँखें पीछे होती हैं। ४. जो कुछ मैं चाहता हूँ वह इतना ऊँचा है कि झुकने से नहीं पाया जा सकता। क्या अच्छा होता कि मैं अपने को अपने पैरों के नीचे पड़ा हुआ पकड़ सकता।

२२ करारी गीलानी—इसका नाम नुरुद्दीन है। यह तीव्र बुद्धि तथा उच्च प्रकृति का मनुष्य है। इस पर एक प्रकार का जुनून सवार था। अपने बड़े भाई हकीम अब्दुल फतेह को संसार और हकीम हुमाम को परलोक का प्रतिनिधि समझता था। इस कारण अपने को दोनों से पृथक रखता था।

१. वियोग का शोक जितना लम्बा होता है मैं उतना ही प्रसन्न होता हूँ क्योंकि अपरिचित व्यक्ति की भाँति मैं बार बार उससे परिचय प्राप्त कर सकता हूँ। २. मैं मृत्यु पर क्या आरोप लगाऊँ, क्योंकि तेरी आँखों से मैंने वह तीर खाए हैं कि यदि मैं दूसरे और सौ वर्षों के पश्चात् मरूँ तो भी वह मुझे कत्ल करता है। ३. वह (माशूक) पिछली रात को घर से बाहर रहा होगा क्योंकि रात को उसकी गली उसके मकान के दरवाजे और दीवारों को देखने

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

में मुझे कुछ आनन्द नहीं मिला। ४. जिस समय मैंने अपनी जान की जेब फाड़ी, खुदा बचाये, यदि उस समय तेरा गरेबाँ मेरे हाथ में होता तो उसके टुकड़े टुकड़े कर डालता। ५. मुझे कयामत के दिन नरक में जाने वालों से ईर्ष्या होती है क्योंकि वे धैर्य के साथ आग में बैठे रहते हैं (परन्तु प्रेमाग्नि मुझे धैर्य से वंचित रखती है।) ६. मेरी मस्ती और खुशी रात की शराब से नहीं है क्योंकि दिव्य प्रेम की अग्नि किसी घर में नहीं होती। ७. हे हृदय! प्रतिद्वन्द्वी की ईर्ष्या से इश्क में मुझको व्याकुल मत कर, तूने ईमान को नष्ट कर दिया है, मेरे जनेऊ को बदनाम मत कर। जिसने इस जीवन के कष्टों का अनुभव किया है उसके लिए अनस्तित्व से दूर रहना मृत्यु है। हे ईश्वर! अनस्तित्व की नींद से कयामत के दिन मुझे मत जगा।

रूबाई

१. यदि मेरे हृदय के प्रेम का कोई क्रेता मिल जाय तो मैं ऐसा काम करूँ कि रहस्योद्घाटन हो जाय। १. संयम के मुसल्ला को मैं ऐसा झाड़ूं कि उसके हर तार से हजारों जनेऊ गिर पड़ें। मैं अपने दिल का रक्त पीने से सन्तुष्ट हो गया हूँ, उस दोस्त की तरह मैं भी अपना शत्रु हो गया हूँ। ४. मैंने अपने को कत्ल कर दिया है और उसके प्रेम की अधिकता के कारण अपने खून को अपनी गरदन पर डाला है (यद्यपि माशूक ने मेरा कत्ल किया है।)

२३ इतावी नजफी—इसमें विचार साम्य है परन्तु इसका मस्तिष्क अव्यवस्थित रहता है।

१. मैं तुम्हारी वाटिका की बुलबुल हूँ। मैं तुम्हारी संगत के सुख की शपथ खाता हूँ कि फूल गुजर गया और मैं नही जानता कि बाग कहाँ है। २. तेरी जुल्फों की रात में सब दिल सुख पूर्वक रहें, क्योंकि तेरी गली से आवारा और परेशान हो गया। ३. मैं इस्लाम के बहत्तर फिरकों के दरवाजे खटखटाये और निराशा के द्वार पर अग्निपूजकों तथा मुसलमानों की सहायता से निराश हो गया। ४. मैं वफा की सलतनत से आया था। क्या आश्चर्य है यदि (बेवफा) मित्र की स्मृति से मैं गायब हो जाऊँ? ५. लालच के भाड़ में मैंने अपने बुद्धिमान हृदय को जला दिया। मैंने काबा की मोमबत्ती को बुतखाने के दरवाजे पर जला दिया। ६. किसी के (अर्थात् माशूक के) बाग से मुझे अभिलाषा पूर्ति की सुगन्ध नहीं मिली। विवश होकर मैंने वीराना गोशे (कोने) में अपने को जला दिया। ७. किसी ने गलती से मुझसे 'मित्र' शब्द नहीं कहा यद्यपि मैंने अपने आपको अपनों और परायों के सामने जला दिया। ८. हे हृदय! शराब जैसे होंठ का कौन सा भाग तू घड़े में रखता है कि तेरे जिगर में आह रहती है और गले में रोना रहता है? ९. मेरे प्रेम मुझको खून के आँसू की गहराई में डाल दिया। जाओ, जाओ कि तू एक बार नदी के किनारे पहुँच जाओगे। १०. मैंने तुझको अपना खून (हत्या करने की अनुमति दे दी है और तुझसे बदला न लूंगा। मैंने कह दिया है और लिख दिया है और मुहर लगाकर तुझे दे दी है ११. कभी मैं पानी के ऊपर होता हूँ और कभी आग के ऊपर होता हूँ। मेरी गली में कदापि कोई घर न बनावे। १२. ईश्वर के नाम आओ हम चलें यदि कोई इस मार्ग मेरा कोई साथी है। इस काफिला के लिए कोई घन्टा नहीं है। १३. उस देश में जहाँ 'वफा' के नाम से रोना आता है, सम्वाददाता तथा पत्र अलग अलग रोना लाते हैं।

रुबाई

१. क्या मुझ जैसे मनुष्य की हत्या क्रोध तथा घृणा के योग्य है? क्या मेरा खून तेरी बाहों के झुकाने के योग्य है? २. यदि तूने मेरे हृदय को भंग करने का संकल्प किया है तो क्या मित्रों को सताना उचित है?

२४ मुल्ला मुहम्मद सूफी माजन्दरानी—यह धन धान्य से पूर्ण है परन्तु सद्विचारों के कारण संसार के लोगों से कम मिलते जुलते हैं। यात्रा करके एकान्तवास करते हैं।

१. इस चक्कर लगाने वाले आकाश के नीचे मुझे ऐसा चिराग समझ जो सरपोश (ढक्कन) के नीचे

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

छिपा हुआ है। २. हे हृदय! तेरा मार्ग निष्कंटक नहीं है और तेरा रास्ता भाग्य के चर्ख के ऊपर नहीं है। ३. यदि तुझे अवसर प्राप्त हो तो अपने शरीर से चमड़े को निकाल दे ताकि तेरा बोझ हल्का हो जाय।

रुबाई

१. तूने मुझसे पूछा, 'हे मुहम्मद! उसके प्रेम के कारण तुम कैसे हो? तुम्हारी उम्र लम्बी होवे।" २. मैंने उत्तर दिया, "मैं आकाश के नीचे इस प्रकार खड़ा हूँ जैसे खूनी सूली के नीचे खड़ा होता है।"

२५. जुदाई—इसका नाम सैयद अली है यह मीर मन्सूर का पुत्र है इसका पालन पोषण तब्रेज में हुआ था और राजकीय संरक्षण में उसने चित्रकला में पूर्ण नैपुण्य प्राप्त किया।

१. बुतों (माशूकों) का सौन्दर्य मेरा काबा है, उसका प्रेम रेगिस्तान है। निकम्मे लोगों का बुरा भला कहना बबूल के काँटों के समान है। २. मैं आधा घायल शिकार हूँ और माशूक की गली से दूर पड़ा हुआ हूँ। मैं गिरता पड़ता जाता हूँ जिससे उसका चेहरा देख सकूँ। ३. प्रातः काल काँटा शेखी बघारता है कि मैं फूल के साथ था और बुलबुल के टूटे हुए हृदय पर नाखून मारता है।

२६. वकूई निशापूरी—इसका नाम शरीफ है।

१. प्रेम और प्रेमी का वास्तव में एक ही उद्देश्य होता है। यह विश्वास मत कर कि यदि मैं तुझ पर अपना प्राण निछावर कर दूँ तो मैं घाटे में हूँ। २. मैं कुशल-मङ्गल की तलाश करने वाला नहीं हूँ। हे ईश्वर! मेरे भाग्य में वह व्यथा दे जिससे मेरे हृदय में उपचार की आशा न रहे ३. मैं उन आँखों पर निछावर हूँ जो नाज से मेरी तरफ देखती हैं जिससे मेरे हृदय की सैकड़ों प्रकट तथा गुप्त इच्छायें समाप्त हो जाती हैं।

२७. खुसरवी काईनी—यह मिर्जा कासिम कूनाबादी (कवि) का सम्बन्धी है। वह खते शिकस्त खूब लिखता है। वह बाण तथा बन्दूक चलाने में निपुण है।

१. यदि मेरे और दूसरों के शरीर की मिट्टी मिला दें तो तुम प्रेम की सुगन्ध से मेरी मिट्टी को पृथक् कर सकते हो। २. जब से पृथ्वी पर तेरे चरणों का प्रकाश पड़ा है तब से उसकी धूल मेरी आँखों के लिए सुर्मा हो गई है। ३. हरम के शेर मेरे खून से अपना पंजा नहीं मिलाते हैं (अर्थात् मेरा खून नहीं करते।) हे मित्र! दुनिया के कुत्तों को इस भोजन का अतिथि बना। ४. मैं कहाँ और ऐश कहाँ? विपत्ति में प्रसन्न रहता हूँ कि अब तक सुख का नाम हमारे देश (प्रेम) में जिह्वा पर नहीं आता है।

२८. शेख रहाई—जैनुद्दीन खाफी के वंश के हैं। अपने को सूफी बताते हैं।

१. तेरे इश्क में मेरी तरह दूसरा कोई दर्द का पला हुआ नहीं है; तू नहीं जानता कि मेरा दर्द एक नया दर्द है। २. मैंने देशाटन किया कि शायद मेरे हृदय को शोक से आराम मिल जाय। मैं नहीं जानता कि मार्ग में शोक के सैकड़ों पहाड़ आवेंगे।

२९. वफाई इस्फहानी—इसमें अभिरुचि की झलक है। कुछ दिन तक इसने एकान्त के वन में यात्रा की परन्तु आजकल इनके कन्धों पर सांसारिकता की चादर है।

१. यूसुफ का क्रेता क्रेता नहीं है: मैं उसको क्रेता कहता हूँ जो उस वस्तु को खरीदे जिसकी उसे आवश्यकता न हो (जैसे प्रेम और शोक आदि)। २. आधी रात को दिल का दरवाजा खटखटा, जिससे दिन होने पर सब दरवाजे खुल जाँय और दिल का दरवाजा बन्द हो जाय। ३. मैं जीवन के विपदों से सुरक्षित हूँ, कोई सड़क पर चलने वाले फकीर को नंगे पांवों चलने से वंचित नहीं करता। ४. भाग्य का बाण कवच की दूसरी तरफ से आता है, मैं व्यर्थ कवच को क्यों पहनूँ? ५. 'हे मृत्यु की बिजली! पहले मुझपर गिर क्योंकि मैं वह बीज नहीं हूँ जो बाली

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खलियान में लाऊँ ६. हर्ष और सुख तथा जवानी के दिन फूल की सुगंध की तरह थे जो प्रातःकाल की हवा के साथ चले गए।

३०. शेख साकी—यह जजायर के अरबों में से है। इसने कुछ ज्ञान प्राप्त किया है।

रुबाई

१. हे साकी! मैं बरबादी का गरेबाँ (लबादा) हो गया और काबा की तरह कुफ्र तथा ईमान का स्थान बन गया। २. मैंने प्रेम की सुगन्ध नहीं पाई यद्यपि मैंने काफिर और मुसलमान दोनों के दिल के चारों ओर चक्कर लगाया। ३. हृदय इस प्रकार प्रेम से गर्म है और तू उसी तरह से उदासीन है। हे साकी, मेरे कहने से पूर्व इस दर्द को कह।

३१. रफीई काशी—इसका नाम हैदर है। यह काव्य-पारखी है और पहेलियाँ तथा इतिहास लिखने में अद्वितीय है।

हे निर्दय! मेरा हृदय कोमल है। मेरा इलाज क्या हो सकता है। यद्यपि मैं आशिक हूँ तथापि मेरा स्वभाव माशूक का है। मैं क्या कर सकता हूँ?

रुबाई

१. संयमी पाप (अर्थात् प्रेम) नहीं करता क्योंकि तू जालिम है। मैं पाप (प्रेम) में डूबा हूँ क्योंकि तू क्षमाशील है। २. वह तुझको जालिम कहता है और मैं तुझको क्षमाशील कहता हूँ। आखिर तू किस नाम से प्रसन्न होता है?

३२. गैरती शीराजी—यह कविता लिखने में चतुर है और पूर्ववजों के इतिहास से परिचित है।

१. मैं कातिल की भौंवों से मारा गया हूँ जिसने मेरा खून इस प्रकार किया कि एक बूँद भी पृथ्वी पर नहीं टपका। २. वर्तमान युग ईश्वर से तुझ जैसा शरारत करने वाला चाहता है जो अभागों के भाग्य को और भी कटु बना दे। ३. मैं सांसारिकता से मुक्त हो गया, क्योंकि मेरा साहस भरोसा की दीवार का सहारा नहीं लेता। ४. मैं ईसाई युवक की निडर दृष्टि से कत्ल कर दिया गया हूँ जिसको कयामत के दिन ईश्वर सैकड़ों मुसलमानों को को कतल के लिए क्षमा कर देगा। ५. मृत्यु भी उन लोगों के लिए शोक करती है जिसके लिए तेरे वियोग का शोक जल्लाद की तरह है। ६. प्रेम की गली बहुत सुन्दर देश है, क्योंकि वहाँ पर स्वर्ग की ईर्षा भी प्रेम में परिणत हो जाती है। ७. मैंने शोकग्रस्त हृदय को देखा और शोक से मर गया क्योंकि कठोर हृदय और अत्याचारी इस देश में एक ही है।

३३. यादगारे हालती—यह तूरानी है। यह स्वार्थी व्यक्ति है।

१. उसके लिए मुझे दर्द होता है उसमें मुझे आराम मिलता है। मुझे अपने दर्द में छोड़ दो। यदि मेरे हृदय में इलाज की सम्भावना का विचार आता है तो मैं मर जाता हूँ। २. जान होंठों पर है और आँखें उसे देख रही हैं। हे उम्र! कुछ देर तक मेरे ऊपर कृपा कर। ३. वियोग की रात को चाहे मैं जिस करवट लेटूँ उसकी तेज भौंहों की याद मेरे दिल में चुभती है।

३४. संजरे काशी—यह पहेलियों के लेखक मीर हैदर का लड़का है। कविता में उसकी रुचि है। उसके ललाट से प्रकट होता है कि वह सन्तुष्ट है।

१. मैं गबरान की खानकाह (मठ) से आया और असभ्यता की लज्जा के कारण मेरी कमर पर जनेऊ लिपटा हुआ है। और शंख की आवाज बगल में है। २. हम ईर्ष्यालु हैं, और लालचियों के आक्रमण से हम पर जांयगे। हम नये पौधे हैं लेकिन कूड़ा करकट की ढेर से हम मर जांयगे। ३. तेरे इश्क के जमाने में भी नष्ट हो

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

गया। शोक है कि मजनू की जाति में से अब कोई न रह गया। ४. चारों तरफ से शोक पहुँचता है उससे मेरा हृदय घबड़ा जाता। मैं क्या करूँ ? मेरा घर रास्ते में स्थित है।

३५. जज्बी—इसका नाम पादिशाह कुली है। यह बगदाद के निकट कुर्दिस्तान के शाह कुली खां नारंजी का पुत्र है।

मेरी ऐकान्तिक ईर्ष्या देख, मैं बेखुदी (अचेतावस्था) से होश में आता हूँ यदि कोई माशूक की ओर संकेत करता है जिसकी याद में मैं बेहोश हूँ।

रुबाई

१. कभी तो मैं तौबा (पश्चाताप की प्रतिज्ञा) तोड़ता हूँ और कभी शराब की बोतल तोड़ता है। एक बार, दो बार नहीं, लगातार तोड़ता हूँ। २. हे ईश्वर ! मेरे हृदय को इन बुरी आदतों से बचा। कब तक मैं तौबा करूँ और कब तक उसे तोड़ूँ ?

३६. तशबीही काशी युवावस्था के आरम्भ से ही उसका मस्तिष्क अवस्थित रहता है। वह महमूदियों की जाति का है। परन्तु मैं उसके परिवार तथा वर्तमान के विषय में कुछ नहीं कह सकता। 'जर्रा ओ खुरशीद' नाम की उसकी मसनवी है।

१. हे कब्रिस्तान की धूल एक बार खुशी के लिए उठ, क्योंकि मेरी तरह से उसके हाथ और कटारी से मारा हुआ आदमी तू कब्र में रहता है। २. तू चाहे जिस रंग के कपड़े पहन; मैं तेरे शरीर के प्रकाश को पहचानता हूँ। ३. किसी दिन अपने प्रेम के मारे हुए शहीदों के बाजार से गुजर और बदले का दिन देख, क्योंकि वहां वे तुझसे सैकड़ों पुण्य के बदले में तेरे अपराध खरीदते हैं। ४. हे गर्म तनूर से सूरज की टिकिया लाने वाले ! तूने तशबीही को जलपान नहीं दिया है; शाम का भोजन तुझ से वह कब चाहता है ? ५. मैं वह तशबीही हूँ जो दूरदर्शिता के कारण कब्रिस्तान में बैठने का विचार रखता हूँ। ६. मैं कब्रिस्तान में रहना पसन्द करता हूँ, क्योंकि कब्रिस्तान में बैठना दूरदर्शिता है। ७. इस संसार और उस संसार दोनों के हाथ खाली हैं। मेरे सामने अंगूठी है। और यह खाली है और वह खाली है।

३७. अश्की कुम्मी—यह तबातीबा सैयद है और काव्य कला से परिचित है।

१. तेरे कतल किए हुए लोग जमीन पर चारों तरफ मस्त पड़े हुए हैं। शायद तेरी तलवार का पानी शराब था। २. दोस्त के बिना मेरा शरीर पागलपन की आग में पिघल गया। यदि तू मेरी गरदन पर लोहे की जंजीर रखे तो वह पिघल कर मेरे पैरों पर गिर पड़े। ३. जिस समय यार की जुदाई से मेरा काम पड़ता है उस समय मौत के सिवाय और कोई मेरे काम नहीं आता। ४. हे अश्की। मैं नहीं जानता कि मैं आँसू क्यों मेरे प्रतिद्वन्द्वी हो गए हैं। जब से उस पर दृष्टिपात किया तब से वे आँसू मेरी आँखों से निकलकर मेरे चेहरे पर दौड़ने लगे।

३८. असीरी राजी—इसका नाम अमीर काजी है। यह कुछ शिक्षित है।

१. सम्वादवाहक प्रतिद्वन्द्वी था और मैं धोखे के कारण असावधान था। निष्ठुर हम लोगों के बीच में अपना उद्देश्य रखने में सफल हुआ। २. मैंने अपने कतल करने वाले को क्षमा कर दिया क्योंकि उसने अपना हाथ मुझसे दूर नहीं किया। जब तक मेरे शरीर में आधी जान थी तब उसके हाथ काम में लगे थे। ३. उसके प्रेम ने मेरे तंग दिल में ऐसा स्थान कर लिया था कि उसकी सांस मेरी सांस से दिमाग में आती है।

३९. फहमी राजी

१. जो मनुष्य बिना रुचि के शराब पीता है उसको शराब नहीं देते हैं। यदि वह शराबखाने के दरवाजे की धूल हो जाय तो उसको पानी नहीं देते हैं। २. इश्क में मेरा सम्मान इसलिए कम हो गया कि मुझ में धैर्य

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नहीं है। सम्मान से कहो कि वह कम हो जाय क्योंकि धैर्य पर मेरा कोई अधिकार नहीं है।

४०. कैदी शीराजी इसने साधारण शिक्षा प्राप्त की है और अपने को बहुत शिक्षित समझता है।

१. तूने मेरे तंग दिल से कभी बाहर कदम नहीं रखा, मुझे आश्चर्य है कि कैसे तूने प्रत्येक हृदय में स्थान कर लिया। २. तेरे हटा देने के बाद मैं जब वापस आया तो यह ईर्ष्या के कारण नहीं वरन् उस प्रेम के कारण मुझे लज्जा है कि जिसका साथी ईर्ष्या है। ३. उस निष्ठुर को हँसी से मेरे विलाप को प्रकाश मिलता है। अन्यथा तेरे द्वारा किए हुए घाव में खून नहीं होता। ४. शिकायत की पूंजी बहुत है। आशिक के लिए वही बेहतर है कि कयामत के बाजार के दिन सिवाय दूसरे दिन अपने हृदय की भावनाओं को न प्रकट करे। ५. तेरी प्रत्येक दृष्टि के साथ यदि मैं इन सैकड़ों खूनों का दावा करूँ तो जमाना मेरा शत्रु होते हुए भी मेरी गवाही देगा। ६. मैं कहाँ और बुद्धि कहाँ ? मैं पागलपन की बिजली चाहता हूँ जो प्राण के साथ उत्पन्न होती है और कयामत के दिन तक जलती है।

रुबाई

१. कल रात के मिलन ने उसका सुन्दर शरीर मेरे सामने खड़ा किया। मेरे हृदय का अंधेरा-मरुस्थल हर्ष से चमक गया। २. चमगादड़ सूर्य को देखने की शक्ति नहीं रखता था अन्यथा सूर्य ने पर्दा उठा दिया था।

४१. पैरवी साउजी—इसका नाम अमीर बेग है। यह नक्काशी का अभिज्ञ है।

१. बेदर्द को मुहब्बत की शराब कहां देते हैं ? बुतों का इश्क एक ऐसी दशा है जिसको देने में सावधान रहना चाहिए। २. हे ईश्वर मैं आदर्श के संसार में नहीं पहुँच सकता। क्षमा करो कि मैं आकृति का उपासक हूँ।

४२. कामी सब्जवारी—इसका मस्तिष्क कुछ अव्यवस्थित है।

१. यदि मैं जानता कि रोने का प्रभाव पड़ता है तो मैं पूर्णतया रक्त हो जाता और आंखों से टपकता। २. मैं चाहे उसे देखूँ या न देखूँ, वह मेरे हृदय को चुरा लेता है। क्या ऐसे प्रियतम को तुमने देखा है ? ३. मैं चाहता हूँ कि हवा की भांति मैं इस संसार से चला जाऊँ। यह प्रियतम की गली नहीं है कि उससे जा नहीं सकते। ४. मेरा खून मेरी रग में आग की लपट की तरह नाचता है। उसका हाव भाव प्रभावकारी होता है और मेरे हृदय को चोट पहुँचाता है।

४३. पयामी—इसका नाम अब्दुस्सलाम है। यह अरबी जाति का है। इसने कुछ ज्ञान प्राप्त किया है परन्तु उसके मस्तिष्क में कोई बात साफ नहीं है।

भाग्य खेल में धोखा देता है, खोता है और जो कुछ देता है उसको वापस ले लेता है। ऐसे प्रतिद्वन्द्वी के साथ नहीं खेला जा सकता जो इतना धोखा देता है।

रुबाई

१. तू कब तक शब्दों को तराशेगा और रन्दा करेगा और कब तक तू लक्ष्य पर बिना साधे हुए बाण चलायेगा ? २. यदि शान्ति की विद्या का एक पाठ भी पढ़े तो तू अपने मूर्खतापूर्ण वार्तालाप पर बहुत हँसेगा। ३. हजारों बजलियां मैं अपने होंठ के नीचे गुप्त रखता हूँ। जाओ, जाओ, सावधान रहो, मेरे होंठ पर उँगली न रखो। ४. मैं संसार में सार्वजनिक स्थान पर आया हुआ हूँ। परन्तु फिर भी सोचता हूँ कि मेरा यूसुफ बाजार में न आकर कुँये में रहता तो अच्छा होता। [यहां पर 'यूसुफ' से 'जीवन', 'कुँये' से 'अनस्तित्व' और 'बाजार' से 'अस्तित्व' का तात्पर्य है]। ५. धैर्य ने मुझे सान्त्वना देने के लिए नए बहाने बनाये हैं और उसने मेरे हर्ष के ग्रन्थ को उल्टा सिल दिया है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

रुबाई

१. मेरे हृदय ने वियोग के दुःख पर विजय प्राप्त कर ली है और इस भूमि से चला गया है। उसने दामन को बेफाई की कमर में बाँध लिया है और चला गया है। २. मेरे हृदय ने इन साथियों में बफा की कोई बू नहीं देखी। इसलिए वह मित्रता के रूप में सैकड़ों बार हँसा और चला गया।

४४. सैयद मुहम्मद—यह हेरात का जुलाहा है; यह अधिकतर रुबाई कहता है।

रुबाई

१. उस दिन जब प्रेम की अग्नि प्रज्वलित हुई आशिक ने माशूक से जलने का ढग सीखा। २. यह जलना और पिघलना दोस्त की तरफ से पैदा होता है। जब तक शमा नहीं पकड़ती तब तक परवाना (फतिंगा) नहीं जलता। ३. प्रलय के दिन जब संसार में कहानी के सिवाय और कुछ शेष नहीं रहेगा तब शाश्वत के बसन्त का पहला चिह्न प्रकट होगा। ४. पौधों की भाँति माशूक मिट्टी से अपने सिर उठायेंगे और मैं भी आशिकी में अपना सिर उठाऊँगा।

४५. कदसी करबलाई—इसका नाम मीर हुसेन है।

१. तेरी गली के कुत्तों से मैं बहुत लज्जित हूँ, क्योंकि उन्होंने मित्रता के लिए मुझ जैसे व्यक्ति को चुना है। २. मैं कष्ट में हूँ और मेरा दुःख वही जान सकता है जो तेरे वियोग में एक रात मेरी स्थिति में हो। ३. मैं कौन हूँ कि तुम मेरे शत्रु बनो और मेरे होने और न होने की चिन्ता करो।

४६. हैदरी तब्रीजी—इसका हृदय व्यापारियों का है और आदत कवियों की जैसी है। यह कठिन परिश्रम करता है और धन को उदारतापूर्वक व्यय करता है।

१. किसी को मेरे दुखों की काली किताब न दिखा। ऐसा न कर कि कोई मेरे अपराधों (प्रेम) को जान जाय। २ हे हैदरी! पवित्र लोगों की भाँति जब तक हो सके दुःख के इस संसार में पूर्णता प्राप्त कर। ३. इस संसार से अपूर्ण जाना ऐसा है जैसे स्नानागार से अपवित्र निकलना।

४७. सामरी—हैदर तब्रीजी का आत्मज है। यह पद्य लिखना जानता है।

१. मेरे असम्मान ने मुझे विख्यात बना दिया है! और मेरी लज्जा (प्रेम) ने मुझे और प्रसिद्ध बना दिया है! मैं चकित होकर अपने आप से पूछता हूँ कि क्यों मैं छिपा हुआ हूँ। २. किसानों ने अपने बीजों को खेतों में डाल दिया और अब मेरे आँसुओं की बाढ़ से सहायता की आशा करते हैं।

४८. फरेबी रई—इसका नाम शापुर है यह अच्छा मनुष्य है परन्तु अर्थ-संकट में है। यदि परिश्रम करे तो यह कविता में उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है।

१. मैं जाता हूँ जिससे किसी (माशूक) के प्रेम से अपना सिर गर्म करूँ। मैं आग की लपट में बैठा हूँ और गर्म साँस लेता हूँ। २. हे शापुर! मैं अपने लिए अपने सिर में गर्मी नहीं रखता। मेरा उद्देश्य यह है कि मैं किसी (माशूक) के बाजार को गर्म करूँ। ३. मैं मरुस्थली बिना पत्तों वाली कटीली झाड़ी हूँ। दुर्घटनों के भय से कोई पक्षी मेरी शरण में नहीं आता। ४. यदि तेरे प्रेम के शोक का शहीद मजार रखता है तो वह चील कौओं का पेट अथवा वन्य पशुओं का पेट होगा। ५. जब तक मैं अमङ्गल (प्रेम) की घाटी को पार करता हूँ तब तक मैं समुद्र में डुबकी नहीं लगाता क्योंकि वह किनारा रखता है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

४९. फ़ुसूनी शीराजी–इसका नाम महमूद बेग है। यह उत्कृष्ट वितक्ची है और ज्योतिष भी जानता है।

१. जो आँखें देखना (प्रेम करना) जानती हैं वह सुखपूर्वक नहीं सोतीं और जो हृदय तड़पना जानता है उससे विश्राम चला जाता है। २. मेरा हृदय दूसरे माशूकों की गरमी से कली की भाँति हो गया है जिसको फूंक के जोर से खोल दिया गया है। ३. जब मैं उसके पैर को चूमना चाहता हूँ तो पहले उसको तर आँखों से पोंछता हूँ क्योंकि मेरी आँख पैर चूमने की इच्छा होंठों से अधिक रखती है। ४. शोक! यदि प्रेम के अपराध में मेरा खून नहीं बहाते हैं तो अपराध का क्षमा करना बदला लेने से कम नहीं है। ५ मेरे एकान्त कक्ष के एकमात्र मित्र! जो लोग वंचित होकर बाहर निराश खड़े हैं मैं उनसे ईर्षा करता हूँ। भोज के मेरे मधुर साथी! मैं दर्शकों से ईर्षा करता हूँ।

रुबाई

१. यदि मैं तेरे अत्याचार के हाथों से दूर भागूँ तो कहो मैं अपने सिर पर कौन सी मिट्टी बिखेरूँ। २. यदि मैं रास्ते की मिट्टी पर बैठूँ या गिरूँ तो उठने के बाद फिर मैं किसका शिकार हूँगा? ३. मेरी प्रार्थना ऐसी चिड़िया है कि सिवाय रात के नहीं उड़ती हे ईश्वर बिना विलाप-गान किए हुए नहीं उड़ती। ४. चिड़िया डोरा बाँधने से दुर्बल हो गई है। मैं डरता हूँ कि यह जंगली होंठ के घोंसले से उड़ न जाय।

५०. नादिरी तुरशीजी—१. खोज के लिए अंधा होना और इधर-उधर भटकना आवश्यक है। इस मृग-तृष्णा (प्रेम) के लिए मैं प्यासा हूँ यद्यपि पानी स्वयं मेरे हाथ में है। २. हे नादिरी! मैं किसकी शिकायत करूँ? मैंने काँटे की इस ढेर में आग लगा दी है।

५१. नवी मशहदी—इसमें काव्य शक्ति है। यदि कोई व्यक्ति रुष्टतापूर्वक उसे शिक्षा देता है तो यह खूब लिखता है।

१. मैं मुर्दा हूँ, और खोज के पैरों के छाले अभी सूखे नहीं है। इस मन्जिल को तै करने के लिए मृत्यु तथा जीवन पर्याप्त नहीं है। २. एक आँख भी उचित नहीं है कि मैं जलवा देखूँ। परदा चेहरे पर हमारे आईने चेहरे पर था। ३. यदि मंसूर का प्रेम यही है तो हे दृष्टि दुखी मत हो। हर कम हिम्मत बरबादी के योग्य नहीं है। ४. सौन्दर्य आँखों से देखा नहीं जा सकता। दर्शक को आईना में सिवाय अपनी सूरत के और कुछ नजर नहीं आता। ५. अपने हृदय को आकाश की भाँति विशाल बना और तब एक कण माँग। ६. हे नवी! तू सूर्य की किरण से क्या सन्तोष करता है? आधे कण का साहस पैदा कर गर्द के कण जो सूर्य की किरणों के साथ खेलते हैं, उनसे प्रेम करते हैं।

५२. बाबा तालिब इस्फहानी—यह विचारशील कवि है और राजनैतिक विषयों का इसे अनुभव है।

१. मैं दुनिया वालों से प्रसन्न हूँ कि उनकी संगति के प्रभाव से दुनिया के बदले मैं एकान्त का कोना नहीं दे सकता। २. यदि तेरी कृपा मेरे छोटे हृदय में प्रवेश करती है तो क्या आश्चर्य है? मेरा छोटा हृदय जंगल की सी विशालता रखता है। ३. दुर्बलता के कारण मेरा हाथ गरेबान, (कालर) में रह गया और मैं चिल्लाता हूँ कि यह फटा हुआ गरेबा दामन तक देर में आया है।

रुबाई

१. स्वयं अपने से वियोग में तू मुझे परखने के लिए विष देता है और फिर पूछता है कि क्या हुआ? तू

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मेरा खून बहाता है और हाथ झाड़कर मुझे भगाता है और तिस पर भी पूछता है। क्या हुआ ? २. हे लापरवाह ! तेरे वियोग की तलवार ने क्या किया यह जानने के लिए तू मेरी मिट्टी को बिखेर दे।

५३. सरमदी इस्फहानी—इसका नाम शरीफ है। इसे कुछ ज्ञान है। यह सज्जन तथा सेवा शील है। यह अच्छे तुक लिखता है। यह गणित भी जानता है।

१. मेरे समय ने वफा की। मैं भाग्य की वफा का इतिहास हूँ। २. जब मैं घर में था तब तू बगल में गुलाब की शराब लेकर आया। मेरे घर के परिश्रम की मिट्टी तमाशा के लिए खिलती है। ३. पापों की गर्मी से मैंने स्वयं क्या नहीं किया है ? ईश्वर को दया के भरोसे मैं कौन गुनाह और जुर्म नहीं करता ? ४. मैं और मेरा हृदय शौक के पंखे बाग में झाड़े क्योंकि प्रातः कलीन वायु के आने जाने से मुझे ईर्ष्या है। ५. वस्ल के अतिरिक्त प्रेमी की सहस्त्रों इच्छायें होती हैं। हे भाग्य ! मैं अभी तक तुमसे मनोकामनाओं की पूर्ति चाहता हूँ। ६. मैंने दोनों संसारों पर कदम रखा क्योंकि मेरे हृदय पर हर्ष और शोक का कोई प्रभाव न था।

रुबाई

१. मैं इश्क रखता हूँ जिसकी चर्चा कयामत के दिन होगी। मेरे हृदय में ऐसा शोक है जिसका कभी कोई वर्णन नहीं कर सकता। २. मेरा दर्द जो दूसरे दर्दों के साथ पला हुआ है। न तो उसने फिक्र की तेजी देखी और न कलम।

५४. दखली इस्फहानी—यह निःस्वार्थ व्यक्ति है और अपने विचारों को दूसरों से कम कहता है। यह मितभाषी है परन्तु अपने पुरुषार्थ के कारण सम्माननीय है।

१. मैंने अपने बुद्धिमान् हृदय की शक्ति के सामान को जला दिया है और अपनी उच्चाकाँक्षाओं के घर को जला दिया है। २. मैं कुफ्र और दीन को छोड़कर निकल आया हूँ और जनेऊ तसबीह को काबा और बुतखाना के आधे रास्ते में जला दिया है।

रुबाई

१. मैंने विलाप नहीं देखा जो बाद में प्रभाव रखता हो और मैंने कोई ऐसी रात नहीं देखी जिसके बाद प्रातःकाल आवे। २. लोग कहते हैं कि दुःख के बाद सुख आता है, यह बात ठीक नहीं है। मैंने देखा कि प्रत्येक दुःख के पश्चात् दूसरा दुःख आता है।

५५. कासिम अरसलान मशहदी—इसकी कविता अर्थपूर्ण होती है। यह धन एकत्र करने के लिए कठोर परिश्रम करता है और शौक के साथ उसे खर्च करता है।

१. मैं हाजिर जवाबों की संगत से खराब हो गया हूँ क्योंकि उसमें अभिव्यक्ति की सूक्ष्मतायें इशारे में गायब हो जाती हैं। २. हे मित्र ! तेरे बिना जब मैं अपनी कविताओं की पुस्तक को देखता हूँ तो शब्द और अर्थ मेरी दशा पर रोते हैं। ३. हे आधी जान तू होंठों पर आ गई है। ऐसी जगह पर तेरी क्या कद्र है जहाँ एक निगाह सैकड़ों जान के बराबर है। ४. तू गुलाब जैसी चमक और शराब जैसा रंग रखता है। खुदा की तारीफ है तेरी चमक और रङ्ग कितना अच्छा है !

५६. गयूरी हिसारी—इसके मुखमण्डल से पुरुषार्थ टपकता है और सरलता उसके जीवन का आभूषण है।

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

शौक जब माशूक के दरवाजे पर ले जाता है तब वापसी की रस्म को खत्म कर देता है, अर्थात् वहाँ से कोई लौटना नहीं चाहता।

किता

१. अकबर शाह गाजी का दरवाजा विश्राम का स्वर्ग है। २. यदि मैं अपनी दाढ़ी को बनवाता हूँ तो अपनी सजावट या शृंगार के लिए नहीं। ३. बल्कि इसलिए बनवाता हूँ कि अपराधों की भाँति दाढ़ी भी काले रङ्ग की है, इसलिए स्वर्ग में उसके लिए कोई स्थान नहीं है।

५७. कासिमी माजन्दरानी—यह फकीरों की तरह रहता है। यह नंगे पाँव तथा नंगे सिर ससार की यात्रा करता है।

१. सुन्दरता में मैं तेरी तुलना यूसुफ से नहीं करता। यूसुफ ऐसा नहीं था मैं खुशामद नहीं करता। २. वियोग के शोक से आज मेरी बीमारी अधिक हो गई है। आज रात को मेरी दशा कल की सैकड़ों बुराइयों के साथ उठती है। ३. शौक की शराब हरारत को अधिकता के साथ बहती है। आज की रात मेरा अस्थिर हृदय क्या करे?

५८. शेरी—यह पञ्जाब के शेखों का वंशज है। सम्राट् के संरक्षण में वह अच्छा कवि हो गया।

१. दोस्त आया और मेरा नाम ले गया और मुझको अपने आपे से बाहर कर दिया। २. दोस्त के चारों ओर नाज नखरा की ऐसी भीड़ हुई कि इच्छा को भी वहाँ पर जाने का मार्ग न मिला। ३. हे प्रात. कालीन शीतल वायु! मेरे शौक के शरीर में जान ही जान भरी हुई है। मैं तेरे सिर के चारों तरफ फिरा मगर तू उसकी गली में बहुत फिरा।

रुबाई

१. मेरा हृदय अपनी वर्तमान स्थिति को प्रकट कर देता है। मैं चुप-चाप रहता हूँ तिस पर भी मेरी दशा प्रकट हो जाती है। २. थोड़ा-सा काम (प्रेम) हजारों कठिनाइयाँ रखता है; सरल उद्देश्य की पूर्ति में सैकड़ों कठिनाइयाँ आती हैं।

५९. रही नीशापूरी—इसका नाम ख्वाजा जान है। यह इस काल का अच्छा व्यक्ति है।

रुबाई

१. हे रही! चालाकी से इस रस्सी को मत तोड़। भविष्य-जीवन, आरम्भ और नरक का विचार छोड़ दे। २. दोस्त के प्रेम की अग्नि में इस रस्सी को रख दे जिससे मरणोपरान्त यह गन्दा शरीर नरक में न जाय।

उपरोक्त (५९) कवि सम्राट् के दरबार में थे। इनके अतिरिक्त, जिन अनेक कवियों को दरबार में आने का अवसर नहीं मिला था वे दूर ही से सम्राट् की प्रशंसा लिखकर भेजते थे जैसे कासिम गूनाबदी, जमीर इस्फहानी, वहशी बाफवी, मुहतशिम काशी, मलिक कुम्मी। जहूरी शीराजी, वली दश्त बयाजी, नेकी, सब्री, फिगारी, हुजरी, काजी नूरी इस्फहानी, साफी बामी, तवफी तबरेजी और रश्की हमदानी।

आईन ३० (शेषांश)

सम्राट् के दरबार के संगीतज्ञ

ग्रन्थकर्ता ज्ञान के इस चमत्कार (संगीत) की आश्चर्यजनक शक्ति का वर्णन कैसे कर सकता है? उसके

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

पास ज्ञान की कोई पूँजी नहीं है। कभी-कभी वह हृदय के अन्तःपुर के सुन्दर प्राणियों को जिह्वा पर प्रकट करता है और कभी-कभी पवित्रता का वेश धारण करके हाथ और तार के द्वारा प्रकट होता है। तब कान की खिड़की से प्रवेश करके अपने पूर्ववर्ती स्थान पर वापस जाता है और अपने साथ सहस्त्रों उपहार लाता है। श्रोता अपनी अन्तर्दृष्टि के अनुसार सुख अथवा दुःख का अनुभव करते हैं। संगीत संसार से विरक्त तथा अनुरक्त दोनों की सहायता करता है।

सम्राट् संगीत पर काफी ध्यान देते हैं और इस मोहक कला के अभ्यास करने वालों के संरक्षक हैं। दरबार में हिन्दी, ईरानी, तूरानी और कश्मीरी स्त्री तथा पुरुष संगीतज्ञ हैं। इन दरबारी संगीतज्ञों को सम्राट् ने सात श्रेणियों में विभक्त किया है और प्रत्येक श्रेणी के लोग सप्ताह में एक दिन उपस्थित होते हैं। जब सम्राट् आज्ञा देते हैं तब वे संगीत की मदिरा श्रोताओं के कान में उड़ेलते हैं और कुछ को उन्मत्त तथा कुछ को सावधान बनाते हैं।

इस समुदाय का पूर्ण विवरण देना बहुत कठिन है, परन्तु कुछ मुख्य संगीतज्ञों का उल्लेख निम्न तालिका में दिया जाता है।

नाम	जन्मस्थान, उपाधि या सम्बन्ध	विशेष विवरण
१—मियाँ तानसेन	ग्वालियर	अतीत एक हजार वर्ष में ऐसे दूसरे गायक का जन्म भारत में नहीं हुआ।
२—बाबा रामदास	,,	गायक
३—सुभान खाँ	,,	,,
४—श्रीशान खाँ	,,	,,
५—मियाँ चाँद	,,	,,
६—विचित्र खाँ	सुभान खाँ का भ्राता	,,
७—मुहम्मद खाँ	ढाड़ी	,,
८ बीर मन्दल खाँ	ग्वालियर	सरमन्दल (एक प्रकार का ढोल) बजाने वाला
९—बाज बहादुर	मालवा का शासक	अद्वितीय गायक
१०—शिहाब खाँ (या साहब खाँ)	ग्वालियर	बीन बजाने वाला
११—दाउद	ढाड़ी	गायक
१२—सरोद खाँ	ग्वालियर	,,
१३ मियाँ लाल	,,	,,
१४—तान तरंग खाँ	आत्मज मियाँ तानसेन	,,
१५—मुल्ला इसहाक	ढाड़ी	,,
१६—उस्ता दोस्त	मशहद	बाँसुरी बजाने वाला
१७—नानक जार्जू	ग्वालियर	गायक
१८—परबीन खाँ	आत्मज नानक जार्जू	बीन बजाने वाला
१९—सूरदास	आत्मज रामदास	गायक
२०—चाँद खाँ	ग्वालियर	,,

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नाम	जन्मस्थान, उपाधि या सम्बन्ध	विशेष विवरण
२१—रंगसेन	आगरा	कर्ना (एक प्रकार की बांसुरी) बजाने वाला
२२—शेख दावन	ढाड़ी	गायक
२३—रहमतुल्ला	भ्राता मुल्ला इसहाक (नं० १५)	सारंगी बजाने वाला
२४—मीर सैयद अली	मशहद	तम्बूरा बजाने वाला
२५—उस्ता युसुफ	हेरात	इसने कुबुज और रुबाब के मध्यवर्ती एक बाजे का आविष्कार किया
२६—कासिम	(उपाधि) कोहवर (एक चगताई जन जाति)	कुबुज बजाने वाला
२७—ताश बेग	किबचाक	गाता और भाव बताता है
२८ सुलतान हाफिज हुसेन	मशहद	सारंगी बजाता है।
२९—बहराम कुली	हेरात	तम्बूरा बजाता है
३० - सुल्तान हाशिम	मशहद	सुर्ना बजाता है
३१—उस्ता शाह मुहम्मद	”	तम्बूरा बजाता है
३२—उस्ता मुहम्मद अमीन	”	गाता और भाव बताता है
३३—हाफिज ख्वाजा अली	मशहद	कानून (एक बाजा जिसमें बहुत से तार लगे रहते हैं) बजाता है
३४—मीर अबदुल्ला	भ्राता अब्दुल हई	गाता और भाव बताता है
३५—पीर जादा	भ्रातृज मीर दवाम खुरासानी	तम्बूरा बजाता है।
३६—उस्ताद मुहम्मद हुसेन	”	

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

अनुक्रमणिका

अकबर—कार्य ईश्वरोपासना का रूप २५, अमीरों आदि की पत्नियों का अन्तःपुर में निवास ५३, प्रकाश की पूजा ५५, गायन-वादन में दक्षता ५८, भोजन ६२-६४, निरामिष भोजन ६७, १४४, फलाहार ७०, ऊनी वस्त्र ९२, लेखन कला एवं चित्रकला ९७, पुस्तक श्रवण १०२, चित्रकला के प्रति रुचि १०५-६, आविष्कार १११, १७०, २०, २२७, २३०, संग्राम-बन्दूक ११२ हाथी की सवारी १२३, दिन-चर्या और चरित्र १४३-४५, दर्शन देना १४५, आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शन १९-१५३, ईश्वरीय प्रकाश एवं शक्ति १४७, २५७, सम्राट् के सामने माथा टेकना आदि १४६ ७, चमत्कार १५२, २०, २१२, दीन इलाही १५३, काजियों, सद्रों, अफगानों आदि के तथा उत्कोच, भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध कार्यवाही १९९-२०१, पारसी उत्सवों का ग्रहण २०२, मीनाबाजार जाना २०३, दहेज एवं निकट सम्बन्धियों में विवाह अनुचित २०३-४, बालकों की शिक्षा २०४-२०५

अकबर नामा १०३
अक्ता इक्ता) १८९
अखलाके नासिरी १०२
अजफारुत्तीब ८५
अर्जनाम्चा १९५
अजायबी ६०
अजारा २१६
अजीजउद्दौला २००
अटकल १५९
अत्गा खाँ २४५
अथर्ववेद १०४
अदल गुटका ४०
अदहम खाँ २३४
अधेला ४१
अधिकारियों को ऋण १९७
अनन्नास ७३
अनीन १५९
अबुल फज्ल २४९, २३८
अबीर इकसीर ७९
अबीर माया ७९
अब्दुर्रहीम खानखाना १०४
अब्दुल्ला खाँ उजबक २३३
अब्दुल हमीद लाहौरी १०३ टि०
अमलबेत ७६
अमीन ३२
अम्बर ८१
अयार दानिश १०४
अरगजा ७८
अरवाना १३३
अरबाबुल्तहावील १९०
अरबी घोड़ा १७१
अल्चा ९३
अलम (झंडा) ५७
अलफी ऊँट ३६
अलमास (हीरा) २८, २९
अलाई ३१
अली चमन कश्मीरी १०२
अवार्जा नवीस २१
अष्ट ४१
अष्टधात ४९
अहदी ३२ १६९ १८३
अहदीबाशी १९५
अनीसी शामलू ६४
अश्की कुम्मी २७१
असीरी राजी २७१
आख्तची १२८, १३२
आख्ताबेगी २१
आचीन २०७
आट (त) बेगी १२८, १३२
आठ खम्भा ६०
आदित २४६
आफताबी ४०, ८८
आबदार २२
आबदार खाना ६१
आबकश १२९
आबी तराजू ५०
आमिल २२
आमिल खालसा २१
आत्मा ३९
आलमगीर नामा १०३
आवारा नवीस १८५
इकबाल नामा १०४
इखलाती ५८
इबच्कीखाना ५४
इताबी नजफी २६८
इब्तेदाई ५८
इरमास १८४
इलाही ४०
इलाही सन् २६
इली २४७
इश्कबाजी (कबूतर उड़ाना) २२२
ईराके अजम १७१
उजुक ५८
उपहार १३२
उपरघटी २१३
उर्फी शीराजी २६०
उर्दू बेगी ५३
उबटन ७८
उस्तुर्लाब ५९
उसूल अजफर की ताल ५८
उष्ट्रशाला १३३
ऊख ७३
ऊंग १४०
ऊनी कपड़े ९६
ऊँट १७४
ऊँटों का निरीक्षण १५६
ऊँटों के सामान १३५
एतमाद खाँ ख्वाजा सरा २७
ओदी २११
औरंग ५७

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

कंगलाई ८९, ९३
कँवल (कमल), ८८
कला ४०-४१
कवि २४७-४८
कटहल ७४
कतमीर ४५
कतरा या नखुद कतरा ५८
कदम ८८
कदसी करबलाई २७३
कर्ना ५७, ७६
कनेर ८८
कपूर ८२
कपूरकान्त ७७
कपूरी ७७
कपूर बेल ८७
कबाब ६६
कबूली ६५
कबा ९१
कन्जुल्वसूल ६३
कम्भायत २०७
कमला ७३
करकराक २२
करकत ५८
करहा १७३
करावल २०८
करारनामा १९५
करारी गीलानी २६७
करावल २०८
करील ८९
करौंदा ८९
कर्रानी २०३
कलगा ९०
कलबंक ८५
कलबक ८५
कलाबतून ९३
कलमी ९१
कलन्दरी ६०
कलन्दरी निगर ५८
कलिया ६६
कश्मीर का इतिहास १०४
कश्क ६५
कशीदा ९३
कसेरू ७६
कहार १८६
काजी २२
काजियों का अविश्वास २००
काजी अली बगदादी २४५
काजी अब्दुल समी २४७
काजी इब्राहीम २४७
काजी जलालुद्दीन मुल्तानी २४७
काजी सदरुद्दीन २४७
काजी हसन २४७
काबूस नामा १०२,
काकेट ७७
कार्ड (गुँजफा) २२९
कालिय दमन १०४, १०६
काशीनाथ भट्टाचार्य २४७
कासिम बेग १०४, २४७
कासिमे काही (मियाने काली) २६०
कासिम अरसलाम मशहदी २७५
कासिमी माजन्दरानी २७६
किशक १९०
किश्ता ७९
किश्नजोशी १०३
किशन पंडित २४७
कीमा पोलाव ६५
कीमियाये सआदत १०२
कीया खाँ गुंग २३६
कीरात ४५
कुकरा ३५
कुकरा की क्रिया ३५
कुताब ६६
कुतास १३८
कुतुबुद्दीन खाँ २३५
कुत्ते २१५
कुमकी १६९
कुरा ५९
कुलीज़ खाँ २४५
कुवर्गा ५७
कुर्सफूल ३५
कूर्ची २२
कूजा ८७
कूर ५७
कूरबेगी २०
कूशबेगी २१
केतकी ८६
केला ७४
केवड़ा ८६
केसू १०६
केसू रेशू) ८८
कैरट ४५
कैल ३७
कोका २२५
कोतल १०७, १३८, १९१
कोर्निश और तसलीम १४६
कोयलास ७३
कोरनिश ५३
कोहना ३५
कौकबा ५७
कौलपत्र ४९
खच्चरों का निरीक्षण १५६
खर्जे यराकये अस्प १७१
खटाइयाँ और अचार आदि ६९
खतमी ९०
खनिज पदार्थों तथा रत्नों के नाम ५०
खपवा १०७
खमसये शेख निजामी १०२
खरल ३७
खवास २२
खरदल ४५
खरगाह ६०
खरीफ ६८
खाक शोई ३८
खाकरूब १२९
खाके खलास ३३
ख्वाजा अब्दुस्समद शीरीं कलम शीराजी १०५
ख्वाजा सरा २७ टि०
ख्वान सालार २१
खानाजाद १३२
खासा शमशीर १०७
खासा गावखाना १३८
खासा घोड़े का मृत्युदण्ड १३१
खासे के कपोतों के रंग २२४
खान कलाँ २३३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

खान जमा शैबानी २३३
खान आजम मिर्जा कोका २४५
खान आजम मिर्जा २३४
खान जहाँ २:५
खानखान मिर्जा अब्दुर्रहीम २३५
खानखाना मिर्जा खां २४५
ख्वाजा जहाँ २४५
ख्वाजा अब्दुल शहीद २४६
ख्वाजा हुसेन मरवी २६३
ख्वाजा हुसेन सेनाई मशपदी २५८
ख्वाजा अब्दुल मजीद आसफ खाँ २४५
ख्वाजा जहाँ २४५
ख्वाजा मुइनुद्दीन फरन्खूदी २४५
ख्वाजगी फतेहउल्ला २४५
ख्वाजगी मुहम्मद सालिही २४५
ख्वाजा ताहिर सिजिस्तानी २४५
ख्वाजा निजाम उद्दीन अहमद २४५
ख्वाजा जलाल उद्दीन महमूद खुरासानी २४५
ख्वाजा शाहमंशूर शीराजी २४५
ख्वाजा शम्स उद्दीन खवाफी २४५
ख्वारिज्मी ५८
खारवा २०६
खिचड़ी ६४
खिदमत राय १८५
खिदमतिया १८५, १८६, २०८
खुसरो २३१
खुसखी काईनी २६९
खुशरोज (मीना बाजार) २०३
खुश्का ६४
खेदा २१०
खेमकरन १०६
खेरनी २२५
गंगाजल ६१
गंगाधर १०३
गंज २८
गजनाल १०९
गजली मशहदी २६०
गदर ९१
गयास नक्शबन्द ९१
गयासुल्लुगात ८१, ८५, ९४, ९८
गयूरी हिसारी २७५
गलीम ६१
गसूल ७९
गाड २१०
गाय बैलों का निरीक्षण १५६
गिर्द ४०
गुड़हल ८८
गुजरात १२८
गुबार लिपि ९९
गुम्भी ७५
गुम्ती २०६
गुलकामा ७८
गुदाज़गर ३२
गुलबदन बेगम ५५
गुलालबार ६१
गुलाल बार ५३
गुलिस्ताँ १०२
गुले सुर्ख (गुलाब) ९०
गुलेजाफरान ८७
गैनी १३९
गैरती शीराजी २७०
गोपी नाथ २४७
गोला २२५
गोशाला १३८
गौरा ८३
गौरी नाथ २४७
घंटाहेरा २१६
घी, चीनी आदि ६९
घुड़बहल १४०
घुर्द १३४
घोड़ों का निरीक्षण १५५
चँपला ८९
चमकन ९२
चमेली ८५
चम्पा ८६
चन्दल मन्दल का खेल २२७
चन्द्रसेन २४७
चत्र ५७
चत्र तोक ५७
चहार अस्पा १८४
चहार गोशा ४०
चहार दाँगी ४५
चलता ८६
चाबुक सवार १२८
चाशनी गीर ३५
चिरवा १८६
चिखी ६४
चिंगिजनामा १०६
चीतों का भोजन और उनके सेवकों का वेतन २१२
चीतों का शिकार २११
चित्रशाला ९७
चिह्नों की पुनरावृत्ति १८९
चिराग जलाना ५५
चुगुल या जुगुल ४०
चुबीन रावटी ६०
चूना १६३
चेला (या दास) १८६, १८७
चेहरा नवीसी १७०, १८३, १८४, १८८
चोवा ८४
चौगान का खेल (हाकी) २२१
चौपड़बाजी वा चौसरबाजी २२६
चोर खेदा २१०
छुरीला ७९
छोंट ९३
जंगला १७२
जगन १०६
जगरूप २४६
जगत के रहस्यज्ञ २४६
जज्बी २७१
जमर्रुद २८, २९, ५१
जमीन दोज ६०
जबाद ८३
जनीबादार १३३
जफरनामा १०६
जमधर १०७
जम्माजा १३४, १३५, १३७, १३८
जरदोजी ९३
जलाल खाँ कूर्ची १०३
जलसेनाध्यक्ष २०५
जलाला ४१
जलाले शाही ५८
जर्री कलम १०२
जर्द बिरञ्ज ६४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

जर्रा ४०, ४५
जर्राब ३३
जागीर (अक्ता) १८९
जाजूस २२
जाफरी ८८
जाफर बेग कजवीनी २६२
जाफर बेग आसफ खाँ १०४, २४५
जामे जम १०२
जामेउल्लुगात ९१, ९८
जिनजिन चावल ९३
जिन्सों के भाव ६७
जिलौदार १२९
जिलो आना १३३
जिलोबेगी १३३
जीचिये जदीदे मिर्जाई १०२
जीनदार १२९, १३२
जुदाई २६९
जूही ८७
जौ ४५
जैत ८९
जैन खां २३६
जैसवार ७७
जेबा ९०
जेर ५८
झंडा ५७
टकसाल २९
टकौचिया ९१
टोडरमल राजा ४२, ४३, २४५
टन्डैल या तम्डैल २०६
टट्टू १७२
ठाट ९
ठांगी २१६
डडावन २१६
तंगा ४६
तअलीका १८३, १९२
तआलिका नवीस १९२
तकलीद १४४, १५०
तकिया नमद ६१
तर्दीबेग खाँ तुर्किस्तानी २३२
तबकात अकबरी १०३
तमकीन ५८
तमकीन काबुली ५९
तरफ २१३
तरसों खाँ २३६
तरकुल (ताड़) ७५
तराजूकश ३२
तर्री ७५
तस्सूज ४५
तसबीहे गुलाल ८६
तसलीम १४६
तसहीहा १८३
तशबीही काशी २७१
तहवीलदार ५२
तवारीख रशीदी १०३
ताजक १०४
ताजी १७२
ताजे खुरूस ९०
तावीनवाशी १९७
तारा १०६
तारीख अल्फी १०४
तालिका १८८
तिल्वा १८६
तुर्की १७१
तुन्के तावगी ६६
तुगरा १९५
तुजुके जहाँगीरी १०३ १८५ १९१
तुमन तोक ५७
तूयेबेगी (विवाहाधिकारी २०४
तूस ९२
तोप अन्दाज २०६
तौजीह १९३
दाँग ४५
दाग १३०
दखली इस्फहानी २७५
दमयन्ती १०४
दमड़ी ४१
दमानक १०९
दम्पुख्त ६६
दरबान १८५
दरबार में प्रवेश १४५
दर्ब ४१
दबिस्तानुल मजाहिब १५१
दसा ४१
दरवेश बहराम २६५
दसवन्थ १०५
दहदही ३४
दहनासिरी २०७
दहबासी १७४
दहसेरी २०१
दर्शन के विद्वान् २४६
दाखिली १६९ १८८
दाखिले प्यादे १८७
दानयाल २३१
दाम २६ ४१
दामोदर भट २४६
दानियाल ५५
दारोगा १२८
दारोगा ३०
दास्ताने हमजा १०६
दिरहम ४-५
दीन इलाही १०४ १५३
दुम्बाला १३७
दो अस्पा १८४
दो बीस्ती १७५
दीदावर १२८
दीनार ४५
दीवान २१
दीवाने जागीर १९३
दीवाने ब्यूतात ६३ १९४
दिज्द ४४ ५
दुज्द बिरियाँ ६५
दुताही ९१
दुपरिया ९
दुहुल ५७
दुर्गामल २४७
देवजीरा चावल ६३
देहमुहरी १३०
दो आशियाना मंजिल ६०
दो प्याजा ६६
धन ४०
धर्मग्रन्थ के विद्वान् २४७
धातुओं की उत्पत्ति ४७
थाँगी २१६
थूली ६४
धनन्तर ८९
नक्कारा ५७
नकीब १२९ १३२
नकीब खाँ १०३ १०४

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

नकीर ४५
नजर २७
नजर १०३
नजातुर्रशीद १०३
नजीरी निशापुरी २६५
नफीर ५७
नरगिस ९०
नरनाल १०९
नल और दमन १०४ १०६
नववर्षोत्सव (जश्ननौरोजी) २०२
नवी मशहदी २७४
नस्ताचीक लिपि ५८ १०१ १०२
नसरुल्ला मुस्तवफी १०४
नाखुदा २०६
नाखुदा-खशब २०६
नागकेसर ८८
नाजिरे ब्यूतात २१
नार्जील ३५
नादिरी तुरशीजी २७४
नाफरमान ९०
न्यारिया ३५
नारियल ७५
नालबन्द १२९
निर्खनामा १९५
निचोईवाला ३७
नीबू ७६
निजामी कजवीनी १०२
निजामुद्दीन अहमद हेरावी १०३
नीम कोतल १३८
नीमा सवारान १८७
निशावरी २२५
निवारी ८७
निस्फ सलीमी ४०
नुरुल्ला कासिम अरसलाँ १०२
नौरोजी ५८
नरसिंह २४६
नारायण २४७
नारायण आश्रम २४६
पंज ४०
पंजरी २०६
पंजाही १३७
पंजसदी १३७
पक्षियों का भोजन १२८
पक्षियों का मूल्य २१८
पनीवार ३७
पनियाला ७५
परवान्ची १९३
परवान्चा १९५
परपा २२५
परमिन्दर २४६
पशु-पक्षी और माँस ६९
पहलवान १८६
पहित ८५
पाकशाला ६२
पांडौ ४०
पाँडौ ४१
पाडल ८७
पान का पत्ता ७६
पायक (हरकारा) १२९
पावगोश्त १५७
पाव कातल १३८
पावला ४१
पीगू २०७
पीर मुहम्मद खाँ शीरवानी २३४
पिंजर ३७
पिण्ड खजूर ७६
पिण्डालू ७६
पियादहाये १८५
पियोर ७५
पुख्ता पक्का) २२६
पुर्जदार ९३
पुर्तगाल २०७
पुनहर की क्रिया ३६
पशकश २७
पेशवाज ९१
पैकार ३७
पैदल सेना १८४
फतील ४५
फतीला ७९
फतेह उल्ला शीराजी १०२
फतेह उल्ला शीराजी २०१
फरगुल ९१
फर्रुख कलमाक १०६
फरेबी रई ७३
फहमी राजी २७१
फैजी १०३ १०४
फन्दुर किया १७३
फरमान्चा १८३
फरमाने सब्ती ५८
फरमाने सब्ती १९३
फरमाने बैयाजी १९६
फर्राश १२९
फर्राश खाना ५९
फराइत १८६
फर्जी ९१
फल्स ४५
फिलाट २२५
फूसूनी शीराजी २७४
बंकुली १८६
बकुली १८६
बंगला ७७
बगा २२५
बन्दूक्ची १८५
बदायूनी ९९
बनफशा ९०
बनवरी ३१
बमियाने ५८
बदायूनी १०४ १७५ १८७ १९३ २०२ २०४
बर आउर्द १७१ १८३ १९४
बर आवर्दी १६९
बरात १९४
बरंज ४८
ब्लाकमैन १७ १९ २० २१ २२ २३ २६ ३५ ४२ ४४ ५३ ५८ ६७ ७५ ७६ ७९ ८१ ८४ ९१ ९८ ९९ १०३ १०४ १२८ १३१ १३२ १३३ १३५ १३७ १४२ १४५ १४७ १४८ १४९ १५५ १५७ १६२ १७० १७२ १८३ १८४ १९० १९१ १९३ २०७ २३१ २५१ २५४
बलभद्र मिश्र २४७
बसावन १०५
बहादुर खान शैबानी २३४
ब्यूतात २१
बाज बहादुर २४०
बहादुर खाँ २४५
बाबा बलास २४६
बामन भट्ट २४७
बार २१०
बारगीर १३०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

बारगीर सवार १३०
बारह खाम (कच्चा) २२६
बासुदेव मिश्र २४७
बादिज्ञाँ ६५
बान ३१
बारगाह ६०
बारजात ७६,
बाँधनू ६३
बादशाहनामा १०३
बानाइत १८६
बाबा तालिब इस्फहानी २७४
बारहवानी ३०
बारवेगी २०
बीकारा २१६
बीस्तमुहरी १३०
बीस्तोपंजी १३७
बितिक्ची १८८
बिन्सत ४०
बितिक्ची २७
बिरियाँ ६६
बिलहरी ७६
बुगरा ६५
बुजुर्गे तनूरी ६६
बुगदी १३४, १३५, १३७, १३८,
बुगुर १३३, १३७
बुरबूर ७६
बैतार १२६
बैल १७४
बैलगाड़ी या छकड़ा १७४
बैराम खाँ २३२, २४५
बोता १३७
बोस्ताँ १०२
बख्शी २४५
बाबा कियूर मजजूब २४६
भंगार ४८
भट्टाचार्ज (भट्टाचार्य) २४७
भडारी २०६
भदायन १०७
भवन मिर्माण १६१
भटैया ७३
भागीरथ भट्टाचार्ज २४७
भानचन्द २४७
भून चम्पा ८६
भैंसा (अर्ना) १३६
भोज तथा उत्सव ०२
भोलसिरी मोलश्री) ७५, ८६
भेंड़ का मुतंजना ६६
भीराव २४७
भीमनाथ २४७
मंझोला १७३
मंडल ६०
मआसिरे रहीमी १००, १०३
मकजुल अदवार २४६
मकानी ५
मकानी मालों के मूल्य १६२
मखदूलमुल्क २४७
मजदूरी १६४
मजहरी कश्मीरी २६६
मददे मआस १६६
मन ४०
मन्दल ८१
मधुसूदन २४६
मनसबदार १७४
मनसबदारों के नाम तथा पद २३१
मनोरंजन (निशातबाजी) २२०
मलाका २०७
मलगूबा ६६
मलागीर ८५
मलीख २०६
मशहदी १०७
मसनवीए मअनवी १०२
मसाले ६६
महवी हमदानी २६७
महादेव २४७
महाभारत १०३
महामीर ५८
महताबी ५३
महुआ ७४
महेश १०६
मस्त १७३
माधव भट्ट २४७
माधव सरस्वती २४६
माधो १०६
माथाँ ६३
माथा घुर्द १३४
मालती ८६
माबी १८५
मालगुजारी १८४
मिर्जा खानखाना १०४
मिर्जा सुलेमान २३२
मिर्जा इब्राहीम २३२
मिर्जा शाहरुख २३२
मिर्जा रुस्तम २३२
मिर्जा शरफुद्दीन हुसेन २३३
मिर्जा युसुफ खाँ २३७
मिस्काल ४५
मिस्ल ६२, २१३
मिस्काली २५
मिस्तरे ५६
मिल्क १६६
मियाँ जमालखाँ २४७
मियाँ हातिम सम्मली २४७
मीर अदल २२
मीर बख्शी २०
मीर दाद २२
मीरतोजक २०
मीर नुरुल्ला शुस्तरी २४७
मीर बह्र २०
मीर बर्र २०
मीरमाल २०
मीर मंजिल २१
मिरातुल आलम १०३
मियाँ वजीहुद्दीन २४६
मीर अब्दुल लतीफ २४७
मीर अब्दुल्ला १०२
मीद ८३
मारदहा ११२, १२८, १४०
मीर अजीज उल्ला तुरबती २४५
मीर बकावल ६३
मीर दोस्त काबुली ५६
मीर शैयद अली तब्रीजी १०५
मीर सैयद मुहम्मद मीर अदल २ ७
मीर फतेह उल्ला २४५
मीर हुसेन कुलंकी १०२
मुअजमुल बुल्दाँ ०४
मुकम्मल खाँ गुजराती १०४
मुकासा १६५
मुकुन्द १०६

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

मुक्ती १८९
मुजन्नस १३०, १७१
मुनीम खाँ २४५, २३२
मुजफ्फर खाँ २४५
मुन्तखिबुत्तवारीख १०३
मुल्ला मुहम्मद सूफी माजन्दरानी २६८
मुल्ला आलम २४७
मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी २४७
मुल्ला कमाल २४७
मुहम्मद फिदाअली ७५
मुल्ला मीर २४७
मुहम्मद हुसेन कश्मीरी १०२
मुहम्मद अमीन मशहदी १०२
मुसाअदत १९७
मुअल्लिम २०६
मुहारी २१३
मुराद २३१
मुनीम खाँ २३२
मुहम्मद कुली खाँ बरलास २३६
मुजफ्फरे खाँ तुरबती २३७
मुहम्मद कासिम खाँ नीशापुरी २३८
मुसम्मन ६६
मुल्लाशेरी १०३
मुशरिफ १२८, १३२
मुल्ला अहमद ठट्ठा १०४
मुशर्की १०६
मुस्तौफी २१
मुशफिकी बोखारी २६६
मुर्सिल ५८
मुल्ला अली अहमद ३८
मुनज्जिम २२
मुईनी ४०
मुहरदार २०
मुशरिफ ३२
मुन्शी २१
मुशरिफे गंजूर २१
मेवाखाना (फलागार) ७०
मेहदी कासिम खाँ २३७
मोकल १७४
मोथ राजा २४०
मोहेश महानन्द १०३
मोहरे गिर्द (गोल अशर्फी) ४०
मेहराबी ४०
मोहरकन ३४
मती २८, २९
मरियम ५४
मौलाना अली अहमद देहलवी ५९
मौलाना अहमद अली देहलवी ३४,५८
मौलाना अब्दुस्सलाम २४७
मौलाना अब्दुल हई १०२
मौलाना अब्दुर्रहीम १०२
मौलाना अब्दुल कादिर बदायूनी १०३
मीर सामान २१
मैल्ली हेरवी २६१
मौलाना अब्दुल बाकी २४५,२४६-४७
मौलाना इसहाफ २४७
मौलाना इब्राहिम ५९
मौलाना इस्माईल २४६, २४७
मौलाना कासिम २४७
मौलाना जमाल २४७
मौलाना मकसूद हेरवी ५९
मौलाना मकसूद ३८, ५८
मौलाना बाकर १०२
मौलादा दौरी १०२
मिर्जा मुफलिस समरकन्दी २४७
मौलाना नुरुद्दीन तरखाँ २४७
मौलाना शाह मुहम्मद शाहाबादी१०४
मौलाना सआदुल्ला २४७
मौलाना सद्रेजहाँ २४७
मौलाना शेरी १०४
मौलाना हुसामुद्दीन २४६
मौलाना अब्दुल कादिर २४७
मौलाना बीर मुहम्मद २४६
मौलाना जादा शुक्र २४७
मौलाना मुहम्मद २४७
मौलाना हबी बिहजादी २४५
मौलाना इश्की मुकीम खुरासान २४५
मौलाना दरवेश मुहम्मद मशहदी २४५
म्यौड़ा १८५
मौलवी फिदाअली १९१
मौलवी मुहम्मद फिदा अली ५५
यक अस्पा १८४
यकहाथ १८६
यकबदी १०७
इकबालनामा १०६
यमनी ४०
याकूत आसमानी ५१
याकूत मुस्तअसमी १००
याददास्त १-३, १९२
यादगार हालती २७०
याबू घाड़ा १७१
यखनी ६६
यास्माने कबूद ९०
याकूत २८, २९
यूजबाशी १७५
युसुफ मुहम्मद खाँ २३४
युल्मा ६६
रंगा की उत्पत्ति ९६
रकाबदार ६४
रतनमंजनी ८८
रतनमाला ८९
रज्जनामा १०३, १०४
रथ २२५
रफीई काशी २७०
रसीदा २२६
रही नीशापूरी २७६
रम्माल २२
रबी ४०, ६८
रहस ३९
रसी ३६
राना ९०
राज्य की मुद्राएँ ३८
राजकीय अन्तःपुर ५१
राज्य वैभव ५६
रामलाल पाण्डेय ६७, ७४, ७५, ७६, ७८, ८५, ८६, ८८, ९४, ९५, ९६, ९८
रायबेल ८६
रीका लिपि ५८,
रुई ४८
रुपया ४१
रूह अफ्जा ७८
रोटी ६६
रेशमी कपड़े ९४
रैहाँ ९०
रामकिशन २४७
राय सुर्जन हाडा २३९
राजा रामचन्द्र बघेला २३९

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

राजा बीरबल २३९
राय रायसिंह २३८
राजा मानसिंह २३६
राजा बिहारीमल २३५
राज्य के वजीर (अर्थमन्त्री) २४५
राम १०६
रामायण १०३, १०६
राज्य के वकील या प्रधानमन्त्री २४५
राज्य के विद्वान् २४६-४७
राम भद्र २४६
रामतीर्थ २४६
राहवार १३२
राय पुरुषोत्तम् २४५
रायमान १८५
रिसालदार १९२
रिघनी २१३
रैबारी १३७
लेखा जोखा २७, १९२-३
लश्कर खाँ २४५
वकूई निशापूरी २६९
वजीर खाँ २४५
वफाई इस्फहानी २६९
विजय सेन सूर २४७
विद्यानिवास २४७
विष्णु नाथ २४७
वेतन देने की प्रणाली १९६
शकाइक ९०
शम्सुद्दीन मुहम्मद अतगखाँ २३३
शमशेरबाज १८६
शरबतदार २२
शरफे मुनेरी १०२
शलवार ९२
शशदाँगी ४५
शाक ६८
शादियाने ५८
शामियाना ६०
शायर २२
शाल ९२
शाहबाज खाँ २४५
शाहमुराद ५५
शाहनामा १०२
शाही मुहर ५८
शाह अजीदा ९१
शिकेबी इस्फहानी २६३
शिक्षा २०४
शिकारी चीते की चतुराई २१३
शिहाब खाँ २२५
शिष्टाचार १४७
शीराजी ५८
शीर बिरञ्ज (खीर) ६४
शेख इलाहदिया खैराबादी २४६
शेख अब्दुल गफूर २४६
शेख पंजू सम्भली २४६
शेख रुकनुद्दीन महमूद कमानगर २४६
शेख अमानुल्ला २४६
शेख मूसा २४६
शेख अलाउद्दीन मजजूब २४६
शेख यूसुफ हरकुन २४६
शेख बुरहान २४६
शेख अबू इसहाक फिरंग २४६
शेख दाऊद झनीवाल २४६
शेख सलीम चिश्ती २४६
शेख मुहम्मद गौस ग्वालियरी २४६
शेख गदाई २४५
शेख अब्दुल नबी २४५
शेख मुबारक नागोरी २४६
शेख निजाम नारनौली २४६
शेख फरीद बुखारी २४५
शेख अधन नाम अमानुल्ला २४६
शेख रुकनुद्दीन २४६
शेख अबुल फेजे फैजी २४८
शेख जलालुद्दीन थानेसरी २४६
शेख अब्दुल अजीज देहलवी २४६
शेख शर्फउद्दीन मुनैरी ५५
शेख मुबारक १०३
शेख मुनव्वर १०४
शेख फैजी फैयाजी १०४
शेख भावन १०४
शेख अब्दुन्नबी १९९
शेख साकी २७०
शेख रहाई २६९
शेख मुनौवर २४७
शेख जौहर २४७
शेख अब्दुल वाहिद २४७
शेख अब्दुल गनी २४७
शेख अहमदी २४७
शेख उमर २४७
शेख अब्दुल बहाव २४७
शेख जियाउद्दीन २४७
शेख बहाउद्दीन मुफ्ती २४७
शेख अबुल फतेह २४७
शेख भीक २४७
शेख अब्दुन्नबी २४७
शेख याकूब कश्मीरी २४७
शेख अहमद २४७
शेख बीना २४७
शेख फैजी २४२
शेख हसन पानीपती २४७
शेरगीर १७३
शेरी २७६
शुल्ला ६५
श्री खडी ८८
श्री भट्ट २४७
संग्राम (बन्दूक) ११२
संज ५७
संजरे काशी २७०
सईद खाँ २३५
सकतनामा १८३
सलीम २३१
सलीमी ४०
सलोनी ३३
सलीम शाहजादा ५५
सरा पर्दा ६१
सरखत १८३, १९४
सरमदी इस्फहानी २७५
सहसा २८
सहँसा २८
सशस्त्र स्त्रियाँ ५३
सब्बाक ३४
सब्बाकी विधि ३७
सद्र २२, २४५
सद्र जहाँ २४५, २४७
सन्तुक ७८
सन्दल ८४
सन ९०
सर्ना ५७
सफेदरू ४८
सफेद अल्चा ९३
सबूही चगताई २६६
समनी ४०

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

सम्राट् द्वारा आविष्कृत गाड़ियाँ आदि २०१
सम्राट् के दरबार के संगीतज्ञ २०६
सरहंग २०६
स्वाद ७७
स्वर्ण मुद्राएँ ३८
सात गाँव (हुगली) २०६
सादा १७३
सान ६५
साम्राज्य के विशिष्ट व्यक्ति २३
सामरी २७३
सायावान ५७
सालक ७६
सालिही २६६
साँवला १०६
साहबे तौजीह २१, १९४
सिक्का ४५
सिकन्ची ३४
सिङ्ग ५७
सिंगारहार ८६
सिंघाड़ा ७६
सिताई ३
सिपन्दसोज १२९
सियाली ७६
सियाह गोश २१४
सिरस ८९
सिलारस ८४
सिंह का आखेट २०८
सी अस्पा ८४
सीमे सुख्ता ४८
सुर्ख ३१
सुखदास चावल ६८
सुगन्धित ७९
सुगन्ध गुगला ८५
सुगन्धशाला ७८
सुगन्धित फूल ७९
सुनर्शन ८९
सुप्यारी (सुपारी) ७६
सुन्दर रंगों वाले फूल ७९
सुरपन ८८
सुयूरगाल १९९
सुक्कानगीर २०६
सुल्तान ख्वाजा २०, २४५
सुल्तान महमूद बदख्शी २४५
सुल्तान हाजी थानेसुरी १०३
सूकी २९, ४१
सूती कपड़े ६५
सूनजर्द ८९
सूफियाना संयम के दिन ६७
श्रीखन्डी ८८
सेना के पशु १७०
सेना के भाग १६९
सेना का एकत्र होना ५४
सेंबल ८९
सेह दाँगी ४५
सेवती ८५
सैफ खाँ कोका २३७
सैरफी ३०
सैरफी सावजी २६७
सैरफी कश्मीरी २६५
सैयद अहमद बारहा २१४
सैयद मुहम्मद २७३
सोजनी ९१
सौसन ९०
श्री भट्ट २४७
हिरण का हिरण से शिकार २१५
हाथी १७३
हकीम २१, २४७
हकीम अबुल फतेह २४७
हकीम अब्दुर्रहीम २४७
हकीम अरस्तू २४७
हकीम अलीगीलानी २४७
हकीम इसहाक २४७
हकीम ऐनुमुल्क २४७
हकीम जबील बेग २४७
हकीम जलालुद्दीन मुजफ्फर २४७
हकीम फखरुद्दीन २४७
हकीम फतेहउल्ला २४७
हकीम मिस्त्री २४७
हकीमुल्मुल्क २४७
हकीम मसीहुल्मुल्क २४७
हकीम तलब अली २४७
हकीम दवाई २४७
हकीम नियामत उल्ला २४७
हकीम रूहउल्ला २४७
हकीम लुत्फ उल्ला २४७
हकीम सैनुल्मुल्क लंग २४७
हकीम हुमाम २४७
हकीम हसन गीलानी २४७
हकीम शिफाई २४७
हजरत गेतीसितानी १०४
हयाती गीलानी २६३
हफ्त जोश ४८
हब्बा ४५
हरबश १०६
हरीसा ६५
हलवा ६५
हलीम ६५
हवाई तराजू ५०
हश्त दाँगी ४५
हर जी सूर २४६
हृदय के रहस्यज्ञ २४६
हदीका १०२
हाजी इब्राहीम सरहिन्दी १०४
हाथी का आखेट २१०
हाथियों का निरीक्षण १५४
हादा १२८
हुजनी इश्कहानी २५९
हुसेन वायज १०४
हुन ४५
हेना (मेंहदी) ८९
हैदरी तब्रीनी २७३

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

ईरानी और तदनुरूप हिन्दू महीने

१. फर्वरदीन (वैशाख)

२. उर्दीबिहिश्त (ज्येष्ठ)

३. खुरदाद (आसाढ़)

४. तीर (सावन)

५. अमुरदाद (भादों)

६. शहेवर (कुँआर)

७. मिह्र (कार्तिक)

८. आबान (अगहन)

९. आजुर (पौष)

१०. दै (माघ)

११. बह्मन फागुन)

१२. ईस्फन्दार मुर्ज (चैत्र)

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow

Digitized by Sarayu Foundation Trust , Delhi and eGangotri Funding : IKS

आइने-अकबरी

●

अबुल फ़ज़्ल कृत 'आईने अकबरी' मुगल शासन-पद्धति की जानकारी प्राप्त करने का सर्वाधिक प्रामाणिक, विश्वसनीय, तथ्यपूर्ण और सांख्यकीय तालिकाओं से युक्त सर्वोत्तम ज्ञात मूल-स्रोत है। अपने समय के अद्वितीय विद्वान् और महान् मुगल सम्राट् अकबर के अर्थ-मंत्री अबुल फ़ज़्ल ने स्वकीय प्रशासन-ज्ञान के तथा प्रशासकीय प्रतिवेदनों के बल पर, सात वर्ष तक अनवरत घोर परिश्रम कर, एक ऐसा विश्वकोशीय इतिहास-ग्रन्थ प्रस्तुत किया है जिसकी समता का क्या, उससे कुछ भी मिलता-जुलता भी, कोई संकलन भारत में, संभवतः प्रायः शेष एशिया महाद्वीप में, बल्कि कुछ ही समय पूर्व तक यूरोप में भी नहीं किया गया था।

अबुल फ़ज़्ल की विद्वत्ता ने उलमाओं के धार्मिक कट्टरपन का मुँह तोड़ जवाब दे कर सम्राट् अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का मार्ग प्रशस्त किया। वह साम्प्रदायिकतावाद और पाखण्ड के परे एक सच्चा भारतीय था।

—लक्ष्मीकान्त मालवीय

CC-0. In Public Domain. UP State Museum, Hazratganj. Lucknow